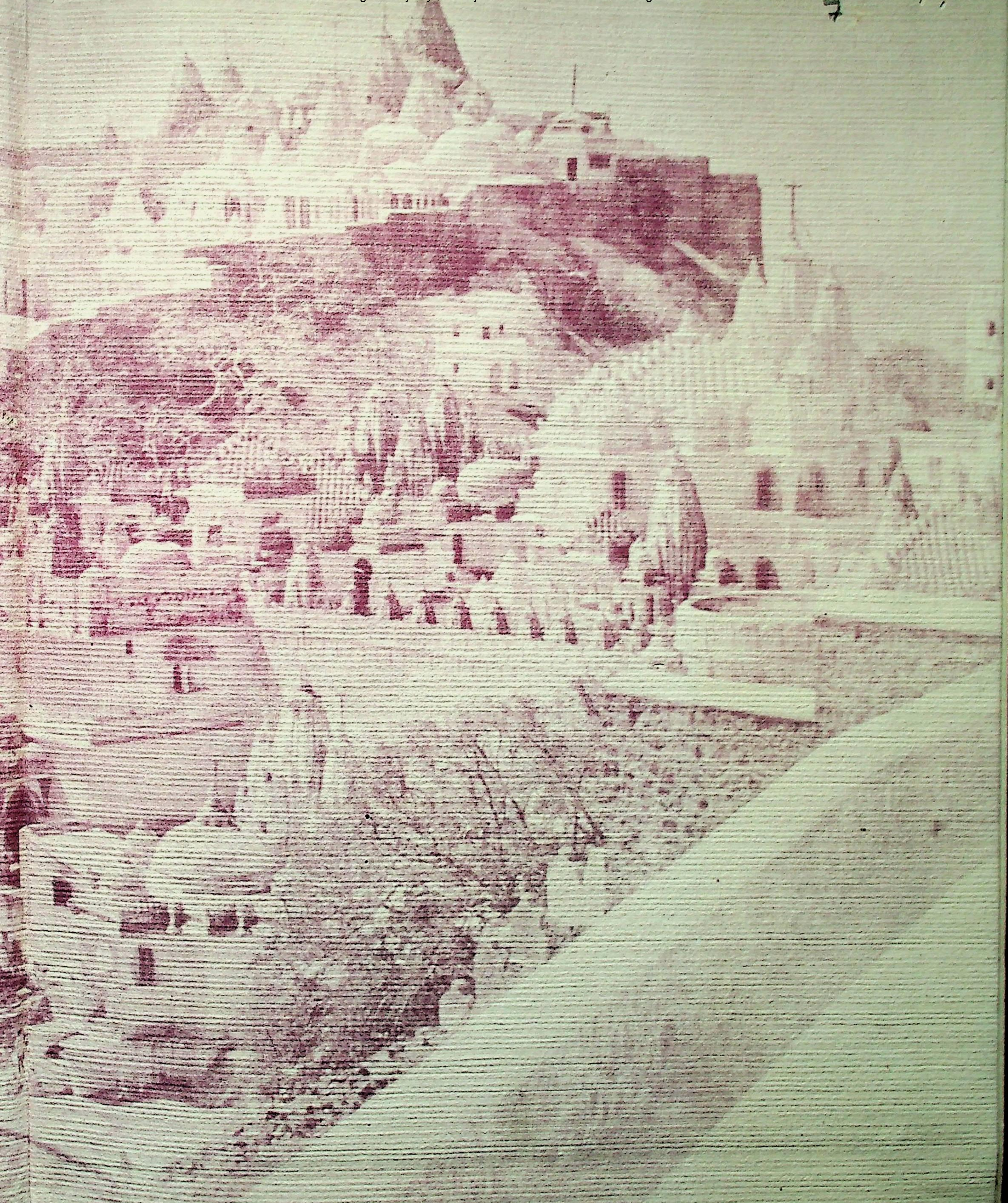
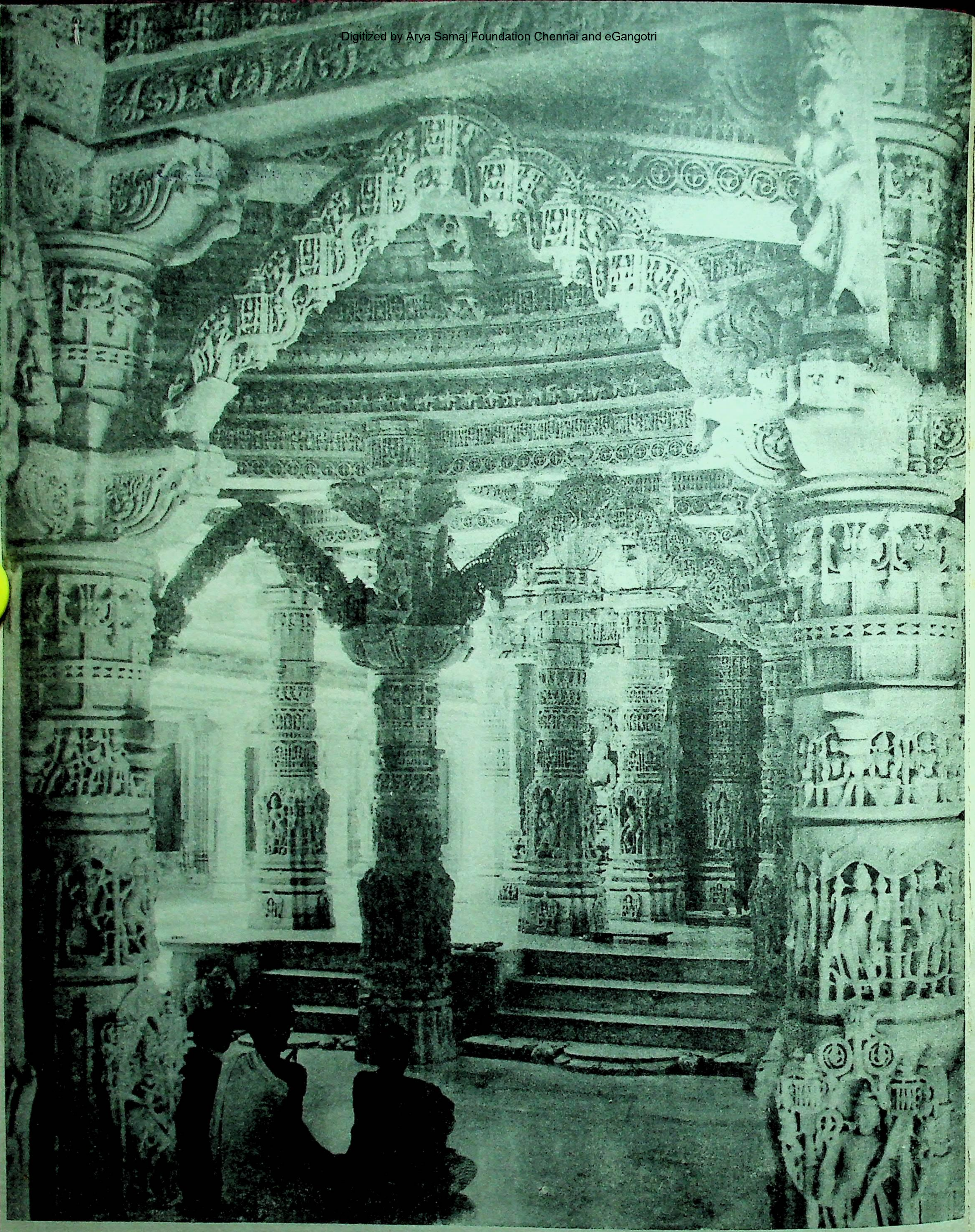
तीर्थ दर्शन







तीर्थ दर्शन

❀

प्रथम खंड



श्री आदीश्वर भगवान
अचलगढ



तीर्थ दर्शन

प्रथम खंड

प्रकाशक
श्री महावीर जैन कल्याण संघ
मद्रास - ६००००७

First Published Nov. 1980

Published by Shree Mahavir Jain Kalyan Sangh, Madras. Printed at Prasad Process, (P) Ltd., Madras. Photo type set and bound by All India Press, Pondicherry-605 001.
PRINTED IN INDIA

आमुख

जैन धर्म में ही नहीं अन्य धर्मों में भी तीर्थ-स्थलों को अनादि काल से अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है। तीर्थंकर भगवन्तों के च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान एवं मोक्ष इन पाँच कल्याणकों से पवित्र हुए स्थान, प्रभु के समवसरण स्थल, प्रभु की बिहार-भूमि, प्रभु के चातुर्मास स्थल एवं उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं से संबंधित स्थल, मुनि पुँगवों की तपोभूमि व निर्वाण भूमि, किसी सातिशय जिन प्रतिमाओं के चमत्कारों से प्रसिद्ध हुआ स्थान, विशिष्ट कलात्मक मन्दिर व स्मारक, एक सौ वर्षों से ज्यादा प्राचीन मन्दिर व स्मारक–ये सब जैन परम्परा के पावन व पूज्यनीय स्थावर तीर्थ माने गये हैं।

उक्त स्थानों की यात्रा कर मानव अपना जन्म सफल बनाता है। इन पुनीत स्थलों के वातावरण शुद्ध व निर्मल तो होते ही है, उनमें एक ऐसी भी अतिशय शक्ति रहती है जिसके कारण दर्शक वहाँ पहुँचते ही उनके परिणाम निर्मल होकर एक अलौकिक शान्ति का अनुभव करते हैं।

जैसे मीलों दूर हुई बरसात की हवा बहुत दूर तक अपनी मलयानिल ठण्डी हवा आंखों से ओझल रहते हुए भी निर्मल हिलोरा देती है, जैसे आटे में शक्कर मिलाने से फिका आटा भी मीठा हो जाता है, उसी प्रकार तीर्थंकर भगवन्तों, मुनि महाराजों व सैकड़ों वर्षों तक भाग्यशाली श्रद्धालु दर्शकों द्वारा सेवन किये गये स्थल भी उन शुद्ध परमाणुओं से मिल-जुलकर दर्शकों में एक ऐसी अलौकिक शान्ति की भावना प्रदान करते हैं जो यात्रियों के मनुष्य जन्म को सफल बना देते हैं।

उक्त स्थलों की संख्या सहस्त्रों में हैं। लेकिन कई आज ओझल हैं तो कई खण्डहर के रूप में हैं और अपूजित हैं। पूजित स्थलों में से अनेकों मुख्य स्थलों का इस ग्रंथ के माध्यम से भक्त जनों को मार्ग दर्शन देने का प्रयास किया गया है। निःसन्देह इस ग्रंथ में उपलब्ध चित्ताकर्षक चित्रों के दर्शन से भक्तजन घर बैठे प्रभु को अपनी श्रद्धा-सुमन अर्पण करके पुण्योपार्जन कर सकेंगे। कई तीर्थ-स्थलों के संबंध में अलग-अलग पुस्तिकाएँ प्रकाशित हुई हैं। लेकिन भक्त जनों के लिये इन अलग-अलग पुस्तकों को संग्रहित कर रखना इतना सुलभ नहीं। इन सबको ध्यान में रखते हुए सारे तीर्थ-विवरणों को एक ही अमूल्य व अद्वितीय ग्रंथ के रूप में प्रकाशन करने का निर्णय हमारी संस्था ने लिया । इस ग्रंथ की उपयोगिता व महत्ता दर्शक व पाठक स्वतः अनुभव करेंगे।

इस कार्य में अनेक आचार्य भगवन्तों, मुनि महाराजों, पेढ़ी के व्यवस्थापकों व अन्य श्रावकगणों का सहयोग सराहनीय है। इन सबका मैं आभारी हूँ।

इस कार्य के प्रारंभ से सम्पूर्ण होने तक का श्रेय हमारे, मानद मंत्री श्री यू० पन्नालालजी वैद को है जिनकी प्रेरणा, पूर्ण प्रयास व निरन्तर मेहनत से ही कार्य सुसम्पन्न हो सका। अतः मानद मंत्री महोदय व उनके सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिनके कारण हमारे संघ को यह महान ग्रंथ प्रकाशन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इनकी निस्वार्थ सेवा संघ के इतिहास में चिर स्मरणीय रहेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह ग्रंथ अति उपयोगि सिद्ध होकर हर घर में पुण्य का संचार करेगा। पाठकों से सानुरोध है कि कृपया त्रुटियों के लिये क्षमा करें।

अंत में श्री जिनेश्वर देव से प्रार्थना करता हूँ कि इस कल्पतरू महान ग्रंथ के दर्शकों व पाठकों को सुख समृद्धिवान बनावें।

ए. मानकचन्द बेताला,
अध्यक्ष, श्री महावीर जैन कल्याण संघ

भूमिका

विश्व के भूभाग में स्थित स्थलों में तीर्थ-स्थल विशिष्ट माने गये हैं। सभी धर्मों में तीर्थ-स्थानों को विशेष महत्व दिया गया है। जैन तीर्थ-स्थल प्राकृतिक सौन्दर्य से ओत-प्रोत विशिष्ट कला युक्त रहने के कारण अपना निराला स्थान रखते हैं। तीर्थ-स्थलों में पहुँचने पर वहाँ के पवित्र परमाणुओं से भाव निर्मल हो जाते हैं जिससे मानव भक्ति में लीन होकर अपूर्व पुण्य का संचय करता है। ये पावन तीर्थ आत्म-साधना के विशिष्ट स्थल हैं, जहाँ अनन्त भव्य आत्माओं ने सिद्धि प्राप्त की है व भविष्य में भी करेंगे। आदि काल से अनेकानेक भक्त जनों ने इन स्थलों की यात्रा कर अपना जीवन सफल बनाया है जिसका इतिहास साक्षी है।

ऐसे पावन जैन तीर्थ-स्थलों को व्यापक रूप से प्रकाश में लाने व अन्य कई उद्देश्यों के साथ इस अपूर्व ग्रंथ की रचना की गई, जिसकी भूमिका प्रारंभ करने के पूर्व श्री महावीर जैन कल्याण संघ का परिचय देना मेरा कर्तव्य हो जाता है।

श्री महावीर जैन कल्याण संघ की स्थापनाः—

श्री महावीर जैन कल्याण संघ की स्थापना का मुख्य कारण "गुरु श्री शान्तिविजय जैन विद्यालय" है। इस विद्यालय की स्थापना स्व० यतिवर्य श्री मंछाचन्द्रजी महाराज के कर कमलों द्वारा दिनांक १६ मार्च १९६६ के शुभ दिन श्री चन्द्रप्रभ भगवान की छत्र-छाया में यहाँ वेपेरी सूलै में स्थित श्वेताम्बर जैन मन्दिर के उपाश्रय के एक कमरे में "श्री जैन विद्यालय" के नाम से हुई। इस विद्यालय को सुचारु रूप से चलाने हेतु "श्री महावीर जैन कल्याण संघ" का गठन कर दिनांक १.७.१९६७ के शुभ दिन उसे पंजीकृत करवाके यह विद्यालय उक्त संघ के अंतर्गत किया गया जो दिनांक २२.१.१९७१ माघ शुक्ला बसन्त पंचमी के शुभ दिन दानदाताओं के इच्छानुसार परमपूज्य योगीराज श्री सहजानन्दघनजी महाराज के करकमलों द्वारा "गुरु श्री शान्तिविजय जैन विद्यालय" के नाम से परिवर्तित हुआ। गुरुदेव की असीम कृपा से प्रारम्भ से ही विद्यालय तीव्रगति से प्रगति के पथ पर है।वर्तमान में इस विद्यालय में ११२५ विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं व छात्र-छात्राओं के लिये बारहवीं कक्षा तक अलग-अलग पढ़ाई की व्यवस्था है। व्यावहारिक पढ़ाई के साथ-साथ संगीत व धार्मिक ज्ञान देने की भी व्यवस्था की गई है। आज यह विद्यालय मद्रास शहर के मध्य, खेल-कूद के लिये विशाल मैदान के साथ श्री महावीर जैन कल्याण संघ की निजी जगह में चल रहा है।

संघ के उद्देश्य :—

गुरु श्री शान्तिविजय जैन विद्यालय का संचालन करने व आगे बढ़ाने के अतिरिक्त जन-कल्याण के लिये हर प्रकार के अध्ययन व चिकित्सा सम्बन्धी कार्यों की स्थापना करना, संचालन करना व सहयोग देना संघ के उद्देश्य हैं।

"तीर्थ-दर्शन" ग्रंथ की परिकल्पना :—

वि० सं० २०२४ में "अखिल भारत जैन-तीर्थ यात्रा संघ-मद्रास" की १०१ दिनों की यात्रा ही इस कार्य के प्रारंभ का मुख्य कारण है। उस यात्रा के दौरान अनेकों महानुभावों के सुझाव थे कि इस यात्रा का वर्णन व अनुभव प्रकाशित किया जाये ताकि भविष्य में यात्रियों को भी इसका लाभ मिल सके। उसको ध्यान में रखते हुए मैंने "भारत के जैन-तीर्थ व हमारे १०१ दिनों की यात्रा

के अनुभव'' नामक पुस्तक लिखी। लेकिन कार्यवश विलम्ब होता गया। इतने में भगवान महावीर का पच्चीसवीं-निर्वाण शताब्दी – महोत्सव मनाने का सुअवसर आया व पूरे भारत में कई प्रकार के कार्य प्रारम्भ हुए। गुरुदेव की असीम कृपा व अदृश्य प्रेरणा से मेरी भी इच्छा हुई कि कुछ ऐसा कार्य किया जाय जिसका सदियों तक लाभ मिल सके एवं संग्रहित सामग्री का प्रतिफल श्री महावीर जैन कल्याण संघ के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये काम आ सके। अतः इस पुस्तक को कुछ धार्मिक विवरणों के साथ व्यापक रूप देकर प्रकाशित करने की इच्छा हुई। अतः यह प्रस्ताव मैंने संघ की समिति के सम्मुख विचारार्थ रखा। उसपर समिति ने विचार-विमर्श करके कार्य प्रारंभ करने का निश्चय कर भगवान महावीर निर्वाण शताब्दी महोत्सव की स्मृति में ऐतिहासिक ग्रंथ प्रकाशित करने का निर्णय लिया।

''तीर्थ-दर्शन'' ग्रंथ प्रकाशन के उद्देश्य :–

१. यात्रियों को जैन-तीर्थ स्थल संबंधी जानकारी देना* हर एक तीर्थ-स्थल का इतिहास तीर्थंकर भगवन्तों, आचार्य भगवन्तों, जैन राजा-महाराजाओं, मंत्रियों या श्रेष्ठियों से संबंध रखता है। कुछ ऐसे भी तीर्थ हैं जो पुरातत्व दृष्टि व धार्मिक दृष्टि से विशिष्ट माने गये हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यात्रीगण इन पावन तीर्थ-स्थलों के इतिहास की जानकारी पाकर प्रसन्नता व गौरव का अनुभव करेंगे व जिन्दगी में कम से कम एक बार हर तीर्थ-स्थल का दर्शन कर अपना जीवन सफल बनायेंगे। वर्तमान पीढी के लिये ही नहीं भावी पीढी के लिये भी यह ग्रंथ प्रेरणाप्रद होगा।

२. युवावर्गों में धार्मिक भावना जाग्रत करना* युवावर्गों में धार्मिक भावना जागृत करना ही नहीं उसे कायम रखना भी इस वैज्ञानिक युग में अति आवश्यक है। इसके लिये यह ग्रंथ सहायक सिद्ध होगा। दर्शन के साथ-साथ धार्मिक भावना जागृत करने के लिये यह ग्रंथ बोधप्रद सचित्र इतिहास से अलंकृत किया गया है।

साधारणतया पाठक उसी पुस्तक या ग्रंथ के लिये हाथ बढ़ाता है जिनमें चित्र हों। उनमें भी रंगीन चित्रों के देखते ही उस पुस्तक के अवलोकन की तीव्र इच्छा जागृत हो जाती है चाहे वह कोई भी पुस्तक हो। जब पाठक चित्र देखता है तो पढ़ने की भी कुछ इच्छा हो जाती है।इसी भांति इस अनमोल ग्रंथ के हर पृष्ठ पर अलग-अलग प्रकार के अलौकिक चित्र हैं जो प्रत्यक्षता प्रमाणित करते हैं। निःसंदेह हर एक वयस्क इस ग्रंथ को दूर से देखते ही एक बार तो पूरे पृष्ठों के अवलोकन-की इच्छा करेंगे। इन अपूर्व चित्रों के दर्शन करते ही उनको इतिहास पढ़ने की इच्छा होगी व इतिहास की जानकारी होने से धर्म के प्रति श्रद्धा बढ़ेगी। इस प्रकार बच्चों व नवयुवकों में धर्म के प्रति श्रद्धा व प्रभु के प्रति भक्ति बढ़ाने में यह ग्रंथ प्रेरणाप्रद होगा।

३. तीर्थ-स्थलों का प्रचार होकर आवागमन बढ़ना * तीर्थ-स्थलों का आवागमन बढ़ना उतना ही आवश्यक है जितना धर्म का प्रचार। क्योंकि ये तीर्थ-स्थल ही अपने तीर्थंकर भगवन्तों, आचार्य भगवन्तों, व अपने पूर्वजों आदि की याद दिलाते हैं। इतिहास की प्रमाणिकता के ये स्मारक साक्षी स्वरूप हैं। इन्हें व्यवस्थित ढंग से संभालना हर जैन बन्धु का कर्तव्य हो जाता है। यहाँ का वातावरण इतना निर्मल व शुद्ध है जो मानव को भवसागर से पार लगा देता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस ग्रंथ के प्रकाशन से तीर्थ स्थलों पर यात्रियों का आवागमन बढ़ेगा।

४. बुजुर्गों को प्रतिदिन देवाधिदेव तीर्थाधिराजों के दर्शन का लाभ मिलना* यह प्रकृति का नियम है कि वृद्धावस्था आने पर प्रायः हर मानव में धर्म के प्रति विशेष रुचि जागृत होती है। उस वक्त

उनको समय बिताने व आत्मशान्ति के लिये किसी प्रकार के धर्म कार्य में लीन होने की इच्छा होती है। इन भाग्यवान बंधुओं के लिये यह एक महान अति उपयोगी ग्रंथ सिद्ध होगा, जिसके माध्यम से उनको हर तीर्थाधिराज के साक्षातकृत दर्शन का लाभ मिलेगा। दर्शन करते ही तीर्थ का स्मरण हो आयेगा। हमेशा उनके लिये समय बिताना तो आसान होगा ही, प्रभु-दर्शन से उनको महान पुण्य का लाभ भी होगा व वे अत्यन्त शान्ति का अनुभव भी करेंगे। शास्त्रों में भी बताया गया है कि किसी कठिनाईवश तीर्थ यात्रा न जा सकने पर मानव घर बैठे-बैठे सात्विक भाव से तीर्थाधिराजों के भावपूर्वक दर्शन कर पुण्यपार्जन कर सकता है।

५. पर्यटकों व संशोधकों को मार्ग-दर्शन देना* आज के युग में यातायात के अनेकों साधन होने के कारण कई भारतीय व विदेशी पर्यटक अपने अमूल्य मानव भव में अधिक से अधिक दर्शनीय स्थलों के दर्शन की अभिलाषा रखते हैं। विश्व के विभिन्न स्थलों में बसे सर्व सुविधा-सम्पन्न कई सज्जन ऐसे स्थलों की खोज में घूमते रहते हैं जहाँ उनकी आत्मा को विशेष शान्ति मिल सके। विश्व में दर्शनीय स्थल तो अनेक हैं परन्तु शान्ति का अनुभव तो धार्मिक स्थलों पर ही हो सकता है जहाँ के परमाणु अत्यन्त निर्मल व शुद्ध होते हैं।

जैन तीर्थ-स्थल उन धार्मिक स्थलों में हैं जहाँ उन्हें अपूर्व शान्ति का प्रत्यक्ष अनुभव तो होता ही है साथ ही उन्हें विशिष्ट कला व प्राकृतिक सौन्दर्य के अवलोकन का अमूल्य अवसर भी प्राप्त होता है।

ऐसे स्थलों पर जाने की अभिलाषा रखने पर भी सही मार्ग-दर्शन के बिना पर्यटक कभी-कभी स्थल के निकट पहुँचने पर भी जाने से वंचित रह जाता है। अतः यह अमूल्य ग्रंथ उनके लिये मार्ग-दर्शन के रूप में रहेगा व अधिक से अधिक पर्यटक इन स्थलों के दर्शन का लाभ उठा सकेंगे।

इसी भांति संशोधकों के लिये भी यह ग्रंथ उतना ही लाभप्रद होगा। निःसन्देह इस ग्रंथ में शोधकों के लिये ज्यादा विस्तार पूर्वक वर्णन नहीं है लेकिन हर स्थान के बारे में आवश्यक संकेत दिये गये हैं जिनके माध्यम से संशोधकगण अपने कार्य में प्रगति कर सकेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि संशोधकों को भी यह ग्रंथ उनके संशोधन-कार्य में सहारे के रूप में रहेगा।

कार्य का प्रारंभ :–

कार्य को व्यवस्थित ढंग से आगे बढ़ाने के लिये संस्मृति ग्रंथ समिति व अन्य उपसमितियाँ बनाई गईं एवं "जैन कंट्रिब्यूशन्न टु तमिल लिटरेचर एण्ड आर्ट" विषय पर सेमीनार के विराट सम्मेलन के साथ दिनांक १७.३.७४ को कार्य प्रारंभ हुआ। जिसमें तमिलनाडु के तात्कालीन राज्य-पाल महोदय, विधान सभा के अध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय एवं अनेकों विद्वानों ने भाग लिया। दक्षिण भारत के इतिहास में इस ढंग का यह प्रथम सम्मेलन था, जिसका उल्लेख तमिलनाडु सरकार द्वारा प्रकाशित तमिल अरसु नवम्बर ७४ की पत्रिका में निम्न प्रकार हुआ है।

The Sangh organised recently a Seminar on Jain Contribution to Tamil Art and Literature and an Exhibition for 3 days in connection with 2500th Nirvan of Bhagwan Mahavir. The Seminar and Exhibition were the first of its kind in South India.

सहयोग पाने के लिये भ्रमण :–

विभिन्न जगहों के भाग्यशालियों के नाम सहयोगी के तौर पर इस अनमोल ग्रंथ में अंकित हो सके, इसी उद्देश्य को लेकर पूरे तमिलनाडु का भ्रमण किया गया। बडे ही उत्साह के साथ सब जगह से आवश्यक सहयोग प्राप्त हुआ।

तीर्थों की फोटोग्राफी :–

हम चाहते थे कि इस ग्रंथ में प्रत्यक्ष रंगीन फोटो दिये जाय ताकि दर्शक मुग्ध हो सके। इसी को ध्यान में रखते हुए यहाँ से फोटुग्राफरों के साथ दिनांक १६ जनवरी १६७५ को एक डेलीगेशन भेजा गया। उन्हें सहयोग प्रदान करने के लिये तमाम पेढी के व्यवस्थापकों से अनुरोध किया गया।

यात्रा का अमूल्य अवसर व संघ की सेवा को ध्यान में रखकर डेलीगेशन के सदस्यों ने पूरे भ्रमण का खर्चा खुद किया जिससे संघ को सिर्फ फोटोग्राफर का वेतन व फिल्म का मूल्य ही देना पड़ा। डेलीगेशन १४१ दिनों का निरन्तर भ्रमण करके फोटोग्राफी लेकर दिनांक ५ जून १६७५ को लौटा। इनके प्रयाण में जगह-जगह अनेकों आचार्य भगवन्तों, मुनि महाराजों एवं विशिष्ट व्यक्तियों से वार्तालाप हुआ व सबने कार्य की सराहना करते हुए आशीर्वाद दिया।

लोद्रवपुर में चमत्कार :—

लोद्रवपुर में हुए चमत्कार का विवरण लोद्रवपुर तीर्थ के इतिहास में पृष्ठ १६४ पर दिया गया है। ठीक फोटोग्राफी के समय अधिष्ठायक देव का साक्षात् में प्रकट होना इस ग्रंथ के लिये पार्श्वप्रभु का प्रत्यक्ष आशीर्वाद है।इस अनहोनी घटना ने इस ग्रंथ की महानता को प्रमाणित किया है। यह आशीर्वाद डेलीगेशन के लिए ही नहीं इस संस्था एवं इस ग्रंथ के दर्शकों व पाठकों के लिये भी अति दुर्लभ महत्वपूर्ण आशीर्वाद है। श्री धरणेन्द्रदेव के अतिदुर्लभ चित्र का इस ग्रंथ में समाविष्ठ होना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस अलौकिक, अचिंतनीय, अवर्णनीय, अतिदुर्लभ घटना के रहस्य को समझना मेरी शक्ति के परे है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्री धरणेन्द्रदेव की अनुकम्पा से दर्शकगण विशेष आत्मशांति का अनुभव करेंगे।

ग्रंथ में तीर्थ-स्थलों का समावेश :–

भारत भूमि में असंख्य जैन-मन्दिर व स्मारक थे जिनका इतिहास साक्षी है। आज भी अनेकों खण्डहर रूप में अपूजित मन्दिर व गुफाएँ आदि हर प्रान्त में जगह-जगह पाये जाते हैं, तो कई परिवर्तित भी हो चुके हैं। तब भी आज पूजित जिन मन्दिरों की संख्या लगभग १५,००० से कम नहीं होगी जो भारत के तमाम प्रान्तों में स्थित हैं। इनमें लगभग ५ हजार मन्दिर सौ साल से ज्यादा प्राचीन होंगे। परन्तु इन सबका वर्णन संभव नहीं।

हमने निम्न स्थानों के जिन मन्दिरों को यथा संभव इस ग्रंथ में समाविष्ठ किया है। ये प्राचीन स्थल आज भी गौरव के साथ अपने पूर्व प्रतिभा की याद दिलाते हैं। इस का श्रेय अपने परमपूज्य आचार्य भगवन्तों व मुनि महाराजों को है जिनके उपदेश से हमारे पूर्वज कई राजा महाराजाओं, मंत्रियों व श्रेष्ठियों ने बड़ी ही लग्न व श्रद्धा से इन भव्य मन्दिरों का निर्माण करवाया। जिन पर जैन समाज को अतीव गौरव है। आज भी हम उन पावन स्थलों की यात्रा कर पुण्योपार्जन करके अपने को धन्य समझते हैं।

* तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियाँ – जहाँ पर प्रभु के च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान व मोक्ष-कल्याणक हुए हैं।
* चमत्कारिक (अतिशय) या सिद्ध क्षेत्र।
* कलाकृति आदि में विशिष्ट मन्दिर।
* प्राचीन क्षेत्र – जहाँ का इतिहास सात सौ वर्षों के पूर्व का हो वहाँ का प्राचीन पूजित जिन मन्दिर।
* किसी भी पंचतीर्थी में स्थान पाने वाले स्थल।

हमने कई पत्र-पत्रिकाओं में उक्त प्रकार के पावनस्थलों की जानकारी भेजने के लिये आम अनुरोध किया था। प्राप्त जानकारी, हमारा अनुभव व कई ग्रंथ एवं पुस्तकों आदि का सहारा लेकर इन पावन स्थलों को इस ग्रंथ में समाविष्ट किया है। पाठकों से अनुरोध है कि अगर और भी कोई स्थल रह गया हो तो हमें आवश्यक जानकारी भेजें। परिशिष्ट प्रकाशन की आवश्यकता समझी गई तो सुविधा होने पर प्रकाशित किया जायेगा। उस समय फोटो आदि प्राप्त होने पर उस स्थान को मिलाने का प्रयास किया जायेगा।

इतिहास व अन्य जानकारी :–

हम चाहते थे कि इस ग्रंथ में तीर्थों की जानकारी के अतिरिक्त जैन-दर्शन, साहित्य व कला संबंधी भी कुछ जानकारी दें। परन्तु तीर्थों की जानकारी पाकर व्यवस्थित ढंग से गठन करने में ही इतना समय लग गया। जिसके कारण उन विषयों पर ध्यान नहीं दिया जा सका। अतः मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। हमने हर तीर्थ के विवरण को अनेकों ग्रंथ व पुस्तकों की मदद एवं प्रत्यक्ष प्राप्त जानकारी से गठन कर पेढ़ी व संबंधित अध्यक्ष महोदय को भेजकर उनसे आये सुझावों पर गौर करके तीर्थों के विवरणों को मुद्रित किया है। इस कार्य में तमाम तीर्थ स्थलों के व्यवस्थापकों व कर्मचारियों का जो सहयोग प्राप्त हुआ वह सराहनीय है। स्व० सेठ श्री कस्तूरभाई (सेठ आनन्दजी कल्याणजी पेढी के प्रमुख) के साथ अनेकों बार पत्र व्यवहार एवं परस्पर वार्तालाप में इन्होंने हर वक्त अपने अमूल्य सुझाव दिये जो सराहनीय है।

इस कार्य में कई आचार्य भगवन्तों व मुनि महाराजों का भी सहयोग प्राप्त हुआ जिनमें यहाँ विराजित आचार्य श्री विक्रमसूरीश्वरजी व मुनि श्री राजयशविजयजी आदि का सहयोग उल्लेखनीय है।

नमूने के तौर पर झांकी का विमोचन :–

हमने इस ग्रंथ के प्रारुप का विमोचन "तीर्थ दर्शन की एक झांकी" के रूप में पांच भाषाओं में दिनांक २३.४.७८ चैत्री पूर्णिमा के शुभ दिन परमपूज्य श्री विशालविजयजी महाराज की निश्रा में यहाँ के राज्यपाल श्री प्रभुदासजी पटवारी के हाथों कराया था। इस विमोचन का मुख्य उद्देश्य इस ग्रंथ का प्रचार व आचार्य भगवन्तों, मुनि महाराजों एवँ समाज के विशिष्ट व्यक्तियों के सुझावों को पाना था ताकि तीर्थों के इतिहास का गठन सुन्दर ढंग से किया जा सके। अतः हमने इस झांकी की प्रतियों को अनेकों आचार्य भगवन्तों, मुनि महाराजों एवं ३००० से ज्यादा श्वेताम्बर व दिगम्बर मन्दिरों को भेजा। साथ में प्रचार के लिये पोस्टर भी भेजे। हमें प्रसन्नता है कि कार्य आम तौर पर पसन्द किया गया व अनेकों आचार्य भगवन्तों व मुनि महाराजों के आशीर्वाद भी प्राप्त हुए।

अग्रीम बुकिंग की आवश्यकता :–

माननीय सहायकों से हमने जितना सहयोग प्राप्त किया था उससे पाँच - छः गुना खर्च अधिक

था। हम यह नहीं चाहते थे कि कर्ज लेकर आवश्यकता की पूर्ती की जाय। अतः कम मूल्य में अग्रिम बुकिंग करके आवश्यकता की पूर्ती करने का निर्णय लिया गया।इस प्रयत्न में भी समाज का प्रोत्साहन सहित सहयोग प्राप्त हुआ।

विलम्ब का कारण :–

हम इस कार्य की व्यापकता का कोई अनुमान नहीं लगा सके थे। हमने समझा था कि फोटोग्राफी होते ही अन्य कार्य शीघ्र हो जायेंगे। परन्तु यह तो श्रीगणेश था। हमने यह भी सोचा था कि तीर्थों के इतिहास का गठन पेढ़ी वालों के सहयोग से शीघ्र हो जायेगा। लेकिन इसमें भी हमारा अनुमान गलत था। शोध कार्य के कारण विषय का गठन करने में अनुमान से कई गुना अधिक समय लगा। हमारा उद्देश्य था कि हर पेढीवालों को जानकारी देकर व उनके सुझावों पर गौर करके विवरण मुद्रित करें। अतः पत्र व्यवहार में अत्यन्त समय निकल गया तथा निरन्तर कार्य करने पर भी इतना समय लग गया। नये ढंग का व अति विशाल कार्य होने के कारण समय का बराबर अनुमान नहीं लगाया जा सका अतः ग्रंथ नियत समय तक प्रकाशित नहीं हो सका। जिससे सहायक महानुभावों व अग्रिम बुकिंग कर्ताओं को लम्बे समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ी इसके लिये मैं क्षमा प्रार्थी हूँ व उनकी सहनशीलता के लिये मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

विभिन्न भाषाओं में प्रकाशन :–

हमने सूचित किया था कि ग्रंथ विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित किया जायेगा। लेकिन प्रति भाषा के लिये न्यूनतम पांच सौ प्रतियों की बुकिंग आवश्यक है। हिन्दी व गुजराती की बुकिंग निर्धारित संख्या से ज्यादा हो पाई जिनका प्रकाशन कर रहे हैं। अब हम अंग्रेजी भाषा में प्रकाशन का प्रयत्न करेंगे ताकि अन्य लोगों के लिये भी यह ग्रंथ उपयोगी हो सके।

पर्यटकों से :–

तीर्थ स्थानों पर जैन-यात्रियों के लिए आवास का साधन व भोजनशालाओं की कई स्थानों पर सुविधाएँ हैं। अन्य लोगों को पूर्व पत्र व्यवहार करके या अपने साधन के साथ जाना सुविधाजनक होगा। जैन तीर्थ-क्षेत्र प्रायः एकान्त में शान्त व निर्मल वातावरण में स्थित हैं, जो अपनी विभिन्न शैली की कला के लिए प्रसिद्ध हैं। ऐसी कला के नमूने अन्यत्र कम मिलेंगे।

आप सिर्फ पर्यटक के रूप में न जाकर अपने को यात्री समझें व प्रभु को भावपूर्वक वन्दन करें। आप भी विशिष्ट आनन्द का अनुभव करेंगे।

जैन-यात्रियों के लिये कुछ मुख्य सुझाव :–

हमें यात्रा में जो अनुभव हुए उन्हें यात्रियों के ध्यान में लाना आवश्यक समझता हूँ।

१. यात्रा शान्ति से करें चाहे यात्रा कम जगह की हों। तभी आप विशेष आनन्द का अनुभव करेंगे।

२. यात्रा में खाने की कुछ सूखी सामग्री साथ रखें ताकि अधिक जगह की आप यात्रा कर सकेंगे। दिन में एक बार गरम रसोई का साधन मिल जाय तो स्फूर्ति के लिए पर्याप्त है।

३. भ्रमण का मार्ग प्रथम निश्चित कर लें ताकि समय व्यर्थ न जाय।

४. यात्रा में कम से कम सामान, ओढ़ने-बिछाने का साधन व पूजा के वस्त्र साथ रखें।

५. यात्रा जाने के पहले वहाँ की विशेषता आदि की जानकारी पढ़कर जावें ताकि आप विशेष प्रफुल्लता का अनुभव करेंगे।

६. तीर्थ-स्थानों पर संसारिक चर्चाओं का यथा-संभव त्याग करें तो आप अपूर्व शान्ति का अनुभव करेंगे।

७. यात्रा का समय दिवाली के पश्चात् चैत्र तक ऋतु की दृष्टि से उत्तम है। वर्षा ऋतु में भ्रमण में कठिनाई पड़ सकती है। अगर सुविधापूर्वक तीर्थ स्थान तक पहुँच सकें तो हर ऋतु उत्तम है।

८. लम्बी दूर का रास्ता रेल से पार करके वहाँ आस पास के तीर्थों की यात्रा बस या टैक्सी द्वारा करें तो सुगमता होगी व अधिक स्थानों की यात्रा हो सकेगी।

९. तीर्थ स्थानों के बने हुए नियमों का पालन करें ताकि हम आशातना से बचते हुए यात्रा का प्रतिफल पा सकेंगे।

१०. हर वर्ष किसी तीर्थ की यात्रा अवश्य करें। उसमें भी अगर हर वर्ष अलग-अलग दिशा में जायेंगे तो धीरे-धीरे सभी तीर्थों की यात्रा हो जायेगी।

११. स्पेशल बस द्वारा लम्बी यात्रा करनेवाले यात्री ध्यान रखें कि बस एक दिन में लगभग २५० कि० मी० से अधिक रास्ता तय नहीं कर सकती। उसी प्रकार से अपना मार्ग निश्चित करें। पहले, तीर्थ व अन्य स्थानों पर पत्र व्यवहार कर लें। रसोई का साधन अपने साथ रखें, अन्यथा मार्ग में कठिनाई होगी।

आभार प्रदर्शन :–

मैं परमपूज्य आबू के महान योगीराज जगद्गुरु आचार्य सम्राट विजय श्री शान्तिसूरीश्वरजी का अत्यन्त आभारी हूँ जिनकी अदृश्य प्रेरणा से ही इतना विशाल कार्य उठाया व उनकी असीम कृपा व अलौकिक अदृश्य शक्ति से यह कार्य सम्पन हो सका। इनका आशीर्वाद ही संस्था के प्रगति का कारण है जो हम प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करते आ रहे हैं।

हमारे भूतपूर्व अध्यक्ष स्व० श्री जतनलालजी डागा का मैं आभारी हूँ जिन्होंने, संस्था की स्थापना के समय से अपने अंत समय तक मुझे हर कार्य में उत्साहित करते हुए मार्गदर्शन दिया। इस ग्रंथ के कार्य में भी आप मुझे मार्ग दर्शन देते रहे जिसके कारण कठिनाइयाँ सुलभ होती गई। मैं स्व० स्वामीजी श्री रिषबदासजी, श्री मिलापचन्दजी ढड्ढा, श्री बहादुरसिंहजी बोथरा, श्री चम्पालालजी मरलेचा को भी आभार प्रदर्शन करता हूँ जिन्होंने इस कार्य में अति उत्साह के साथ भाग लिया था।

स्व० शेठ श्री कस्तूरभाई, सादू श्री शान्तिप्रसादजी जैन, श्री सम्पतलालजी कोचर का भी मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने इस कार्य में अपने अमुल्य अनुभवों से मार्ग दर्शन दिया है।

हमारे अध्यक्ष श्री मानकचन्दजी बेताला का मैं आभारी हूँ जो अपने अमूल्य अनुभवों से मार्ग-दर्शन देते आ रहे हैं। संघ के सभी सदस्यों, संस्मृति ग्रंथ समिति के मंत्री श्री लालचन्दजी जैन, उपसमितियों के मंत्री श्री कपूरचन्दजी जैन, प्रकाशमलजी समदड़िया, केशरीमलजी सेठिया, पुखराजजी जैन, सायरचन्दजी नाहर, आर. के. जैन, आर. नागस्वामी व अन्य सदस्यों द्वारा प्रदान किये गये सहयोग के लिये हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। माननीय सहायक महोदयों का मैं विशेष आभारी हूँ जिन्होंने कार्य के प्रारंभ में सहायता देकर उत्साह बढ़ाया है अतः उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

फोटोग्राफी डेलीगेशन के सदस्यों श्रीमान जीवनचन्दजी समदड़िया, सम्पतलालजी झाबख, आसकरणजी गोलेछा, ताराचन्दजी छजलाणी व गेनमलजी संचेती का मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने अपना १४१ दिनों का अमूल्य समय निकालकर फोटोग्राफी के समय मेरे साथ रह कर सहयोग

प्रदान किया है। फोटोग्राफी के लिए दुबारा जाते समय सादड़ी के प्रेस फोटोग्राफर श्री कांतिलालजी रांका ने अपने केमरों आदि सहित साथ रहकर निःस्वार्थ सेवा की है। अतः इन सबको मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। तमाम पेढ़ी के व्यवस्थापकों को भी बारंबार धन्यवाद देता हूँ जिनके पूर्ण सहयोग से ही यह कार्य सुगमता पूर्वक सुन्दर ढंग से पूर्ण हो सका।

श्री जयसिंगजी श्रीमाल, श्री कान्तिभाई शाह, श्री गेनमलजी संचेती, श्री भीखमचन्दजी वैद व हंसराजजी लूणिया का मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने विवरण गठन करने व अन्य कार्यों में निरन्तर अपना समय निकाल कर पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। अतः मैं इन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

परमपूज्य आचार्य श्री विशालसेनसूरिजी महाराज का मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने ग्रंथ के प्रचार व अग्रिम बुकिंग करवाने में विशेष सहयोग प्रदान किया है। मैं उन सभी सहायकों का भी आभारी हूँ जिन्होंने बुकिंग करने व कराने में विशेष सहायता प्रदान की है। उन सब का विवरण देने में मैं असमर्थ हूँ एवँ उन सबको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

मेसर्स प्रसाद प्रोसेस (प्रा०) लिमिटेड–मद्रास, ऑल इन्डिया प्रेस–पान्डिचेरी, जन्म भूमि प्रेस–बम्बई, फोटोग्राफर गोपालरत्नम्–मद्रास, एवं सी० हरिशंकर गुप्ता–मद्रास, को भी धन्यवाद देना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने प्रिंटिंग, फोटोग्राफी व संशोधन कार्य में अत्यन्त रुचि लेकर कार्य को सुन्दर ढंग से सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया है।

जिन कार्यकर्तावों ने अपना अमूल्य समय निकाल कर तन, मन या धन से निःस्वार्थ सेवा करते हुए इस पुनीत कार्य में सहयोग प्रदान किया है उन सबका मैं अत्यन्त आभारी हूँ। कार्यकर्ताओं की इस प्रकार की सेवा के कारण कागज व मुद्रण व्यय के अतिरिक्त संघ के कार्यालय का व अन्य खर्चा नहीं के बराबर था अतः उनकी सेवा के लिये उन सबकों मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

अन्त में मैं उन सभी आचार्य भगवन्तों, मुनि महाराजों व महानुभावों को आभार प्रदर्शन करते हुए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग प्रदान किया है।

त्रुटियों के लिये क्षमा :–

इस ग्रंथ के लिये सामग्री जुटाने व प्रकाशन करने में जितना बन सका उतना यथासंभव कार्य किया गया है। परन्तु त्रुटियों का होना स्वाभाविक है अतः आचार्य भगवन्तों, मुनि महाराजों, विद्वानों, तीर्थों के व्यवस्थापकों, सहायकों व पाठकों से निवेदन है कि कृपया त्रुटियों के लिये क्षमा करें व अपने अमुल्य सुझावों के साथ उन्हें हमारे ध्यान में लावें।

तीर्थ क्षेत्र व तीर्थ यात्रा :–

तीर्थ क्षेत्र अपना विशिष्ट महत्व रखते हैं। वहाँ के परमाणुओं में ऐसी अद्‌भुत शक्ति रहती है जो यात्रियों को भक्ति की तरफ सहज ही में खींच लेती है। जहाँ प्रभु के कल्याणक हुए हों, जहाँ प्रभु के चरण-स्पर्श हुए हों, जहाँ सदियों से प्रभु-भक्ति व पूजा हो रही हों, जहाँ असंख्य मुनियों ने तपस्या की हों, वहाँ विशिष्ट प्रकार के शुद्ध परमाणु फैले बिना नहीं रहते। वे आँखों से ओझल रहते हुए भी प्राणी की आत्मा पर ऐसा असर करते हैं कि वह बाह्य कार्य-कलाप भूलकर प्रभु भक्ति में तल्लीन हो जाता है। जिस जगह के जैसे परमाणु होते हैं उसी ढंग का प्रभाव प्राणी की आत्मा पर पड़ता है। इसीलिये परम्परा से हर धर्म में तीर्थ क्षेत्रों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

तीर्थ यात्रा करने वाला व्यक्ति भी उस दौरान एक अलग ही शान्ति का अनुभव करता है। यह शास्त्रसिद्ध तो है ही प्रत्यक्ष प्रमाण भी है, अनेकों ने अनुभव किया है व करते आ रहे हैं। तीर्थ यात्रा में भ्रमण करने वाले प्राणी प्रभु में खो जाते हैं व अपने कर्मों का क्षय करते हुए पुण्य का संचय करते हैं। अतः तीर्थ यात्रा पाप विनाशकारी, पुण्योपार्जनकारी, सर्वसुखकारी व आत्म हितकारी है जो मनुष्य के जीवन में अत्यन्त आवश्यक है।

अंत में श्री जिनेश्वरदेव व गुरु भगवन्तों को यह ग्रंथ समर्पण करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि ''तीर्थ-दर्शन'' घर घर की ज्योति बने व सभी पाठकों को तीर्थ क्षेत्रों की यात्रा का सुअवसर प्राप्त हों। इसी अभिलाषा के साथः–

यू. पन्नालाल वैद
मंत्री, श्री महावीर जैन कल्याण संघ.

नवकार महामंत्र

परमेष्टी नमस्कार सर्व मंगलों में प्रधान, विश्व प्रेम का प्रतीक व सर्व धर्मों का मूल है। इस महामंत्र में विश्व के तमाम अरिहंतादि देवों को नमस्कार किया है। इनके आलम्बन से राग द्वेष एवँ मोह का क्षय होकर शुभ भाव प्रकट होते हैं। यह महामंत्र सभी पापों का नाशक है व सभी मंगलों का उत्पादक है। यह मंत्र दुष्कृत का क्षय करता है व पुण्य का संचार करता है। चौदह पूर्वी भी अन्त समय में इस महामंत्र का स्मरण करते हैं। इसीलिये इसको चौदह पूर्व का सार बताया है। श्री पंचपरमेष्ठी नवकार महामंत्र अचिन्त्य महिमा से भरित है।

इस महामंत्र से रोग निवारण मंत्र, लक्ष्मी-प्राप्ति मंत्र, सर्वसिद्धिमंत्र, अचिन्त्य फलप्रदायक मंत्र, पापभक्षिणी विद्यारूप मंत्र, रक्षा मंत्र, अग्नि निवारक मंत्र, महामृत्यंजय मंत्र, विवेक प्राप्ति मंत्र, सर्वकार्य साधक मंत्र, सर्व शान्ति-दायक मंत्र, व्यन्तर बाधा विनाशक मंत्र, आदि अनेकों मंत्रों की उत्पत्ति हुई है, जिसकी कई आराधकों ने आराधना करके विस्तारपूर्वक वर्णन किया है।

इसके स्मरण मात्र से शान्ति, तुष्टि व पुष्टि की प्राप्ति होती है। शास्त्रों में भी इस महामंत्र की आराधना को विश्व सुख का अद्वितीय कारण माना है। जैनागमों का प्रथम सूत्र श्री पंचमंगल याने नमस्कार सूत्र है।

ऐसे महामंत्र का श्रद्धापूर्वक स्मरण कर देवाधिदेव तीर्थाधिराजों को भावपूर्वक वन्दन करें—

ॐ

नमो अरिहंताणं,

नमो सिद्धाणं,

नमो आयरियाणं,

नमो उवज्झायाणं,

नमो लोए सव्वसाहूणं ।

एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पाव प्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।

नवकार महामंत्र

परमेष्ठी नमस्कार सर्व मंगलों में प्रधान, विश्व प्रेम का प्रतीक व सर्व धर्मों का मूल है। इस महामंत्र में विश्व के तमाम अरिहंतादि देवों को नमस्कार किया है। इनके आलम्बन से राग द्वेष एवं मोह का क्षय होकर शुभ भाव प्रकट होते हैं। यह महामंत्र सभी पापों का नाशक है व सभी मंगलों का उत्पादक है। यह मंत्र दुष्कृत का क्षय करता है व पुण्य का संचार करता है। चौदह पूर्वी भी अन्त समय में इस महामंत्र का स्मरण करते हैं। इसीलिये इसको चौदह पूर्व का सार बताया है। श्री पंचपरमेष्ठी नवकार महामंत्र अचिन्त्य महिमा से भरित है।

इस महामंत्र से रोग निवारण मंत्र, लक्ष्मी-प्राप्ति मंत्र, सर्वसिद्धिमंत्र, अचिन्त्य फलप्रदायक मंत्र, पापभक्षिणी विद्यारूप मंत्र, रक्षा मंत्र, अग्नि निवारक मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र, [illegible] मंत्र, सर्वकार्य साधक मंत्र, सर्व शान्ति-दायक मंत्र, [illegible] मंत्र, आदि अनेकों मंत्रों की उत्पत्ति हुई है, जिसकी [illegible] करके विस्तारपूर्वक वर्णन किया है।

इसके स्मरण मात्र से शान्ति, तुष्टि व पुष्टि की प्राप्ति होती है। शास्त्रों में भी इस महामंत्र की आराधना को विश्व सुख का अद्वितीय कारण माना है। जैनागमों का प्रथम सूत्र भी पंचमंगल याने नमस्कार सूत्र है।

ऐसे महामंत्र का श्रद्धापूर्वक स्मरण कर देवाधिदेव [illegible] को भावपूर्वक वन्दन करें—

ॐ

नमो अरिहंताणं,

नमो सिद्धाणं,

नमो आयरियाणं,

नमो उवज्झायाणं,

नमो लोए सव्वसाहूणं ।

एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पाव प्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।



बिहार



Bihar
JAIN PILGRIM CENTRES
STATE CAPITAL
DISTRICT HEADQUARTERS
DISTRICT BOUNDARIES
NEPAL
UTTAR PRADESH
BETTIAH
MOTIHARI
SITMARHI
GOPALGANJ
SIWAN
MADHUBHANI
DARBHANGA
MUZAFFARPUR
SAMASTIPUR
SAHARSA
PURINA
CHHAPRA
HAJIPUR
ARA
PATNA
BEGUSARA
MUNGER
KATIHAR
BHAGALPUR
BIHARSHARIF
SASARAM
NAWADA
GAYA
AURANGABAD
GIRIDIH
DUMKA
DALTONGANJ
HAZARIBAGH
DHANBAD
RANCHI
WEST BENGAL
MADHYA PRADESH
CHAIBASA
ORISSA
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11

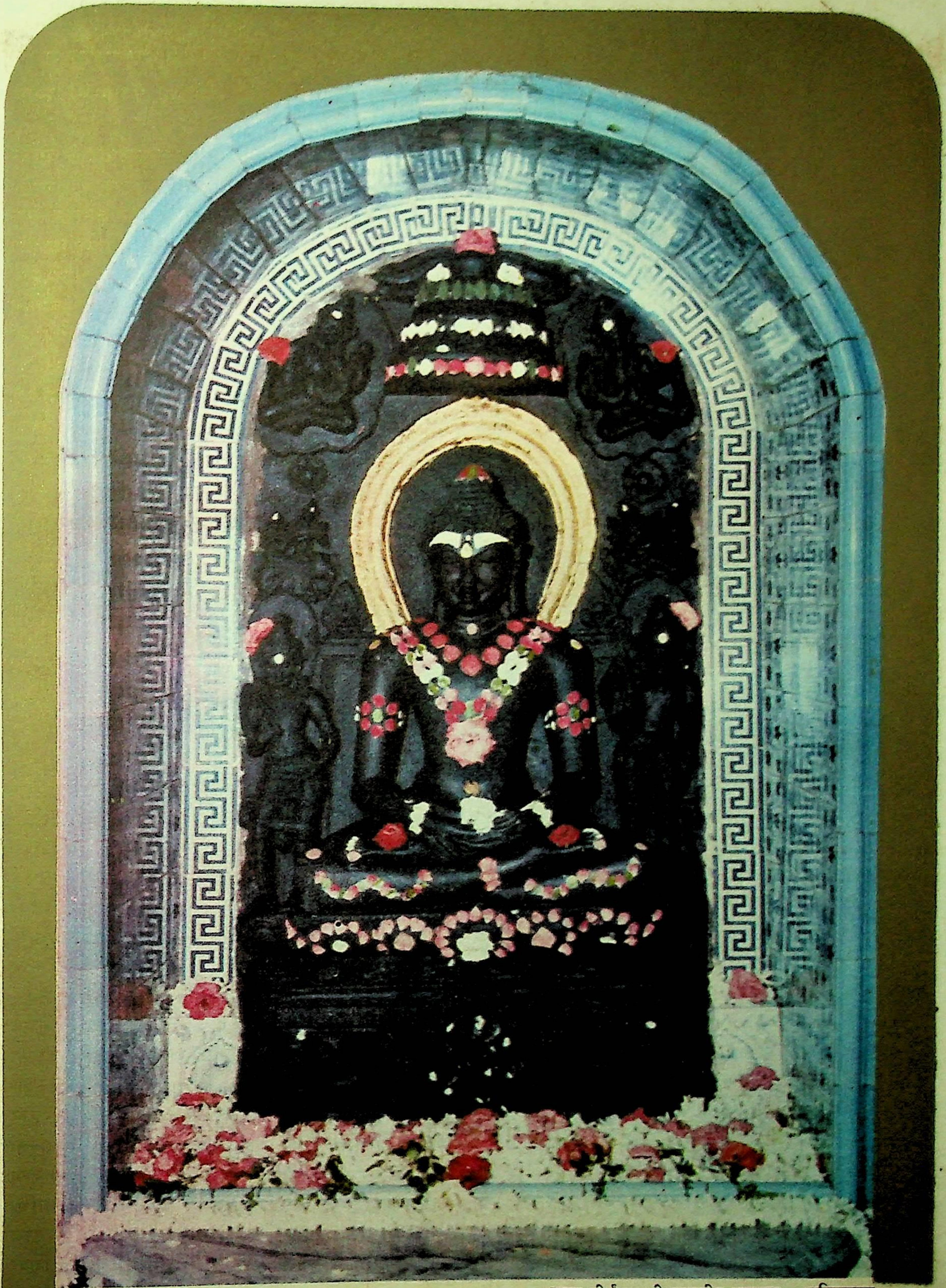
श्री क्षत्रियकुण्ड तीर्थ

तीर्थाधिराज ❋ श्री महावीर भगवान, पद्मासनस्थ, श्याम-वर्ण, लगभग ६० सें० मी०।

तीर्थ स्थल ❋ क्षत्रियकुण्ड की तलेटी कुण्डघाट से लगभग ५ कि० मी० दूर वनयुक्त पहाड़ी पर।

प्राचीनता ❋ इस तीर्थ का इतिहास चरम तीर्थंकर भगवान श्री महावीर के पूर्व से प्रारम्भ होता है। भगवान महावीर के पिता ज्ञात वंशीय राजा सिद्धार्थ थे। यह क्षत्रियकुण्ड उनकी राजधानी थी। राजा सिद्धार्थ की शादी वैशाली गणतन्त्र के गणाधीस राजा चेटक की बहिन त्रिशला से हुई थी। (दिगम्बर मान्यतानुसार त्रिशला को राजा चेटक की पुत्री बताया जाता है) राजा चेटक श्री पार्श्वनाथ भगवान के अनुयायी थे। राजा चेटक की यह प्रतिज्ञा थी कि उनकी पुत्रियों का विवाह भी जैनी राजाओं से ही किया जायेगा। कितनी धर्म श्रद्धा थी उनमें। राजा सिद्धार्थ अति ही शांत, धर्म प्रेमी व जन-प्रिय राजा थे। क्षत्रियकुण्ड के निकट ही ब्राह्मणकुण्ड नाम का शहर था। वहाँ ऋषभदत्त नाम का ब्राह्मण रहता था। उनकी धर्म पत्नी का नाम देवानन्दा था। आषाढ़ शुक्ला छठ के दिन उतराषाढ़ा नक्षत्र में माता देवानन्दा ने महा स्वप्न देखे। उसी क्षण प्रभु का जीव अपने पूर्व के २६ भव पूर्ण करके माता की कुक्षि में प्रविष्ट हुआ। स्वप्नों का फल समझकर माता-पिता को अत्यन्त हर्ष हुआ। गर्भकाल में उनके घर में धन-धान्य की वृद्धि हुई।

परन्तु जैन मतानुसार तीर्थंकर पद प्राप्त करने वाली महान आत्माओं के लिये क्षत्रियकुल में जन्म लेना आवश्यक समझा जाता है। परन्तु मरीचि के भव में किये कुलाभिमान के कारण उन्हें देवानन्दा की कुक्षि में जाना पड़ा,–ऐसी मान्यता है। श्री सौधर्मेन्द्र देव ने देवानन्दा माता के गर्भ को क्षत्रिय-कुल के ज्ञात वंशीय राजा सिद्धार्थ की रानी त्रिशला की कुक्षि में स्थानान्तर करने का नैगमेषी देव को आदेश दिया। इन्द्र के आज्ञानुसार देव ने सविनय भक्ति भाव पूर्वक आश्विन कृष्ण तेरस के शुभ दिन उतराषाढा नक्षत्र में गर्भ का स्थानांतर किया, उसी क्षण विदेही पुत्री माता श्री त्रिशला ने तीर्थंकर जन्म सूचक महा-स्वप्न देखे। इस प्रकार भगवान का जीव माता त्रिशला की कुक्षि में प्रवेश हुआ। (दि० मान्यतानुसार गर्भ का स्थानान्तर नहीं हुआ माना जाता हैं) गर्भ काल के दिन पूर्ण होने पर माता त्रिशला ने वि० सं० के ५४३ वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को अर्द्ध रात्री के समय सिंह लक्षण वाले पुत्र को जन्म दिया। इन्द्रादि देवों ने प्रभु को मेरू पर्वत पर ले जाकर जन्माभिषेक महोत्सव अति ही आनन्द व उल्लास पूर्वक मनाया। राज दरबार में भी बधाइयाँ बंटने लगी। कैदियों को रिहा किया

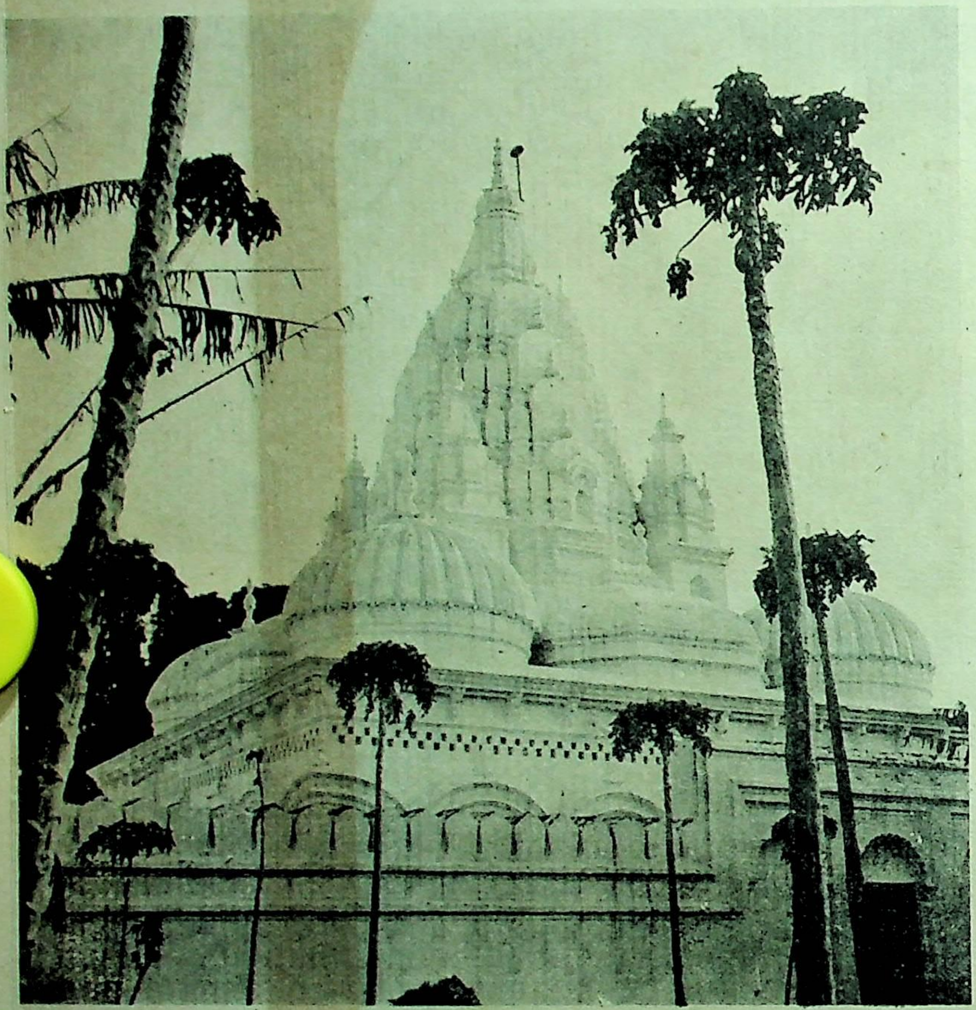


चरम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान – क्षत्रियकुण्ड

सहायक : शाह केशरीमलजी धनराजजी, गढ़ सिवाणा (राज०) वाले, मद्रास– १.

गया। जन साधारण में खुशी की लहर लहराने लगी। प्रभु का माता त्रिशला की गर्भ में प्रविष्ट होने के पश्चात् समस्त क्षत्रियकुण्ड राज्य में धन-धान्यादि की वृद्धि होकर चारों तरफ राज्य में सुख शान्ति बढ़ी जिस कारण जन्म से बारहवें दिन प्रभु का नाम वर्द्धमान रखा। (दि० मान्यतानुसार प्रभु का जन्म वैशाली के अन्तर्गत वासुकुण्ड में या नालन्दा के निकट कुण्डलपुर में हुआ बताया जाता है।

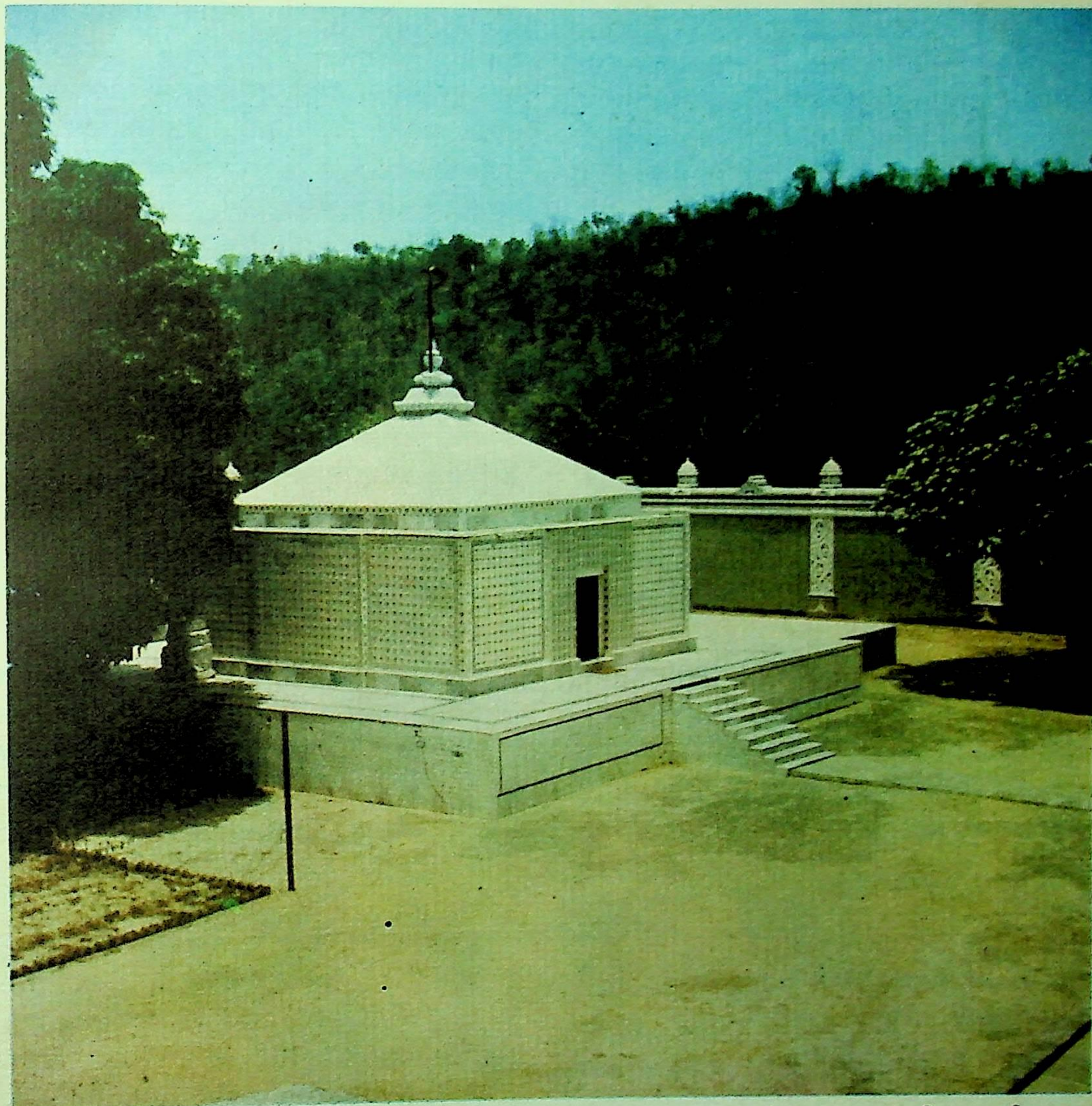
श्री वर्द्धमान बचपन से ही वीर व निडर थे। एक बार प्रभु अपने मित्रों के साथ आमलकी क्रीड़ा करते थे। तब एक देव सर्प का रूप धारण कर झाड़ से लिपट गया। प्रभु ने निडरता से सर्प को पकड़कर एक ही झटके से अलग कर दिया। वही देव बालक बनकर इनके खेल क्रीड़ा में शामिल हुआ हारने पर उसे घोड़ा बनना पड़ा। उसपर ज्यों ही प्रभु असवार हुए कि विराट व भयानक रूप करके वायुवेग से दौड़ने लगा। प्रभु का मुष्टी प्रहार होते ही वह शान्त हो गया। देवने विनयपूर्वक वन्दन करते हुए प्रभु को वीर नाम से संबोधित किया इस कारण प्रभु महावीर भी कहलाए। प्रभु निडर व वीर तो थे ही विद्या में भी निपुण व ज्ञानवान थे। जिसका वर्णन देव द्वारा पाठशाला में उनके उपाध्याय के सन्मुख पूछे गये प्रश्नों आदि में मिलता है।



लछवाड मन्दिर का दृश्य – क्षत्रियकुण्ड तीर्थ

प्रभु की इच्छा शादी करने की न होने पर भी उनके माता-पिता की प्रसन्नता के लिये राजा समरवीर की पुत्री श्री यशोदा देवी के साथ उनका विवाह सम्पन्न हुआ। (दि० मान्यता में शादी नहीं हुई मानी जाती है) श्री यशोदा देवी की कुक्षि से प्रियदर्शना नाम की कन्या का जन्म हुआ, जिसका विवाह श्री जमाली नामक राजकुमार के साथ हुआ। जमाली प्रभु की बहिन सुदर्शना के पुत्र थे। प्रभु २८ वर्ष के हुए तब उनके माता-पिता का देहान्त हुआ एवं प्रभु के भ्राता श्री नन्दीवर्धन ने राज्य भार संभाला। प्रभु का दिल संसारिक कार्यों में नहीं लग रहा था जिससे वे हर वक्त व्याकुल रहते थे। भ्राता नन्दीवर्धन से बार बार आग्रह करने पर उन्होंने दीक्षा के लिये अनुमति प्रदान की। प्रभु ने राज्य सुख त्यागकर प्रसन्नचित्त वर्षीदान देते हुए "ज्ञात खण्ड" उपवन में जाकर वस्त्राभूषण त्याग करके पंच-मुष्टि लोचकर वि० सं० के ५१३ वर्ष पूर्व मार्गशीर्ष कृष्णा दशमी के शुभ दिन अति कठोर दीक्षा अंगीकार की। उसी वक्त प्रभु को मनः पर्यव ज्ञान उत्पन्न हुआ। उस समय प्रभु की उम्र ३० वर्ष की थी। जब प्रभु ने वस्त्राभूषणों का त्याग किया तब इन्द्र ने देवदूश्य अर्पण किया। इस प्रकार प्रभु के तीन कल्याणक इस पावन भूमि में हुए। दीक्षा के पश्चात् प्रभु को अनेकों उपसर्ग सहने पड़े। प्रभु ने निडरता, धर्मवीरता, सहनशीलता, मानवता, निर्भयता व दयालुता दिखाकर विश्व में मानव धर्म के लिये एक नई ताजगी प्रदान की।

कल्प-सूत्र में भी प्रभुवीर की जन्म-भूमि क्षत्रियकुण्ड का



प्रभु महावीर जन्म स्थान मन्दिर – क्षत्रियकुण्ड

वर्णन विस्तार पूर्वक किया गया है। सं० १३५२ में श्री जिनचन्द्रसूरिजी के उपदेश से वाचक राजशेखरजी, सुबुद्धिराजजी, हेमतिलकगणी, पुण्य कीर्तिगणी आदि श्री बड़गाँव (नालन्दा) में विचरे थे तब वहाँ के ठाकुर रत्नपाल आदि श्रावकों ने सपरिवार क्षत्रियकुण्ड ग्राम आदि तीर्थ स्थानों की यात्रा की थी जिसका वर्णन प्रधानाचार्य गुर्वावली में आता है।

पन्द्रहवीं शताब्दी में आचार्य श्री लोकहिताचार्यसूरिजी क्षत्रियकुण्ड आदि की यात्रार्थ पधारने का उल्लेख श्री जिनोदयसूरिजी प्रेषित विज्ञप्ति महालेख में मिलता है। सं० १४६७ में श्री जिनवर्धन सूरिजी द्वारा रचित पूर्वदेश चैत्य परिपाटी में क्षत्रियकुण्ड का वर्णन है। सोलहवीं सदी में विद्वान श्री जयसागरोपाध्यायजी द्वारा यहाँ की यात्रा करने का वर्णन दशवेकालिकवृति में मिलता है। मुनि जिनप्रभसूरिजी ने भी अपनी तीर्थ माला में क्षत्रियकुण्ड का वर्णन किया है। कवि हंससोमविजयजी द्वारा सं० १५६५ में रचित तीर्थमाला में भी इसका वर्णन है – अठारहवीं सदी में श्री शीलविजयजी ने इस तीर्थ की बड़े ही सुन्दर ढंग से व्याख्या की है। सं० १७५० में सौभाग्यविजयजी ने भी अपनी तीर्थ माला में यहाँ का वर्णन किया है। इस प्रकार यहाँ का वर्णन जगह-जगह पाया जाता है। वर्तमान में पहाड़ी पर यही एक मन्दिर है जिसे जन्मस्थान कहते हैं।

निकट ही अनेकों प्राचीन खण्डहर पड़े हैं जो कुमारग्राम, माहणकुण्डग्राम, ब्राह्मणकुण्डग्राम, मोराक आदि प्राचीन स्थलों की याद दिलाते हैं।

तलहटी में दो मन्दिर हैं, जिन्हें च्यवन व दीक्षा कल्याणक स्थलों के नाम से संबोधित किया जाता है।

विशिष्टता * इस पवित्र भूमि में वर्तमान चौबीसी के चरम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान के च्यवन जन्म व दीक्षा आदि तीन कल्याणक होने के कारण यहाँ की महान विशेषता है। प्रभु ने अपने जीवनकाल के तीस वर्ष इस पवित्र भूमि में व्यतीत किये। अतः इस स्थान की महत्वता का किन शब्दों में वर्णन किया जाय।

यहाँ के जन्म स्थान का मन्दिर ही नहीं अपितु इस पवित्र भूमि का कण-कण पवित्र व वन्दनीय है। आज भी यहाँ का शान्त व शीतल वातावरण मानव के हृदय में भक्ति का स्रोत बहाता है। यहाँ पहुँचते ही मनुष्य सारी सांसारिक व व्यवहारिक वातावरण भूलकर प्रभु भक्ति में लीन हो जाता है। इसी पवित्र भूमि में प्रभु की, आत्म कल्याण व विश्व कल्याण की भावना प्रबलता से उत्तेजित हुई थी। कहा जाता है उस समय जगह-जगह यवनों आदि का जोर बढ़ता आ रहा था। धर्म के नाम पर निर्दोषी जीवों की बलि दी जाती थी। नारी को दासी के स्वरूप माना जाता था। दास-दासियों की प्रथा का जोर बढ़ता आ रहा था, निर्बल नर-नारियों को दास-दासियों के तौर पर आम बाजार में बेचा जा रहा था। जिनके पास ज्यादा दास-दासियाँ रहती थीं उन्हे पुण्यशाली समझा जाता था। प्रभु ने आत्म कल्याण एवँ विश्व कल्याण के लिये उत्तेजित हुई भावना को साकार रूप देने का निश्चय करके राजसुख को त्यागा व दीक्षा लेकर आत्मध्यान में लीन हो गये। अनेकों प्रकार के अति कठिन उपसर्ग सहन करके प्रभु ने केवल ज्ञान प्राप्त किया। प्रभु ने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, व अपरिग्रह को महान धर्म ही नहीं परन्तु मानव धर्म बताया जिनके अनुकरण मात्र से ही आत्मा को शांति मिल सकती है। आज के युग में भी मानव समाज इन तत्वों के अनुसरण की आवश्यकता महसूस कर रहा है। प्रभु ने नारी को भी धर्म प्रचार करने का अधिकार दिया।प्रभु ने जाति भेद का तिरस्कार किया व विश्व के हर जीव-जन्तु के प्रति करुणा का उपदेश दिया। यह सब श्रेय इसी पवित्र भूमि को है जहाँ हमारे देवाधिदेव प्रभु का जन्म हुआ व उनकी असीम कृपा के कारण आज जैन धर्म विश्व का एक महान धर्म बना हुआ है व उसके सिद्धान्तों के अनुकरण की विश्व आज भी आवश्यकता महसूस कर रहा है। भगवान महावीर की वाणी आज भी हर मानव, पशु, पक्षी आदि के लिये कल्याण कारी हे व हमेशा के लिये कल्याणकारी रहेगी।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में क्षत्रियकुण्ड पहाड़ पर यही एक मन्दिर है। यहाँ की तलहटी कुण्डघाट में दो छोटे मन्दिर हैं जहाँ वीर प्रभु की प्रतिमाएँ विराजित हैं। इन स्थानों को च्यवन व दिक्षा कल्याणक स्थानों के नाम से संबोधित किया जाता है। लछवाड़ में एक मन्दिर हैं। ये सारे श्वेताम्बर मन्दिर हैं।

कला और सौन्दर्य * यहाँ प्रभु वीर की प्राचीन प्रसन्नचित्त प्रतिमा अति ही कलात्मक व दर्शनीय है। प्रतिमा के दर्शन मात्र से मानव की आत्मा प्रफुल्लित हो उठती है। तलहटी से ५ कि० मी० पहाड़ पर का प्राकृतिक दृश्य अति ही मनोरंजक हैं।

मार्ग दर्शन * नजदीक के रेलवे स्टेशन लखीसराय, जमुई व कियुल ये तीनों लछवाड़ से लगभग ३०-३० कि० मी० हैं। इन स्थानों से बस व टैक्सी की सुविधा है। सिकन्दरा से लछवाड़ लगभग १० कि० मी० है, यहाँ पर भी बस, टैक्सी व ताँगों की सुविधा है। लछवाड़ से तलहटी (कुण्डघाट) ५ कि० मी० व तलहटी से क्षत्रियकुण्ड ५ कि० मी० है। लछवाड़ में धर्म शाला है, जहाँ तक पक्की सड़क है। आगे तलहटी तक कच्ची सड़क है, लेकिन कार व बस जा सकती है। तलहटी से ५ कि० मी० पहाड़ की चढ़ाई पैदल पार करनी पड़ती है। लछवाड़ धर्मशाला से बस स्टैण्ड आधा कि० मी० है, जहाँ सवारी का कोई साधन नहीं है।

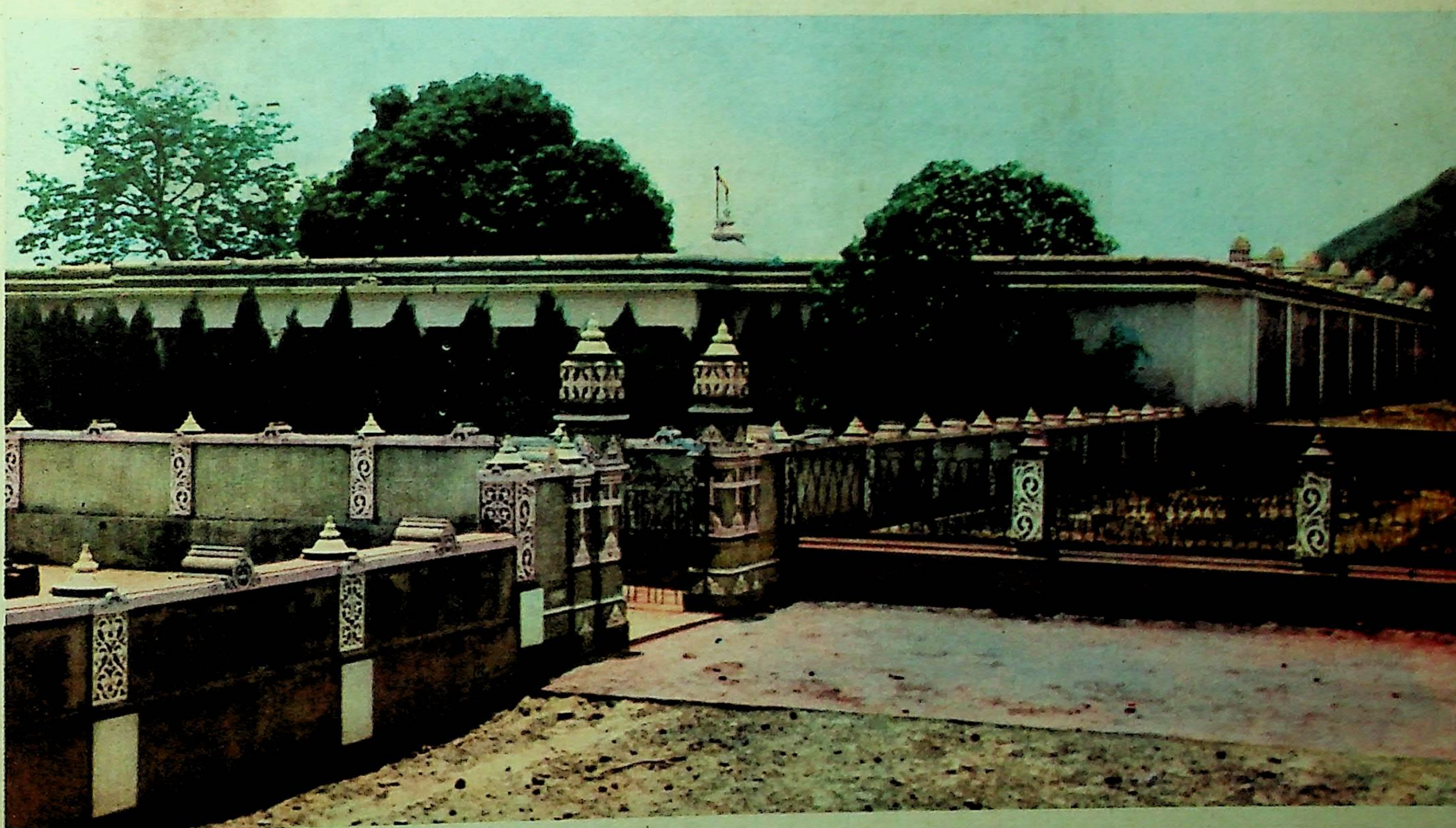
सुविधाएँ * ठहरने के लिये लछवाड़ में धर्मशाला है,

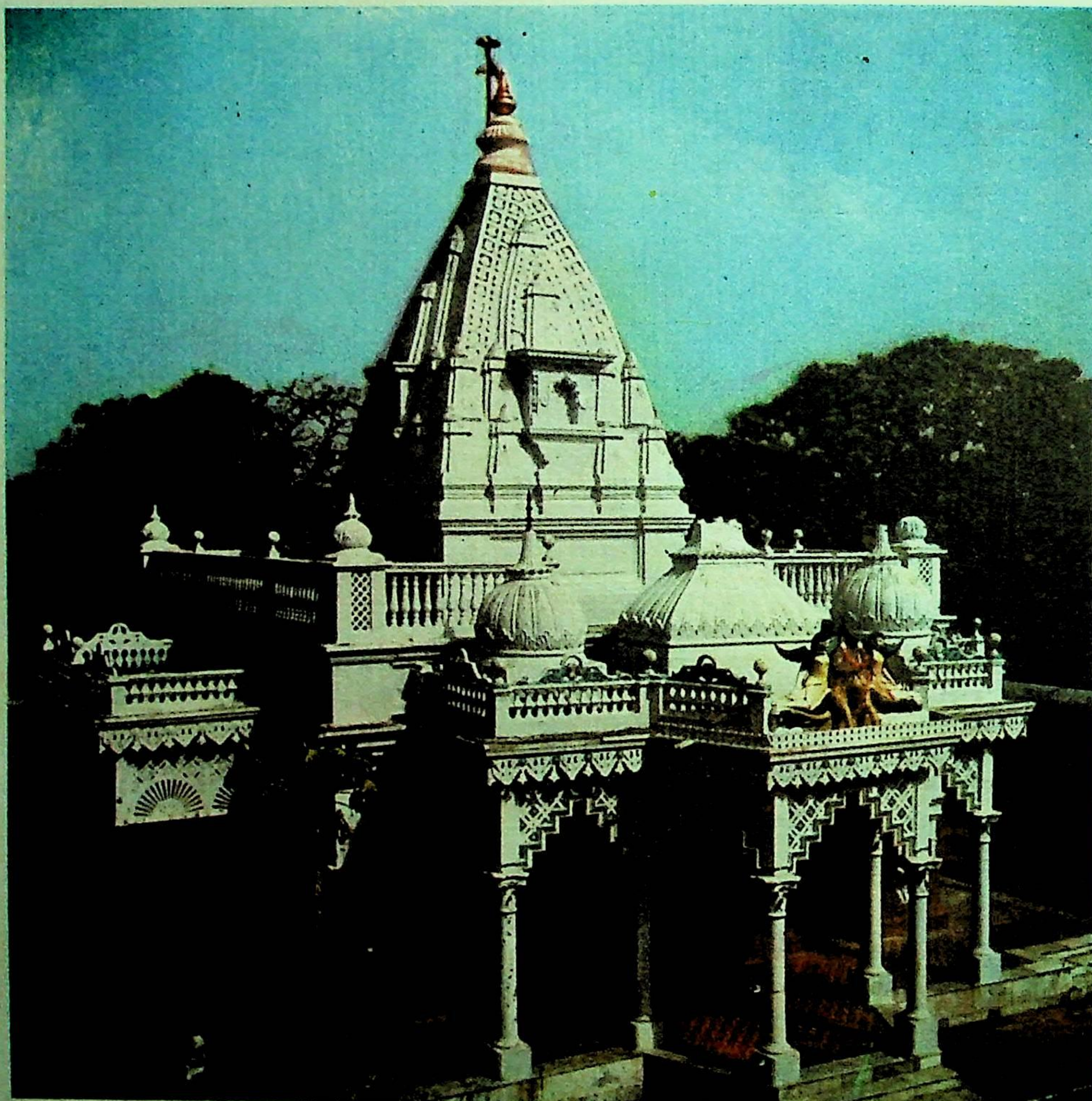
जहाँ बिजली, पानी, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है। पहाड़ पर पानी की पूर्ण सुविधा है।

पेढ़ी * श्री जैन श्वेताम्बर सोसाइटी, डाकघर – लछवाड़ : जिला – मुंगेर : प्रान्त – बिहार : तारघर – सिकन्दरा टेलीफोन – पी० सी० ओ० सिकन्दरा।...



भगवान महावीर जन्म स्थान मन्दिर का बाह्य दृश्य–क्षत्रियकुण्ड





श्री महावीर भगवान केवलज्ञान स्थल – ऋजुबालुका

श्री ऋजुबालुका तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, चतुर्मुख चरण-पादुकाएँ, श्वेत वर्ण, लगभग १५ सें० मी०। (श्वेताम्बर मन्दिर)।

तीर्थ स्थल * बराकर गाँव के पास बराकर नदी के तट पर।

प्राचीनता * आज की बराकर नदी को प्राचीन काल में ऋजुबालुका नदी कहते थे। श्वेताम्बर शास्त्रानुसार भगवान महावीर ने जंभीय गाँव के बाहर व्यावृत चैत्य के निकट ऋजुबालुका नदी के तट पर श्यामक किशान के खेत में शाल वृक्ष के नीचे वैशाख शुक्ला १० के दिन पिछली पोरसी के समय विजय मुहूर्त में केवलज्ञान प्राप्त किया।

आज जनक नाम का गाँव यहाँ से ४ कि० मी० है। वहाँ शाल वृक्षों युक्त घना जंगल भी है। जनक गाँव का असल नाम जंभीय गाँव भी कहा जाता है एक मतानुसार राजगृही से ५६ कि० मी० की दूरी पर वर्तमान जमुई गाँव है वही जंभीय है व उसके पास की क्वील नदी ही ऋजुबालुका है। लेकिन अभी तक कोई प्रामाणिकता नहीं मिलती है।

वि० की सोलहवीं सदी में पं० श्री हंससोमविजयजी, सत्रहवीं सदी में श्री विजयसागर विजयजी व श्री जयविजयजी, अठारहवीं सदी में श्री सौभाग्य विजयजी ने अपनी तीर्थ मालाओं में यहाँ का वर्णन किया है।

इन तीर्थ मालाओं में गाँव के नाम, नदी आदि के नामों में कोई मतभेद नहीं है। सिर्फ दूरी एक-एक तीर्थ माला में अलग-अलग बताई है। सम्भवत: समय-समय पर पगडन्डी या सड़क का रास्ता बदले जाने से दूरी में कुछ फर्क हुआ हो। अत: इसी स्थान पर, जहाँ सदियों से मानते आ रहे हैं, भगवान को केवलज्ञान हुआ मानना ही उचित है।

यहाँ का अन्तिम जीर्णोद्धार वि० सं० १९३० में होने का उल्लेख शिलालेखों में उत्कीर्ण है।

विशिष्टता * चरम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान के बारह वर्ष की घोर तपश्चर्या के कारण व केवलज्ञान प्राप्ति के कारण यहाँ के परमाणु अत्यन्त पवित्र बन चुके हैं। जिस स्थान पर भगवान की १२ वर्ष घोर तपश्चर्या होकर केवलज्ञान हुआ उस जगह की महानता अवर्णनीय है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त अन्य कोई मन्दिर नहीं है।

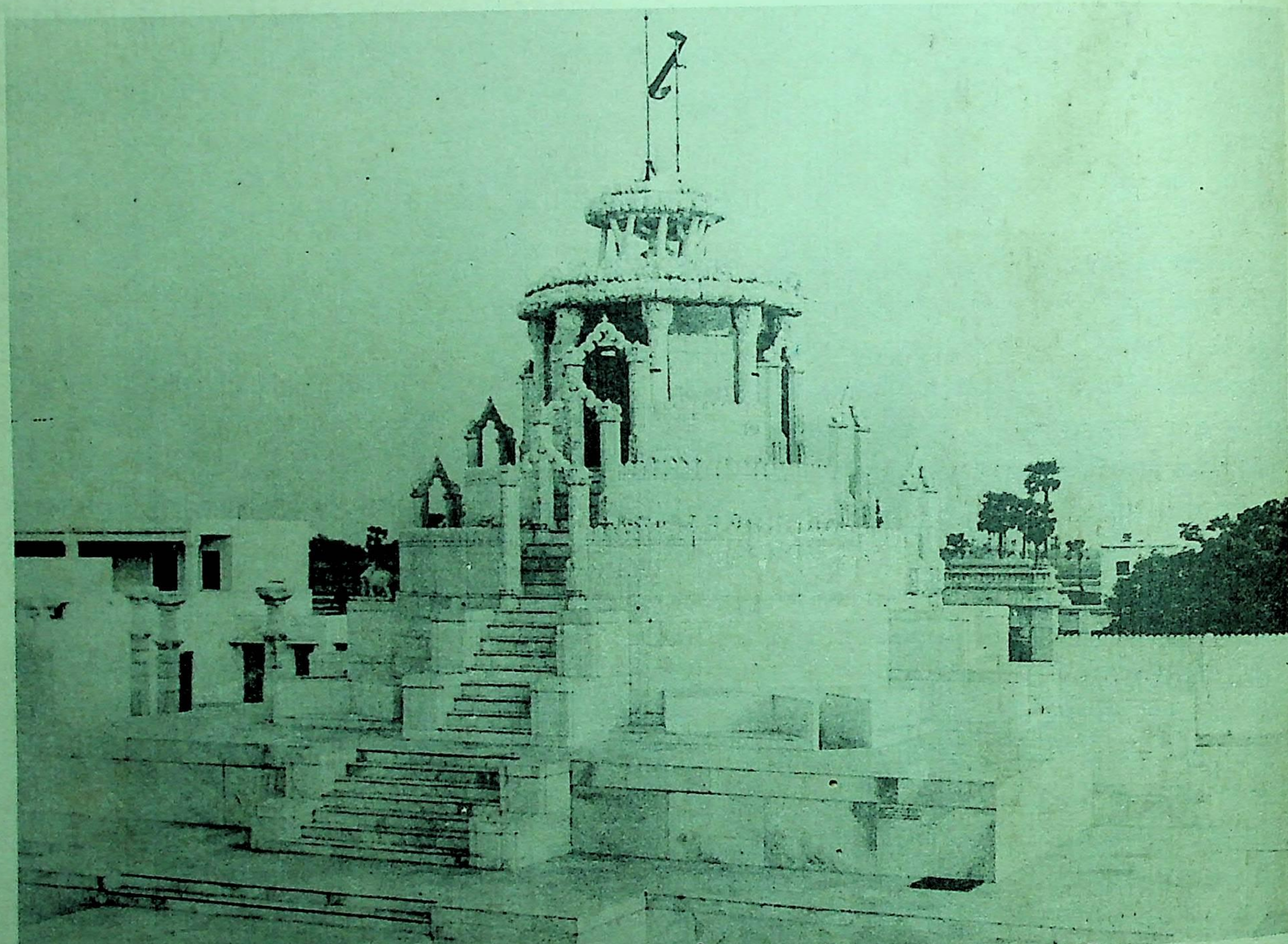
कला और सौन्दर्य * नदी तट पर स्थित मन्दिर का दृश्य अतीव रोचक है। मन्दिर की निर्माण शैली भी अति सुन्दर है। इसी नदी में भगवान महावीर की एक प्राचीन प्रतिमा प्राप्त हुई थी जिसकी कला अति सुन्दर है जो मन्दिर में विराजमान है।

मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन गिरडिह १२ कि० मी० है। यह स्थल गिरडिह-मधुबन (सम्मेतशिखर) मार्ग पर स्थित है। गिरडिह से बस व टैक्सी की सुविधा है। मधुबन से यहाँ की दूरी १८ कि० मी० है। मन्दिर तक बस व कार जा सकती है।

सुविधाएँ * ठहरने के लिये धर्मशाला है जहाँ पानी, बिजली का साधन है।

पेढ़ी * श्री जैन श्वेताम्बर सोसायटी, बराकर। डाक घर – बन्दरकुपी : जिला – गिरडिह : प्रान्त – बिहार : तार घर – गिरडिह : टेलीफोन – पी० सी० ओ० गिरडिह।





भगवान महावीर के प्रथम देशनास्थल पर नवीन सुन्दर समवसरण मन्दिर – पावापुरी



श्री महावीर भगवान चरण पादुकाएँ – ऋजुबालुका

सहायक : श्री चान्दमलजी कस्तुरचन्दजी छजलाणी, फलोदी (राज०) वाले, मद्रास–७.

श्री सम्मेतशिखर तीर्थ.

तीर्थाधिराज ✻ श्री शामलिया पार्श्वनाथ भगवान, श्याम वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ९० सें० मी०, जल मन्दिर (श्वेताम्बर मन्दिर)।

तीर्थ स्थल ✻ मधुबन के पास समुद्र की सतह से ४४७९ फुट ऊँचे सम्मेतशिखर पहाड़ पर, जिसे पार्श्वनाथ हिल भी कहते हैं।

प्राचीनता ✻ यह सर्वोपरि तीर्थ सम्मैतशैल, सम्मैताचल, सम्मेतगिरि, सम्मेतशिखरि, समाधिगिरि, समिदिगिरि आदि नामों से भी संबोधित किया जाता था। वर्तमान में यह क्षेत्र सम्मेतशिखर व पारसनाथ पहाड़ के नाम से जाना जाता है। वर्तमान चौबीसी के बीस तीर्थंकर इस पावन भूमि में तपश्चर्या करते हुए अनेक मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। पूर्व चौबीसियों के कई तीर्थंकर भी इस पावन भूमि से मोक्ष सिधारे हैं—ऐसी अनुश्रुति है।

यह परम्परागत मान्यता है कि तीर्थंकरों के निर्वाण स्थलों पर सौधर्मेन्द्र ने प्रतिमाएँ स्थापित की थी।

बीच के कई काल तक के इतिहास का पता नहीं। लगभग दूसरी शताब्दी में विद्यासिद्ध आचार्य श्री पादलिप्तसूरिजी आकाशगामिनी विद्या द्वारा यहाँ यात्रार्थ आया करते थे—ऐसा उल्लेख है। उसी भांति प्रभावक आचार्य श्री बप्पभट्टसूरिजी भी अपनी आकाशगामिनी विद्या द्वारा यात्रार्थ आते थे। विक्रम की नवमी शताब्दी में आचार्य श्री प्रद्युम्नसूरिजी सात बार यहाँ यात्रार्थ आये व उपदेश देकर जीर्णोद्धार का कार्य करवाया था।

तेरहवीं सदी में आचार्य देवेन्द्रसूरिजी द्वारा रचित वन्दारुवृति में यहाँ के जिनालयों व प्रतिमाओं का उल्लेख है। कुंभारियाजी तीर्थ में स्थित एक शिलालेख में श्री शरणदेव के पुत्र वीरचन्द द्वारा अपने भाई, पुत्र व पौत्रों आदि परिवार के साथ आचार्य श्री परमानन्दसूरिजी के हाथों सं० १३४५ में यहाँ प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख है।

चम्पानगरी के निकटवर्ती अकबरपुर गाँव के महाराज मानसिंहजी के मंत्री श्री नानू द्वारा यहाँ मन्दिरों के निर्माण करवाने का उल्लेख सं० १६५९ में भट्टारक ज्ञानकीर्तिजी द्वारा रचित "यशोधर चरित" में है।

सं० १६७० में आगरा निवासी ओशवाल श्रेष्ठी श्री कुंवरपाल व सोनपाल लोढा संघ सहित यहाँ यात्रार्थ आये जब जिनालयों का उद्धार करवाने का उल्लेख श्री जयकीर्तिजी ने 'सम्मेतशिखर रास' में किया है। आज तक अनेकों आचार्य मुनिगण व श्रावक, श्राविकाएँ एवं संघ यहाँ यात्रार्थ पधारे हैं।

मुनिवरों ने सम्मेतशिखर तीर्थमाला, जैन तीर्थमाला, पूर्व देश तीर्थमाला, आदि अनेकों साहित्यों का सर्जन किया है जो आज भी गत सदियों की याद दिलाते हैं।

वि० सं० १६४९ में बादशाह अकबर ने जगद्गुरु आचार्य श्री हीरविजयसूरिजी को श्री सम्मेतशिखर क्षेत्र भेंट देकर विज्ञप्ति जाहिर की थी। कहा जाता है कि उक्त फरमान पत्र की मूल प्रति अहमदाबाद में श्वेताम्बर जैन श्री संघ की प्रतिनिधि संस्था सेठ आणन्दजी कल्याणजी की पेढ़ी में सुरक्षित हैं।

वि० सं० १७४७ से १७६३ के दरमियान श्री सौभाग्यविजयजी, पं० जयविजयसागरजी, हंससोमविजयगणिवर्य, विजयसागरजी आदि मुनिवरों ने तीर्थमालाएँ रची हैं जिनमें भी इस तीर्थ का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है।

सं० १७७० तक पहाड़ पर जाने के तीन रास्ते थे। पश्चिम से आनेवाले यात्री पटना, नवादा व खडगदिहा होकर एवं दक्षिण-पूर्व तरफ से आने वाले मानपुर, जैपुर, नवागढ़, पालगंज होकर व तीसरा मधुबन होकर आते थे। पं० जयविजयजी ने सत्रहवीं सदी में व पं० विजयसागरजी ने अठारहवीं सदी में अपने यात्रा विवरण में कहा है कि यहाँ के लोग लंगोटी लगाते हैं। सिर पर कोई वस्त्र नहीं रखते। सिर में गुच्छेदार बाल हैं। स्त्रियाँ कद रूपी भयभीत लगती हैं। उनके सिर पर वस्त्र रखने व अंग पर कांचलियाँ पहिनने की प्रथा नहीं है। कांचली नाम से गाली समझती हैं। किसी स्त्री को सिर ढँके व कांचली पहिने देखने से उनको आश्चर्य होता है। भील लोग धनुष बाण लिये घूमते हैं। जंगल में फल, फूल, विभिन्न प्रकार की औषधियाँ, जंगली जानवर व पानी के झरने हैं।

कुछ तीर्थ मालाओं में बताया है कि झरिया गाँव में रघुनाथसिंह राजा राज्य करता है। उनका दीवान सोमदास है। जो भी यात्री यात्रार्थ आता है उससे आठ आना कर लिया जाता है। एक और वर्णन है कि कतरास के राजा श्री कृष्णसिंह भी कर लेते हैं। रघुनाथपुर गाँव से ४ मील जाने पर पहाड़ का चढ़ाव आता है।

यह भी कहा जाता है कि पालगंज यहाँ की तलेटी थी। यात्रीगणों को प्रथम पालगंज जाकर वहाँ के राजा से मिलना पड़ता था। राजा के सिपाही यात्रियों के साथ रहकर दर्शन करवाते थे।

उस काल में पहाड़ पर क्या स्थिति थी उसका कोई खुला वर्णन नहीं मिल रहा है।

वि० सं० १८०५ में मुर्शिदाबाद के सेठ महताबरायजी को दिल्ली के बादशाह अहमदशाह द्वारा उनके कार्य से प्रसन्न होकर जगतसेठ की उपाधि से विभूषित करने व सं० १८०६ में मधुबन कोठी, जयपार नाला, जलहरी कुण्ड, पारसनाथ तलहटी का ३०१ बीघा 'पारसनाथ पहाड़' उन्हें उपहार देने का उल्लेख है।

वि० सं० १८१२ में बादशाह अबुअलीखान बहादुर ने



श्री पार्श्वनाथ भगवान – जलमन्दिर – सम्मेतशिखर

सहायक : श्री भारत जैन तीर्थ यात्रा संघ (विक्रम सं० २०२४) मद्रास–७. संयोजक. श्री मानकलालजी उदेराजजी पुखराजजी पन्नालाल वैद, फलोदी (राज०) वाले, मद्रास–७.



वनयुक्त पहाड़ों के बीच जलमन्दिर का एक अपूर्व दृश्य — सम्मेतशिखर

पालगंज-पारसनाथ पहाड़ को करमुक्त घोषित किया था।

उल्लेखानुसार पता लगता है कि जगतसेठ की प्रबल इच्छा थी कि सम्मेतशिखर महातीर्थ के मन्दिरों का जीर्णोद्धार हो। उसी काल में तपागच्छीय पं० श्री देवविजयगणि यात्रार्थ पधारे व जगतसेठ ने महातीर्थ के उद्धार का संकल्प लिया व अपने सातों पुत्र व परिवार जनों को बुलाकर जीर्णोद्धार करवाने का निर्णय लिया गया। कार्य भार अपने चौथे पुत्र श्री सुगालचन्द व जैसलमेर गद्दी के मुनीम श्री मूलचन्दजी को संभलाया। उस बीच जगत्सेठ श्री महताबरायजी का देहान्त हो गया। वि० सं० १८२२ में बादशाह आलम ने उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री खुशालचन्द को जगत्सेठ की उपाधि से विभूषित किया।

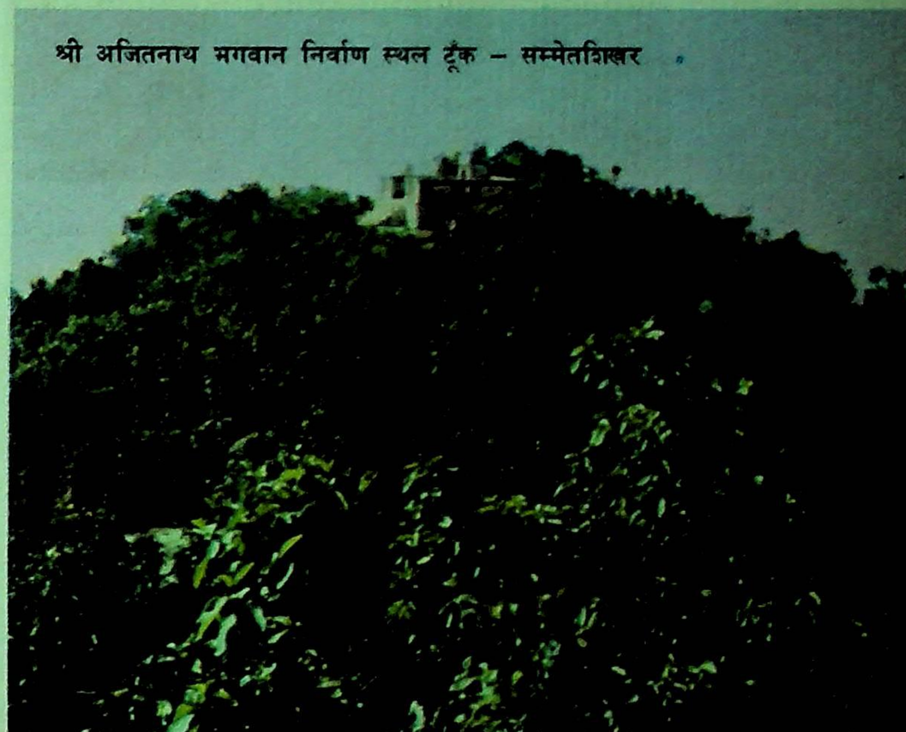
सम्मेतशिखर के उद्धार का कार्य पूर्ववत चल रहा था। खुशालचन्द सेठ का प्रयास था कि २० तीर्थंकरों के निर्वाण स्थानों की प्रामाणिकता प्राप्त कर उन स्थानों पर चिन्हिकाएँ बनवाई जाएँ। इस इच्छा से वशीभूत जगतसेठ यदा-कदा हाथी पर बैठकर मुर्शिदाबाद से यहाँ आते रहते थे, परन्तु स्थलों का कोई निर्णय नहीं हो सका। इससे पता चलता है कि पुराने मन्दिरों या टूँकों के चिह्न काल की गति से स्थानांतरित हो गये होंगे या मिट चुके होंगे।

पं० देवविजयजी की प्रेरणा से जगत्सेठ ने अट्ठमतप करके पद्मावती देवी की उपासना की। देवी ने स्वप्न में प्रत्यक्ष होकर कहा कि पहाड़ के ऊपर जहाँ-जहाँ केशर के स्वस्तिक चिह्न बने वे ही मूल स्थान माने जाएँ व स्वस्तिक संख्यानुसार तीर्थंकरों के निर्वाण स्थान समझकर चौतरे, स्तूप व चरण-पादुकाओं का निर्माण हों।

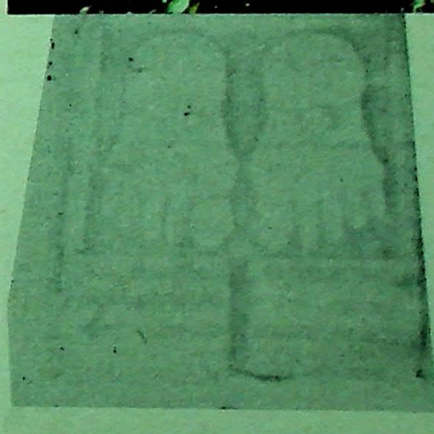
उसी प्रकार दैविक शक्ति से २० निर्वाण स्थान निश्चित हुए, जहाँ पर चबूतरे बनवाये गये व देरियाँ बनाकर स्तूप व चरणपादुकाएँ वि० सं० १८२५ माघ शुक्ला वसंत पंचमी के शुभ दिन तपागच्छीय भट्टारक आचार्य श्री धर्मसूरिजी वरदहस्ते प्रतिष्ठित करवाये जाने का उल्लेख है। वर्तमान में स्थित चरण पादुकाओं पर वि० सं० १८२५ माघ शुक्ला तृतीया विराणी गोत्र श्री खुशालचन्द नाम अंकित है। शायद जगत्सेठ की लग्न शीलता से जीर्णोद्धार सम्पन्न होकर श्री खुशालचन्दजी वीराणी के हस्ते प्रतिष्ठा हुई हो।

इसी समय पहाड़ पर जलमन्दिर, मधुबन में सात मन्दिर, धर्मशाला व पहाड़ के क्षेत्रपाल श्री भोमियाजी का मन्दिर आदि बनवाये गये। इन मन्दिरों की भी इसी मुहूर्त में प्रतिष्ठा सम्पन्न होने का उल्लेख है।

मन्दिर आदि का प्रबन्ध कार्यभार श्री श्वेताम्बर जैन संघ को सौंपा गया। इस प्रकार भाग्यवान जगत्सेठ श्री महताबचन्दजी की भावना सफल हुई। जगत्सेठ द्वारा किया गया यह महान कार्य जैन शासन में सदा अमर रहेगा। इस तीर्थ का



श्री अजितनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर



श्री सम्भवनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर



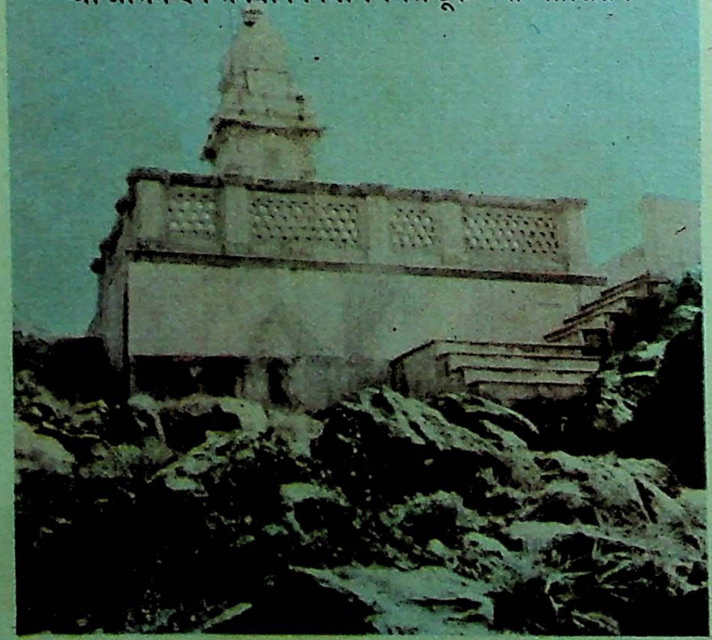
यह इक्कीसवाँ जीर्णोद्धार माना जाता है।

तदुपरान्त अनेक जैन संघ यात्रार्थ आने लगे। पहाड़ की चोटियों पर स्थित स्तूप, चबूतरे, चिन्हिकाएँ मुक्त आकाश के नीचे आच्छादनहीन होने से भयंकर आँधी, वर्षा, गर्मी, सर्दी व बन्दरों के शरारती कार्यों के कारण पुनः उद्धार की आवश्यकता हुई। अतः वि० सं० १९२५ से १९३३ के दरमियान उद्धार करवाकर विजयगच्छ के जिनशान्तिसागरसूरिजी, खरतर-गच्छ के जिनहंससूरिजी व श्री जिनचन्द्रसूरिजी के हस्ते पुनः प्रतिष्ठा करवाई। यह बाईसवाँ उद्धार माना गया। इस उद्धार के समय भगवान आदिनाथ, श्री वासूपूज्य भगवान, श्री नेमिनाथ भगवान, श्री महावीर भगवान तथा शाश्वत जिनेश्वरदेव श्री ऋषभानन, चन्द्रानन, वारिषेण व वर्धमानन की नई देरियों का निर्माण हुआ। मधुबन में भी कुछ नये जिनालय बने।

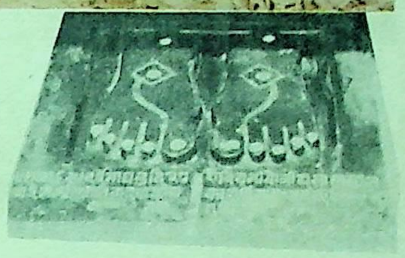
यह पहाड़ जगत्सेठ को भेंट स्वरूप मिला हुआ होने पर भी जगत्सेठ द्वारा दुर्लक्ष्य हो जाने से पालगंज राजाको दे दिया गया था। ई० सं० १९०५-१९१० के दरमियान पालगंज राजा को धन की आवश्यकता पड़ी। राजा ने पहाड़ बिक्री करने या रहन रखने का सोचा उसपर कलकत्ता के रायबहादुर सेठ श्री बद्रीदास जौहरी मुकीम एवँ मुर्शीदाबाद निवासी महाराज बहादुरसिंहजी दुगड़ ने राजा की यह मनोभावना जानकर अहमदाबाद के सेठ आणन्दजी कल्याणजी पेढ़ी को यह पहाड़ खरीदने के लिये प्रेरणा दी व सक्रिय सहयोग देने का आश्वासन दिया। श्री आणन्दजी कल्याणजी पेढ़ी ने खरीदने की व्यवस्था करके प्राचीन फरमान आदि देखे। सब अनुकूल पाने पर दिनांक ९.३.१९१८ को रुपये दो लाख बयालीस हजार राजा को देकर यह पारसनाथ पहाड़ खरीदा गया। जिससे पहाड़ पुनः जैन श्वेताम्बर संघ के अधीन आया। इस कार्य में इन महानुभावों का सहयोग सराहनीय है। उनकी प्रेरणा व सहयोग से ही यह कार्य सम्पन्न हो सका।

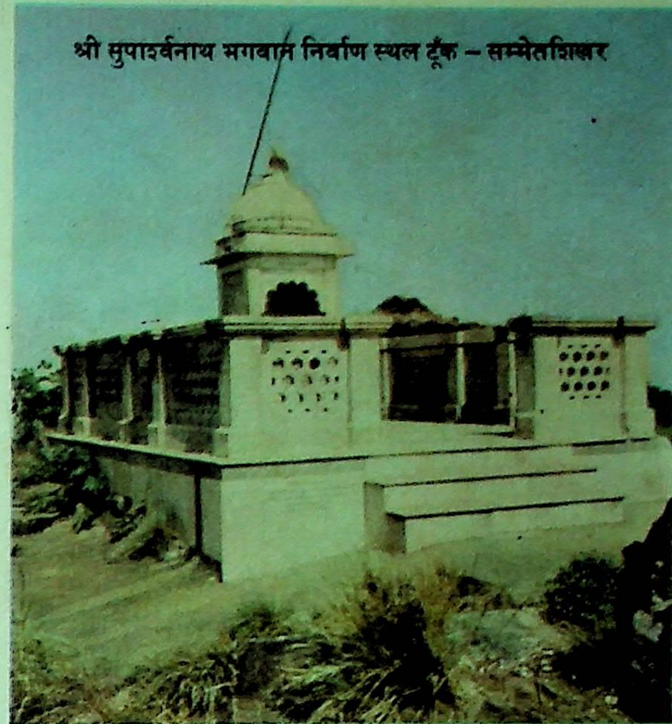
वि० सं० १९८० में आगमोद्धारक पूज्य आचार्य श्री सागरानन्दसूरिंजी यहाँ यात्रार्थ पधारे। तब उनकी इच्छा पुनः जीर्णोद्धार करवाने की हुई। उनके समुदाय की विदुषी बालब्रह्मचारिणी साध्वीजी श्री सुरप्रभाश्रीजी के प्रयास से वि० सं० २०१२ में जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ होकर सं० २०१७ में पूर्ण हुआ। यह तेईसवाँ उद्धार था। वर्तमान में सम्मेतशिखर पहाड़ पर की ३१ देहरियाँ, जलमन्दिर, गंधर्व नाला की धर्मशाला, मधुबन की जैन श्वेताम्बर कोठी तथा मधुबन के सभी श्वेताम्बर जैन मन्दिर, भोमियाजी का मन्दिर व धर्मशालाओं की व्यवस्था अजीमगंज निवासी स्व० श्री महाराजबहादुरसिंहजी दुगड़ के सुपुत्रों की देखरेख में है। पहाड़ का प्रबन्ध सेठ आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी के हाथ में है। मधुबन में दिगम्बर मन्दिर व धर्मशालाएँ भी हैं। जिनकी

श्री अभिनन्दन भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर



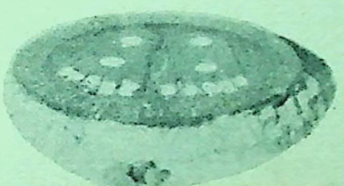

श्री सुमतिनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

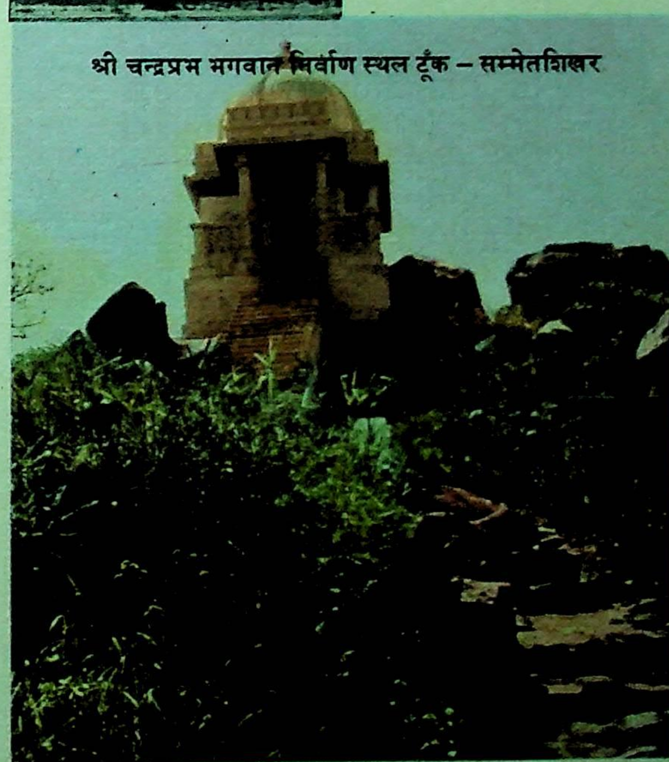


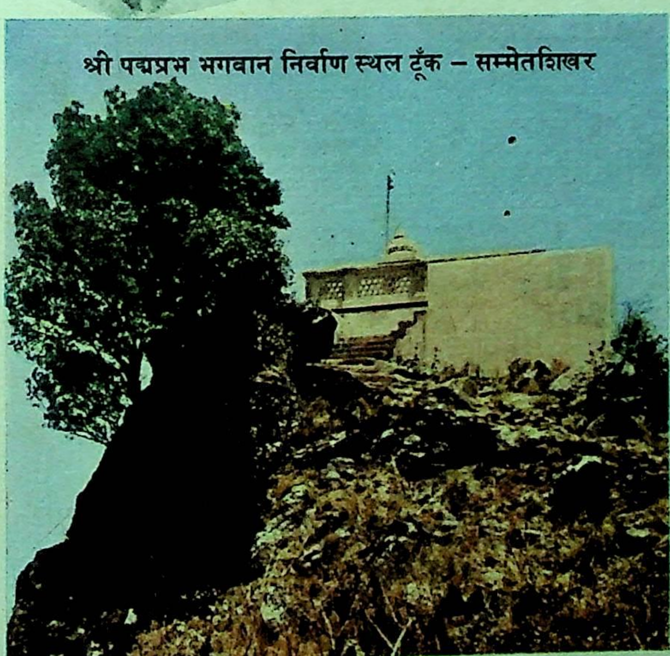

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

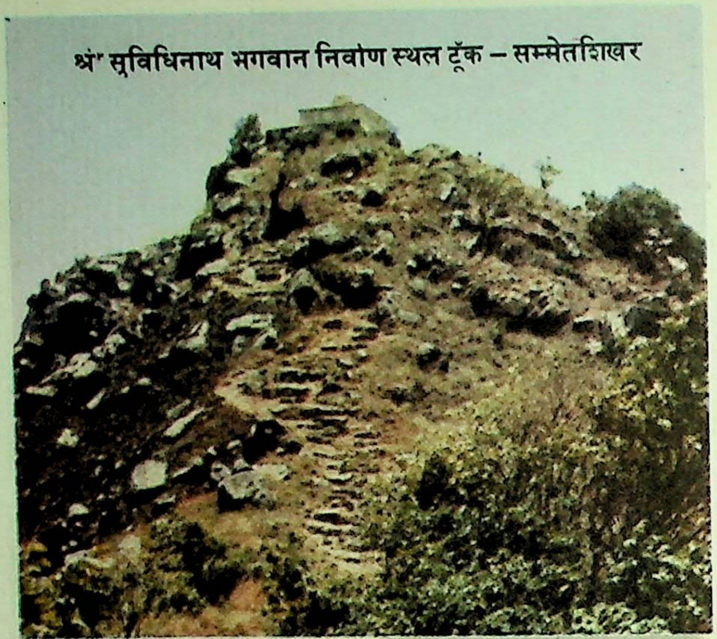




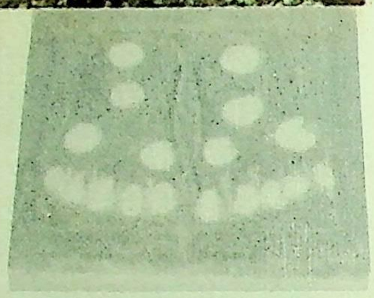



श्री चन्द्रप्रभ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर


श्री पद्मप्रभ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर



श्री सुविधिनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

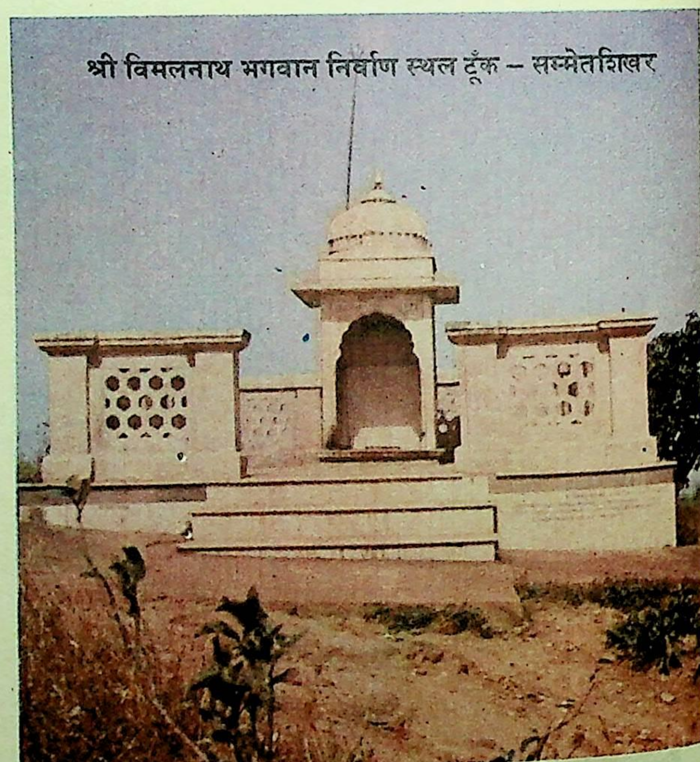




श्री श्रेयाँसनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

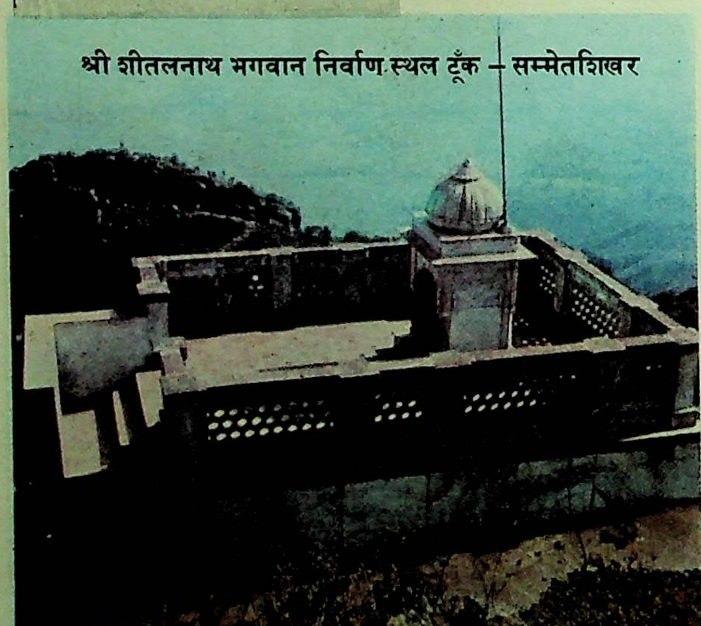






श्री विमलनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर





श्री शीतलनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

देखभाल दिगम्बर समाज की विभिन्न संस्थाएँ करती है।

विशिष्टता * भूतकाल की चौबीसियों में भी अनेक तीर्थंकरों ने यहाँ पर मोक्षपद पाया–ऐसी अनुश्रुति है। वर्तमान चौबीसी के २० तीर्थंकर यहाँ पर से मोक्ष सिधारे हैं। अन्य चार तीर्थंकरों में श्री आदिनाथ भगवान अष्टापद से, श्री वासूपूज्य भगवान चम्पापुरी से, श्री नेमिनाथ भगवान गिरनारजी से, श्री महावीर भगवान पावापुरी से मोक्ष को प्राप्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त अनन्त मुनिगण यहाँ पर कठोर तपश्चर्या करते हुए मोक्ष सिधारे हैं। अनेकों अनेक प्रकाण्ड विद्वान आचार्य भगवन्तों ने यहाँ पदार्पण किया है व अनेकों श्रद्धालु भक्तजनों का यहाँ आवागमन हुआ है एवं कई संघ आये हैं व आते रहते हैं।

यहाँ की महिमा का जितना वर्णन करें कम हैं। यहाँ की महिमा तो हर तीर्थमाला में व स्तवनों आदि में जन-जन में गाई जाती है।

अनेक तीर्थंकरों, मुनिगणों की तपोभूमि व निर्वाणभूमि रहने के कारण उन्होंने अपने अन्त-समय में इस पहाड़ पर रहकर धर्मोपदेशना देते हुए इस भूमि के कण-कण को अपने चरणकमलों से स्पर्श किया है। अतः यहाँ का कण-कण महान पवित्र व पूजनीय है। इस भूमि के स्पर्श मात्र से मानव की आत्मा प्रफुल्लित होकर प्रभु के स्मरण में लीन हो जाती है। यहाँ की यात्रा मानव का संकट हरनारी, पुण्योपार्जनकारी व पापविनाशनकारी है।

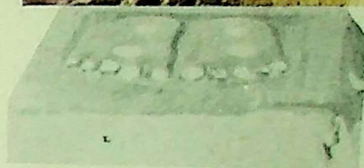
यहाँ की भूमि के कण-कण में निर्मलता तो है ही यहाँ के वायु-मण्डल के वातावरण में भी ऐसी अलौकिक शक्ति व गूंज है जिससे मानव अपने आपको प्रभु में खोकर अपने पापों का क्षय करके महान पुण्योपार्जन करता है। आइए हम भी आज प्रभु के निर्वाण स्थलों का स्मरण कर लें।

प्रातः साढे चार-पाँच बजे यात्रा प्रारम्भ करना आवश्यक है। साथ में लकड़ी रखना सुविधाजनक है। भूख सहन न करने वालों के लिये खाने पीने की कुछ सामग्री साथ रखना भी सुविधाजनक होगा। क्योंकि लौटने तक लगभग सायं के चार बज जाते हैं।

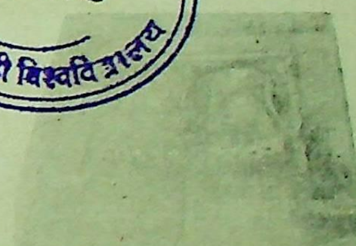
श्री भोमियाजी के मन्दिर से कुछ दूर जाते ही पहाड़ की चढ़ाई प्रारम्भ होती है। यात्रा प्रवास–६ मील चढ़ाव, ६ मील परिभ्रमण, व ६ मील उतराई कुल मिलाकर १८ मील का रास्ता पार करना पड़ता है। इसलिए पहिले श्री भोमियाजी बाबा के दर्शन कर श्रीफल चढ़ाकर आगे चलें ताकि हमारी यात्रा निर्विघ्न शान्तिपूर्वक सम्पन्न हो। भोमियाजी बाबा प्रत्यक्ष व चमत्कारिक हैं। श्रद्धालु भक्तजनों की मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। यहाँ से लगभग २ मील चलने पर गंधर्व नाला आता है। इस नाले में हर वक्त पानी रहता है। जल अति ही निर्मल व पाचक है। स्थान बहुत ही रमणीय है। यहाँ

श्री अनन्तनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

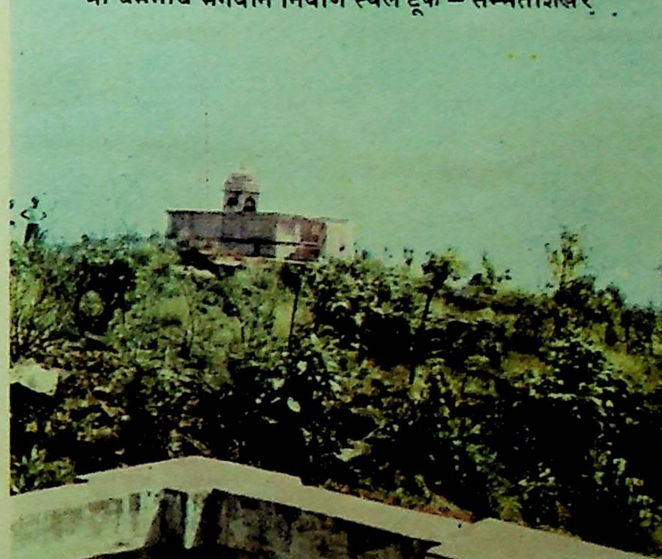


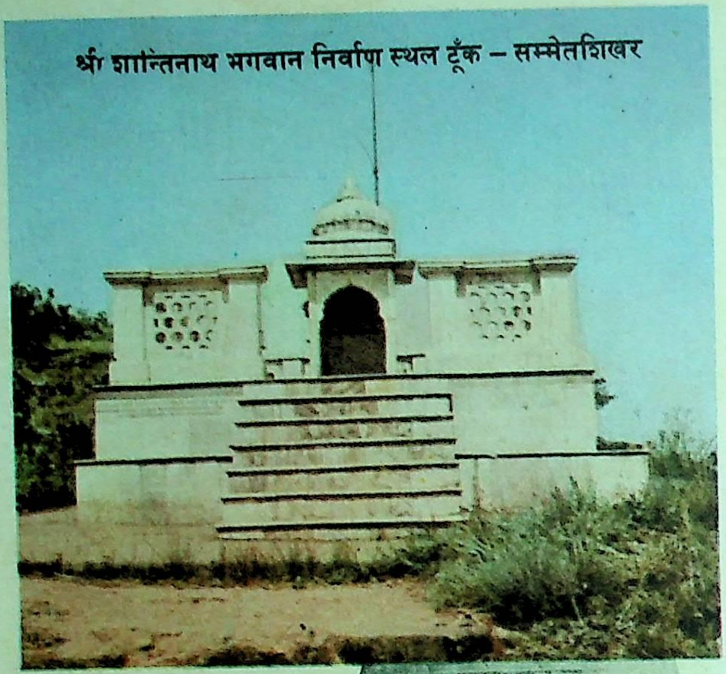


13 तीर्थ - ती

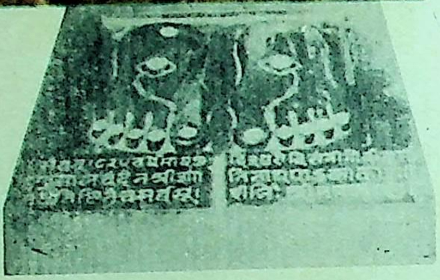


श्री धर्मनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर



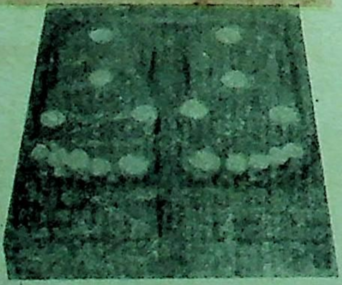


श्री शान्तिनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर





श्री कुंथुनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर

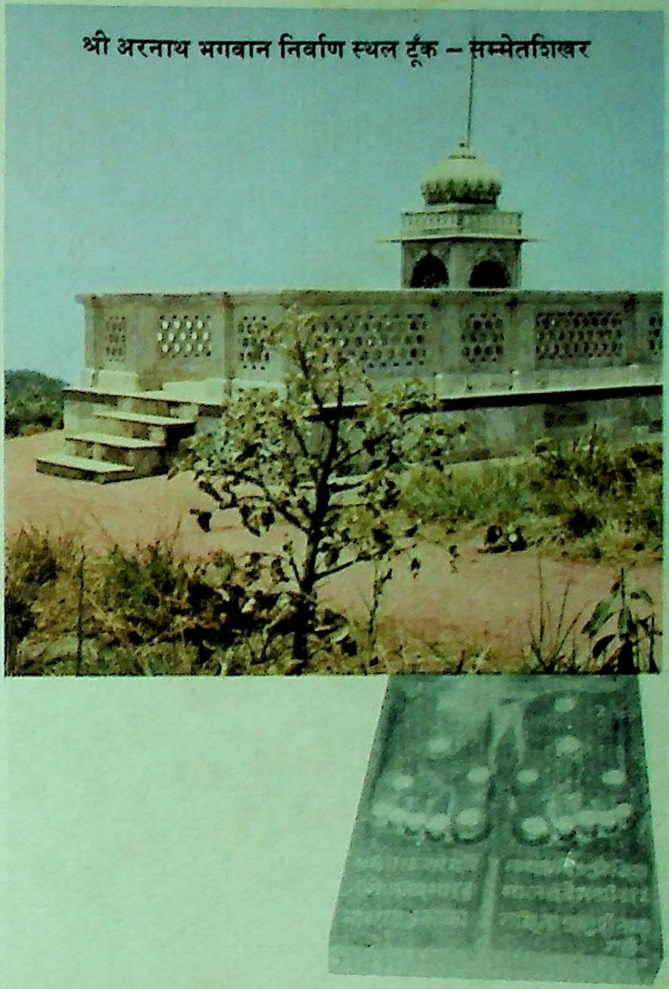


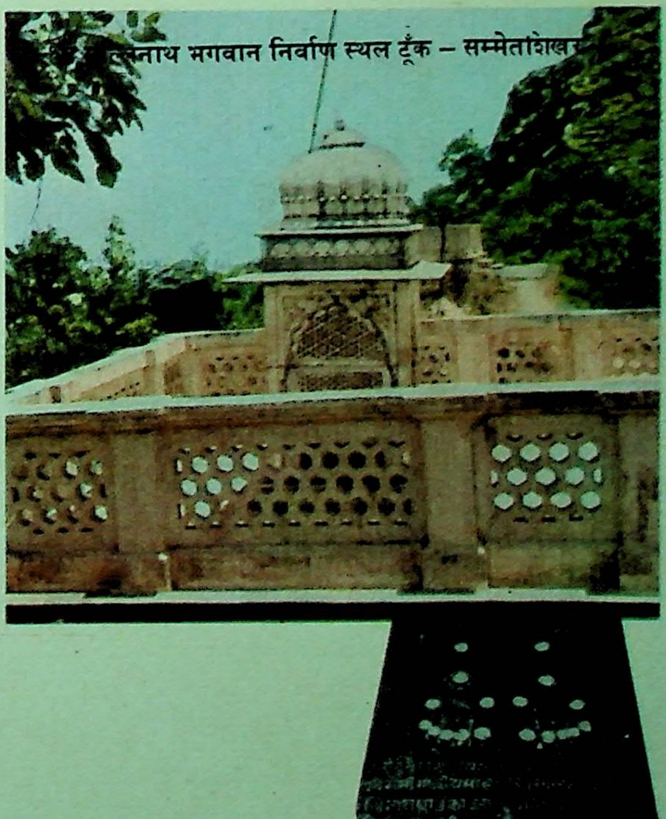
पर एक श्वेताम्बर धर्मशाला है, जहाँ पीने के गरम व ठंडे पानी की सुविधा है। प्रत्येक यात्री को लौटते वक्त यहाँ पेढ़ी की तरफ से भाता दिया जाता है। यहाँ से चढ़ाई कुछ कठिन है। लेकिन घबराने की आवश्यकता नहीं। हिम्मत से चढ़िये। आप प्रफुल्लता के साथ वापस उतरेंगे। थोड़ी दूर आगे जाने पर दो रास्ते फंटते हैं। बायें हाथ का राह श्री गोतम स्वामीजी की टूंक होता हुआ जल मन्दिर जाता है व दायें हाथ का डाक बंगला होता हुआ श्री पार्श्वनाथ टूँक पहुँचाता है। ये दोनों मार्ग लम्बे हैं व कठिनाई में दोनों समान है। चढ़ते वक्त जल मन्दिर व लौटते वक्त पार्श्वनाथ टूँक होकर आना ही अनुकूल होता है।

जलमन्दिर के मार्ग में आधा मील का रास्ता तय करने पर कल-कल मधुर संगीत की स्वर-लहरी गाता हुआ सीता नाला मिलता है जो सदियों से इस भाँति स्वरलहरी गुंजरित करता रहा है। आगे चढ़ाव कुछ और भी कठिन है, जिसे सुगम बनाने के लिए ५०० सीढ़ियाँ बनाई गई हैं। लगभग २.५ मील आगे बढ़ते ही हमारे तीर्थंकर भगवन्तों के निर्वाण-स्थानों पर निर्मित टूँकों के दर्शन होते हैं। कुछ टूँके समतल में हैं तो कुछ टेकरियों पर।

प्रथम टूँक :– लब्धि के दातार भगवान महावीर के प्रथम गणधर श्री गोतमस्वामी की है। इनका निर्वाण-स्थल तो राजगृही या गुणाया है परन्तु दर्शनार्थ यहाँ चरण स्थापित हैं। इनके नाम स्मरण मात्र से मनोवांछित कार्य सिद्ध होते हैं। आगे चलने पर दूसरी टूँक :– सत्रहवें तीर्थंकर श्री कुंथुनाथ भगवान की आती है। वैशाख कृष्णा प्रतिपदा को हजार मुनियों के साथ भगवान यहाँ से मोक्ष सिधारे हैं। आगे जाने पर तीसरी टूँक :– श्री ऋषभानन शाश्वत जिन की टूँक आती है। बाद में चौथी टूँक :– श्री चन्द्रानन शाश्वत जिन की टूँक आती है। पश्चात् पाँचवी टूँक :– ईक्कीसवें तीर्थंकर श्री नमिनाथ भगवान की टूँक आती है। यहीं से भगवान वैशाख कृष्णा दशमी को पाँच सौ छत्तीस मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। आगे चढ़ने पर छठी टूँक :– अठारहवें तीर्थंकर श्री अरनाथ भगवान की आती है। यहीं से भगवान मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी को एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। फिर सातवीं टूँक :– उन्नीसवें तीर्थंकर श्री मल्लीनाथ भगवान की आती है। यहाँ से प्रभु फाल्गुन शुक्ला बारस को पाँच सौ मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। आठवी टूँक :– ग्यारहवें तीर्थंकर श्री श्रेयाँस-नाथ भगवान की है। यहाँ से भगवान श्रावण कृष्णा तृतीया को एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। नवमी टूँक :- नवमें तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ भगवान की आती है। यहाँ से भगवान भाद्रवा शुक्ला नवमी को एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। दशवीं टूँक :– छठे तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ भगवान की आती है। यहाँ से प्रभु मार्गशीर्ष कृष्णा ग्यारस

को तीन सौ आठ मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। आगे ग्यारहवीं टूँक :–बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुब्रत स्वामी भगवान की है यहाँ से भगवान ज्येष्ठ कृष्णा नवमी को एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। अब हमें कठिन व ऊँची टूँक जाना है। वह है बारहवीं टूँक :– आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ भगवान की। यहीं से प्रभु भाद्रवा कृष्णा सप्तमी को एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। उतरकर आगे चलने पर तेरहवीं टूँक :– श्री आदिनाथ भगवान की आती है। प्रभु तो अष्टापद से मोक्ष सिधारे हैं। इस पावन तीर्थ पर दर्शनार्थ प्रभु के चरण स्थापित हैं। चौदहवीं टूँक :– चौदहवें तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ भगवान की है। चैत्र शुक्ला पंचमी को सात सौ मुनियों के साथ यहीं से प्रभु मोक्ष सिधारे हैं। पन्द्रहवीं टूँक :– दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान की है। यहाँ पर भगवान वैशाख कृष्णा द्वितीया को एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। सोलहवीं टूँक :– तीसरे तीर्थंकर श्री संभवनाथ भगवान की आती है। यहाँ से भगवान चैत्र शुक्ला पांचम को एक हजार मुनिगणों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। सत्रहवीं टूँक :– बारहवें तीर्थंकर श्री वासुपुज्य भगवान की है। भगवान चम्पापुरी में मोक्ष सिधारे हैं। यहाँ दर्शनार्थ उनके चरण स्थापित हैं। अठारहवीं टूँक :– चौथे तीर्थंकर श्री अभिनन्दन भगवान की है! यहाँ से प्रभु वैशाख शुक्ला अष्टमी को एक हजार मुनिगणों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। अब हम यहाँ की प्रमुख टूँक पहुँच रहे हैं। यह है यहाँ की प्रमुख टूँक, उन्नीसवीं टूँक :– इस टूँक पर स्थित यहाँ के मुख्य जलमन्दिर का दर्शन होता है। यहाँ के मूलनायक श्री शामलिया पार्श्वनाथ भगवान हैं। कैसी सुन्दर व अलौकिक प्रतिमा है प्रभु की। पवित्र पहाड़ों में हरे-भरे लहलहाते पेड़-पौधों के बीच मन्दिर भी कितना सुन्दर लगता है जैसे दिव्य-लोक में देवताओं द्वारा निर्माणित किया गया हो। यहाँ नहाने-धोने, सेवा-पूजा की उत्तम व्यवस्था है। मन्दिर के पास दो कुण्ड हैं। इन कुण्डोंसे जितना पानी निकाले तब भी अक्षय नीर बहता ही रहता है। विश्राम के लिये दो छोटी श्वेताम्बर धर्मशालाएँ बनी हुई हैं। यहाँ पूजा सेवा करके साथ जो हो वह खा पीकर आगे चलने की तैयारी करनी है यहाँ से आगे चलने पर बीसवीं टूँक :– श्री शुभ गणधरस्वामी की आती है।आगे इक्कीसवीं टूँक :– पन्द्रहवें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ भगवान की है। प्रभु ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को एक सौ आठ मुनिवरों के साथ यहाँ से मोक्ष सिधारे हैं। पश्चात् बाईसवीं टूँक :– श्री वारिषेण शाश्वताजिन टूँक आती है। आगे चलने पर तेईसवीं टूँक :– श्री वर्धमानन शाश्वत जिन टूँक है। फिर चौबीसवीं टूँक :– पाँचवें तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ भगवान की आती है। यहाँ से प्रभु एक हजार मुनियों के साथ चैत्र शुक्ला नवमी को मोक्ष सिधारे हैं। बाद में पच्चीसवीं टूँक :– सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ भगवान



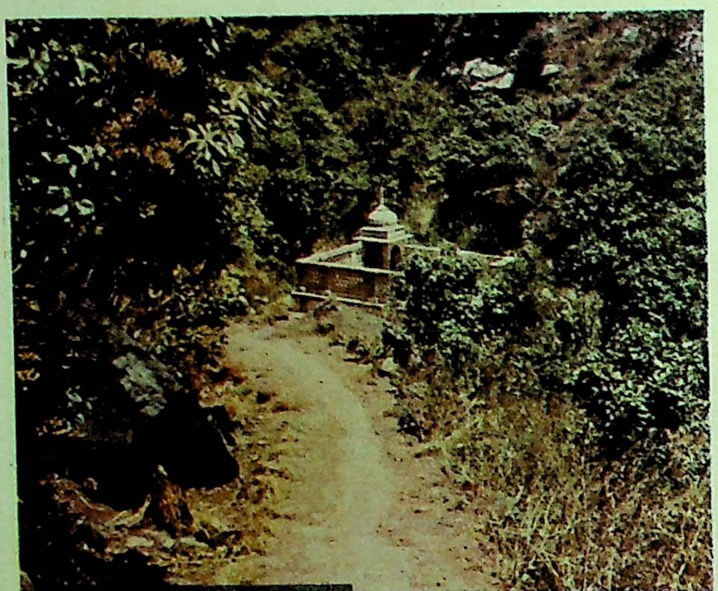


श्री नमिनाथ भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर



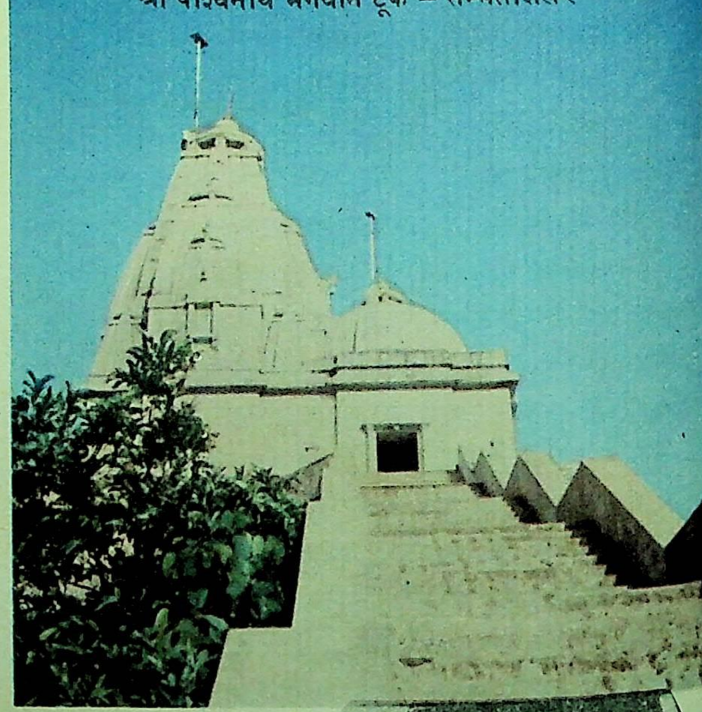


श्री मुनिसुव्रत स्वामी भगवान निर्वाण स्थल टूँक – सम्मेतशिखर





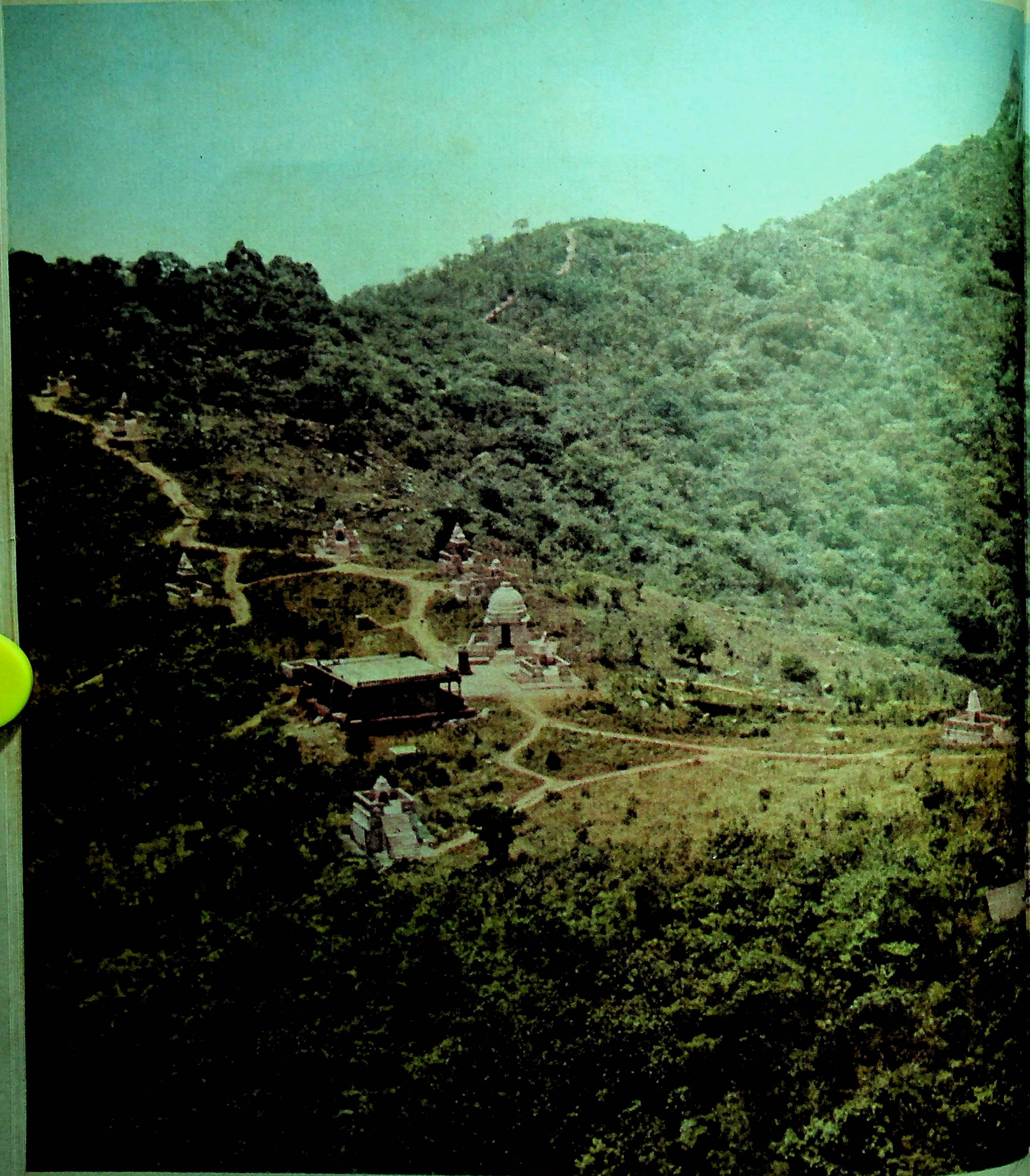
श्री पार्श्वनाथ भगवान टूँक – सम्मेतशिखर



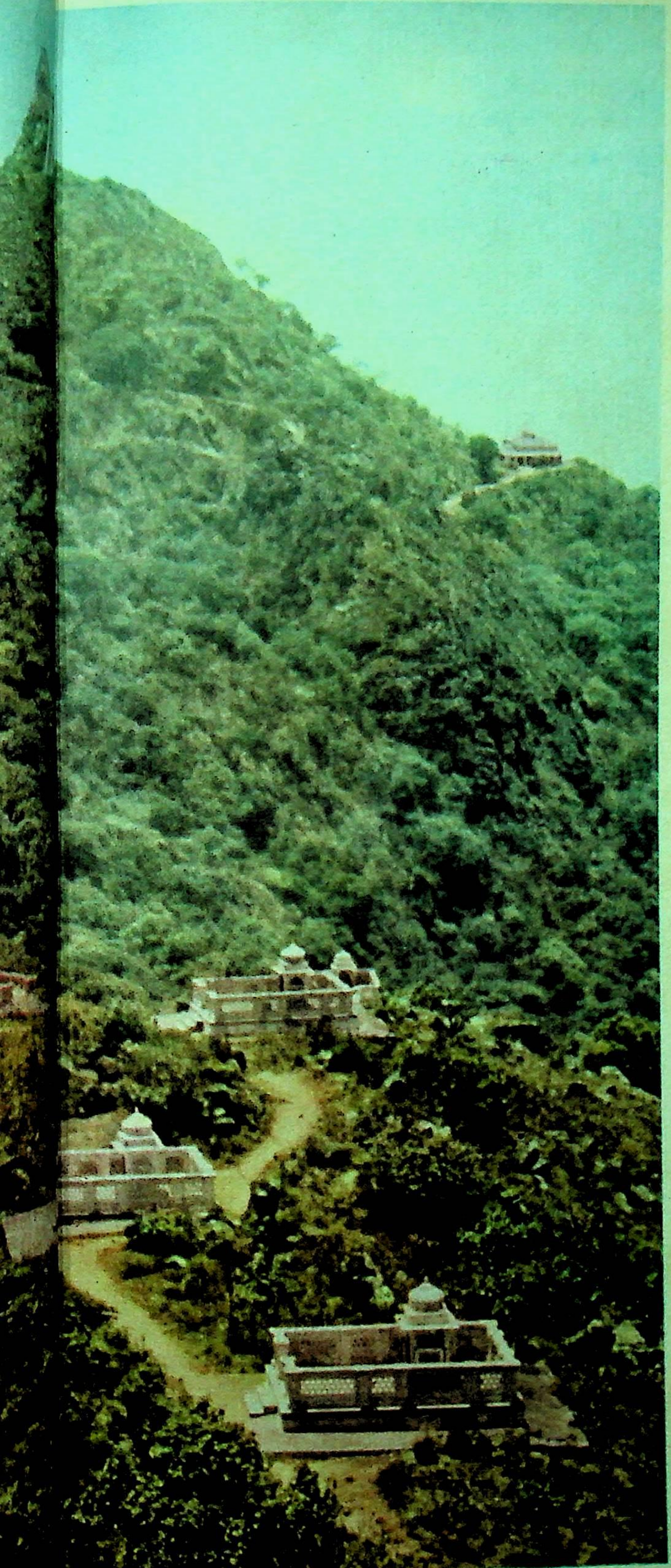




श्री पार्श्वनाथ भगवान निर्वाण स्थल – सम्मेतशिखर



पुनीत पावन सम्मेतशिखर पहाड़ पर प्रभु के निर्वाण स्थलों का दुर्लभ दृश्य



की आती है। यहाँ से भगवान ज्येष्ठ कृष्णा तेरस को नव सौ मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। अब छब्बीसवीं टूँक :– श्री महावीर भगवान की आती है। यहाँ प्रभु के चरण दर्शनार्थ स्थापित है। प्रभु तो पावापुरी से मोक्ष सिधारे हैं। पश्चात् सत्ताइसवीं टूँक :– सातवें तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की है। यहाँ से प्रभु फाल्गुन कृष्णा सप्तमी को पाँच सौ मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। आगे अठ्ठाइसवीं टूँक :– तेरहवें तीर्थंकर श्री विमलनाथ भगवान की है। यहाँ से भगवान आषाढ कृष्णा सप्तमी के दिन छ सौ मुनियों के साथ मोक्ष सिधारे हैं। आगे चलने पर उन्तीसवीं टूँक :– द्वितीय तीर्थंकर श्री अजितनाथ भगवान की आती है। यहाँ से प्रभु चैत्र शुक्ला पंचमी को एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष पधारे हैं। अब तीसवीं टूँक :– श्री नेमिनाथ भगवान की आती है। प्रभु के चरण दर्शनार्थ स्थापित हैं। प्रभु तो गिरनार पर्वत पर मोक्ष सिधारे हैं। अब आगे जो दिखाई देती है वह है इस यात्रा की अन्तिम सर्वोच्च टूँक जिसके शिखर का दर्शन ३०-४० मील दूर से होता है वह है इकत्तीसवीं टूँक :– तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान की। इसे मेघाडम्बर टूँक भी कहते हैं। इस टूँक पर दो मंजिल का शिखर युक्त मन्दिर बना हुआ है। नीचे की मंजिल में भगवान श्री पार्श्वनाथ के प्राचीन चरण स्थापित हैं। श्री पार्श्वनाथ भगवान श्रावण शुक्ला अष्टमी को तैंत्तीस मुनियों के साथ यहीं से मोक्ष सिधारे हैं। आखिर में पार्श्वनाथ भगवान यहाँ से मोक्ष जाने के कारण इस पर्वत का नाम भी जन साधारण में पारसनाथ पड़ा। सरकारी दस्तावेजों आदि में भी पारसनाथ हिल है।

इस टूँक पर से चारों ओर दृष्टि फेरने पर अति ही मनोहर दृश्य दिखाई पड़ते हैं। आकाश अपने से बातें करना चाहता है ऐसा प्रतीत होता है। बादलों के समूह अपनी रिमझिम गति से पर्वत से आलिंगित होते ही बरस पड़ते हैं। चमत्कारिक जड़ी-बूटियों और प्रभाविक वनस्पतियों का इस भूमि में भन्डार है।

पूर्व तीर्थंकर भगवन्तों की निर्वाण भूमि होने के कारण श्री पार्श्वनाथ भगवान इस पहाड़ को अति पवित्र, एकान्त, रमणीय ध्यान के अनुकूल जानकर बार-बार आये। इस प्रदेश के लोगों में धर्मोपदेश करते विचरण किया। व मोक्ष को प्राप्त हुए। यहाँ के जनवासियों में आज भी उनके प्रति दृढ़ भक्ति है। लोग उन्हें पारसनाथ महादेव, पारसनाथ बाबा कहकर स्मरण करते हैं। आज भी भगवान के जन्म दिवस पौष कृष्ण दशमी को मेले के दिन जैनेतर भी विपुल मात्रा में आते हैं।

अब हम इस सर्वोच्चतम टूँक से हमारे तीर्थंकर भगवन्तों व मुनि महाराजों को भावयुक्त वन्दना करके वापस मधुबन लौट रहे हैं। थोड़ी ही दूर पर डाक बंगला है, जहाँ से बाईं ओर निमियाघाट का रास्ता जाता है। दूसरा दाईं ओर का



मधुबन में मन्दिर समूहों का अलौकिक दृश्य

रास्ता मधुबन जाता है।

मधुबन उतरने पर पुनः भोमियाजी बाबा का दर्शन कर विश्राम करना है। वापस पहुँचने तक ३-४ बज जाते हैं। पहुँचने पर कुछ थकावट-सी जरूर महसूस होती है। क्योंकि कुल १८ मील पार करके आये हैं। परन्तु रात भर में थकावट मिट जाती है।

इस प्रकार महान पवित्र सम्मेतशिखर पहाड़ की हमारी यात्रा संपूर्ण होती है।

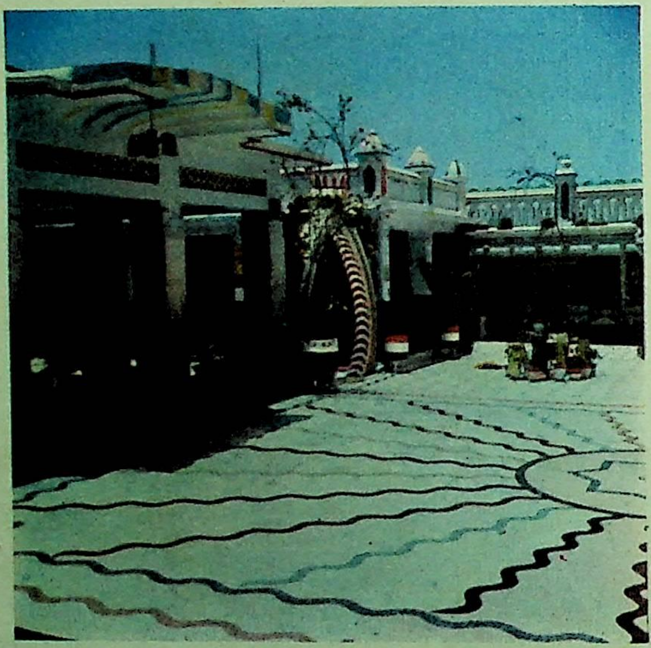
यहाँ प्रतिवर्ष पौष कृष्णा दशमी व फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा (होली के दिन) को मेला भरता है, जब जैन व जैनेतर विपुल संख्या में भाग लेकर प्रभु-भक्ति में लीन हो जाते हैं।

अन्य मन्दिर * पहाड़ पर स्थित सारी टूँकों व मन्दिरों का वर्णन विशिष्टता में दे चुके हैं। इनके अतिरिक्त पहाड़ पर कोई मन्दिर या टूँके नहीं हैं। पहाड़ की तलहटी मधुबन में आठ श्वेताम्बर मन्दिर दो दादावाड़ियाँ व एक भोमियाजी महाराज का मन्दिर है। इनके अतिरिक्त दिगम्बर बीसपंथी की कोठी में आठ जिनालय व दिगम्बर तेरापंथी कोठी में नौ जिनालय हैं। दिगम्बर बीसपंथी व तेरापंथी समुदायों की भी अलग-अलग पेढ़ियाँ हैं।

कला और सौन्दर्य * पहाड़ पर के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन कर चुके हैं। पहाड़ पर से नीचे निहारते हैं तो मधुबन के सारे मन्दिरों की निर्माण शैली व कला अत्यन्त ही मनोरम लगती है।

मार्ग दर्शन * मधुबन से नजदीक के रेलवे स्टेशन गिरडी २५ कि० मी० व पार्श्वनाथ ईसरी बाजार २२ कि० मी० हैं, जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा है। मधुबन धर्मशालाओं तक बस व कार जा सकती हैं। मधुबन का बस स्टैण्ड धर्मशालाओं के निकट ही है। मधुबन से पहाड़ की यात्रा पैदल करनी पड़ती है। परन्तु डोलियों का भी साधन है। गिरडी व पार्श्वनाथ में भी स्टेशनों के निकट ही सुविधायुक्त श्वेताम्बर मन्दिर व धर्मशालाएँ हैं।

सुविधाएँ * ठहरने के लिये मधुबन में श्वेताम्बर व दिगम्बर धर्मशालाएँ हैं। जिनमें पानी, बिजली, बर्तन व ओढ़ने-बिछाने के वस्त्रों की सुविधा है। श्वेताम्बर धर्मशाला में भोजनशाला भी है। पहाड़ पर पूजा-सेवा के लिये पानी की सुविधा है।



श्री भोमियाजी महाराज मंदिर – मधुबन (सम्मेतशिखर)

पेढ़ी * श्री जैन श्वेताम्बर सोसायटी, कोठी : गाँव मधुबन : डाक घर – शिखरजी : जिला – गिरडिह : प्रान्त – बिहार : तार घर – गिरिडिह व ईसरी बाजार (पार्श्वनाथ) टेलीफोन – पी० सी० ओ० ईसरी बाजार (पार्श्वनाथ)।



मनोवांछित फलदातार सम्मेतशिखर के अधिष्ठायक श्री भोमियाजी महाराज – मधुबन (सम्मेतशिखर)



रिद्धि के दातार श्री गौतम स्वामीजी महाराज – गुणायाजी

श्री गुणायाजी तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री गौतमस्वामी महाराज, पद्मासनस्थ श्वेतवर्ण, लगभग ३० सें० मी०। (श्वेताम्बर मन्दिर)।

तीर्थ स्थल * नवादा स्टेशन से ३ कि० मी० गुणायाजी गाँव में मुख्य मार्ग से २०० मीटर दूर सरोवर के मध्य।

प्राचीनता * राजगृही के इतिहास में गुणशील चैत्य का वर्णन आता है। लेकिन एक मान्यतानुसार गुणशील का अपभ्रंश ही गुणायाजी नाम हुआ माना जाता है। जहाँ भगवान महावीर का अनेकों बार पदार्पण हुआ व समवसरण रचे गये थे।

एक और मतानुसार प्रभु के प्रथम गणधर श्री गौतमस्वामीजी ने यहाँ केवलज्ञान प्राप्त किया। कुछ भी हो यह तीर्थ क्षेत्र भी भगवान महावीर के समय का है।

विशिष्टता * गुणायाजी ही गुणशील चैत्य का अपभ्रंश माना जाने के कारण यहाँ की महान विशेषता हो जाती है। क्योंकि भगवान महावीर का अनेकों बार गुणशील चैत्य में ठहरने का उल्लेख आता है। श्री गौतमस्वामीजी को केवलज्ञान भी यहीं हुआ माना जाता है।

अन्य मन्दिर * इसके अतिरिक्त एक दिगम्बर मन्दिर भी है।

कला और सौन्दर्य * इस जल मन्दिर की निर्माण शैली देखते ही पावापुरी का जल मन्दिर स्मरण हो आता है। मन्दिर के सामने एक तोरण है, जिसकी कला दर्शनीय है।

मार्ग दर्शन * नजदीक का स्टेशन नवादा ३ कि० मी० है। नवादा गाँव २ कि० मी० है। नवादा से रिक्शों की सुविधा है। गुणायाजी छोटा गाँव है। पटना से रांची मुख्य मार्ग पर यह गाँव है। मन्दिर से मुख्य सड़क २०० मीटर है। मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं। पावापुरी से यह स्थल २० कि० मी० है।

सुविधाएँ * ठहरने के लिये श्वेताम्बर व दिगम्बर धर्मशालाएँ हैं, जहाँ पानी व बिजली का साधन है।

पेढ़ी * श्री जैन श्वेताम्बर भन्डार श्री गुणायाजी तीर्थ। गाँव – गुणायाजी : डाक घर – नवादा : जिला – नवादा : प्रान्त – बिहार : तार घर – नवादा : टेलीफोन – पी० सी० ओ० नवादा।

सहायक : श्री भंवरलालजी अमरचन्दजी लूनिया, श्री लूणकरनजी कंवरलालजी प्रेमराजजी गोलेछा, फलोदी (राज०) वाले, दुर्ग (मध्य प्रदेश)

आकर्षक जल मन्दिर-गुणायाजी





श्री महावीर प्रभु, चरण पादुका – अन्तिम देशना व निर्वाण स्थल – पावापुरी

श्री पावापुरी तीर्थ

तीर्थाधिराज ❋ श्री महावीर भगवान, चरण पादुका, श्याम वर्ण, लगभग १८ सें० मी०। (श्वेताम्बर जल मन्दिर)।

तीर्थ स्थल ❋ पावापुरी गाँव के बाहर सरोवर के मध्य।

प्राचीनता ❋ यह क्षेत्र प्राचीन काल में मगध देश के अन्तर्गत एक शहर था। इसे मध्यमा पावा व अपापापुरी कहते थे। भगवान महावीर के समय ही भगवान के परम भक्त मगध नरेश श्रेणिक राजा के पुत्र अजातशत्रु मगध देश के राजा बन चुके थे। आज से लगभग २५०० वर्ष पूर्व अजातशत्रु के राजत्व काल में यहाँ हस्तिपाल नाम का राजा राज्य करता था। सम्भवतः हस्तिपाल मगधदेश के अन्तर्गत इस गाँव का माण्डलिक राजा होगा। उस समय भगवान महावीर चम्पापुरी से विहार करके यहाँ पधारे व राजा हस्तिपाल की रज्जुगशाला में ठहरे।

चातुर्मास में भगवान के दर्शनार्थ अनेकों राजागण, श्रेष्ठीगण आदि भक्त आते रहते थे। प्रभु ने प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी को निकटवर्ती गाँव में देवशर्मा ब्राह्मण को उपदेश देने भेजा। कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी के प्रातः काल प्रभु की अन्तिम देशना प्रारम्भ हुई उस समय मल्लवंश के नौ राजा, लिच्छवि वंश के नौ राजा आदि अन्य भक्तगणों से सभा भरी हुई थी। सारे श्रोता प्रभु की अमृतमयी वाणी को अत्यन्त भाव व श्रद्धा पूर्वक सुन रहे थे। प्रभु ने निर्वाण का समय निकट जानकर अन्तिम उपदेश की अखण्ड धारा चालू रखी। इस प्रकार प्रभु १६ पहर "उत्तराध्यायन सूत्र" का निरूपण करते हुए अमावस्या की रात्रि के अन्तिम पहर, स्वाति नक्षत्र में निर्वाण को प्राप्त हुए। इन्द्रादि देवों ने निर्वाण कल्याणक मनाया व उपस्थित राजाओं व अन्य भक्तजनों ने प्रभु के वियोग से ज्ञान का दीपक बुझ जाने के कारण उस रात्रि में घी के प्रकाश मय रत्नदीप जलाये। उन असंख्यों दीपकों से अमावस्या की घोर रात्रि को प्रज्वलित किया गया। तब से दीपावली पर्व प्रारम्भ हुआ। आज भी उस दिन की यादगार में दीपावली के दिन सारे शहर व गाँव सहस्रों दीपकों की ज्योति से जगमगा उठते हैं।

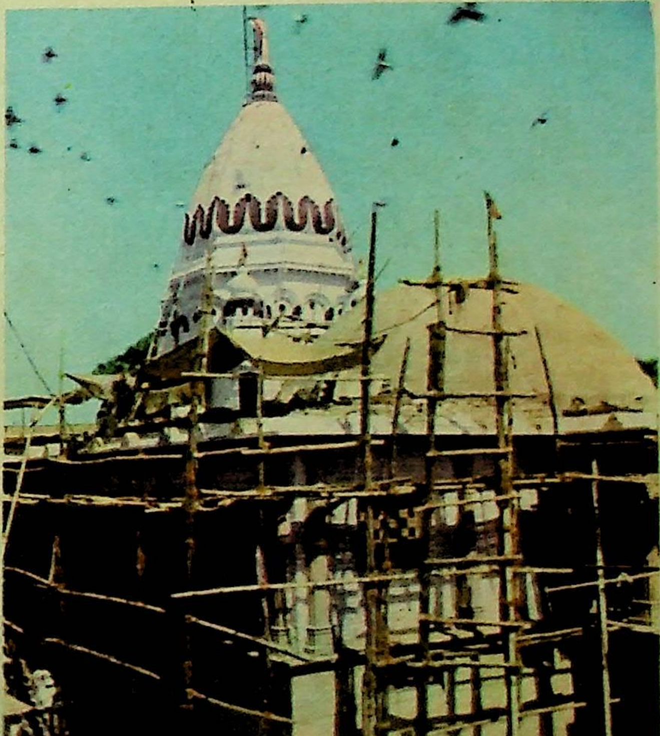
प्रभु के निर्वाण के समाचार चारों तरफ फैल चुके। लाखों देव व मानवो की भीड़ प्रभु के अन्तिम दर्शनार्थ उमड़ पड़ी। इन्द्रादि देवों व जन समुदाय ने विराट जुलूस के साथ प्रभु की देह को कुछ दूर ले जाकर विधान पूर्वक अन्तिम संस्कार किया।

देवी देवतागण व अगणित मानव समुदाय ने प्रभु के देह की कल्याणकारी भस्म को ले जाकर अपने-अपने पूजा गृह में रखा। भस्म न मिलने पर उस भस्म से मिश्रित यहाँ की पवित्र मिट्टी को भी ले गये जिससे यहाँ गड्ढा हो गया।

भगवान के ज्येष्ठ भ्राता नन्दीवर्धन ने अन्तिम देशना स्थल एवं अन्तिम संस्कार स्थल पर चौंतरे बनाकर प्रभु के चरण स्थापित किये जो आज के गाँव मन्दिर व जल मन्दिर माने जाते हैं।

जल मन्दिर में चरण पादुकाओं पर कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है। समय-समय पर इस मन्दिर का जीर्णोद्धार हुआ। पहले इस वेदी पर चरणों के पास सं० १२६० ज्येष्ठ शुक्ला २ के दिन आचार्य श्री अभयदेवसूरीश्वरजी द्वारा प्रतिष्ठित महावीर भगवान की एक धातु प्रतिमा थी। वर्तमान में यह प्रतिमा गाँव मन्दिर में है। आज का गाँव मन्दिर ही हस्तिपाल की रज्जुगशाला व प्रभु की अन्तिम देशना स्थल माना जाता है। इसी स्थान पर दीपावली पर्व प्रारम्भ हुआ जो अभी भी सारे भारत वर्ष में मनाया जाता है। समय-समय पर कई बार जीर्णोद्धार हुए। गाँव मन्दिर में वर्तमान चरण पादुकाओं पर सं० १६४५ वैशाख शुक्ला ३ का लेख उत्कीर्ण है। हो सकता है, जीर्णोद्धार के समय नये चरण प्रतिष्ठित किये गये हों। आज तक यहाँ असंख्य मुनिगण व भक्तगण दर्शनार्थ आये हैं, जिनका विवरण सम्भव नहीं। प्रारम्भ से दीपावली के अवसर पर प्रभु के निर्वाणोत्सव का मेला लगता है। पहिले यह मेला पाँच दिन का होता था। जिनप्रभसूरिजी ने अपने विविध तीर्थ कल्प में लिखा है कि चातुर्वर्णिक लोग यात्रा महोत्सव करते हैं। उसी एक रात्रि में देवानुभाव से कुएँ

अन्तिम देशना व निर्वाण स्थल मंदिर— पावापुरी







चरम तीर्थंकर प्रभुवीर के अन्तिम संस्कार स्थल पर जल मन्दिर का अलौकिक दृश्य – पावापुरी



चरम तीर्थंकर भगवान महावीर प्रभु की प्राचीन चरण पादुकाएँ – जल मन्दिर, पावापुरी।

स लाए जल से पूर्ण दीपक में तेल के बिना दीपक प्रज्वलित होता है। श्वेताम्बर समुदाय का मेला कार्तिक कृष्णा अमावस्या को होता है उसी रात्रि के अन्तिम पहर में लड्डु चढ़ाते हैं।

(दिगम्बर मान्यतानुसार प्रभु कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी के रात्रि के अन्तिम पहर में निर्वाण प्राप्त हुए। अतः वे लोग उक्त रात्रि को लड्डु चढ़ाते हैं व उत्सव मनाते हैं)

विशिष्टता * त्रिशलानन्दन त्रैलोक्यनाथ चरम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान की निर्वाण भूमि रहने के कारण इस पवित्र भूमि का प्रत्येक कण पूज्यनीय है।

प्रभु वीर की अन्तिम देशना इस पावन भूमि में हुई थी। अतः यहाँ का शुद्ध वातावरण आत्मा को परम शान्ति प्रदान करता है।

दीपावली त्योहार मनाने की प्रथा महावीर भगवान के निर्वाण दिवस से यहीं से प्रारम्भ हुई।

भगवान महावीर की प्रथम देशना भी यहीं पर हुई मानी जाती है। उस स्थान पर नवीन सुन्दर समवसरण के मन्दिर का निर्माण हुआ है। यह भी मान्यता है कि इन्द्रभुति गौतम का प्रभु से यहीं प्रथम मिलाप हुआ था जिससे प्रभावित होकर प्रभु के पास दीक्षा ली व प्रथम गणधर बने। कल्पसूत्र में भी इसका विस्तार पूर्वक वर्णन है। (दिगम्बर मान्यतानुसार प्रथम देशना व इन्द्रभुति श्री गौतम का मिलाप राजगृही बताया है)।

अन्य मन्दिर * गाँव का मन्दिर व जल मन्दिर इन दो श्वेताम्बर मन्दिरों के अतिरिक्त वर्तमान में यहाँ पर पुराना समवसरण मन्दिर, महताब बीबी मन्दिर व नया समवयरण मन्दिर हैं। इनके अतिरिक्त जल मन्दिर के पास ही एक विशाल दिगम्बर मन्दिर है।

कला और सौन्दर्य * जल मन्दिर की निर्माण शैली का जितना वर्णन करें कम है। कमल के फूलो से लदालद भरे

सहायक : मेसर्स. हजारीमल रूपचन्द, मद्रास–१.

सरोवर के बीच इस मन्दिर का दृश्य देखने मात्र से भगवान महावीर का स्मरण हो आता है। जल मन्दिर में प्रवेश करते ही मनुष्य सारे बाह्य वातावरण भूलकर प्रभु भक्ति में अपने आपको भूल जाता है–ऐसा शुद्ध व पवित्र वातावरण है यहाँ का।

अन्य श्वेताम्बर व दिगम्बर मन्दिरों में प्राचीन कलात्मक प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं।

नवीन समवसरण मन्दिर अति ही रचनात्मक ढंग से बना है।

मार्ग दर्शन ✳ यहाँ के रेलवे स्टेशन पावापुरी रोड़ १० कि० मी० बख्तीयारपुर ४४ कि० मी० व नवादा २३ कि० मी० दूर है। पावापुरी रोड़ के अतिरिक्त अन्य जगहों पर टैक्सी व बस की सुविधा हैं। नजदीक का बड़ा गाँव बिहार सरीफ १५ कि० मी० है। बिहारसरीफ-राँची नेशनल हाई रोड़ पर यह तीर्थ स्थित है। मुख्य सड़क से लगभग १ कि० मी० गाँव में आना पड़ता है, जहाँ पर ताँगे मिलते हैं। धर्मशाला तक व सारे मन्दिरों तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ ✳ ठहरने के लिये गाँव के मन्दिर व नये समवसरण श्वेताम्बर मन्दिर में सुविधा है, जहाँ पानी, बिजली, आदि की सुविधा है। गाँव के मन्दिर की धर्मशाला में भोजनशाला भी है। दिगम्बर मन्दिर के पास दिगम्बर धर्मशाला भी है, जहाँ भोजनशाला के अतिरिक्त सारी सुविधाएँ हैं।

पेढ़ी ✳ १. श्री जैन श्वेताम्बर भन्डार तीर्थ पावापुरी। डाक घर – पावापुरी : जिला – नालन्दा : प्रान्त – बिहार : तार घर – बिहार सरीफ : टेलीफोन – ५ पावापुरी : २. श्री दिगम्बर तीर्थ कमीटी पावापुरी डाक घर – पावापुरी।



जल मन्दिर का निकट दृश्य – पावापुरी।



श्री कुण्डलपुर तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री गौतम स्वामीजी महाराज, चरण-पादुका, श्याम वर्ण, लगभग २५ सें० मी०।

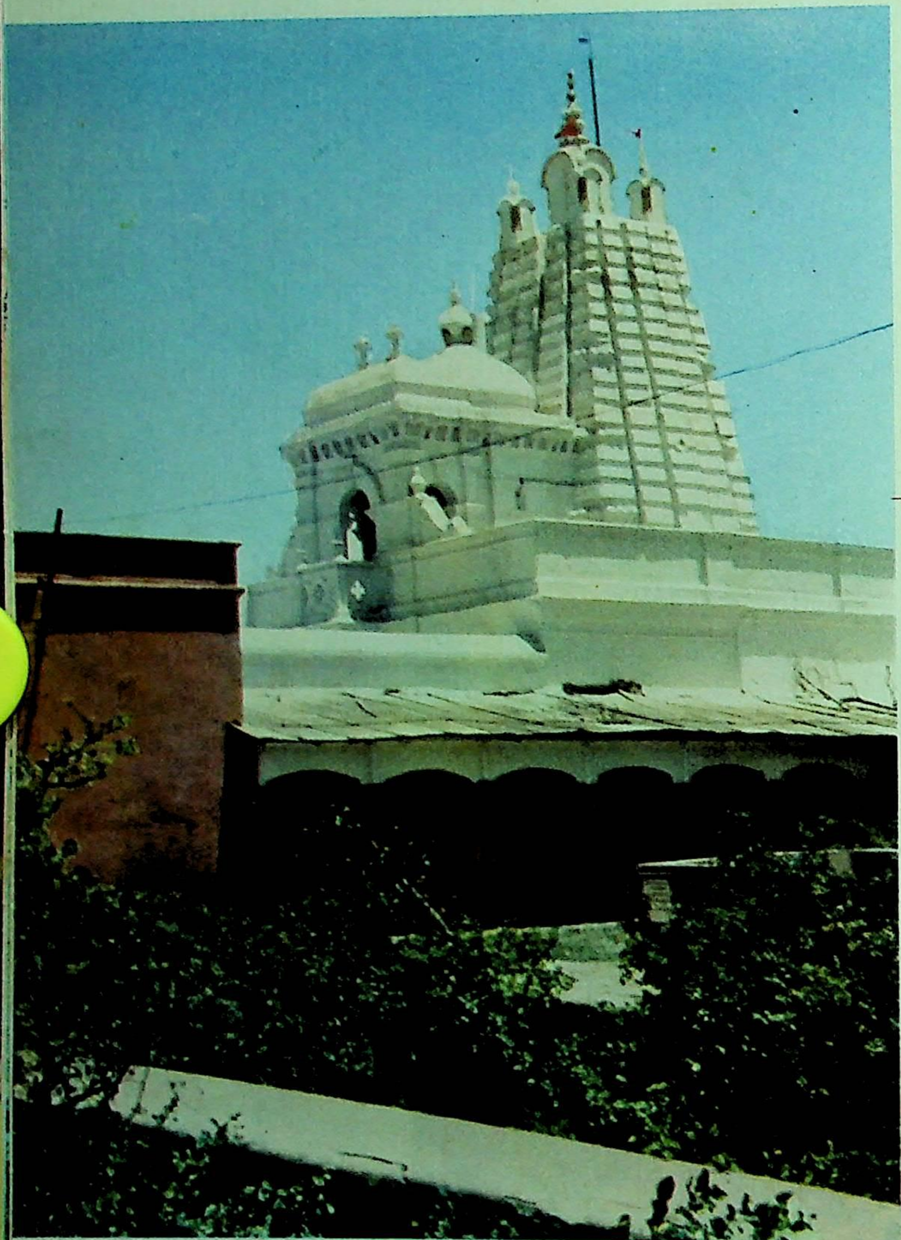
तीर्थ स्थल * नालन्दा से ३ कि० मी० दूर कुण्डलपुर गाँव में।

प्राचीनता * प्राचीन काल में इसे गुव्वरगाँव व बड़गाँव भी कहते थे। नालन्दा व कुण्डलपुर गाँव राजगृही के उपनगर थे। भगवान महावीर के तीन गणधर इन्द्रभुति गौतम, अग्निभुति व वायुभुति का जन्म यहीं हुआ था। ये तीनों भाई थे।

ई० सं० ४१० में चीनी यात्री फाहियान यात्रार्थ आये तब इस स्थल को साधारण पाया था। उसके पश्चात् कुमारगुप्त ने ई० सं० ४२४-४५४ में बोद्ध साधुओं के लिए एक विशाल मठ बनवाया। पश्चात् नालन्दा में विश्वविद्यालय की स्थापना होने से बौद्ध विद्या का एक बड़ा केन्द्र बन गया। सातवीं सदी में आये चीनी यात्री हुएनसाँग ने इस विश्वविद्यालय की व्याख्या की है व विद्यालय में रहकर अभ्यास किया ऐसा बताया जाता है। लगभग तेरहवीं सदी तक इस विद्यालय के रहने का अनुमान है। पश्चात् बखत्यार खिलजी द्वारा इसका विनाश किये जाने का उल्लेख है। भगवान महावीर के समय व पश्चात् यहाँ जैन धर्म का अच्छा प्रभाव रहा है जिसका इतिहास साक्षी है। अगर खोद कार्य करके अनुसंधान किया जाय तो महत्वपूर्ण सामिग्री के मिलने की सम्भावना है। भगवान महावीर से गोसाले का मिलाप यहीं हुआ था। चौदहवीं सदी में विरचित "विविध तीर्थ कल्प" में श्री जिनप्रभसूरिजी ने इस तीर्थ की व्याख्या की है। सं० १५६५ में श्री हंससोम-विजयजी ने यहाँ १६ मन्दिर रहने का उल्लेख किया है। सं० १६६४ में पं० जयविजयजी ने यहाँ १७ मन्दिरों के होने का उल्लेख किया है। सं० १७५० में पं० सौभाग्यविजयजी नें एक मन्दिर एक स्तूप व बिना प्रतिमाओं के अन्य जीर्ण अवस्था में रहे कुछ मन्दिर होने का उल्लेख किया है।

विशिष्टता * भगवान महावीर के ग्यारह गणधरों में से तीन गणधरों की यह जन्मभूमि होने के कारण यहाँ की महान विशेषता है। लब्धि के दातार प्रभु वीर के प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामीजी के जन्म से यह भूमि पावन बनी है। भगवान महावीर का भी इस भूमि में अनेकों बार पदार्पण हुआ है व प्रभु के धर्मोपदेश से यहाँ पर अनेकों प्राणिओं ने अपना जीवन सफल बनाया है। अतः इस भूमि की महानता अवर्णनीय है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान इस मन्दिर के अतिरिक्त एक दिगम्बर मन्दिर है।

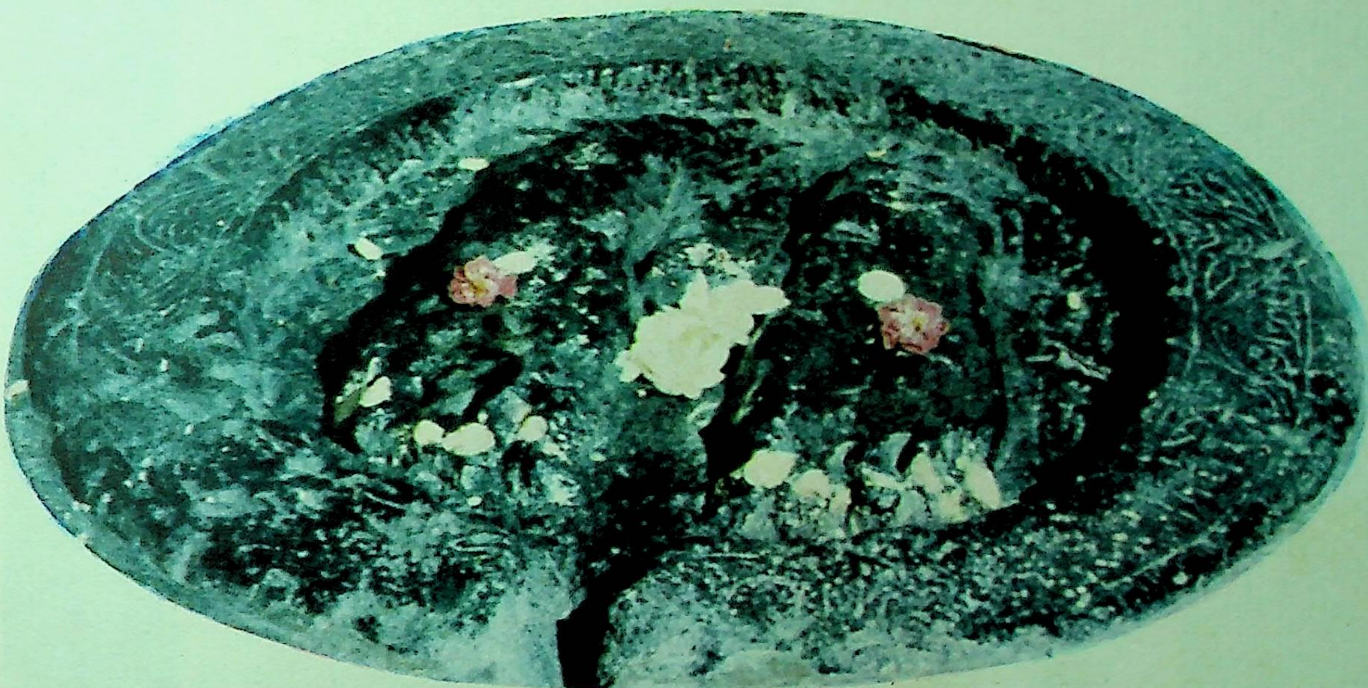


श्री गौतम स्वामीजी का जन्म स्थान मन्दिर – कुण्डलपुर

कला और सौन्दर्य ❋ श्वेताम्बर मन्दिर में प्राचीन प्रतिमाएँ अति ही कलात्मक सुन्दर व दर्शनीय हैं। नालन्दा विश्व विद्यालय, संग्रहालय में प्राचीन जिन प्रतिमाएँ, स्तूप आदि दर्शनीय हैं।

मार्ग दर्शन ❋ यहाँ का रेलवे स्टेशन नालन्दा बख्तीयारपुर-राजगिर लाइन में लगभग ३¹/₄ कि० मी० दूर है। नालन्दा स्टेशन से नालन्दा खण्डहर २¹/₂ कि० मी० व वहाँ से यह स्थल ०.३/₄ कि० मी० है। राजगिर से नालन्दा होकर कुल १६ कि० मी० है। पावापुरी से बिहारसरीफ होते हुए कुल २६ कि० मी० है। नालन्दा में ताँगों व रिक्शों की सवारी का साधन हैं।

सुविधाएँ ❋ मन्दिर के निकट ही धर्मशाला है, जहाँ पानी व बिजली की सुविधा है।



श्री गौतम स्वामीजी महाराज, चरण पादुका – कुण्डलपुर

पेढ़ी ❋ श्री जैन श्वेताम्बर भण्डार। श्री कुण्डलपुर तीर्थ। डाक घर – नालन्दा : जिला – नालन्दा : प्रान्त – बिहार : तार घर – नालन्दा : टेलीफोन – पी० सी० ओ० नालन्दा।



श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान – श्वेताम्बर मन्दिर, विपुलाचल (राजगृही)

सहायक : शाह श्रवणकुमार रविन्द्रकुमार अरुणकुमार मधुकुमार गांधी व उनकी मातुश्री श्रीमती चन्दनबेन धर्मपत्नी स्व० श्री देवसी माणकचन्द गांधी, मद्रास–१४.

श्री राजगृही तीर्थ

तीर्थाधिराज * विपुलाचल पर्वत :– श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान, श्याम वर्ण, लगभग ४५ सें० मी०। (श्वेताम्बर मन्दिर)।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान, श्वेत वर्ण, लगभग ८३ सें० मी० (दिगम्बर मन्दिर)।

रत्नगिरि पर्वत :– श्री चन्द्रप्रभ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ (श्वेताम्बर मन्दिर) श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान, श्याम वर्ण, पद्मासनस्थ (दिगम्बर मन्दिर)।

उदयगिरि पर्वत :– श्री पार्श्वनाथ भगवान, चरण पादुका, (श्वेताम्बर मन्दिर)। श्री महावीर भगवान, खड्गासन मुद्रा में, बादामी वर्ण, (दिगम्बर मन्दिर)।

स्वर्णगिरि पर्वत :– श्री आदिनाथ भगवान, चरण पादुका, (श्वेताम्बर मन्दिर) श्री शान्तिनाथ भगवान, श्याम वर्ण, पद्मासनस्थ, (दिगम्बर मन्दिर)।

वैभारगिरि पर्वत :– श्री मुनिसुव्रत स्वामी भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, (श्वेताम्बर मन्दिर)।

श्री महावीर भगवान, पद्मासनस्थ, (दिगम्बर मन्दिर)।

तीर्थ स्थल * राजगिर गाँव के निकट पाँच पर्वतों पर।

प्राचीनता * यहाँ की प्राचीनता का इतिहास बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान के समय से प्रारम्भ होता है। प्राचीन काल में इस नगरी को चरणकपुर, ऋषभपुर, कुशाग्रपुर, बसुमति, गिरिव्रज, क्षितिप्रतिष्ठ, पंचशैल आदि नामों से भी संबोधित किया जाता था।

किसी समय इस नगरी में हरिवंशी सुमित्र नाम के राजा राज्य करते थे। उनकी पट्टरानी का नाम पद्मावती था। शुभानुशुभ योग से श्रावण पूर्णिमा के दिन महारानी ने तीर्थंकर जन्म सूचक महा स्वप्न देखे। उसी क्षण स्वर्ग से सुरश्रेष्ठ का जीव अपने पूर्व के २ भव पूर्ण करके माता की कुक्षी में प्रविष्ट हुआ। गर्भकाल समाप्त होने पर ज्येष्ठ कृष्णा नवमी के शुभ दिन पुत्र रत्न का जन्म हुआ। गर्भ. काल में माता, मुनियों की तरह सुव्रता रही थी। इससे पुत्र का नाम श्री मुनिसुव्रत रखा। राजकुमार के यौवनावस्था को प्राप्त होने पर पिता ने उनका प्रभावती आदि अनेकों राज्य-कन्याओं के साथ विवाह किया। प्रभावती ने सुव्रत नामक पुत्र रत्न को जन्म दिया। राजा सुमित्र ने दीक्षा अंगीकार की। मुनिसुव्रत को राज्य भार संभलाया गया।कई काल तक राज्य सुख भोगते हुए एक दिन संसार को असार समझकर लोकान्तिक देवों की प्रार्थना से अपने पुत्र सुव्रत को राज्य भार संभलाकर वर्षीदान देते हुए फाल्गुन कृष्णा अष्टमी को यहाँ के नलिगुहा नामक उद्यान में एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ग्रहण की।

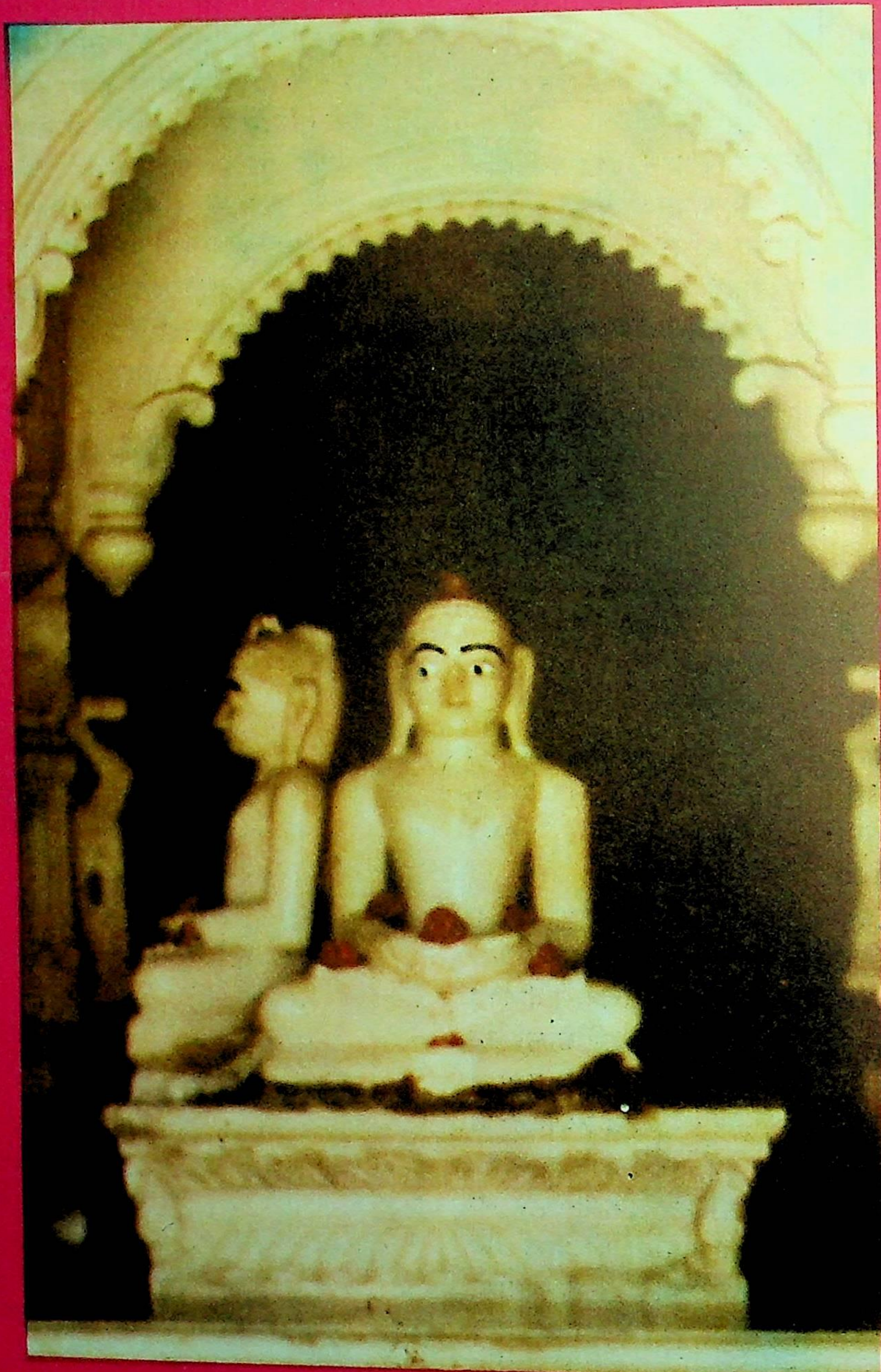
चिरकाल तक विहार करते हुए पुनः उसी उद्यान में आये व चंपा वृक्ष के नीचे कायोत्सर्ग ध्यान में रहते हुए फाल्गुन कृष्णा १२ के दिन केवलज्ञान प्राप्त किया। (दिगम्बर मान्यतानुसार प्रभु का जन्म आसोज शुक्ला द्वादशी, दीक्षा वैशाख कृष्णा दशमी व केवलज्ञान फाल्गुन कृष्णा षष्टी के दिन हुआ माना जाता है) इस प्रकार श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान के चार कल्याणकों से यह भूमि पावन बन चुकी थी।

इसी हरिवंश के अनेक राजाओं के बाद बृहद्रथ राजा हुआ व उनका पुत्र जरासंध पराक्रमी राजा हुआ। जरासंध ने मथुरा के राजा श्री कंस के साथ अपनी पुत्री जीवयशा का विवाह किया था। प्रजा पर किये गये अत्याचारों के कारण कंस श्री कृष्ण के हाथों मारा गया (कंस श्री कृष्ण का मामा था) इस पर जरासंध यादवों से रुष्ट हुआ। मथुरा पर बार-बार आक्रमण करने लगा। इन आक्रमणों से हैरान होकर यादवगण पश्चिम दिशा में जाकर द्वारिका नगरी बसाकर वहाँ रहने लगे। यादवों का क्षेत्र भी काफी बढ़ चुका था।



जिनालयों का दृश्य – विपुलाचल पर्वत (राजगृही)

जरासंध ने यादवों से उसकी अधीनता स्वीकारने या युद्ध के लिये तैयार होने के लिये आह्वान किया। इस पर दोनों फौजों में कुरुक्षेत्र के मैदान में भीषण युद्ध हुआ। इसी युद्ध के समय श्री शंखेश्वर पार्श्वप्रभु की प्रतिमा का न्हवण जल सेना पर छिड़काया गया, जिससे उपद्रव शांत हुआ। अन्त



श्री चन्द्रप्रभ भगवान – श्वेताम्बर मन्दिर, रत्नगिरि (राजगृही)

में जरासंध मारा गया। इस काल में इस नगरी को गिरिव्रज कहते थे। गिरिव्रज पर श्री कृष्ण का अधिकार हुआ। श्री कृष्ण ने जरासंध के पुत्र सहदेव को गिरिव्रज का राज्य भार सौंपा लेकिन गिरिव्रज का वैभव घटता गया।

राजा श्रेणिक प्रारम्भ से बुद्ध धर्मावलम्बी थे परन्तु वैशाली गणतंत्र के गणाधीश राजा चेटक की पुत्री चेलना के साथ विवाह करने के बाद जैन धर्म के उपासक बनकर जैन-धर्म-प्रचार व प्रसार के लिये अपनी अमूल्य शक्ति का उपयोग किया था। राजा श्रेणिक भगवान महावीर के प्रमुख श्रोता थे, भगवान के हर समवसरण में भाग लेते थे व शंका का समाधान करते थे। बड़े ही उदार शासक थे। इनके समय में सर्व धर्मों के गुरुओं ने राजगृही को अपने प्रचार का केन्द्र बनाया था।

राजा श्रेणिक के राज्यकाल में पुनः यह नगरी अत्यन्त जाहोजलालीपूर्ण बन चुकी थी। 'औपयतिकसूत्र' में मगध के इस पाटनगरी की भव्यता, विशालता व समृद्धि आदि की व्याख्या की गई है। उस समय यहाँ हजारों जैन श्रावकों के घर थे। महाराजा श्रेणिक के तीन पुत्र अभयकुमार, वारिषेण व अजातशत्रु (जिसे कुणिक भी कहते हैं) हुए। अभयकुमार व वारिषेण ने दीक्षा ग्रहण कर ली थी। अजातशत्रु किसी धर्म-नेता द्वारा भड़काये जाने के कारण अपने पिता श्रेणिक को कैद करके कारावास में रख दिया था। एक दिन बात ही बातों में अपनी इस भूल के कारण अत्यन्त दुखी हुए व पिता को रिहा करने दौड़े। श्रेणिक ने इसे दौड़ते आते देखा व समझा कि मारने आ रहा है जिससे खुद अपना सिर पत्थरों से टकराते हुए मृत्यु को प्राप्त हुए। अजातशत्रु को पश्चात्ताप हुआ। दुख सहन न होने के कारण नई चम्पानगरी बसाकर वहाँ रहने लगे।

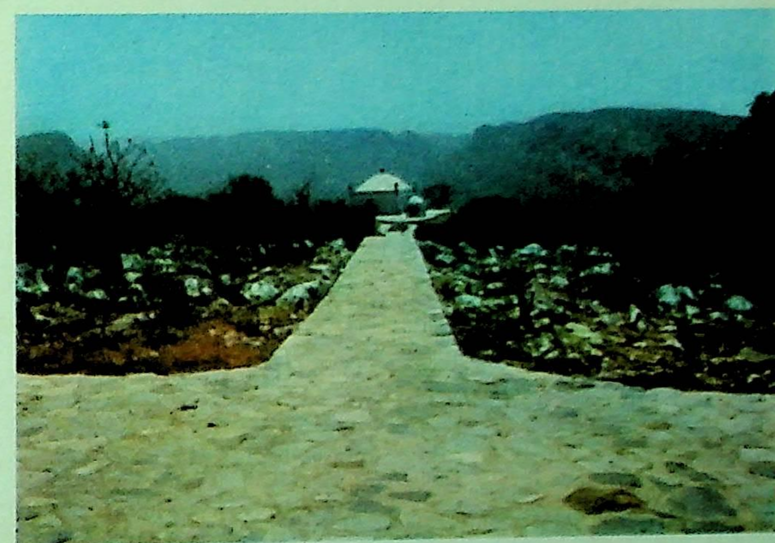
राजा श्रेणिक अत्यन्त धर्मनिष्ठ व दयावान होने से उनके द्वारा किये गये शुभ कार्यों के कारण अत्यन्त दुर्लभ तीर्थंकर गोत्र का बंधन हुआ। अतः श्री श्रेणिक राजा का जीव अगली चौबीसी में श्री पद्मनाभ नाम का पहला तीर्थंकर होगा ऐसा शास्त्रों में उल्लेख है। अजातशत्रु भी भगवान महावीर के अनुयायी थे। अजातशत्रु के बाद उनके पुत्र उदयन गद्दी पर आये। जिन्होंने पाटलीपुत्र बसाया।

श्रेणिक व अजातशत्रु के समय भगवान महावीर ने अनेकों बार इन पर्वतों पर विहार किया, जिनमें गुणशील चैत्य व विपुल गिरि पर्वत पर प्रभु का अनेकों बार आवागमन होने का उल्लेख मिलता है। शायद गुणशील चैत्य विपुलगिरि पर्वत पर होगा।

उदयन के बाद कलिंग नरेश खारवेल ने चढ़ाई करके इस नगरी को अपने अधीन किया—ऐसा उल्लेख है।

पश्चात मध्य काल में बौद्ध धर्म को राजाश्रय मिलने से खूब फला-फूला। वि० की नवमी शताब्दी में कन्नौज के राजा आम ने इस पर चढ़ाई की परन्तु विजयी न हो सके। अन्त में उनके पौत्र भोजराजा ने अपने अधीन किया। पश्चात् पुनः इस नगरी का पतन हुआ।

सं० १३६४ में जिनप्रभसूरीश्वरजी द्वारा रचित "विविध तीर्थ कल्प" में इसका वर्णन है। विपुलगिरि पर्वत पर श्री मण्डन के पुत्र देवराज व वच्छराज द्वारा श्री पार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर बनवाये जाने का सं० १४१२ के एक प्रशस्ति में उल्लेख है। सं० १५०४ में श्री शुभशील गणिवर्य द्वारा यहाँ अनेक जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा करवाये जाने का उल्लेख है। सं० १५२४ में श्रीमाल वंशज श्री जीतमलजी द्वारा वैभारगिरि पर्वत पर धन्ना, शालिभद्र की प्रतिमाएँ व ग्यारह गणधरों के चरण प्रतिष्ठित कराये जाने का उल्लेख है। सं० १६५७ में श्री जयकीर्तिसूरि, सं० १७४६ में श्री शीलविजयजी व उन्नीसवीं सदी में अमृतधर्मगणिजी द्वारा रचित तीर्थ मालाओं

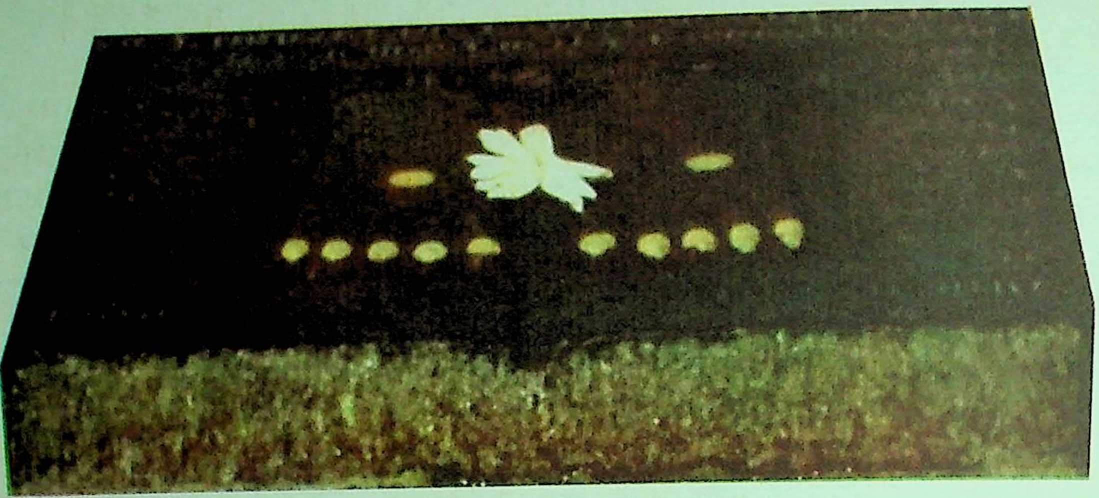


जिनालयों का दृश्य – रत्नगिरि (राजगृही)

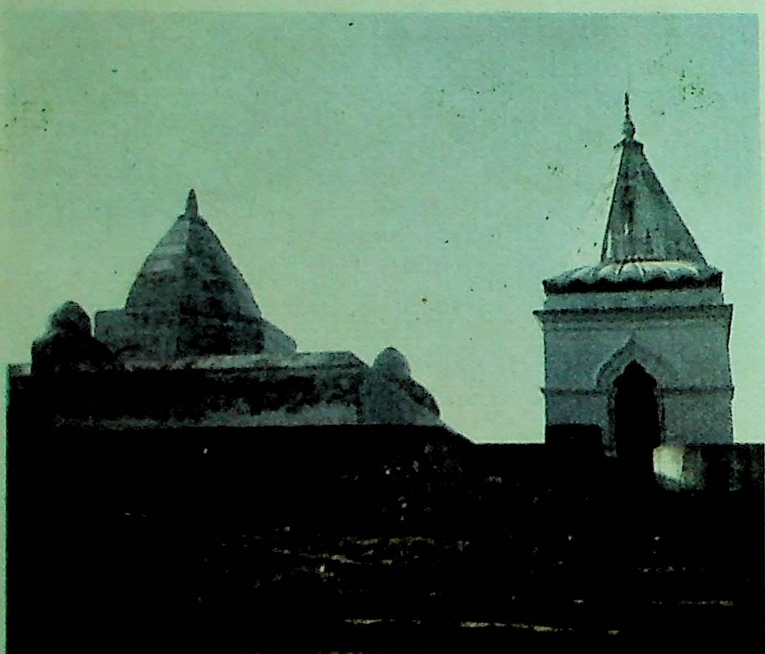
में इस तीर्थ के महत्ता की व्याख्या है। इनके अतिरिक्त भी अनेकों श्वेताम्बर व दिगम्बर साहित्यों में इस महान तीर्थ का उल्लेख है। आज तक अनेकों यात्री संघों का भी आवागमन हुआ है व आज भी चालू है। लेकिन आज इन तीर्थ स्थलों के सिवाय जैन बस्ती बिलकुल नहीं है।

वर्तमान में जनसाधारण की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए यहाँ वैभारगिरि की तलहटी में वीरायतन की योजना बनाई गई है। स्थानकवासी सम्प्रदाय के मुनि कवि अमरमुनिजी द्वारा इस योजना को स्वरूप दिया गया है। साध्वी श्री चन्दनाजी मुख्य कार्यवाहिका है। वीरायतन का उद्देश्य स्वस्थ एवं रचनात्मक जीवन के विकास की व्यवस्था है। आरोग्य केन्द्र, गोसदन, पुस्तकालय, पढ़ाई व उद्योग केन्द्र की रूपरेखा है।

विशिष्टता ❋ बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत स्वामी भग-



श्री पार्श्वनाथ भगवान, चरण पादुका – श्वेताम्बर मन्दिर– उदयगिरि (राजगृही)



जिनालयों का दृश्य – उदयगिरि (राजगृही)

वान के चार कल्याणक इस पावन भूमि में हुए। पराक्रमी, जग विख्यात, दयावान, धर्मनिष्ठ, भगवान महावीर के मुख्य श्रोता, मगधपति श्री श्रेणिक महाराजा यहाँ हुए जिन्होंने अपने शुभ कार्यों से तीर्थंकर गौत्र उपार्जन किया, जो भावी चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर श्री पद्मनाभ स्वामी होंगे-ऐसा शास्त्रों में उल्लेख है। भगवान महावीर के ग्यारह गणधर भी यहीं वैभारगिरि से मोक्ष सिधारे। इनमें नव गणधर भगवान महावीर के समय ही मोक्ष सिधार चुके थे व गौतम स्वामीजी एवं सुधर्मास्वामीजी भगवान के निर्वाण के बाद मोक्ष सिधारे। (एक और मान्यतानुसार गुणायाजी में ग्यारह गणधर मोक्ष पधारे हैं)।

दिगम्बर मान्यतानुसार भगवान महावीर ने केवलज्ञान के पश्चात् श्रावंण कृष्णा प्रतिपदा के दिन प्रथम देशना यहीं विपुलगिरि पर्वत पर दी थी। इन्द्रभूति श्री गौतमस्वामी प्रथम देशना से प्रभावित होकर यहीं प्रथम गणधर बने। (श्वेताम्बर मान्यतानुसार पावापुरी में प्रथम देशना हुई थी)।

भगवान महावीर के चौदह चातुर्मास इस पावन भूमि में हुए। उस काल में प्रभु की अमृतमयी वाणी से अनेक भव्य आत्माओं का कल्याण हुआ जो अवर्णनीय है।

श्री मेतार्य, अर्हभुता, धन्ना, शालिभद्र, श्री मेघकुमार, श्री अभयकुमार, श्री नंदिषेण, श्री अर्जुनमाली, श्री कयवन्नासेठ, श्री जम्बूस्वामी, श्री प्रभाष, श्री शय्यंभवसूरि, पुणिया श्रावक आदि महान पुण्य आत्माओं की भी यही जन्मभूमि है, जिनके कार्य की अमर गाथाएँ आज भी जन-जन में गाई जाती है।

भगवान बुद्ध का भी यही खास स्थान रहा। यहाँ के सप्तपर्णी गुफा में बौद्ध साधुओं का प्रथम सम्मेलन हुआ था जिसे प्रथम संगीति कहते हैं।

इन कारणों से यहाँ के पाँचों पर्वतों का एक-एक कण महान पवित्र है। ऐसे पवित्र स्थान की कम से कम जिन्दगी में एक बार यात्रा करने से वंचित न रहें। आइये हम भी इस यात्रा का स्मरण कर लें।

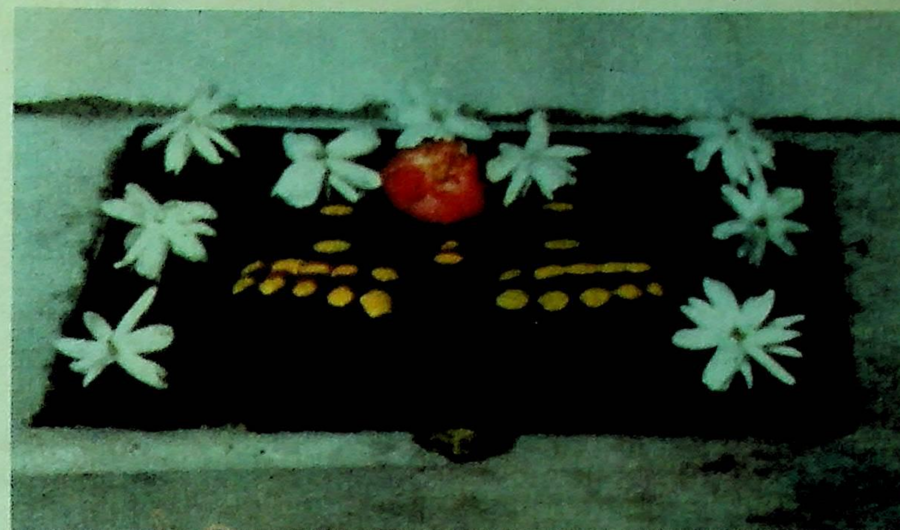
तलहटी की धर्मशाला से चलकर कुछ दूर जाने पर गर्म जल के कुण्ड आते हैं। यहाँ से कुछ आगे चलने पर प्रथम विपुलगिरि पर्वत की चढ़ाई प्रारम्भ होती है। लगभग २ १/२ कि० मी० और चलने पर इस विपुलगिरि पर्वत की टूँक आती है। दिगम्बर मान्यतानुसार भगवान महावीर की प्रथम देशना यहाँ हुई थी। इस पर्वत पर श्वेताम्बर व दिगम्बर मन्दिर हैं। एक और विशाल दिगम्बर मन्दिर का कार्य चालू है।

इस प्रथम पर्वत से लगभग १ १/२ कि० मी० उतरने व १ १/२ कि० मी० पुनः चढ़ने पर द्वितीय रत्नगिरि पर्वत आता है। पहले पर्वत से दूसरे पर्वत का रास्ता इतना सुलभ नहीं है। इस रत्नगिरि पर्वत पर भी श्वेताम्बर व दिगम्बर मन्दिर बने हुए हैं।

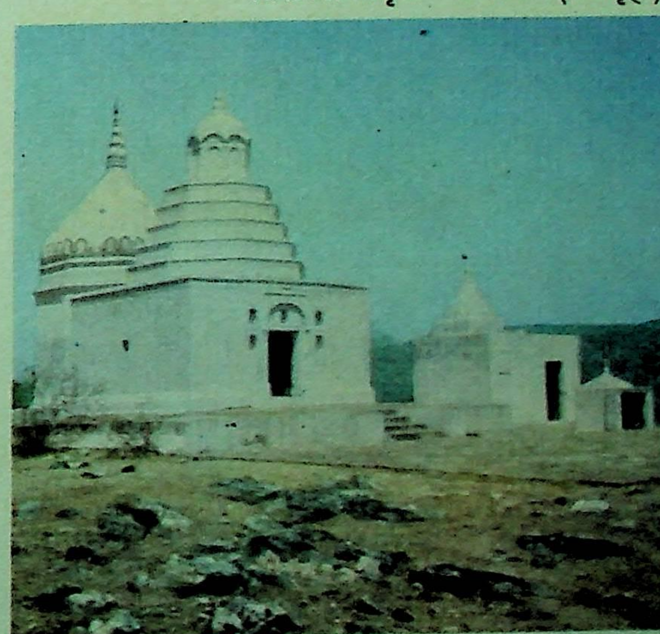
इस रत्नगिरि के सामने गृध्रकूट पर्वत पर बुद्ध भगवान का विशाल मन्दिर है। कहा जाता है भगवान बुद्ध अनेकों बार इस पर्वत पर आये थे व उनकी देशना हुई। इस रत्नगिरि पर्वत से २ कि० मी० पर गया-पटना रोड़ मिलती है। फिर एक कि० मी० जाने पर तीसरे उदयगिरि पर्वत की चढ़ाई प्रारम्भ होती है। चढ़ाई कठिन व लगभग १ १/२ कि० मी० है। सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। यहाँ भी श्वेताम्बर व दिगम्बर मन्दिर बने हुए हैं। उसी मार्ग से वापस उतरना पड़ता है। उतरने पर जलपानगृह बने हुए हैं। बाईं ओर पर्वत के चरणों को धोती हुई फल्गु नदी बहती है। यहाँ से धर्मशाला लगभग १ १/२ कि० मी० है।

धर्मशाला से चौथे पर्वत स्वर्णगिरि की तलेटी (श्रमणगिरि भी कहते हैं) लगभग ५ कि० मी० है। चढ़ाई लगभग ३ कि० मी० है। सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इस पर्वत पर भी श्वेताम्बर व दिगम्बर मन्दिर बने हुए हैं। इस पर्वत के दक्षिणी ढलान पर दो गुफाएँ हैं। एक पश्चिम की ओर व दूसरी पूर्व की ओर। पश्चिम गुफा में दिवार पर प्राचीन शिलालेख उत्कीर्ण हैं जो तीसरी चौथी शताब्दी के बताये जाते हैं। पहले इस गुफा में एक चतुर्मुखी प्रतिमा थी। इस गुफा के संबंध में एक किंवदन्ति यह भी है कि गुफा में राजा श्रेणिक का स्वर्ण-कोष छिपा हुआ है। इसलिए इस गुफा का नाम स्वर्णभन्डार चला आ रहा है। दूसरी पूर्व की गुफा में दीवारों पर प्रतिमाएँ अंकित हैं। ये गुफाएँ तीसरी शताब्दी की मानी जाती हैं।

श्री आदिनाथ भगवान, चरण पादुका, श्वेताम्बर मन्दिर– स्वर्णगिरि (राजगृही)



जिनालयों का दृश्य – स्वर्णगिरि (राजगृही)





श्री मुनिसुव्रत स्वामी भगवान – वैभारगिरि श्वेताम्बर मन्दिर (राजगृही)

यहाँ से लगभग २ कि० मी० दूर जरासध का अखाडा है। आगे बढ़ने पर पाँचवें पर्वत वैभारगिरि की चढ़ाई प्रारम्भ होती है। कुल सीढ़ियाँ ५६५ हैं। पर्वत पर श्वेताम्बर व दिगम्बर मन्दिर हैं। बायीं ओर कुछ दूर श्री शालिभद्र का मन्दिर है। भगवान महावीर के ग्यारह गणधर यहीं से मोक्ष सिधारे थे, ऐसी भी मान्यता है। इस मन्दिर के एक तरफ एक भग्न जैन मन्दिर है। इसमें अनेक प्राचीन तथा अति कलात्मक प्रतिमाएँ हैं। यह मन्दिर आठवीं सदी का माना जाता है। आगे जाने पर सप्तपर्णी गुफा है। कहा जाता है बौद्ध भिक्षुओं का प्रथम सम्मेलन यहाँ हुआ था। पहाड़ की पूर्वी ढलान पर एक पत्थर का मकान है जो जरासंध की बैठक माना जाता है। पर्वत से उतरने पर गरम जल के कुण्ड हैं, जिन्हें ब्रह्मकुण्ड कहते हैं। यहाँ से धर्मशाला लगभग ३ कि० मी० दूर है।

अन्य मन्दिर * पर्वतों की तलहटी राजगिर गाँव में

श्वेताम्बर व दिगम्बर मन्दिर हैं। पाँचों पहाड़ों पर ऊपर वर्णित मन्दिर हैं। पाँचवें पर्वत वैभारगिरि पर एक भग्न मन्दिर है जिसमें अनेक प्राचीन कलात्मक जिन प्रतिमाएँ हैं। भग्न मन्दिर की सारी प्रतिमाएँ वर्तमान में अपूजित हैं व पुरातत्व विभाग के अधीन है। यह मन्दिर आठवीं सदी का माना जाता है।

कला और सौन्दर्य ✻ तलहटी में स्थित श्वेताम्बर व दिगम्बर मन्दिरों में प्राचीन प्रतिमाओं की कला अति दर्शनीय है। प्रायः पहाड पर की प्राचीन प्रतिमाएँ यहाँ लाकर स्थापित की गई है। पाँचवें पहाड़ पर भग्न मन्दिर की प्रतिमाओं की कला अति ही दर्शनीय है। इनके अतिरिक्त मणियार मठ है (जिसे निमार्ल्य कूप भी कहते हैं) कहा जाता है ऋद्धि-संपन्न श्रेष्ठी श्री शालिभद्रजी के पितामह देवलोक से हमेशा पुत्र व बत्तीस पुत्र वधुओं के लिए भोजन, वस्त्र व अलंकार की तेंतीस-तेंतीस पेटियाँ भेजते थे। जिन्हें हमेशा उपयोग करके इस कूप में फेंक दिया जाता था। श्रेणिक (बिम्बसार) बन्दीगृह, जो मणियार मठ से १ कि० मी० है वहाँ अजातशत्रु ने अपने पिता श्रेणिक को बन्दी बनाकर रखा था। गर्म जल के कुण्ड अति प्राचीन हैं जिनका वर्णन कर दिया गया है। जरासंध की बैठक सप्तपर्णी गुफा आदि देखने योग्य है।

मार्ग दर्शन ✻ रेलवे स्टेशन राजगिर, तलहटी धर्मशालाओं से २ कि० मी० है। यहाँ का बस स्टैण्ड तलहटी धर्मशालाओं से सिर्फ २०० मी० है। गाँव में टैक्सी व रिक्शों का साधन हैं।

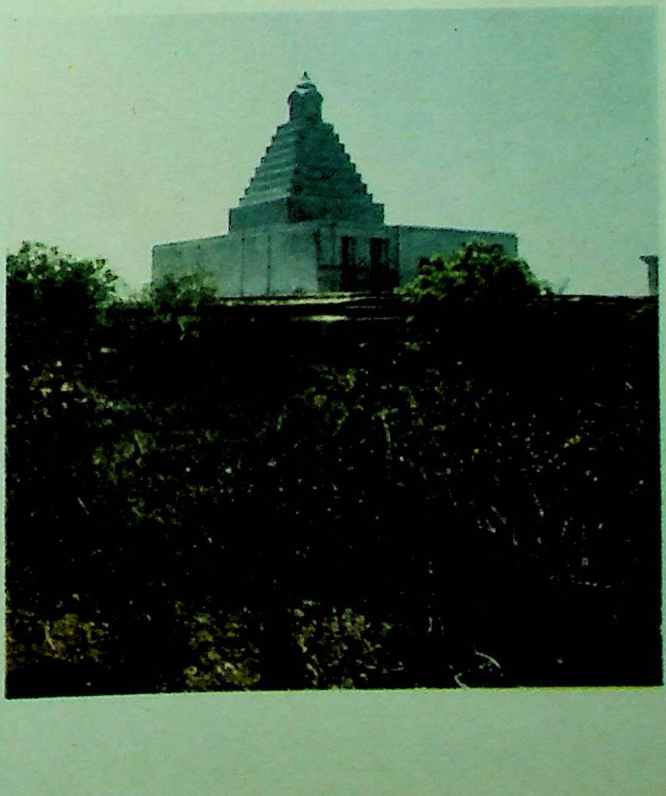
सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए तलहटी में श्वेताम्बर व दिगम्बर धर्मशालाएँ हैं, जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, भोजनशाला आदि की सुविधा है। पहाड़ों पर व रास्ते में पानी आदि की कोई खास सुविधा नहीं हैं। अतः तलहटी से जाते वक्त पूजा के लिए व पीने के पानी आदि का बन्दोबस्त करके जाना सुविधाजनक होगा। पाँचों पर्वतों की यात्रा दो दिनों में करना सुविधाजनक है। पहाड़ों की यात्रा प्रातः शीघ्र प्रारम्भ करना आवश्यक है। अन्यथा तकलीफ महसूस होगी।

पेढ़ी ✻ १. श्री जैन श्वेताम्बर कोठी : डाक घर – राजगिरि : जिला – नालन्दा : प्रान्त – बिहार : तार घर – राजगिरि : टेलीफोन – २० राजगिरि

२. श्री दिगम्बर जैन कोठी : डाक घर – राजगिरि।

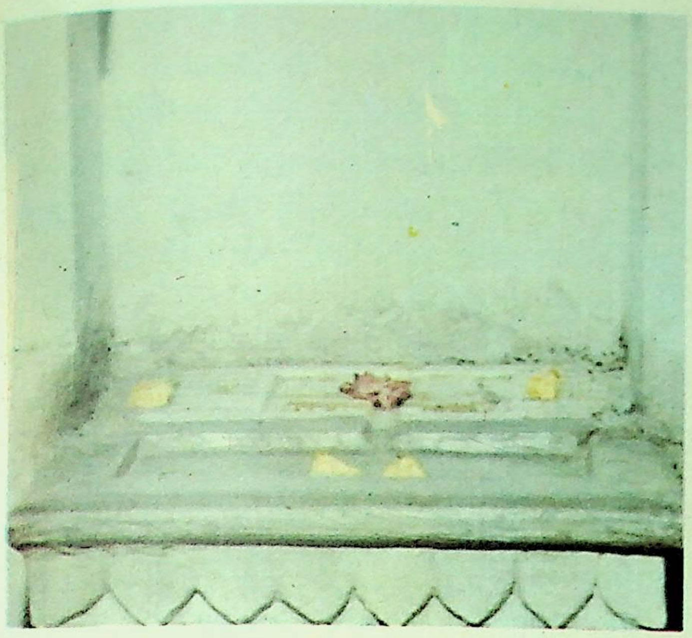


जिनालयों का दृश्य – वैभारगिरि पर्वत (राजगृही)





श्री विशालनाथ स्वामी भगवान – पाटलीपुत्र,



आर्य स्थूलि भद्र स्वामीजी चरण—गुलजारबाग

श्री पाटलीपुत्र तीर्थ

तीर्थाधिराज ※ श्री विशालनाथ स्वामी, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग ६० सें० मी०। बीसविहरमान भगवान में।

तीर्थ स्थल ※ पटना शहर के मध्य भोड़की गली में।

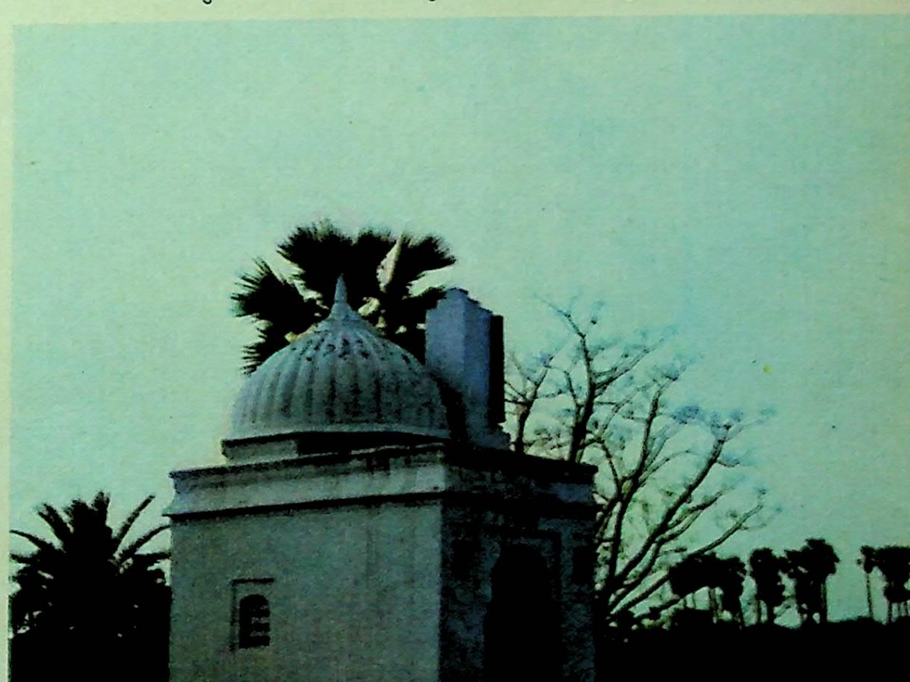
प्राचीनता ※ आज का पटना शहर प्राचीन काल में कुसुमपुर, पुष्पपुर आदि नाम से प्रचलित था। राजा श्रेणिक के पौत्र श्री उदयन ने अपने पिता श्री (कुणिक) अजातशत्रु के स्वर्गवासी होने के पश्चात वि० सं० पूर्व ४४४ वर्ष के लगभग यह शहर बसाया था—ऐसा उल्लेख है। (एक और मत यह भी है कि यह नगरी मर्यादा पुरुषोतम रामचन्द्रजी के काल के पूर्व ही बस चुकी थी) राजा उदयन जैन धर्म के अनुयायी थे। यह मगध देश की राजधानी थी। राजा उदयन ने यहाँ जिन मन्दिर, गजशाला, अश्वशाला, औषधशाला, पौशधशाला, सत्रशाला आदि का निर्माण करवाया था। यह एक विराट नगरी बन चुकी थी। उदयन को अजय, उदासी, उदायी आदि नामों से भी संबोधित किया जाता था।

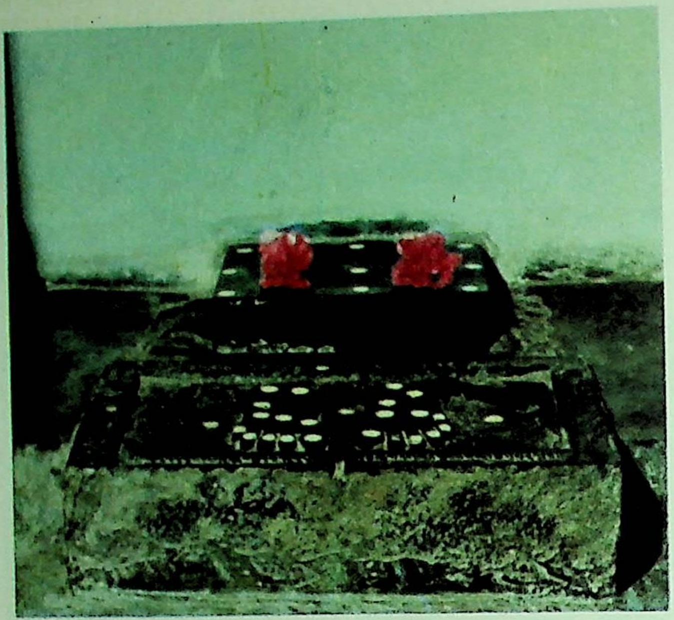
राजा उदयन के पश्चात् यहाँ की राज्यसत्ता राजा महापद्मनन्द के हाथ आई। राजा महापद्मनन्द भी जैन धर्मावलम्बी थे। इनके काल में यहाँ जैन धर्म का खूब विकास हुआ। राजा महापद्मनन्द कलिंग पर चढ़ाई करके जो जिन प्रतिमा यहाँ लेकर आये थे वह कई वर्षों तक यहाँ रही। पश्चात् राजा श्री खारवेल मगध को पराजित कर वह प्रतिमा पुनः कलिंग लेकर गये जिसका वर्णन खण्डगिरि-उदयगिरि की हाथी-गुफा के शिलालेख में उत्कीर्ण है।

राजा महापद्मनन्द के काल में अन्तिम केवली श्री जंबुस्वामी के शिष्य श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी हुए जिनका जन्म यहीं हुआ था। उनके शिष्य श्री संभूतिविजयजी व श्री भद्रबाहुस्वामी भी यहीं हुए।

राजा महापद्मनन्द के मंत्री शकटाल व वररुची थे। मंत्री शकटाल के पुत्र स्थुलिभद्र व श्रीयक थे। स्थूलिभद्र में विनयादि गुण तो थे ही साथ ही उनकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी। परन्तु इनका मन विषय वासना में लगा रहता था। वे इसी शहर में राज्य-नर्तकी कोशी के वहाँ प्रायः रहा करते थे। एक दिन संसार को असार समझकर मुनि श्री संभूतिविजयजी के पास दीक्षा ग्रहण की। परम्परा अनुसार सब साधुओं ने आचार्य भगवंत से चातुर्मास बिताने के लिए विभिन्न जगह जाने की अनुमति मांगी। उसी भाँति मुनि श्री स्थूलिभद्रजी ने भी राज्य-नर्तकी कौशी वेश्या के वहाँ चातुर्मास करने की अनुमति माँगी। उसी भाँति अनुमति दी गई। स्थुलिभद्रमुनि यहाँ पर स्थित गुलजारबाग के निकट कौशी वेश्या के चित्रशाला में चातुर्मास तक उसके वहाँ रहने के लिये गये। कौशी वेश्या इन्हें देखकर अत्यन्त खुश हुई परन्तु श्री स्थुलिभद्रमुनि की यह शर्त थी कि हर वक्त वह तीन हाथ दूर रहेगी। कौशी ने सहर्ष मंजूरी दी व इस काल में अनेकों प्रकार के हावभाव से डिगाना चाहा। लेकिन मुनिवर किंचित मात्र भी न डिग पाये। यह थी इनकी धर्मवीरता। कितना था आत्मबल इनमें!

आर्य स्थुलिभद्र स्वामी मन्दिर—गुलजारबाग (पाटलीपुत्र)





सेठ सुदर्शन के चरण, जिनके लिये सूली सिंहासन बना—गुलजार बाग।

कौशी शर्मिन्दा हुई। पश्चात् श्राविका बनकर ब्रह्मचर्य आदि बारह व्रत धारण किये।

चातुर्मास व्यतीत कर सब मुनिगण आचार्य श्री के पास गये। आचार्य श्री ने सब मुनियों के आगमन पर आशन पर बैठे-बैठे ही उनका स्वागत किया परन्तु मुनि स्थूलिभद्रजी के आने पर प्रफुल्लता के साथ उठकर गले लगाया व कहा कि महा दुष्कर कार्य किया है। उन्होंने और भी अनेकों कार्य किये जो चिरस्मरणीय हैं। राजा महापद्मनन्द के पश्चात् यहाँ की सत्ता मौर्य वंश के हाथ गई व चन्द्रगुप्त राजा बने। कहा जाता है कि जब १२ वर्ष का भयंकर दुष्काल पड़ा तब भद्रबाहु स्वामी आदि हजारों मुनिगणों ने दक्षिण की तरफ जाकर श्रवणबेलगोला में चन्द्रगिरि पर्वत पर निवास किया था। उस समय पाटलीपुत्र के तत्कालिन राजा चन्द्रगुप्त भी साथ थे।

आर्य श्री स्थूलिभद्रजी ने श्री भद्रबाहुस्वामीजी के पास रहकर दस पूर्वज्ञान का अभ्यास किया था। यहाँ पड़े १२ वर्ष दुष्काल के समय जैन आगमों को कंठस्थ रखने की परम्परा विच्छिन्न होती आ रही थी। उस समय श्रुतधर आर्य श्री स्थूलिभद्रजी ने जैन श्रमणसंघ को यहाँ इकट्ठा कर आगमों की वाचना एकत्रित करके ग्यारह अंग सुव्यवस्थित किये। यह पहली आगम वाचना मानी जाती है। (दिगम्बर मान्यता है कि भद्रबाहु स्वामी ने अकाल के समय १२००० साधुओं के साथ दक्षिण प्रान्त में चन्द्रगिरि पर्वत पर विश्राम किया था। अंत तक वहीं रहे थे। उनका यह भी मत है कि आर्य स्थूलिभद्रस्वामीजी के समय से ही श्वेताम्बर व दिगम्बर दो भेद हुए जो बाद में अलग संप्रदाय बने) आर्य स्थूलिभद्रस्वामी ई० सं० पूर्व ३११ में यहीं पर स्वर्ग सिधारे।

तत्पश्चात मौर्यकाल में सम्राट श्री संप्रति प्रतिबोधक आर्य श्री सुहस्तिसूरिजी, विक्रम की पहली सदी में आचार्य श्री वज्रस्वामी, आर्य श्री रक्षितसूरि, आचार्य श्री उमास्वाती, दूसरी शताब्दी में पादलिप्तसूरि आदि प्रकाण्ड आचार्यगणों ने भी यहाँ पदार्पण करके धर्म प्रभावना के अनेकों कार्य किये हैं।

पता चलता है कि लगभग सातवीं सदी तक यहाँ जैनों की अच्छी जाहोजलाली रही। बाद में यह शहर छोटे से गाँव में परिवर्तित हो गया था।

विक्रम की सत्रहवीं सदी में आगरा से कुंवरपाल व सोनपाल बंधुगण संघ लेकर यहाँ आये उस समय यहाँ महतीहण जाति के जैन रहते थे।

अठारहवीं सदी में बादशाह जहाँगीर के जवेरी हीराचन्द यहाँ रहते थे। जिन्होंने एक मन्दिर व दादावाड़ी का निर्माण करवाया था।

उस प्राचीन नगर को आज पुनः बिहार की राजधानी रहने का सौभाग्य मिला है।

विशिष्टता * इस नगर की स्थापना राजा उदयन ने की थी पश्चात् महापद्मनन्द, चन्द्रगुप्त आदि पराक्रमी राजा हुए। ये सारे राजा जैन धर्मावलम्बी थे। सेठ सुदर्शन यहीं पर स्वर्ग सिधारे। इनका स्मारक अभी भी यहाँ कायम है। यह भी मत है कि सेठ सुदर्शन को यहीं सूली पर चढ़ाया था जो महामंत्र नवकार के प्रभाव से सिंहासन हो गया था।

चम्पापुरी व राजगृही के बाद मगधदेश की राजधानी यहाँ रही।

श्रुतधारी आर्य स्थूलिभद्रजी का जन्म व स्वर्गवास इस पावनभूमि में हुआ। आर्य श्री का कौशी वैश्या के वहाँ हुआ चातुर्मास उल्लेखनीय है। आज भी उस जगह स्मारक बने हुए हैं जो उनके आत्मबल की याद दिलाते हैं।

आर्य रक्षितसूरिजी ने यहाँ रहकर जैन साहित्य को कथानुयोग, चरणकरणानुयोग द्रव्यानुयोग व गणितानुयोग इस प्रकार चार अनुयोगों में विभाजन किया था।

वाचकवर्य श्री उमास्वातिजी ने यहीं पर 'तत्वार्थसूत्र' की रचना की थी। आचार्य श्री पादलिप्तसूरिजी ने राजा मुरुण्ड के शिर के रोग को दूर करके जैन धर्मावलम्बी बनाया था।

श्रुतधारी आर्य श्री स्थूलिभद्रजी ने यहीं जैन आगमों की वाचना करवाकर ग्यारह अंगों में सुव्यवस्थित किया था। यह पहली वाचना मानी जाती है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इस मन्दिर के अतिरिक्त एक श्वेताम्बर मन्दिर, पाँच दिगम्बर मन्दिर, गुलजार बाग तालाब के किनारे सुदर्शन सेठ स्मारक व आर्य स्थूलिभद्रजी के स्मारक बने हुए हैं। जो दर्शनीय है।

कला और सौन्दर्य * इसी मन्दिर में श्री पार्श्वनाथ भगवान की एक प्राचीन प्रतिमा अति ही मनोरम है। दिगम्बर

सहायक : १. श्री अमोलकचन्दजी उत्तमचन्दजी सिंघवी (सियाट–राज०) मद्रास–१२. २. श्री अमरचन्दजी सिमरथमलजी चुतर, (पीपलिया–कला, राज०) वेलूर (तमिलनाडु)

मन्दिर में भी प्रतिमाएँ अति ही सुन्दर दर्शनीय हैं।

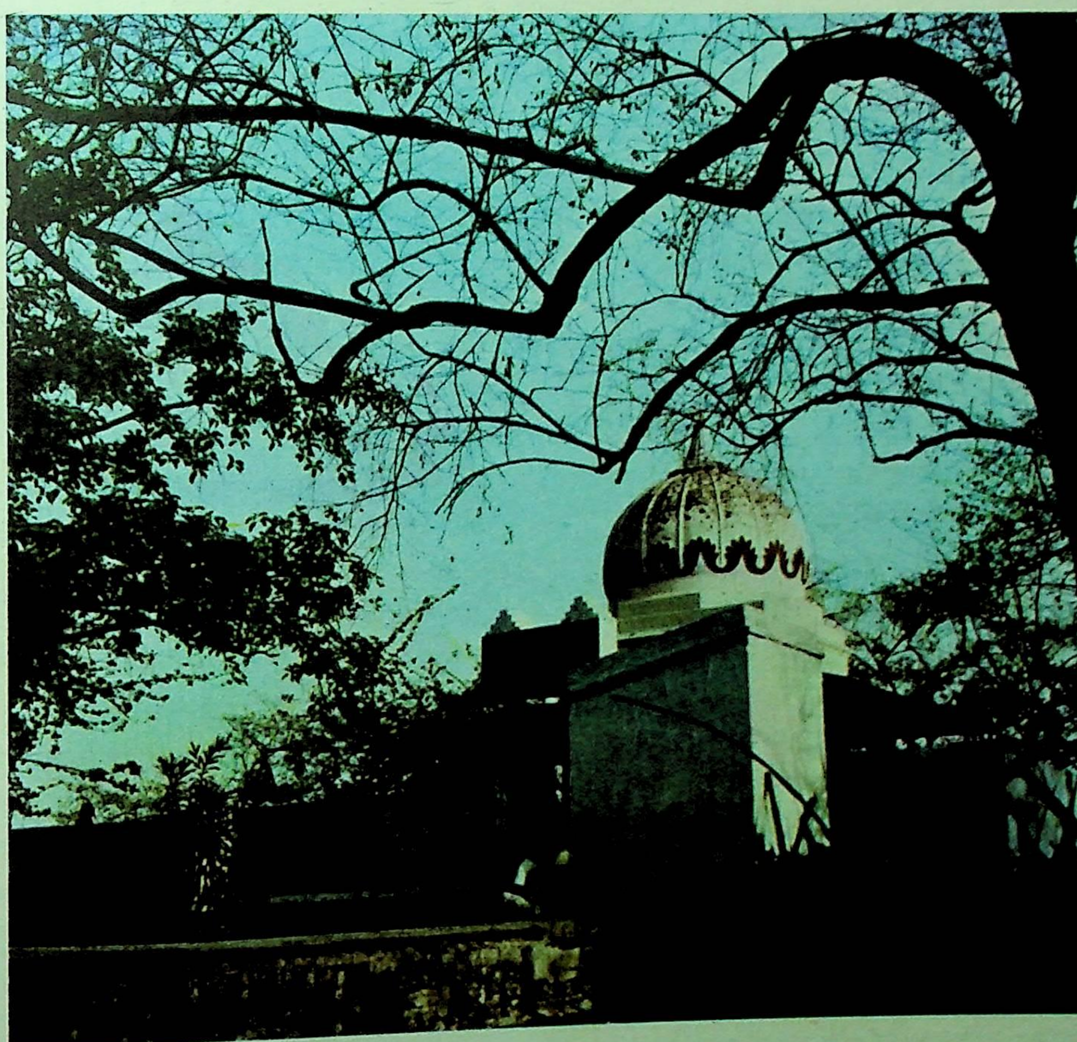
यहाँ के स्टेट म्यूजियम, जालान संग्रहालय व कानोडिया संग्रहालय में अनेक प्राचीन जिन प्रतिमाएँ दर्शनीय हैं।

मार्ग दर्शन * पटना सिटी रेलवे स्टेशन से यह मन्दिर १½ कि० मी० है। मन्दिर से २०० मी० दूरी तक कार व बस जा सकती है। गाँव में टैक्सी ताँगों आदि की सवारी का साधन है। गुलजार बाग में स्थित सुदर्शन सेठ व स्थुलिभद्रजी की प्राचीन स्मारिकाएँ पटना सिटी से लगभग १½ कि० मी० दूर हैं।

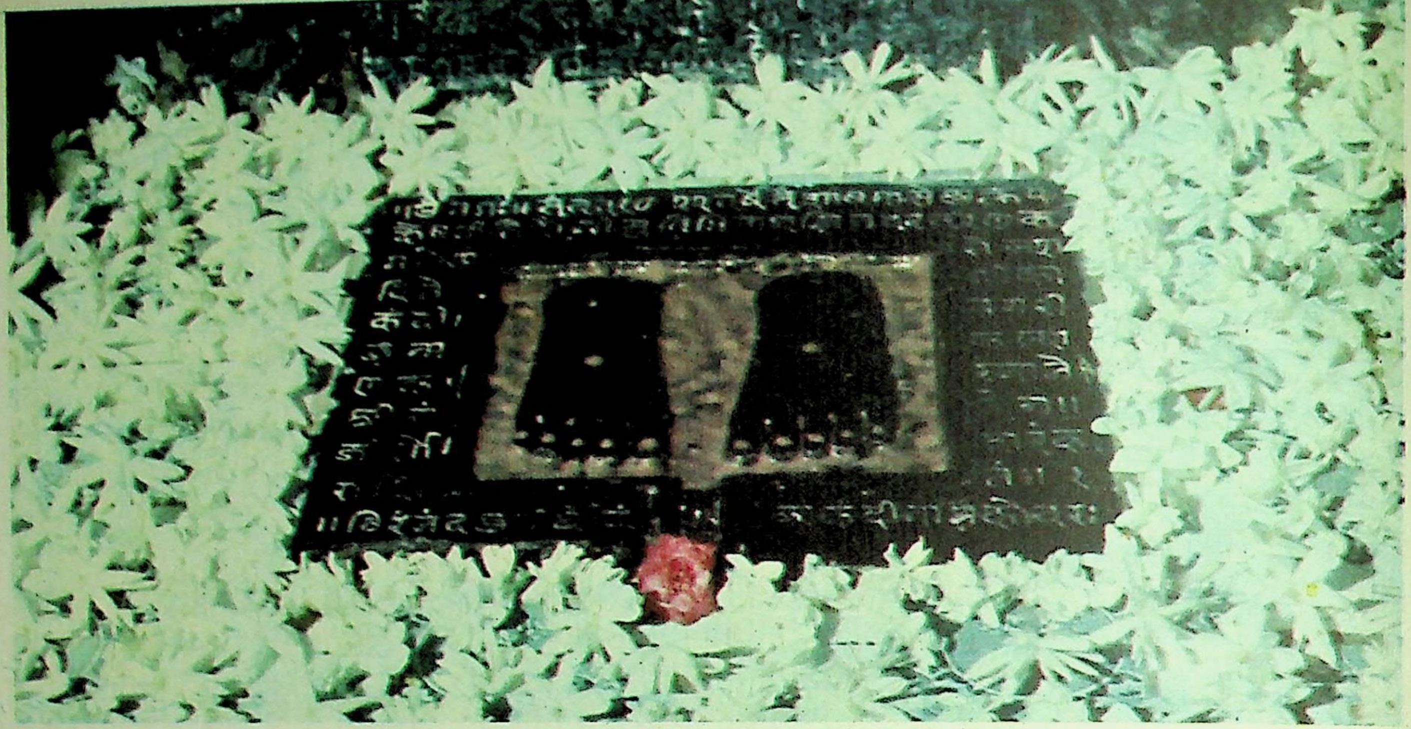
सुविधाएँ * वर्तमान में यहाँ ठहरने के लिए मन्दिर के प्रांगण में कोठी है जहाँ बिजली पानी की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री पटना गुरूप आफ टेम्पल्स (श्वेताम्बर मन्दिर) बारह गली, डाक घर – पटना सिटी : प्रान्त – बिहार।

सेठ सुदर्शन स्वर्गस्थल–गुलजारबाग



सहायक : १. पु० श्री कल्याणविजयजी महाराज की स्मृति में संसारिक पुत्र अमृत रमेश अवीन के. शाह, बम्बई व पूना। २. श्री चम्पालालजी पुखराजजी वरढीया, (फलोदी–राज०) कोयम्बतूर (तमिलनाडु)।



श्री सुविधिनाथ भगवान प्राचीन चरण (श्वे०)—काकन्दी

श्री काकन्दी तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री सुविधिनाथ भगवान, चरण पादुका, श्यामवर्ण, लगभग १८ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * काकन्दी गाँव के मध्य।

प्राचीनता * यहाँ की प्राचीनता का इतिहास नवमें तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ भगवान से प्रारम्भ होता है। श्वेताम्बर मान्यतानुसार भगवान श्री सुविधिनाथ के चार कल्याणक (च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान) इस पावन भूमि मे हुए। सुविधिनाथ भगवान को पुष्पदन्त भी कहते हैं।

एक समय राजा सुग्रीव यहाँ राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम रामा देवी था। पुण्य योग से रानी ने फाल्गुन कृष्णा ९ के दिन मूला नक्षत्र मे तीर्थंकर जन्म सूचक महा स्वप्न देखे। उसी क्षण श्री महापद्म का जीव अपने पूर्व के दो भव पूर्ण करके रानी की कुक्षी मे प्रविष्ट हुआ। क्रमश गर्भ का समय पूर्ण होने पर मार्गशीर्ष कृष्णा ५ के शुभ दिन मूला नक्षत्र मे मगर चिह्नयुक्त पुत्र रत्न का जन्म हुआ। गर्भ समय मे माता सब विधियों मे कुशल हुई थी इसलिए उनका नाम सुविधिनाथ एवँ गर्भ समय में माता को पुष्प का दोहला हुआ था इससे उनका नाम पुष्पदन्त भी रखा गया।

इन्द्रादिदेवों व ग्रामवासियों ने कल्याणक दिवस अति ही आनन्दपूर्वक मनाये। राज दरबार मे भी बधाइयाँ बँटने लगीं।

युवा होने पर पिता के आग्रह से प्रभु ने राजकन्याओं के साथ विवाह किये। कई वर्ष तक प्रभु ने राज्य भार सभाला। इनके राज्य काल में जनता आनन्द विभोर थी। एक दिन प्रभु ने संसार को असार समझकर लोकान्तिक देवों की विनती से वर्षीदान देते हुए सहसाम्र वन में एक हजार अन्य राजाओं के संग मार्गशीर्ष कृष्णा ६ के दिन दीक्षा अंगीकार की। प्रभु विहार करते हुए चार माह पश्चात् उसी उद्यान में पुन: आये व मालूर वृक्ष के नीचे कायोत्सर्ग मे रहते हुए कार्तिक शुक्ला ३ मूला नक्षत्र में केवलज्ञान पाया। (एक और मतानुसार नोनसार स्टेशन से ३ कि० मी० दूर स्थित खुखुन्दग्राम ही काकन्दी है जहाँ प्रभु के कल्याणक हुए)।

विशिष्टता * वर्तमान चौबीसी के नवमें तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ भगवान (पुष्पदन्त) के चार कल्याणक (च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान) होने का सौभाग्य इस पावन भूमि को मिलने के कारण यहाँ का कण-कण पवित्र व वन्दनीय है। जहाँ प्रभु ने जन्म से लेकर दीक्षा तक अपने जीवन का अमूल्य समय बिताया हो, जहाँ प्रभु ने केवलज्ञान पाकर प्रथम देशना दी हो, जहाँ प्रभु के मुखारबिन्द से अमृत रूपी वाणी सुनकर अनेकों भव्य आत्माओ ने अपना अमूल्य मानव भव सफल बनाया हो ऐसी पुण्य व पावन भूमि का किन शब्दों में वर्णन किया जाय। आज भी वे शुद्ध व निर्मल परमाणु यात्रिओं को भाव विभोर कर देते हैं जिससे यात्रीगण प्रभु की भक्ति में लीन होकर महा पुण्योपार्जन कर अपने को धन्य समझते हैं।

अन्य मन्दिर * वर्तमान मे इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं हैं। इसी मन्दिर मे श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्राचीन श्याम वर्ण प्रतिमा मूलनायक स्थान पर चरण पादुका के पास

विराजमान है।

कला और सौन्दर्य ✻ मन्दिर के नव निर्माण का कार्य चालू है। इस कार्य में कलकत्ता निवासी श्री कनैयालालजी वैद की निस्वार्थ सेवा सराहनीय है। मन्दिर में स्थित पार्श्वप्रभु की प्रतिमा अति ही कलात्मक है।

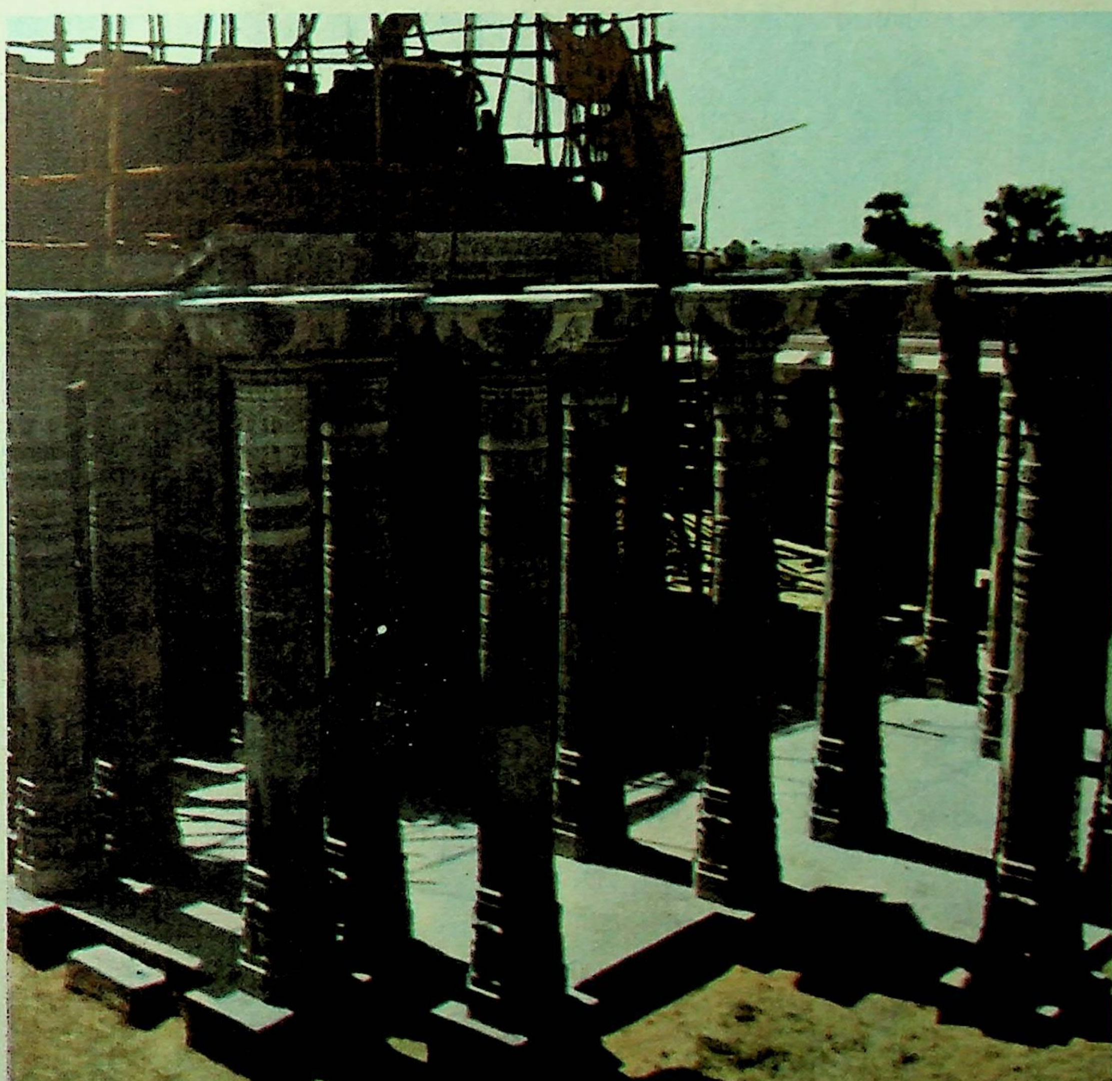
मार्ग दर्शन ✻ नजदीक के रेलवे स्टेशन कियूल १६ कि० मी० व जमुई भी १६ कि० मी० है। इन स्थानों से बस, व टैक्सी का साधन है। गाँव का बस स्टेशन १½ कि० मी० दूर है। गाँव में सवारी का कोई साधन नहीं है। कार व छोटी बस मन्दिर तक जा सकती है। रास्ता तंग होने के कारण बड़ी बस को लगभग २ फर्लांग दूर ठहराना पड़ता है।

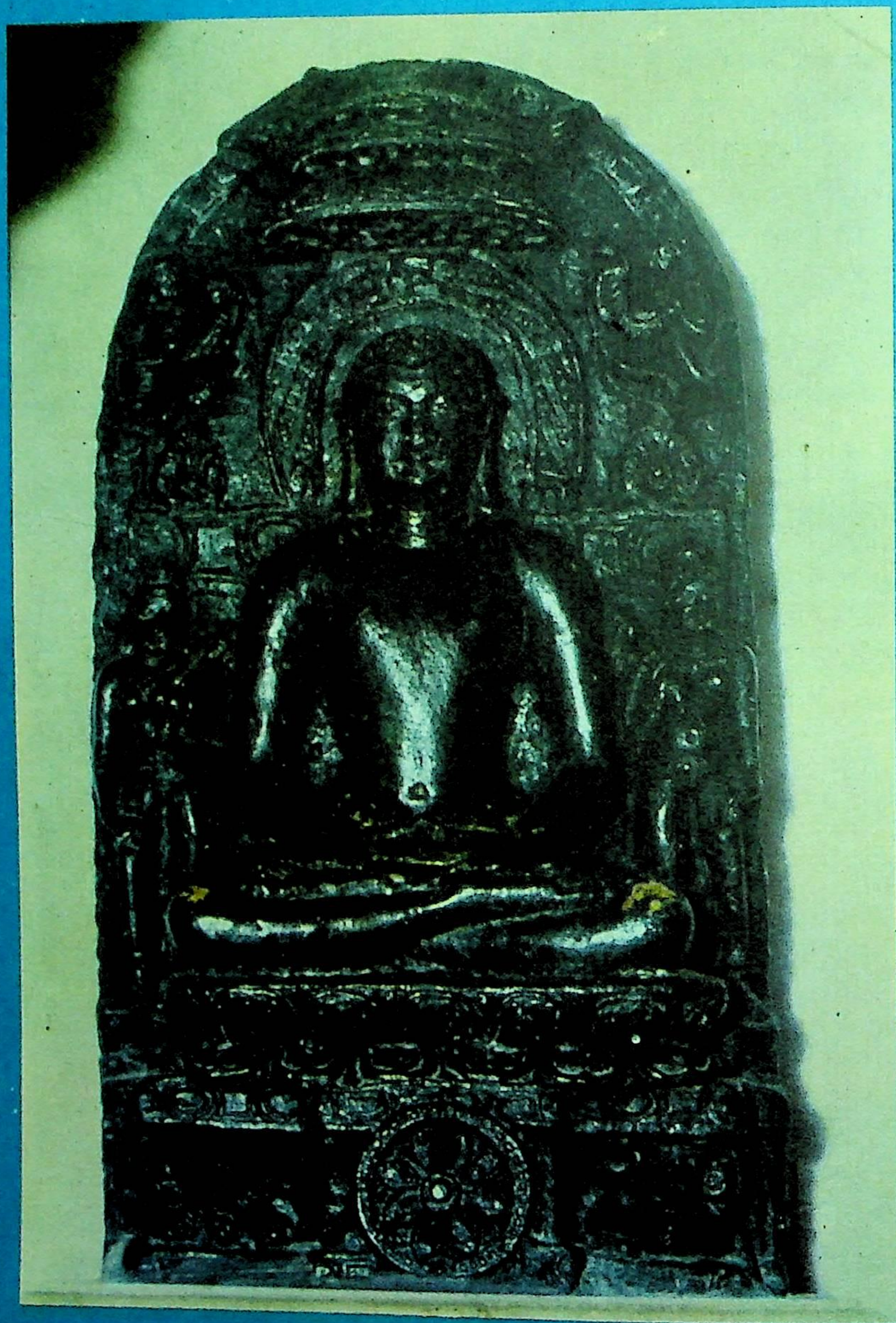
सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए मन्दिर के अहाते में ही धर्मशाला है, जहाँ बिजली, पानी की सुविधा है।

पेढ़ी ✻ श्री जैन श्वेताम्बर सोसायटी, तीर्थ काकन्दी। डाक घर – मंजवे : जिला – मूंगेर : प्रान्त – बिहार : तार घर – मंजवे : टेलीफोन – पी० सी० ओ० मंजवे।



श्री सुविधिनाथ जिनालय (श्वे०)–काकन्दी





श्री महावीर भगवान–वैशाली

सहायक : १. मेसर्स बी. इन्दरमल एन्ड ब्रदर्स सेलम (तमिल.) भीखमचन्दजी मोहनलालजी कंवाड, सालावास (राज०) २. श्री जवन्तराजजी चम्पालालजी सिंघवी (आनन्दपुर, कालू–राज०) आम्बूर (तमिलनाडु)।

श्री वैशाली तीर्थ

तीर्थाधिराज ※ श्री महावीर भगवान, श्याम वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ३८ सें० मी० (दि० मन्दिर)।

तीर्थ स्थल ※ वैशाली गाँव के बाहर लगभग १½ कि० मी० दूर।

प्राचीनता ※ कहा जाता है कि वैशाली की स्थापना इक्ष्वाकु और अलम्वुषा के पुत्र विशाल राजा ने की थी। यह भी मत है कि कई गाँवों को सम्मिलित करके इसे विशाल रूप दिया गया जिससे इसका नाम वैशाली पड़ा।

आजकल यह स्थान बसाढ़ नामक गाँव से पहिचाना जाता है।

यहाँ की प्राचीनता का इतिहास अति ही प्रभावशाली एवं गौरवशाली तो है ही, भगवान महावीर से सम्बन्धित होने के कारण और भी पवित्र हो गया है।

दिगम्बरों की एक मान्यतानुसार प्रभु महावीर के तीन कल्याणक-च्यवन, जन्म व दीक्षा यहाँ हुए। प्रभु की माता का नाम त्रिशला व पिता का नाम राजा सिद्धार्थ था। यहाँ के राजा चेटक श्वेताम्बर मान्यतानुसार त्रिशला माता के भाई थे व दिगम्बर मान्यतानुसार पिता थे। राजा चेटक जैन धर्मावलम्बी थे और श्री पार्श्वनाथ भगवान के अनुयायी थे। श्वेताम्बर मान्यतानुसार राजा चेटक के सात पुत्रियाँ थीं। पहली पुत्री प्रभावती सौवीर के जैन राजा उदयन के साथ ब्याही गयी थी। द्वितीय पुत्री पद्मावती अंग नरेश दधिवाहन के साथ, तीसरी शिवदेवी अवन्ती नरेश चण्डप्रद्योत के साथ और ज्येष्ठा श्री महावीर के भ्राता श्री नन्दीवर्धन के साथ ब्याही थी चेल्लना मगध के राजा श्री श्रेणिक की पटरानी थी तथा सुज्येष्ठा अपरिणित रही। मृगावती कौशाम्बी के राजा शतानीक के साथ ब्याही थी। ये सारे राजा जैनी थे। श्रेणिक राजा बौद्ध धर्म का अनुयायी था परन्तु चेल्लना से प्रेरणा पाकर वह भी जैन धर्म का अनुयायी बन चुका था।

दिगम्बर मान्यतानुसार चेटक की सात पुत्रियाँ और दस पुत्र बताये गये हैं। पुत्रियों के नामों में भी कुछ भिन्नता है।

कहा जाता है कि जनकवंश के अन्तिम राजा कलार को जनता ने उसके दुराचार के कारण मार डाला था तथा निश्चय किया था कि भविष्य में विदेह में जनता का अपना राज्य हो। इस निश्चय स्वरूप जनता ने इक्ष्वाकु वंशी, ज्ञातृवंशी, भोगवंशी, कोरवंशी, उग्रवंशी, लिच्छिवीवंशी तथा विदेहवंशी आदि अष्ट कुल वंशीय राजाओं को लेकर वज्जी संघ की स्थापना की तथा शासन व्यवस्था, न्याय व्यवस्था आदि के लिये विधान बनाये। राजा चेटक को इस संघ का राजप्रमुख बनाया गया। यह घटना प्रभु वीर और बुद्ध के पूर्व काल की मानी जाती है।

इस संघ के निकट ही मल्लगण संघ और काशीकोल गण संघ थे। इन तीनों में पारस्परिक मैत्री संधि हो चुकी थी। विशालभुति और रोहक क्रमशः कासीकोल संघ तथा मल्लगण के गणपति थे। वज्जीसंघ द्वारा बनाये गये विधान के अनुसार प्रजा पर किसी प्रकार का कर नहीं था। पुराने कर भी समाप्त कर दिये गये थे। उस समय वैशाली एक अत्यन्त समृद्ध नगरी थी। लिच्छिवी वंशियों का यहाँ विशेष प्रभाव था। ये ज्ञातृवंशी क्षत्रिय माने जाते थे। ये लोग सुन्दर, स्वाभिमानी, उदार, विनयी, शौकीन, फैशन परस्त थे तथा इन्हें चैत्य और उद्यान बनाने का विशेष शौक था। उनमें अपना अपराध स्वीकार करने का नैतिक साहस था। आपस में प्रेम व सहानुभूति थी।

ये लोग भगवान महावीर के प्रति अटूट श्रद्धा रखते हुए भी बुद्ध, मक्खली पुत्र गोशाल, संजवबेलाठ्ठि पुत्र आदि अन्य मतावलंबियों का भी समान आदर करते थे।

बौद्ध ग्रन्थों के आधार पर इस वज्जीसंघ के गणराज्य का विस्तार लगभग २३०० वर्गमील में फैल चुका था। इस संघ की राजधानी यह वैशाली थी।

इतिहास से पता चलता है कि मगध नरेश श्रेणिक को वैशाली गणराज्य से बुरी तरह पराजित होना पड़ा था। काल का चक्र बदला। श्रेणिक के पुत्र अजातशत्रु ने वैशाली संघ में फूट डालकर उस पर चढ़ाई की। लाखों व्यक्तियों का संहार हुआ तथा प्रतापी राजा चेटक भी रण क्षेत्र में मृत्यु को प्राप्त हुआ। इस प्रकार वैशाली का वैभव समाप्त हुआ।

अजातशत्रु के पुत्र उदयन के राजगद्दी पर आने के बाद वैशाली पुनः स्वतंत्र हुई। उदयन के बाद मगध देश की राजसत्ता राजा महापद्मनन्द के पास गई। राजा महापद्मनन्द भी जैनी था। इसके पश्चात् लिच्छिवियों की सहायता से चन्द्रगुप्त ने मगध का राज्य प्राप्त किया। चन्द्रगुप्त को लिच्छिवी कुल की कन्या कुमारदेवी ब्याही गई। चन्द्रगुप्त के बाद समुद्रगुप्त राजा हुआ। उसने अनेक राज्यों को पराजित कर चक्रवर्ती का विरुद धारण किया था। अपने पिता के नाम पर स्वर्ण मुद्राएँ चलाईं जिनमें एक ओर चन्द्रगुप्त व कुमारदेवी की दूसरी ओर लक्ष्मी की मूर्ति अंकित की गई थी। आज भी अनेक ऐसे प्राचीन सिक्के मिलते हैं जो गुप्त कालीन माने जाते हैं।

समुद्रगुप्त ने भी वैशाली को बरबाद कर दिया। वह

सहायक : १. श्री पुखराजजी हुक्मीचन्दजी मरलेचा, मद्रास–५२. २. शाह फोजमल मूलचन्द, मद्रास–१. ३. श्री सुगनचन्दजी महावीरचन्दजी श्रीमाल, मद्रास–१७. ४. श्री एम. भवरलालजी कोठारी, मद्रास–१५.

खण्डहर और मलवे का ढेर बन गई जो आज तक पुन: आबाद न हो पाई। आज भी अनेक प्राचीन खण्डहर पाये जाते हैं। वर्तमान में इस मन्दिर की मूलनायक प्रतिमा मन्दिर से सटे दक्षिण स्थित बौना तालाब में से प्राप्त हुई थी। यह प्रतिमा दो हजार वर्षों से भी प्राचीन मानी जाती है।

विशिष्टता * यहाँ का महत्वपूर्ण प्राचीन इतिहास संक्षेप में ऊपर दिया जा चुका है। दिगम्बर मान्यतानुसार इस स्थान की मुख्य विशेषता यह है कि यह प्रभु वीर की जन्म भूमि मानी जाती है। प्रभु का ननिहाल यहाँ था। महाप्रतापी और धर्म प्रभावी राजा श्री चेटक यहाँ हुए। यहाँ जो गणराज्य की स्थापना हुई थी तथा उसके विधान बनाये गये थे वे भारत के इतिहास में उल्लेखनीय हैं। भारत में गणराज्य की प्रथा आदिकाल से चली आ रही है।

इस स्थान के पास बिहार सरकार ने प्राकृत जैन-शास्त्र और अहिंसा संस्थान की स्थापना की है जिसका मुख्य भवन साहू श्री शान्तिप्रसाद जैन के द्वारा बनवाया गया है। इस संस्थान में प्राकृत एवं जैनशास्त्र विषय में एम. ए. की पढ़ाई होती है तथा पी० एच० डी० एवं डी० लिट्० की उपाधियों के लिए शोधकार्य कराया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रकाशन भी यहाँ से होते हैं। यह संस्था बिहार विश्वविद्यालय से सम्बंधित है। यहाँ प्राकृत एवं जैनशास्त्र विषयक अध्ययन के लिये देश के भिन्न-भिन्न राज्यों के अतिरिक्त दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के विदेशी विद्यार्थी भी आते हैं। प्राकृत और जैनशास्त्र के उच्च अध्ययन, शोध और प्रकाशन के लिए स्थापित यह संस्थान समस्त भारतवर्ष में अपने ढंग का अकेला है। इस संस्थान से वैशाली की गौरव-वृद्धि हुई है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त और कोई जैन मन्दिर नहीं है। एक और विशाल दि० मन्दिर के निर्माण का कार्य चल रहा है। जैन विहार से लगभग ५ कि० मी० दूर बासुकुण्ड (कुण्डपुर) ग्राम में भगवान महावीर की जन्म-भूमि मानी जाती है। कहा जाता है कि इस स्थान पर महाराजा सिद्धार्थ का महल था। ऐसी मान्यता है कि भगवान महावीर ने यहीं जन्म लिया था। यहाँ की जथरिया जाति भगवान को अपना पूर्वज मानती है। लगभग दो एकड़ जमीन छोड़ रखी गई है तथा अत्यन्त प्राचीन काल से आज तक उस पर हल नहीं जोता गया है। आस-पास के ग्रामीणों का कहना है कि भगवान का यहाँ जन्म हुआ था। प्रतिवर्ष भगवान महावीर के जन्म दिवस पर गाँव के लोग इस स्थान पर पूजा करते थे। अब यह जमीन सरकार के अधीन कर दी गई है। तथा पिछले कई वर्षों से दिगम्बर जैन समाज की ओर से अत्यन्त धूमधाम से यहाँ पूजा होती है।

कला और सौन्दर्य * प्रभु प्रतिमा की कला तो विशिष्ट है ही। यहाँ अनेक प्राचीन खण्डहर दर्शनीय हैं। जिनका

सहायक : १ श्री रतनचन्दजी पन्नालालजी नाहर, मद्रास–१५. २. श्री करनीदानजी बंसीलालजी वाफ़णा मद्रास–७. ३. श्री मूलचन्दजी रिखबचन्दजी मचेती, मद्रास–१७. ४. श्री एस. शंकरलालजी जैन, मद्रास–१७.

वर्णन करना सम्भव नहीं। यहाँ पर भारत सरकार के पुरातत्व विभाग का एक म्युजियम (संग्रहालय) भी है जहाँ प्राचीन प्रतिमाएँ व अवशेष सुरक्षित हैं। प्रसिद्ध अशोक स्तम्भ भी यहाँ है। यहाँ जैन विहार के पीछे एक टीला है जो राजा विशाल के गढ़ के नाम से विख्यात है। यह प्राचीन लिच्छिवियों की राजधानी वैशाली में स्थित अमेघ दुर्ग तथा महलों के भग्नावशेष का द्योतक है।

मार्ग दर्शन * नजदीक के रेलवे स्टेशन मुजफ्फरपुर और हाजीपुर ३५ कि० मी० की दूरी पर हैं। जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा प्राप्त है। मन्दिर से बस स्टैण्ड १½ कि० मी० दूर है। बसें जैन विहार के सामने ठहरती हैं। बरसात के दिनों को छोड़कर मन्दिर तक बस व कार जा सकती है।

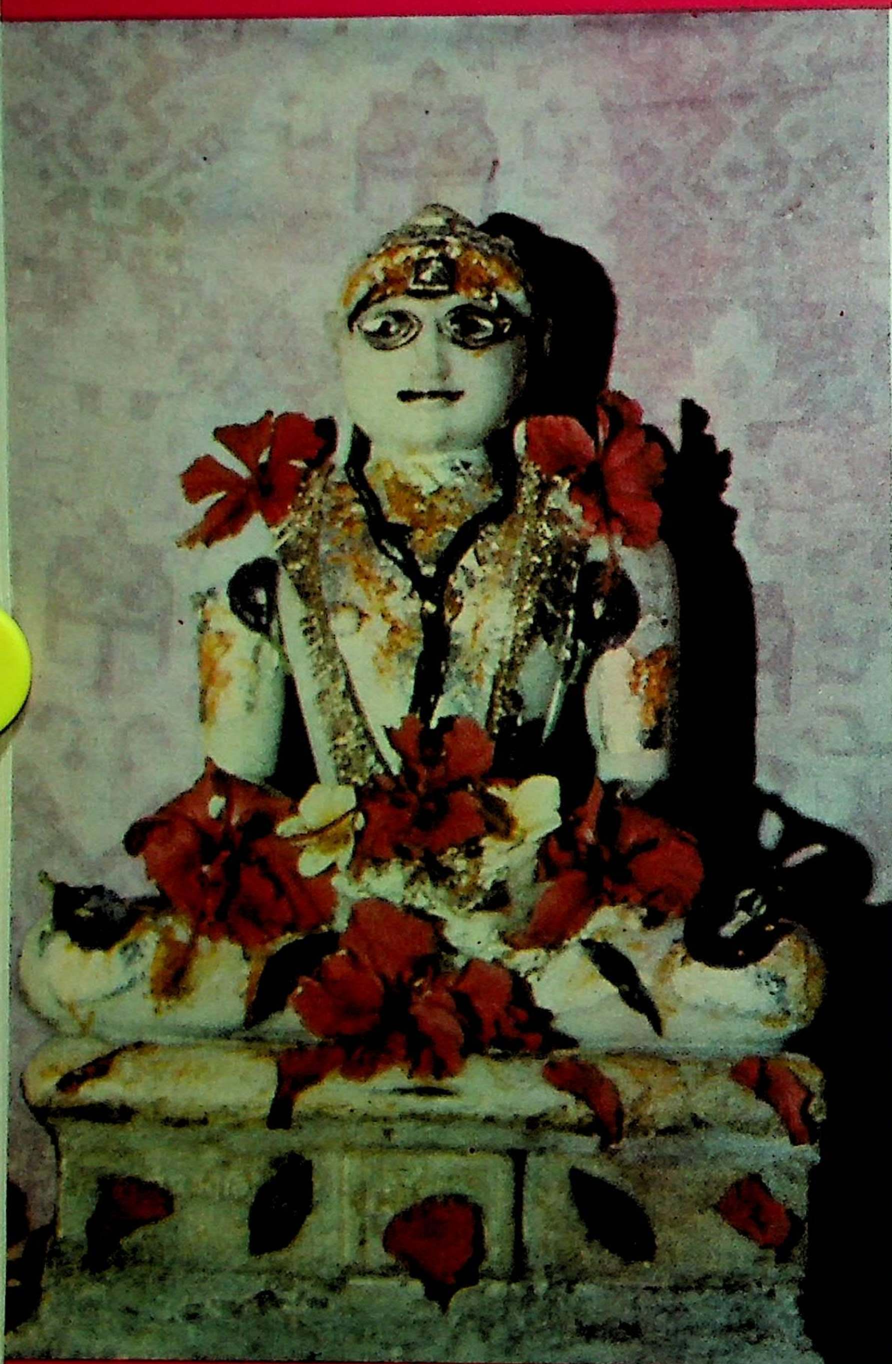


श्री महावीर जिनालय–वैशाली

सुविधाएँ * बिहार सरकार के पर्यटन विभाग के आधीन एक इन्फारमेशन सेन्टर है जहाँ यात्री ठहर सकते हैं। इसके अतिरिक्त एक जैन विहार (धर्मशाला) भी है और एक विशाल जैन मन्दिर का निर्माण कार्य भी चल रहा है।

पेढ़ी * श्री वैशाली कुण्डपुर तीर्थ क्षेत्र कमेटी डाक घर – वैशाली ८४४१२८ : जिला – वैशाली : प्रान्त – बिहार : तार घर – वैशाली : टेलीफोन – पी० सी० ओ० वैशाली।

श्री चम्पापुरी तीर्थ



श्री वासुपूज्य भगवान (श्वे०) –चम्पापुरी

तीर्थाधिराज ❋ श्री वासुपूज्य भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग ४५ सें० मी० (श्वेताम्बर मन्दिर)।

तीर्थ स्थल ❋ भागलपुर स्टेशन के निकट गंगा नदी किनारे चम्पा नाला के पास जिसे चम्पानगर (चम्पापुरी) कहते हैं।

प्राचीनता ❋ भगवान श्री आदिनाथ ने देश को ५२ जनपदों में विभाजित किया था, उनमें अंग जनपद भी एक था। चम्पा अंग जनपद की राजधानी थी। वर्तमान चौबीसी के बारहवें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य भगवान के पाँचों कल्याणक इस पावन भूमि में हुए। किसी समय यह नगर मीलों तक फैला हुआ अत्यन्त वैभवसम्पन्न था।

एक समय राजा श्री वासुपूज्यजी यहाँ राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम जयादेवी था। ज्येष्ठ शुक्ला नवमी के दिन रानी जयादेवी ने तीर्थंकर जन्मसूचक महास्वप्न देखे, उसी क्षण पद्मोतर का जीव पूर्व के दो भव पूर्ण करके माता जयादेवी की कुक्षी में प्रवेश हुआ। गर्भकाल पूर्ण होने पर फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी के दिन महिष लक्षण युक्त पुत्र का जन्म हुआ। बालक का नाम वासुपूज्य रखा गया। इन्द्रादिदेवों ने जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया। राज्य दरबार में बधाइयाँ बँटने लगीं।

यौवनावस्था को प्राप्त होने पर माता-पिता द्वारा विवाह करने के लिये काफी समझाया गया परन्तु प्रभु ने मंजूरी नहीं दी व संसार को असार समझकर वर्षीदान देते हुए छट्ठ तप सहित दीक्षा ग्रहण की। प्रभु विहार करते हुए पुनः यहाँ के उद्यान में पधारे व पाटल वृक्ष के नीचे ध्यानावस्था में रहते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया।

प्रभु धर्मोपदेश देते हुए आषाढ शुक्ला चतुर्दशी के दिन उतराभाद्रपद नक्षत्र में छः सौ मुनियों के साथ अनशन व्रत में यहीं पर मुक्ति पद को प्राप्त हुए। (दिगम्बर मान्यतानुसार भगवान का जन्म फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी, व मोक्ष फाल्गुन कृष्णा पंचमी को हुआ बताया जाता है। मन्दारगिरि को प्रभु का दीक्षा व केवलज्ञान स्थान बताया जाता है।) यहाँ से लगभग ४८ कि० मी० दूर स्थित मन्दारगिरि उस समय चम्पापुरी का एक अंग था)

भगवान श्री पार्श्वनाथ व श्री महावीर भगवान का भी यहाँ पदार्पण हुआ था। पश्चात् प्रभु महावीर के पट्टधर श्री सुधर्मास्वामी व श्री जम्बुस्वामी ने भी यहाँ पदार्पण किया था।

मगध नरेश श्री श्रेणिक, (बिम्बसार) के पुत्र कुणिक (अजातशत्रु) के राज्य काल में यह अति ही सुन्दर व समृद्धिशाली नगरी थी।

विशिष्टता ❋ युगादिदेव श्री आदिनाथ भगवान ने इस

सहायक : श्री अमोलकचन्दजी वसन्तराजजी आनन्दमलजी खटोड़, जेतारण (राज०) वाले, अचरपाक्कम (तमिलनाडु)।

पवित्र भूमि को अपने चरणों से स्पर्श करके पवित्र बनाया है। श्री वासुपूज्य भगवान के च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान व मोक्ष-पाँचों कल्याणक होने का सौभाग्य इस पावन भूमि को प्राप्त हुआ है। यही एक तीर्थ क्षेत्र है जहाँ प्रभु के पाँचों कल्याणक एक ही जगह हुए हैं। यह महान विशेषता है। श्री पार्श्वनाथ भगवान का भी धर्मदेशना हेतु इस पवित्र भूमि में पदार्पण हुआ था।

श्री महावीर भगवान का यहाँ अनेकों बार पदार्पण हुआ। प्रभु का यहाँ समवसरण भी रचा गया था। भगवान महावीर के परम भक्त श्रावक कामदेव यहीं के थे। श्री सुदर्शन सेठ, महाराजा श्रीपाल, सती श्री चन्दनबाला की भी यह जन्म भूमि है। सती सुभद्रा भी यहीं पर हुई। (दिगम्बर मान्यतानुसार सती चन्दनबाला वैशाली के राजा चेटक की लडकी थी)।

दानवीर कर्ण, दधिवाहन, राजा करकण्डु, श्रेणिक (बिम्ब-सार) के पुत्र अजातशत्रु आदि की भी यह राजधानी थी। इतिहास प्रसिद्ध सेठ सुदर्शन को यहीं सूली पर चढाया गया था। महामंत्र नवकार के प्रभाव से सूली सिंहासन हो गया था। सेठ सुदर्शन वृषभदत्त के पुत्र थे। पश्चात् सेठ सुदर्शन ने भी दीक्षा ग्रहण की व पाटलीपुत्र (गुलजार बाग) में स्वर्ग सिधारे।

इस प्रकार यहाँ अनेकों शूरवीर जैन नरेश, मुनिगण व श्रेष्ठीगण भी हुए जिन्होंने धर्म प्रभावना के जो कार्य किये वे स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे। प्रभु के निर्वाण दिवस आसाढ़ शुक्ला चतुर्दशी के दिन लड्डु चढ़ाया जाता है एवं मेले का आयोजन होता है। उस अवसर पर हजारों भक्तगण इकट्ठे होकर प्रभु भक्ति का लाभ लेते हैं।

अन्य मन्दिर * इसी मन्दिर में प्रभु के कल्याणकों के याद स्वरूप अलग-अलग जगह पर प्रतिमाएँ विराजमान हैं। नाथनगर, भागलपुर व मन्दारगिरि पर्वत पर दिगम्बर जैन मन्दिर हैं।

कला और सौन्दर्य * यह नगरी इतनी प्रभावशाली व प्राचीन होते हुए भी प्राचीन कला कम नजर आती है। हो सकता है कालक्रम से रदोबदल हुआ हो। यह मन्दिर प्राचीन है। अनेकों बार यहाँ का जीर्णोद्धार हुआ प्रतीत होता है।

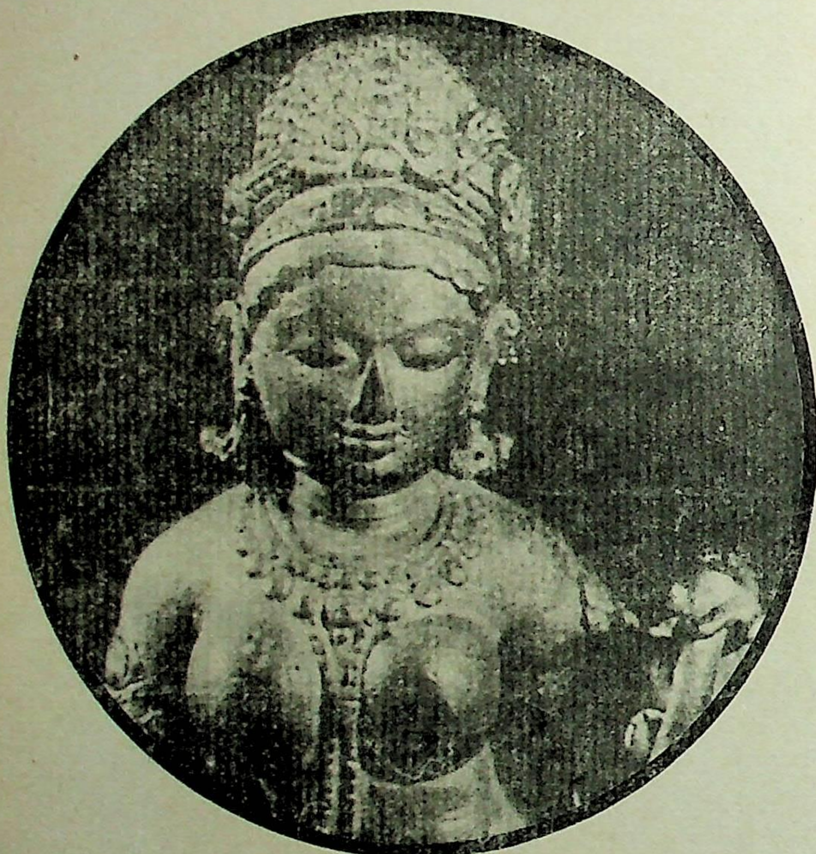
मार्ग दर्शन * भागलपुर स्टेशन यहाँ से लगभग ६ कि० मी० है, जहाँ से बस व ताँगों की सुविधा है। मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ * ठहरने के लिये मन्दिर के अहाते में ही धर्मशाला है जहाँ पानी, बिजली, की सुविधा है। भागलपुर में दिगम्बर मन्दिर के पास दिगम्बर धर्मशाला भी हैं।

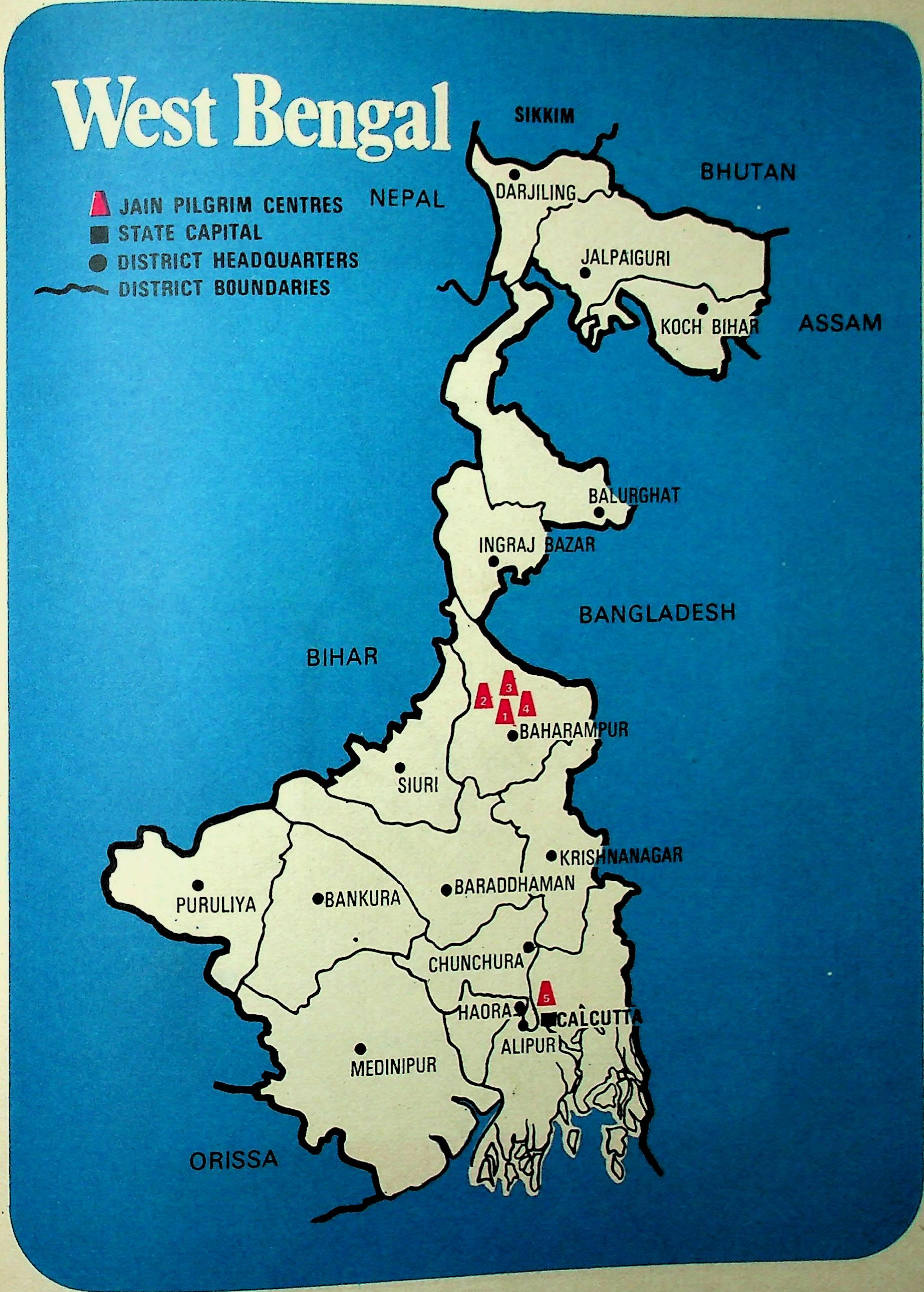
पेढी * श्री जैन श्वेताम्बर सोसायटी । तीर्थ श्री चम्पापुरी : डाक घर – चम्पानगर ८१२००४ : जिला – भागलपुर : प्रान्त – बिहार : तार घर – भागलपुर : टेलीफोन पी० सी० ओ- भागलपुर।

श्री वासुपूज्य जिनालय (श्वे०)–चम्पापुरी





बगाल


West Bengal
JAIN PILGRIM CENTRES
STATE CAPITAL
DISTRICT HEADQUARTERS
DISTRICT BOUNDARIES
SIKKIM
NEPAL
BHUTAN
DARJILING
JALPAIGURI
KOCH BIHAR
ASSAM
BALURGHAT
INGRAJ BAZAR
BANGLADESH
BIHAR
1
2
3
4
BAHARAMPUR
SIURI
KRISHNANAGAR
PURULIYA
BANKURA
BARADDHAMAN
CHUNCHURA
5
HAORA
CALCUTTA
ALIPUR
MEDINIPUR
ORISSA



श्री संभवनाथ भगवान– जियागंज

सहायक : श्री रंगरुपमलजी दिलसुखमलजी महावीरमलजी नवपदमलजी कोचर मेहता, सोजत सिटी (राज०) वाले, कडलूर (तमिलनाडु)

श्री जियागंज तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री सम्भवनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ३८ सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ जियागंज गाँव में मुख्य मार्ग पर ओसवाल पट्टी में।

प्राचीनता ✻ इस मन्दिर का निर्माण लगभग १५० वर्ष पूर्व हुआ प्रतीत होता है। लेकिन प्रतिमा प्राचीन है।

विशिष्टता ✻ बंगाल की पंचतीर्थी का यह भी एक तीर्थ स्थान है। मुर्शीदाबाद से यहाँ भी अनेकों जैन श्रेष्ठीगण आकर बसे थे जिससे यह नगर भी जन धन से सम्पन्न हुआ। उन श्रेष्ठीगणों ने विभिन्न प्रकार के धार्मिक व जन कल्याण के कार्यों में भाग लिया था।

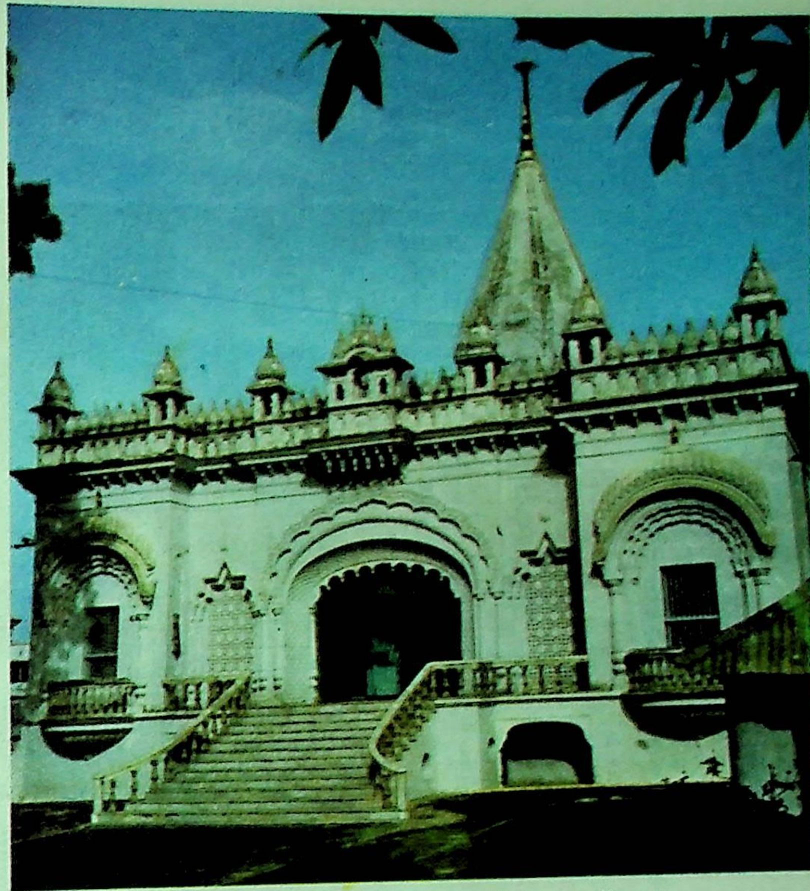
अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में इस मन्दिर के अतिरिक्त तीन और मन्दिर हैं।

कला और सौन्दर्य ✻ मन्दिर की निर्माण शैली व प्रभु-प्रतिमा की कला दर्शनीय है। इसके निकट ही श्री वासुपूज्य भगवान के मन्दिर में हाथ के बने प्राचीन चित्र अति ही सुन्दर हैं।

मार्ग दर्शन ✻ जियागंज रेलवे स्टेशन यहाँ से लगभग २ कि० मी० है। जहाँ पर रिक्शों की सवारी का साधन है। यहाँ से मुर्शीदाबाद करीब ४ कि० मी० व बरहमपुर लगभग २० कि० मी० हैं। यहाँ ठहरकर अजीमगंज, महिमापुर व कठगोला मन्दिरों के दर्शनार्थ जाना सुविधाजनक है। जियागंज को बालूचर भी कहते हैं। मन्दिर तक कार व बस जा सकती है। यहाँ का बस स्टैण्ड फुलतल्ला लगभग १/२ कि० मी० है। गाँव में भी रिक्शों की सवारी का साधन है।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए बाजू में श्री वासुपूज्य भगवान के मन्दिर के अहाते में धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली, भोजनशाला व आयम्बलशाला की सुविधा है। भाता भी दिया जाता है।

पेढ़ी ✻ श्री सम्भवनाथ भगवान जैन मन्दिर, ओसवाल पट्टी : डाक घर – जियागंज : जिला – मुर्शीदाबाद : प्रान्त – पश्चिम बंगाल : तार घर – जियागंज : टेलीफोन – पी० सी० ओ० जियागंज।



श्री संभवनाथ जिनालय- जियागंज





श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान–अजीमगंज

सहायक : श्री तिनपतसिहजी कमलसिहजी रिखबसिहजी वीरेन्द्रसिहजी वैद, श्रीमती लक्ष्मीदेवी श्रीमाल श्री पदमचन्दजी किशोर-चन्दजी प्रदीपजी सन्दीपजी कोठारी, अजीमगंज (बंगाल)।

श्री अजीमगंज तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान, ताम्र-वर्ण, पद्मासनस्थ, ३६ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * अजीमगंज गाँव के मध्यस्थ महाजनपट्टी में।

प्राचीनता * वि० की अठारहवीं सदी में मुर्शीदाबाद से कई जैन श्रेष्ठीगण यहाँ आकर बसे जिससे यह स्थान भी जन-धन से सम्पन्न बना। श्रेष्ठीगणों द्वारा अनेकों जन उपयोगी कार्य का निर्माण हुआ व अनेकों मन्दिर व धर्मशालाएँ आदि बनीं। सं० १७५० में पं० श्री सौभाग्यविजयजी ने भी अपने स्तवन में यहाँ का वर्णन करते हुए यहाँ के श्रेष्ठीगणों को सुखी व दानी बताया है। यहाँ के श्रेष्ठीगणों द्वारा अन्य तीर्थ स्थानों पर भी मन्दिर निर्माण, जीर्णोद्धार व धर्मशालाएँ-निर्माण आदि कार्यों में भी भाग लेने के उल्लेख अनेकों जगह मिलते हैं। यहाँ के श्रेष्ठीगण प्रायः जागीरदार थे व बाबू के नाम से सम्बोधित किये जाते थे।

इस मन्दिर का निर्माण लगभग १२५ वर्ष पूर्व हुआ बताया जाता है।

विशिष्टता * बंगाल की पंचतीर्थी का यह भी एक मुख्य तीर्थ स्थान है। इस मन्दिर में नवरत्नों की प्रतिमाएँ अति ही दर्शनीय हैं।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त सात और मन्दिर हैं।

कला और सौन्दर्य * भागीरथी गंगा नदी के किनारे बसे इस स्थल का दृश्य अति ही सुन्दर है। विशाल प्राचीन इमारतें यहाँ के पूर्व प्रतिभा की याद दिलाती हैं।

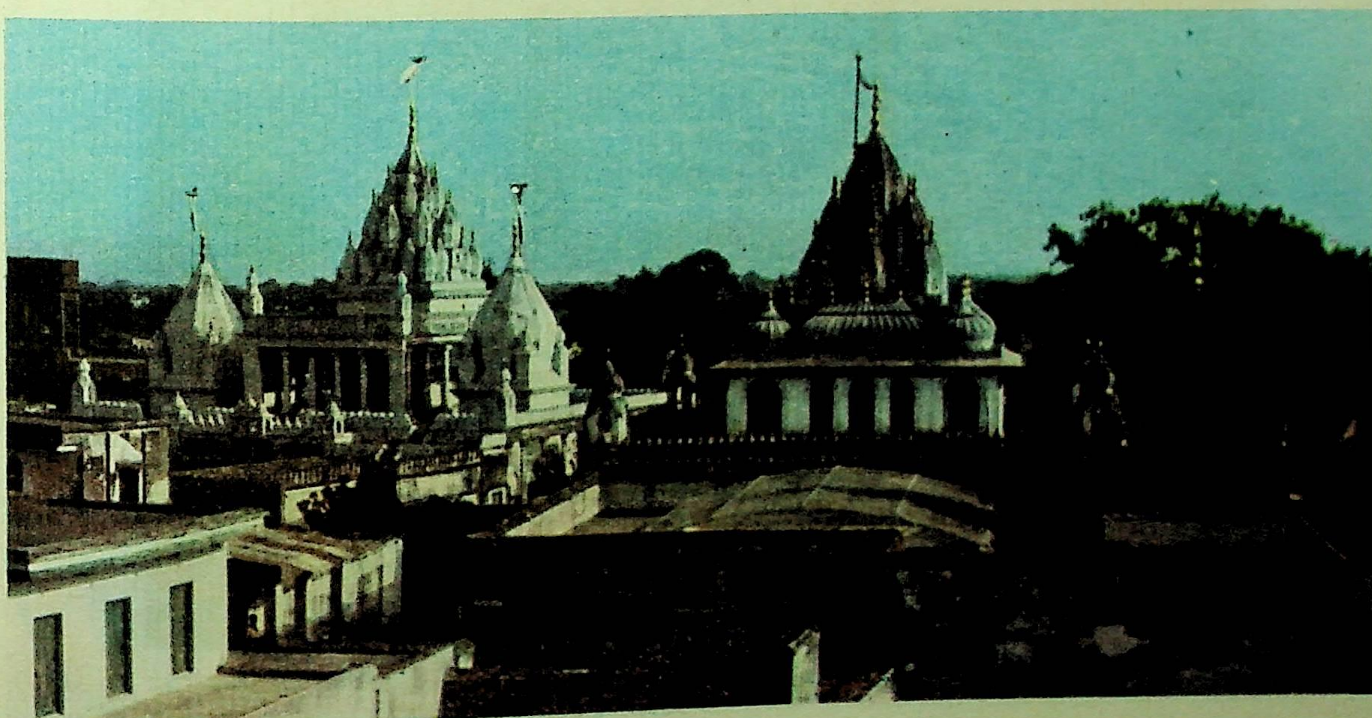
रत्नों की ३० प्रतिमाएँ अति ही सुन्दर व दर्शनीय हैं। इस मन्दिर में कसौटी पत्थर में बना बारसाख अति ही कलात्मक व सुन्दर है। यहाँ के अन्य मन्दिरों की कलाकृति व प्रतिमाएँ भी अति ही सुन्दर हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ का रेलवे स्टेशन अजीमगंज सिटी है। अजीमगंज में सवारी का साधन नहीं है। भागीरथी नदी के तटपर दोनों तरफ आमने-सामने जियागंज व अजीमगंज नगर बसे हुए हैं। जियागंज से नदी पार करके यहाँ आना पड़ता है, लेकिन सुविधाजनक साधन है। सारे मन्दिर लगभग २ कि० मी० में ही हैं।

सुविधाएँ * जियागंज धर्मशाला में ठहरकर यहाँ आना सुविधाजनक है। दिन में ही आना सुविधाजनक है क्योंकि नाव द्वारा नदी पार करनी पड़ती है। मन्दिरों में बिजली व पानी की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जैन मन्दिर : डाक घर – अजीमगंज ७४२१२२ : जिला – मुर्शीदाबाद : प्रान्त – पश्चिम बंगाल : तार घर – अजीमगंज : टेलीफोन – पी० सी० ओ० अजीमगंज।

मन्दिर-समूह का दृश्य–अजीमगंज





श्री आदिनाथ भगवान–कठगोला

श्री कठगोला तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री आदीश्वर भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग ९० सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ जियागंज स्टेशन से लगभग ३ कि० मी० दूर बरहमपुर मार्ग पर नसीपुर गाँव में लगभग ३० एकड़ विशाल व सुन्दर बगीचे के मध्य।

प्राचीनता ✻ वि० सं० १९३३ में बाबू लक्ष्मीपतसिंह ने अपनी मातु श्री महेताब कुंवर से प्रेरणा पाकर विशाल उद्यान के बीच इस भव्य मन्दिर का निर्माण करवाया था। प्रतिमा अति ही प्राचीन, सुन्दर व प्रभाव शाली है।

विशिष्टता ✻ बंगाल की पंचतीर्थी का यह भी एक तीर्थ स्थान है। इस मन्दिर की निर्माण शैली अति ही रोचक है। इस दो मील विस्तार वाले मनोरम उद्यान में हर वस्तु की निर्माण शैली अति ही सुन्दर व दर्शनीय है।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य ✻ यह कला व सौन्दर्य का संगम स्थल है। सुन्दर सरोवर के सन्मुख स्थित इस मन्दिर में विभिन्न प्रकार की कलात्मक चीजें नजर आती हैं। मूलगुम्बारे के प्रवेश द्वार के दोनों तरफ खड़े द्वारपाल सजीवसे नजर आते हैं। पाषाण में निर्मित कला का यह अद्वितीय नमूना है। जब द्वारपालों की कला ही इस प्रकार अनोखी है तो प्रभु-प्रतिमा का तो किन शब्दों में वर्णन किया जाय।

मार्ग दर्शन ✻ नजदीक का रेलवे स्टेशन जियागंज लगभग ३ कि० मी० हैं, जहाँ रिक्शों की सवारी का साधन है। मन्दिर तक कार व बस जा सकती है।

सुविधाएँ ✻ जियागंज धर्मशाला में ठहरकर यहाँ दर्शनार्थ आना ही सुविधाजनक हैं।

पेढ़ी ✻ श्री आदिनाथ भगवान जैन मन्दिर कठगोला, डाक घर – नसीपुर राजबाटि ३४२१६० : जिला – मुर्शीदाबाद प्रान्त – पश्चिम बंगाल : तार घर – जियागंज : टेलीफोन – पी० सी० ओ० जियागंज।

श्री आदिनाथ जिनालय–काठगोला   कठगोला



सहायक : १. श्री जोधराजजी संपतराजजी मदनराजजी शुभराजजी डुंगरचन्दजी सुराणा, सोजत (राज०) २ श्री जसवन्तमलजी उत्तमचन्दजी गोतमचन्दजी तिलोकचन्दजी सेठीया (बलन्दा–राज०) मद्रास–१२



श्री पार्श्वनाथ भगवान–महिमापुर

श्री महिमापुर तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री पार्श्वनाथ भगवान, श्याम वर्ण, पद्मासनस्थ।

तीर्थ स्थल * जियागंज स्टेशन से ४ कि० मी० दूर महिमापुर गाँव में।

प्राचीनता * किसी समय यह स्थल मुर्शीदाबाद का एक अंग था। वि० की अठारहवीं सदी के प्रारम्भ में मुर्शीद कुलीखान ने इसे बसाया था। तत्पश्चात् इनके जमाई सूजाखान ने राज्य किया। मारवाड़ से यहाँ आये श्रेष्ठी श्री महताबरायजी व उनके पूर्वजों ने जन-कल्याण के अनेकों कार्य किये। अतः वि० सं० १८०५ में सेठ महताबरायजी को जगत्सेठ की पदवी से विभूषित किया गया। जगतसेठ ने विदेशी कसौटी के पाषाण से भव्य मन्दिर का निर्माण गंगा नदी के किनारे करवाया था। नदी में बाढ़ आ जाने के कारण मन्दिर को स्थानान्तर किया गया व उन्हीं पाषाणों से वि० सं० १९७५ में उनके वंशज श्री सोभाग्यमलजी द्वारा मन्दिर का निर्माण करवाकर वही प्राचीन प्रतिमा इस मन्दिर में पुनः प्रतिष्ठित करवाई गई।

विशिष्टता * बंगाल की पंचतीर्थी का यह भी एक मुख्य स्थान है। यह क्षेत्र विक्रम की अठारहवीं सदी के प्रारम्भ में बसा तब से ही जाहोजलालीपूर्ण रहा। कहा जाता है उस समय यहाँ कई सुसम्पन्न जैन श्रावकों के भी घर थे। श्रेष्ठी श्री महताबरायजी को जगतसेठ की पदवी से यहीं पर अलंकृत किया गया था। जगत्सेठ की क्षाति देश-परदेश में फैली हुई थी। इन्होंने अपनी बुद्धि व लक्ष्मी का सदुपयोग करके राज्य-उत्थान, जन-कल्याण, व धर्म-प्रभावना के जो कार्य किये वे उल्लेखनीय हैं। जिनमें सम्मेतशिखर तीर्थ के जीर्णोद्धार का कार्य अति ही प्रशंसनीय व सराहनीय है। तत्कालीन यतिवर्य श्री निहालचन्दजी द्वारा रचित "बंगाल देश की गजल" में आँखों देखा हाल बताते हुए कहा है कि जगत्सेठ के यहाँ हमेशा याचकों की जमघट रहती है व इनके द्वार से कोई भी निराश होकर नहीं लौटता। राज्य दरबार में इनका पूर्ण सम्मान है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * कसौटी पाषाण में निर्मित प्रभु-प्रतिमा व पबासन आदि अति ही सौम्य हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक के रेलवे स्टेशन जियागंज व मुर्शीदाबाद लगभग ४ कि० मी० हैं। इन जगहों पर रिक्शों की सवारी का साधन है। मन्दिर तक कार व बस जा सकती है।

सुविधाएँ * जियागंज धर्मशाला में ठहरकर यहाँ दर्शनार्थ आना ही सुविधाजनक है।

पेढ़ी * श्री जगत्सेठ जैन कसौटी मन्दिर महिमापुर डाक घर – नसीपुर राजबाटी : जिला – मुर्शीदाबाद : प्रान्त पश्चिम बंगाल : तार घर – जियागंज : टेलीफोन – पी० सी० ओ० जियागंज।

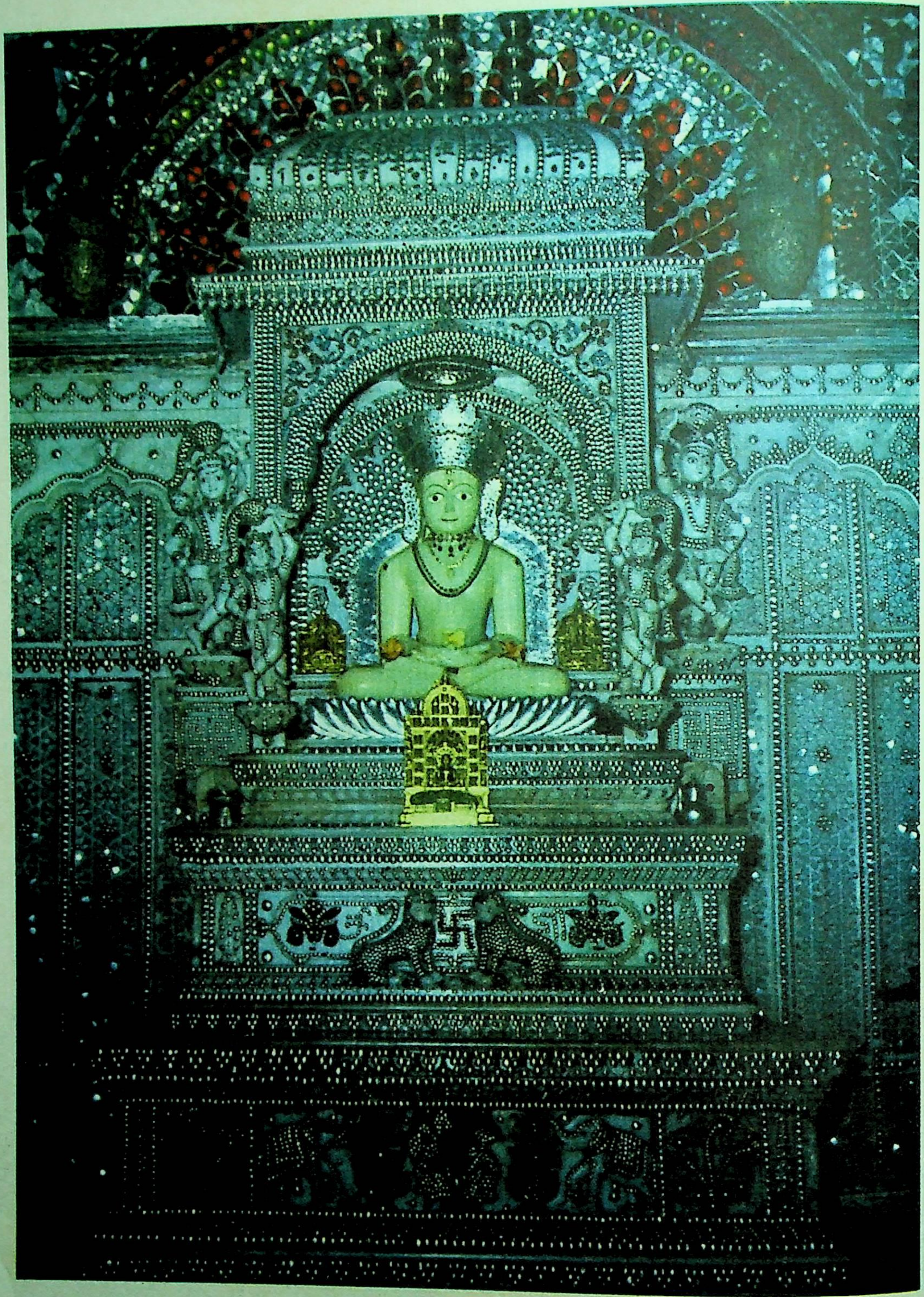
नोट :– हाल ही में प्रतिमा उत्थापन करके दूसरी जगह भेज दी गई है।



श्री पार्श्वनाथ जिनालय–महिमापुर



सहायक : १. शाह हस्तीमलजी मगाजी, (गोलवाला) सीयाणा (राज०) सुरेश एण्ड को० मदुरै। २. शाह हिमताजी के पुत्र पुखराजजी रुपराजजी सोनमलजी, ऊनड़ी (राज०)।



श्री शीतलनाथ भगवान—कलकत्ता

सहायक : श्री जालिमसिंहजी मानसिंहजी गंभीरसिंहजी लंकापतसिंहजी राजसिंहजी हरिसिंहजी अरुणसिंहजी उदयसिंहजी इन्द्रजीत् श्रीमाल, कलकत्ता।

श्री कलकत्ता तीर्थ (श्री बद्रीदास टेम्पल)

तीर्थाधिराज ✻ श्री शीतलनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ७० सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ कलकत्ता शहर में शाम बाजार के माणकतले में। इसे बद्रीदास टेम्पल व पार्श्वनाथ मन्दिर कहते हैं।

प्राचीनता ✻ लगभग ३०० वर्ष पूर्व यहाँ का जंगल व्यापार के मुख्य केन्द्र में परिवर्तित हुआ। वर्तमान का हुगली विदेशी व्यापार का मुख्य केन्द्र था, जो सप्तग्राम के नाम से पहिचाना जाता था। यह स्थान समुद्र से दूर होने के कारण व सरस्वती नदी के सूख जाने पर जहाजों के आने-जाने में दिक्कत होने के कारण वहाँ का व्यापार सूतानूटी, गोविन्दपुर व कालिकाता आया। सूतानूटी आज का बड़ा बाजार, गोविन्दपुर आज का डलहौसी स्क्वायर हेस्टिंग और फोर्ट विलियम हैं। कालिकाता आज का कालीघाट व भवानिपुर हैं। इन तीनों ग्रामों को मिलाकर जोब चारनक नामक अंग्रेज ने कलकत्ता शहर की नींव डाली जो अल्प समय में ही आधुनिक सुविधा संपन्न नगर बना। इस शहर का कलकत्ता नाम कब व कैसे पड़ा इसके बारे में अलग-अलग मत हैं। इस नगर को सुसम्पन्न बनाने व व्यापार का मुख्य केन्द्र बनाने में जैन श्रेष्ठियों का मुख्य हाथ रहा है। उन्होंने जन कल्याण व धर्म प्रभावना के भी कार्यों मे हर वक्त भाग लिया है।

यह कलात्मक मन्दिर लाला कालकादासजी के पुत्र रायबहादुर बद्रीदासजी ने अपनी मातु श्री खुशालकुंवर से प्रेरणा पाकर बनाना प्रारम्भ किया।

अब व ऐसी प्रतिमा की खोज में थे जो प्राचीन, सर्वांग सुन्दर, व अपने आपमें अनूठी हो। उनपर प्रभु की कृपा हुई। एक महात्मा ने एक अद्भुत प्रतिमा आगरा के रोशन मोहल्ले के मन्दिर के भूमि गृह में रहने का संकेत दिया व महात्मा अदृश्य हो गये। संकेतिक स्थान से यह प्रतिमा प्राप्त हुई जो संघवी चन्द्रपाल द्वारा सतरहवीं सदी में प्रतिष्ठित थीं। इस प्रतिमा को यहाँ लाकर बड़े ही उल्लास व हर्ष पूर्वक ई० सं० १८६७ में आचार्य श्री कल्याण सूरीश्वरजी के सुहस्ते प्रतिष्ठित की गई। अभी भी इसकी देखभाल इनके कुटुम्बी करते हैं।

विशिष्टता ✻ इस भव्य मन्दिर की निर्माण शैली अद्भुत व अति ही कलात्मक है जो यहाँ की मुख्य विशेषता है। विभिन्न वेत्ताओं ने यहाँ की कला के बारे में अलग-अलग ढंग से व्याख्या की है। इसको बंगाल की सुन्दरता के नाम से भी संबोधित किया है।

प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को तुलापट्टी के बड़े मन्दिर से वरघोडा प्रारम्भ होकर यहाँ विसर्जन होता है, जो अति ही रोचक व दर्शनीय रहता है। इस दिन का वरघोड़ा भारत भर में सर्वोत्तम माना जाता है। सरकार की तरफ से भी सारी सुविधाएँ प्रदान की जाती है। इस मन्दिर के सामने स्थित दादावाड़ी में स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया जाता है।

कलकत्ता शहर भी अपने आपमें कुछ विशिष्टता रखता है, जैसे ईस्ट इंडिया कम्पनी ने सन् १७६७ में सर क्लाइव को इसी शहर में अंग्रेज राज्य का प्रथम गवर्नर बनाया था। सन् १८८० में घोड़ों से खींची जानेवाली प्रथम ट्राम गाड़ी यहीं से प्रारम्भ हुई। और भी आधुनिक सुविधा वाले कई कार्य यहाँ से प्रारम्भ हुए।

आज भी भारत के चार मुख्य शहरों में यह एक है।

अन्य मन्दिर ✻ इसके अतिरिक्त शहर में कुल ६ श्वेताम्बर मन्दिर व ३ दिगम्बर मन्दिर हैं। इनके अलावा एक भव्य दादावाड़ी व कुछ घर देरासर भी हैं।

कला और सौन्दर्य ✻ इस मन्दिर में कोई भी ऐसी जगह नहीं जहाँ कारीगर ने कला का दिग्दर्शन नहीं करवाया हो। इस मन्दिर की शिल्पकला का वर्णन करने के लिए कोई उपयुक्त शब्द नहीं, जिसमें वर्णित किया जा सके। मन्दिर निर्माता ने इस कलात्मक मन्दिर का निर्माण करके जैन धर्म का ही नहीं, बंगाल का गौरव बढ़ाया है। इस शहर में आने वाला हर एक विदेशी पर्यटक यहाँ अवश्य आता है व यहाँ की कला को देख कर मुग्ध हो जाता है।

बेलगछिया के पार्श्वनाथ मन्दिर (दिगम्बर मन्दिर) की कला भी अति ही सुन्दर व दर्शनीय है।

मार्ग दर्शन ✻ कलकत्ता के हावड़ा स्टेशन से इस मन्दिर की दूरी ५ कि० मी० है। शहर में बस व टैक्सी आदि का साधन है। मन्दिर तक बस व कार जा सकती है।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए निम्न जैन धर्मशालाएँ हैं जहाँ पानी बिजली, का साधन है। बड़ा शहर होने के कारण आवागमन ज्यादा रहता है। अतः जाने वालों के लिए पहले से इन्तजाम करके जाना सुविधाजनक होगा।

१. श्री फूलचन्द मुकीम जैन धर्मशाला
   ३७, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता–७.

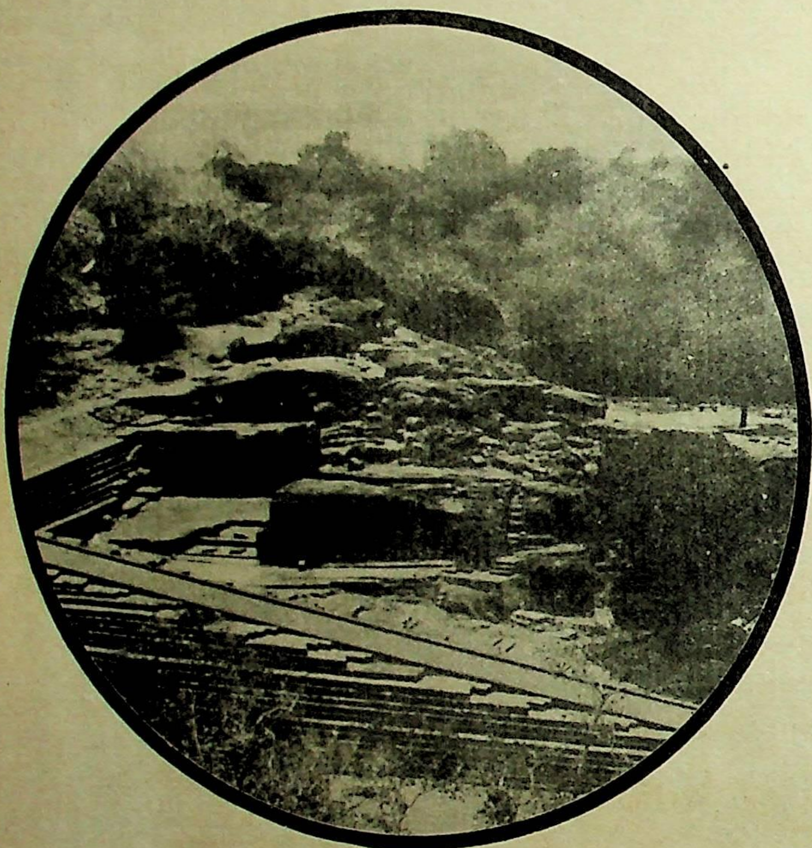
२. श्री दिगम्बर जैन भवन,
   १०–ए, चितपुर स्पार, कलकत्ता–७.

यहाँ पर शहर में कई खानगी भोजनशालाओं की सुविधा है।

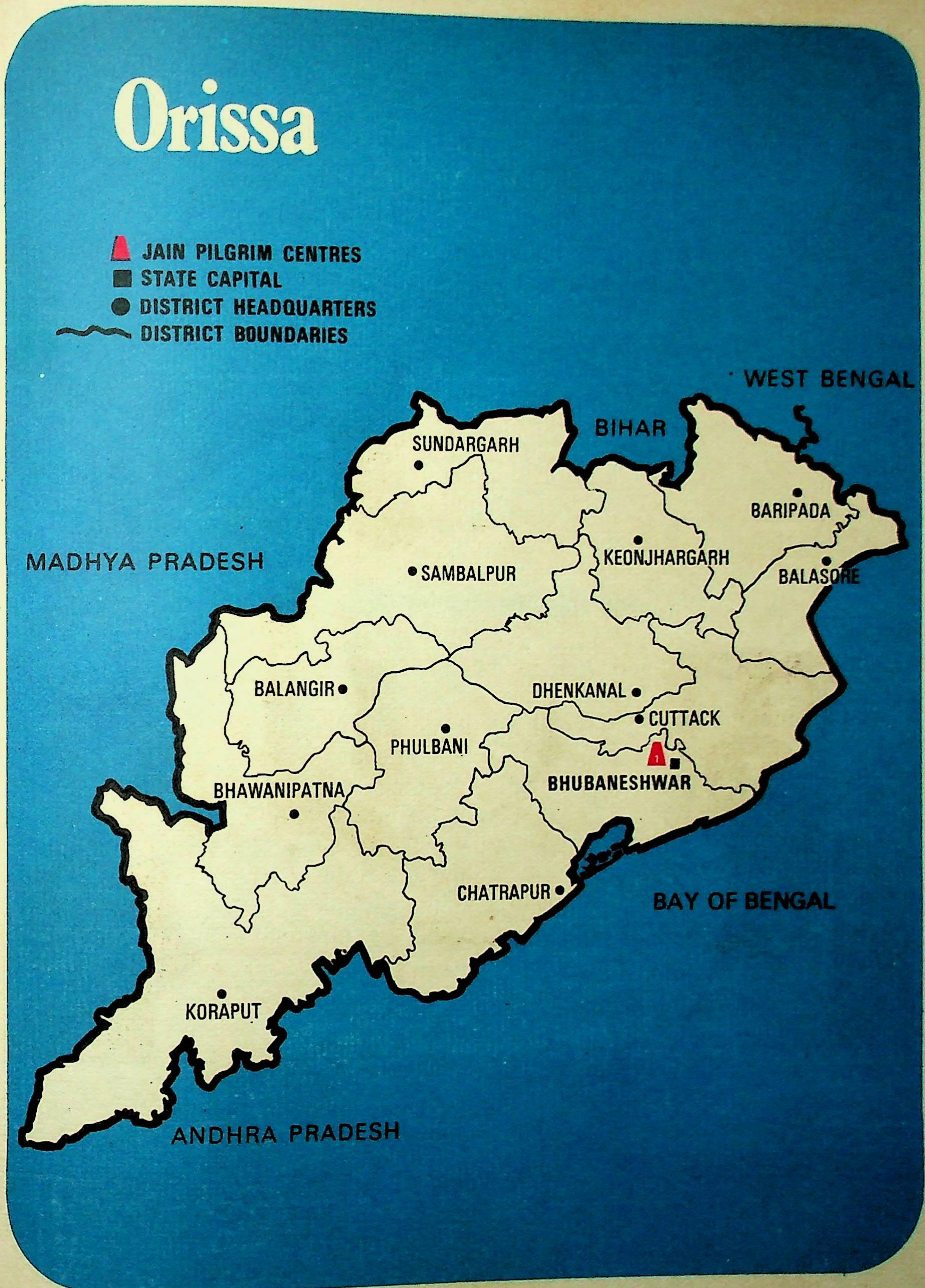
पेढ़ी ✻ श्री बद्रीदास जैन श्वेताम्बर मन्दिर पेढ़ी, ३६, बद्रीदास टेम्पल स्ट्रीट, माणकतला (शामबजार) कलकत्ता – ७००००४ : प्रान्त – पश्चिम बंगाल : टेलीफोन – ५५१४०८ कलकत्ता।

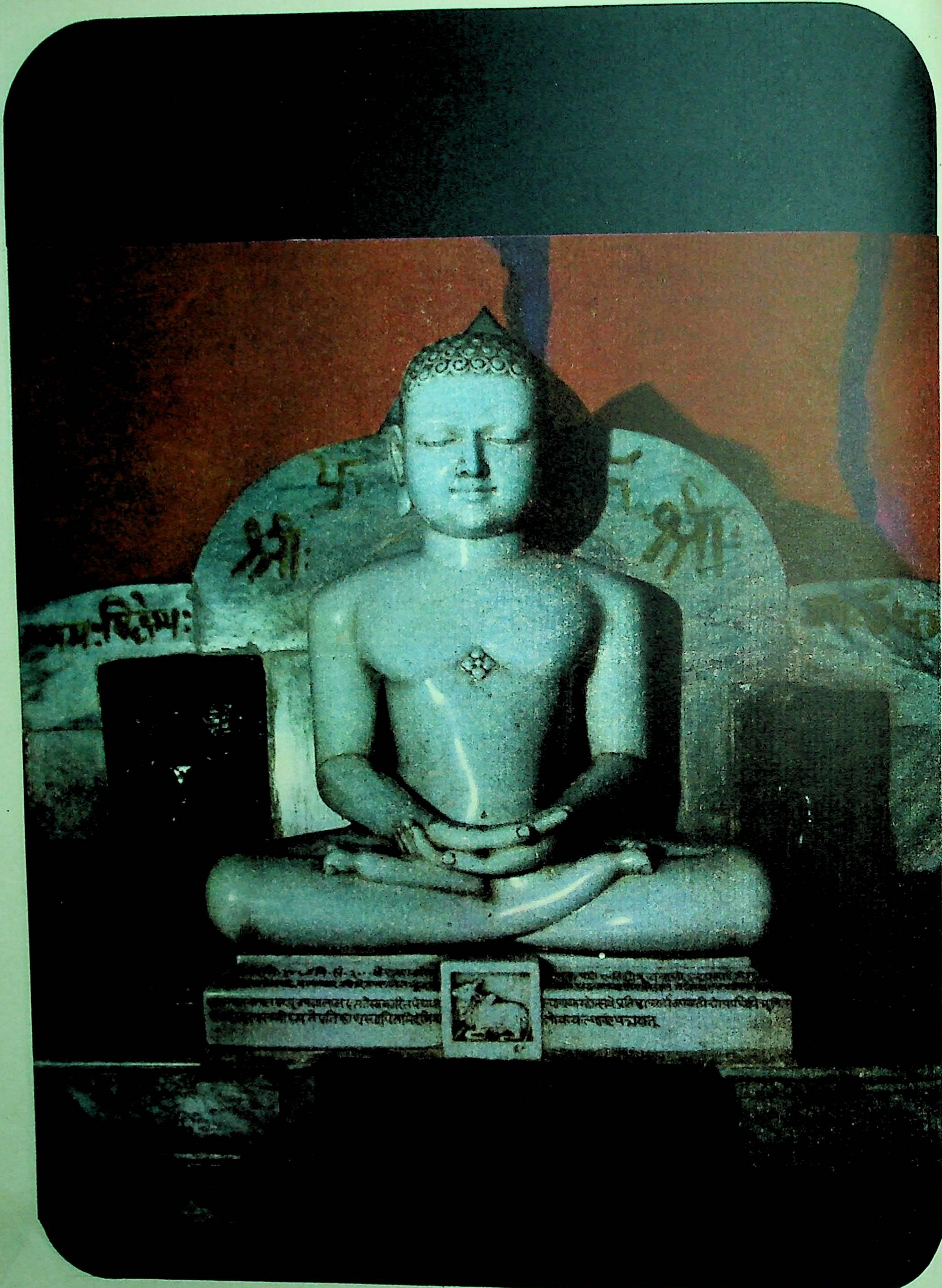


श्री शीतलनाथ जिनालय (बद्रीदास टेम्पल)का कलात्मक मनोहर दृश्य—कलकत्ता)



उडीसा


Orissa
JAIN PILGRIM CENTRES
STATE CAPITAL
DISTRICT HEADQUARTERS
DISTRICT BOUNDARIES
WEST BENGAL
BIHAR
SUNDARGARH
BARIPADA
MADHYA PRADESH
KEONJHARGARH
SAMBALPUR
BALASORE
BALANGIR
DHENKANAL
CUTTACK
PHULBANI
1
BHUBANESHWAR
BHAWANIPATNA
CHATRAPUR
BAY OF BENGAL
KORAPUT
ANDHRA PRADESH



श्री आदीश्वर भगवान–खज्डगिरि

श्री खण्डगिरि-उदयगिरि तीर्थ

तीर्थाधिराज ❋ श्री आदीश्वर भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण।

तीर्थ स्थल ❋ भुवनेश्वर से ६ कि० मी० दूर ३७ मीटर ऊँचे खण्डगिरि पहाड़ पर।

प्राचीनता ❋ यहाँ का इतिहास श्री आदीश्वर भगवान के समय से प्रारम्भ होता है। श्री आदीश्वर भगवान ने भारत भूमि को ५२ जनपदों में विभाजित किया। उनमें यह भी एक था। यह कलिंग देश कहलाता था। भगवान श्री ऋषभदेव, श्री पार्श्वनाथ भगवान व श्री महावीर भगवान का यहाँ अनेकों बार विहार हुआ था। भगवान श्री पार्श्वनाथ का तो इस देश में अत्यन्त प्रभाव रहा। वैदिक यज्ञयागादि में विश्वास रखनेवालों को यहाँ जाने तक का निषेध था। वैदिक लोग इसे अनार्य देश कहते थे। प्राचीन काल में ये खण्डगिरि, उदयगिरि पर्वत, कुमारगिरि व कुमारीगिरि नाम से प्रसिद्ध थे।

श्री पार्श्वनाथ भगवान के काल के पश्चात् यहाँ के राजा करकुण्ड रहे जो कट्टर जैन-धर्म के अनुयायी थे। इनका राज्य समस्त अंग, बंग, कलिंग, चेर, चोल, पाण्ड्य, आन्ध्र आदि देशों में फैला हुआ था। चेर, चोल, पाण्ड्य राजाओं को इन्होंने अपनी साहसिकता से झुकाया था। परन्तु जब उन्हें पता लगा कि इन राजाओं के मुकुट में जिनेन्द्र भगवान का चिह्न लगा है तो तुरन्त ही गले से लगाया था। स्वधर्मी के प्रति कितनी उदारता थी उनमें!

"उत्तराध्ययनसूत्र" में पंचाल के राजा द्विमुख, विदेह के राजा नेमि, गांधार के शासक नग्नजित व कलिंग के सम्राट करकण्डु का उल्लेख है। सम्राट करकण्डु भगवान पार्श्वनाथ के शिष्य भी माने जाते हैं।

कलिंग के कोने-कोने को जैन धर्म की ज्योति से भगवान महावीर ने प्रकाशमान कर दिया था। भगवान महावीर का कुमारी पर्वत पर भी समवसरण रचा गया था–ऐसा उल्लेख है। इस प्रकार भगवान श्री पार्श्वनाथ के काल में जैन-धर्म का यहाँ विशेष प्रचार हुआ व भगवान महावीर के काल में यहाँ के जन-जन का धर्म हो गया था।

महाराजा श्रेणिक (बिंबसार) द्वारा इस कुमारी-पर्वत पर मन्दिर बनवाकर, श्री आदीश्वर भगवान की स्वर्णमयी प्रतिमा गणधर श्री सुधर्मा-स्वामी के सुहस्ते प्रतिष्ठित करवाने का एवं साधु साध्वियों के लिए अनेकों गुफाएँ बनवाने का उल्लेख है।

श्री श्रेणिक महाराजा के पुत्र श्री कुणिक द्वारा भी इनपर्वतों पर पाँच गुफाएँ निर्मित करवाने का उल्लेख है।

भगवान महावीर के ६० वर्षों के पश्चात् नरेश महापद्म-नन्द ने इस प्रदेश पर आक्रमण किया व विजय पाकर आदीश्वर भगवान की स्वर्णमयी प्रतिमा को अपनी राजधानी पाटलीपुत्र ले गया। यह जिन प्रतिमा कलिंग में राष्ट्रीय प्रतिमा के रूप में मान्य थी। इसलिए प्रतिमा यहाँ से जाने के कारण कलिंग की जनता के दिल में भारी आघात पहुँचा।

कुछ समय बाद कलिंग को पुनः स्वतंत्रता प्राप्त हुई। भगवान महावीर के निर्माण के २४४ वर्षों पश्चात मगध सम्राट अशोक ने कलिंग पर पुनः आक्रमण किया, जिसमें लाखों मनुष्यों का संहार हुआ। युद्ध लगभग दो वर्षों तक जारी रहा। युद्ध में सम्राट अशोक की जीत हुई। लेकिन इस युद्ध में हुए नरसंहार व बरबादी के कारण उसे ग्लानि हो गयी व प्रायश्चित् स्वरूप जनकल्याण के अनेकों कार्य किये।

भगवान महावीर के लगभग ३५० वर्ष पश्चात् राजा खारवेल ने मगध पर आक्रमण करके कलिंग को मुक्त करवाके पाटलीपुत्र से जिन प्रतिमा पुनः यहाँ पर लाये। कलिंगवासियों ने अपने आराध्यदेवता के पुनः कलिंग में आगमन पर राष्ट्रीय स्तर पर स्वागत किया व राष्ट्रीय उत्सव मनाया जो जैन-धर्म के प्रति कलिंगवासियों की अगाध श्रद्धा का प्रतीक था।

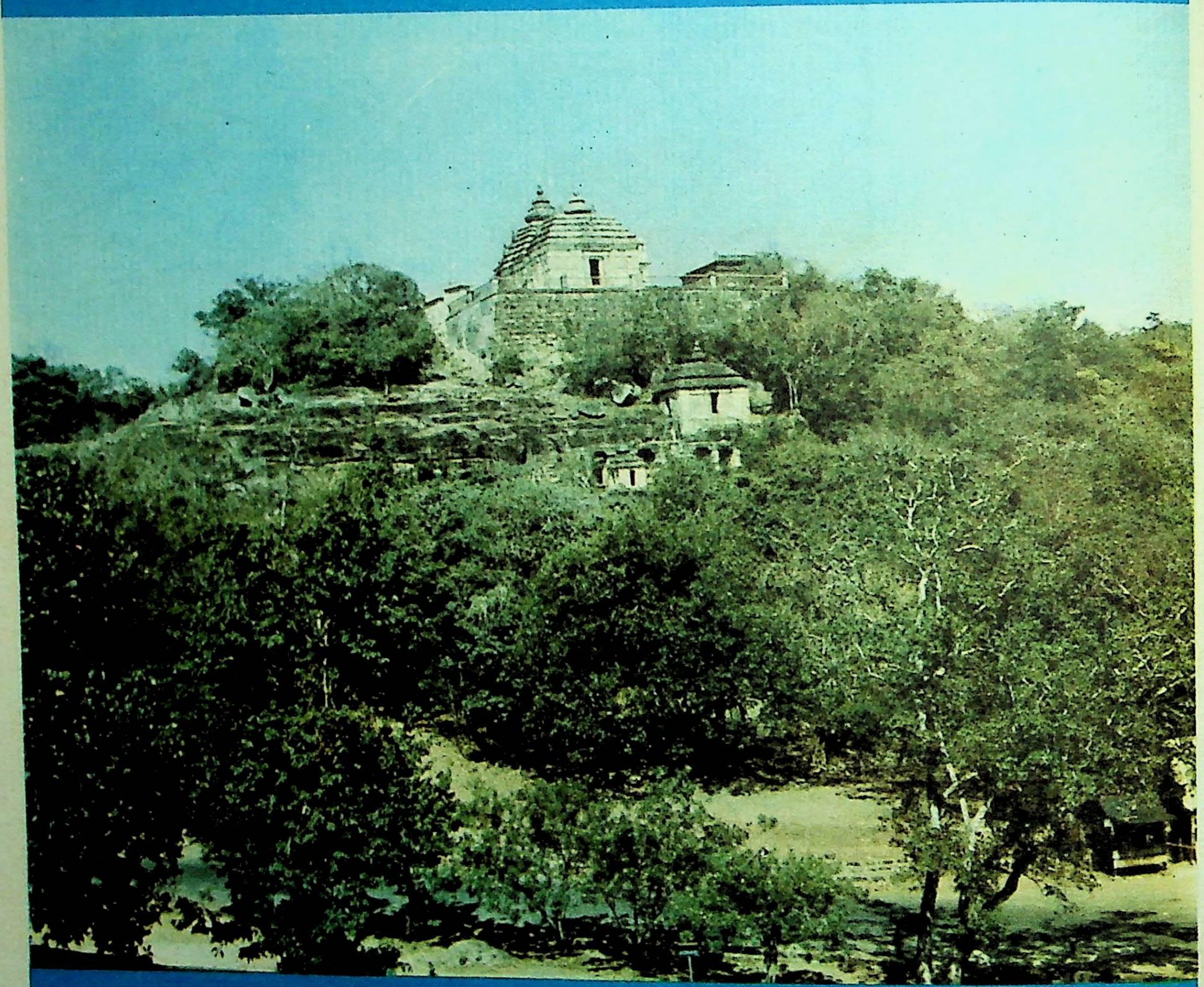
इस कुमारी पर्वत पर जहाँ भगवान महावीर ने धर्मोपदेश दिया था, वहाँ खारवेल ने जैन साधुओं के ध्यानादि के लिए गुफाएँ, जिन-मन्दिर आदि बनवाये। इनके परिवार के सभी लोग जैन धर्मावलम्बी थे। उक्त वृतान्त यहाँ की हाथी-गुफा के शिलालेख में उत्कीर्ण हैं। राजा खारवेल ने सातवाहन, वहसतिमित्र आदि अनेकों प्रतापी राजाओं को भी हराकर पूरे भारत में विजय पताका फहराई थी। राजा खारवेल वीर योद्धा तो थे ही साथ में धर्मनिष्ठ राजा होने के कारण जनता के कर्णधार बन गये थे।

खारवेल राजा चेदिवंशज के होने का व इनके पूर्वजों के जैन-धर्मावलम्बी होने का भी उल्लेख मिलता है। सम्राट खारबेल के पश्चात् उस जिन प्रतिमा का क्या हुआ, इसके अनुसन्धान की आवश्यकता है। विभिन्न स्थानों पर भू-उत्खनन से प्राप्त प्राचीन मुद्राओं व खारवेल कालीन शिलालेख यहाँ की प्राचीनता के इतिहास की साक्षी देते हैं।

यहाँ के प्राचीन मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान थे–ऐसा उल्लेख है। समय-समय पर यहाँ का अनेकों बार उद्धार हुआ होगा, ऐसा प्रतीत होता हैं।

विशिष्टता ❋ भगवान श्री आदिनाथ द्वारा निर्वाचित कलिंग जनपद जैन-धर्म का प्रारम्भ से ही मुख्य केन्द्र रहा है। यहाँ अनेकों वीर प्रतापी जैन राजा हुए। यहाँ की प्रजा जैन धर्मावलम्बी तो थी ही साथ में उनके दिल में धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा व भक्ति थी।

सहायक : १. श्री जेठमलजी उमेदमलजी बाफ़णा, मद्रास–७ २. मेसर्स. राजस्थान ट्रेडिंग कोरपोरेशन, मद्रास–१७. ३. श्रीमती. धापीबाई धर्मपत्नी एल. एम. मांगीलालजी, मद्रास–४. ४. शाह मोहनराज रंगराज एन्ड को. मद्रास–१.



श्री आदीश्वर भगवान मन्दिर–खण्डगिरि

सहायक : १. श्री केवलचन्दजी हस्तीमलजी रिखबचन्दजी जुगराजजी बेटा पोता असलाजी, ऊनड़ी (राज०)। २. मेसर्स. कोचर टेक्सटाइल्स, मद्रास–१.

कलिंग देश की जनता व राजाओं का सम्बन्ध दक्षिण के सारे राज्यों के साथ अच्छा था।

भगवान श्री पार्श्वनाथ का इस देश में अनेकों बार पदार्पण होने का व भगवान महावीर का इस पर्वत पर भी समवसरण रचा जाने का उल्लेख है।

यहाँ पर स्थित हाथी-गुफा का शिलालेख उपलब्ध शिलालेखों में प्राचीनतम माना जाता है। यहाँ पर स्थित शिलालेखों आदि के सम्बन्ध में अनुसन्धान की काफी गुंजाइश है।

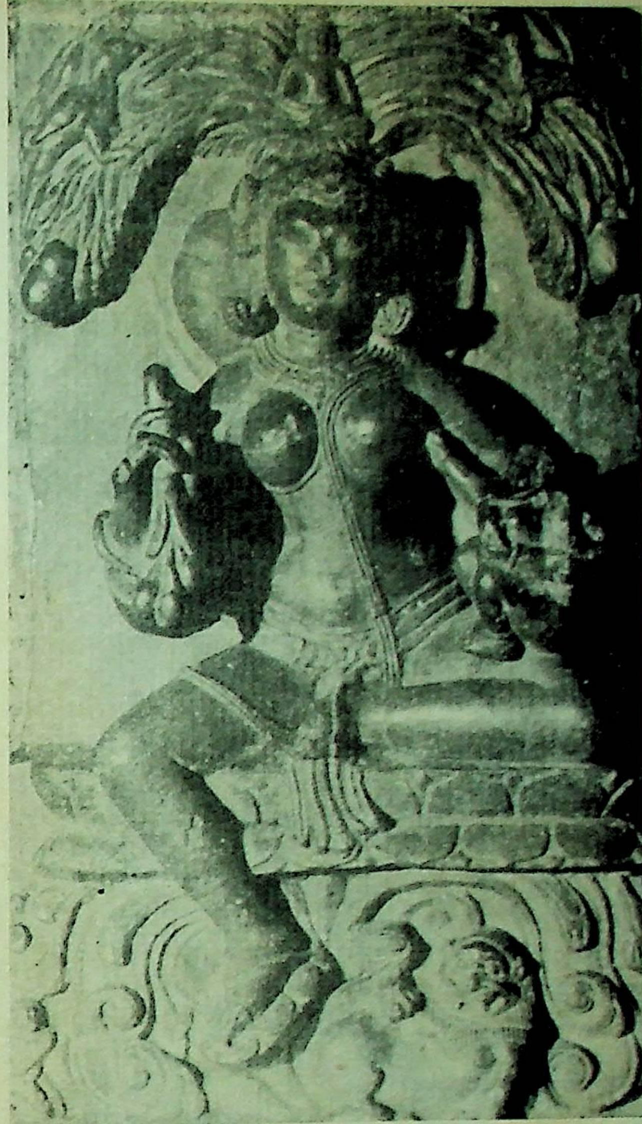
अन्य मन्दिर ❋ इस मन्दिर के निकट ३ और मन्दिर हैं। इस खण्डगिरि पर्वत के सम्मुख ही उदयगिरि पर्वत है। इन दोनों पर्वतों पर गुफाओं में प्राचीन प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं।

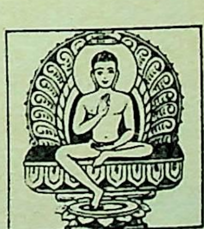
कला और सौन्दर्य ❋ यहाँ गुफाओं में उत्कीर्ण अनेकों प्राचीन कलात्मक प्रतिमाएँ अत्यन्त ही दर्शनीय हैं। प्राचीन कलात्मक ऐसी प्रतिमाओं के दर्शन अन्यत्र दुर्लभ हैं। यहाँ का हाथी-गुफा का शिलालेख पुरातत्व की दृष्टी से विशेष महत्वपूर्ण है, जो लगभग २२०० वर्ष प्राचीन माना जाता है।

मार्ग दर्शन ❋ नजदीक का रेलवे स्टेशन भुवनेश्वर यहाँ से लगभग १० कि० मी० है। जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा है। खण्डगिरि की ऊँचाई ३७ मीटर व उदयगिरि की ऊँचाई ३३ मीटर है। रास्ता सुलभ है। कार व बस तलेटी (धर्मशाला) तक जा सकती हैं।

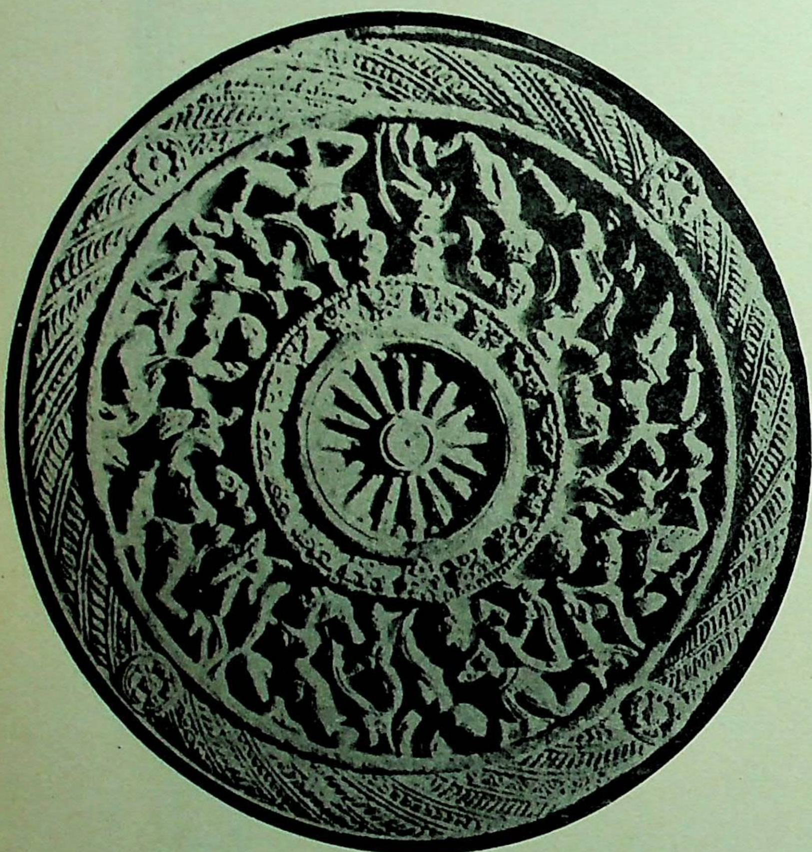
सुविधाएँ ❋ ठहरने के लिए पहाड़ी की तलेटी में धर्मशाला है जहाँ पानी, बिजली, की सुविधा है।

पेढ़ी ❋ श्री खण्डगिरि–उदयगिरि जैन दिगम्बर सिद्ध-क्षेत्र कार्यालय, डाक घर – खण्डगिरि : जिला – पुरी : प्रान्त – उड़ीसा : तार घर – भुवनेश्वर : टेलीफोन – पी० सी० ओ० भुवनेश्वर।



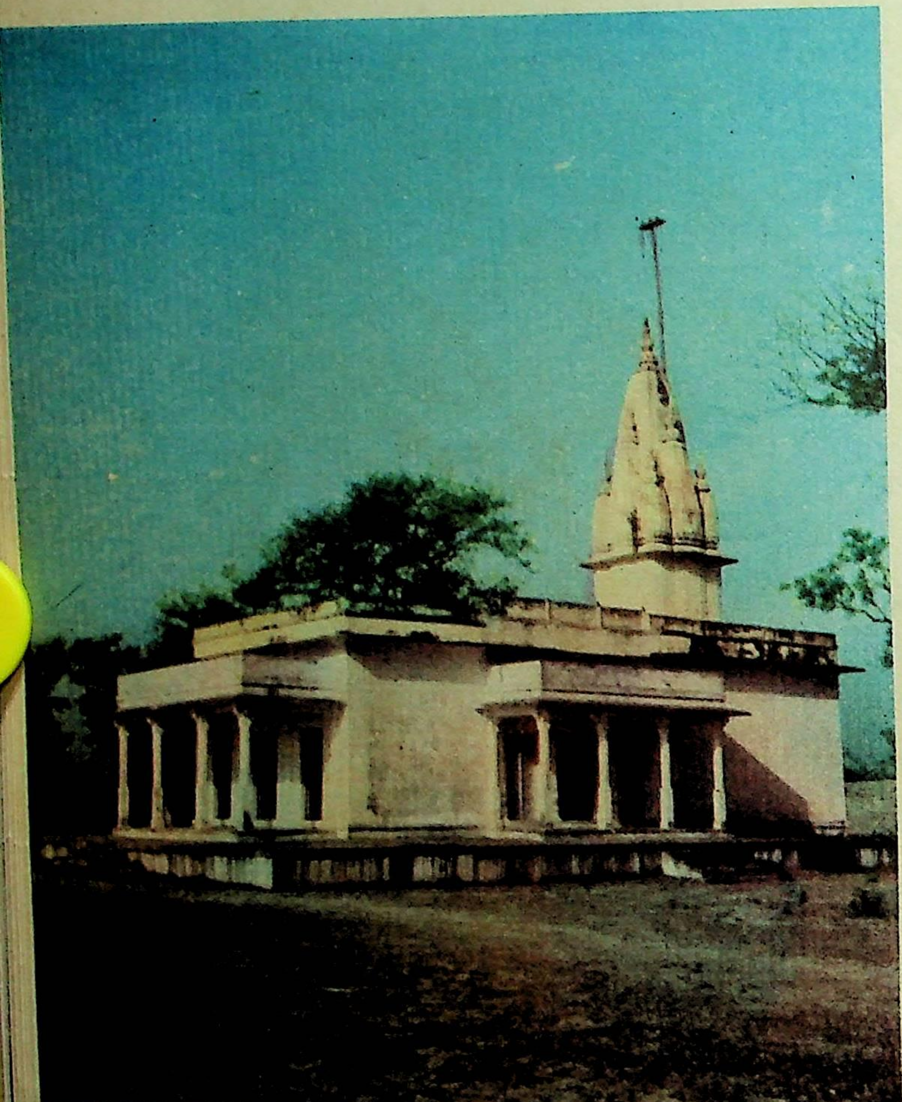


सहायक : १. शाह मिश्रीमलजी करनराजजी मद्रास–१ २. मेसर्स. प्रदीप कोमरसियल इन्टरप्राइसस. मद्रास–१ ३. श्री ए. राजमलजी पारख, मद्रास–१३. ४. यम. पुखराजजी धुड़मलजी गोलेछा, मद्रास–१३.



उत्तर प्रदेश


Uttar Pradesh
HIMACHAL PRADESH
CHINA
TIBET
JAIN PILGRIM CENTRES
STATE CAPITAL
DISTRICT HEADQUARTERS
DISTRICT BOUNDARIES
HARYANA
DELHI
RAJASTHAN
NEPAL
BIHAR
MADHYA PRADESH
UTTARKASHI
NARENDRANAGAR
DEHRADUN
GOPESHWAR
PAURI
SAHARANPUR
ALMORA
PITHORAGARH
MUZAFFARNAGAR
BIJNOR
NAINITAL
MEERUT
RAMPUR
MORADABAD
BAREILLY
PILIBHIT
BULANDSHAHIR
BUDAUN
LAKHIMIPUR
ALIGARH
SHAHJAHANPUR
MATHURA
ETAH
HARDOI
SITAPUR
BAHRAICH
AGRA
MANIPURI
FATEGARH
GONDA
BARA BANKI
LUCKNOW
BASTI
GORAKHPUR
ETAWAH
FAIZABAD
DEORIA
UNNAO
KANPUR
RAEBARELI
SULTANPUR
AZAMGARH
BALLIA
ORAI
HAMIRPUR
FATEHPUR
BELA
JAUNPUR
GHAZIPUR
JHANSI
BANDA
ALLAHABAD
VARNASI
MIRZAPUR
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
15
16
17



श्री चन्द्रप्रभ डिनालय (श्वे०)–चन्द्रपुरी

श्री चन्द्रपुरी तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ १. श्री चन्द्रप्रभ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ४५ सें० मी०। (श्वेताम्बर मन्दिर)।

२. श्री चन्द्रप्रभ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ४५ सें० मी०। दिगम्बर मन्दिर)।

तीर्थ स्थल ✻ चन्द्रावती गाँव के पास गंगा नदी के तट पर। (इसे चन्द्रोटी भी कहते हैं)।

प्राचीनता ✻ इस पावन तीर्थ का इतिहास आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ भगवान से प्रारम्भ होता है।

किसी समय श्री महासेन नाम के प्रतापी राजा यहाँ राज्य करते थे। उनके भाग्योदय से रानी लक्ष्मीमती ने एक दिन तीर्थंकर-जन्म-सूचक महास्वप्न देखे। उसी क्षण पद्मनाभ का जीव पूर्व के दो भव पूर्ण करके माता की कुक्षि में प्रविष्ट हुआ।

गर्भ के दिन पूर्ण होने पर पौष कृष्ण ग्यारस अनुराधा नक्षत्र में पुत्र-रत्न का जन्म हुआ। माता को गर्भ काल में चन्द्र-पान की इच्छा हुई थी इससे प्रभु का नाम चन्द्रप्रभ रखा गया। इन्द्रादिदेवों ने जन्म कल्याणक महोत्सव अति ही उल्लासपूर्वक मनाया।

यौवनावस्था पाने पर शादी हुई व कई वर्षों तक राज्य सुख भोगते हुए एक वक्त प्रभु ने दीक्षा लेने का निर्णय लिया। अतः प्रभु ने वर्षीदान देकर पौष कृष्णा तेरस अनुराधा नक्षत्र में सहसाम्रवन में एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ग्रहण

की। प्रभु विहार करते हुए तीन माह पश्चात पुनः यहाँ सहसाम्रवन में पधारे। यहाँ के पुन्नाग वृक्ष के नीचे कायोत्सर्ग ध्यान में रहकर फाल्गुन कृष्ण सप्तमी के दिन अनुराधा नक्षत्र में केवलज्ञान प्राप्त किया। इन्द्रादिदेवों द्वारा समवसरण की रचना की गई।

इस प्रकार श्री चन्द्रप्रभ भगवान के चार कल्याणक च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान यहाँ हुए, जिनकी उपरोक्त तिथियाँ श्वे० मान्यतानुसार हैं।

इस तीर्थ की व्याख्या शास्त्रों में, तीर्थ मालाओं आदि में हुई हैं। चौदहवीं शताब्दी में आचार्य श्री जिनप्रभसूरीश्वरजी द्वारा रचित 'विविध तीर्थ-कल्प' में भी इस तीर्थ का उल्लेख है। इसके निकट अनेकों प्राचीन टीले व टेकरियाँ हैं अगर शोध-कार्य किया जाय तो यहाँ अनेकों प्रागैतिहासिक अवशेष व सामग्री के मिलने की सम्भावना है।

विशिष्टता ❋ आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ भगवान के चार कल्याणक (च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान) होने का सौभाग्य इस पवित्र भूमि को प्राप्त होने के कारण यहाँ का कण-कण वन्दनीय हैं।

जहाँ प्रभु ने जन्म से केवलज्ञान तक अपने जीवन काल के अमूल्य दिन व्यतीत किये हों उस जगह की महत्ता अवर्णनीय है। प्रभु के काल में तो अनेकों भव्य आत्माओं ने अपना जीवन सार्थक बनाया ही होगा। परन्तु अभी भी यहाँ के शुद्ध परमाणुओं से यात्रीगण अपनी आत्मा में विशेष शान्ति का अनुभव करते हैं व यहाँ आते ही बाह्य वातावरण भूलकर स्वतः प्रभु स्मरण में लीन होकर अपना मानव भव सफल बनाते हैं।



श्री चन्द्रप्रभ भगवान (श्वे०)–चन्द्रपुरी

श्री चन्द्रप्रभु जिनालय (दि०)–चन्द्रपुरी



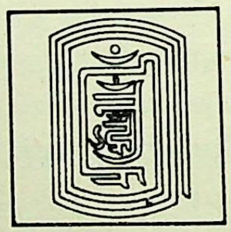
अन्य मन्दिर ❋ वर्तमान में इनके अतिरिक्त और कोई मन्दिर नहीं हैं।

कला और सौन्दर्य ❋ यहाँ की प्राचीन कला संभवतः टीलों के गर्भ में हैं, खुदाई करने पर प्राप्त हो सकती हैं। गंगा नदी के तट पर स्थित इस पावन तीर्थ का प्राकृतिक सौन्दर्य अति ही मनोहर है।

मार्ग दर्शन ❋ नजदीक के रेलवे स्टेशन कादीपुर ५ कि० मी० व बनारस २३ कि० मी० हैं। बनारस से टैक्सी व बस की सुविधा हैं। बनारस ठहरकर आना ही सुविधाजनक हैं। बस बनारस-गाजीपुर मुख्य सड़क मार्ग पर ठहरती हैं, जहाँ से तीर्थस्थल लगभग एक कि० मी० दूर है। वहाँ सवारी का साधन नहीं हैं। कार व बस धर्मशाला तक जा सकती हैं। धर्मशाला से मन्दिर २०० मीटर दूर है।

सुविधाएँ ❋ ठहरने के लिए श्वेताम्बर व दिगम्बर धर्मशालाएँ हैं, जहाँ पानी, बिजली व बर्तनों की सुविधा हैं।

पेढ़ी ❋ १. श्री जैन श्वेताम्बर तीर्थ सोसायटी, चन्द्रपुरी तीर्थ, २. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, चन्द्रपुरी तीर्थ, डाक घर – चन्द्रावती जिला – वाराणसी राज्य – उत्तरप्रदेश।





श्री चन्द्रप्रभ भगवान (दि०) –चन्द्रपुरी

श्री सिंहपुरी तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री श्रेयाँसनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ३० सें० मी० (श्वेताम्बर मन्दिर)।

२. श्री श्रेयाँसनाथ भगवान, श्याम वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ७५ सें० मी० (दिगम्बर मन्दिर)।

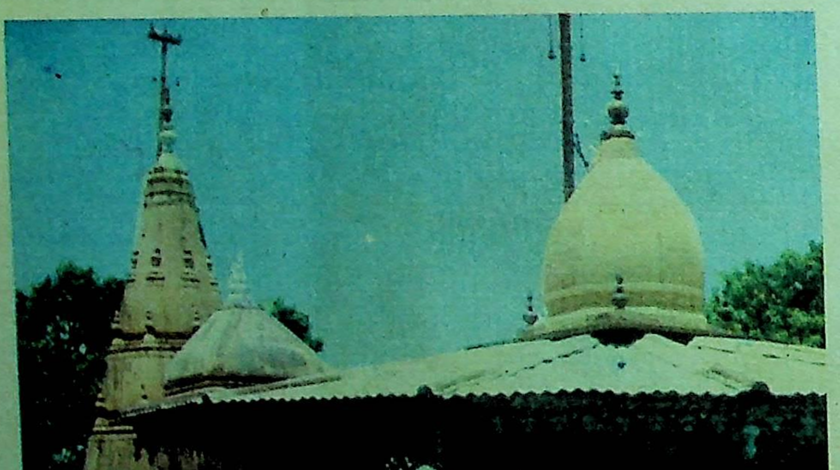
तीर्थ स्थल ✻ हीरावणपुर गाँव में श्वेताम्बर मन्दिर व सारनाथ चौराहे पर दिगम्बर मन्दिर।

प्राचीनता ✻ इस क्षेत्र का इतिहास वर्तमान चौबीमी के ग्यारहवें तीर्थंकर श्री श्रेयाँसनाथ भगवान के समय से प्रारम्भ होता है।

प्रागैतिहासिक काल में, प्रबल योग से जब नलिनगुल्म का जीव पूर्व के दो भव पूर्ण करके यहाँ के तात्कालिन राजा विष्णु की रानी, विष्णुदेवी की कुक्षि में प्रविष्ट हुआ उसी समय रानी विष्णु देवी ने तीर्थंकर जन्म-सूचक महा स्वप्न देखे। गर्भ काल की अवधि पूर्ण होने पर विष्णुमाता की कुक्षि से गेण्डे के चिन्हयुक्त पुत्र-रत्न का जन्म हुआ। दि० मान्यतानुसार माता का नाम वेणुदेवी था।)

इन्द्रादिदेवों ने जन्मकल्याणक महोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया। राज-दरबार में भी बधाइयाँ बँटने लगी। पुत्र का नाम श्रेयाँसकुमार रखा गया।

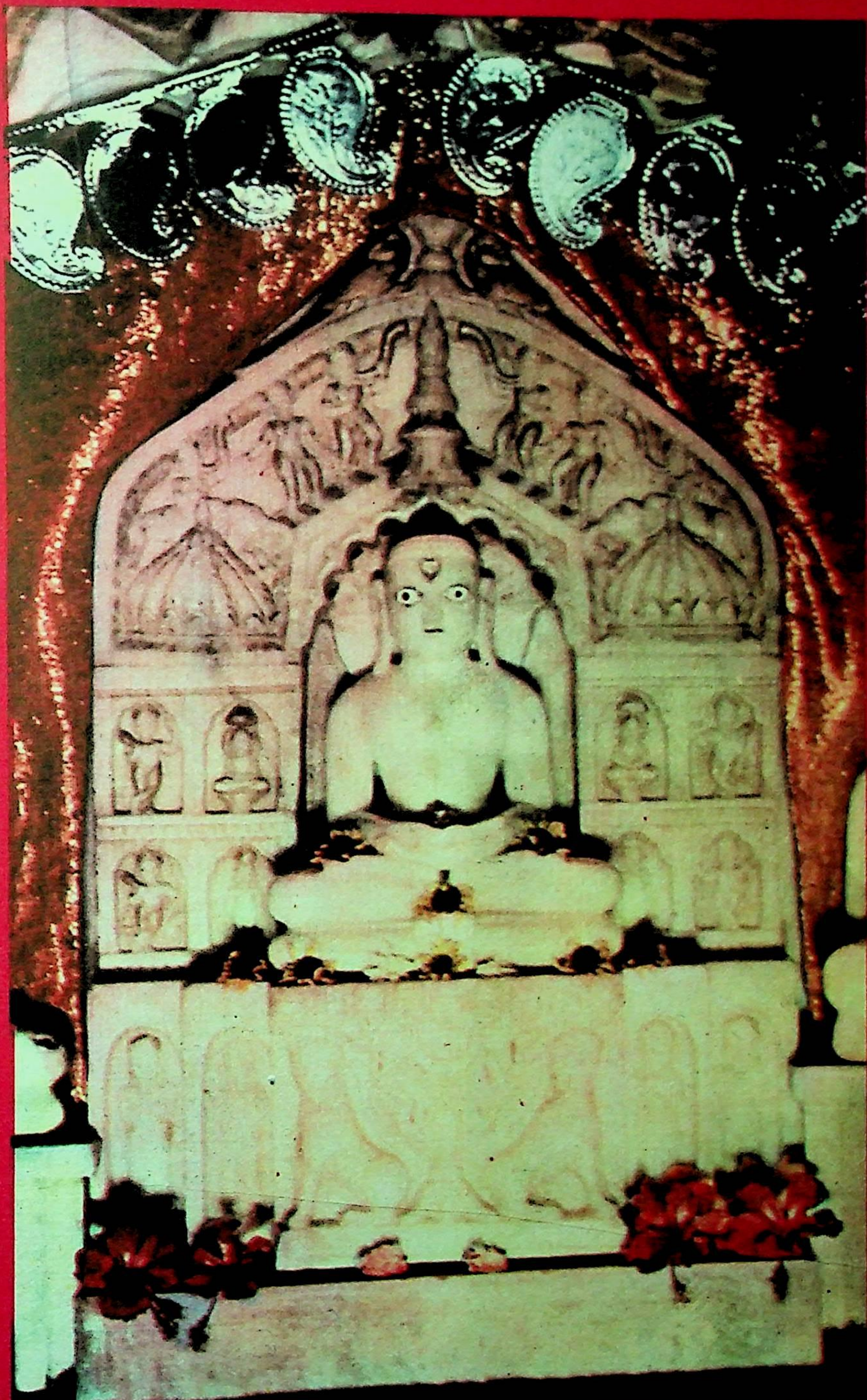
श्री श्रेयांसनाथ जिनालय (श्वे०)–सिंहपुरी



यौवनावस्था पाने पर शादी की गई व राज्य भार संभाला। वर्षों पश्चात् एक दिन प्रभु ने दीक्षा लेने का निर्णय लिया व वर्षीदान देकर यहाँ के सहसाम्रवन में दीक्षा ग्रहण की। विहार करते हुए एक माह पश्चात् प्रभु पुनः इसी वन में आकर तंदुक वृक्ष के नीचे ध्यानावस्था में रहे। घातिया कर्मों का नाश करके माघ कृष्णा तीज के दिन प्रभु ने केवलज्ञान प्राप्त किया। (दि० मान्यतानुसार माघ शुक्ला पूर्णिमा को केवल-ज्ञान हुआ।) इस प्रकार प्रभु के चार कल्याणक होने का सौभाग्य इस पावन भूमि को प्राप्त हुआ।

आज यह स्थान सारनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। श्रेयाँसनाथ का अपभ्रंश नाम ही सारनाथ होने का अनुमान लगाया जाता है। क्योंकि सारनाथ नाम कैसे पड़ा इसका कोई इतिहास उपलब्ध नहीं।

यहाँ पर १०३ फुट उत्तुंग प्राचीन कलात्मक अष्टकोण स्तूप हैं, जो लगभग २२०० वर्ष प्राचीन माना जाता है। यह स्तूप देवानां प्रिय, प्रियदर्शी राजा द्वारा निर्माणित हुआ बताया जाता है। जैन मान्यता के अनुसार सम्राट अशोक के पौत्र श्री सम्प्रति राजा द्वारा श्री श्रेयाँसनाथ भगवान की कल्याणक भूमि पर उनकी स्मृति में निर्माणित हुआ है। क्योंकि राजा सम्प्रति ने अपने लिए प्रियदर्शी शब्द का सर्वत्र प्रयोग किया है। कहीं-कहीं देवानांप्रिय भी किया है। देवा-



श्री श्रेयांसनाथ भगवान (श्वे०)–सिंहपुरी

नाँप्रिय जैन परम्परा का शब्द है। वर्तमान में यह स्तूप पुरातत्व विभाग की देखरेख में है व संभवतः अशोक सम्राट द्वारा निर्माणित हुआ होगा ऐसा लिखा है। इस संभावना पर संशोधन आवश्यक है ताकि प्रमाणिकता का पता लग सके।

यहाँ भूगर्भ से प्राप्त शिलालेखों में भी जैन धर्म सम्बन्धी अनेकों लेख उत्कीर्ण हैं। यहाँ के मृग उद्यान की प्राचीनता के विषय में भी खोज की जाय तो कुछ इतिहास प्रकट में आ सकता है।

पाँचवीं शताब्दी में चीनी यात्री फाहियान ने इस स्थान का वर्णन किया है। सातवीं शताब्दी में चीनी यात्री हुएनसाँग ने भी वर्णन किया है।

ग्यारहवीं सदी में यह स्थान मोहमद गज़नी के आधीन आया। तत्पश्चात् कन्नौज के राजा गोविन्दचन्द्र की रानी कुमारदेवी ने यहाँ एक धर्मचक्र जिन विहार बनाया था। सं० ११९४ में शहाबुद्दीन गौरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ने यहाँ के मन्दिरों को क्षति पहुँचाई तब दो विशाल स्तूपें बची थीं ऐसा उल्लेख है। अभी यहाँ सिर्फ एक श्वेताम्बर मन्दिर, एक दिगम्बर मन्दिर, एक स्तूप व एक बौद्ध मन्दिर हैं।

विशिष्टता * वर्तमान चौबीसी के ग्यारहवें तीर्थंकर श्री श्रेयाँसनाथ भगवान के च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक होने का सौभाग्य इस पावन भूमि को प्राप्त हुआ है।

यहाँ का विशाल व विचित्र प्राचीन कलात्मक स्तूप अति ही दर्शनीय है। भारत सरकार ने इस स्तंभ की सिंहत्रयी को राज्यचिह्न के रूप में मान्य करके व धर्मचक्र को राष्ट्र ध्वज पर अंकित करके यहाँ का ही नहीं श्रमण संस्कृति का गौरव बढ़ाया है।

बौद्ध मान्यतानुसार बुद्ध भगवान ने सर्व प्रथम अपने पंच-वर्गीय शिष्यों को यहीं पर उपदेश दिया था। बौद्ध ग्रन्थों में इसका नाम ऋषिपतन और मृगादान आता है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इनके अतिरिक्त अन्य कोई जैन मन्दिर नहीं हैं।

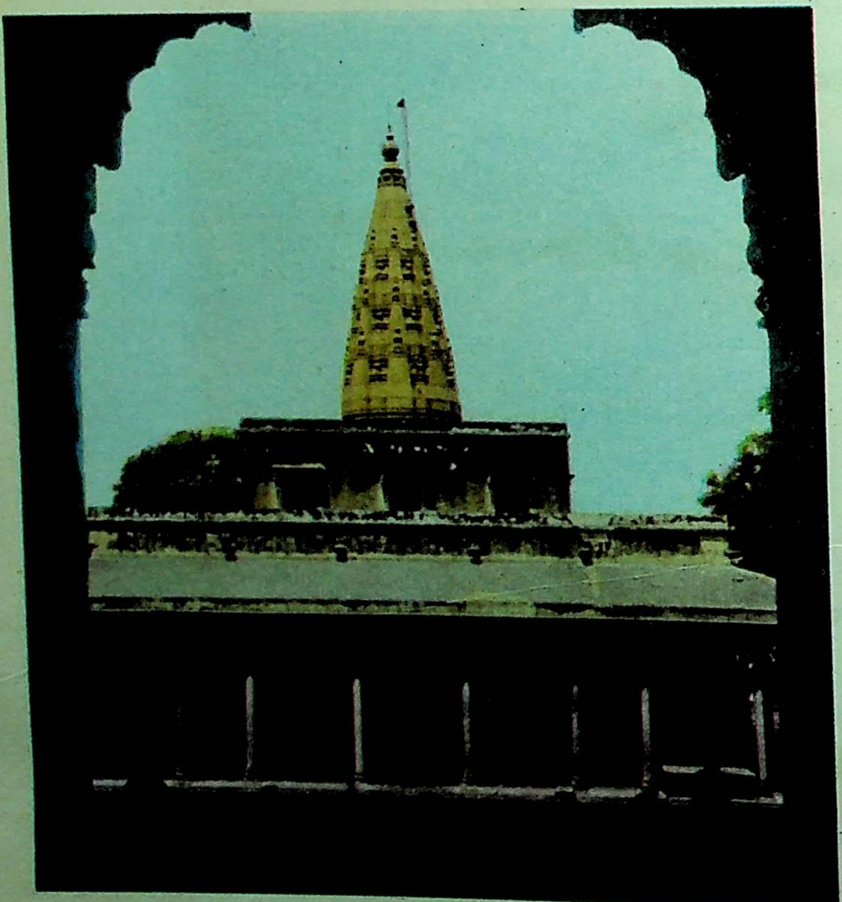
कला और सौन्दर्य * यहाँ के प्राचीन विशाल स्तूप की विचित्र कला का जितना वर्णन करें, कम हैं।

मार्ग दर्शन * बनारस छावनी स्टेशन से यह स्थान ८ कि० मी० है, जहाँ से बस, टैक्सी व ताँगों की सुविधा है। सारनाथ चौराहे के पास ही दिगम्बर मन्दिर है। श्वेताम्बर मन्दिर सारनाथ से १ ५ कि० मी० दूर हीरावणपुर में हैं। कार व बस मन्दिर तक जा सकती हैं। सारनाथ रेलवे स्टेशन १.५ कि० मी० है।

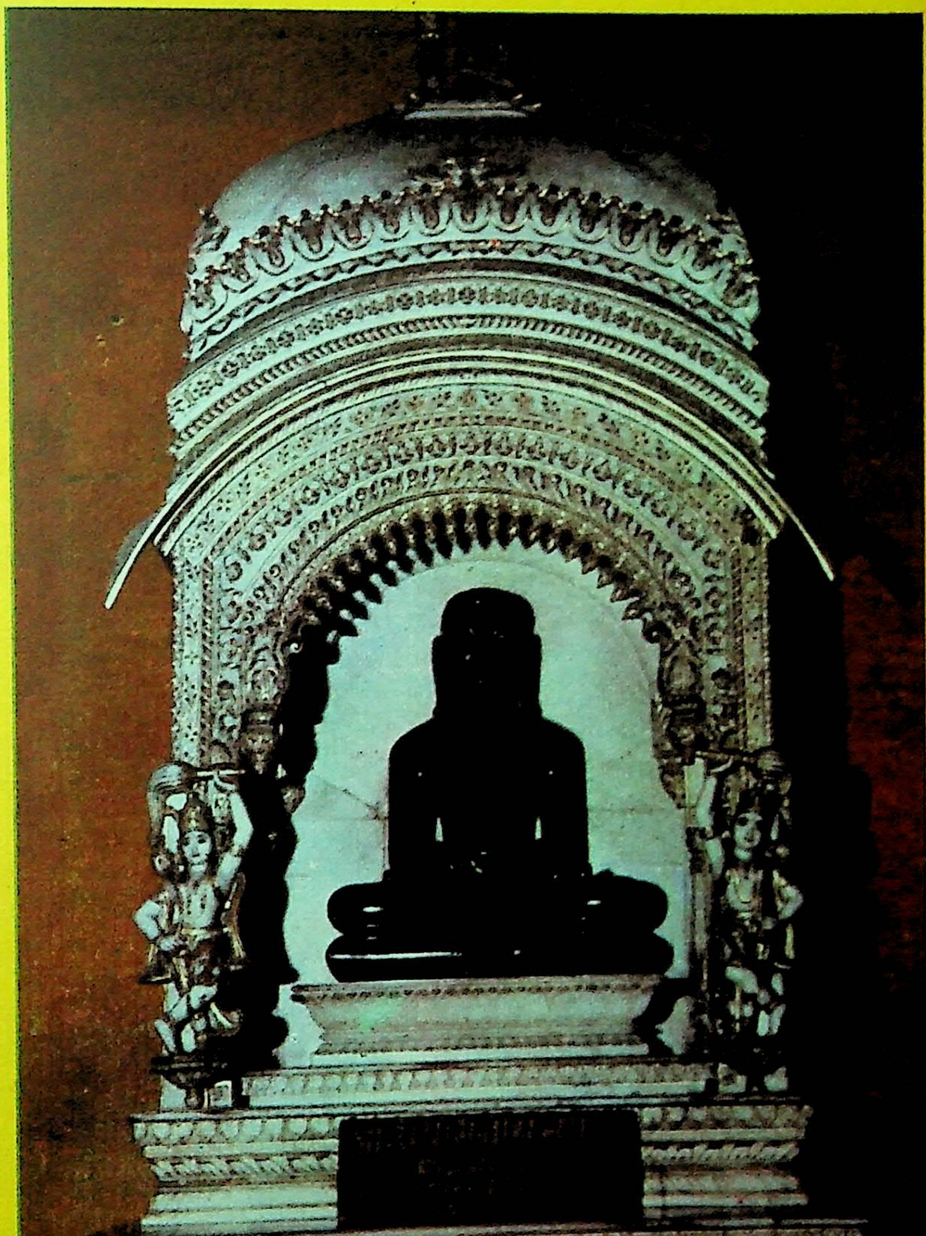
सुविधाएँ * ठहरने के लिए मन्दिरों के पास ही श्वेताम्बर व दिगम्बर धर्मशालाएँ हैं, जहाँ बिजली, पानी की सुविधा है।

पेढ़ी * १. श्री श्वेताम्बर तीर्थ श्री सिंहपुरीजी, हीरावणपुर गाँव। डाक घर – सारनाथ जिला – वाराणसी राज्य – उत्तर प्रदेश : टेलीफोन — पी० सी० ओ० सारनाथ

२. श्री दिगम्बर जैन श्रेयाँसनाथ मन्दिर, सिंहपुरी। डाक घर – सारनाथ : जिला – वाराणसी।



← श्री श्रेयांसनाथ जिनालय (दि०) –सिंहपुरी



श्री श्रेयांसनाथ भगवान (दि०) –सिंहपुरी



श्री सुपार्श्वनाथ भगवान (श्वे०)–मदैनी

श्री भदैनी तीर्थ

तीर्थाधिराज * १. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान, श्वेतवर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ६८ सें० मी०। (श्वेताम्बर मन्दिर)।

२. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण पद्मासनस्थ, लगभग ४६ सें० मी०। (दिगम्बर मन्दिर)।

तीर्थ स्थल * भेलुपुर (वाराणसी) से १.५ कि० मी० दूर गंगा नदी तट पर, जिसे जैन घाट कहते हैं।

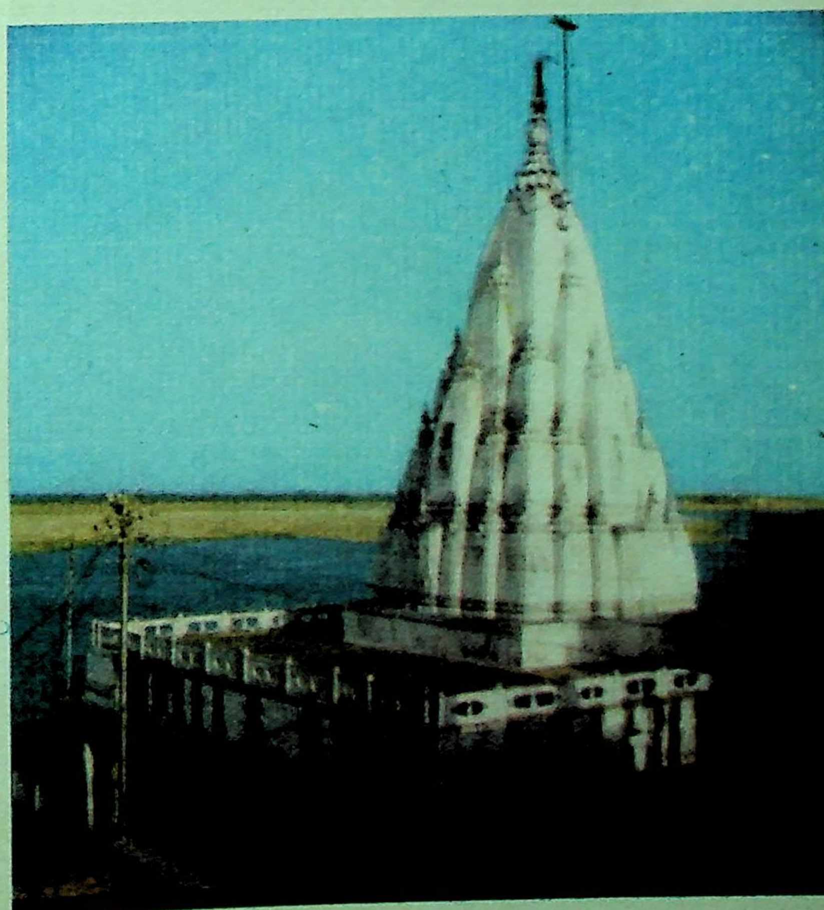
प्राचीनता * यह स्थल वाराणसी का एक अंग है। वाराणसी को प्राचीन काल से काशी भी कहते हैं। इस नगरी का इतिहास श्री ऋषभदेव भगवान के काल से प्रारम्भ हो जाता है। उस समय का कुछ इतिहास भेलुपुर तीर्थ में दिया जा चुका है। प्रबल पुण्य योग से जब नन्दिषेण का जीव पूर्व के दो भवपूर्ण करके भाद्रवा कृष्णाअष्टमी के शुभ दिन अनुराधा नक्षत्र में यहाँ के इक्ष्वाकु वंशी राजा प्रतिष्ठा की रानी पृथ्वी की कुक्षि में प्रविष्ट हुआ तब उसी क्षण पृथ्वी रानी ने तीर्थंकर जन्म सूचक महा-स्वप्न देखे। गर्भ काल पूर्ण होने पर पृथ्वी देवी ने स्वस्तिक लक्षण युक्त पुत्र को जन्म दिया। इन्द्रादि देवों ने प्रभु का जन्म कल्याणक मनाया।

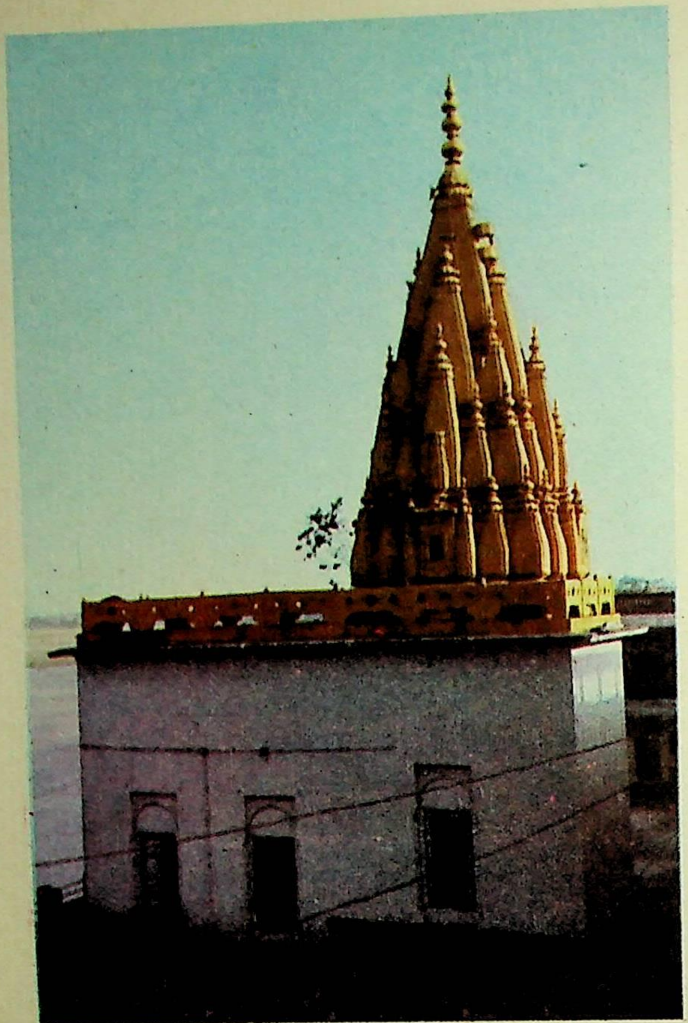
बाल्यावस्था पूर्ण होने पर शादी की गई व राज्य भार संभाला। राज्य कार्य करते हुए एक दिन दीक्षा लेने की भावना जाग्रत हुई। प्रभु ने वर्षीदान देकर यहाँ के सहसाम्रवन में एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ग्रहण की। नव मास तक बिहार करते हुए इसी वन में पुनः आकर सरीस वृक्ष के नीचे ध्यानावस्था में रहे व ज्ञानावरणादि कर्मों का क्षय होने पर उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ। इन्द्रादिदेवों द्वारा समवसरण की रचना की गई।

इस प्रकार वर्तमान चौबीसी के सातवें तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के चार कल्याणक होने का सौभाग्य इस भूमि को प्राप्त हुआ है। प्रभु की कल्याणक भूमि होने के कारण यहाँ अनेकों मन्दिरों का निर्माण हुआ होगा। आज यहाँ सिर्फ ये ही दो मन्दिर हैं जो पूर्व इतिहास की याद दिलाते हैं।

विशिष्टता * वर्तमान चौबीसी के सातवें तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक होने का सौभाग्य इस पावन भूमि को प्राप्त हुआ है। इसलिए इस स्थान की अपूर्व महानता है।

श्री सुपार्श्वनाथ जिनालय (श्वे०)–भदैनी





श्री सुपार्श्वनाथ जिनालय (दि०)–भदैनी

भक्तगण अपने दुर्लभ मानव भव मे इस पावन स्थल को स्पर्श करने का अमूल्य अवसर न चूकें। ऐसे पुण्य स्थलों के स्पर्श मात्र से आत्मा को शान्ति का अनुभव होता है।

अन्य मन्दिर * इन मन्दिरों के अतिरिक्त वर्तमान में यहाँ कोई मन्दिर नहीं हैं।

कला और सौन्दर्य * गंगा नदी के तट पर इन मन्दिरों का दृश्य अति ही शोभायमान लगता है। अति ही शांत वातावरण में कल-कल बहती हुई नदी भी अपनी मन्द मधुर आवाज़ से मानों प्रभु का नाम निरन्तर स्मरण कर रही हो–ऐसा प्रतीत होता है।

मार्ग दर्शन * वाराणसी रेलवे स्टेशन यहाँ से लगभग ४ कि० मी० है, जहाँ से टैक्सी व ताँगों की सुविधा है। मन्दिर से लगभग आधा फर्लांग दूर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए यहाँ श्वेताम्बर व दिगम्बर धर्मशालाएँ हैं। लेकिन भेलुपुर (वाराणसी) में ठहरकर ही यहाँ दर्शनार्थ आना सुविधाजनक है।

पेढ़ी * १. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान जैन श्वेताम्बर मन्दिर। २. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान जैन दिगम्बर मन्दिर, भदेनी घाट। डाक घर – बनारस : जिला – बनारस : प्रान्त – उत्तर प्रदेश : तार घर – वाराणसी : टेलीफोन – पी० सी० ओ० वाराणसी।



श्री सुपार्श्वनाथ भगवान (दि०)—भदैनी

श्री पार्श्वनाथ भगवान (श्वे०) भेलुपुर–बनारस



श्री भेलुपुर तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री पार्श्वनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग ६० से० मी० (श्वेताम्बर मन्दिर) प्राचीन मूलनायक।

श्री पार्श्वनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, श्याम वर्ण, लगभग ७५ सें० मी० (दिगम्बर मन्दिर)।

तीर्थ स्थल * बनारस शहर के भेलुपुर मोहल्ले में।

प्राचीनता * इस नगरी के, वाराणसी व काशी नाम प्राचीन काल से आज तक जन साधारण में प्रचलित हैं। यहाँ का इतिहास युगादिदेव श्री आदिनाथ भगवान के समय से प्रारम्भ हो जाता है। काशी के नरेश अकम्पन की पुत्री सुलोचना का यहीं पर स्वयंवर रचा गया था। सुलोचना ने भरत चक्रवर्ती के प्रधान सेनापति जयकुमार (बाहुबली के पौत्र) को स्वयंवर के समय गले में वरमाला डालकर पति के रूप में स्वीकार किया था।

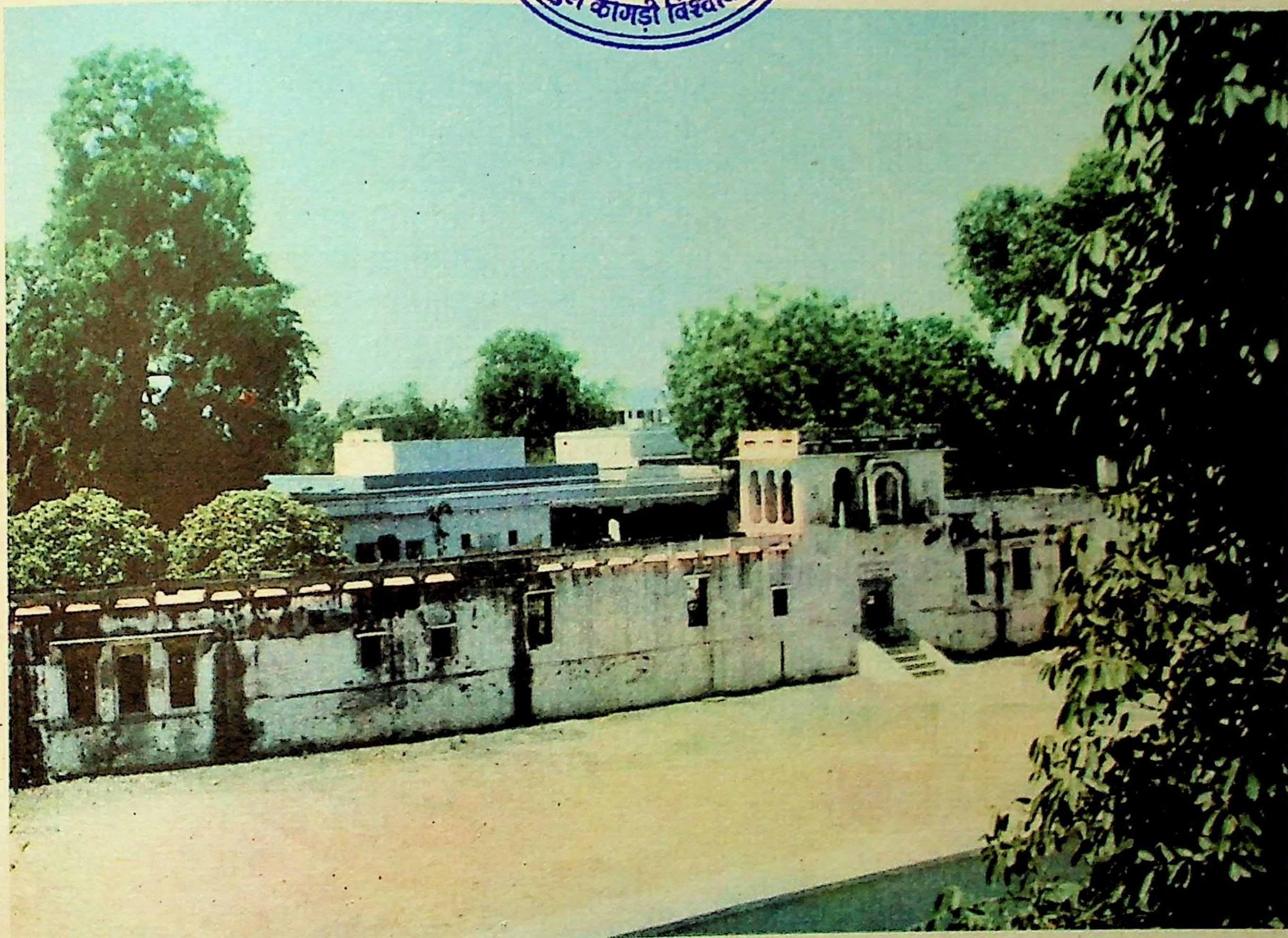
इस नगरी के इक्ष्वाकु वंशीय राजा अश्वसेन की रानी वामादेवी ने चैत्र कृष्ण चतुर्थी की रात्री में तीर्थंकर-जन्न-सूचक महा-स्वप्न देखे। उसी क्षण मरुभूति का जीव पिछले नव भव पूर्ण करके वामा माता की कुक्षि में प्रविष्ट हुआ। गर्भ काल पूर्ण होने पर पौष कृष्णा दशमी के दिन अनुराधा नक्षत्र में सर्प-लक्षण वाले पुत्र को वामा माता ने जन्म दिया। इन्द्रादि देवों ने प्रभु का जन्म कल्याणक अति उल्लासपूर्वक मनाया। राज दरबार में भी बधाइयाँ बँटने लगीं। प्रभु का नाम पार्श्वकुमार रखा गया।

बाल्यावस्था पूर्ण होने पर राजा प्रसेनजित की पुत्री प्रभावती के साथ उनकी शादी हुई। राजकुमार पार्श्व ने एक दिन एक तपस्वी को धूनी लगाकर पंचाग्नि तप करते देखा।

राजकुमार पार्श्व को अवधिज्ञान से मालूम पड़ा कि जलते लकड़े में सर्प-सर्पिणी तड़प रहे हैं। तुरन्त लकड़े को चीरकर सर्प-सर्पिणी को निकाला व नवकार महामंत्र सुनाया। वे मरकर नवकार मंत्र के प्रभाव से धरणेन्द्र, पद्मावती नाम के देव हुए।

सहायक : शाह मिश्रीमलजी नवाजी, रमणिया (राज०) वाले मद्रास–१.

श्री पार्श्वनाथ जिनालयों का दृश्य भेलुपुर—बनारस



एक दिन पार्श्वकुमार को दीक्षा लेने की भावना जाग्रत हुई। प्रभु ने वर्षीदान देकर यहाँ आश्रमपद नामक उद्यान में पौष कृष्णा ग्यारस के दिन अनुराधा नक्षत्र में तीन सौ राजाओं के साथ दीक्षा अंगीकार की। बिहार करते हुए प्रभु पुनः यहाँ आये व उसी आश्रमपद उद्यान में धातकी वृक्ष के नीचे कायोत्सर्ग ध्यान में रहें। दीक्षा के ८४ दिनों के पश्चात घातिया कर्मों का नाश होने पर चैत्र कृष्णा चतुर्थी के दिन विशाखा नक्षत्र में प्रभु को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। इन्द्रादिदेवों द्वारा समवसरण की रचना की गई।

उस समय हस्तिनापुर के राजा स्वयंभू समवसरण में उपस्थित थे, उन्होंने प्रभु के पास दीक्षा ग्रहण की व बाद में वे प्रभु के प्रथम गणधर बनकर आर्यदत्त नाम से प्रचलित हुए। प्रभु के माता पिता व भार्या ने भी दीक्षा ग्रहण की।

इस प्रकार पार्श्वप्रभु के चार कल्याणक इस पावन भूमि में हुए हैं। (दिगम्बर मान्यतानुसार प्रभु का च्यवन वैशाख कृष्णा द्वितीया को, जन्म पौष कृष्णा ग्यारस को हुआ बताया है एवं कन्नौज के नरेश रविकीर्ति की पुत्री प्रभावती के साथ विवाह के लिए पार्श्व कुमार से निवेदन किया गया था परन्तु विवाह नहीं हुआ ऐसा मत है। रविकीर्ति पार्श्वकुमार के मामा बताये जाते हैं)

भगवान महावीर के समय यह मल्लजाति के राजाओं की राजधानी थी। महाराज श्रेणिक को यह शहर दहेज में दिया गया था ऐसा उल्लेख है। भगवान बुद्ध यहाँ आये तब पार्श्वनाथ भगवान के अनेकों शिष्यों से उनकी यहाँ भेंट हुई थी,– ऐसा उल्लेख है। प्रागैतिहासिक काल से यहाँ अनेकों मन्दिर बने। परन्तु कालक्रम से अनेकों बार जीर्ण हुए व पुनः बने। स्थानीय भारतीय कलाभवन में पुरातत्व सम्बन्धी बहुमूल्य सामग्री संग्रहीत हैं, जो यहाँ की प्राचीनता को प्रमाणित करती है। चौदहवीं सदी में आचार्य जिनप्रभसूरीश्वरजी द्वारा रचित विविध तीर्थ कल्प में यहाँ पार्श्वनाथ मन्दिर के पास तालाब रहने का उल्लेख किया है। सम्भवतः वह मन्दिर यह भेलुपुर का मन्दिर ही हो। जीर्णोद्धार के समय श्वेताम्बर मन्दिर में प्राचीन प्रतिमा के स्थान पर वर्तमान प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई होगी जो अभी मूलनायक रूप में विराजमान हैं। प्राचीन प्रतिमा भी इसी मन्दिर के भमती में विराजमान है जो अति ही सुन्दर, कलात्मक व भावात्मक है। यही प्रतिमा प्राचीन मूलनायक बताई जाती है।

विशिष्टता * वर्तमान काल के प्रकट प्रभावी, साक्षात्कार, भक्तों के सकट हरनार तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान के चार कल्याणक च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान से यह भूमि पावन बनी है। जिस भूमि को प्रभु का जन्म से लेकर केवलज्ञान तक होने का सौभाग्य मिला हो, उस स्थान का वर्णन किन शब्दों में किया जाय। कितनी ही महान भाग्य शाली आत्माओं ने प्रभु वाणी का यहाँ अमृतपान पिया होगा, ऐसी पवित्र पुण्य स्थली का कण-कण वन्दनीय है। पार्श्वनाथ भगवान ने यहीं पर जलती हुई आग से तडफते हुए नाग, नागिन को निकालकर मरणासन्न अवस्था मे परम नवकार महामत्र का पाठ सुनाया था। जिससे अगले भव मे धरणेन्द्र व पद्मावती हुए, जो प्रभु के शासन में शासनदेव व शासनदेवी बने, जिन्हे अधिष्ठायक व अधिष्ठात्री भी कहते हैं। वे आज भी जैन शासन की प्रभावना के कार्यों में साक्षात्कार हैं। इनके स्मरण मात्र से श्रद्धालु भक्त जनों की मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। प्रायः हर साधना में इनके नाम का स्मरण किया जाता है जिससे सारे कार्य निर्विघ्न सुख-शान्ति पूर्वक पूर्ण होतें हैं। आज भी जगह-जगह चमत्कारिक घटनाओं के घटने के वृत्तान्त भक्तजनों द्वारा अभिहित किये जाते हैं। ऐसे प्रकट प्रभावी शासनदेव व शासनदेवी भी इसी पावन भूमि मे हुए। ऐसी पावन भूमि का जितना वर्णन करें कम हैं। काशी-विश्वनाथ भगवान का विशाल मन्दिर यहाँ होने के कारण हिन्दुओ का भी यह बड़ा तीर्थ धाम है। एक समय यह नगरी निम्न चार भागो मे बसी हुई थी।

१ देव वाराणसी जहाँ विश्वनाथ का मन्दिर है।

२ विजय वाराणसी जहाँ भेलुपुर का मन्दिर है।

३. मदन वाराणसी जो आज मदनपुरा नाम से पहचानी जाती हैं।

४. राजधानी वाराणसी जहाँ मुसलमानों की अधिक बस्ती थी।

अन्य मन्दिर * इन मन्दिरों के अतिरिक्त १२ श्वेताम्बर व ११ दिगम्बर मन्दिर हैं। कुल २५ मन्दिर हैं।

कला और सौन्दर्य * यहाँ राजघाट व अन्य स्थानों पर खुदाई के समय जो पुरातत्व सामग्री प्राप्त हुई है वह स्थानीय कलाभवन में सुरक्षित हैं। इनमें पाषाण व धातु की अनेक कलात्मक प्राचीन जैन प्रतिमाएँ भी हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ का वाराणसी रेलवे स्टेशन ३ कि० मी० हैं, जहाँ से टैक्सी व ताँगों की सुविधा हैं। मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ * मन्दिर के निकट ही श्वेताम्बर व दिगम्बर धर्मशालाएँ हैं। जहाँ बिजली, पानी व बर्तनों की सुविधा है।

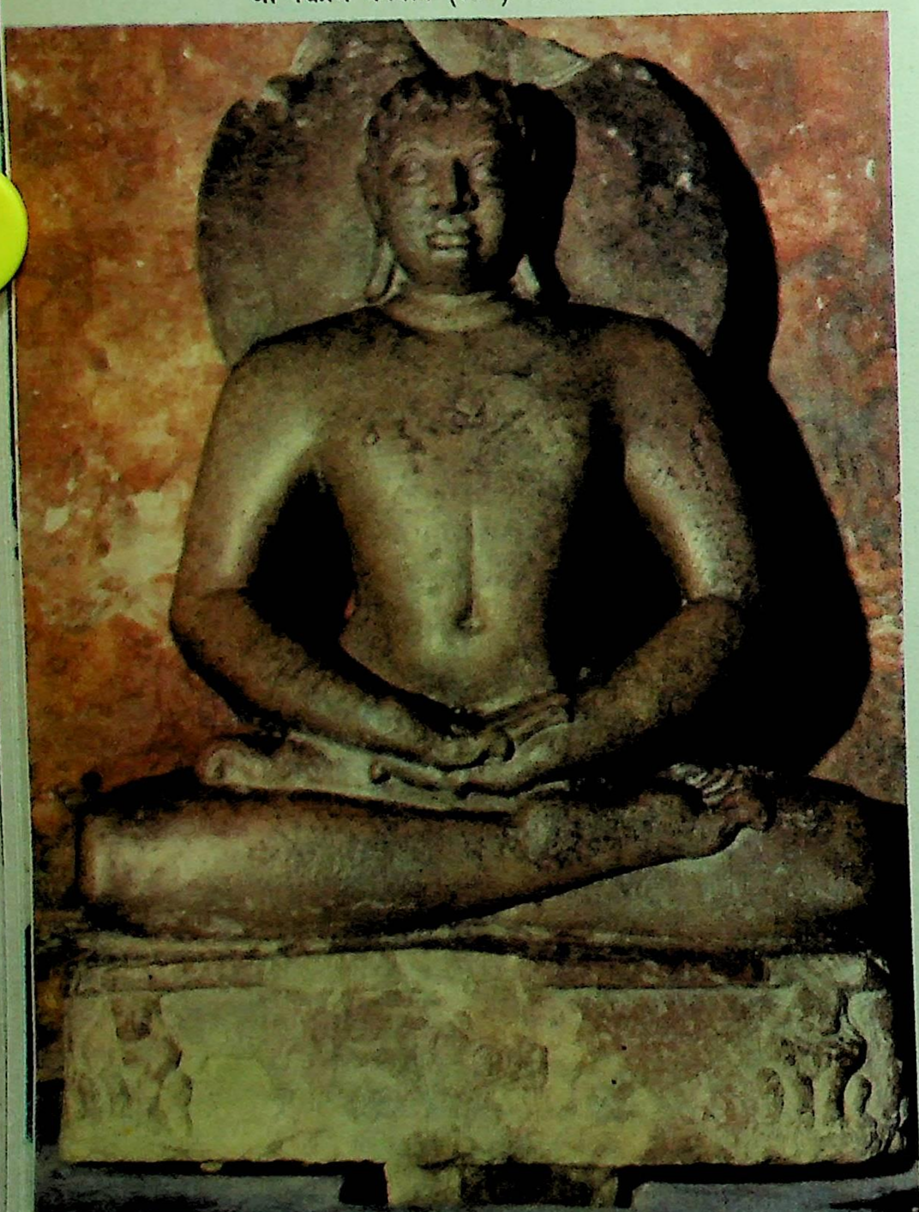
पेढ़ी * १. श्री जैन श्वेताम्बर तीर्थ सोसायटी, भेलुपुर। १. श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, भेलुपुर। डाक घर – वाराणसी, : जिला – वाराणसी : राज्य – उत्तर प्रदेश : तार घर – वाराणसी : टेलीफोन – पी० सी० ओ० वाराणसी।





श्री पार्श्वनाथ भगवान (दि०) भेलुपुर–बनारस

श्री पद्मप्रभ भगवान (दि०) पभोषा



श्री पभोषा तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री पद्मप्रभ भगवान, बादामी वर्ण, अर्द्ध पद्मासनस्थ लगभग ७५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ यमुना नदी के तट पर बसे छोटे से पभोषा गाँव में एक पहाड़ी पर।

प्राचीनता ✻ दिगम्बर मान्यतानुसार छठे तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ भगवान की दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक इस पावन भूमि में हुए हैं। किसी समय यह स्थल कौशाम्बी नगरी का एक उद्यान था।

ई० सं० पूर्व के शिलालेख यहाँ प्राप्त हुए हैं। प्रतिमा भी ई० पूर्व शताब्दी की मानी जाती है। कहा जाता है एक वक्त कौशाम्बी के पुजारी को स्वप्न में संकेत मिला कि पास के कुएँ में पद्मप्रभ भगवान की अतिशयकारी प्राचीन प्रतिमा है, इसे निकालकर उचित स्थान पर मन्दिर में विराजमान किया जाय। स्वप्न के आधार पर अनुसंधान करने से प्रतिमा प्राप्त हुई, जिसे इस मन्दिर में विराजमान करवाया गया जो आज भी मूलनायक रूप में विद्यमान है।

पहाड़ के एक हिस्से के गिर जाने से मन्दिर को क्षति पहुँची थी, लेकिन प्रतिमाको कोई क्षति नहीं पहुँची। वही प्राचीन अलौकिक प्रतिमा अभी भी विद्यमान हैं।

विशिष्टता ✻ दिगम्बर मान्यतानुसार श्री पद्मप्रभ भगवान नें यहाँ के उद्यान में दीक्षा ग्रहण करके तपश्चर्या करते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया था। अत: जिस भूमि में प्रभु ने दीक्षा ग्रहण करके वहीं तपश्चर्या करते हुए केवलज्ञान पाया हो उस पवित्र भूमि की महानता अवर्णनीय हैं।

सहायक : १. श्री ए. मूलचन्दजी खेतमलजी पारख (फलोदी–राज०) तिरची (तमिलनाडु) २. श्री पुखराजजी अमोलकचन्दजी मिघवी (मियाट–राज०) मद्रास–१२.

यह भी एक किंवदन्ति है कि द्वारका नगरी भस्म होने पर श्री कृष्ण व बलराम भ्रातागण इस उद्यान में आये थे। एक समय श्री कृष्ण पहाड़ पर इस उद्यान में पेड़ के नीचे विश्राम कर रहे थे। उस समय जरत्कुमार द्वारा चलाया गया बाण अचानक श्री कृष्ण के पैर में लगने के कारण श्री कृष्ण यहीं पर स्वर्ग सिधारे थे।

पभोषा अतिशय स्थल भी माना जाता है। प्रभु-प्रतिमा का वर्ण सुबह से शाम तक बदलता रहता है। कभी-कभी रात में केशरिया बून्दों की वर्षा होती है। कहा जाता है चैत्री पूर्णिमा व कार्तिक शुक्ला १३ को ज्यादा मात्रा में केशरी वर्षा होती है।

प्रतिवर्ष चैत्री पूर्णिमा को मेला भरता है तब जगह-जगह से यात्री इकट्ठे होकर प्रभु-भक्ति का लाभ लेते हैं।

अन्य मन्दिर ❊ वर्तमान में यहाँ इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं हैं।

कला और सौन्दर्य ❊ श्री पद्मप्रभ भगवान के प्रतिमा की कला का जितना वर्णन करें कम है। यहाँ आसपास में जैन पुरातत्व संबंधी सामग्री व मूर्तियाँ मिलती रहती हैं। यहाँ की प्राचीन प्रतिमाएँ प्रायः शुंग और मित्तवंशी राजाओं के काल की मालूम पड़ती हैं।

मार्ग दर्शन ❊ नजदीक का रेलवे स्टेशन अलाहाबाद ८० कि० मी० है, जहाँ से मनोरी, मंजनपुर टेवा होते हुए बस व जीप द्वारा आया जा सकता है। कौशाम्बी से पाली होते हुए ८ कि० मी० है। लेकिन रास्ता कच्चा रहने के कारण कार व बस नहीं आ सकतीं।

कौशाम्बी से नावों द्वारा यमुना नदी पार करके आया जा सकता है। जो कि लगभग १० कि० मी० का ही रास्ता है। यहाँ छोटी सी पहाड़ी चढ़ने के लिए १७५ सीढ़ियाँ बनी हुई हैं।

पेढ़ी ❊ श्री पभोषा दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र। पभोषा गाँव। डाक घर – गुराजू : तहसील – मंजनपुर : जिला – अलाहाबाद : प्रान्त – उत्तर प्रदेश : तार घर – पी० सी० ओ० मंजनपुर।



श्री पद्मप्रभ भगवान (दि०) मन्दिर – पभोषा





श्री पद्मप्रभ भगवान (श्वे०) कौशाम्बी

श्री कौशाम्बी तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री पद्मप्रभ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ३० सें० मी०। (श्वे० मन्दिर)।

श्री पद्मप्रभ भगवान (दि० मन्दिर)।

तीर्थ स्थल ✻ यमुना-तट पर बसे गढ़वा कोशल इनाम गाँव से एक कि० मी० दूर।

प्राचीनता ✻ इस तीर्थ की प्राचीनता का इतिहास श्री पद्मप्रभ भगवान के समय से प्रारम्भ होता है।

श्री पद्मप्रभ भगवान का च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक होने का सौभाग्य इस पावन भूमि को प्राप्त हुआ। प्रभु के प्रथम समवसरण की रचना देवकुबेर द्वारा यहीं की गई। (दिगम्बर मान्यतानुसार प्रभु की दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक यहाँ की उपनगरी पभोषा के मनोहर उद्यान में हुआ माना जाता है।)

गंगा नदी में भारी बाढ़ आने के कारण जब हस्तिनापुर नगरी का प्रलय हुआ, उस समय राजा परीक्षित् के उत्तराधिकारियों ने कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाया था। वत्सदेश की राजधानी बनने का इसको सौभाग्य मिला था। आवश्यक सूत्र में कौशाम्बी नगरी यमुना नदी के किनारे रहने का उल्लेख है।

भगवान महावीर के समय यहाँ के राजा शतानिक थे। भगवान महावीर का यहाँ अनेकों बार पदार्पण हुआ था। प्रभु का समवसरण भी यहाँ रचा गया था।

आर्य सुहस्तिसूरीश्वरजी और आर्य महागिरिसूरीश्वरजी आदि अनेकों प्रकाण्ड आचार्यगण इस तीर्थ में दर्शनार्थ पधारे।

पाँचवीं सदी में चीनी यात्री फाहियान ने भी अपनी नोंध में इस नगरी का वर्णन किया है। उस समय इस नगर की जाहोजलाली कम होकर ध्वस्त हुआ बताया है।

श्री हेमचन्द्राचार्य ने "त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित" में यहाँ का वर्णन किया है।

चौदहवीं शताब्दी में आचार्य श्री जिनप्रभसूरीश्वरजी द्वारा रचित "विविध तीर्थ कल्प" में इस तीर्थ का उल्लेख है।

वि० स० १५५६ मे पं० हंससोम विजयजी यहाँ आये। तब यहाँ के मन्दिर मे ६४ प्रतिमाएँ रहने का उल्लेख है।

सं० १६६१ में विजयसागरजी व सं० १६६४ में श्री जयविजयगणी आये। तब दो मन्दिर रहने का उल्लेख है।

सं० १७४७ में पं० सौभाग्यविजयजी ने यहाँ एक जीर्ण मन्दिर रहने का उल्लेख किया है। यहाँ भूगर्भ से अनेकों प्राचीन अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो प्रयाग म्यूजियम में रखे हुए हैं।

किसी समय की विराट नगरी कालक्रम से आज एक छोटे

सहायक : १. मेसर्स. प्रशान्त चन्द बोथरा एण्ड सन, कलकत्ता २. मेसर्स. रिपब्लिक ट्रेडिंग कोरपोरेशन, मद्रास-१

से गाँव में परिवर्तित हो गई। राजा शतानिक की महारानी सती मृगावती द्वारा बनाया हुआ किला ध्वंस पड़ा हुआ है, जो प्राचीनता की याद दिलाता है। कहा जाता है इस किले का घेराव चार मील का था व ३२ दरवाजे थे, जिसकी ३०-३५ फुट ऊँची दीवारें ध्वस्त हुई दिखाई देती हैं।

विशिष्टता * श्री पद्मप्रभ भगवान का च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक होने का सौभाग्य इस पवित्र भूमि को मिला है। अतः यहाँ की मुख्य विशेषता है।

भगवान महावीर का भी इस नगरी के साथ घनिष्ट संबंध रहा है। भगवान महावीर केवलज्ञान प्राप्ति के पूर्व भी इस नगरी में विचरे हैं।

यहाँ का राजा शतानीक प्रभु का परम भक्त था। शतानीक की रानी सती मृगावती (वैशाली के राजा चेटक की पुत्री) ने अपने पुत्र उदयन को राज्यभार संभलाकर प्रभुवीर के पास दीक्षा ग्रहण की थी।

प्रभुवीर ने एक बार कठिन अभिग्रह लिया था कि वे उसी के हाथों आहार लेंगे जिसका सिर मुँड़ा हुआ हो, पैरों में बेड़ियाँ हों, एक पैर दरवाजे के बाहर व एक पैर अन्दर हो, आँखों में अश्रु-धारा बह रही हो, राजकुमारी हो व छाजड़े में बाकले लिये बहराने के लिए खड़ी हो। इस अभिग्रह के पूर्ण हेतु प्रभु विचरते रहे। प्रभु द्वारा आहार न लेने के कारण भक्तजन अति व्याकुल थे। सती चन्दनबाला का भाग्योदय होने वाला था। उसे सेठानी द्वारा कठिन दण्ड देकर खाने के लिए बाकले दिये गये। किसी महात्मा को आहार देकर खाने के लिए उक्त प्रकार खड़ी राह देख रही थी कि प्रभु को आते देख फूली न समाई। प्रभु की दृष्टि भी इस अबला पर पड़ी, परंतु अश्रु-धारा न रहने के कारण प्रभु का अभिग्रह पूर्ण न हो रहा था। अतः ज्यों ही जाने लगे, सती चन्दनबाला की आँखों से अश्रु-धारा बहने लगी। प्रभु ने अपना अभिग्रह पूर्ण हुआ देखकर आहार ग्रहण किया। प्रभु का अभिग्रह पूर्ण होते ही देव-दुंदुभियाँ बजने लगीं व इन्द्रादि देवों ने रत्नों व पुष्पों की वर्षा की। सती की बेड़ियाँ टूटीं, सिर पर बालों के साथ देव मुकुट धारण हुआ। शरीर नाना प्रकार के आभूषणों से सजा पाया।

सती चन्दन बाला ने भी प्रभु के पास यहीं दीक्षा ग्रहण की व प्रभु की प्रथम शिष्या बनने का सौभाग्य उसे प्राप्त हुआ। प्रभु के केवलज्ञान पश्चात यहाँ भी समवसरण रचे गये। मुनि श्री कपिल केवली की भी यह जन्म भूमि है। इस प्रकार इस पावन भूमि का इतिहास अत्यन्त ही गौरवशाली है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इन मन्दिरों के अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है। कलकत्ता निवासी उदार, धर्मनिष्ठ श्री कन्यालालजी वैद द्वारा एक विशाल धर्मशाला के साथ श्वे० मन्दिर के निर्माण का कार्य चालू है।

कला और सौन्दर्य * यहाँ प्राचीन नगर के भग्नावशेष मीलों में बिखरे पड़े हैं। एक प्राचीन स्तम्भ है, जिसे श्री संप्रतिराजा द्वारा निर्मित बताया जाता है।

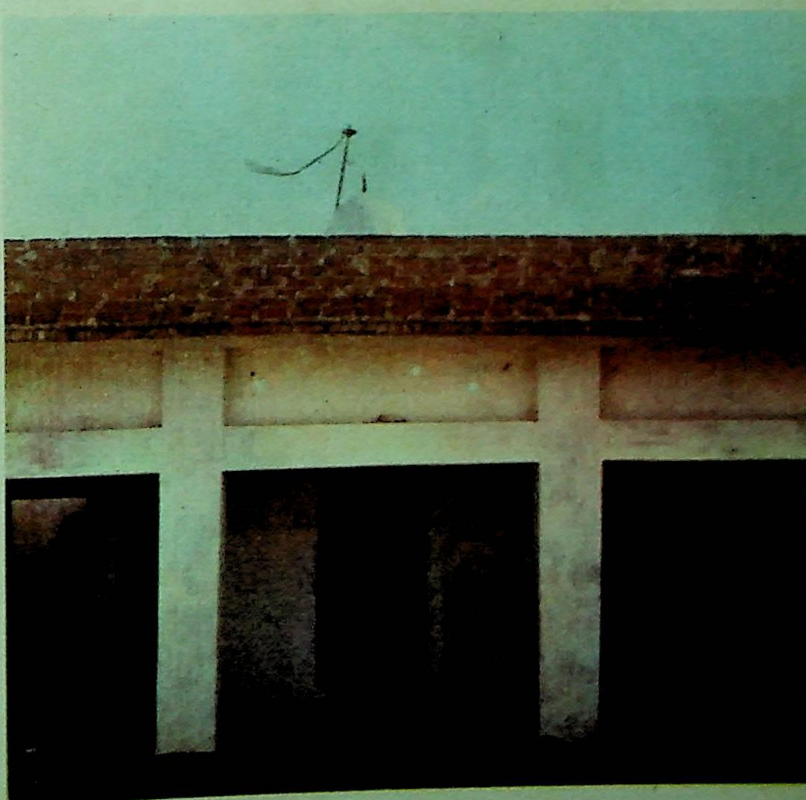
मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन इलाहाबाद ६४ कि० मी० है, जहाँ पर बस व टैक्सी की सुविधा उपलब्ध है। इलाहाबाद से सड़क मार्ग द्वारा सरायअकिल ४२ कि० मी० है। वहाँ से कौशाम्बी गेस्ट हाउस १८ कि० मी० व वहाँ से ४ कि० मी० यह स्थान है। सरायअकिल से रास्ता कच्चा है। लेकिन बस व कार मन्दिर तक जा सकती हैं।

सुविधाएं * ठहरने के लिए श्वेताम्बर व दिगम्बर धर्मशालाएँ हैं, जहाँ पानी की सुविधा है। एक और विशाल धर्मशाला के निर्माण का कार्य चालू है।

पेढ़ी * १. श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर, कौशाम्बी। डाक घर – गढ़वा : तहसील – मंजनपुर : जिला – इलाहाबाद : प्रान्त – उत्तर प्रदेश : तार घर – गढ़वा :

२. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कौशाम्बी : डाक घर – गढ़वा।

श्री पद्मप्रभु श्वे० मन्दिर-कौशाम्बी

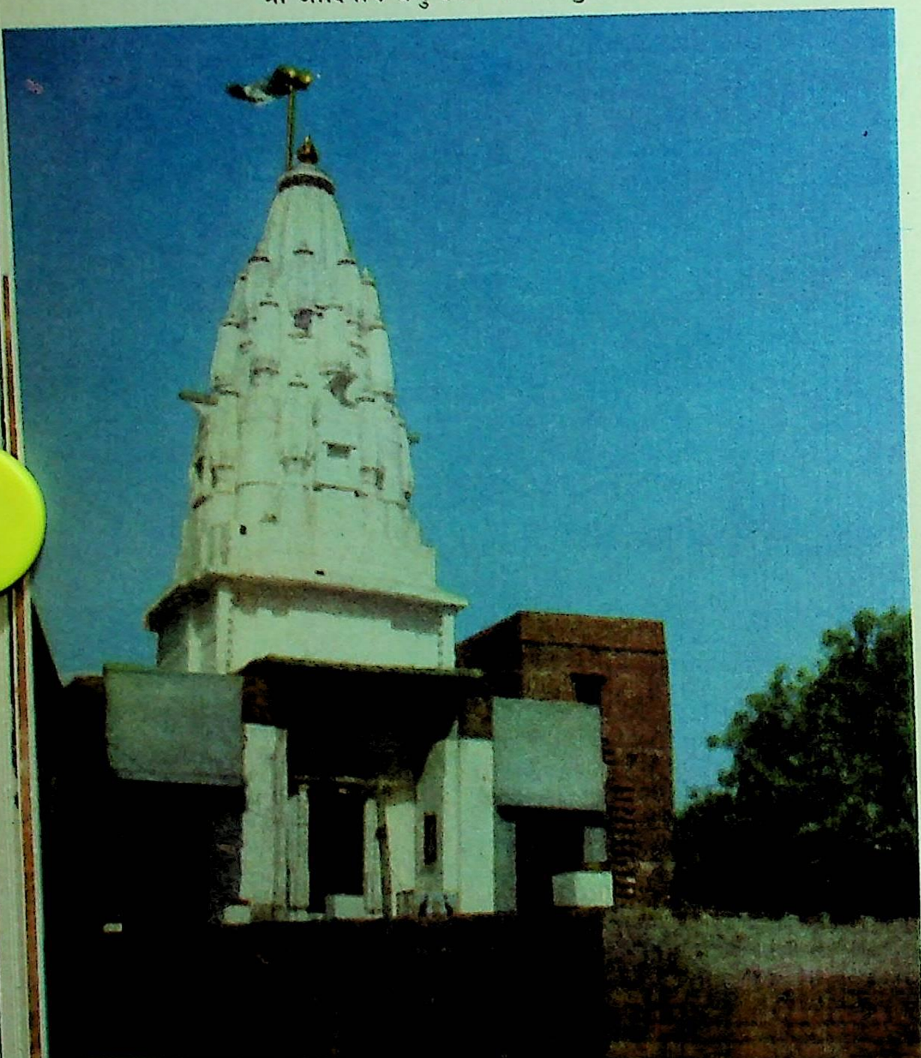


श्री पुरिमताल तीर्थ

तीर्थाधिराज ❋ श्री आदीश्वर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ६० सें० मी०। (श्वे०) मन्दिर)।
श्री आदीश्वर भगवान, कायोत्सर्ग मुद्रा में। (दि० मन्दिर)।

तीर्थ स्थल ❋ इलाहाबाद शहर में।

श्री आदिनाथ प्रभु श्वे० मन्दिर–पुरिमताल



प्राचीनता ❋ इस तीर्थ का इतिहास युगादिदेव श्री आदिनाथ भगवान से प्रारम्भ होता है। यह कौशल जनपद की अयोध्या नगरी का एक उपनगर था। पुराने जमाने में यह स्थल पुरिमताल व प्रयाग नाम से मशहूर था। प्राचीन ग्रन्थों में इस नगरी का पुरिमतालपाड़ा के नाम से भी उल्लेख है।

प्रथम तीर्थंकर श्री आदीश्वर भगवान ने यहाँ शकटमुख नामक उद्यान में वटवृक्ष के नीचे शुक्लध्यान में रहते हुए फाल्गुन कृष्णा ग्यारस के शुभ दिन उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में प्रातः केवलज्ञान प्राप्त किया था।

(दि० मान्यतानुसार प्रभु का दीक्षा-कल्याणक भी इसी नगरी में हुआ।)

प्रभु ने जिस वटवृक्ष के नीचे केवलज्ञान पाया उसे अक्षयवटवृक्ष कहने लगे व उस समय से नगरी का नाम प्रयाग पड़ा।

इन्द्रादि देवों ने केवलज्ञान-कल्याणक अति ही उल्लासपूर्वक मनाकर रत्नत्रयी सुन्दर समवसरण की रचना की।

अद्वितीय रत्नों से जड़ित स्वर्ण-आभूषणों से सुसज्जित गज पर आरूढ़ प्रभुकी मातु श्री मरूदेवी माता ने अतिशययुक्त तीर्थंकरों के समवसरण वैभव को देखा। आनन्दाश्रु के प्रबल प्रवाह से माता की आँखों में छाये हुए जाले साफ हो गये। तत्काल ही समकाल में अपूर्वकरण के क्रम से वे क्षपकश्रेणी में आरूढ़ हुई, घातिया कर्मों का नाश होने से उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ। वे अन्तःकृत केवली हुई। उसी समय उनकी आयु आदि अघाति कर्म भी नाश हो गये। उनकी आत्मा हाथी के हौदे में ही देह त्याग कर मोक्ष सिधारी।

उस वक्त प्रभु के पौत्र श्री ऋषभसेन यहाँ के राजा थे व उक्त अवसर पर अनेकों राजाओं के साथ दर्शनार्थ आये व प्रभावित होकर दीक्षा अंगीकार की जो बाद में प्रभु के प्रथम गणधर बने। (दि० मान्यतानुसार श्री ऋषभसेन को प्रभु का पुत्र बताया है)।

श्री आदीश्वर भगवान के बाद अन्य तीर्थंकरों का भी यहाँ पदार्पण हुआ। चरम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान भी यहाँ शकटमुख उद्यान में ध्यानावस्थित रहे थे। उस समय यहाँ के राजा महाबल थे। प्रभु वीर का भी यहाँ समवसरण रचा गया था।

जिस वटवृक्ष के नीचे श्री आदीश्वर भगवान को केवलज्ञान हुआ था, वहाँ पर प्रभु की चरण-पादुकाओं के रहने का व वि० सं० १५५६ में पं० हँससोमविजयजी द्वारा दर्शनार्थ वहाँ जाने का तीर्थ-माला में उल्लेख है।

चौदहवीं सदी में आचार्य श्री जिनप्रभसूरीश्वरजी द्वारा रचित "विविध तीर्थ कल्प" में यहाँ श्री शीतलनाथ भगवान का मन्दिर रहने का भी उल्लेख है।

बादशाह अकबर के समय इस नगरी का नाम इलाहाबाद में परिवर्तित हुआ होगा।

आज यहाँ एक श्वेताम्बर व एक दिगम्बर मन्दिर हैं। त्रिवेणी संगम के निकट किले में एक वटवृक्ष है। कहा जाता है कि यही उस प्राचीन वटवृक्ष का अंश है, जहाँ प्रभु ने केवलज्ञान प्राप्त किया था। इस वृक्ष के नीचे प्रभु की चरण-पादुकाएँ स्थापित थीं, जो अब नहीं हैं।

विशिष्टता ❋ इस तीर्थ की विशेषता का तो जितना वर्णन करें कम है।

हमारे युगादिदेव प्रथम तीर्थंकर श्री आदीश्वर भगवान को केवलज्ञान यहीं प्राप्त हुआ। अतः इस युग में केवलज्ञानोत्पत्ति का प्रथम स्थान होने का सौभाग्य इसी पावन

भूमि को प्राप्त हुआ। इन्द्रादि देवों द्वारा प्रथम समवसरण की रचना होने का सौभाग्य भी इसी पुण्यस्थली को मिला।

माता मरूदेवी भी इसी स्थान पर केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष सिधारीं।

इस अवसर्पिणीकाल में श्री मरूदेवी माता ने इसी पवित्र भूमि में मुक्ति पाकर सर्व प्रथम मोक्ष द्वार खोला।

श्री आदीश्वर भगवान ने प्रथम देशनां, चतुर्विध संघ की स्थापना, गणधरपद प्रदान, द्वादशाँगी रचना, जैनधर्म सिद्धान्त, नियम-संयम, व्रत-महाव्रत आदि का मंगलाचरण इसी परम पवित्र भूमि में किया। इस प्रकार तीर्थ की स्थापना होने पर प्रभु के पास रहने वाले "गोमुख" नाम के यक्ष अधिष्ठायक व प्रतिचक्रा नाम की देवी शासनदेवी बनी, जिसे चक्रेश्वरी देवी कहते हैं।

श्री आदीश्वर भगवान के पश्चात् कई तीर्थंकरों का यहाँ पदार्पण हुआ। चरम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान का भी यहाँ समवसरण रचा गया था। भारत की पवित्र नदियों में गंगा, यमुना व सरस्वती का यहीं पर संगम होता है, जिसे त्रिवेणी संगम कहते हैं। इस तीर्थ-स्थल का कण-कण वन्दनीय है।

महाभारत व रामायण में भी इस प्रयाग नगरी का वर्णन आता है। भरद्वाज मुनि का यहाँ आश्रम था। मय नाम के शिल्पी ने पाण्डवों को मारने के लिये लाक्ष-गृह का निर्माण यहीं किया था।

हिन्दू लोग भी इसे तीर्थ-धाम मानते हैं। बारह वर्षों में एक बार कुंभ मेला भरता है। उस अवसर पर लाखों यात्री-गण यहाँ त्रिवेणी मे नहाकर अपने को कृतार्थ मानते हैं।

अन्य मन्दिर * इनके अतिरिक्त दिगम्बर समाज का एक पंचायती मन्दिर है।

कला और सौन्दर्य * श्वेताम्बर व दिगम्बर मन्दिरों में कलात्मक प्राचीन प्रतिमाओं आदि के दर्शन होते हैं। यहाँ नगरपालिका द्वारा संचालित म्यूजियम है, जिसमें जैन पुरातन कलाकृतियों का सुन्दर संग्रह है जो अत्यन्त दर्शनीय है।

यहाँ के किले में एक स्तम्भ है जिसका निर्माण सम्राट संप्रति ने करवाया था जिसपर प्रियदर्शी (राजा संप्रति की उपाधि) व उनकी रानी आदि के लेख उत्कीर्ण हैं। इसे सम्राट अशोक द्वारा निर्मित भी बताया जाता है।

मार्ग दर्शन * यहाँ के इलाहाबाद रेलवे स्टेशन से श्वेताम्बर व दिगम्बर मन्दिर ३.५ कि० मी० दूर है, जहाँ से टैक्सी व ताँगों की सुविधा है। मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए श्वेताम्बर व दिगम्बर धर्मशालाएँ मन्दिरों के पास ही हैं, जहाँ पानी व बिजली की सुविधा है।

पेढ़ी * १. श्री ऋषभदेवस्वामी जैन श्वेताम्बर मन्दिर १२०, बाई का बाग, ग्वालियर स्टेट मन्दिर के सामने।

डाक घर – इलाहाबाद : प्रान्त – उत्तर प्रदेश : तार घर – इलाहाबाद : टेलीफोन – पी० सी० ओ० इलाहाबाद,

२. श्री दिगम्बर जैन पंचायत बड़ा मन्दिर : ५६/६२, चान्दचन्द मोहल्ला। डाक घर – इलाहाबाद : तार घर – इलाहाबाद : टेलीफोन – पी० सी० ओ० इलाहाबाद : प्रान्त – उत्तर प्रदेश।

श्री आदिनाथ भगवान (श्वे०)–पुरिमताल



सहायक : बगड़ी (राज०) निवासी वी. डी. संपतराजजी सेठीया की सुपुत्री स्व० श्री राजेश्वरी बाई. तिरुवन्नामलै (तमिलनाडु)।

श्री रत्नपुरी तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ १. श्री धर्मनाथ भगवान, चरणपादुकाएँ, श्याम वर्ण, (श्वे० मन्दिर)।

२. श्री धर्मनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ६० सें० मी० (दि० मन्दिर)।

तीर्थ स्थल ✻ रोनाही गाँव में।

प्राचीनता ✻ इस तीर्थ की प्राचीनता श्री धर्मनाथ भगवान से प्रारम्भ होती है। प्रभु के च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक यहाँ हुए। आज का रोनाही गाँव उस समय रत्नपुर नाम की विराट नगरी था।

वैशाख शुक्ला सप्तमी के शुभ रात्रि को पुष्य नक्षत्र में श्री दृढ़रथ का जीव यहाँ के राजा भानु की रानी सुव्रता की कुक्षी में प्रविष्ट हुआ। उसी क्षण माता ने तीर्थंकर-जन्म-सूचक महा स्वप्न देखे। इन्द्रादि देवों नें प्रभु का च्यवन कल्याणक मनाया। गर्भकाल पूर्ण होने पर माघ शुक्ला तीज पुष्य नक्षत्र में वज्र लक्षणयुक्त पुत्र का जन्म हुआ। प्रभु गर्भ में थे तब रानी को धर्म करने का दोहला हुआ था। इसलिए प्रभु का नाम धर्मनाथ रखा। इन्द्रादि देवों व जन साधारण द्वारा जन्म कल्याणक उल्लासपूर्वक मनाया गया। (दिगम्बर मान्यतानुसार जन्म माघ शुक्ला तेरस को हुआ माना जाता है।)

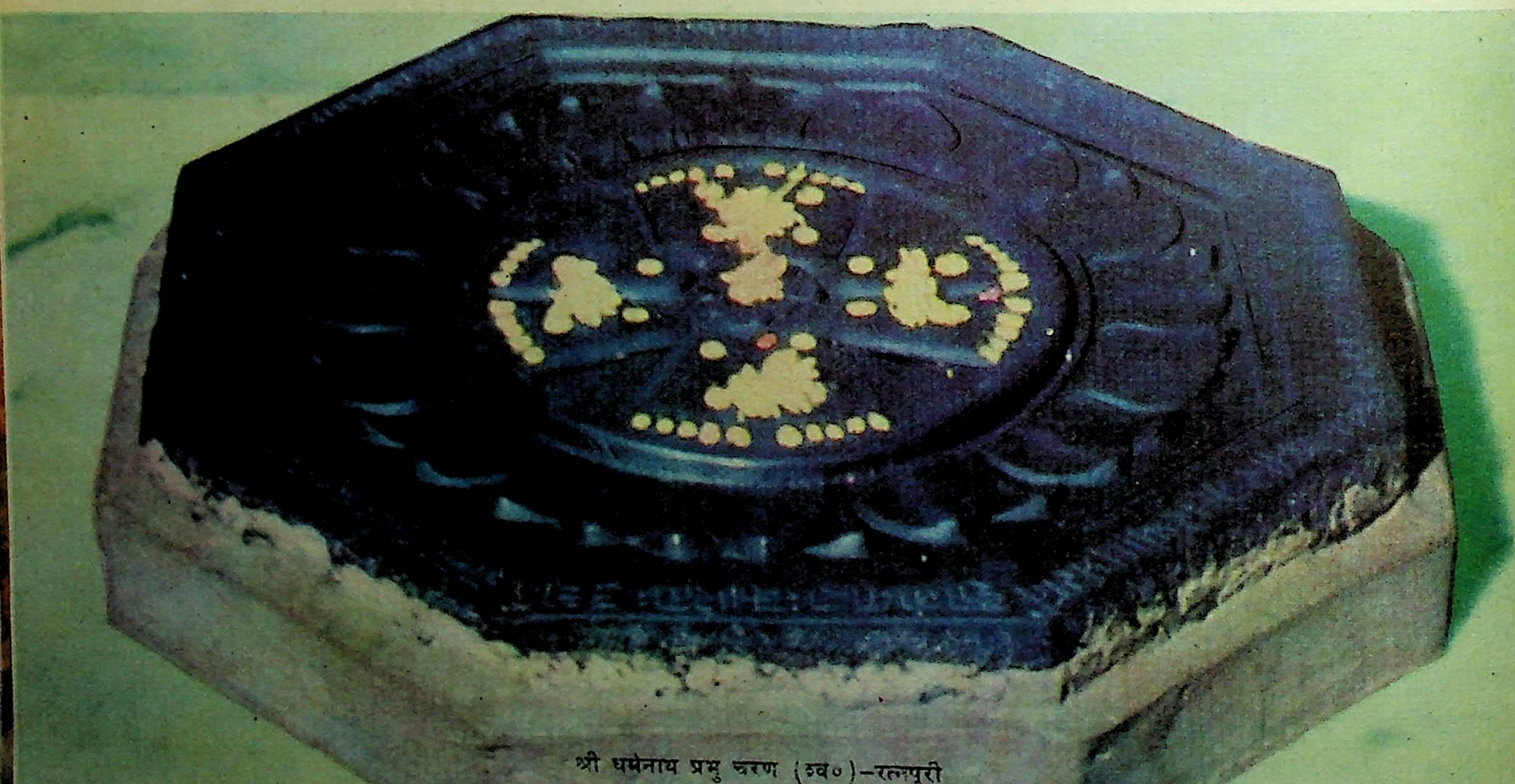
युवावस्था पाने पर पाणिग्रहण किया व पाँच हजार वर्ष राज्य करके एक दिन दीक्षा लेने का निर्णय लिया। प्रभु ने वर्षीदान देकर प्रकांचन उद्यान में जाकर एक हजार राजाओं के साथ माघ शुक्ला तेरस के दिन पुष्य नक्षत्र में दीक्षा ग्रहण की। विहार करते हुए दो वर्ष पश्चात पुनः उसी उद्यान में पधारे। दधिपर्ण वृक्ष के नीचे ध्यानावस्था में पौष शुक्ला पूर्णीमा के दिन पुष्य नक्षत्र में प्रभु को केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि धर्मनाथ भगवान की कल्याणक भूमि होने के कारण प्राचीन काल से यहाँ अनेकों मन्दिर बने होंगे व कालक्रम से अनेकों बार उत्थान-पतन हुआ होगा। वि० की चौदहवीं सदी में आचार्य श्री जिनप्रभसूरीश्वरजी ने 'विविध तीर्थ' कल्प में इस तीर्थ का रत्नपुर नाम से उल्लेख किया है। आज श्वेताम्बर व दिगम्बर समाज के दो-दो मन्दिर नजर आते हैं। मन्दिर प्राचीन हैं।

विशिष्टता ✻ श्री धर्मनाथ भगवान का च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक होने का सौभाग्य इस पावन भूमि को प्राप्त हुआ है। अतः इस पुण्य भूमि का कण-कण पवित्र है।

यहाँ के ग्रामीण लोग भगवान को धर्मराज नाम से पुकारते हैं व अभिषेक करते हैं, जिससे उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं—ऐसा अभिहित है।

अन्य मन्दिर ✻ इनके अतिरिक्त एक श्वेताम्बर व एक दिगम्बर मन्दिर हैं।



श्री धर्मनाथ प्रभु चरण (श्वे०)—रत्नपुरी



श्री धर्मनाथ भगवान (श्वे०) मन्दिर रत्नपुरी

कला और सौन्दर्य ⁕ आज यहाँ कहीं प्राचीन कला के नमूने नज़र नहीं आते। हो सकता है जीर्णोद्धार के समय परिवर्तित किये गये हों।

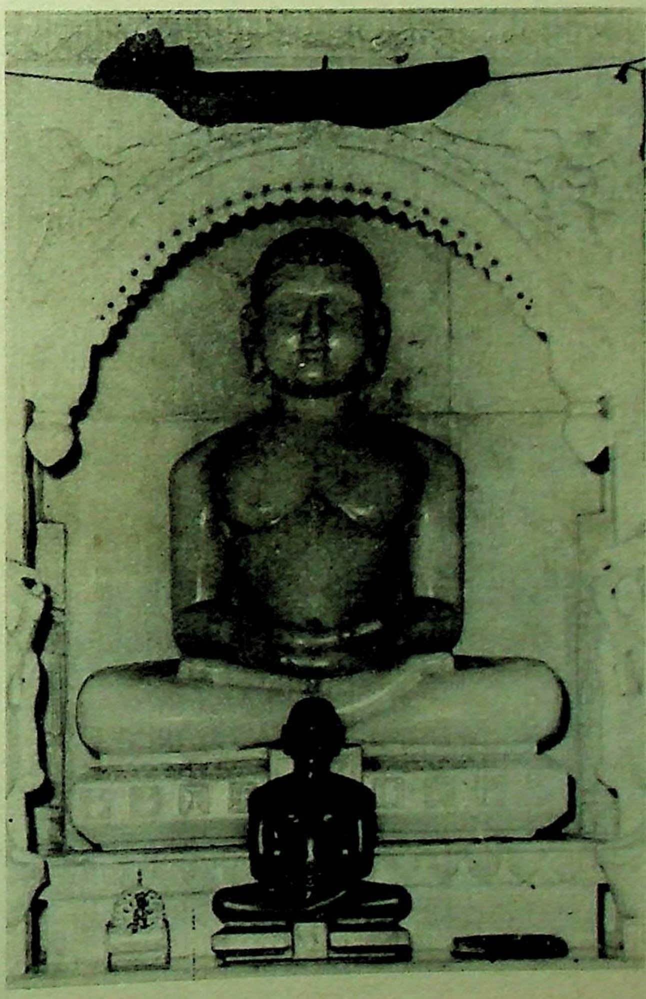
मार्ग दर्शन ⁕ नजदीक का रेलवे स्टेशन सोहावल लगभग २ कि० मी० है, जहाँ पर रिक्शों की सवारी का साधन है। अयोध्या से बाराबंकी मार्ग पर यह स्थल २४ कि० मी० है। अयोध्या से बस की सुविधा है। सोहावल से कच्ची सड़क है। लेकिन बस व कार मन्दिर तक जा सकती हैं।

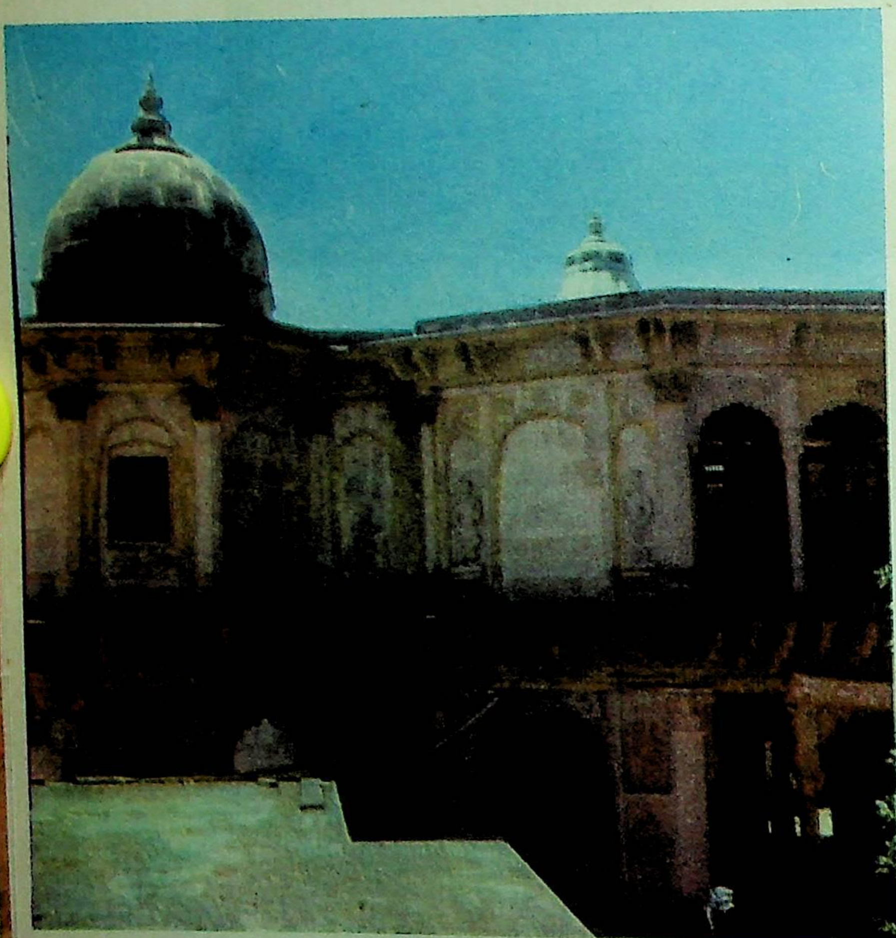
सुविधाएँ ⁕ ठहरने के लिए मन्दिरों के निकट ही श्वेताम्बर, दिगम्बर धर्मशालाएँ हैं, जहाँ पानी, बिजली की सुविधा है।

पेढ़ी ⁕ १. श्री जैन श्वेताम्बर रत्नपुरी तीर्थ पेढ़ी। डाक घर – रोनाही : स्टेशन – सोहावल : जिला – फैजाबाद, : प्रान्त – उत्तर प्रदेश : तार घर – रोनाही : टेलीफोन – पी० सी० ओ० फैजाबाद।

२. श्री जैन दिगम्बर रत्नपुरी तीर्थ पेढ़ी : डाक घर – रोनाही।

श्री धरमनाथ भगवान (दि०) - रत्नपुरी





श्री अजितनाथ (श्वे०) मन्दिर अयोध्या

श्री अयोध्या तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री अजितनाथ भगवान, ताम्र वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ३० सें० मी० (श्वे० मन्दिर)।

श्री आदीश्वर भगवान, कायोत्सर्ग मुद्रा में, श्वेत वर्ण, लगभग ८८५ सें० मी० (दि० मन्दिर)।

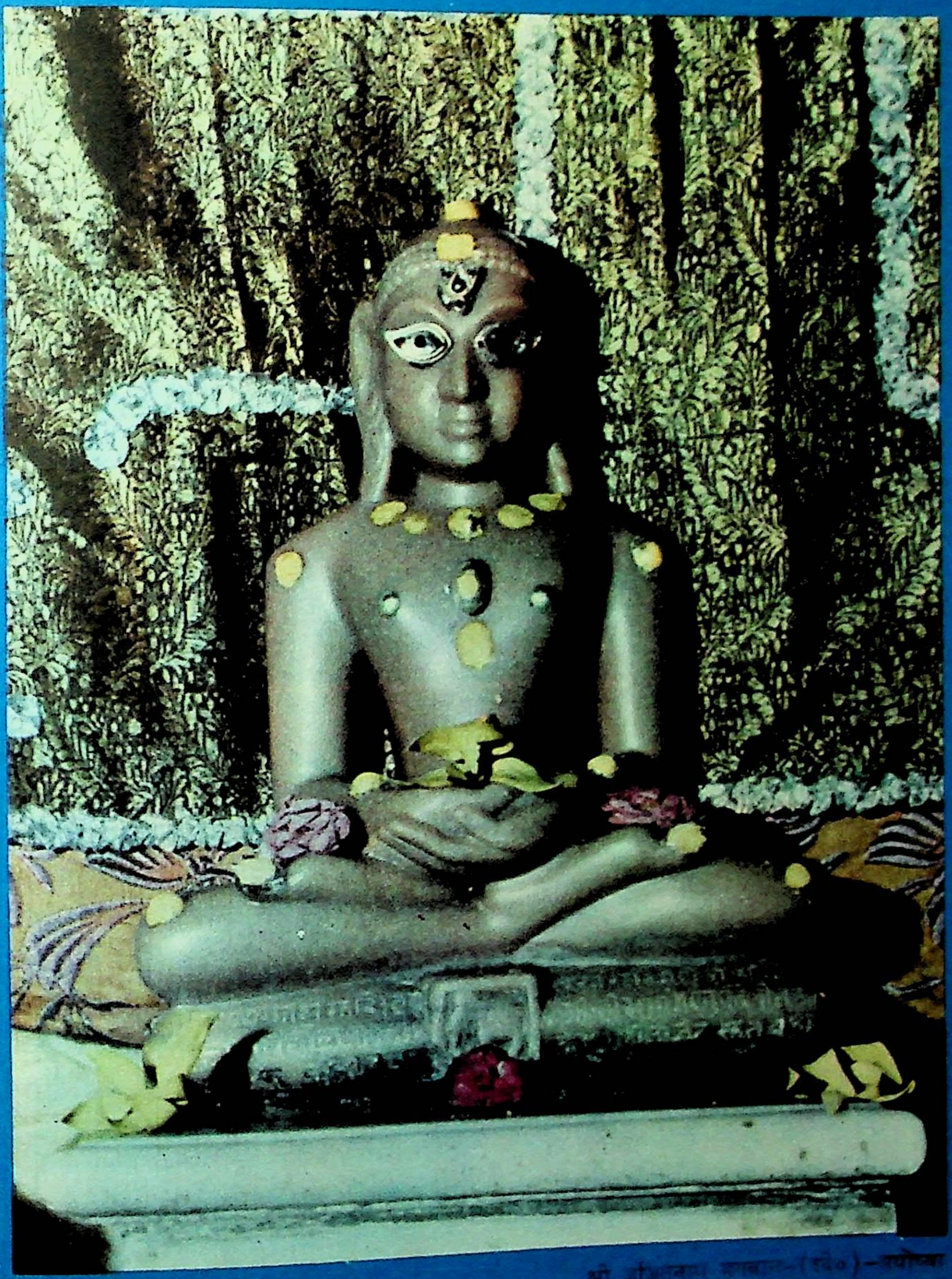
तीर्थ स्थल * सरयू व घाघरा नदी के तट पर बसे अयोध्या शहर के कटरे मोहल्ले में श्वेताम्बर मन्दिर व रायगंज मोहल्ले में दि० मन्दिर।

प्राचीनता * इस नगरी के प्राचीन नाम ईक्ष्वाकुभूमि, कोशल, कोशला, विनीता, अयोध्या, अवध्या, रामपुरी, साकेतपुरी आदि शास्त्रों में बताये गये हैं।

तीसरे आरे के अंतिम काल में यहाँ विमलवाहन आदि ७ कुलकर हुए, जिनमें अन्तिमकुलकर श्री नाभिराज हुए। (दिगम्बर मान्यतानुसार नाभिराज चौदहवें कुलकर हुए, इन्हें मनु नाभिराज बताया है)।

नाभिराज की पत्नी का नाम मरुदेवी था। उस समय युगल जोड़ों का ही जन्म होता था। आपस में एक ही साथ रहकर एक ही साथ मरते थे। उस समय "हाकार", "माकार" व "धिक्कार" का दण्डविधान चालू था।

मरुदेवी माता ने आषाढ़ कृष्णा चतुर्थी के दिन उत्तराषाढ़ा नक्षत्र चन्द्रयोग में चौदह महा-स्वप्न देखे (दि० मान्यतानुसार सोलह स्वप्न)। उसी क्षण वज्रनाभ का जीव बारह भव पूर्ण करके मरुदेवी माता की कुक्षी में प्रविष्ट हुआ। गर्भकाल पूर्ण होने पर चैत्र कृष्णा अष्टमी के दिन उत्तराषाढ़ा नक्षत्र चन्द्रयोग में ऋषभचिह्नयुक्त पुत्र का जन्म हुआ। प्रभु का नाम ऋषभ रखा गया। प्रभु के साथ जन्मी कन्या का नाम सुमंगला रखा गया। इन्द्र-इन्द्राणियों ने प्रभु का जन्म कल्याणक मनाया। भगवान की आयु एक वर्ष होने



श्री अभिनन्दन भगवान–(१८०)–अयोध्या

पर सौधर्मेन्द्र दर्शनार्थ आये। तब साथ मे इक्षुयष्टि (गन्ना) लेकर आये थे। प्रभु ने गन्ने की तरफ हाथ बढ़ाया। तभी से "इक्ष्वाकु" वंश की स्थापना हुई मानी जाती है। यह भी कहा जाता है कि प्रभु ने इक्षुरस से पारणा किया। उस के बाद उनके वंशज इक्षुवंशी कहलाये।

नाभिराज कुलकर के समय कोई युगल अपनी युगल संतान को एक ताड़ वृक्ष के नीचे रखकर क्रीड़ाग्रह में गया। हवा के झोंके से एक ताड़फल बालक के मस्तक पर गिरने से बालक का देहान्त हो गया। बालिका अकेली रह गई! माता पिता के देहान्त के बाद बालिका अकेली घूमने लगी। उस समय युगल जोड़े एक ही साथ जन्मते व मरते थे। इसलिये उस बालिका को अकेली देख सबको आश्चर्य हुआ व नाभिराज के पास ले गये। नाभिराज ने कहा कि यह ऋषभ की पत्नी बनेगी। उसका नाम सुनन्दा रखा गया। इस प्रकार ऋषभ-देव भगवान सुमंगला व सुनन्दा के साथ बालक्रीड़ा करते हुए यौवन को प्राप्त हुए।

सौधर्मेन्द्र ने प्रभु से लोक व्यवहार प्रारम्भ करने के लिए सुमंगला व सुनन्दा से विवाह करने का आग्रह किया। प्रभु ने सहमति देकर सुमंगला व सुनन्दा से शादी करके शादी की प्रथा को प्रारम्भ किया।

कालक्रम के प्रभाव से युगलियों में क्रोधादि कषाय बढ़ने लगे। इसलिए "हाकार", "माकार" और "धिक्कार" की दण्ड नीति निरुपयोगी हो गई। आपस में झगड़ा बढ़ने लगा। सब लोग नाभिकुलकर के पास गये। ऋषभ को राजा बनाने का निर्णय लेकर राजा बनाया गया। इस प्रकार अवसर्पिणीकाल में ऋषभदेव ही सबसे प्रथम राजा हुए। प्रभु ने राज-विधान बनाया। राजनैतिक व्यवस्था के लिए पुर, ग्राम, खेट नगर आदि की व्यवस्था करके राष्ट्र को ५२ जनपदों में विभाजित किया। उस समय कल्प-वृक्षों का सर्वथा अभाव हो गया था। प्रभु ने यहीं पर सबसे पहले असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प व वाणिज्य इन छह कर्मों का ज्ञान समाज को दिया था। अलग-अलग जातियाँ व कुल बनाये। पुरुषों को ७२ कलाओं व स्त्रियो को ६४ कलाओं का ज्ञान करवाया। ब्राह्मी को अठारह लिपियों का व सुन्दरी को गणित का ज्ञान समझाया। इस प्रकार उस समय से व्यवहारिक प्रथा प्रारम्भ हुई।

वसन्त ऋतु में प्रभु को परिजनों के संग नंदनोद्यान में क्रीड़ा करते समय वैराग्य उत्पन्न हुआ। प्रभु ने अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत व अन्यान्य पुत्रों को राज्य भार संभलाया व वर्षीदान प्रारम्भ किया। प्रभु ने एक वर्ष में तीन सौ अठासी करोड़ अस्सी लाख स्वर्ण मुद्राएँ दान देकर चैत्र कृष्णा अष्टमी के दिन उत्तराढ़ा नक्षत्र मे दीक्षा अंगीकार की। प्रभु का दीक्षा-महोत्सव इन्द्रादि देवों व आम जनता ने अति उल्लास पूर्वक मनाया। प्रभु के साथ कच्छ महाकच्छ आदि राजाओं ने भी दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा के बाद प्रभु का अनेकों बार यहाँ पदार्पण हुआ व समवसरण भी रचा गया। (दिगम्बर मान्यतानुसार श्री ऋषभ देव भगवान का जन्म-कल्याणक चैत्र कृष्णा नवमी को उतराषाढा नक्षत्र में यहाँ हुआ माना जाता है व दीक्षा चैत्र कृष्णा नवमी को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पुरिमताल (प्रयाग) में हुई मानी जाती है।

इनके पश्चात श्री अजितनाथ भगवान, श्री अभिनन्दन भगवान, श्री सुमतिनाथ भगवान, श्री अनन्तनाथ भगवान के भी च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक भी यहाँ हुए।

भरत चक्रवर्ती द्वारा यहाँ चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ व स्तूप चारों दिशाओं में निर्मित करवाने का उल्लेख आता है। उसके पश्चात भी अनेकों मन्दिर बने होंगे। भगवान महावीर ने भी इस पावन भूमि में विहार किया था। चौदहवीं शताब्दी में आचार्य श्री जिनप्रभसूरीश्वरजी द्वारा रचित "विविध तीर्थ कल्प" में उक्त समय यहाँ घाघरा व सरयू नदी के तट पर "स्वर्गद्वार" रहने व उस स्थान पर जिन मन्दिर में रत्नों से निर्मित गोखलों में चक्रेश्वरी देवी व गोमुख यक्ष की प्रतिमाएँ रहने का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त यहाँ श्री नाभिराज मन्दिर, पार्श्व वाटिका एवं सीताकुण्ड आदि भी थे–ऐसा उल्लेख है।

बारहवीं सदी में यहाँ से तीन प्रतिमाएँ शेरीशा ले जाये जाने का उल्लेख है।

वर्तमान मे स्थित दिगम्बर व श्वेताम्बर जिनालयों में प्रतिमाएँ ग्यारहवीं सदी के बाद की नजर आती हैं। मन्दिरों का अनेकों बार जीर्णोद्धार हुआ प्रतीत होता है।

विशिष्टता * युगादिदेव श्री आदीश्वर भगवान का च्यवन, जन्म व दीक्षा एवं श्री अजितनाथ भगवान, श्री अभिनन्दन भगवान, श्री सुमतिनाथ भगवान व श्री अनन्तनाथ भगवान का च्यवन, जन्म व दीक्षा और केवलज्ञान कल्याणक होने का सौभाग्य इस पावन भूमि को मिला है।

सामाजिक, राजनैतिक, व व्यवहारिक प्रथा प्रारम्भ होने का व असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प व वाणिज्य का ज्ञान समाज को मिलना प्रारम्भ होने का अवसर भी इसी भूमि को प्राप्त हुआ।

भरत चक्रवर्ती ने यहीं रहकर संपूर्ण भारत खण्ड पर विजय प्राप्त करके सार्वभौम साम्राज्य की स्थापना की। साम्राज्य का केन्द्र अयोध्या बनाकर भरत-क्षेत्र के प्रथम चक्रवर्ती हुए। तब से हमारे देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

भगवान महावीर व गौतम बुद्ध का भी यहाँ पदार्पण हुआ था। भगवान महावीर ने यहाँ के राजा चिताल को दीक्षा दी थी।

श्री आदीश्वर भगवान (दि०) मन्दिर–अयोध्या



श्री बाहुबलजी, ब्राह्मी, सुन्दरी, राजा दशरथ, मर्यादा-पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजी, श्री महावीर भगवान के नवें गणधर श्री अचलभ्राता, विक्रम की तीसरी सदी में हुए आचार्य श्री पादलिप्तसूरीश्वरजी, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र आदि की भी यह जन्मभूमि है।

पानी में डूबती हुई अयोध्या को सती सीताजी ने अपने शील के प्रभाव से यहीं रहकर बचाया था।

अयोध्या का रामराज्य जन-प्रचलित है। रघुकुलपति श्री रामचन्द्रजी के राज्यकाल में जनता सुखी व समृद्धिशाली थी, जिसे आज भी लोग याद करते हैं।

इनके अतिरिक्त यहाँ अनेकों धर्मनिष्ठ राजा, मंत्री व महात्मा हुए, जिन्होंने अनेकों प्रकार के धार्मिक कार्य करके जैन-धर्म का ही नहीं भारतवर्ष का भी गौरव बढ़ाया है। हिन्दू भी इसे अपना तीर्थ धाम मानते हैं। हिन्दुओं के लिए रामचन्द्रजी का जन्म स्थान व सती सीताजी का महल मुख्य दर्शनीय स्थल हैं।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इन दो मन्दिरों के अतिरिक्त एक प्राचीन दिगम्बर मन्दिर व पाँच टूँकें हैं।

कला और सौन्दर्य * इतना प्राचीन स्थल होते हुए भी प्राचीन कला के नमूने कम नजर आते हैं। मन्दिरों में नवीन कला के नमूने दिखाई देते हैं। हाल ही में कटरा स्कूल के पास खुदाई के समय खण्डित जिन-प्रतिमा प्राप्त हुई, जो मौर्य-कालीन मथुरा-कला की बताई जाती है।

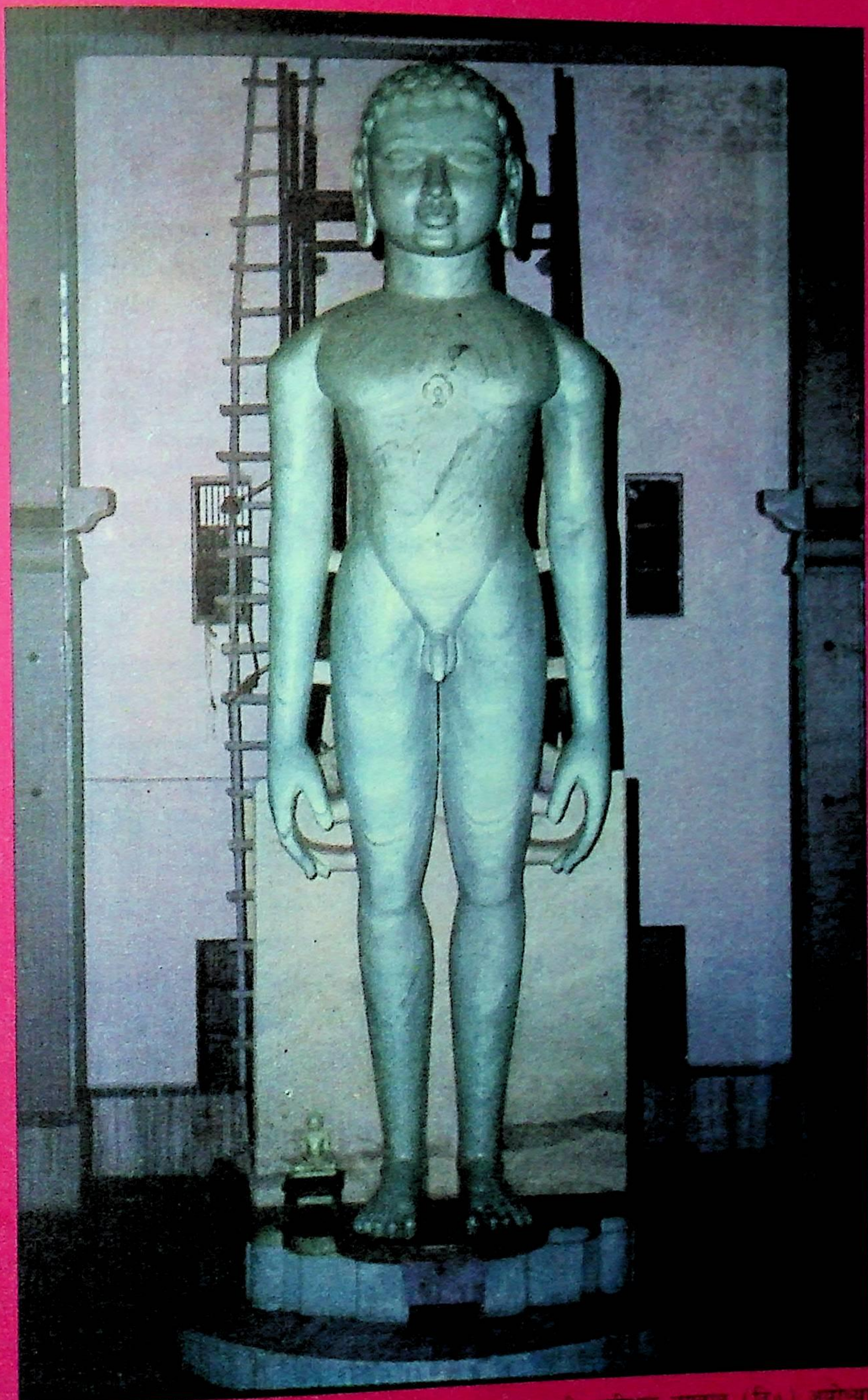
मार्ग दर्शन * अयोध्या रेलवे स्टेशन से कटरा मोहल्ला २.० कि० मी० व रायगंज मोहल्ला १.५ कि० मी० है। स्टेशन पर रिक्शे मिलते हैं। मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं। यहाँ से फैजाबाद पाँच कि० मी० दूर है।

सुविधाएँ * दोनों मन्दिरों के अहाते में ही श्वेताम्बर व दिगम्बर धर्मशालाएँ हैं, जहाँ पानी, बिजली व बर्तनों की सुविधा है।

पेढ़ी * १. श्री जैन श्वेताम्बर पेढ़ी। कटरा मोहल्ला। डाक घर – अयोध्या : जिला – फैजाबाद : प्रान्त – उत्तर प्रदेश : तार घर – अयोध्या : टेलीफोन – पी० सी० ओ० अयोध्या।

२. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर अयोध्या तीर्थ कमेटी। रायगंज मोहल्ला। डाक घर – अयोध्या।





श्री आदीश्वर भगवान (दि०) अयोध्या

श्री श्रावस्ती तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री सम्भवनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग १०५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ श्रावस्ती गाँव में मुख्य मार्ग पर।

प्राचीनता ✻ इस तीर्थ की प्राचीनता युगादिदेव श्री आदीश्वर प्रभु के काल से प्रारम्भ होती है। प्रभु ने देश को ५२ जनपदों में विभाजित किया। उनमें एक कौशल जनपद भी था। उतरी कौशल जनपद की राजधानी का यह नगर था।

भगवान आदिनाथ के पश्चात तीसरे तीर्थंकर श्री सम्भवनाथ भगवान के पिता राजा जितारी आदि अनेकों पराक्रमी जैनी राजा यहाँ हुए। भगवान महावीर के समय यहाँ के राजा प्रसेनजित थे, जो जैन-धर्म के अनुयायी व प्रभु वीर के परम भक्त थे। प्रभु वीर के प्रमुख श्रोता मगध सम्राट श्रेणिक ने इनकी बहिन से शादी की थी। उस समय यह नगर अत्यन्त वैभवशाली था। इसे कुणाल नगरी व चन्द्रिकापुरी भी कहते थे। यहाँ अनेकों जैन-मन्दिर व स्तूप थे। सम्राट अशोक व उनके पौत्र राजा संप्रति ने भी यहाँ मन्दिर व स्तूपों का निर्माण करवाया था–ऐसा उल्लेख है। "बृहत्कल्प" में भी इस तीर्थ के वैभव का उल्लेख है।

ई० सं० पाँचवीं सदी में चीनी यात्री फाहियान ने यहाँ का उल्लेख किया है।

सातवीं शताब्दी में चीनी प्रवासी हुएनसाँग ने यहाँ का उल्लेख करते हुए यहाँ का नाम जेतवन मोनेस्ट्री बताया है। इसके बाद इसका नाम मनिकापुरी होने का उल्लेख है।

ई० सं० ९०० मे यहाँ के राजा मयूरध्वज, स० ९२५ में हँसध्वज, सं० ९५० मे मकरध्वज, सं० ९७५ मे सुधवाध्वज व सं० १००० मे सुहृद्ध्वज हुए। ये सब भार वंशज जैनी राजा थे; डा० बेनेट व डा० विन्सेन्ट स्मिथ ने भी इनको जैन वंशज बताया है। ये सब पराक्रमी व स्वाभिमानी राजा हुए।

राजा सुहृद्ध्वज ने अपने पराक्रम से भारत मे अनेक प्रान्तों पर विजय-पताका फहराकर आते हुए मुसलमान आक्रमणकारियों को बुरी तरह से पराजित कर हिन्दुओं का गौरव कायम करते हुए अपने देश व धर्मतीर्थ की रक्षा की, जो चिरस्मरणीय रहेगी।

मोहम्मद गज़नी की सेना इस तरह से पराजित कहीं नहीं हुई थी।

इसके पश्चात् इस नगरी का सहेतमहेत नाम कब पड़ा, यह शोध का विषय है।

विक्रम की चौदहवी सदी मे आचार्य जिनप्रभ सूरीश्वरजी द्वारा रचित 'विविध तीर्थ कल्प' में श्रावस्ती नगरी का नाम महिठ होने का उल्लेख है। उस समय यहाँ विशाल कोट से घिरा हुआ अनेकों प्रतिमाओं व देव कुलिकाओं सहित रत्न विभूषित जिन-भवन रहने का उल्लेख है। पहले इस मन्दिर के दरवाजे श्री मणिभद्रयक्ष के प्रभाव से सूर्यास्त के समय आरती के बाद स्वय बन्द हो जाते थे व प्रातः सूर्योदय के समय स्वत खुल जाते थे। वार्षिक मेले के दिन एक बाघ यहाँ आकर बैठता था व आरती के पश्चात् पुनः चला जाता था–ऐसा 'विविध तीर्थ-कल्प' मे उल्लेख है।

अल्लाउद्दीन खिलजी के समय इस मन्दिर को भी क्षति पहुँची थी। अठारहवीं सदी में पं० विजयसागरजी व श्री सौभाग्यविजयजी ने यहाँ का उल्लेख किया है।

वर्तमान श्रावस्ती गाँव के निकट सहेतमहेत में खुदाई करते वक्त अनेकों प्राचीन प्रतिमाएँ व शिलालेख प्राप्त हुए हैं, जो लखनऊ व मथुरा म्यूजियम में रखे गये हैं। महेत किले के निकट एक प्राचीन मन्दिर है, जो पुरातत्व-विभाग के अधीनस्थ है। इस स्थान को भगवान श्री संभवनाथ का जन्मस्थान बताया जाता है।

श्री संभवनाथ जिनालय (दि०) श्रावस्ती



सहेतमहेत के पुराने खण्डहर आज भी प्राचीनता की याद दिलाते हैं। आज तो यहाँ सिर्फ यही एक मन्दिर विद्यमान है।

विशिष्टता * वर्तमान चौवीसी के तीसरे तीर्थंकर श्री सम्भवनाथ भगवान के च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणकों से यह भूमि पावन बनी है।

श्री शान्तिनाथ भगवान का भी यहाँ पदार्पण हुआ था। भगवान श्री महावीर ने अनेकों बार इस भूमि में विचरण किया व चातुर्मास किये। प्रभु के कई बार समवसरण यहाँ रचे गये, जिससे अनेक भव्य आत्माओं ने अपनी आत्मा को पवित्र बनाया। श्री पार्श्वनाथ भगवान के संतानीय श्री केशीमुनि व प्रभुवीर के प्रथम गणधर श्री गोतम स्वामीजी का प्रथम मिलन यहीं हुआ था। प्रभुवीर के जमाई (भाणजे) श्री जमाली यहीं के थे, यहीं पर प्रभु के पास दीक्षा ग्रहण की थी। अन्त में यहाँ के कोष्टक उद्यान में रहकर विपरीत प्रचार प्रारम्भ किया था। गोशाले ने यहीं पर प्रभु के ऊपर तेजोलेश्या छोड़ी थी।

मुनि श्री कपिल केवली भी यहीं से मोक्ष सिधारे थे। पराक्रमी जैन राजा प्रसेनजित, सुहृद्ध्वज आदि यहाँ हुए जिन्होंने धर्म-प्रभावना के अनेकों कार्य किये, जो उल्लेखनीय हैं।

इस प्रकार इस पावन भूमि का कण-कण प्रभु के चरण स्पर्श से पवित्र बना है, जो वन्दनीय है।

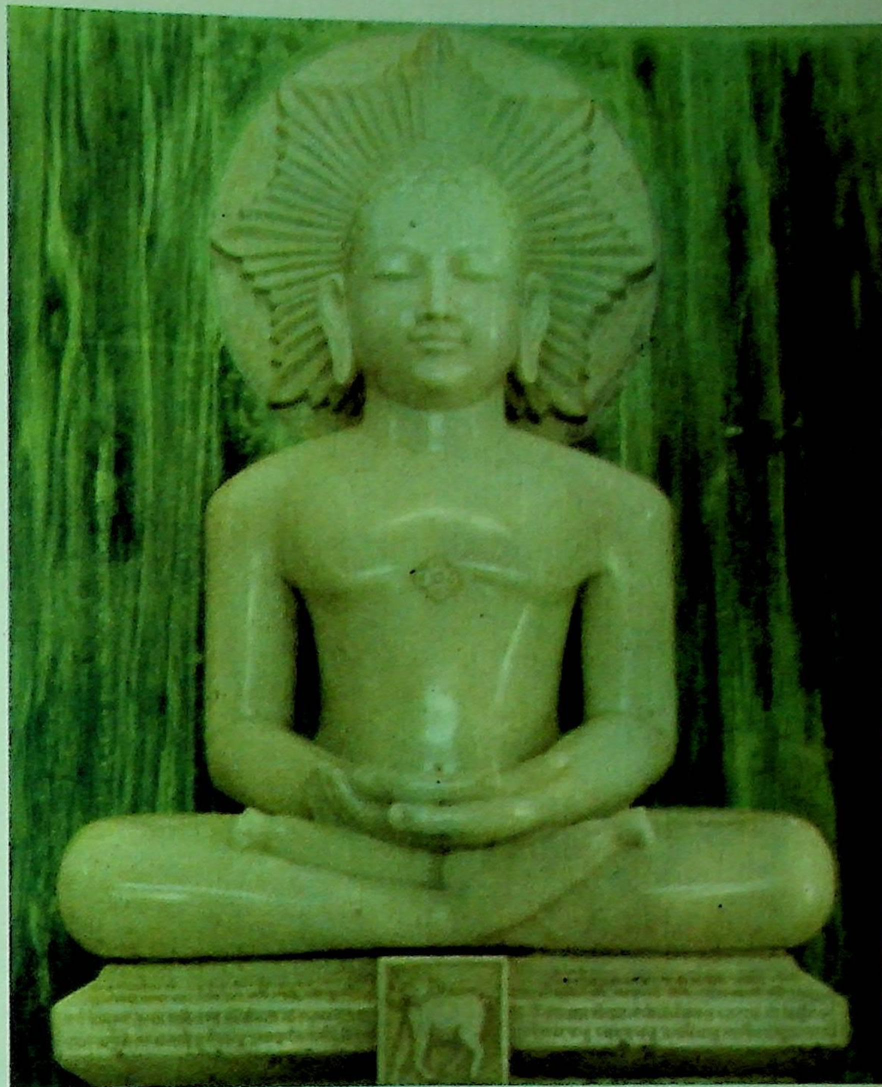
अन्य मन्दिर * वर्तमान में यही एक दिगम्बर मन्दिर है। श्वेताम्बर मन्दिर के निर्माण का कार्य चालू है। पुराना अर्धभग्न एक मन्दिर श्री सम्भवनाथ भगवान के जन्म स्थान के नाम से प्रचलित है, जिसमें प्रतिमाजी नहीं हैं।

कला और सौन्दर्य * यहाँ अनेक प्रतिमाएँ वि० सं० पूर्व की व पश्चात की भूगर्भ से प्राप्त हुईं जो लखनऊ व मथुरा के म्यूजियम में रखी हुई हैं। उनकी शिल्पकला दर्शनीय है। यहाँ मीलों के विस्तार में प्राचीन खण्डहर दिखाई देते हैं, जो सहेतमहेत के नाम से विख्यात हैं। भगवान श्री सम्भवनाथ के जन्म स्थान के नाम से विख्यात प्राचीन मन्दिर व उसके सामने अनेकों खण्डहर दिखाई देते हैं।

मार्ग दर्शन * यह स्थल बलरामपुर-बहराइच सड़क मार्ग पर अयोध्या से १०९ कि० मी० दूर है। अयोध्या से गोन्डा, बलरामपुर होकर आना पड़ता है। बलरामपुर से १७ कि० मी० है। बलरामपुर रेलवे स्टेशन भी है, जो गोन्डा-गोरखपुर रेलमार्ग पर स्थित है, जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा है।

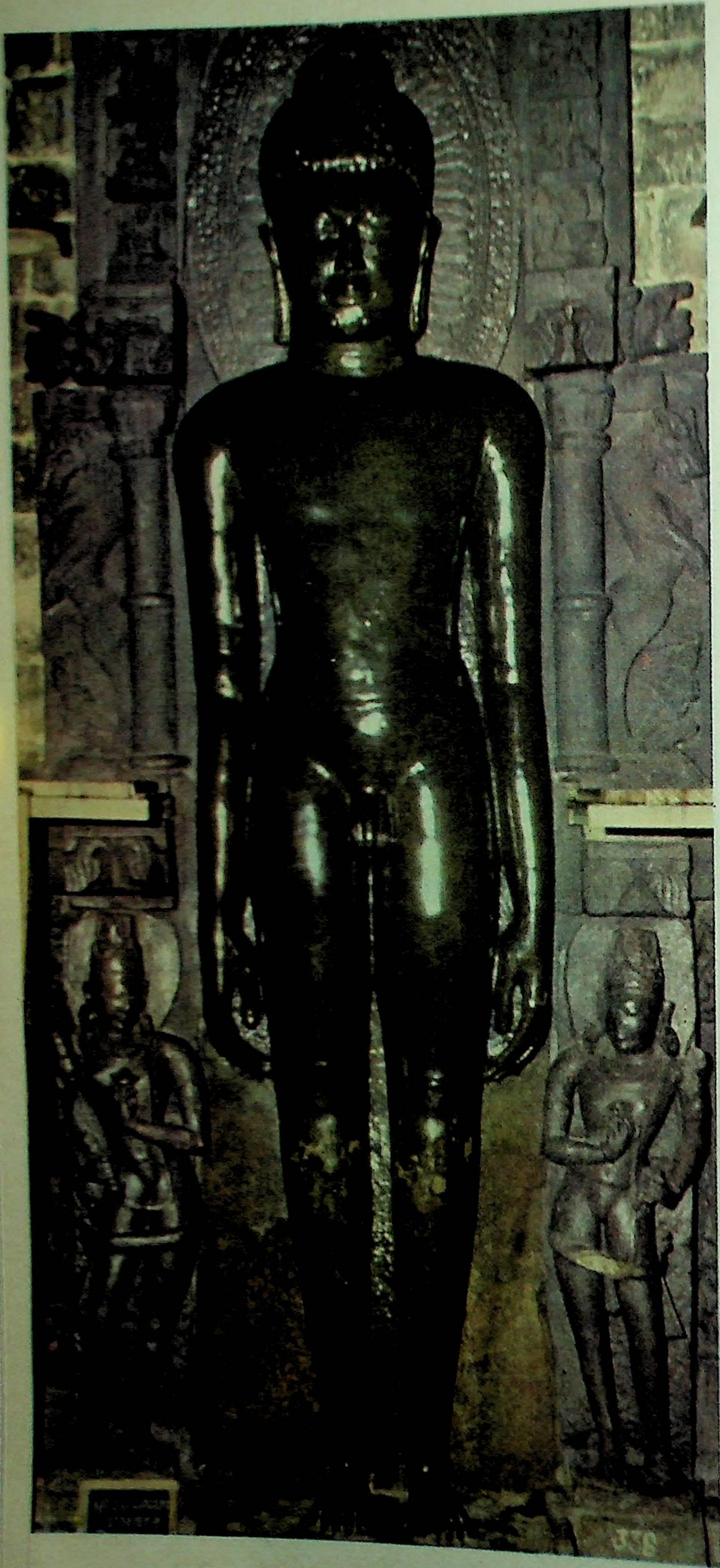
सुविधाएँ * ठहरने के लिए दिगम्बर जैन धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमीटी : डाक घर – श्रावस्ती : तालुक – बलरामपुर : जिला – बहराइच : प्रान्त – उत्तर प्रदेश : तार घर – एकौना : टेलीफोन – पी० सी० ओ० ऐकौना।



श्री संभवनाथ भगवान (दि०) श्रावस्ती

सहायक : १. सोभागमलजी मानकचन्द्जी जैन ट्रस्ट (सोजत रोड़–राज०) मदुरान्तकम् (तमिलनाडु) २. श्री शेंशमलजी सम्पतराजजी सोहनराजजी संकलेचा, (विजाजी का गुड़ा–राज०) उत्तरमेरूर (तमिलनाडु)।



श्री शान्तिनाथ भगवान–देवगढ़

श्री देवगढ तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री शान्तिनाथ भगवान, कायोत्सर्ग मुद्रा में, लगभग ३७५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * वेतवा नदी के किनारे देवगढ़ गांव से ०.५ कि० मी० दूर पहाड़ी पर।

प्राचीनता * कहा जाता है हजारों वर्ष पहले यहाँ शवर जाति का आधिपत्य था। पश्चात् पान्डवों, सहरी, गोन्ड, गुप्तवंश, देववंश, चन्देलवंश, मुगल, बुन्देल वंश, तत्पश्चात् सिन्धिया नरेश व अन्त में अंग्रेजों का राज्य रहा।

गुर्जर नरेश भोजदेव के शासनकालीन विक्रम सं० ९१९ के शिलालेख से पता चलता है कि पहले इस स्थान का नाम लुअच्छगिरि था। बारहवीं सदी में चन्देलवंशी राजा कीर्तिवर्मा के मंत्री वत्सराज ने इस स्थान पर एक नवीन दुर्ग का निर्माण करवाया व अपने स्वामी के नाम पर यहाँ का नाम कीर्तिगिरि रखा। तत्पश्चात् संभवतः १२वीं या १३वीं शताब्दी मे इस स्थान का नाम देवगढ़ पड़ा होगा। यह नाम पड़ने के अनेकों कारण बताये जाते हैं। उनमें यह भी एक कारण बताया जाता है कि इस स्थान की रचना देवों ने की थी, इसलिए देवगढ़ पड़ा। यहाँ असंख्य विभिन्न कलापूर्ण देव मूर्तियाँ हैं। अतः देवगढ़ नाम पड़ने का प्रचलित कारण यह भी हो सकता है। यहाँ शिलालेखों, स्तम्भों आदि पर आठवीं सदी सें पन्द्रहवीं सदी तक के लेख उत्कीर्ण हैं। परन्तु कलाकृतियों के अवलोकन से यहाँ की कुछ प्रतिमाएँ गुप्तकाल से भी पुरानी प्रतीत होती हैं।

विशिष्टता * यह तीर्थ-क्षेत्र प्राचीन तो है ही, मुख्यतः इसकी विशेषता विभिन्न शैली की प्राचीन मूर्ति-कला है। जिन प्रतिमाओं, यक्ष यक्षिणियों, मण्डपों, स्तम्भों, शिलापट्टों में उत्कीर्ण भारतीय शिल्पकला का उत्कृष्ट नमूना यहाँ प्रस्तुत है। पहाड़ पर ३१ बड़े मन्दिर हैं जिनमें विशिष्ट कला के नमूने नजर आते हैं। इस मन्दिर में एक ज्ञानशिलालेख है, जो १८ लिपियों मे उत्कीर्ण हैं।

भगवान आदिनाथ की पुत्री ब्राह्मी ने जिन १८ लिपियों का ज्ञान पाया था, वे सभी लिपियाँ इसमें हैं। इसमें

ब्राह्मी, द्राविड़ी भाषाएँ भी हैं। यह बारहवाँ मन्दिर है।

मन्दिर नं० ६ में पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा पर फण नहीं है। प्रतिमा के दोनों बाजू विशाल सर्प बने हुए हैं।

मन्दिर नं० ११ में बाहुबलजी भगवान की मूर्ति अति आकर्षक है। यह प्रतिमा ग्यारहवीं सदी की है।

मन्दिर नं० १३ में प्रतिमाओं में उत्कीर्ण केश-कला की १८ प्रकार की विभिन्न शैलियाँ दर्शनीय हैं।

इस प्रकार प्रायः हर मन्दिर में आपको अद्वितीय अद्भुत कलात्मक नमूनों के दर्शन होंगे। मूर्तिकला यहाँ की मुख्य विशेषता है।

अन्य मन्दिर ✻ इस मन्दिर के अतिरिक्त पहाड़ पर छोटे-बड़े कुल ३९ मन्दिर हैं।

कला और सौन्दर्य ✻ यहाँ की विचित्र कला का कुछ वर्णन विशिष्टता में दिया गया है। यहाँ की कला का वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। यहाँ की मूर्ति-कला के दर्शन अन्यत्र दुर्लभ हैं। हजारों प्रतिमाएँ विभिन्न शैली में निर्मित हैं। यहाँ की प्रतिमाओं, शिलापट्टों, स्तम्भों आदि में उत्कीर्ण कला के दर्शन कर दर्शनार्थी अपने को कृतार्थ समझता है। बुन्देलखण्ड कला के लिए मशहूर है ही। लेकिन यहाँ की कला अपना अलग ही स्थान रखती है। देवगढ़ में एक म्यूज़ियम भी है,जिसमे विशेष कलात्मक प्रतिमाएँ दर्शनीय हैं।

मार्ग दर्शन ✻ नजदीक का रेलवे स्टेशन ललितपुर यहाँ से ३१ कि० मी० है, जहाँ से जीरोन, जाखलौन व सेपुरा होकर आना पड़ता है। ललितपुर से बस व टैक्सी की सुविधा है।

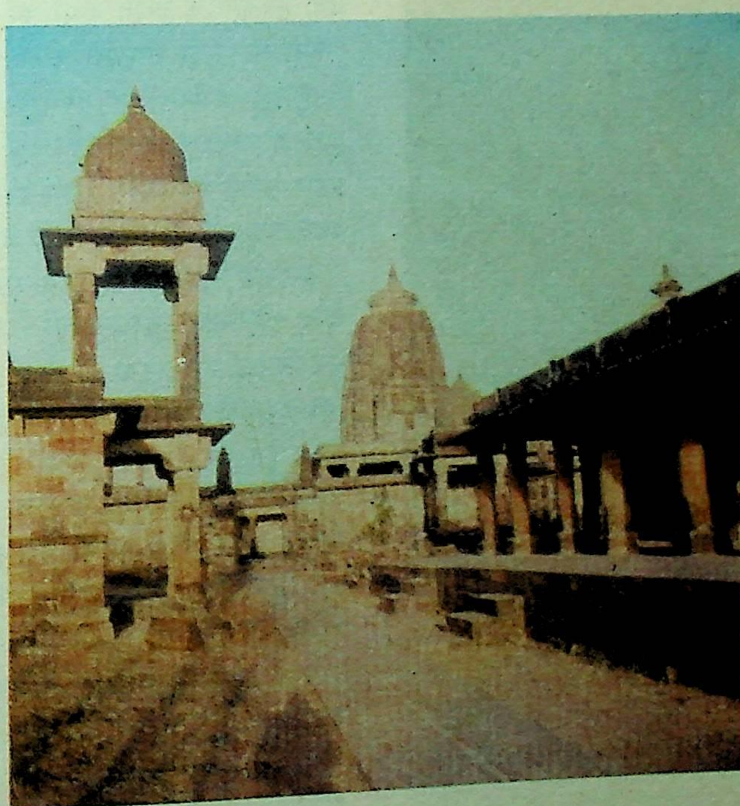
झाँसी से भी यहाँ बसें आती हैं। मार्ग पहाड़ी घाटियों से होकर आता है। अन्त तक डामर सड़क है। कार व बस ऊपर पहाड़ तक जा सकती हैं। लेकिन यात्रियों को देवगढ़ धर्मशाला में ठहरकर आना सुविधाजनक है, क्योंकि धर्मशाला से सहथियार आदमी साथ आता है। पहाड़ पर घना जंगल है।

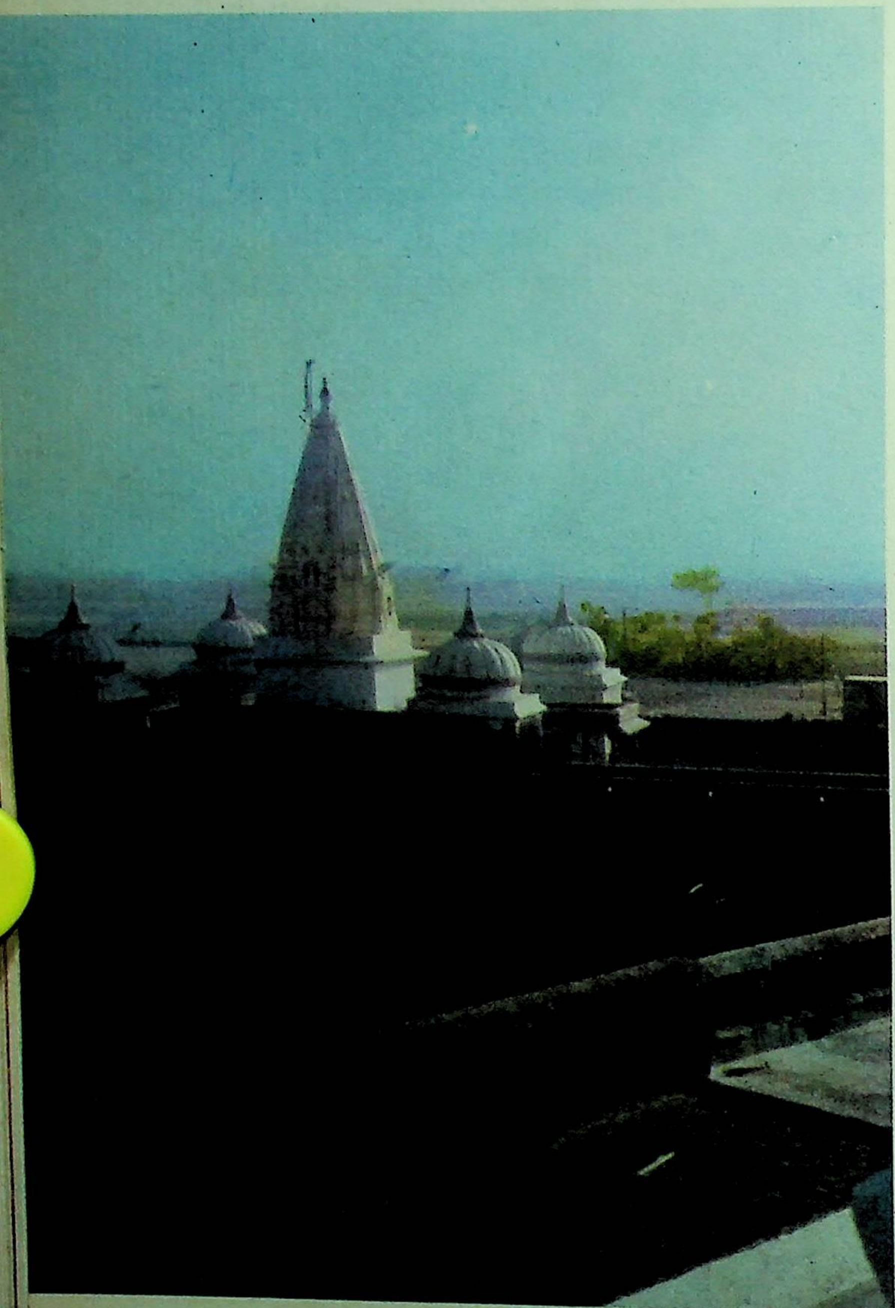
सुविधाएं ✻ ठहरने के लिए नीचे देवगढ़ में धर्मशाला है, जहां पानी, बर्तन की सुविधा है।

पेढ़ी ✻ श्री देवगढ़ क्षेत्र दिगम्बर जैन प्रबन्ध समिति, देवगढ़ : डाक घर – जाखलोन : तहसील – ललितपुर : जिला – झांसी : प्रान्त – उत्तरप्रदेश : तार घर – ललितपुर।



श्री शान्तिनाथ जिनालय (दि०) –देवगढ़





श्री विमलनाथ भगवान श्वे०–मन्दिर – कम्पिलाजी

श्री कम्पिलाजी तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री विमलनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग ४५ सें० मी० (श्वे० मन्दिर)।

श्री विमलनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, श्याम वर्ण, लगभग ६० सें० मी० (दि० मन्दिर)

तीर्थ स्थल ✻ कम्पिलपुर गाँव में।

प्राचीनता ✻ इस नगरी के प्राचीन नाम काम्पिल्य, भोगपुर, माकन्दी आदि बताये जाते हैं।

भगवान श्री आदिनाथ द्वारा विभाजित ५२ जनपदों में पाँचाल जनपद का यह एक मुख्य शहर था।

देवाधिदेव तेरहवें तीर्थंकर श्री विमलनाथ भगवान के च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान इन चार कल्याणकों से यह भूमि पावन बनी है। कम्पिला में एक अघातिया टीला है। यहीं भगवान ने घाति कर्मों का नाश करके केवलज्ञान प्राप्त किया था–ऐसी मान्यता है।

बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान के काल में यहाँ के राजा इक्ष्वाकु वंशी श्री पद्मनाभ हुए, जिन्होंने दीक्षा ग्रहण करके केवलज्ञान प्राप्त किया था। प्रतापी व धर्मनिष्ठ दसवें चक्रवर्ती श्री हरिषेण भी यहीं हुए।

बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान के काल में राजा द्रुपद की यह राजधानी थी। राजा द्रुपद की पुत्री द्रौपदी का विवाह पाण्डु-पुत्रों के साथ हुआ था। सती श्री द्रौपदी अंत समय में दीक्षा ग्रहण कर श्री शत्रुंजय तीर्थ पर देवगति को प्राप्त हुई थी।

किसी समय दक्षिण पांचाल देश की यह एक समृद्ध व विराट नगरी थी व इसका घेराव लगभग बीस मील का था। अठारहवीं सदी में श्री सौभाग्यविजयजी ने इस शहर को पिटियारी नाम से भी संबोधित किया है।

यहाँ भूगर्भ से प्राप्त प्राचीन अवशेषों से ज्ञात होता है कि यहाँ अनेकों जिन मन्दिर थे। परन्तु यह नगरी छोटे से गाँव में परिवर्तित होकर आज यहाँ एक श्वेताम्बर व एक दिगम्बर मन्दिर हैं। इस श्वे० मन्दिर की प्रतिष्ठा वि० सं० १९०४ में हुई थी। दि० मन्दिर वि० सं० ५४९ में निर्मित

हुआ बताया जाता है। वर्तमान चौवीसी के तेरहवें तीर्थंकर श्री विमलनाथ भगवान के च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान ऐसे चार कल्याणक होने का सौभाग्य भी इसी भूमि को प्राप्त हुआ। अतः यहाँ के कण-कण से प्रभु के चरण स्पर्श होने से यहाँ का हर स्थान वन्दनीय है। राजा श्री हरिषेण जैसे महान धर्मनिष्ठ दसवें चक्रवर्ती को जन्म देने का सौभाग्य भी इसी भूमि को प्राप्त है, जिन्होंने अपने राज्य को जिन-प्रतिमाओं से अलंकृत कर दिया था – ऐसा उल्लेख दिगम्बराचार्य श्री रविसेणजी ने किया है।

सोलह सतियों में स्थान पाने वाली सती द्रौपदी का भी यह जन्म स्थान है। सती द्रोपदी के सतीत्व की गाथा जैनों में ही नहीं जैनेतरों में भी गाई जाती है।

ऐसे महान पावन पवित्र भूमि का जितना वर्णन करें कम हैं। यहाँ की विशेषता तो यहाँ के कण-कण में भरी है।

प्रतिवर्ष श्वेताम्बर मन्दिर में पौष शुक्ला ६ को व दिगम्बर मन्दिर में चैत्र कृष्णा अमावस्या से चैत्र शुक्ला तृतीया तक एवं आसोज कृष्णा द्वितीया को मेलों का आयोजन होता है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इन दो मन्दिरों के अतिरिक्त और कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * यहाँ मन्दिरों में कुषाण व गुप्तकालीन प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं। प्रतिमाएँ अति ही सुन्दर व भावात्मक हैं।

मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन कायमगंज लगभग १० कि० मी० दूर है, जहाँ से बस व ताँगों की सुविधा है। मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए श्वेताम्बर व दिगम्बर धर्मशालाएँ हैं, जहाँ बिजली, पानी व बर्तनों की सुविधा है।

पेढ़ी * १. श्री जैन श्वेताम्बर महासभा : श्री विमलनाथ स्वामी जैन श्वेताम्बर मन्दिर : डाक घर – कम्पिल : तहसील – कायमगंज : जिला – फरुखाबाद : प्रान्त – उत्तर प्रदेश : तार घर – कम्पिल : टेलीफोन – पी० सी० ओ० कम्पिल ।

२. श्री कम्पिलजी दिगम्बर तीर्थ क्षेत्र : डाक घर – कम्पिल :



श्री विमलनाथ भगवान (दि०) - कम्पिलाजी



श्री विमलनाथ भगवान (श्वे०) कम्पिलाजी →

श्री अहिच्छत्र तीर्थ

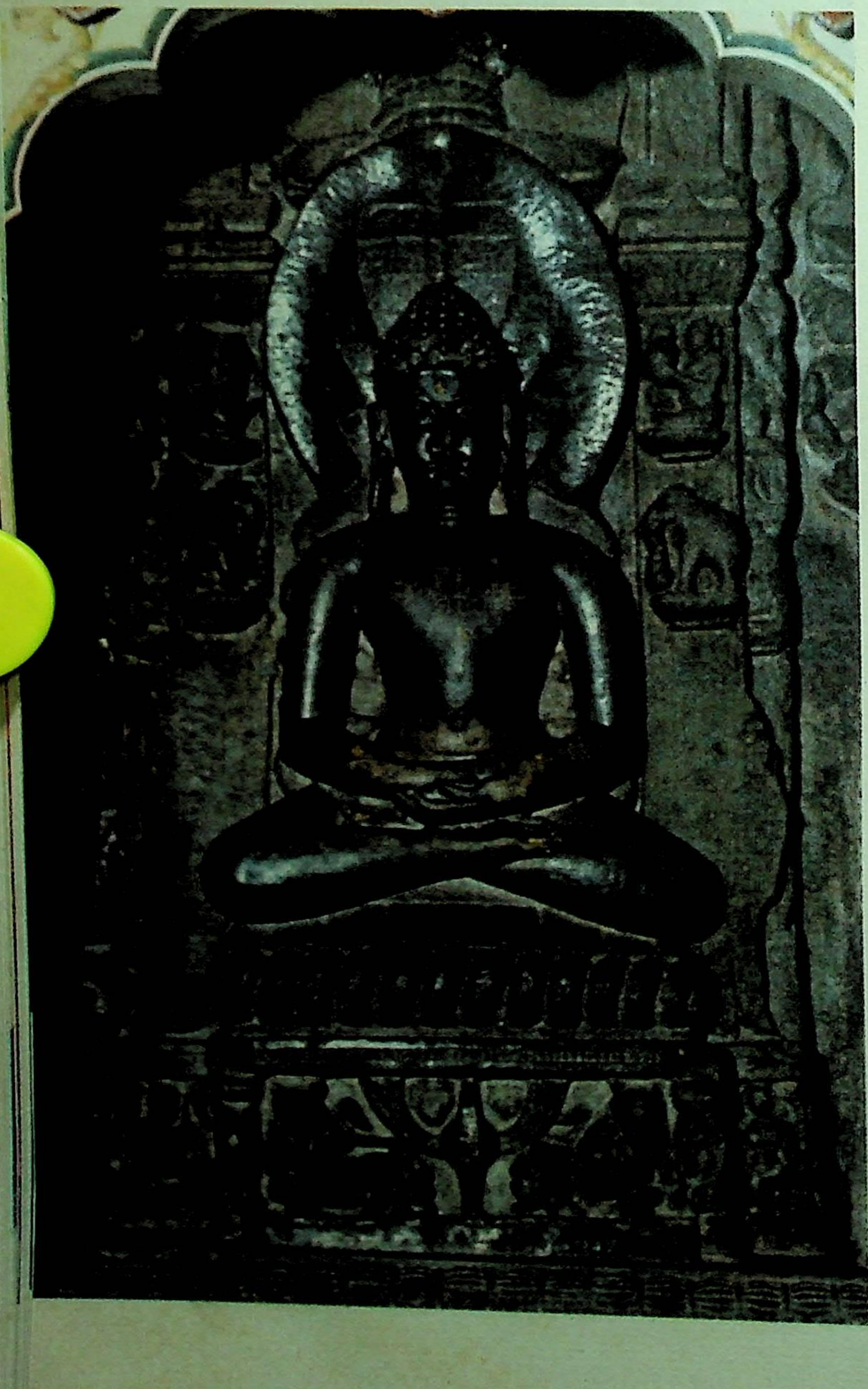
तीर्थाधिराज * श्री पार्श्वनाथ भगवान, पद्मासनस्थ।

तीर्थ स्थल * रामनगर किला गाँव के निकट।

प्राचीनता * इस तीर्थ की प्राचीनता युगादिदेव श्री आदिनाथ भगवान के काल की मानी जाती है। दिगम्बर मान्यतानुसार भगवान आदिनाथ के बाद हुए तीर्थंकरों की भी इसे विहार-भूमि बताया है।

इस नगरी के प्राचीन नाम शंखावती, अधिचत्रका, परिचक्रा, छत्रावती व अहिक्षेत्र आदि बताये जाते हैं।

श्री पार्श्वनाथ भगवान (दि०) अहिच्छत्र



किसी समय यह वैभव संपन्न विराट नगरी थी। इस नगरी का घेराव ४८ मील का था। अनेकों मन्दिर, देवालय, बाजार व बड़ी-बड़ी इमारतों से सुशोभित थी। आज के आँवला, वजीरगंज व सम्पनी आदि गाँव इस शहर के अंग थे। महाभारत काल में यह श्री द्रोणाचार्य की राजधानी थी। भगवान पार्श्वनाथ के पूर्व यह नगरी नागराजाओं की राजधानी रहकर जैन धर्म का बड़ा केन्द्र बनी हुई थी। भगवान पार्श्वनाथ विहार करते हुए इस नगरी में पधारे, तब यहाँ के वन में ध्यानावस्था में रहते वक्त मेघमाली (कमठ) द्वारा उपसर्ग हुआ था।

यहाँ के राजा वसुपाल द्वारा यहाँ श्री पार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर बनवाने का उल्लेख है।

विक्रम की छठीं शताब्दी में यहाँ के गुप्तवंशी राजा हरिगुप्त ने दीक्षा अंगीकार की थी – ऐसा आचार्य श्री उद्योतनसूरीश्वरजी द्वारा रचित "कुवलयमाला" में वर्णन है।

ई० सं० ६३० में चीनी यात्री हुएनसाँग ने अपनी यात्रा के वर्णन में इस क्षेत्र का नाम ओहिचितालो बताया है।

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य ने अहिच्छत्र का उल्लेख करते हुए इसका दूसरा नाम "प्रत्यग्रथ" भी बताया है।

विक्रम की चौदहवीं सदी में आचार्य श्री जिनप्रभसूरीश्वरजी ने यहाँ श्री पार्श्वनाथ भगवान के दो मन्दिर, किले के निकट श्री नेमिनाथ भगवान की अधिष्ठायिका श्री अम्बादेवी की प्रतिमा व विभिन्न प्रकार की औषधियों युक्त वन, उपवन आदि रहने का "विविध तीर्थ कल्प" में उल्लेख किया है।

भूगर्भ से कुषाणकालीन व गुप्तकालीन अनेकों प्राचीन स्तूप, प्रतिमाएँ, स्तम्भ आदि प्राप्त हुए हैं, जो यहाँ की प्राचीनता को प्रमाणित करते हैं। यहाँ के टीलों व खण्डहरों की, जो मीलों में फैले हुए हैं, खुदाई की जाय तो महत्वपूर्ण प्राचीन अवशेष व अन्य वस्तुओं के प्राप्त होने की पूर्ण सम्भावना है।

यह मन्दिर भी अति प्राचीन है। प्रभु-प्रतिमा के अवलोकन मात्र से इसकी प्राचीनता का अनुमान हो जाता है।

विशिष्टता * युगादिदेव श्री आदिनाथ भगवान के पश्चात् के तीर्थंकरों की भी यह विहार-भूमि व ग्यारह चक्रवर्तियों की अधिकार-भूमि होने का सौभाग्य इस पवित्र स्थल को प्राप्त हुआ है।

संकट हरनार तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान की तपोभूमि रहने के कारण यहाँ की मुख्य विशेषता है।

विक्रम से आठवीं सदी पूर्व जब भगवान पार्श्वनाथ विहार करते हुए इस महानगरी के वन में पधारे तब एक वट-वृक्ष के नीचे ध्यानारूढ़ रहे थे। उस समय व्यंतरदेव (मेघमाली-कमठ) ने पूर्व भव के बैर का स्मरण कर आकाश मार्ग से जाते हुए अपना विमान रोका और ध्यानमग्न प्रभु पर भयंकर

आँधी के साथ मूसलधार पानी व ओले वर्षा कर घोर उपसर्ग करने लगा। प्रभु इस रोमांचकारी उपसर्ग से तनिक भी विचलित न होकर ध्यान में मग्न रहे। पूर्व भव के नाग, नागिनी जिन्हें मरणासन्न अवस्था में भगवान पार्श्वनाथ ने सर्व विघ्नहारी नवकार महामंत्र सुनाया था, जिसके प्रभाव से नाग-नागिन मरकर स्वर्ग में धरणेन्द्रदेव व पद्मावती देवी बने थे, उन्होंने स्वर्ग से तत्काल आकर पूर्वभव के उपकारी प्रभु के शीशपर विशाल फण मण्डप की रचना करके कमठ के उपसर्ग को विफल किया। मेघमाली अपनी भूलपर पश्चात्ताप करता हुआ प्रभु के चरणो में आकर क्षमा मांगने लगा। क्षमावान प्रभु का तो किसी के प्रति वेर था ही नहीं। प्रभु तो अपने ध्यान में मग्न थे। (दि० मान्यतानुसार प्रभु को उसी समय केवलज्ञान प्राप्त हुआ। श्वे० मान्यतानुसार प्रभु को केवलज्ञान बनारस में हुआ बताया जाता है।)

प्रभु पर श्री धरणेन्द्र देव व श्री पद्मावतीदेवी द्वारा यहाँ फण मण्डप की रचना होने के कारण इस नगरी का नाम अहिच्छत्र पड़ा माना जाता है।

आचार्य श्री पात्रकेशरी ने अपने ५०० शिष्यों के साथ यहाँ पर जैन-धर्म अंगीकार किया था।

यहाँ तिखाल वाले बाबा की हरित वर्ण प्राचीन प्रतिमा दर्शनीय है। कहा जाता है कि इस वेदी की दीवार का निर्माण रातों-रात किसी अदृश्य शक्ति द्वारा हुआ था। इस प्रकार यह अतिशय क्षेत्र भी माना जाता है। श्रद्धालु भक्तजनों की मनोकामनाएँ आज भी बाबा पूर्ण करते हैं।

यहाँ एक कुआँ व एक बावड़ी हैं जिनके जल के उपयोग से रोग निवारण होना बताया जाता है।

प्रतिवर्ष चैत्र कृष्णा अष्टमी से त्रयोदशी तक मेला भरता है।

अन्य मन्दिर ⁕ वर्तमान में इसके अतिरिक्त गाँव में एक और मन्दिर है।

कला और सौन्दर्य ⁕ प्रभु-प्रतिमा की कला अद्भुत व मनमोहक है। ऐसी कलात्मक प्राचीन प्रतिमा के दर्शन अन्यत्र दुर्लभ हैं।

भूगर्भ से प्राप्त कुषाणकालीन व गुप्तकालीन कलात्मक प्रतिमाओं व अन्य अवशेषों की कला दर्शनीय है, जो सरकारी म्यूजियम में सुरक्षित हैं। प्राचीन विशाल नगरी के भग्नावशेष इस गाँव के चारों ओर मीलों में बिखरे नजर आते हैं। यहाँ पुरातत्व प्रेमी यात्री आते रहते हैं।

मार्ग दर्शन ⁕ यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन आँवला १३ कि० मी० हैं, जहाँ से टैक्सी व ताँगों की सुविधा है। यह स्थल बरेली जिले के आँवला-शाहाबाद सड़क मार्ग पर स्थित है। मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ ⁕ ठहरने के लिए मन्दिर के अहाते में ही धर्मशाला है, जहाँ बिजली, पानी व बर्तनों की सुविधा है।

पेढ़ी ⁕ श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ अतिशय तीर्थ क्षेत्र दिगम्बर जैन मन्दिर : डाक घर – रामपुर किला : जिला – बरेली : व्हाया – आँवला : प्रान्त – उत्तर प्रदेश : तार घर – रामनगर : टेलीफोन – पी० सी० ओ० रामनगर।



श्री पार्श्वप्रभु जिनालय (दि०) अहिच्छत्र



श्री हस्तिनापुर तीर्थ



श्री शान्तिनाथ प्रभु जिनालय (श्वे०) हस्तिनापुर

तीर्थाधिराज * १. श्री शान्तिनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, गुलाबी वर्ण, लगभग ६० सें० मी० : (श्वे० मन्दिर)

२. श्री शान्तिनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण (दि० मन्दिर)।

तीर्थ स्थल * हस्तिनापुर गाँव में।

प्राचीनता * इस तीर्थ की प्राचीनता युगादिदेव श्री आदीश्वर भगवान से प्रारम्भ होती है। शास्त्र में इसके नाम गजपुर, हस्तिनापुर, नागपुर, आसन्दीवत, ब्रह्मस्थल, शान्तिनगर, कुंजरपुर आदि भी आते हैं।

भगवान आदिनाथ ने अपने पुत्र बाहुबलजी को पोदनापुर व हस्तिनापुर राज्य दिये थे। पोदनापुर में बाहुबलजी व हस्तिनापुर में उनके पुत्र श्री सोमयश राज्य करते थे। सोमयश के लघु भ्राता श्री श्रेयाँसकुमार ने भगवान श्री आदिनाथ को यहीं पर इक्षु रस से पारणा करवाया था। उस स्मृति में श्री श्रेयाँसकुमार द्वारा यहाँ पर एक रत्नमयी स्तूप का निर्माण करवाकर श्री आदिनाथ प्रभु की चरण-पादुकाएँ स्थापित कराने का उल्लेख है। श्री आदिनाथ भगवान के पश्चात् श्री शान्तिनाथ भगवान, श्री कुंथुनाथ भगवान व श्री अरहनाथ भगवान के च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक यहाँ हुए। उनकी स्मृति में तीन स्तूप निर्मित होने का उल्लेख है। उन प्राचीन स्तूपों व मन्दिरों का आज पता नहीं, क्योंकि इस नगरी का अनेकों बार उत्थान-पतन हुआ है। जगह-जगह पर भूगर्भ से अनेकों प्राचीन अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो प्राचीनता की याद दिलाते हैं। भगवान महावीर से उपदेश पाकर यहाँ के राजा शिवराज ने, जैन धर्म का अनुयायी बनकर दीक्षा अंगीकार की। उसने भगवान की स्मृति में एक स्तूप का भी निर्माण करवाया था।

सम्राट अशोक के पौत्र राजा संप्रति द्वारा यहाँ अनेकों मन्दिर बनवाने का उल्लेख है। वि० से ३८६ वर्ष पूर्व आचार्य श्री यक्षदेवसूरिजी, २४७ वर्ष पूर्व आचार्य श्री सिद्धसूरिजी, वि० सं० १६६ में श्री रत्नप्रभसूरिजी (चतुर्थ), वि० सं० २३५ के लगभग आचार्य कक्कसूरिजी (चतुर्थ) आदि अनेकों प्रकाण्ड विद्वान आचार्यगण संघ सहित यहाँ यात्रार्थ पधारे थे।

राजा श्री कुमारपाल कुरुदेश को जीतकर यहाँ यात्रार्थ पधारे थे।

"विविध तीर्थ-कल्प" के रचयिता आचार्य श्री जिनप्रभसूरिजी सं० १३३५ के लगभग दिल्ली से विशाल जन समुदाय सहित संघ के साथ यहाँ यात्रार्थ पधारे। उस समय यहाँ श्री शान्तिनाथ भगवान, श्री कुंथुनाथ भगवान, श्री अरहनाथ



श्री शान्तिनाथ भगवान (श्वे०) हस्तिनापुर

सहायक : श्री जी. रुगनाथमलजी कन्यालालजी धरमराजजी तालेड़ा, खामल (सोजतरोड़) वाले, वेलूर (तमिलनाडु)

भगवान व श्री मल्लिनाथ भगवान–इन चार तीर्थंकरों के चार मन्दिर व एक श्री अम्बीका देवी का मन्दिर होने का उल्लेख किया है। उस समय हस्तिनापुर शहर गंगा नदी के तट पर था।

विक्रम की सतरहवीं सदी में श्री विजयसागरजी यात्रार्थ पधारे तब ५ स्तूप व ५ जिन प्रतिमाएँ होने का उल्लेख है। वि० सं० १६२७ में खरतरगच्छाचार्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी यात्रार्थ पधारे, तब यहाँ ४ स्तूपों का वर्णन किया है।

वि० की अठारहवीं सदी में मुनि श्री सौभाग्यविजयजी यात्रार्थ पधारे तब यहाँ तीन स्तूपों का वर्णन किया है।

प्राचीन काल से समय-समय पर अनेकों प्रकाण्ड विद्वान दिगम्बर आचार्यगण भी यहाँ यात्रार्थ पधारने का उल्लेख है।

इस श्वे० मन्दिर का हाल ही में पुनः जीर्णोद्धार होकर वि० सं० २०२१ मिगसर शुक्ला १० को प्रतिष्ठा संपन्न हुई थी। इस दि० मन्दिर की प्रतिष्ठा वि० सं० १८६३ में होने का उल्लेख है।

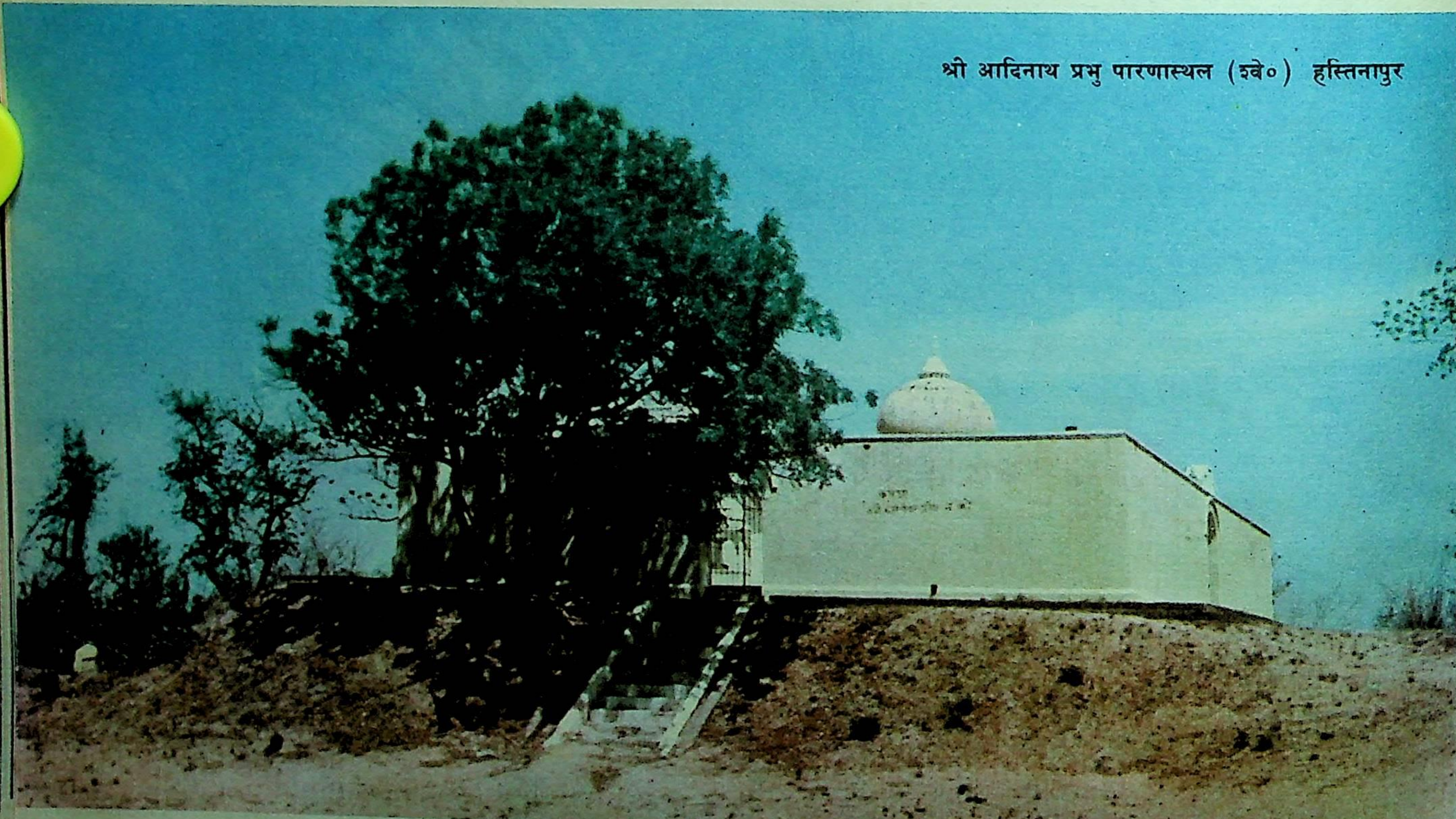
विशिष्टता * युगादिदेव श्री आदीश्वर भगवान दीक्षा पश्चात् निर्जल व निराहार विचरते हुए ४०० दिनों के बाद वैशाख शुक्ला तृतीया के शुभ दिन यहाँ पधारे। भोली-भाली जनता दर्शनार्थ उमड़ पड़ी। राजकुमार श्री श्रेयाँसकुमार को अपने प्रपितामह के दर्शन पाते ही जाति-स्मरण-ज्ञान हुआ, जिससे आहार देने की विधि को जानकर इक्षु रस ग्रहण करने के लिए भक्ति भावपूर्वक प्रभु से आग्रह करने लगा। प्रभु ने कल्पिक आहार समझकर श्री श्रेयाँसकुमार के हाथों पारणा किया। देवदुदुभियाँ बजने लगीं, जनता में हर्ष का पार न रहा। उसी दिन यहाँ से वर्षीतप के पारणे की प्रथा प्रारंभ हुई। कहा जाता है कि भगवान का इक्षु रस से पारणा होने के कारण उस दिन को (इक्षु) अक्षय तृतीया कहने लगे।

श्री शान्तिनाथ भगवान, श्री कुंथुनाथ भगवान व श्री अरहनाथ भगवान के च्यवन, जन्म दीक्षा व केवलज्ञान, ऐसे बारह कल्याणक होने का सौभाग्य इस पवित्र भूमि को प्राप्त हुआ है।

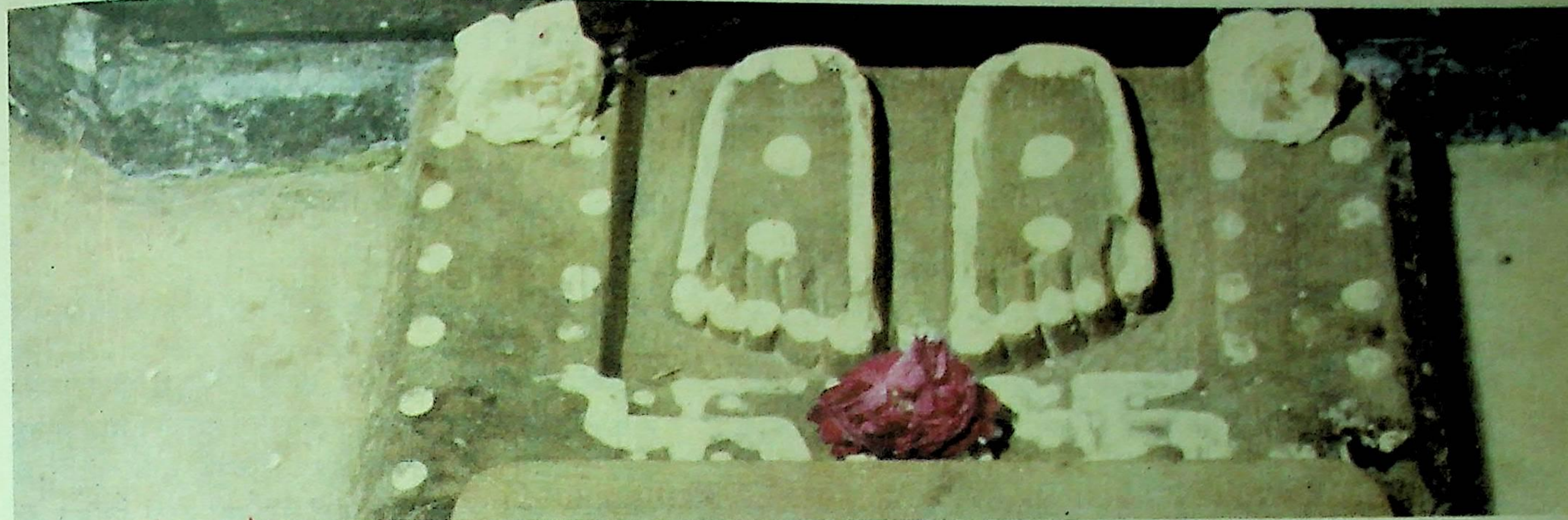
श्री मल्लिनाथ भगवान के समवसरण की रचना यहाँ पर भी हुई थी। प्रभु ने यहाँ ६ राजाओं को प्रतिबोध देकर जैन-धर्म का अनुयायी बनाया था।

श्री मुनिसुव्रतस्वामी, श्री पार्श्वनाथ व चरम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान का भी यहाँ पदार्पण हुआ था। श्री पार्श्वप्रभु ने यहाँ के राजा श्री स्वयंभु को प्रतिबोध देकर जैन धर्म का अनुयायी बनाया जो दीक्षा अंगीकार करके प्रभु के प्रथम गणधर बने।

श्री भरत चक्रवर्ती से लेकर कुल १२ चक्रवर्ती हुए, जिनमें



श्री आदिनाथ प्रभु पारणास्थल (श्वे०) हस्तिनापुर



श्री आदिनाथ प्रभु के प्राचीन चरण चिह्न–हस्तिनापुर

६ चक्रवर्तियों ने इस पावन भूमि मे जन्म लिया। रामायण-काल के श्री परशुरामजी का जन्म भी यहीं हुआ था।

महाभारत-काल मे पाण्डवों व कौरवों की यह राजधानी थी।

भगवान श्री महावीर के पश्चात भी अनेकों प्रकाण्ड विद्वान आचार्यगण यहाँ यात्रार्थ पधारे। अनेकों संघों का यहाँ आवागमन हुआ।

अतः ऐसे महान आत्माओं के जन्म व पदार्पण से पवित्र हुई इस भूमि की महानता का किन शब्दों में वर्णन किया जाय। इस पावन भूमि में पहुँचते ही हमारे कृपालु तीर्थंकरों आदि का स्मरण हो आता है।

प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा व वैशाख शुक्ला तृतीया को श्वेताम्बर मन्दिर में व कार्तिक शुक्ला अष्टमी से पूर्णिमा तक दिगम्बर मन्दिर में मेलों का आयोजन होता है।

अन्य मन्दिर * इन मन्दिरों के अतिरिक्त एक दि० मन्दिर है। यहाँ से लगभग ३ कि० मी० दूर श्वे० व दि० समाज की अलग-अलग स्थानों पर चार-चार देरियाँ बनी हुई हैं। तीन तीर्थंकरों के कल्याणक स्थलों के स्मरणार्थ व मल्लिनाथ भगवान के समवसरण स्थल के स्मरणार्थ श्वे० देरियों में प्रभु के चरण व दि० देरियों में स्वस्तिक स्थापित हैं। यहीं पर एक श्वे० प्राचीन स्तूप (देरी) में श्री आदिनाथ प्रभु के चरण स्थापित हैं। यह स्थान श्री आदिनाथ भगवान का पारणा स्थल माना जाता है। अतः श्वेताम्बर समुदाय का अक्षय तृतीया का जुलुस यहाँ आता है।

कला और सौन्दर्य * यह स्थान अति ही प्राचीन रहने के कारण यहाँ अनेकों प्राचीन प्रतिमाएँ, सिक्के, शिलालेख व खण्डहर अवशेष आदि भूगर्भ से प्राप्त हुए हैं। मन्दिरों में प्राचीन प्रतिमाएँ दर्शनीय हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन मेरठ ३७ कि० मी ० है, जहाँ से बस व टैक्सी का साधन है। दिल्ली मे मेरठ ६० कि० मी० है। निकट ही बस स्टैण्ड है। कार व बस मन्दिर तक जा सकती हैं।

सुविधाएं * ठहरने के लिए श्वेताम्बर धर्मशालाएँ हैं, जहाँ बिजली, पानी, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजन-शाला की सुविधा है। निकट ही में सर्वसुविधायुक्त दिगम्बर धर्मशालाएँ भी हैं।

पेढ़ी * १. श्री हस्तिनापुर जैन श्वेताम्बर तीर्थ समिति, टेलीफोन – ४० हस्तिनापुर।

२. श्री हस्तिनापुर जैन दिगम्बर तीर्थ समिति। डाक घर – हस्तिनापुर : जिला – मेरठ : प्रान्त – उत्तर प्रदेश : तार घर – हस्तिनापुर।

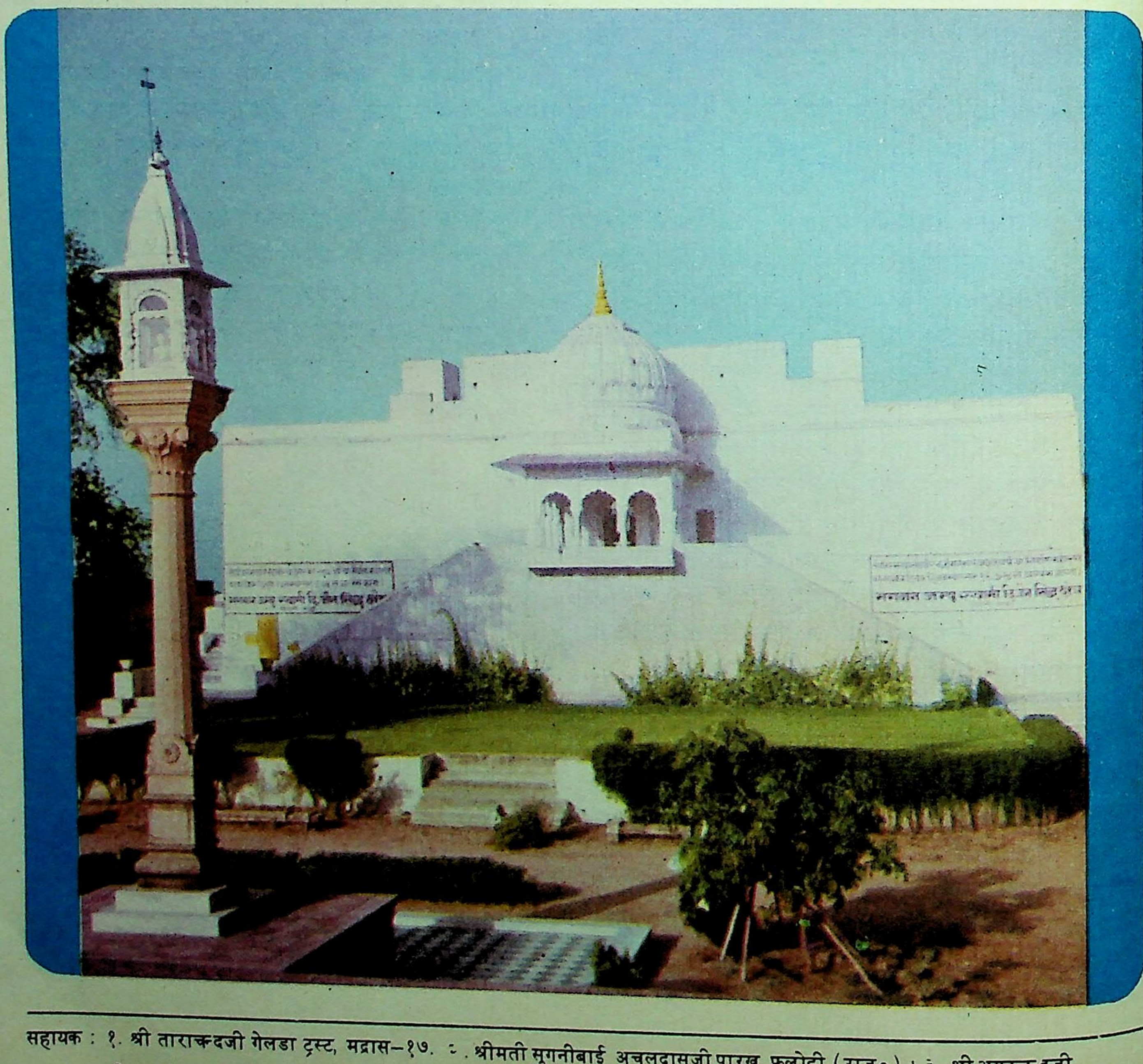
श्री मथुरा तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ भगवान श्री महावीर के द्वितीय पट्टधर अन्तिम केवली श्री जम्बूस्वामीजी; चरणपादुकाएँ, लगभग ३० सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ मथुरा से लगभग ४ कि० मी० दूर, चौरासी में।

प्राचीनता ✻ यह तीर्थ-क्षेत्र सातवें तीर्थंकर श्री सुपार्श्व-नाथ भगवान के समय का माना जाता है। प्राचीन काल मे यह शहर मधुपुरी, मधुरा, मधुलिका, इन्द्रपुर आदि नामों से संबोधित किया जाता था। यहाँ पर देवों द्वारा निर्मित श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का रत्नोंजड़ित स्वर्णिम विशाल स्तूप था। भगवान श्री पार्श्वनाथ के काल में इसे ईंटों से ढँके जाने व पास ही में एक मन्दिर निर्माण करवाने का उल्लेख

श्री जम्बुस्वामी भगवान (दि०) मन्दिर–चौरासी (मथुरा)



सहायक : १. श्री ताराचन्दजी गेलडा ट्रस्ट, मद्रास–१७. २. श्रीमती सुगनीबाई अचलदासजी पारख, फलोदी (राज०)। ३. श्री अगरचन्दजी गुलाबचन्दजी कांकरिया, कांचीपुरम (तमिलनाडु)

'बृहत कल्पसूत्र' में मिलता है। राजा श्री उग्रसेन की यह राजधानी थी। तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान, चरम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान ने यहाँ पदार्पण कर इस भूमि को पवित्र बनाया था। अन्तिम केवली श्री जम्बूस्वामीजी अन्तिम धर्मदेशना देते हुए यहीं से मोक्ष सिधारे थे।

विक्रम की आठवीं सदी में आचार्य श्री बप्पभट्टसूरीश्वरजी द्वारा यहाँ देव निर्मित स्तूप के जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख हैं। चौदहवीं सदी में श्री जिनप्रभसूरीश्वरजी द्वारा रचित 'विविध तीर्थ कल्प' में इस नगरी को बारह योजन लम्बी व नव योजन चौड़ी बताई है। यहाँ अनेकों जिनालय वाव, कुएँ, देवालय व बाजार आदि रहने का उल्लेख किया है।

आचार्य श्री हीरविजयसूरीश्वरजी यहाँ संघ सहित पधारे। तब यहाँ श्री सुपार्श्वनाथ भगवान व श्री पार्श्वनाथ भगवान के मन्दिरों व श्री जम्बूस्वामी, प्रभस्वामी आदि ५२७ साधु-साध्वियों के स्तूप रहने का उल्लेख है।

अन्तिम केवली श्री जम्बूस्वामीजी के समय यहाँ ८४ वन थे। श्री जम्बूस्वामीजी यहाँ के जम्बूवन में तपश्चर्या करते हुए मोक्ष सिधारे थे। इसी कारण इस स्थान का नाम चौरासी पड़ा।

चौरासी नामक प्राचीन स्थान पर इस नवीन मन्दिर का निर्माण हुआ। इस मन्दिर में प्रतिष्ठित श्री जम्बूस्वामी महाराज की प्राचीन चरण-पादुकाएँ भरतपुर के एक श्रावक को आये स्वप्न के आधार पर खोज करने से इस स्थान पर भूगर्भ मे प्राप्न हई थी।

विशिष्टता ❋ सातवें तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के समय में धर्मरुचि व धर्मघोष नामक दो मुनि थे। वे विहार करके मथुरा आकर भूतरमण उपवन में कठोर तपश्चर्या करने लगे। तपस्या से प्रभावित होकर उस वन की अधिष्ठात्री देवी कुबेरा चरणों में आकर वरदान माँगने के लिए अरदास करने लगी। मुनियों को किसी प्रकार की आकांक्षा नहीं थी। देवी ने स्वत: सोने और रत्नों से जड़ित, तोरणमाला से अलंकृत, शिखर पर तीन छत्रों से सुशोभित एक स्तूप का निर्माण किया। उसके चारों दिशाओं में पंचवर्ण-रत्नों की मूर्तियाँ विराजमान कीं, जिनमें मूलनायक प्रतिमा श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की थी। इसी स्तूप को श्री पार्श्वनाथ भगवान के समय देवताओं के कहने पर ईंटों से ढका गया क्योंकि दुषमा-काल आनेवाला था। इसे देवनिर्मित स्तूप कहने लगे। कुषाणकाल में इसे बोध स्तूप भी कहते थे।

यहाँ पर अन्य सैकड़ों स्तूप होने का उल्लेख है। अन्यत्र इतने स्तूपों के होने का इतिहास नहीं है।

यादव वंशी श्री उग्रसेन राजा की यह राजधानी थी। भावी तीर्थंकर श्री कृष्ण का जन्म यहीं पर कारागार में हुआ था। सती राजुलमती की भी यह जन्मभूमि है। श्री कृष्ण ने कंस को मल्लयुद्ध में यहीं पछाड़ा था।

श्री पार्श्वनाथ भगवान व श्री महावीर भगवान ने यहाँ पदार्पण करके इस भूमि को पावन बनाया था।

भगवान महावीर के दूसरे पट्टधर अन्तिम केवली श्री जम्बूस्वामीजी तपश्चर्या करते हुए यहीं से मोक्ष सिधारे थे।

यहाँ पर कँकाली टीले में प्राचीन जिन प्रतिमाएँ, अवशेष, स्तूप, ताम्रपत्र व अनेकों प्रकार की अमूल्य सामग्री प्राप्त हुई है, जिनके अवलोकन मात्र से यहाँ की प्राचीनता व महत्ता महसूस हो जाती है। भूगर्भ से निकला हुआ इतना बड़ा खजाना अन्यत्र नहीं है। अनेकों प्रतिमाएँ आदि लखनऊ म्यूजियम में रखी हुई हैं। पुरातत्व संबंधी शोधकों के लिए यह महत्त्वपूर्ण स्थान है।

अन्य मन्दिर ❋ वर्तमान में चौरासी में तो यही एक मन्दिर है। मथुरा में चार दिगम्बर मन्दिर व एक श्वेताम्बर मन्दिर हैं।

कला और सौन्दर्य ❋ इस मन्दिर की कला व प्राकृतिक दृश्य निहारने योग्य है। यहाँ प्राचीन जैन कला का विपुल भन्डार है। कँकाली टीले जैसे कई टीले मौजूद हैं, लेकिन अन्वेषण की आवश्यकता है। इन टीलों के अवलोकन मात्र से पूर्व इतिहास का स्मरण हो आता है।

मार्ग दर्शन ❋ यहाँ का मथुरा स्टेशन इस मन्दिर से लगभग ४ कि० मी० दूर है, जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा है। यह स्थान दिल्ली-आगरा सड़क मार्ग पर दिल्ली से १४५ कि० मी० व आगरा से ५४ कि० मी० है, मन्दिर तक पक्की सड़क है। कार व बस मन्दिर तक जा सकती हैं।

सुविधाएँ ❋ ठहरने के लिए विशाल सुन्दर धर्मशाला है, जहाँ बिजली, पानी व बर्तनों की सुविधा है।

पेढ़ी ❋ श्री १००८ जम्बूस्वामी दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र, चौरासी। डाक घर – मथुरा : जिला – मथुरा : प्रान्त– उत्तर प्रदेश : तार घर – मथुरा : टेलीफोन – ८६७ मथुरा।

श्री जम्बुस्वामी भगवान चरण–चौरासी (मथुरा)



सहायक : १. एम अमोलकचन्दजी धारीवाल, आरकोणम् (तमिलनाडु) २. श्री अमोलकचन्दजी सज्जनराजजी सिघवी, उत्तरमेरूर (तमिलनाडु) ३. श्री जेठमलजी अनोपचन्दजी झाबक, कुनूर (तमिलनाडु) ४. मेसर्स. एज. घोसुलालजी सन्स, आरकाट (तमिलनाडु)



श्री नेमिनाथ जिनालय (श्वे०) सौरीपुर

श्री सौरीपुर तीर्थ

तीर्थाधिराज * १. श्री नेमिनाथ भगवान, श्याम वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ७५ सें० मी० (श्वे० मन्दिर)।

२. श्री नेमिनाथ भगवान, श्याम वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग १०५ सें० मी०। (दि० मन्दिर)।

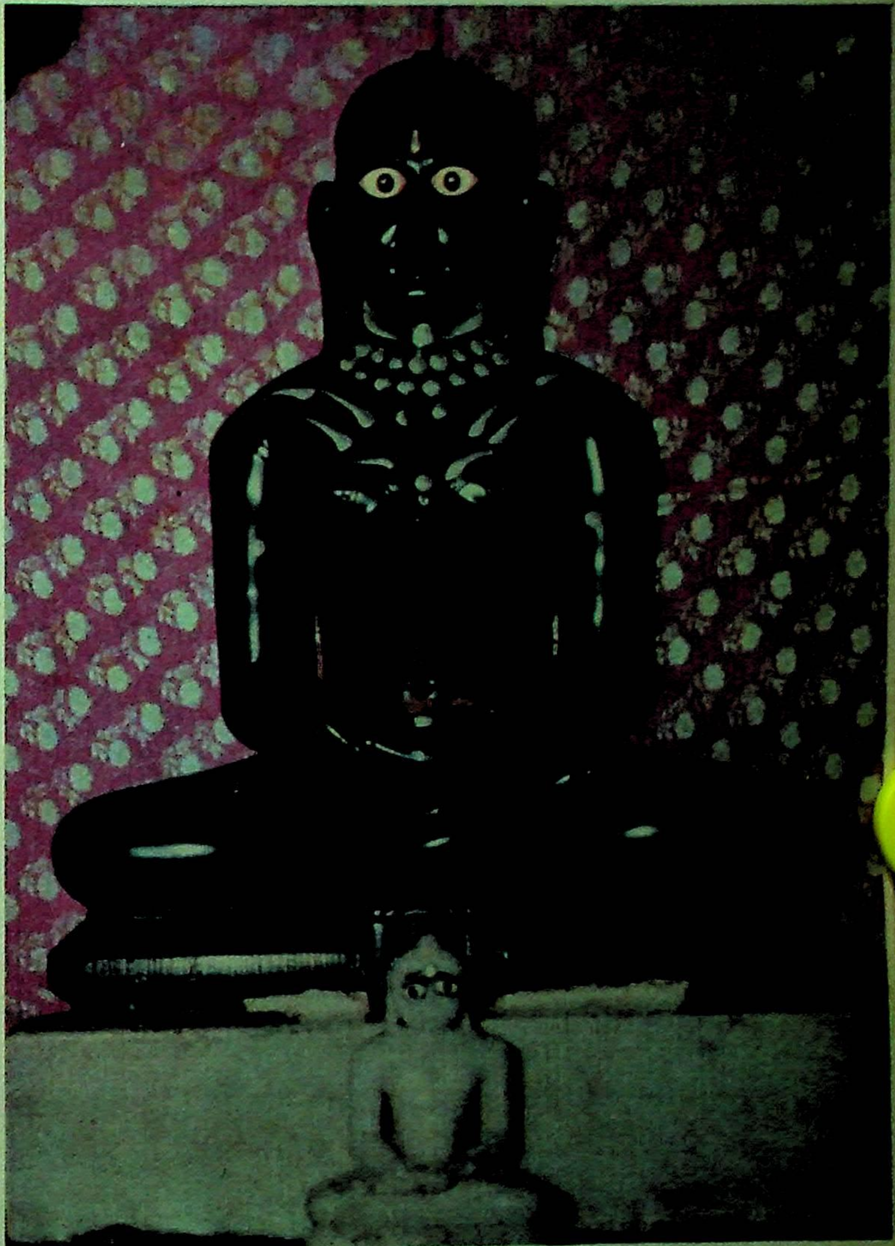
तीर्थ स्थल * यमुना नदी किनारे बसे वटेश्वर से पहाड़ी रास्ते १.५ कि० मी० दूर प्राचीन गाँव सौरीपुर में।

प्राचीनता * श्वेताम्बर शास्त्रानुसार हरिवंश में यदु नाम का प्रतापी राजा हुआ। राजा यदु से यादव वंश चला। राजा यदु के पौत्र सोरी व वीर नामक दो बंधुओं ने अपने नाम पर सौरीपुर व सोवीर नगर बसाये। सोरी के पुत्र अधंक वृष्णि हुए, जिनकी पट्टरानी भाद्रा की कुक्षी से समुद्रविजय, वसुदेव, वगैरह दस पुत्र व कुन्ती, माद्री नाम की दो कन्याएँ हुईं। वीर के पुत्र भोजकवृष्णि हुए। भोजकवृष्णि के पुत्र उग्रसेन व उनके पुत्र बंधु, सुबंधु व कंस वगैरह ६ भाई एवं देवकी व राजुलमती दो पुत्रियाँ हुईं। समुद्रविजय सौरीपुर में व उग्रसेन मथुरा में राज्य करते थे। समुद्रविजयजी के भाई वसुदेवजी के दो पुत्र श्री कृष्ण व बलराम हुए।

श्री समुद्रविजयजी की पटराणी शिवादेवी ने कार्तिक कृष्णा १२ के रात्रि के अंतिम पहर में तीर्थंकर जन्म सूचक महास्वप्न देखे। उसी समय शंख का जीव आठवाँ भव पूर्ण करके शिवादेवी की कुक्षी में प्रविष्ट हुआ। इस शुभ अवसर पर इन्द्रादि देवों द्वारा च्यवन कल्याणक दिवस धूमधाम से मनाया गया।

क्रम से नव महीने व आठ दिन पूर्ण होने पर श्रावण शुक्ला पंचमी के शुभ दिन चित्रा नक्षत्र में शिवादेवी ने श्याम वर्ण और शंख लक्षण वाले पुत्र रत्न को जन्म दिया। छप्पन दिक्-कुमारियाँ व इन्द्र इन्द्राणियों द्वारा प्रभु का जन्म कल्याणक मनाया गया। राजा समुद्रविजयजी ने भी पुत्र-जन्म की खुशी में राज्य दरबार में जन्मोत्सव का आयोजन किया। शिवादेवी ने गर्भकाल में अरिष्टरत्नमयी चक्रधारा देखी थी। इसलिए पुत्र का नाम "अरिष्ट नेमि" रखा गया।

वर्तमान चौवीसी के बाईसवें तीर्थंकर श्री अरिष्ट नेमि भगवान हुए, जिन्हें श्री नेमिनाथ भगवान भी कहते हैं। प्रभु



श्री नेमिनाथ भगवान (श्वे० मन्दिर) सौरीपुर

सहायक : शाह जोधाजी मनीरामजी, माण्डवला (राज०) वाले, मद्रास–१

की च्यवन व जन्म कल्याणक भूमि रहने के कारण यह पावन तीर्थ-धाम बना।

पुराने जमाने में यह एक विराट नगरी थी। इनके अन्य नाम सोरियपुर व सूर्यपुर भी शास्त्रों में आते हैं। वर्तमान बटेश्वर भी इसी नगरी का अंग था। जब महावीर यहाँ पधारे तब यहाँ सोर्यदत्त नाम का राजा राज्य करता था–ऐसा उल्लेख है।

आचार्य श्री बप्पभट्टसूरीश्वरजी द्वारा मथुरा में उद्धार करवाते वक्त सौरीपुर में भी उद्धार करवाने का उल्लेख है। आचार्य श्री विमलचन्द्रसूरीश्वरजी, श्री उद्योतनसूरिजी, श्री नेमिचन्द्रसूरिजी, श्री देवेन्द्रसूरिजी आदि अनेकों प्रकाण्ड आचार्यगण यहाँ यात्रार्थ पधारे थे।

चौदहवीं सदी में आचार्य श्री जिनप्रभसूरीश्वरजी द्वारा रचित 'विविध तीर्थ कल्प' में यहाँ शंख राजा द्वारा उद्धार कराये गये जिनालय में श्री नेमिनाथ भगवान की प्रतिमा रहने का उल्लेख हैं।

श्री 'हीरसौभाग्य' महाकाव्य के रचनाकार श्री सिंहविमल-गणी के पिता संघवी श्री सेहिल द्वारा सतरहवीं शताब्दी में श्री नेमिनाथ प्रभु की प्रतिमा भरवाने का उल्लेख है, जिसकी अंजनशलाका व प्रतिष्ठा विक्रम सं० १६४० में आचार्य श्री विजयहीरसूरीश्वरजी के सुहस्ते हुई। सं० १६६२ में आचार्य श्री विजयसूरीश्वरजी के शिष्य उपाध्याय कल्याण-

श्री नेमिनाथ जिनालय (दि०) सौरीपुर



विजयजी व उनके शिष्य श्री जयविजयजी यात्रार्थ पधारे। तब यहाँ ७ श्वेताम्बर मन्दिर रहने का उल्लेख है।

उसके पश्चात् भी अनेकों आचार्यों व मुनि महाराजों का यहाँ पदार्पण हुआ व अनेकों संघ यात्रार्थ आये।

दिगम्बर मान्यतानुसार भी भगवान नेमिनाथ के च्यवन व जन्म कल्याणक यहाँ हुए, परन्तु भगवान का जन्म वैशाख शुक्ला १३ के दिन चित्रा नक्षत्र में हुआ माना जाता है।

यादवकुलतिलक भगवान श्री नेमिनाथ के इन दो कल्याणकों के अतिरिक्त यहाँ पर कई अन्य मुनियों को केवलज्ञान व निर्वाण हुआ माना जाने के कारण यह परम पवित्र पावन तीर्थ है।

विशिष्टता * वर्तमान चौवीसी के बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान के च्यवन व जन्म कल्याणक इस पवित्र पावन भूमि में होने के कारण यहाँ की महान विशेषता है।

चरम तीर्थंकर भगवान महावीर का भी यहाँ पदार्पण हुआ था। कहा जाता है यहाँ सौर्यावितसक उद्यान में भगवान महावीर ने एक माछीमार को उसके पूर्व जन्म का वृत्तान्त बताकर प्रतिबोधित किया था।

दिगम्बर शास्त्रानुसार श्री आदीश्वर भगवान, श्री पार्श्वनाथ भगवान व श्री महावीर भगवान के पावन विहार से भी यह भूमि पावन बनी है।

श्री सुप्रतिष्ट, श्री धान्यकुमार, श्री अलसतकुमार आदि महामुनियों की यह तपोभूमि व निर्वाण-भूमि है। भगवान महावीर के समय यम नामक एक अन्तः कृत केवली यहीं से मोक्ष सिधारे। दिगम्बर विद्वान आचार्य श्री प्रभाचन्द्र के गुरु आचार्य श्री लोकचन्द्र यहीं हुए। आचार्य श्री प्रभाचन्द्र ने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ "प्रमेयकमलमार्तण्ड" की रचना यहीं की थी। दानी कर्ण की भी यह जन्म भूमि है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इन दिगम्बर व श्वेताम्बर दो मन्दिरों के अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है। वटेश्वर में एक दिगम्बर मन्दिर है।

कला और सौन्दर्य * यहाँ ध्वंसावशेषों में से अनेकों प्राचीन वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। सर कनिंगहम् ने यहाँ टेकरियों में अनेक प्राचीन अवशेष, खण्डहर मन्दिर आदि होने का संकेत किया है।

यहाँ से अनेक प्राचीन शिलालेख, प्रतिमाएँ, ताम्र-सिक्के आदि सं० १८७० में आगरा ले जाने का उल्लेख है। अगर शोध-कार्य किया जाय तो अभी भी इन टीलों में अनेकों प्राचीन सामग्री प्राप्त होने की सम्भावना है।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का बड़ा रेलवे स्टेशन आगरा फोर्ट ७५ कि० मी० दूर है। नजदीक के रेलवे स्टेशन शिकोहाबाद से २५ कि० मी० वाह के रास्ते वटेश्वर होकर आना पड़ता है। वटेश्वर से ५ कि० मी० व वाह से ८ कि० मी० यह स्थल दूर है। आगरा व शिकोहाबाद से वटेश्वर के लिए



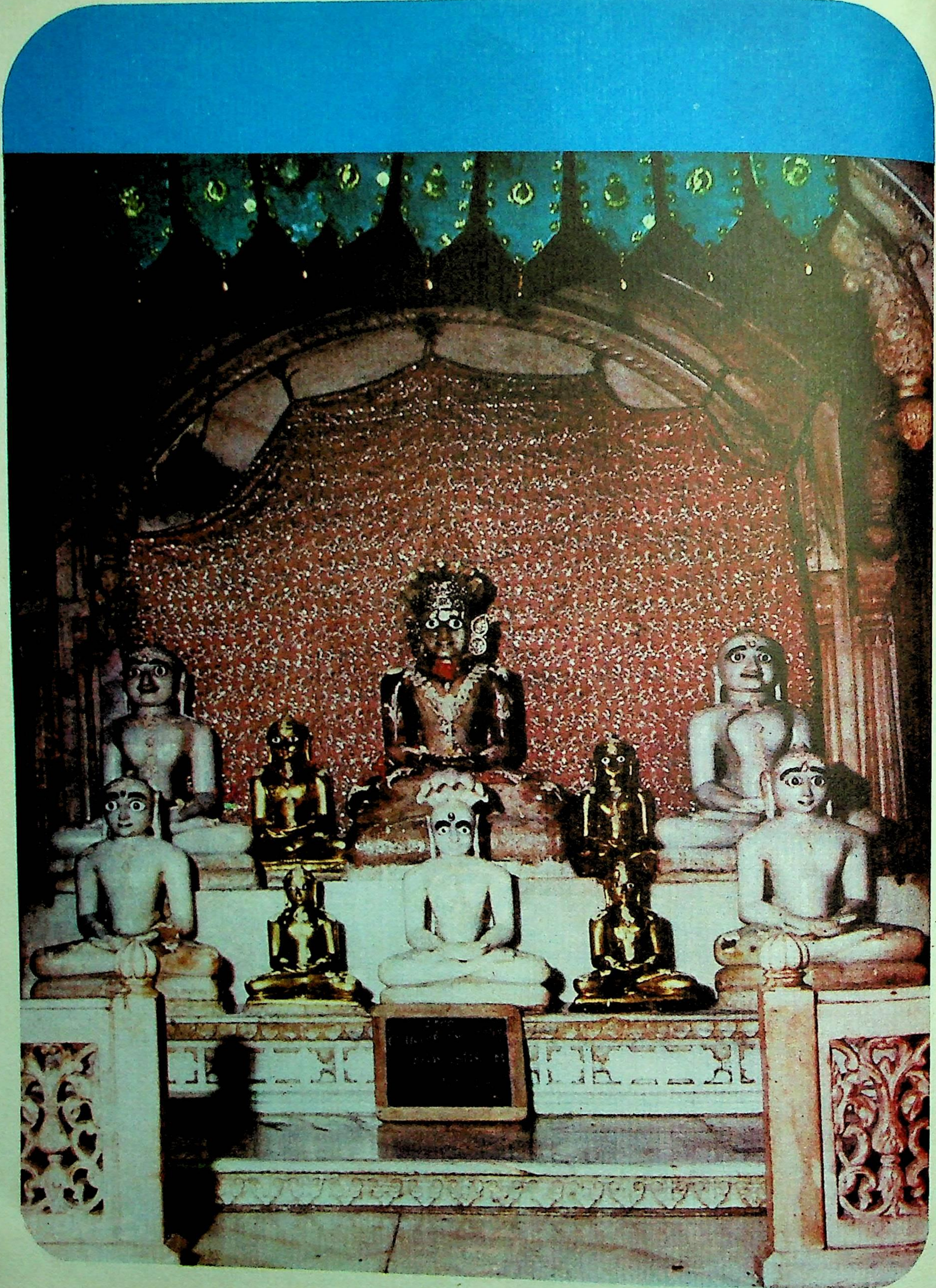
श्री नेमिनाथ भगवान (दि०) सौरीपुर

बस व टैक्सी की सुविधा है। वटेश्वर से रास्ता कच्चा है, लेकिन बस व कार जा सकती हैं। रास्ता जंगली रहने के कारण सुरक्षात्मक दृष्टि से दिन में ही जाना बेहतर है। आगरा ठहरकर ही यहाँ आना सुविधाजनक है।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए मन्दिरों के निकट श्वेताम्बर व दिगम्बर धर्मशालाएँ है, जहाँ पानी व बर्तन की सुविधा है।

पेढ़ी * १. श्री सौरीपुर श्वेताम्बर तीर्थ पेढ़ी। सौरीपुर : डाक घर – वटेश्वर : जिला – आगरा : प्रान्त – उत्तर प्रदेश : तार घर – वटेश्वर :

२. श्री शौरीपुर – वटेश्वर दि० जैन सिद्ध क्षेत्र कमेटी, सौरीपुर : डाक घर – वटेश्वर।



श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान–आगरा

श्री आगरा तीर्थ

तीर्थाधिराज ❋ चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ।

तीर्थ स्थल ❋ यमुना नदी के तटपर स्थित आगरा शहर के रोशन मोहल्ले में।

प्राचीनता ❋ इस शहर का इतिहास प्राचीन है। शिलालेखों में उग्रसेनपुर, अर्गलपुर आदि नामों का उल्लेख है। पुराण-काल में इस स्थान को अग्रवन भी कहते थे। वि० सं० पूर्व २०६ से १६६ तक यह नगर सम्राट अशोक के अधिकार में रहने का उल्लेख मिलता है। परन्तु इतने प्राचीन कलात्मक अवशेष आज यहाँ उपलब्ध नहीं हैं। संभवतः कालक्रम से भूकंप या किसी कारणवश यह क्षेत्र ध्वस्त हुआ होगा।

वि० की पन्द्रहवीं सदी में विध्वंस हुए इस स्थान पर बहलोल लोदी ने पुनः नगर बसाना प्रारंभ किया व उनके पुत्र सिकन्दर लोदी ने इसको भारत का पाटनगर बनाया। तब इस क्षेत्र का पुनः रूप बदला.

सम्राट अकबर के समय आचार्य श्री हीरविजयसूरीश्वरजी का विक्रम सं० १६३९ में यहाँ पदार्पण हुआ। उस समय यहाँ अनेकों जैन मन्दिरों की आचार्य श्री के सुहस्ते प्रतिष्ठा होने के उल्लेख तीर्थ-मालाओं में मिलते हैं।

चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान की यशब नामक कीमती पोषाण से निर्मित इस अलौकिक प्रतिमा की प्रतिष्ठा राज्य-सम्मान प्राप्त श्रेष्ठी श्री मानसिंहजी द्वारा परमपूज्य जगतगुरु आचार्य श्री हीरविजयसूरीश्वरजी के सुहस्ते वि० सं० १६३९ में विराट महोत्सव के साथ सम्पन्न हुई थी।

पास ही चौक में सभामण्डप के बीच श्री शीतलनाथ भगवान की श्यामवर्णी चमत्कारिक भव्य प्राचीन प्रतिमा विराजमान हैं, जो यहाँ के एक मस्जिद में से प्राप्त हुई थी जिसे श्वेताम्बराचार्य के सुहस्ते प्रतिष्ठित करवाया गया।

विशिष्टता ❋ सम्राट अकबर ने तपस्विनी श्राविका श्री चंपा के मुख से जैनाचार्य श्री हीरविजयसूरीश्वरजी की विद्वता के बारे में सुना तो सम्राट को सूरिजी के दर्शन की तीव्र अभिलाषा हुई। तुरन्त ही बादशाह ने आचार्य श्री को फतेहपुर सीकरी पधारने के लिए अपने अहमदाबाद के सूबेदार मार्फत आमंत्रण भेजा। उस समय आचार्य श्री गंधार विराजते थे। आचार्य श्री ने धर्म प्रभावना के अनेकों कार्य होने की सम्भावना समझकर श्री संघ की अनुमति से मंजूरी प्रदान की व अपने शिष्ट मण्डल सहित विहार करके फतेहपुर-सीकरी होते हुए बादशाह के अति आग्रह से वि० सं० १६३९ के ज्येष्ठ माह में आगरा पहुँचे। तब इसी मन्दिर के उपाश्रय में ठहरे थे। कहा जाता है कि सम्राट अकबर आचार्य श्री से मिलने यहीं पर आया करते थे।

अकबर बादशाह ने आचार्य श्री के उपदेश से जैन तत्त्व से प्रभावित होकर जीव-हिंसा बन्द करने आदि अनेकों विषयों पर फरमान जारी किये थे, जो अभी भी उपलब्ध हैं।

आचार्य श्री को यहीं पर राज दरबार में ससम्मान जगतगुरु पद से विभूषित किया था। सम्राट अकबर के पास स्थित अमूल्य ग्रन्थ-भन्डार आचार्य श्री को भेंट प्रदान किया था, जो इस उपाश्रय मे विद्यमान है। आचार्य श्री ने धर्म-प्रभावना के अनेकों विशिष्ट कार्य किये जो सदियों तक याद दिलाते रहेंगे।

अकबर के दरबार में सम्मान प्राप्त श्रेष्ठी श्री मानसिंह, संघवी चन्द्रपाल श्री हीरानन्द, थानसिंह, दुर्जनशल्य आदि श्रावकों ने अनेकों मन्दिर बनवाये थे, जिनकी प्रतिष्ठा आचार्य विजयहीरसूरीश्वरजी के सुहस्ते सम्पन्न हुई थी। जहाँगीर के मंत्री कुँवरपाल व सोनपाल ने भी यहाँ श्री श्रेयाँसनाथ भगवान का विशाल मन्दिर बनवाकर अंचलगच्छीय आचार्य श्री के हाथों प्रतिष्ठा करवाई थी। इन्होंने और भी अनेकों प्रशंसनीय कार्य किये जो सं० १६७१ के शिलालेख में उत्कीर्ण हैं। यह शिलालेख आज भी उपाश्रय में मोजूद है।

सम्राट अकबर के पुत्र जहाँगीर व पौत्र शाहजहाँ ने भी आचार्य श्री हीरविजयसूरीश्वरजी के शिष्य-प्रशिष्यों को अपने दरबार में धर्मगुरु माना था।

उपरोक्त वर्णनों से सिद्ध होता है कि यहाँ धर्म-प्रभावना के अनेकों कार्य हुए, जो उल्लेखनीय हैं।

अन्य मन्दिर ❋ वर्तमान में इसके अतिरिक्त यहाँ १२ श्वेताम्बर मन्दिर व कई दिगम्बर मन्दिर भी हैं। शहर के बाहर एक विशाल दादावाड़ी है, जिसे श्री हीरविजयसूरीश्वरजी की दादावाड़ी कहते हैं।

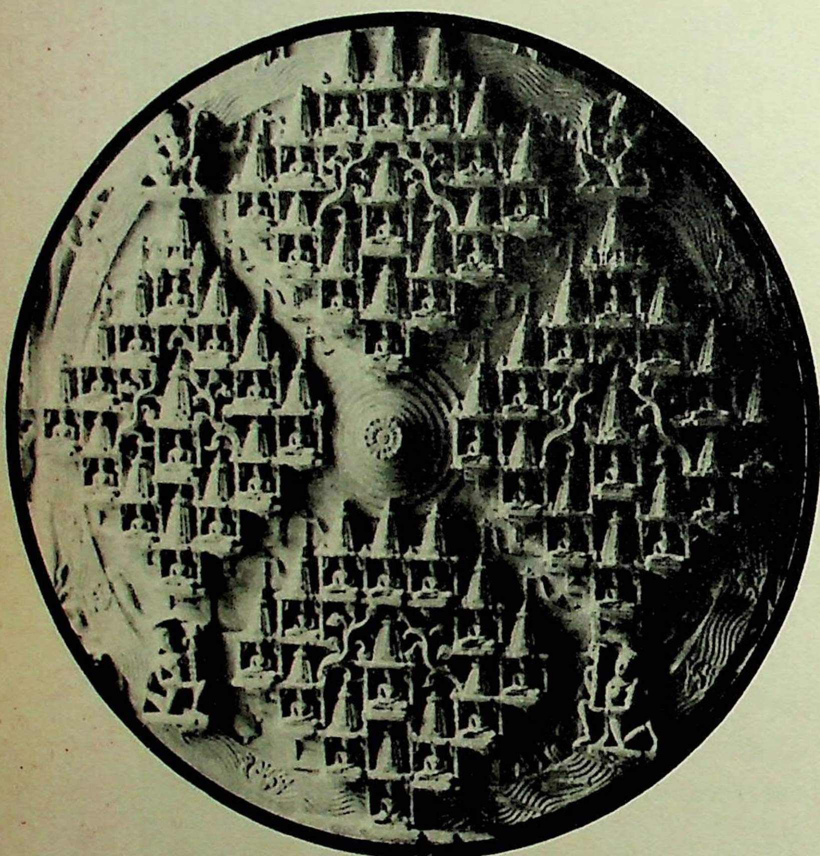
कला और सौन्दर्य ❋ विशिष्ट पाषाण में निर्मित श्री चिन्तामणि पार्श्व प्रभु की प्रतिमा अति ही सुन्दर व प्रभावशाली है।

श्री शीतलनाथ भगवान की प्रतिमा की कला भी अति ही मनमोहक है, लगता है जैसे प्रभु साक्षात विराजमान हैं। यहाँ का मण्डप भी कला में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

मार्ग दर्शन ❋ आगरा फ़ोर्ट रेलवे-स्टेशन से यह मन्दिर लगभग एक कि० मी० है। स्टेशन पर टैक्सी व ताँगों की सुविधा है। मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ ❋ ठहरने के लिए गाँव में श्वेताम्बर व दिगम्बर धर्मशालाएँ हैं, जहाँ बिजली, पानी की सुविधा उपलब्ध है।

पेढ़ी ❋ श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान श्वेताम्बर जैन मन्दिर पेढी, आचार्य विजयसूरीश्वरजी का उपाश्रय, रोशन मोहल्ला : डाक घर – आगरा : जिला – आगरा : प्रान्त – उत्तरप्रदेश : तार घर – आगरा :



हिमाचल प्रदेश

Himachal Pradesh



श्री काँगड़ा तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री आदीश्वर भगवान, पद्मासनस्थ।

तीर्थ स्थल * रावि व सतलज नदी के संगम-स्थान पर काँगड़ा गाँव के बाहर सुरम्य पहाड़ी पर के प्राचीन दुर्ग में।

प्राचीनता * यह तीर्थ क्षेत्र वर्तमान चौवीसी के बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान के समय का है।

शास्त्रों में इस नगरी का प्राचीन नाम सुशर्मपुर रहने का उल्लेख है। कहा जाता है महाभारत युद्ध के समय राजा श्री सुशर्मचन्द्र ने राजा दुर्योधन की तरफ से विराट नगर पर चढाई की थी। महायुद्ध में पराजय होने के कारण इस प्रदेश में आकर अपने नाम से नगर बसाया था। तब जिन मन्दिर का निर्माण करवाकर श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा को प्रतिष्ठित करवाया था। श्री नेमिनाथ भगवान के समय राजा श्री सुशर्मचन्द्र द्वारा यहाँ श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाने का 'वेद्य प्रशस्ति' में व सं० १४८४ में श्री जयसागर उपाध्याय जी द्वारा रचित 'विज्ञप्ति त्रिवेणी' में भी उल्लेख मिलता है।

काँगड़ा के प्राचीन नाम भीमकोट व भीमनगर भी रहने का उल्लेख मिलता है। 'विज्ञप्ति त्रिवेणी' में इसे 'अंगदक महादुर्ग' भी बताया है। आज इसे नगरकोट किला भी कहते हैं। मुगल बादशाहों के राज्यकाल में काँगड़ा नाम पड़ा होगा, ऐसा प्रतीत होता है।

श्री जयसागर उपाध्यायजी द्वारा सं० १४८४ में रचित 'विज्ञप्ति त्रिवेणी' में उस समय यहाँ ४ मन्दिर रहने का उल्लेख है। उसके बाद सं० १४९७ में रचित 'नगरकोट चैत्य परि-पाटी' में यहाँ ५ मन्दिर रहने का उल्लेख है। अन्य तीर्थ-मालाओं में भी यहाँ सं० १६३४ तक मन्दिर रहने के उल्लेख हैं। कालक्रम से उसके पश्चात् यहाँ के मन्दिरों को किसी वक्त क्षति पहुँची होगी। वर्तमान में यहाँ यही एक प्राचीन मन्दिर है, जहाँ कटौच राजवंश द्वारा सदियों तक पूजित श्री आदीश्वर भगवान की विशालकाय भव्य प्रतिमा के दर्शन का लाभ मिलता है।

विशिष्टता * यह तीर्थ-क्षेत्र श्री नेमिनाथ भगवान के काल में राजा श्री सुशर्मचन्द्र द्वारा निर्माणित होने के कारण यहाँ की महान विशेषता है। प्राचीन काल में यह एक बड़ा वैभव संपन्न जैन तीर्थ क्षेत्र था व अनेकों यात्रा संघ यहाँ दर्शनार्थ आते रहते थे। आज भी यहाँ पर उपलब्ध प्राचीन मन्दिरों के ध्वंसावशेष पूर्व काल की याद दिलाते हैं। कटौच राजवंश ने शताब्दियों तक इस तीर्थ को पूजा। पश्चात् शताब्दियों तक यह क्षेत्र ओझल रहा। पाटण भन्डार में उपलब्ध 'विज्ञप्ति त्रिवेणी' नामक ग्रन्थ में इस तीर्थ का उल्लेख देखकर मुनि श्री

श्री आदिनाथ भगवान–काँगड़ा



सहायक : १. श्री वी. नेमीचन्दजी हीराचन्दजी सराफ़, मायुरम (तमिलनाडु) २. श्री वस्तीमलजी चन्दनमलजी पारख, मद्रास–१३. ३. श्री मदनचन्दजी चन्द्रकुमारजी कोचर, ईरोड (तमिलनाडु) ४. मेसर्स. बागमल एन्ड को०, सेलम (तमिलनाडु)।

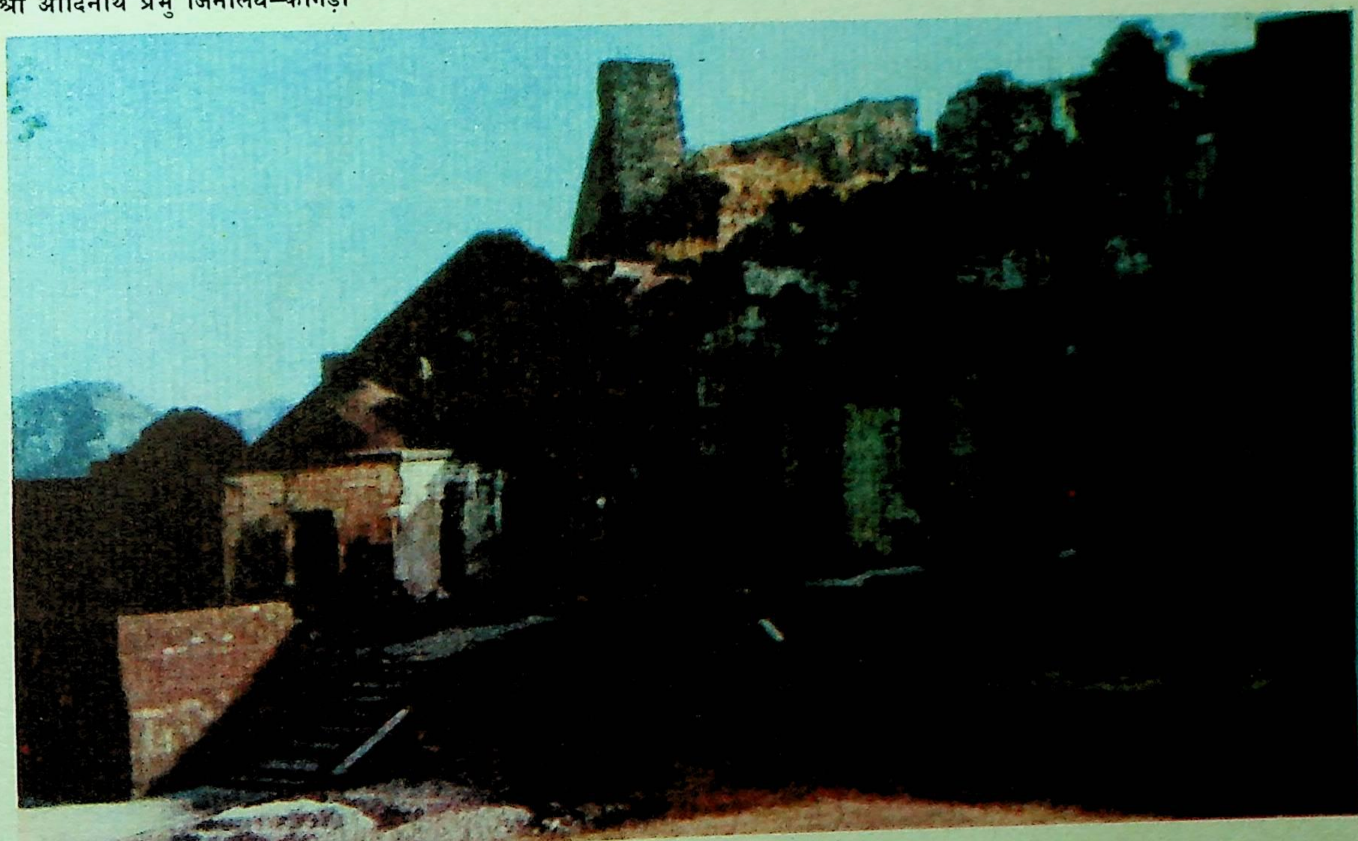
जिनविजयजी ने आचार्य श्री विजयवल्लभसूरीश्वरजी से जानकारी पाकर इस तीर्थ की खोज की, जिससे सं० १९४७ से पुनः यात्रा संघों का आवागमन प्रारम्भ हुआ। प्रतिवर्ष फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशी से पूर्णिमा तक मेला भरता है। उक्त अवसर पर प्रतिवर्ष होशियारपुर से यात्रासंघ में हजारों भक्तगण आकर प्रभु-भक्ति में तल्लीन होते हैं।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में इसके अतिरिक्त यहाँ कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य ✻ यह क्षेत्र पर्वत की हरी-भरी घाटियों, हिमालय की बर्फीली चोटियों व नदी-नालों से सुशोभित है। यहाँ से हिमालय का प्राकृतिक दृश्य देखते ही बनता है।

यहाँ के खण्डित मन्दिरों में प्राचीन कला के नमूने नजर आते हैं। मूलनायक प्रतिमा की कला विशिष्ट शोभायमान है।

श्री आदिनाथ प्रभु जिनालय—काँगड़ा



मार्ग दर्शन ✻ काँगड़ा रेलवे स्टेशन से यहाँ की जैन-धर्मशाला लगभग १.५ कि० मी० है। जहाँ से लोकल बस का साधन है। नदी के समीप चुंगी स्थान पर उतर ज़ाना चाहिये, जहाँ से जैन धर्मशाला जाने के लिये सिर्फ ७ मिनट का पैदल रास्ता है। किले के समीप ही धर्मशाला है। धर्मशाला तक पक्की सड़क है। कार व बस जा सकती हैं। होशियारपुर से यह स्थान लगभग १०२ कि० मी० दूर है। होशियारपुर से भी बस व टैक्सी का साधन है। पठानकोट से रेल-मार्ग द्वारा सीधा काँगड़ा पहुँचा जा सकता है। बस स्टैण्ड से तीर्थ-स्थान की दूरी लगभग ४ कि० मी० है। जैन धर्मशाला पहुँचने पर डोली का साधन हो सकता है।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए किले के समीप ही धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली व भोजनशाला की व्यवस्था है।

पेढ़ी ✻ श्री श्वेताम्बर जैन काँगड़ा तीर्थ-यात्रा संघ पेढ़ी, जैन धर्मशाला : काँगड़ा किले के सम्मुख : डाक घर – काँगड़ा : जिला – धर्मशाला : प्रान्त – हिमाचल प्रदेश : तार घर – काँगड़ा।

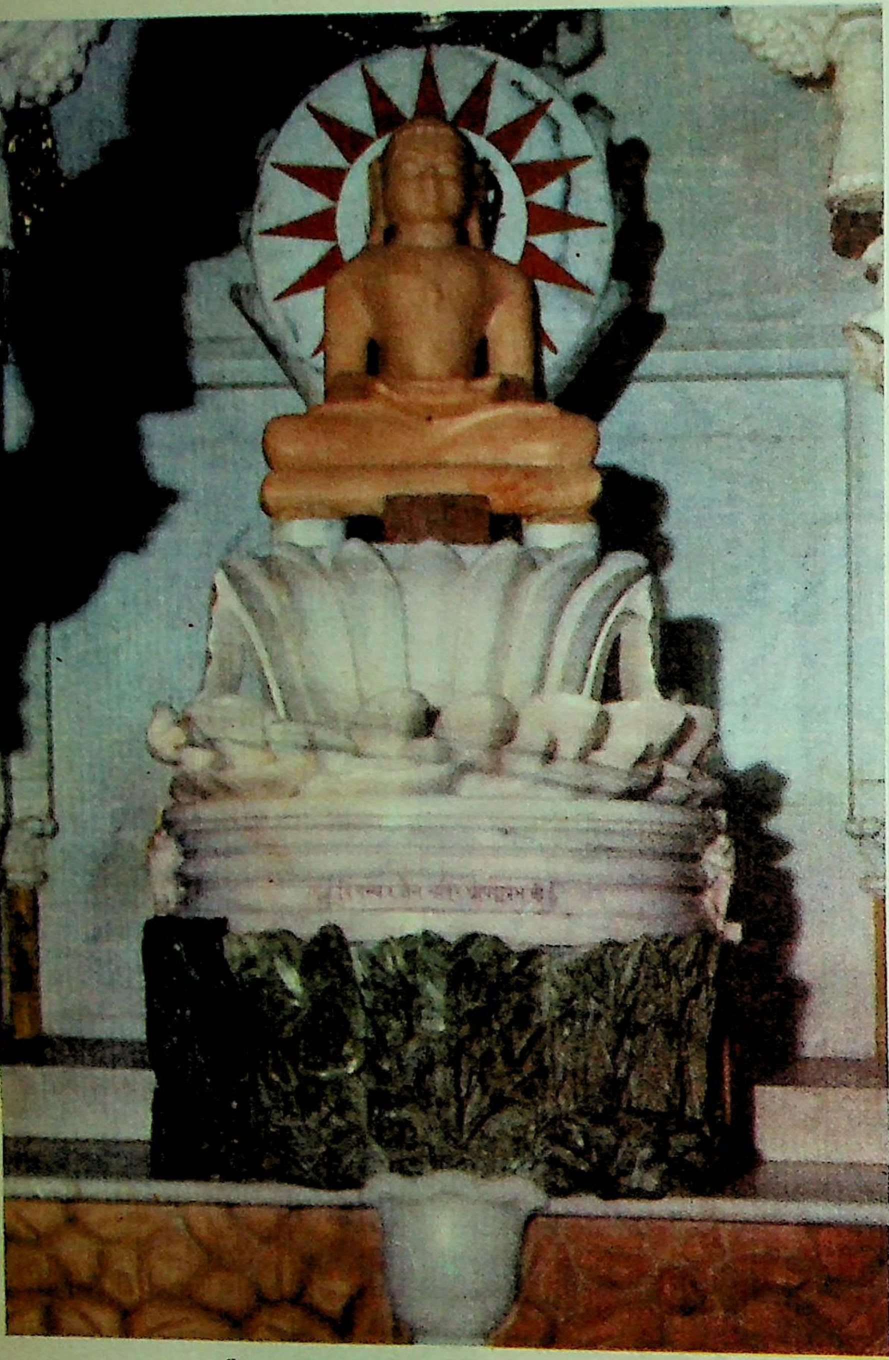
★

राजस्थान



Rajasthan
A
25 26 27 28 29 30
31 32 33 34 35 36
37 38 40 43 59
B
39 41 42 44 45 46 47 48 49 50 51
52 53 54 55 56 57 58 60 61 62
67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77
GANGANAGAR
CHURU
BIKANER
JHUNJHUNU
SIKAR
ALWAR
BHARATPUR
NAGAUR
JAIPUR
JAISALMER
JODHPUR
AJMER
TONK
SAWAI MADHOPUR
PALI
BARMER
JALOR
BHILWARA
BUNDI
KOTA
SIROHI
CHITTAURGARH
JHALAWAR
UDAIPUR
DUNGARPUR
BANSWARA
JAIN PILGRIM CENTRES
STATE CAPITAL
DISTRICT HEADQUARTERS
DISTRICT BOUNDARIES

श्री पद्मप्रभुजी तीर्थ



श्री पद्मप्रभ भगवान–पद्मपुरा

तीर्थाधिराज * श्री पद्मप्रभ भगवान, पद्मासनस्थ, गुलाबी वर्ण, कमल के फूल पर सुशोभित लगभग ६७ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * छोटे से बाड़ा गाँव के बाहर।

प्राचीनता * इस गाँव का इतिहास प्राचीन नहीं है। परन्तु यह अलौकिक व चमत्कारिक प्राचीन प्रभु-प्रतिमा यहाँ भूगर्भ से प्रकट होने के कारण इस क्षेत्र का इतिहास भी प्राचीन माना जा सकता है। क्योंकि यह स्पष्ट होता है कि किसी समय यहाँ मन्दिर रहे होंगे। वि० सं० २००१ वैशाख शुक्ला पंचमी के शुभ प्रातः के समय किसान परिवार के दो भाग्यवान माता व पुत्र को अपने खेत में खोदते वक्त इस प्रतिमा के दर्शन हुए। किसान-परिवार फूला न समाया व अपने आप को धन्य समझने लगा। नजदीक के चबूतरे पर छोटे से मन्दिर का रूप देकर प्रतिमा वहाँ विराजित की गयी, जहाँ १८ वर्षों तक रही। तत्पश्चात् वि० सं० २०१६ में इस भव्य व विशाल मन्दिर में प्रतिष्ठित किया गया। प्रतिष्ठा-महोत्सव पर राजस्थान के राज्यपाल श्री सरदार हुकुमसिंहजी भी उपस्थित थे।

विशिष्टता * प्रभु-प्रतिमा अति ही चमत्कारिक है। जब से यह प्रतिमा प्रकट हुई उसी दिन से यात्रियों की अत्यन्त भीड़ आने लगी। अनेकों की मान्यता थी कि यहाँ आने पर भूत-प्रेतों से कष्ट सहनेवाले भक्तगण बिना उपचार छुटकारा पाते हैं। यह वृत्तान्त दिन-प्रतिदिन फैलने लगा व इस व्याधि से पीड़ित व अन्य लोग दिन-प्रति दिन ज्यादा संख्या में आने लगे। अभी भी हमेशा अनेकों भक्तगण आते रहते हैं व अपना मनोरथ पूर्ण करते हैं। आज तक अनेकों ने इस उपद्रव से छुटकारा पाया है। यहाँ के मन्दिर की बनावट व मन्दिर के के हद की विशालता शायद भारत में बेजोड़ है। इस ढंग का निर्मित मन्दिर अन्यत्र नहीं है।

अन्य मन्दिर * जहाँ प्रतिमा प्रकट हुई थी, वहाँ छतरी बनी हुई है व जहाँ यह प्रतिमा १८ वर्ष रही वहाँ चबूतरा अभी भी कायम है।

कला और सौन्दर्य * कमल के फूल पर विराजित प्राचीन इस ढंग की पद्मप्रभ भगवान की प्रतिमा के दर्शन अन्यत्र दुर्लभ हैं। मन्दिर की निर्मित कला बिलकुल अनूठे ढंग की है, जो अति ही दर्शनीय है। अन्दर गोल आकार का विशाल सभा-मण्डप भी अन्यत्र देखने नहीं मिलेगा।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन जयपुर-सवाई माधोपुर ब्राँच लाइन पर शिवदासपुरा (पद्मपुरा) ६ कि० मी० दूर है। शिवदासपुरा (पद्मपुरा) स्टेशन से

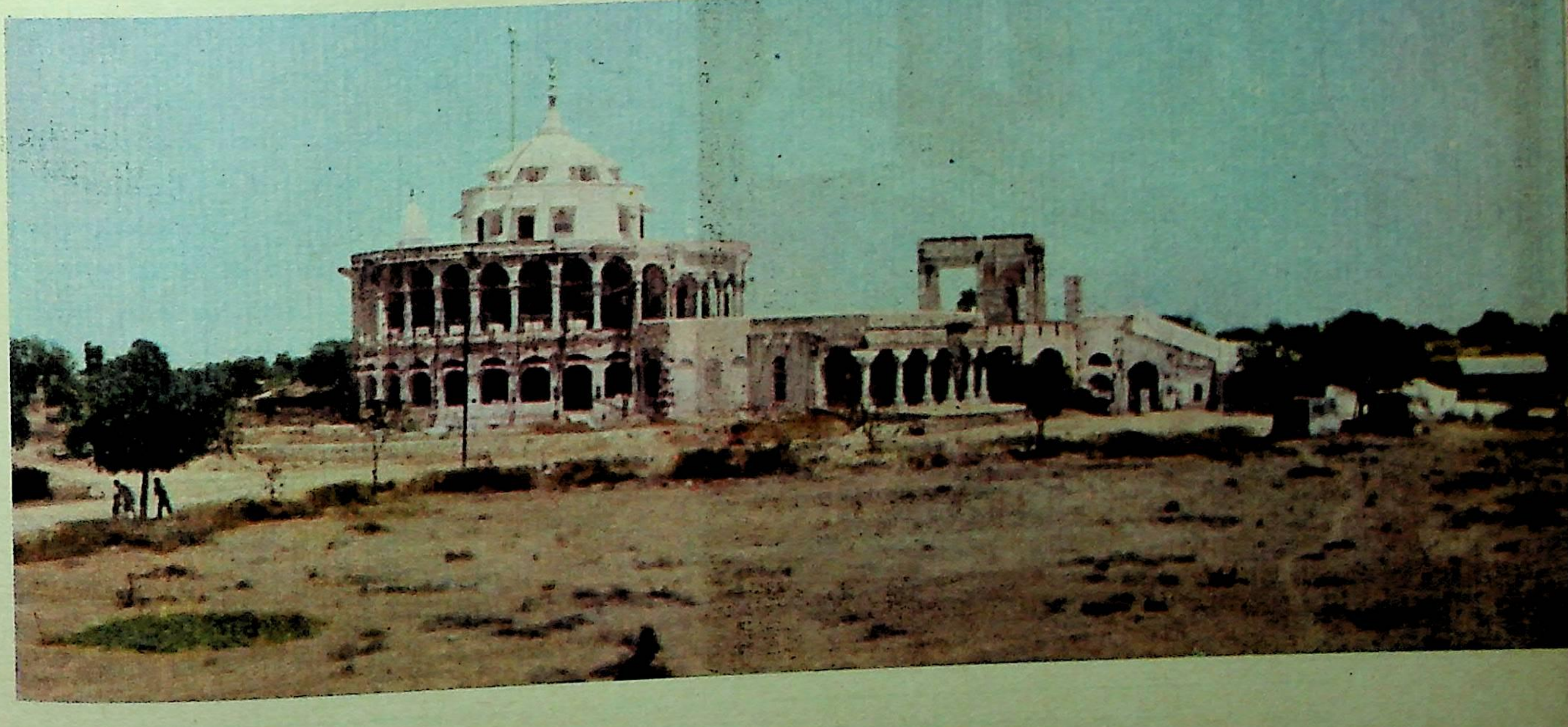
सहायक : श्री चुनीलालजी पारसमलजी गादिया, चिंगलपेट (तमिलनाडु)

बस की सुविधा है। यहाँ जयपुर-टोंक मुख्य सड़क मार्ग पर शिवदासपुरा होकर आना पड़ता है। जयपुर यहाँ से ३४ कि० मी० व शिवदासपुरा ६ कि० मी० दूर है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। आखिर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ ⁕ ठहरने के लिए विशाल धर्मशाला का निर्माण हुआ है जहाँ भोजनशाला के अतिरिक्त सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

पेढ़ी ⁕ श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा : डाक घर – बाड़ा, पद्मपुरा : जिला – जयपुर : प्रान्त – राजस्थान।

श्री पद्मप्रभ जिनालय–पद्मपुरा



श्री महावीरजी तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री महावीर भगवान, ताम्र वर्ण, पद्मासनस्थ।

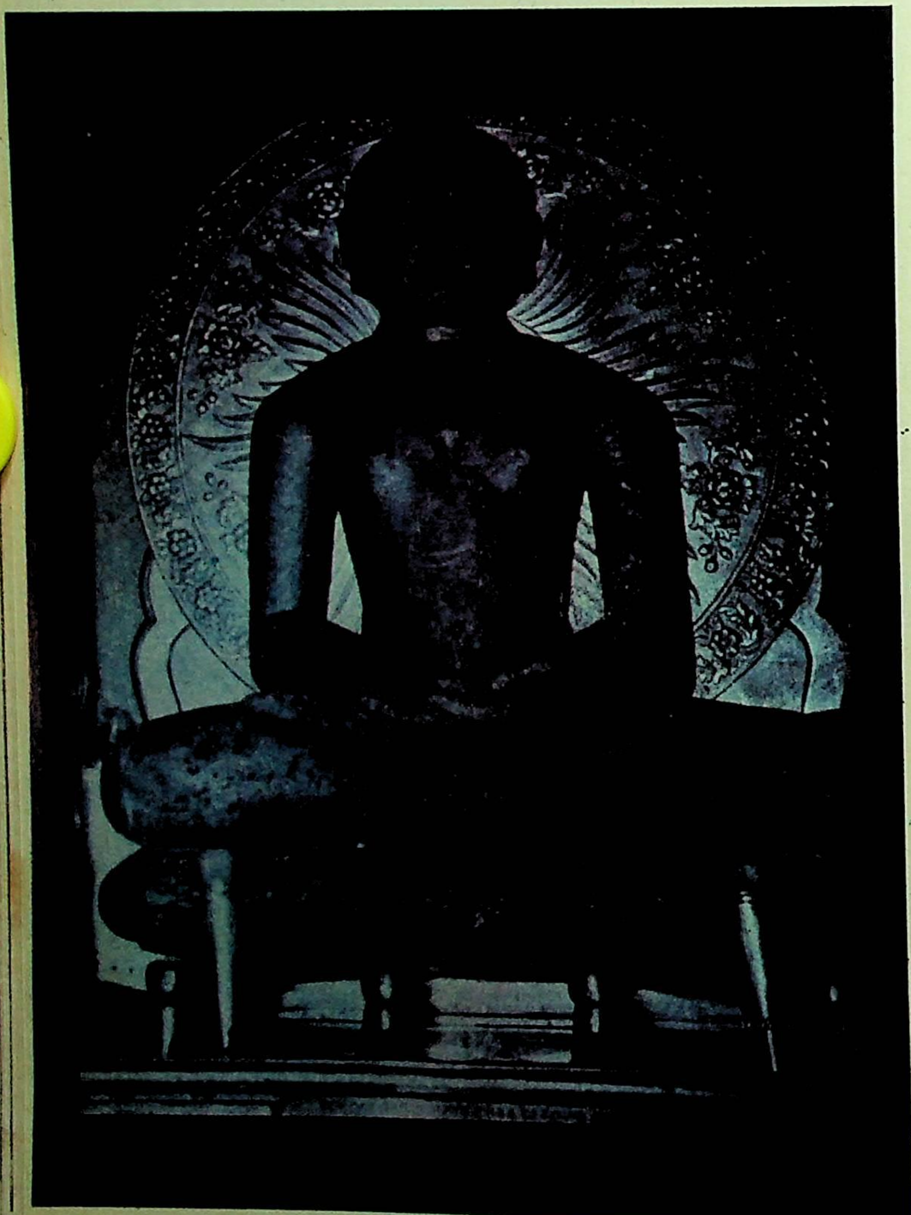
तीर्थ स्थल ✻ श्री महावीरजी (चान्दनपुर) गाँव के गंभीर नदी के तट पर।

प्राचीनता ✻ यह प्रतिमा सत्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी के बीच काल में इस मन्दिर के निकट एक टीले पर भूगर्भ से प्राप्त हुई मानी जाती है। प्रतिमाजी अति ही प्राचीन, शान्त, सुन्दर व प्रभावशाली है।

प्रतिमा-भूगर्भ से प्रकट होने पर भव्य मन्दिर का निर्माण हुआ व प्रतिष्ठित की गयी।

विशिष्टता ✻ भगवान श्री महावीर की यह प्राचीन प्रतिमा चमत्कारी घटनाओं के साथ प्रकट हुई थी। कहा जाता है एक चमार की गाय दूध नहीं दे रही थी। चमार द्वारा जाँच करने पर पता चला कि गाय निकट के एक टीले पर जाकर खड़ी होती है वहीं सारा दूध झर जाता है। चमार ने गाय को वहाँ जाने से रोकना चाहा लेकिन गाय नहीं रुक रही थी। चमार के दिल में अनेकों प्रकार की शंकाएँ होने लगीं। कुछ पता नहीं लग सका। आखिर टीले को खोदना शुरु किया, खोदते-खोदते प्रभु-प्रतिमा दृष्टिगोचर हुई। चमार ने भाव भक्ती के साथ सावधानी पूर्वक प्रकट हुई प्रतिमा को बाहर विराजमान किया। भाग्यवान चमार अपने को कृतार्थ समझने लगा। भगवान की प्रतिमा प्रकट हुए का वृत्तान्त चारों तरफ फैलने लगा व दूर-दूर से भक्त जनों की भीड़ उमड़ पड़ी। दर्शन मात्र से भक्तजनों की मनोकामनाएँ पूर्ण होती रहीं, जिससे दिन-प्रतिदिन भक्तजनों का आवागमन बढ़ने लगा। भव्य मन्दिर का निर्माण करवाकर प्रतिमाजी को प्रतिष्ठित किया गया। अभी भी हमेशा यात्रियों का आवागमन रहता है। भक्तजनों के कथनानुसार यहाँ आने से उन्हें अपार शान्ति का अनुभव होता है व मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। वार्षिक मेला चैत्र शुक्ला त्रयोदशी से वैशाख कृष्णा प्रतिपदा तक रहता है। इस अवसर पर लाखों की संख्या में जैन एवं जैनेतर भक्तजन, मीणे, गुजर एवं जाट आदि आकर भगवान के प्रति अपनी श्रद्धा-सुमन चढ़ाते हैं।

श्री महावीर भगवान—महावीरजी



यहाँ के अतिशय से प्रभावित होकर जयपुर राज्य के नरेशों ने प्रभु की पूजा, दीप, धूप आदि खर्च के लिए आलमगीरपुर-नौरंगाबाद गाँव अर्पण किया था—ऐसा उल्लेख है।

अन्य मन्दिर ✻ प्रभु-प्रतिमा भूगर्भ से जहाँ प्रकट हुई थी, उस स्थान पर एक छत्री में प्रभु के चरण स्थापित हैं।

कला और सौन्दर्य ✻ मन्दिर की निर्माण शैली अति ही रोचक है। मन्दिर के शिखर समूहों का दृश्य दूर से ही दिव्य नगरी सा प्रतीत होता है।

मार्ग दर्शन ✻ यहाँ का रेलवे स्टेशन श्री महावीरजी ७ कि० मी० दूर है, जहाँ बस व ताँगों की सुविधा है। बम्बई-दिल्ली मार्ग पर गँगापुर व हिन्डोन के बीच महावीरजी रेलवे स्टेशन है। दिल्ली से महावीरजी ३०५ कि० मी०, जयपुर व आगरा से १७५ कि० मी० दूर है। जयपुर-अजमेर व फिरोजाबाद से सीधी बसें हैं। जयपुर से महुवा, हिन्डोन, खेड़ा होकर महावीरजी आया जाता है। राजपथ संख्या ११ पर स्थित महुवा गाँव से ६० कि० मी० है।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए मन्दिर के चारों तरफ ६ धर्मशालाएँ हैं। सैकड़ों कमरे हैं। सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं

पेढ़ी ✻ श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी। डाक घर — श्री महावीरजी : जिला — सवाई माधोपुर : प्रान्त — राजस्थान : तार घर — श्री महावीरजी। टेलीफोन — २३ श्री महावीरजी।

सहायक : श्री जे. मिश्रीलालजी पारसमलजी वैद मूता, बगड़ी (राज०) वाले, आम्बूर (तमिलनाडु)



श्री वीरप्रभु जिनालय–महावीरजी

श्री नागौर तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री आदिनाथ भगवान, पद्मासनस्थ।

तीर्थ स्थल * नागौर गाँव में सिघवियों की पोल के पास।

प्राचीनता * प्राचीन ग्रन्थों में इसका नाम नागपुर रहने का उल्लेख है। किसी समय यह जैन-धर्म का मुख्य केन्द्र था। कण्हमुनि के शिष्य आचार्य श्री जयसिंहसूरिजी द्वारा रचित "धर्मोपदेशमाला" में विक्रम की नवमी सदी में अनेकों जिन मन्दिर यहाँ रहने का उल्लेख है। श्री कण्हमुनि द्वारा सं० ९१९ में श्री महावीर भगवान के मन्दिर की प्रतिष्ठापना करवाने का उल्लेख है।

विक्रम की सत्रहवीं सदी में आचार्य श्री विशालसुन्दरसूरिजी के शिष्य द्वारा रचित "नागौरचैत्यपरिपाटी" में यहाँ सात मन्दिर रहने का उल्लेख है।

वर्तमान में स्थित मन्दिरों में विक्रम सं० १५१५ में निर्माणित श्री शान्तिनाथ भगवान के मन्दिर में एक धातु-प्रतिमा पर सं० १२१६ का लेख उत्कीर्ण है। हीरावाड़ी में श्री आदिनाथ भगवान का मन्दिर सं० १५९६ में निर्माणित होने का उल्लेख है।

श्री आदीश्वर भगवान का यह मन्दिर सोलहवीं सदी में निर्माणित माना जाता है, जो बड़े मन्दिर के नाम से विख्यात है। अन्य मन्दिर सत्रहवीं सदी पश्चात् के हैं।

विशिष्टता * श्री आम राजा के पौत्र श्री भोजदेव के राज्यकाल सं० ९१५ भादरवा शुक्ल पंचमी के शुभ दिन श्री कण्हमुनि के शिष्य आचार्य श्री जयसिंहसूरीश्वरजी ने "धर्मोपदेशमाला" ग्रन्थ की रचना यहीं पर एक जिनालय में की थी।

बारहवीं सदी में आचार्य श्री वादीदेवसूरीश्वरजी के यहाँ पदार्पण पर राजा अर्णोराज ने भव्य स्वागत-समारोह का आयोजन किया था, जो उल्लेखनीय है।

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य को आचार्य-पद से यहीं पर विभूषित करके एक विराट समारोह का आयोजन किया गया था। मानद श्रेष्ठी धनद ने उक्त समारोह के अपूर्व अवसर पर अपनी चंचल लक्ष्मी का मुक्त हस्तों से सदुपयोग किया, जो उल्लेखनीय है।

विक्रम सं० १४०६ में आचार्य श्री जिनलब्धिसूरिजी यहीं पर स्वर्ग सिधारे।

श्री पार्श्वचन्द्रसूरिगच्छ की स्थापना यहीं पर हुई। आज भी यहाँ तपागच्छ, खरतरगच्छ, पार्श्वचन्द्रसूरिगच्छ व लोंकागच्छ के उपाश्रय हैं। विक्रम की बारहवीं सदी में यहाँ वरदेव पल्लीवाल नाम के धर्मश्रद्धालु श्रावक हुए उनके पुत्र आसधर ने व उनके पुत्र नेमड़, आभट, माणिक, सलखण व थिरदेव, गुणधर, जगदेव, भुवणा द्वारा श्री शत्रुंजय, गिरनार, आबू-देलवाड़ा, जालोर, तारंगा, प्रह्लादनपुर, पाटण, चारुप आदि विभिन्न तीर्थ स्थानों पर करवाये जीर्णोद्धार आदि के कार्य अति प्रशंसनीय हैं। इन्होंने और भी अनेकों जन-कल्याण के कार्यों में भाग लिया जो उल्लेखनीय है। इस प्रकार अनेकों धर्मवीर श्रावकों की जन्मभूमि होने व प्रकाण्ड आचार्यों का पदार्पण होने से धर्मप्रभावना के अनेकों कार्य सम्पन्न होने के कारण यहाँ की मुख्य विशेषता है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त पाँच मन्दिर, एक गुरु-मन्दिर व एक दादावाड़ी हैं।

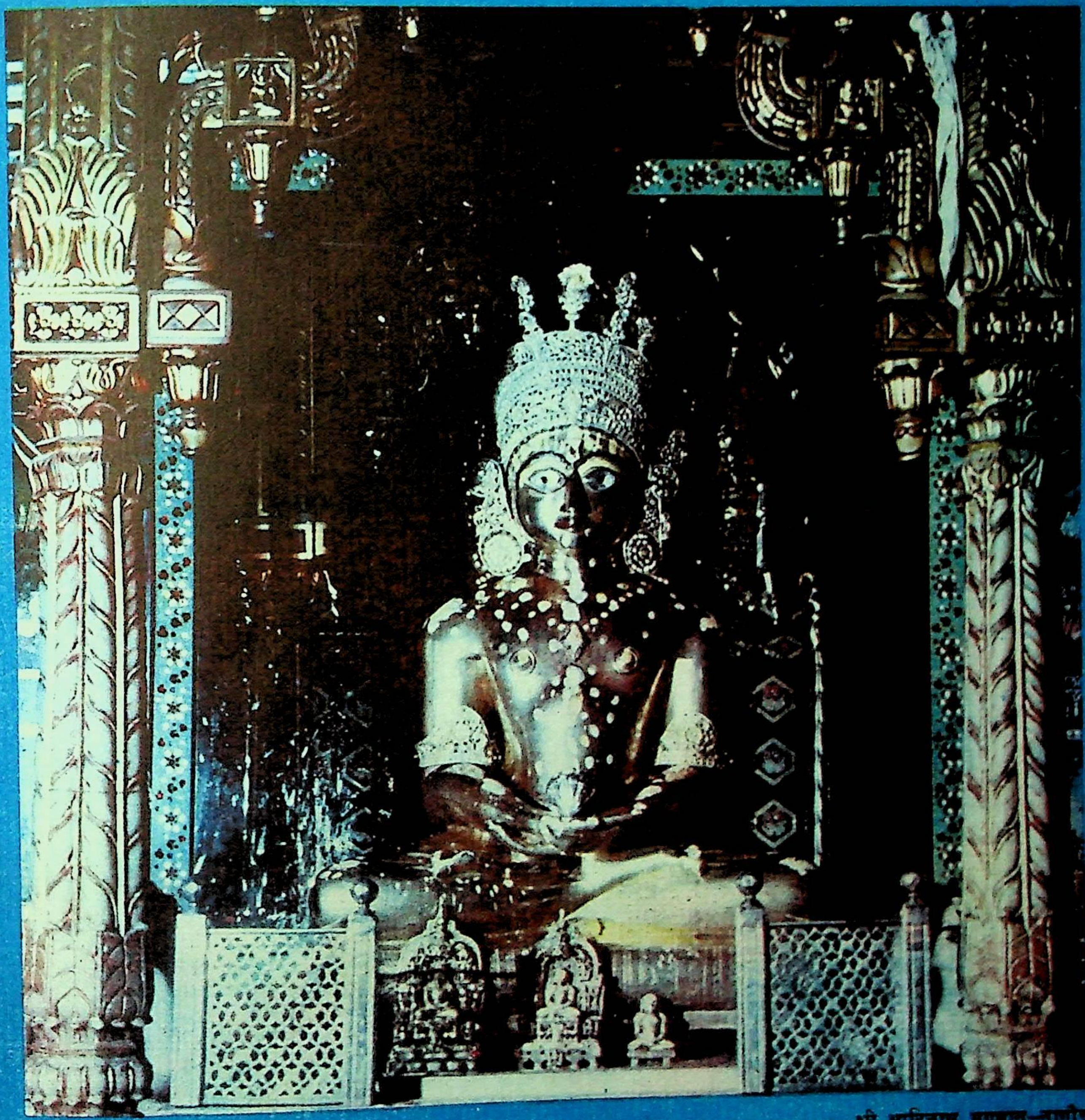
कला और सौन्दर्य * यहाँ के मन्दिरों में प्राचीन प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं। इस मन्दिर में काष्ठ से निर्मित एक दरवाजे की कला अति ही दर्शनीय है। मन्दिर में काँच का काम अति ही सुन्दर ढंग से किया हुआ है।

मार्ग दर्शन * यहाँ का रेलवे स्टेशन नागौर मन्दिर से लगभग दो कि० मी० दूरी पर स्थित है। गाँव में ताँगे व टैक्सी की सुविधा है। मन्दिर तक कार जा सकती है। रास्ता तंग रहने के कारण बस को लगभग एक फर्लांग दूर ठहरानी पड़ती है।

सुविधाएँ * ठहरने के लिये रेलवे स्टेशन के पास धर्मशाला है, जहाँ बिजली, पानी की सुविधा है। भोजन आदि की व्यवस्था श्री अमरचन्द माणकचन्द बेताला तपागच्छीय जैन भवन में पूर्व सूचना देने पर हो सकती है।

पेढ़ी * श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर मार्गी ट्रस्ट (रजि०) बड़ा जैन मन्दिर (काच वाला) : डाक घर – नागौर : जिला – नागौर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – नागौर : टैलीफोन – पी० सी० ओ० नागौर।





श्री आदिनाथ भगवान—नागौर

श्री महावीर प्रभु जिनालय–खीवसर



सहायक : १. श्री बालचन्दजी प्रेमचन्दजी कानूगा, मद्रास–८४ २. मेसर्स. बालचन्द एन्ड सन्स, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु) ३. मेसर्स. बाफ़णा ब्रदर्स, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु) ४. शाह बाबूलालजी होसाजी, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु)।

श्री खींवसर तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, प्राचीन चरण, चन्दन वर्ण, लगभग ३७ सें० मी० ।

तीर्थ स्थल * खींवसर गाँव के बाहर तालाब के किनारे।

प्राचीनता *इसका प्राचीन नाम अस्थिग्राम था। यह अति प्राचीन क्षेत्र माना जाता है। अस्थिगाँव के नाम का उल्लेख 'कल्प सूत्र' में भी आता है। किसी समय यह एक विराट नगरी रही होगी। कहा जाता है भगवान महावीर मरुभूमि में विचरे तब यहाँ उनका चातुर्मास हुआ था। चरण पादुका पर कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है। ये चरण लगभग दो हजार वर्ष प्राचीन बताये जाते हैं।

विशिष्टता * चरम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान का यहाँ चातुर्मास हुआ माना जाने के कारण यहाँ की महान विशेषता है। शोधकर्ताओं के लिए यह एक बड़ा भारी आवश्यक शोध का विषय है।

जिस भूमि में देवाधिदेव प्रभु ने अपना चातुर्मास पूर्ण किया हो, उस भूमि की महानता का शब्दों में वर्णन करना संभव नहीं। निरन्तर चार-माह प्रभु के मुखारबिंद से कितने पुण्यवान नर-नारियों, पशु-पक्षियों आदि ने अमृतमयी वाणी सुनकर अपना जीवन सफल किया होगा। प्रभु के चरणों से जहाँ का कण-कण स्पर्श हुआ हो उस स्थान की महानता का क्या वर्णन किया जाय। ऐसे पवित्र व पावन तीर्थ स्थल की यात्रा करने से आत्मा को विशिष्ट शान्ति का अनुभव होता है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त यहाँ कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * मन्दिर गाँव के बाहर एकान्त में होने के कारण वातावरण शान्त व दृश्य अति सुन्दर लगता है।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन नागोर ४४ कि० मी० दूर है, जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा है। यहाँ का बस स्टैण्ड मन्दिर से करीब ८०० मीटर दूर है। मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं। गाँव में सवारी का कोई साधन नहीं है।

सुविधाएँ * फिलहाल ठहरने के लिए कोई साधन नहीं है। गाँव में उपाश्रय है, जहाँ यतिजी महाराज विराजते हैं। नागोर ठहरकर ही यहाँ आना सुविधाजनक है।

पेढ़ी * श्री महावीर भगवान जैन मन्दिर, श्री जैन श्वे० मन्दिर मार्गी ट्रस्ट (नागौर) : डाक घर -- खींवसर ३४१०२५ : जिला – नागौर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – खींवसर : टेलीफोन – पी० सी० ओ० खींवसर।



श्री महावीर प्रभु के प्राचीन चरण–खींवसर

सहायक : १. मेसर्स. बोथरा ब्रदर्स, कलकत्ता २. मूता भंवरलालजी बाफ़णा, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु) ३. मेसर्स. भंसाली केमिकल्स, मद्रास–३ ४. श्री सोभागमलजी अमरचन्दजी कोचर, ईरोड़ (तमिलनाडु)

श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ तीर्थ

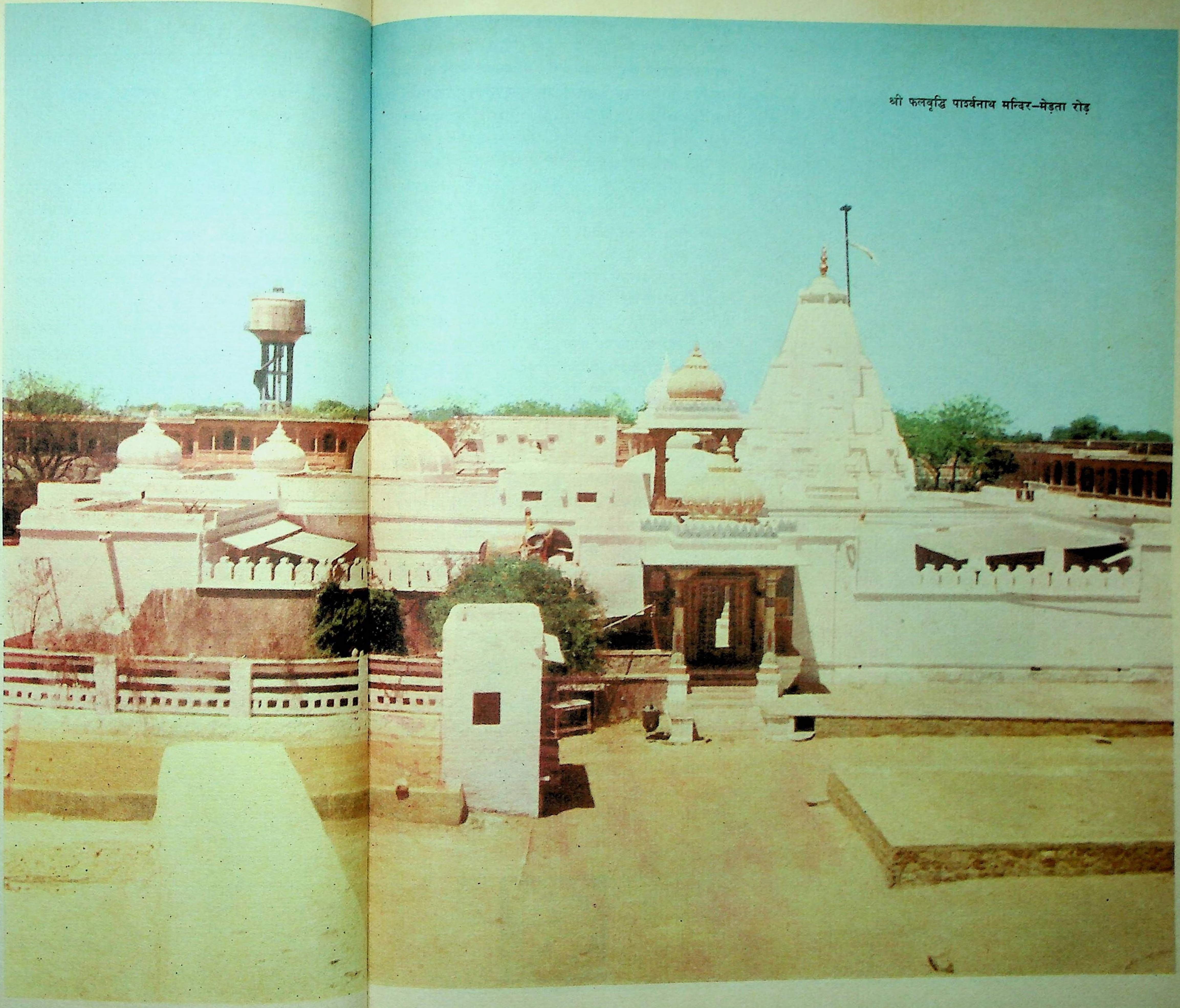
तीर्थाधिराज * श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, श्याम वर्ण, लगभग १०५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * मेड़ता रोड़ स्टेशन से लगभग २०० मीटर दूर गाँव में।

प्राचीनता * यह तीर्थ विक्रम की बारहवीं शताब्दी में पुनः प्रकाश में आया माना जाता है। दुग्ध व बालू से निर्मित, चमत्कारी घटनाओं के साथ भूगर्भ से प्रकट इस प्रभु-प्रतिमा की प्रतिष्ठापना वि० सं० ११८१ में आचार्य श्री धर्मघोषसूरीश्वरजी के सुहस्ते चतुर्विधसंघ के सम्मुख अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक सुसम्पन्न हुई थी, ऐसा उल्लेख है। वि० सं० ११९९ में प्रकाण्ड विद्वान आचार्य श्री वादीदेवसूरीश्वरजी के सुहस्ते विराट महोत्सव के साथ यहाँ प्रतिष्ठा सुसम्पन्न होने का भी उल्लेख है। वि० सं० १२०४ में मन्दिर में कलश-ध्वजा आरोपण होने का उल्लेख है।

'पुरातन प्रबन्ध संग्रह', उपदेश तरंगिणि, तपागच्छ पट्टावली व विविध तीर्थ कल्प आदि में इस तीर्थ का विस्तृत उल्लेख है। वि० सं० १५५२ में संघपति सूरवंशी श्री शिवराजजी के सुपुत्र श्री हेमराजजी द्वारा इस मन्दिर के जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख है। वि० सं० १६५३ में इस मन्दिर में अन्य जिन प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित होने का उल्लेख है। वि० सं० १९३५ व सं० १९९२ में भी इस मन्दिर के जीर्णोद्धार हुए हैं।

विशिष्टता * श्री जिनप्रभसूरीश्वरजी ने चौदहवीं शताब्दी में रचित 'विविध तीर्थ कल्प' में इस तीर्थ के दर्शन करने से अड़सठ तीर्थों के दर्शन का लाभ होना बताया है। इस वर्णन का कुछ न कुछ रहस्य अवश्यमेव होगा। इस कल्प में यह भी बताया है कि यहाँ के गोपालक श्री धाँधल श्रेष्ठी की एक गाय दूध नहीं देती थी। गौ-चरवाहे द्वारा उसकी जाँच करने पर पता लगा कि एक टीबे के पास पेड़ के नीचे गाय के स्तनों से दूध हमेशा झर जाता है। यह वृत्तान्त सेठ से कहा। सेठ को स्वप्न में अधिष्ठायकदेव ने बताया कि जहाँ दूध झरता है वहाँ देवाधिदेव श्री पार्श्वनाथ प्रभु की सप्तफणी प्रतिमा है। प्रयत्न करने पर वहाँ से प्रकट होगी, जिसे मन्दिर का निर्माण करवाकर प्रतिष्ठित करवाना। धाँधल सेठ ने यह वृत्तान्त अपने ईष्ट मित्र श्री शिवंकर से कहा। दोनों मित्र अत्यन्त प्रसन्न हुए। स्वपनानुसार यह भव्य चमत्कारिक प्रतिमा प्राप्त हुई। मन्दिर-निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया गया। अर्थाभाव से कार्य को कुछ रोकना पड़ा। दोनों मित्र व्याकुल थे। अधिष्ठायक देव ने फिर स्वप्न में प्रकट होकर कहा कि हमेशा प्रातः प्रभु के सम्मुख स्वर्ण मुद्राओं से स्वस्तिक किया



श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ मन्दिर–मेड़ता रोड़

हुआ मिलेगा उससे कार्य पूर्ति कर लेना। लेकिन यह बात किसी को मालूम नहीं पड़ने देना। पुनः मन्दिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ हुआ। पाँच मण्डप भी बनकर तैयार हो गये। एक दिन सेठ के लड़के ने यह अनोखा दृश्य छिपकर देख लिया। उस दिन से स्वर्ण मुद्राएँ मिलनी बन्द हो गयीं, जिससे मन्दिर कुछ अपूर्ण अवस्था में रह गया। वि० सं० ११८१ में जब आचार्य श्री धर्मघोषसूरीश्वरजी पधारे तब श्रीसंघ को उपदेश देकर कार्य को पूर्ण करवाकर प्रतिष्ठा करवायी। सुलतान शाहबुद्दीन ने आक्रमण के समय इस मन्दिर पर प्रहार किया, जिससे प्रतिमा भी कुछ खण्डित हो गई। परन्तु दैविक शक्ति से वह बीमार पड़कर बहुत ही दुःख का अनुभव करने लगा। इस मन्दिर को अखण्डित रखने का अपनी सेना को आदेश दिया। इसलिए मन्दिर व प्रतिमा को ज्यादा क्षति नहीं पहुँची व वही प्रतिमा पुनः स्थापित की गयी। यहाँ के अधिष्ठायक देव जागरूप व चमत्कारी हैं। प्रतिवर्ष आसोज कृष्णा दशमी व पौष कृष्णा दशमी को मेले भरते हैं। उन पावन अवसरों पर जगह-जगह से हजारों नर-नारियाँ आकर प्रभु भक्ति का लाभ लेते हैं। चमत्कारिक घटनाएँ अभी भी घटने के वृत्तान्त सुनने में आते रहते हैं।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इस मन्दिर के पास ही एक मन्दिर, और एक दादावाड़ी हैं।

कला और सौन्दर्य * प्राचीन प्रभु-प्रतिमा अति ही सुन्दर, चमत्कारी व साक्षात् है। भावपूर्वक वन्दन मात्र से आकांक्षाएँ पूर्ण होती हैं। यहाँ पार्श्वनाथ भगवान व महावीर भगवान के भवपट्ट व अन्य पट्ट कलात्मक ढंग से बनाये हुए हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का स्टेशन मेड़ता रोड़ जंकशन २०० मीटर दूर है। मेड़ता सिटी यहाँ से लगभग १५ कि० मी० दूर है। जोधपुर, मेड़ता सिटी व नागौर से सीधी बसें मिलती हैं। मन्दिर तक पक्की सड़क है कार व बस आखिर तक जा सकती हैं।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए मन्दिर के अहाते में ही विशाल धर्मशाला है जहाँ बिजली, पानी, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ तीर्थ ट्रस्ट। डाक घर – मेड़ता रोड़ : जिला – नागौर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – मेड़ता रोड़ : टेलीफोन – पी० सी० ओ० मेड़ता रोड़।

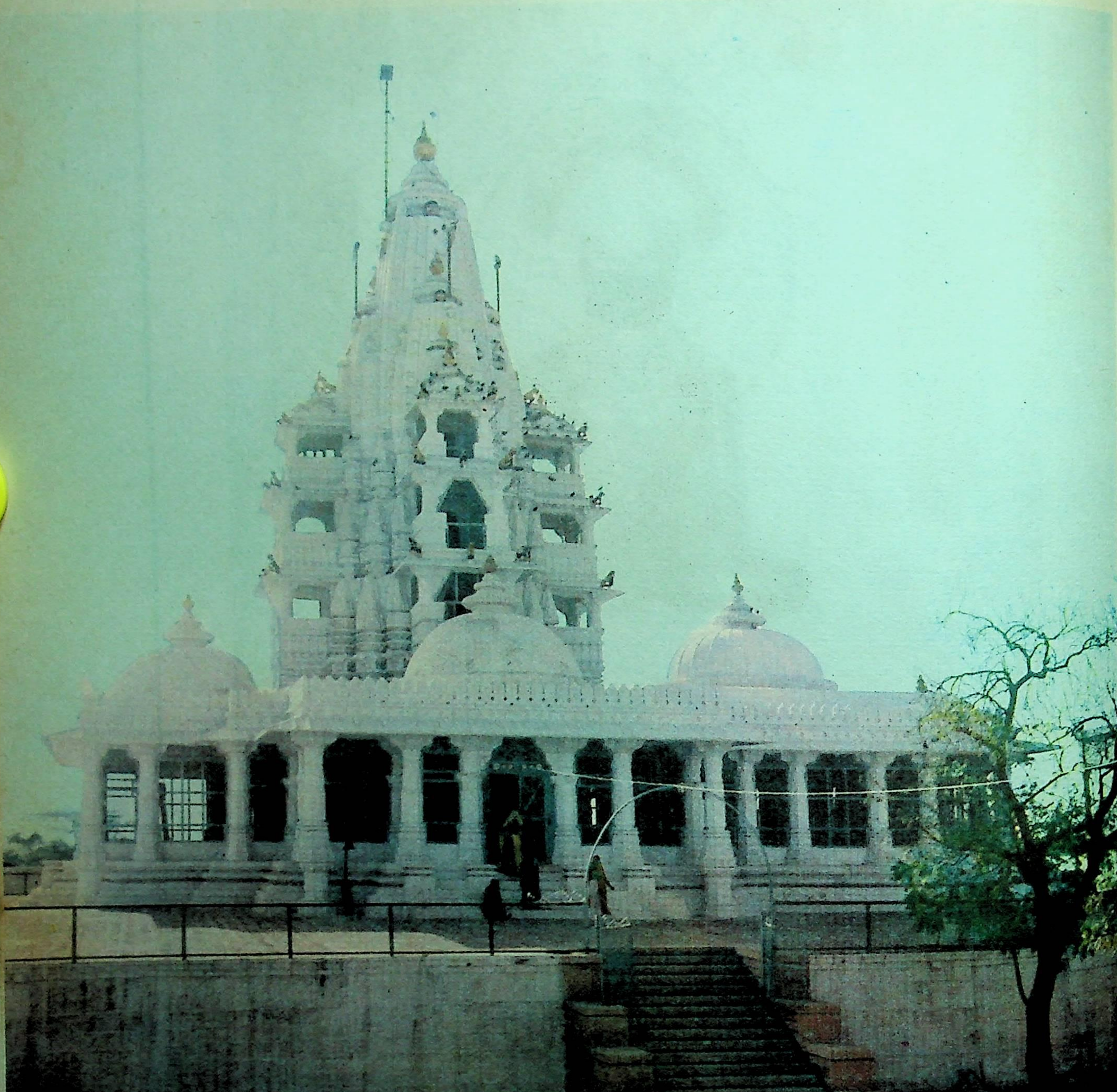




श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ भगवान–मेड़ता रोड़

सहायक : श्री अमरचन्दजी मानकचन्दजी बेताला, नागौर (राज०) वाले, मद्रास–१.

श्री स्वयंभू पार्श्वनाथ मन्दिर – कापरड़ा



श्री कापरड़ा तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री स्वयंभू पार्श्वनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, चाकलेट वर्ण, लगभग ५५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * कापरड़ा गाँव में।

प्राचीनता * कापरड़ा गाँव की स्थापना कब हुई उसका पता लगाना कठिन-सा है। इसके प्राचीन नाम कर्पटहेडक व कापडहेडा थे ऐसा उल्लेख मिलता है। चमत्कारिक घटनाओं के साथ वि० सं० १६७४ पौष कृष्णा १० को प्रभु के जन्म कल्याणक के शुभ दिन भूगर्भ से यह प्रतिमा प्रकट हुई थी। जेतारण के हाकिम श्री भानाजी भन्डारी द्वारा निर्मित चौमंजिले अद्भुत भव्य जिनालय में वि० सं० १६७८ वैशाख शुक्ला पूर्णिमा सोमवार के दिन आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी के सुहस्ते इस प्रभु प्रतिमा की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुए का लेख प्रतिमा के नीचे उल्लिखित है।

वि० सं० १९७५ के लगभग जब तीर्थोद्धारक, शासन सम्राट, आचार्य श्री नेमिसूरीश्वरजी महाराज का यहाँ पदार्पण हुआ, तब व्यवस्था में शिथिलता आने के कारण होती हुई आसातना को देख उन्हें दुःख हुआ। शीघ्र ही अपने पूर्ण प्रयास से जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ करवाकर मन्दिर की सुव्यवस्था की व सं० १९७५ माघ शुक्ला वसंत पंचमी के दिन आचार्य श्री के सुहस्ते पुनः प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। पहले इस चौ-मंजिले चतुर्मुख मन्दिर में श्री स्वयंभू पार्श्वनाथ भगवान की एक प्रतिमा ही थी। इस प्रतिष्ठा के समय अन्य १५ प्रतिमाएँ भी प्रतिष्ठित करवाई गईं। आचार्य श्री का प्रयास व तीर्थ सेवा अति ही उल्लेखनीय हैं।

विशिष्टता * भंडारी गोत्र के श्री भानाजी, राजा गजसिंह जी के राज्यकाल में जोधपुर राज्य में जेतारण परगने के हाकिम थे। किसी कारण वश उनपर राजा कोपायमान होकर उन्हें जोधपुर आने का आदेश दिया। भयाकुल श्री भन्डारीजी जोधपुर के लिए रवाना हुए। मार्ग में कापरड़ा ठहरे। भंडारीजी को प्रभु-प्रतिमा का दर्शन करके ही भोजन करने का नियम था। गाँव में तलाश करने पर वहाँ उपाश्रय में विराजित एक यतिवर के पास प्रभु प्रतिमा रहने का पता लगा। भन्डारीजी प्रभु का दर्शन करके जब जाने लगे तब निमित्त शास्त्र के जानकार यतिजी ने भंडारीजी से जोधपुर जाने का कारण सुनकर कहा कि यह आपकी कसौटी है, धैर्य रखना। आपको वहाँ जाने पर राजा द्वारा सम्मान मिलेगा, क्योंकि आप निर्दोष हैं। इधर राजा को स्वप्न में संकेत मिला कि जेतारण के हाकिम निर्दोष हैं, सुनी हुई सारी बातें झूठी हैं। राजा द्वारा पूछताछ करवाने पर भानाजी निर्दोष मालूम पड़े, जिससे भानाजी के जोधपुर पहुँचने पर उन्हें राजा द्वारा सम्मान दिया गया व उन्हें पाँच सौ रजत मुद्राएँ उपहारस्वरूप भेंट दी गई।

भन्डारीजी खुश होकर जेतारण जाते वक्त पुनः यतिजी से मिले व सारा वृत्तान्त कहा। यतिजी ने यहाँ सुन्दर मन्दिर बनवाने की प्रेरणा दी। इस पर भंडारीजी ने कहा कि उपहार प्राप्त पाँच सौ मुद्राएँ सेवा में अर्पित हैं और जो बनेगा जरूर करूँगा। यतिजी ने प्रसन्नता पूर्वक मुद्राओं को एक थैली में भरकर ऊपर वर्धमान विद्या सिद्ध वासक्षेप डालकर भंडारीजी को सौंपते हुए कहा कि थैली को उल्टी न करना, मन्दिर की आवश्यकता पूरी होती रहेगी। भन्डारीजी फूले न समाये।

भन्डारी जी का पुण्य प्रबल था। उनकी इच्छानुसार एक अभूतपूर्व मन्दिर का नक्शा बनाया गया व कार्य प्रारम्भ हुआ। भानाजी ने अपने पुत्र श्री नरसिंह को इस कार्य के लिये रखा। कार्य संपूर्ण होने में ही था कि नरसिंहजी ने थैली उल्टी करके देखना चाहा। ज्यों ही थैली उल्टी, कि सारी मुद्राएँ बाहर आ पड़ीं। नरसिंहजी भूल के लिए, पश्चात्ताप करने लगे। यतिजी को इससे अवगत कराया गया। यतिजी ने कहा कि जो होना था हो गया, पिताजी को कापरड़ा बुला लो। भानाजी को कापरड़ा बुलाकर सारे वृत्तान्तों से अवगत करवाया। भन्डारी जी को अत्यंत दुख हुआ लेकिन उपाय नहीं था। मन्दिर उनकी भावनानुसार पूरा न हो पाया, लेकिन काफ़ी हद तक हो चुका था।



श्री स्वयंभू पार्श्वनाथ भगवान–कापरड़ा

सहायक : श्री एस. केवलचन्दजी धरमीचन्दजी खटोड़ परिवार, मद्रास–१.

पाली में विराजित परमपूज्य आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा करवाने का निर्णय लेकर उनसे विनती की गयी व इस मन्दिर के अनुरूप प्राचीन प्रतिमा के लिए भी निवेदन किया गया। वि० सं० १६७४ प्रभु के जन्म कल्याणक पौष कृष्णा १० के शुभ दिन यहाँ के बबूलों की झाड़ी में प्रकट हुई प्रभु-प्रतिमा को श्री भानाजी भन्डारी द्वारा नवनिर्मित मन्दिर में वि० सं० १६७८ वैशाख शुक्ला पूर्णिमा के शुभ दिन जोधपुर नरेश श्री गजसिंहजी के उपस्थिति में आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी के हाथों बहुत ही विराट महोत्सव व अगणित जनसमुदाय के बीच प्रतिष्ठित किया गया। भक्तगण प्रभु को श्री स्वयंभू पार्श्वनाथ कहने लगे।

शिखर के चारों मंजिलों में चौमुखजी विराजमान है। यह यहाँ की मुख्य विशेषता है। प्रति वर्ष चैत्र शुक्ला पंचमी को मेला भरता है।

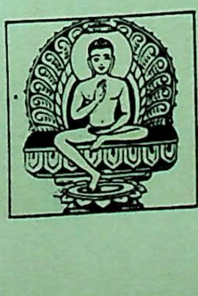
अन्य मन्दिर ❋ वर्तमान में इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं हैं।

कला और सौन्दर्य ❋ यहाँ के शिखर की कला अति ही दर्शनीय है। ९५ फुट उत्तुंग यह शिखर पाँच मील दूरी से भी अत्यन्त ही सुन्दर दिखायी देता है। इस शिखर की निर्मित कला अन्य शिखरों से भिन्न है। सभा मण्डप में आकर्षक पुतलियाँ, गुम्बज के छत, रंग मण्डप के स्तंभ व तोरणों की शिल्प कला भी अनूठी है।

मार्ग दर्शन ❋ नजदीक के रेलवे स्टेशन सिलाड़ी ८ कि० मी०, पीपाड़ सिटी १६ कि० मी० व जोधपुर ५० कि० मी० दूर है। सिलाड़ी से बैल-गाड़ी व अन्य जगहों से बस व टैक्सी की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। जोधपुर-जयपुर मुख्य सड़क मार्ग पर यह तीर्थ स्थित है। बस स्टैण्ड मन्दिर से लगभग एक फर्लांग दूर है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। कार व बस आखिर तक जा सकती हैं।

सुविधाएँ ❋ ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है।

पेढ़ी ❋ श्री जैन श्वेताम्बर प्राचीन तीर्थ, कापरड़ा : सेठ श्री आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी : डाक घर – कापरड़ा : व्हाया – भावी : जिला – जोधपुर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – पीपाड़ सिटी; : टेलीफोन – पी० सी० ओ० पीपाड़ सिटी।



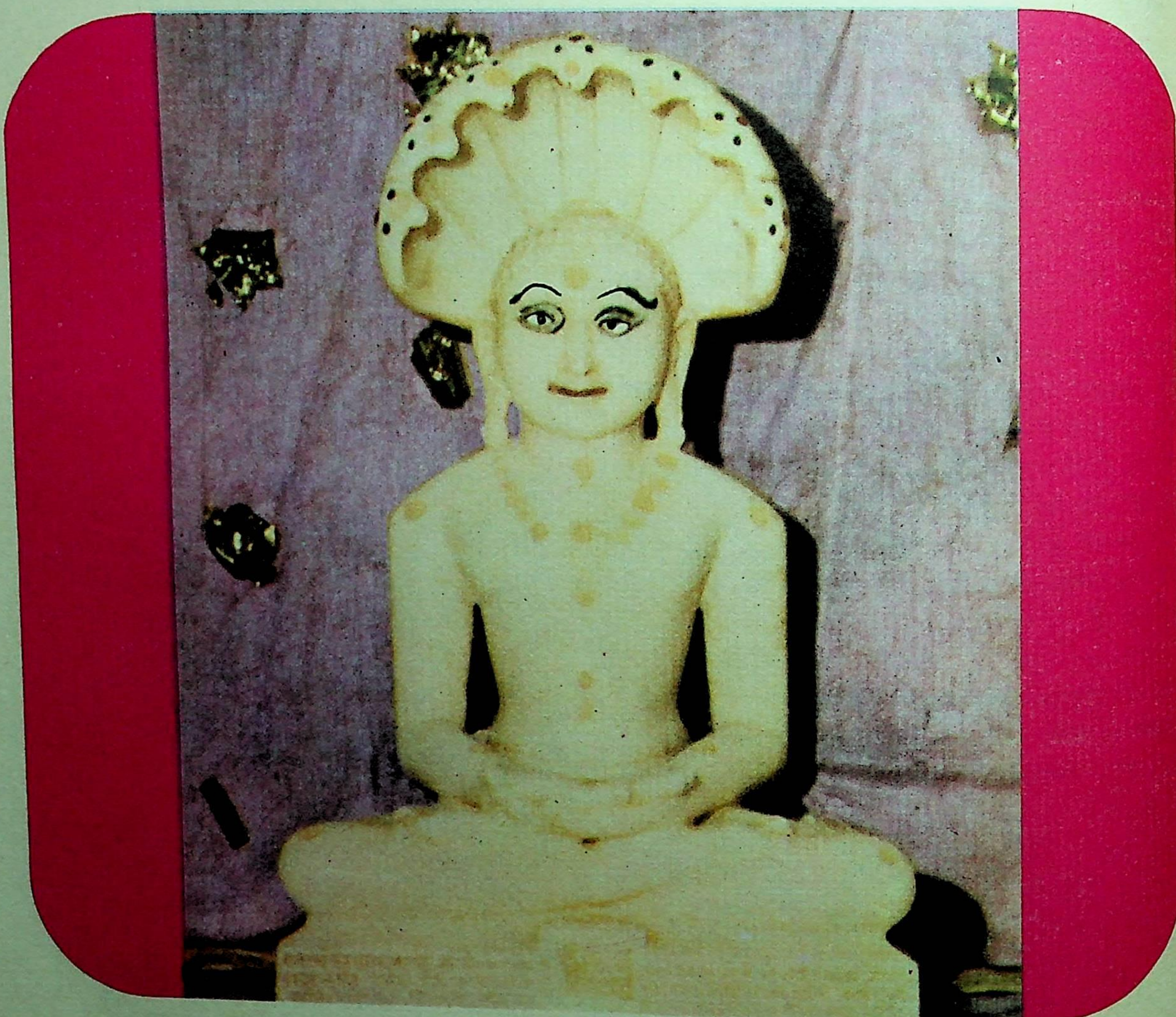
श्री गगाणी तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ४० सें० मी०।

तीर्थ स्थल * गंगाणी गाँव में।

प्राचीनता * इस नगरी का प्राचीन नाम अर्जुनपुरी बताया जाता है। बाद में गांगाणक कहते थे। यह अति प्राचीन क्षेत्र माना जाता है। किसी वक्त यह एक विराट नगरी थी। वि० सं० १६६२ ज्येष्ठ शुक्ला १२ के दिन यहाँ दुधेला तालाब के पास खोखर नामक मन्दिर के एक तलघर में से ६५ प्रतिमाएँ निकली थीं, जिसका उल्लेख वि० सं० १६६२ में कवि श्री समयसुन्दरजी उपाध्याय ने अपने रचित 'श्री गांगाणी मण्डन' में विस्तृत रूप से किया है। इसका उल्लेख 'वीर वंशावली' में भी आता है।

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान–गंगाणी



इन प्रतिमाओं में से श्री पद्मप्रभ भगवान की प्रतिमा श्री संप्रतिराजा ने वीर सं० २७३ माघ शुक्ला ८ के शुभ दिन आर्य श्री सुहस्तीसूरीश्वरजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा करवायी थी। एक और श्वेतस्वर्णमयी श्री पार्श्वप्रभु की प्रतिमा सम्राट चन्द्रगुप्त द्वारा भरवाने का उल्लेख है। इन सब प्रतिमाओं का आज पता नहीं। संभवतः आक्रमणकारियों के भय से पुनः भूमिगत कर दी गयी हों।

दुधेला तालाब और खोखर मन्दिर आज भी विद्यमान हैं। वि० की नौवीं शताब्दी में उपकेशनगर के श्रेष्ठीवर श्री बोसट द्वारा इस मन्दिर के जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख है। वि० की बारहवीं शताब्दी में भूरंटों ने इस मन्दिर का कार्य करवाया था।

चौदहवीं शताब्दी में ओसियाँ के आदित्यगान गोत्रीय शाह सारंग सोनपाल द्वारा जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख मिलता है।

विक्रम की सोलहवीं शताब्दी में बीकानेर के श्रावकों द्वारा जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख है। और भी अनेकों बार यहाँ का जीर्णोद्धार हुआ होगा। अंतिम जीर्णोद्धार वि० सं० १६८२ में होने का उल्लेख है। प्रतिमाजी पर वि० सं० १६१४ का लेख उत्कीर्ण है। जीर्णोद्धार के समय नई प्रतिमा स्थापित की गयी प्रतीत होती है। श्री आदिनाथ भगवान की एक सर्वधातुमयी प्रतिमा पर सं० ६३७ का लेख उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा अति ही चमत्कारी है। ऊपरी मंजिल में श्री धर्मनाथ भगवान की मूर्ति पर सं० १६८४ का लेख उत्कीर्ण है।

विशिष्टता * चौदह पूर्वधारी श्री भद्रबाहुस्वामीजी के सुहस्ते सम्राट चन्द्रगुप्त द्वारा व आर्य श्री सुहस्तीसूरीश्वरजी के सुहस्ते राजा संप्रति द्वारा प्रतिष्ठित मन्दिरों का क्षेत्र रहने के कारण इसकी मुख्य विशेषता है।

सं० १६६२ में कविवर श्री समयसुन्दरजी उपाध्याय ने बड़े ही सुन्दर ढंग से यहाँ की व्याख्या की है। यहाँ पाटोत्सव का मेला प्रतिवर्ष होली के बाद चैत्र कृष्णा सप्तमी को भरता है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त और कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * जमीन से लगभग २२ मीटर ऊँचा, भव्य व विशाल दो मंजिला गगनचुम्बी शिखर यात्रियों को दूर से ही आकर्षित करता है।

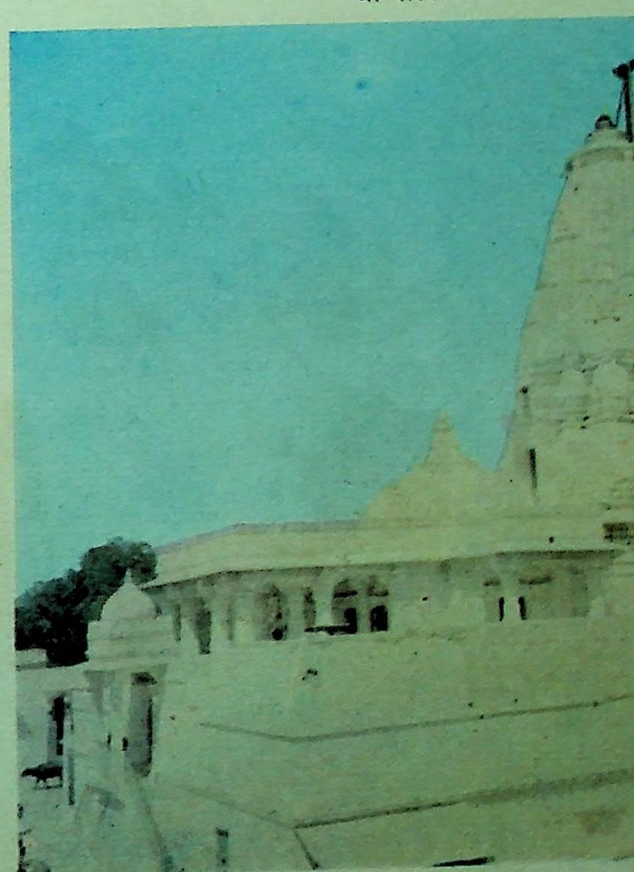
मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक के रेलवे स्टेशन उम्मेद १० कि० मी० व जोधपुर ३६ कि० मी० हैं। जोधपुर से भोपालगढ़ के सड़क रास्ते पर यह तीर्थ स्थित है। उम्मेद से बैलगाड़ी व जोधपुर से बस व टैक्सी का साधन उपलब्ध है। बस स्टैण्ड मन्दिर से सिर्फ २०० मी० दूर है। जोधपुर से बनाड़ के रास्ते ८ कि० मी० व भवाद रास्ते भी लगभग ५ कि० मी० कच्ची सड़क है। लेकिन बस व कार मन्दिर तक जा सकती हैं।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए धर्मशाला है, यहाँ पानी, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्रों व भोजनशाला की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री प्राचीन जैन श्वेताम्बर तीर्थ गांगाणी: डाक घर – गांगाणी: तहसिल – ओसियाँ : जिला – जोधपुर : प्रान्त – राजस्थान।



श्री पार्श्वनाथ जिनालय–गांगाणी





श्री महावीर जिनालय–ओसियाँ

श्री ओसियाँ तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, पद्मासनस्थ, स्वर्ण वर्ण लगभग ८० सें० मी०।

तीर्थ स्थल * ओसियाँ गाँव के मध्य।

प्राचीनता * इस नगरी के प्राचीन नाम उपकेशपट्टण, उरकेश, मेलपुरपत्तन, नवनेरी आदि रहने के उल्लेख मिलते हैं। विक्रम की चौदहवीं सदी में रचित उपकेशगच्छपट्टावली के अनुसार विक्रम की चार शताब्दी पूर्व लगभग वीर निर्वाण सं० ७० में श्री पार्श्वनाथ भगवान के सातवें पाटेश्वर आचार्य रत्नप्रभसूरीश्वरजी अपने पाँच सौ शिष्टसमुदाय सहित यहाँ पधारे थे। तब यहाँ के राजा उपलदेव व मंत्री उहड़ थे। राजा उपलदेव व मंत्री उहड ने आचार्य श्री से प्रतिबोध पाकर जैन धर्म अंगीकार किया था। राजा उपलदेव द्वारा इस मन्दिर का निर्माण करवाकर आचार्य श्री रत्नप्रभसूरीश्वरजी के सुहस्ते इस प्रभु प्रतिमा की प्रतिष्ठा होने का उल्लेख है। किसी समय यह एक समृद्धशाली विराट नगरी थी। इस नगरी का क्षेत्रफल बहुत बड़ा था। लोहावट व तिंवरी आदि इसके मोहल्ले थे।

श्री हीर उदयन के शिष्य श्री नयप्रमोद द्वारा सं० १७१२ में रचित 'ओसियाँ वीर स्तवन' में इस प्रतिमा को संप्रति राजा द्वारा निर्मित बताया है। सदियों तक यह प्रतिमा भूगर्भ में रही। जब उहड़ मंत्री ने यह नगरी बसाई तब आचार्य श्री रत्नप्रभसूरीश्वरजी का यहाँ पदार्पण हुआ व उहड़ मंत्री ने आचार्य श्री से प्रतिबोध पाकर जैन धर्म अंगीकार किया था। उस समय यह प्रतिमा भूगर्भ से प्रकट हुई थी, जिसे मन्दिर का नव निर्माण करवाकर सं० १०१७ माघ कृष्णा ८ के दिन प्रतिष्ठित करवाने का उल्लेख किया है।

'ओसवाल उत्पत्ति' शीर्षक के हस्तलिखित पत्र में उहड़ मंत्री द्वारा सं० १०११ में ओसियाँ बसाने का व सं० १०१७ में मन्दिर बनवाने का उल्लेख है।

पुरातत्व-वेत्ताओं के अनुसार यहाँ की शिल्पकला आठवीं सदी की मानी जाती है।

कोरटा के इतिहास में वीर प्रभु के निर्वाण के ७० वर्ष पश्चात आचार्य श्री रत्नप्रभसूरीश्वरजी द्वारा एक ही मुहूर्त में कोरटा व ओसियाँ नगरी में जिन-मन्दिरों की प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख है। भीनमाल के इतिहास में भी राजकुमार उपलदेव व मंत्री द्वारा इसी काल में यहाँ उपकेशनगर बसाने का उल्लेख है।

नव प्रमोद द्वारा रचित 'ओसियाँ वीर स्तवन' के अनुसार अगर यह नगरी ही विक्रम की ११वीं सदी में बसाई गई होती तो उसके सात सौ वर्ष पूर्व संप्रति राजा के यहाँ आने का व प्रतिमा निर्मित करवाने का कारण ही नहीं बनता। आठवीं सदी की शिल्पकला भी यहाँ कैसे उपलब्ध होती ?

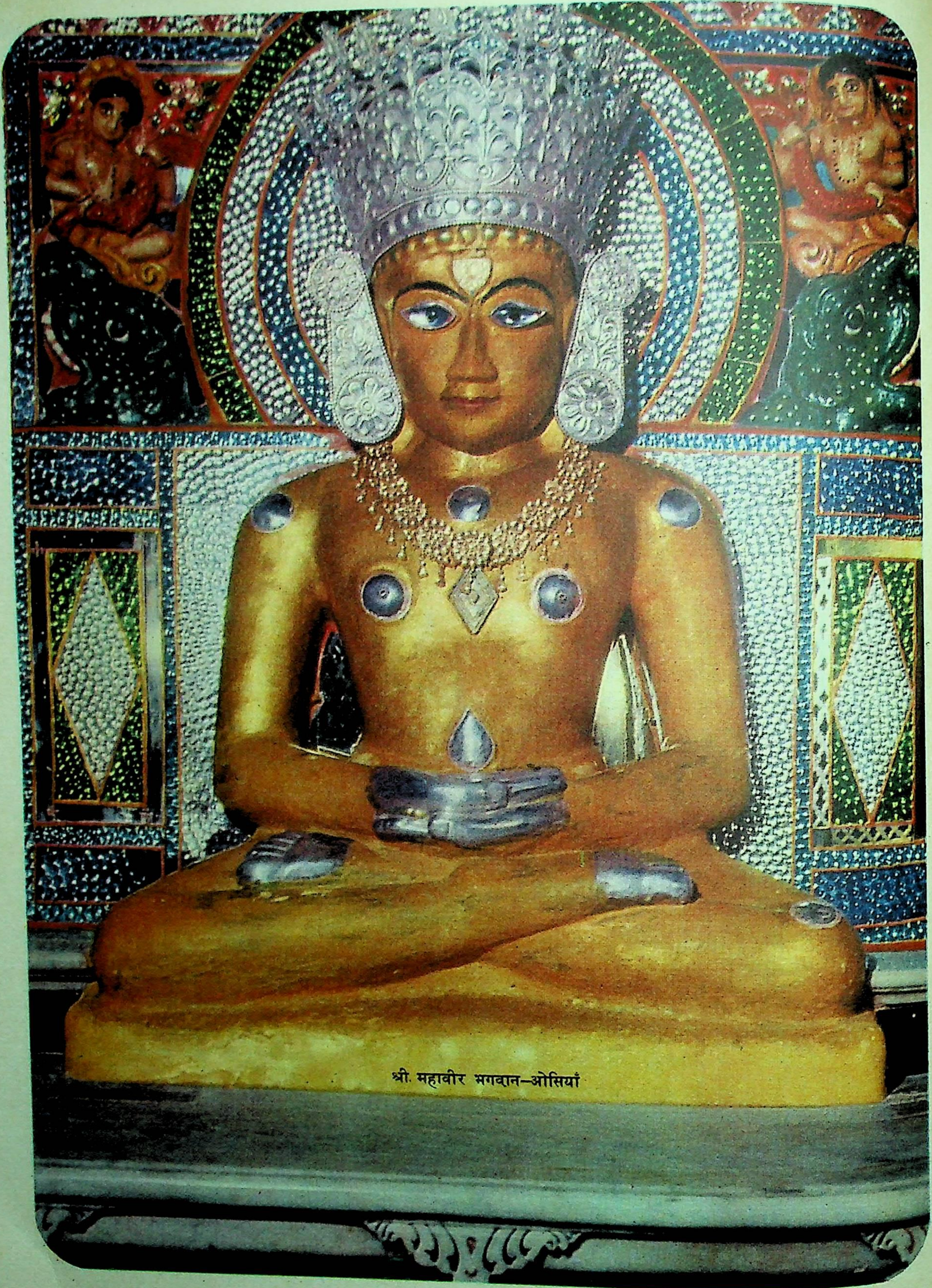
अतः यह सिद्ध होता है कि यह नगरी वीर प्रभु के निर्वाण के लगभग ७० वर्ष पश्चात् बस चुकी थी व इस मन्दिर का निर्माण भी उसी काल में हुआ था। समय-समय आवश्यक जीर्णोद्धार होते ही हैं। उसी भाँति आठवीं सदी में जीर्णोद्धार हुआ होगा। लेकिन यह प्रतिमा वही प्राचीन मानी जाती है, जो भगवान महावीर के ७० वर्षों पश्चात भूगर्भ से प्रकट हुई थी। अभी भी जीर्णोद्धार का कार्य चालू है।

विशिष्टता * भगवान महावीर के ७० वर्षों पश्चात् श्री पार्श्वनाथ भगवान के सातवें पाटेश्वर आचार्य श्री रत्नप्रभसूरीश्वरजी ने यहाँ के राजा उपलदेव, मंत्री उहड व अनेकों शूरवीर राजपूतों को जैन-धर्म अंगीकार करवाया एवं ओशवंश की स्थापना करके उन्हें ओशवंश में परिवर्तित किया था यह ओशवंश का उत्पत्ति स्थान रहने के कारण यहाँ की मुख्य विशेषता है। आज ओशवंश के श्रावकगण भारत में ही नहीं, दुनिया के हर कोने में बसे हुए हैं व प्रायः सारे समृद्धिशाली है, जो सदियों से धर्म प्रभावना व परोपकार के अनेकों कार्य करते आ रहे हैं। यह सब शुभ समय में प्रकाण्ड आचार्य द्वारा किए स्थापना का मूल कारण हैं।

ओशवाल समाज का हर व्यक्ति अपने पूर्वजों की पवित्र भूमि पर ओशवंश के संस्थापक द्वारा प्रतिष्ठित भगवान महावीर के दर्शन करने का अवसर न चूकें।

मन्दिर में श्री पुनिया बाबा के नाम से विख्यात अति चमत्कारिक श्री अधिष्ठायक देव की प्रतिमा नाग-नागिनी के रूप में विराजित है। यह प्रतिमा भी मूल प्रतिमा के समय की मानी जाती है। कहा जाता है यहाँ की अधिष्ठायिका श्री चामुण्डादेवी को भी आचार्य श्री रत्नप्रभसूरीश्वरजी ने प्रतिबोधित करके सम्यक्त्वी बनाकर श्री सच्चियायका माता नाम से अलंकृत किया, जिसकी ही दिव्य शक्ति से गौ-दुग्ध एवं बालू से भगवान महावीर की प्रतिमा बनी व आचार्य श्री द्वारा प्रतिष्ठित की गई, जो अभी विद्यमान है।

प्रतिवर्ष फाल्गुन शुक्ला ३ को वार्षिक मेला लगता है, जब हजारों भक्तगण भाग लेकर प्रभु भक्ति का लाभ लेते हैं।



सहायक : मेसर्स. ढड्ढा एन्ड कम्पनी, मद्रास–३.

अन्य मन्दिर * इस मन्दिर से लगभग एक कि० मी० दूर गाँव के पूर्व में टेकरी पर दादावाड़ी है जहाँ आचार्य श्री रत्नप्रभसूरीश्वरजी आदि की चरण-पादुकाएँ विराजित हैं। श्री सच्चियाय माताजी का प्रसिद्ध मन्दिर भी यहाँ से लगभग एक कि० मी० दूर है।

कला और सौन्दर्य * शिल्प और कला की दृष्टि से ओसियाँ विश्व में प्रसिद्ध है। पत्थरों पर खुदी हुई यहाँ की कलात्मक प्रतिमाएँ अद्वितीय हैं। भगवान महावीर का मन्दिर व अन्य मन्दिर अपनी विशालता, कलागत विशेषता एवं सौन्दर्य के कारण विश्व-विख्यात है। रंग-मण्डप में स्तम्भों पर नाग-कन्याओं के दृश्य एवं दिवालों पर देवी-देवताओं के दृश्य अति सुन्दर ढंग से अंकित हैं। इसके अतिरिक्त देहरियों पर भगवान नेमिनाथ का जीवनचरित्र, भगवान महावीर का अभिषेक-उत्सव एवं गर्भहरण का दृश्य बड़ा ही सजीव चित्रण किया हुआ है। अष्ट पहलू मण्डप में आचार्य श्री द्वारा अपने साधु एवं श्रावकों को उपदेश देने के चित्र अंकित हैं। नृत्य मण्डप के गुंबज में नृत्यकाएँ साज के साथ नृत्य करती हुई अति आकर्षक रमणीय मुद्रा में अंकित हैं। मन्दिर की भमती में प्रसिद्ध तोरण की कारीगरी एवं बनावट अति आकर्षक है। यह स्थल पुरातत्व दृष्टीकोण से महत्वपूर्ण, स्थान रखता है। देश-विदेश से भी शोधकर्तागण यहाँ की प्राचीनता व शिल्पकला की शोध हेतु यहाँ आते रहते हैं।

मार्ग दर्शन * ओसियाँ रेलवे स्टेशन, जो जोधपुर-जैसलमेर रेल मार्ग में स्थित है, मंदिर से लगभग एक कि० मी० दूर है। स्टेशन से आने के लिए बैल गाड़ी का साधन है। पेढ़ी से चपरासी रेल समय में यात्रीगणों को मार्गदर्शन देने हेतु स्टेशन पर आते हैं। यह स्थान जोधपुर-फलोदी मुख्य सड़क मार्ग पर स्थित है। जोधपुर यहाँ से ६५ कि० मी० व फलोदी भी लगभग ६५ कि० मी० दूर हैं। यहाँ का बस स्टैण्ड लगभग दो फर्लांग दूर है। गाँव में सवारी का कोई साधन नहीं है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। बस व कार मन्दिर तक जा सकती हैं।

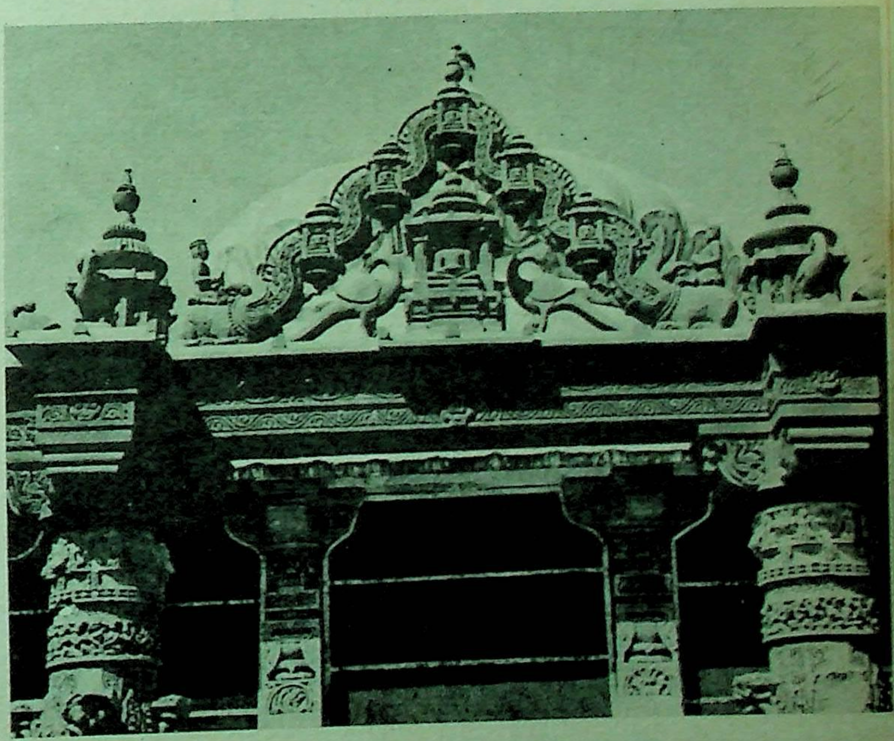
सुविधाएँ * मन्दिर के अहाते में ही धर्मशाला है, जहाँ बिजली, पानी, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

पेढ़ी * शेठ श्री मंगलसिंहजी रतनसिंहजी देव की पेढ़ी ट्रस्ट : डाक घर – ओसियाँ : जिला – जोधपुर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – ओसियाँ : टेलीफोन – ३२ ओसियाँ।



अधिष्ठायक देव श्री पुणिया बाबा - ओसियाँ

प्राचीन कलात्मक तोरण–ओसियाँ



श्री जैसलमेर तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ लगभग १०५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * जैसलमेर गाँव के पास टेकरी पर किले में।

प्राचीनता * रावल जैसलजी ने अपने नाम पर जैसलमेर बसाकर किले का निर्माण-कार्य वि० सं० १२१२ आषाढ़ शुक्ला प्रतिपदा रविवार के दिन प्रारम्भ किया। इनके भतीजे भोजदेव रावल की राजधानी लोद्रवा थी। काका-भतीजे में कुछ अनबन के कारण जैसलजी ने मोहम्मद गोरी से सैनिक संधि करके भतीजे के नगर लोद्रवा पर चढ़ाई की, युद्ध में भोजदेव व हजारों योद्धा मारे गये। लोद्रवा जैसलजी के अधिकार में आया। लोद्रवा की जनता भय के कारण इधर-उधर जाकर बसी, जिससे लोद्रवा सूना-सा दिखने लगा। जैसलजी ने लोद्रवा से यहाँ आकर अपनी नयी राजधानी बसायी। कहा जाता है यहाँ के मूलनायक श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा वही है, जो लोद्रवा मन्दिर में थी। इस पर सं० २ का लेख उत्कीर्ण है।

किले पर जिनालयों का दृश्य-जैसलमेर



लोद्रवा ध्वंस हुआ तब यह प्रतिमा यहाँ लायी गयी। वि० सं० १२६३ फाल्गुन शुक्ला २ को यह प्रतिमा आचार्य श्री जिनपतिसूरीश्वरजी द्वारा विराजित करवाने का उल्लेख है। इसका उत्सव श्रेष्ठी श्री जगधर ने बड़े हीं धूमधाम के साथ किया था। यह भी कहा जाता है कि इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा आचार्य श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी के हाथों हुई थी। वि० सं० १४५९ में आचार्य श्री जिनराजसूरीश्वरजी के उपदेश से मन्दिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ होकर वि० सं० १४७३ में राउल लक्ष्मणसिंहजी के राज्य काल में रांका गोत्रीय श्रेष्ठी श्री जयसिंह नरसिंह द्वारा आचार्य श्री जिनवर्धन सूरीश्वरजी के हाथों प्रतिष्ठा करवाने का भी उल्लेख आता है। हो सकता है, मंदिर का जीर्णोद्धार होकर प्रतिमा की पुनः प्रतिष्ठा वि० सं० १४७३ में करवायी गयी हो। उस समय मन्दिर का नाम लक्ष्मण विहार रखने का उल्लेख है। इसी मन्दिर में कई अन्य प्रतिमाओं व पाषाण पट्टों पर वि० की पन्द्रहवीं व सोलहवीं सदी के भी लेख हैं। यह जैसलमेर का मुख्य मन्दिर माना जाता है व श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान के मन्दिर के नाम से प्रचलित है। यहाँ के अन्य मन्दिर प्रायः सोलहवीं सदी में निर्मित हुए का उल्लेख है।

किसी समय यहाँ सुसम्पन्न जैन श्रावकों के २७०० परिवार रहते थे व जैन धर्म का यह केन्द्र स्थान था।

विशिष्टता * जैसलमेर अपनी विशिष्ट कला के लिए प्रसिद्ध है। शिल्पकारों ने किसी पाषाण मे कहीं भी ऐसी



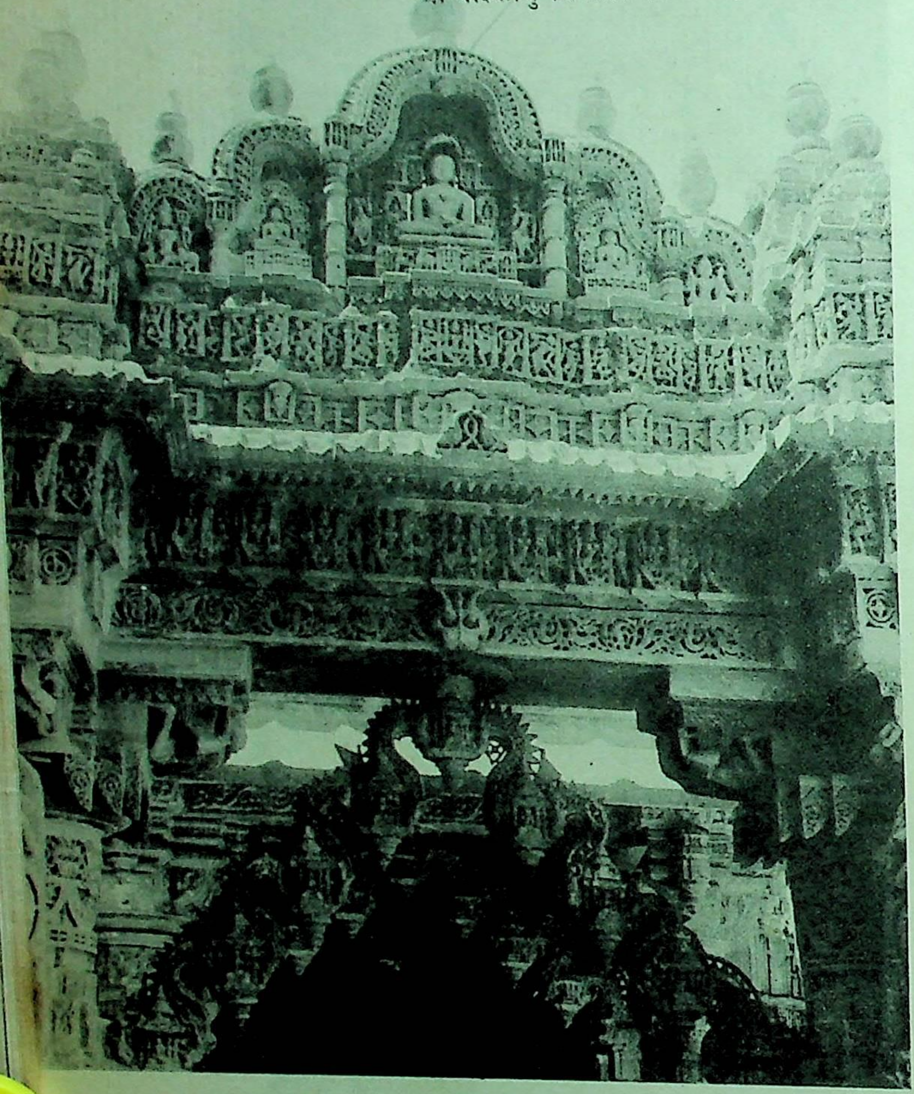
श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान–जैसलमेर

सहायक : मेसर्स. तेजपाल एन्ड कम्पनी, मद्रास–३.

जगह नहीं छोड़ रखी है, जहां कला के कुछ न कुछ दर्शन न हों। भारत में जैसलमेर ही एक ऐसा स्थान है, जहाँ मंदिरों में ही नहीं, हर घर के छज्जों, झरोखों आदि में झीणी-झीणी कला के नमूने नजर आते हैं। यहां का पीला पत्थर इतना कड़क होते हुए भी शिल्पकारों ने अपनी कला का जबरदस्त नमूना पेश किया है।

जैसलमेर जैन ग्रन्थ-भन्डारों के लिये भी देश-विदेश में विख्यात है। विभिन्न विषयों पर यहाँ ग्रन्थ संग्रहीत हैं।

श्री पार्श्वप्रभु जिनालय का प्रवेशद्वार–जैसलमेर



ऐसा अमूल्य संग्रह अन्यत्र कम है। यह जैन धर्म का अमूल्य खजाना है। शोधकर्ताओं के लिए यह एक महत्वपूर्ण व आकर्षक केन्द्र है।

यहाँ बृहत् ग्रन्थ-भन्डार में प्रथम दादा श्री जिनदत्तसूरीश्वर-जी की ८०० वर्षों से प्राचीन चादर, मुहपत्री व चौलपट्टा भी सुरक्षित हैं। यह मान्यता है कि गुरुदेव के दाह-संस्कार के समय ये वस्तुएँ दिव्य शक्ति से अग्निसात न होने के कारण गुरुभक्तों ने सुरक्षित रखी।

यहाँ निम्न ग्रन्थ-भन्डार हैं :– बृहत् भन्डार – किले के मन्दिर में, तपागच्छीय भन्डार – आचार्यगच्छ के उपाश्रय में, बृहत् खरतरगच्छीय भन्डार – भट्टारकगच्छ के उपाश्रय में, लोंकागच्छीय भन्डार – लोंकागच्छ के उपाश्रय में, डुंगरसी ज्ञान भन्डार – डुंगरसी के उपाश्रय में, थीरूशाह भन्डार –थीरूशाह सेठ की हवेली में।

यहाँ अनेकों आचार्य भगवन्तों ने यात्रार्थ पदार्पण किया है। सं० १४६१ में जिनवर्धनसूरीश्वरजी जब जैसलमेर आये, तब मूलनायक श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान के पास भैरवजी की मूर्ति थी। उन्होंने स्वामी व सेवक को बराबर बैठाना उचित न समझकर भैरवजी को बाहर विराजमान करवाया। दूसरे दिन देखने पर भैरवजी की मूर्ति पुनः अन्दर उसी जगह पर थी। दूसरे दिन वापिस बाहर बैठाने पर भी यही हुआ। आखिर में सूरिजी ने हठीदेव समझकर गर्जना के साथ मंत्रोच्चारण किये। उसपर मूर्ति स्वयं ही बाहर विराजित हो गई, तब सूरिजी ने ताँबे की २ मेखें लगवायीं। भैरवजी की मूर्ति अति चमत्कारी है। सूरिजी द्वारा यहाँ और भी चमत्कार बताये गये हैं। उन सब का वर्णन यहाँ सम्भव नहीं।

यहाँ पर हजारों छोटी-बड़ी पूजित जिन-प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं। इतनी प्रतिमाएँ शत्रुंजय के बाद यहीं पर हैं। एक पाषाण पट्ट में जौ जितने मन्दिर में तिल जितनी प्रतिमा उत्कीर्ण है।

यहाँ के सेठ श्री थीरुशाह, संघवी श्री पाँचा, सेठ श्री सँडासा, सेठ श्री जगधर आदि श्रेष्ठियों ने अनेकों धार्मिक कार्य करके ख्याति पायी है। थीरुशाह बड़े दानवीर व सरल स्वभावी थे। उनका निकाला हुआ 'शत्रुंजय यात्रा संघ' प्रसिद्ध है। लौद्रवपुर तीर्थ का अन्तिम जीर्णोद्धार इन्होंने करवाया था।

संघवी श्री पाँचा ने शत्रुंजय महातीर्थ के लिए १३ बार संघ निकाले थे। सेठ श्री सँडासा द्वारा किले पर कोट बनवाने का कार्य व मन्दिर के लिए मुलतान जाने की कथा रोचक है। उसी प्रकार सेठ श्री जगधर आदि श्रेष्ठियों द्वारा किया गया धार्मिक-कार्य उल्लेखनीय है।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में इसके अतिरिक्त किले पर ७ मन्दिर और हैं। गाँव में ५ मन्दिर हैं। यहाँ के ग्रन्थ-भन्डार अति दर्शनीय हैं। बृहत् ग्रन्थ-भन्डार में पन्ने की प्रतिमा, दादा जिनदत्तसूरिजी की आठ सौ वर्ष से प्राचीन चादर, चौलपट्टा आदि दर्शनीय हैं।

कला और सौन्दर्य ✻ जैसलमेर की कला का जितना वर्णन करें कम हैं। हर एक मंदिर में स्तंभों, तोरणों, पुतलियों, नृत्तिकाओं आदि के अद्वितीय बेजोड़ नमूने हैं। यहाँ पर आप को पश्चिम राजस्थान की कला के शानदार नमूने नजर आयेंगे। ऐसी कला के नमूनों के दर्शन अन्यत्र संभव नहीं।

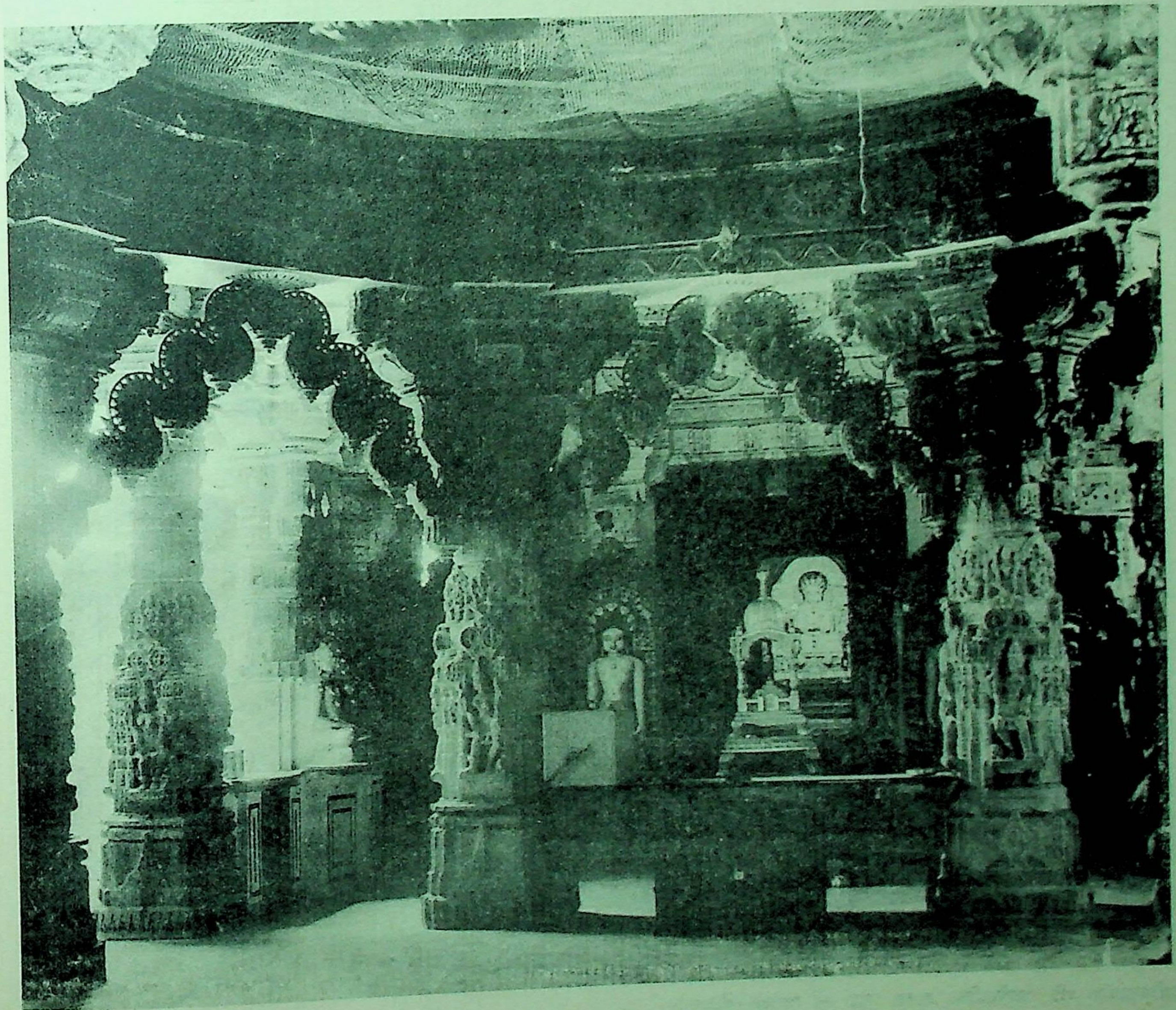
यहाँ की कला निहारते ही आबू देलवाड़ा, राणकपुर, खजुराहो आदि याद आ जाते हैं। लेकिन यहाँ के नमूने वहाँ से भिन्न हैं। यहाँ के कड़क पीले पत्थर में इस ढंग की बारीकी से शिल्प काटना मामूली बात नहीं। तोरण, नृत्तिकाओं व पुतलियों की शिल्पकला यहाँ की विशिष्टता है। जैसलमेर में मन्दिरों के अतिरिक्त पटवों के हवेलियों आदि इमारतों में की हुई कला भी बेजोड़ है। जैसलमेर में आप को जगह-जगह कलात्मक नमूने मिलेंगे। पीले पाषाण से निर्मित शिखर समूहों का दृश्य दूर से ही स्वर्ण शिखरों जैसा प्रतीत होता है। जैन ग्रन्थ-भन्डारों में प्राचीन हस्तलिखित विभिन्न प्रकार के चित्र अति दर्शनीय हैं।

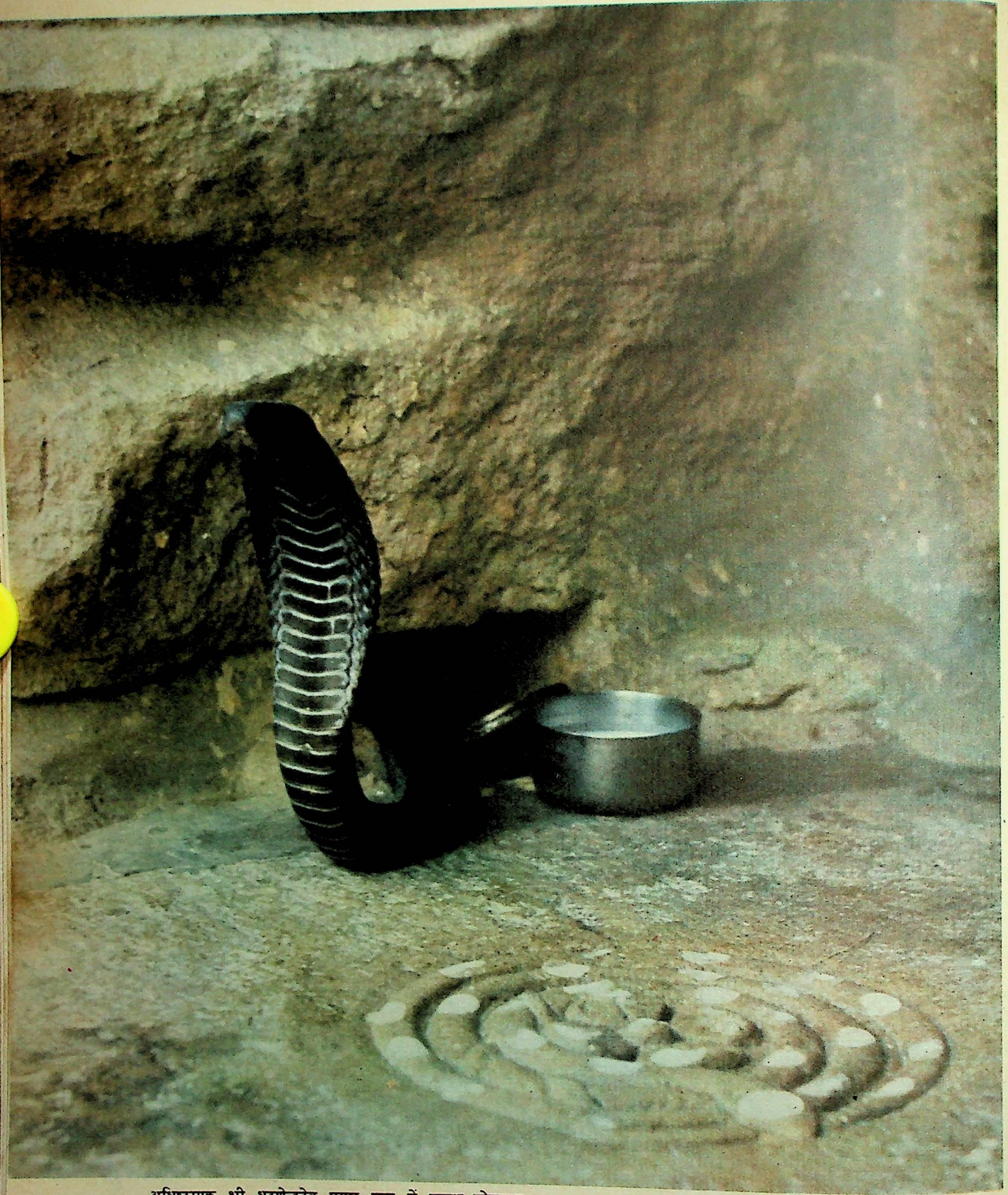
मार्ग दर्शन ❋ जैसलमेर रेलवे स्टेशन धर्मशाला से १.५ कि० मी० व किले के मन्दिरों से २ कि० मी० दूर है। कार व बस किले के नीचे तक जाती हैं, ऊपर पैदल जाना पड़ता है लगभग दस मिनट का रास्ता है। धर्मशाला से २ फर्लांग दूर बस व कार ठहरानी पड़ती हैं, क्योंकि रास्ता तंग है। जोधपुर, बाड़मेर, फलोदी से सीधी बसें आती हैं। बस स्टैण्ड से धर्मशाला आधा मील है। गाँव में सवारी का कोई साधन नहीं है। गाँव के बाहर नूतन धर्मशाला के निर्माण का कार्य चालू है।

सुविधाएँ ❋ ठहरने के लिए गाँव में धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजन-शाला की सुविधा है। किले पर भी धर्मशाला है, जहाँ पूजा सेवा के लिए पानी की व्यवस्था है।

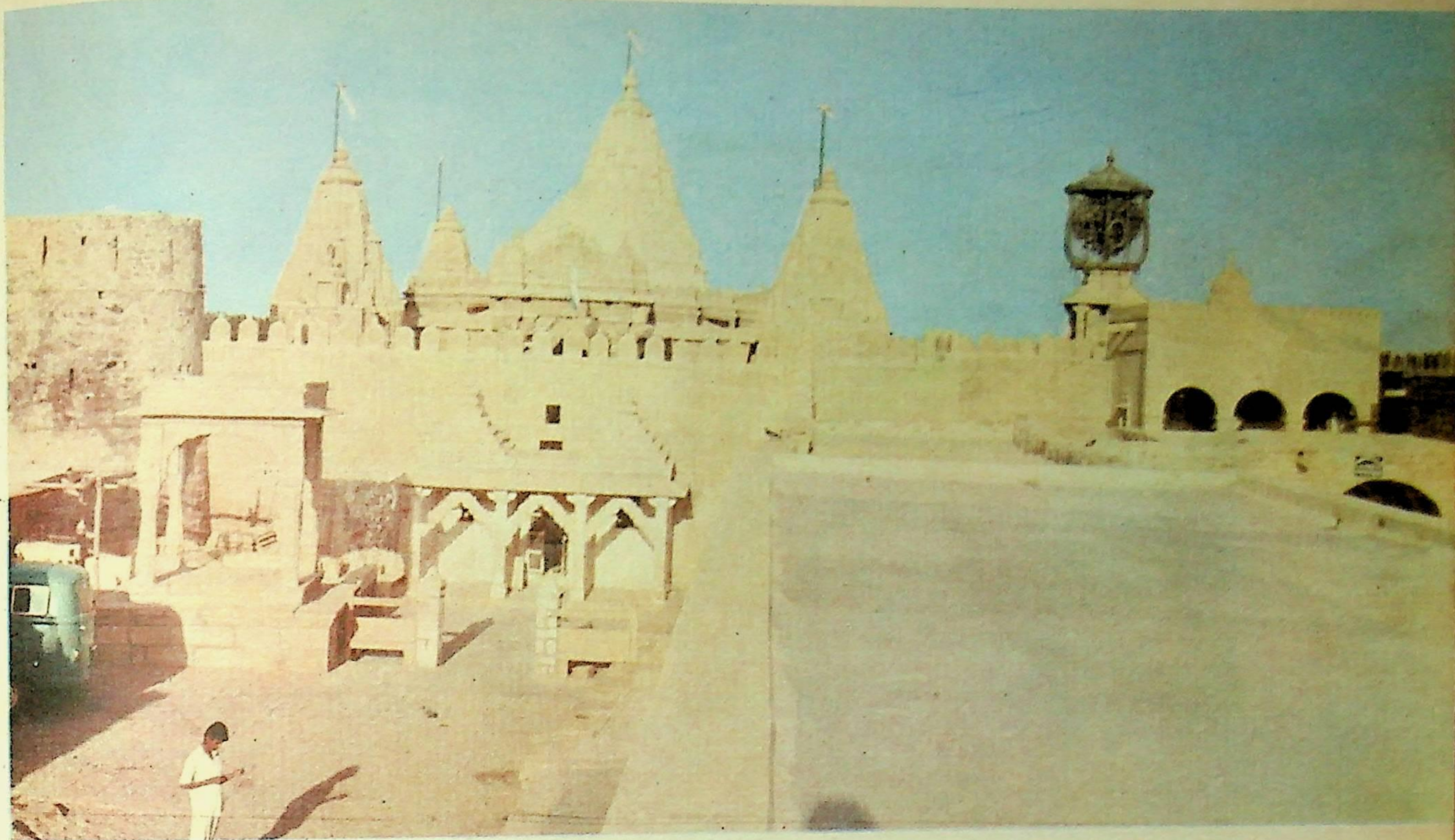
पेढ़ी ❋ जैसलमेर लोद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट : महावीर भवन : डाक घर – जैसलमेर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – जैसलमेर : टेलीफोन – ३० जैसलमेर।

भीतरी दृश्य - जैसलमेर





अधिष्ठायक श्री धरणेन्द्रदेव प्रसन्न मुद्रा में प्रत्यक्ष—लोद्रवपुर



प्राचीन व चमत्कारिक तीर्थक्षेत्र—लोद्रवपुर

श्री लोद्रवपुर तीर्थ



श्री अधिष्ठायक देव का आशीर्वाद हेतु आगमन—लोद्रवपुर

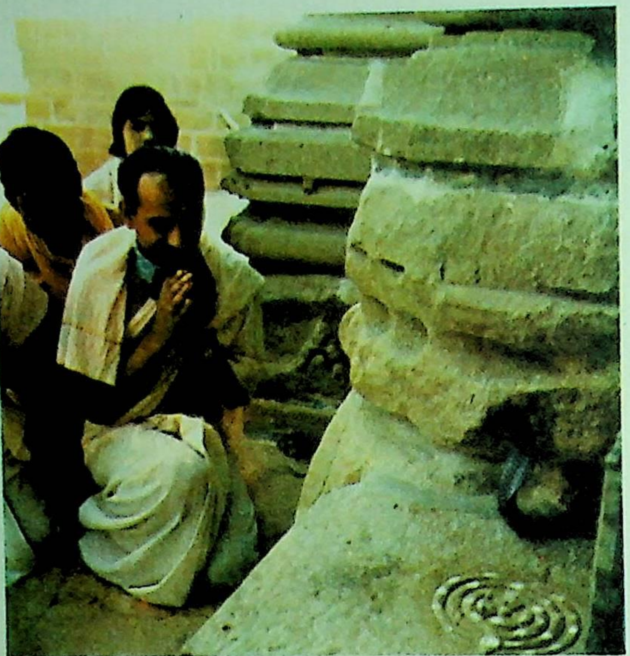
तीर्थाधिराज * श्री सहस्त्रफणा चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान, श्याम वर्ण पद्मासनस्थ, लगभग १०० सें० मी०।

तीर्थ स्थल * जैसलमेर से लगभग १५ कि० मी० व अमरसागर से लगभग ५ कि० मी० दूर ध्वंस हुए लोद्रव गाँव में।

प्राचीनता * कहा जाता है प्राचीन काल में यह लोद्र राजपूतों की राजधानी का एक बड़ा वैभवशाली शहर था। भारत का प्राचीन विश्व-विद्यालय भी यहाँ था। इस स्थान की विश्व में प्रतिष्ठा थी। एक समय यह राज्य सगर राजा के अधीन था। उनके श्रीधर व राजधर नामक दो पुत्र थे। इन्होंने जैनाचार्य से प्रतिबोध पाकर जैन-धर्म अंगीकार किया। उन्होंने यहाँ श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान का अति विशाल भव्य मन्दिर का निर्माण करवाया था, जिसका उल्लेख विद्वान श्री सहजकीर्ती गणिवर्य द्वारा लिखित सतदल पद्मयन्त्र की प्रशस्ती में है, जो अभी भी इस मन्दिर के गर्भ-द्वार के दाहिनी ओर स्थित है। तत्पश्चात सेठ श्री खीमसी द्वारा जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ होकर उनके पुत्र श्री पूनसी द्वारा सम्पूर्ण होने का उल्लेख है।

श्री अधिष्ठायक देवद्वारा "तीर्थ दर्शन"

सफलता हेतु आशीर्वाद—लोद्रवपुर



कालक्रम से यहाँ के रावल भोजदेव व जैसलजी (काके-भतीजे) के बीच हुए भयंकर युद्ध के कारण पूरा शहर विध्वंस हुआ तब इस मन्दिर को भी क्षति पहुँची। विजयी जैसल जी ने अपनी नयी राजधानी बसाकर उसका नाम जैसलमेर रखा। यहाँ के राज-सम्मान प्राप्त सम्पन्न श्रावकों द्वारा जैसलमेर किले में मन्दिरों का निर्माण करवाया गया। उस समय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा को यहाँ से जैसलमेर ले जाकर नव निर्माणित मन्दिर में पुनः प्रतिष्ठित करवायी थी जो अभी वहाँ विद्यमान है।

दानवीर धर्मनिष्ठ सेठ श्री थीरूशाह ने इस प्राचीन मन्दिर का पुनः जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ कर संघ लेकर शत्रुंजय यात्रार्थ पधारे। यात्रा से लौटे तब तक जीर्णोद्धार का कार्य सम्पूर्ण हो चुका था। अब वे सुन्दर, अलौकिक व अपने आप में विशिष्टता पूर्ण ऐसी प्रतिमा की खोज में थे। दैवयोग से पाटण के प्रभु भक्त दो कारीगर अपने जीवन काल की कृतियों में सर्वोत्कृष्ट सहस्रफणा पार्श्वनाथ भगवान की अलौकिक, व अति सुन्दर (कसौटी पाषाण में निर्मित) दो प्रतिमाएँ लेकर मुलतान जा रहे थे। तब विश्राम के लिए यहाँ रुके। रात में दैविक शक्ति से इनको स्वप्न आया कि यहाँ के सेठ थीरूशाह को ये प्रतिमाएँ दे देना। उधर थीरूशाह को भी स्वप्न में इन प्रतिमाओं को लेने के लिए प्रेरणा मिली। दूसरे दिन दोनों एक दूसरे को ढूँढ़ने निकले व मिलने पर सेठ ने दोनों प्रतिमाओं के बराबर सोना देकर प्रतिमाएँ प्राप्त कीं। कारीगर लोग अत्यन्त खुश हुए। जिस काष्ट के रथ में कारीगर प्रतिमाएँ लाये थे वह अभी भी यहाँ विद्यमान है।

एक मत यह भी है कि सेठ थीरूशाह जो रथ संघ में साथ लेकर गये थे वही यह रथ है। वापस आते वक्त इन प्रतिमाओं को पाटण से लेकर आये थे। इन विशिष्ट कलात्मक प्रतिमाओं की इस मन्दिर में वि० सं० १६७३ मिगसर शुक्ला १२ के दिन आचार्य श्री जिनराजसूरीश्वरजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। इस प्रकार सेठ थीरूशाह ने जीर्णोद्धार करवाकर इस प्राचीन तीर्थ के गौरव को अक्षुण बनाये रखा। जीर्णोद्धार का कार्य अभी पुनः चालू है।

विशिष्टता * जैसलमेर पंचतीर्थी का यह प्राचीनतम मुख्य तीर्थ स्थान है। यहाँ की शिल्पकला बहुत ही निराले ढंग की है। पश्चिम राजस्थान के कारीगरों ने हर स्थान पर विभिन्न ढंग की शिल्पकला का नमूना प्रस्तुत करके राजस्थान का गौरव बढ़ाया है। प्राचीन कल्पवृक्ष के दर्शन सिर्फ यहीं पर होते हैं।

किसी जमाने में भारत के बड़े शहरों में इसकी गिनती थी। तब ही तो भारत का बड़ा विश्वविद्यालय यहाँ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

पूर्व काल में जैनाचार्य इसी रास्ते मुलतान जाते होंगे। तभी तो यहाँ के राजकुमार प्रतिबोध पाकर जैन धर्म के अनुयायी बन सकें, जिन्होंने यहाँ एक बड़े भारी तीर्थ की स्थापना कर दी। जो सहस्रों वर्षों से इस वीरान रेगिस्तान में आँधी व तुफानों की झपेटों को सहता हुआ जैन इतिहास के गौरव-गरिमा की याद दिलाता है। यह सब शुभ समय में आचार्य भगवन्त व पुण्यवान राजकुमारों द्वारा शुद्ध विचारों से किये महान कार्य का फल है।

जंगलों में बिखरे सहस्रों इमारतों के खण्डहर यहाँ के प्राचीन इतिहास की याद दिलाते हैं। जंगल में मंगल करता हुआ यहाँ का शान्त व शुद्ध वातावरण आत्मा को परम शान्ति प्रदान करता है। यहाँ के अधिष्ठायक देव अत्यन्त चमत्कारिक व साक्षात हैं। तब ही तो अनेकों बार यह क्षेत्र आक्रमणकारियों द्वारा विध्वंस होने पर भी इस मन्दिर को आँच नहीं आयी।

कहा जाता है हाल ही में पाकिस्तान द्वारा हुए आक्रमण के समय यहाँ के अधिष्ठायक, नागदेव के स्वरूप में कभी-कभी शिखर के ध्वजा दण्ड पर बैठे नजर आते थे। इस आक्रमण के समय भी इस स्थान को कोई आँच नहीं आयी। यहाँ से गुजरनेवाले भारतीय सेना के अफसर आदि भी प्रभु के दर्शन कर आगे बढ़ते थे। आक्रमण के समय सुविधा हेतु आखिर मन्दिर तक डामर सड़क का निर्माण सरकार द्वारा हो चुका था। अभी वर्तमान में एक अभूतपूर्व चमत्कार हुआ, जिसका संक्षेप में आँखों देखा वर्णन इस प्रकार है :—

दिनांक १ अप्रैल, १९७५ को श्री महावीर जैन कल्याण संघ, मद्रास के प्रतिनिधिगण इस ग्रन्थ के लिए फोटोग्राफी

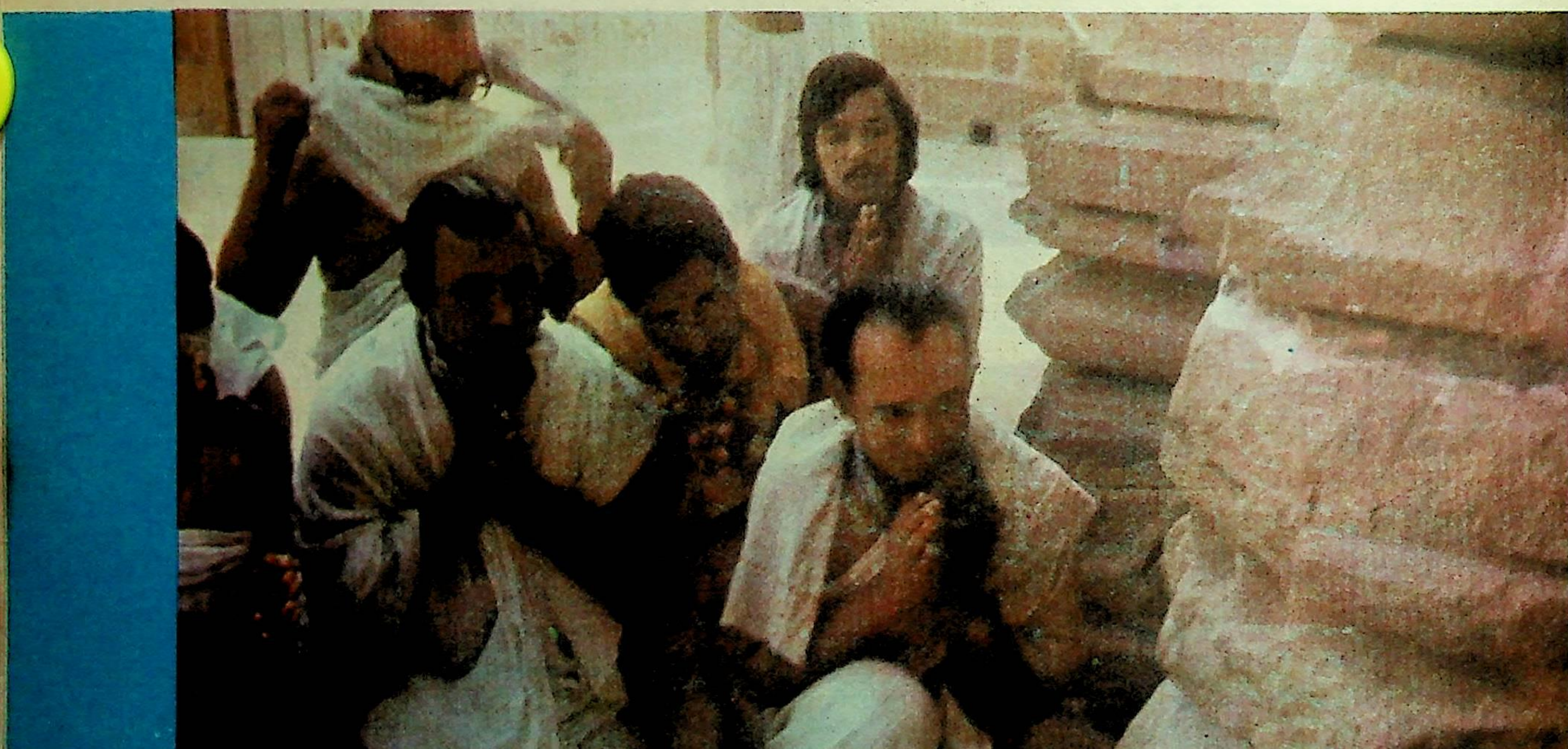


श्री लोद्रवा पार्श्वनाथ भगवान–लोद्रवपुर

सहायक : श्री मानकलालजी उदेराजजी पुखराजजी पन्नालाल वैद, फलोदी (राज०) वाले, मद्रास–७.

हेतु पूरे भारत के तीर्थ स्थानों का भ्रमण करते हुए यहाँ आये। प्रतिनिधिगण प्रभु की पूजा-सेवा करके उल्लासपूर्वक आ रहे थे। तब प्रवेश द्वार में नागदेव के दर्शन हुए। अधिष्ठायक देव का स्वरूप समझकर फोटो लिये गये। इतने में नागदेव वहाँ पर स्थित एक पत्थर के नीचे चले गये, जहाँ पर कोई छिद्र आदि नहीं था। जीर्णोद्धार का काम करनेवाले उपस्थित शिलावटों आदि ने कहा कि यहाँ कोई छिद्र नहीं हैं। पत्थर हटाते ही नागदेव बाहर आ जायेंगे, आप मन चाहे फोटो फिर ले सकेंगे। उनका यह भी कहना था कि जंगल में अनेकों सर्प घूमते नजर आते हैं। इनको यहाँ के अधिष्ठायक श्री धरणेन्द्र देव उसी हालत में हम मान सकते हैं, अगर यहाँ से लगभग ३० मीटर दूर स्थित उनके ही स्थान पर प्रकट होकर दर्शन दें। संवाद चल ही रहा था, कुछ सज्जन पुनः दर्शन की अति उत्सुकता के साथ पत्थर के निकट बैठे थे। परन्तु देव तो अदृश्य हो चुके थे। इतने में एक सज्जन ने पुकारा कि अधिष्ठायक देव नागदेव के स्वरूप में अपने ही स्थान पर प्रकट हुए हैं। आश्चर्यमयी घटना का वृत्तान्त सुनकर प्रतिनिधिगण, शिल्पीगण व पुजारी आदि तुरन्त ही प्रफुल्लता के साथ दर्शन

डेलीगेसन के सदस्यों को अधिष्ठायक देव के अपूर्व दर्शन—लोद्रवपुर



की अभिलाषा से उस स्थान की तरफ दौड़े। उस समय के उनके हर्ष का वर्णन शब्दों में करना संभव नहीं। सब ने साक्षात् प्रकट हुए अधिष्ठायक देव को भक्ति-भाव पूर्वक वन्दना की। श्रद्धालु फोटोग्राफर श्री गोपालरत्नम् के इच्छानुसार अधिष्ठायक देव ने फोटो लेने दिये, जो कि सदियों तक इस अलौकिक घटना की याद दिलायेंगे। यह दृश्य लगभग २० मिनट रहा। चलचित्र भी लिया गया। प्रतिनिधिगण पूजा के वेश में थे। उनको पूजा करने की अभिलाषा थीं। केशर की कटोरी उनके पास थी। केशर के छाँटनों से पूजा की अभिलाषा पूर्ण होते ही अधिष्ठायक देव अदृश्य हो गये। कभी-कभी यहाँ के अधिष्ठायक देव नागदेव के रूप में प्रकट होकर श्रद्धालू भक्तजनों को दर्शन देते हैं, जिसे आज तक किंवदन्ति बताया जाता था। परन्तु इस आश्चर्यमयी अलौकिक घटना ने उन किंवदन्तियों को प्रमाणित सिद्ध करने के साथ यह भी स्पष्ट किया है कि जैन धर्म के अधिष्ठायक आज भी जागरूप हैं। भक्तजन इस पुण्य पावन चमत्कारिक तीर्थ स्थल की यात्रा करने का अवसर न चूकें।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है। मन्दिर के सामने धर्मशाला में एक दादावाड़ी है।

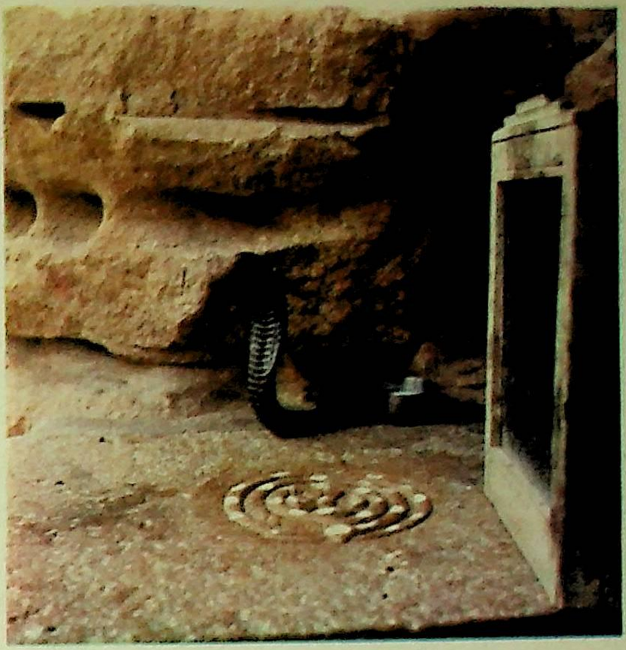
कला और सौन्दर्य * यहाँ पर भी विचित्र व कलात्मक कारीगरी का अद्वितीय स्वरूप मिलता है। यहाँ के स्तम्भ, छत और शिखर का एक-एक पत्थर बारीक काम का सजीव दृश्य प्रस्तुत कर रहे हैं। ऐसी बारीकी का काम अत्यन्त दुर्लभ हैं। यहाँ की मूर्तियों को देखने से ज्ञात होता है कि शिल्पकारों में सजीव सौन्दर्य चित्रित करने की होड़-सी लगी थी। प्रवेशद्वार की तोरण कला सौन्दर्य को जागृत करती हैं।

सहस्रफणा पार्श्वनाथ भगवान की कसौटी पाषाण में बनी ऐसी भव्य, चमत्कारी कलात्मक प्रतिमा के दर्शन अन्यत्र दुर्लभ है। इन प्रतिमाओं को पाटण से जिस काष्ठ के रथ में लाया गया था उस कलात्मक रथ की कला भी अपना अलग स्थान रखती है।

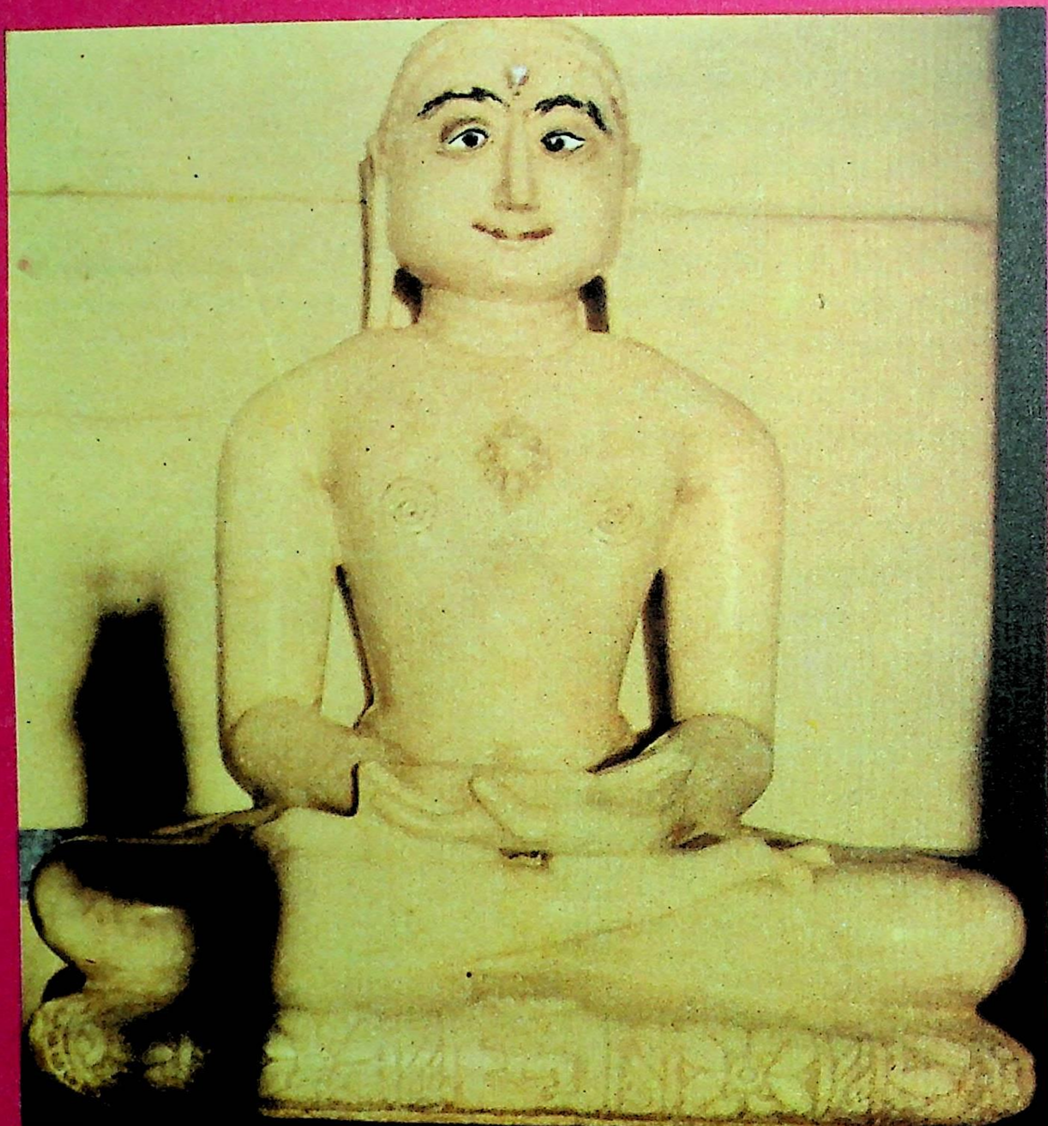
मार्ग दर्शन * यहाँ का स्टेशन जैसलमेर लगभग १५ कि० मी० दूर है, जहाँ से जीप व टैक्सी की सुविधा है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। कार व बस मन्दिर तक जा सकती हैं।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए मन्दिर के सामने ही धर्मशाला है, जहाँ पानी, बर्तन व ओढ़ने-बिछाने के वस्त्रों की सुविधा है। भोजनशाला भी प्रारम्भ होने वाली है।

पेढ़ी * श्री जैसलमेर लोद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट : गाँव – लोद्रवपुर : जिला – जैसलमेर : तार घर – जैसलमेर : डाक घर – जैसलमेर : प्रान्त – राजस्थान।: टेलीफोन – ३० जैसलमेर।



भक्तजनों को अधिष्ठायक देव के आशीर्वाद–लोद्रवपुर



श्री आदीश्वर भगवान–अमरसागर

सहायक : श्री मगनमलजी गजराजजी जालमचन्दजी कानूगा, फलोदी (राज०) वाले, दिन्डीवनम (तमिलनाडु)



श्री आदिनाथ जिनालय–अमरसागर

श्री अमरसागर तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री आदिनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ७५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * जैसलमेर से ३ कि० मी० दूर लौद्रवा मार्ग पर अमरसागर गाँव में तालाब के बीच।

प्राचीनता * यह मन्दिर वि० सं० १९२८ में पटवा शेठ श्री हिम्मतरामजी बाफणा द्वारा निर्मित करवाया गया व आचार्य श्री जिनमहेन्द्रसूरिजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

अभी जीर्णोद्धार का कार्य चालू है। प्रतिमाजी प्राचीन श्री सम्प्रति राजा के समय की मानी जाती है।

विशिष्टता * जैसलमेर की पंचतीर्थी का यह तीर्थ स्थान माना जाता है। यहाँ के बाफणा बंधुओं द्वारा निकाला हुआ शत्रुंजय-यात्रा संघ प्रसिद्ध है। देश के प्रसिद्ध पीले पत्थर की खानें यहीं पर हैं। यह पत्थर पानी पड़ने से दिन-प्रतिदिन मजबूत बनता जाता है, यह इसकी विशेषता है। यहाँ का पत्थर जैसलमेर के पत्थर के नाम से प्रख्यात है।

अन्य मन्दिर * इसके निकट तालाब के किनारे दो और मन्दिर हैं, जो शेठ श्री सवाईरामजी प्रतापचंदजी व ओसवाल पंचायत के बनाये हुए हैं। ये मन्दिर सं० १८९७ व सं० १९०३ में बने हैं। ओसवाल पंचायत द्वारा बनाये मन्दिर को डुंगरसी का मन्दिर कहते हैं। इस मन्दिर की प्रतिमा विशालकाय व अति ही सुन्दर है, जो विक्रमपुर से लायी हुई लगभग १५०० वर्ष पूर्व की मानी जाती है। इनके अतिरिक्त दो दादावाड़ियाँ भी हैं। दादावाड़ियों में युगप्रधान दादा श्री जिन कुशलसूरीश्वरजी के चरण स्थापित हैं।

कला और सौन्दर्य * तालाब के बीचों बीच निर्मित इस भव्य कलात्मक दो मंजिल के मन्दिर का दृश्य अति ही सुन्दर है। यहाँ के मजबूत पीले पत्थर में बनाये गये विभिन्न कला के नमूने अद्वितीय व दर्शनीय हैं। मन्दिर के सामने सुरम्य उद्यान अपने ढंग का अनोखा है। यहाँ की शिल्प-कला भारतीय कला का एक विशिष्ट नमूना है। मन्दिर का सभा मन्डप बड़ा ही सुन्दर व कलापूर्ण है। यहाँ की खुदाई का कार्य पत्थर पर बहुत गहराई से हुआ है। मन्दिर के चारों ओर पत्थर की जालियों की कला निहारने योग्य है। यह यहाँ की विशेषता है।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन जैसलमेर लगभग ५ कि० मी० दूर है, जहाँ से जीप मिल सकती है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। मन्दिर के तालाब किनारे तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए वर्तमान में यहाँ कोई सुविधा नहीं है। जैसलमेर धर्मशाला में ही ठहरकर आना सुविधाजनक है, जहाँ सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

पेढ़ी * श्री जैसलमेर लोद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट : महावीर भवन : डाक घर – जैसलमेर : जिला – जैसलमेर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – जैसलमेर : टेलीफोन – ३० जैसलमेर।

श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ भगवान–ब्रह्मसर



श्री ब्रह्मसर तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ७५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ जैसलमेर से लगभग १३ कि० मी० दूर छोटे से ब्रह्मसर गाँव में।

प्राचीनता ✻ यहाँ के श्रेष्ठी श्री अमोलखचन्दजी माणकलालजी बागरेचा ने इस मन्दिर का निर्माण करवाकर वि० सं० १८४४ माघ शुक्ला ८ के शुभ दिन प्रतिष्ठा करवायी।

विशिष्टता ✻ यह क्षेत्र श्री जैसलमेर पंचतीर्थी का एक तीर्थ-स्थान माना जाता है। यहाँ से लगभग १.५ कि० मी० दूर दादा श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी का स्थान व कुन्ड हैं। जन श्रुति के अनुसार लूणिया गोत्र के एक सेठ देराउर गाँव में यवनों द्वारा बहुत सताये जाते थे। गुरुदेव ने सेठ को राजस्थान जाने को कहा और कहा कि पीछे नहीं देखना। लूणिया परिवार ऊँटों पर सामान आदि लादकर चले। इस स्थान पर पहुँचने पर उजाला देखकर पीछे की ओर देखा तो गुरुदेव वहीं रुक गये व आशीर्वाद देकर कहा कि अब मैं जाता हूँ। तुम डरना नहीं, पास ही ब्रह्मसर गाँव में चले जाओ। जिस पाषाण पर गुरुदेव ने खड़े होकर दर्शन दिये थे उसी पर गुरुदेव के चरण उत्कीर्ण करवाकर छत्री में स्थापित किये। वे चरण आज भी विद्यमान हैं। दादावाड़ी का निर्माण भी हुआ। दादावाड़ी में एक कुन्ड है जो अकाल में भी हमेशा निर्मल जल से भरा रहता है। यह स्थान बहुत ही चमत्कारपूर्ण व देखने योग्य है।

इसके निकट ही वैशाखी नाम का वैष्णवों का तीर्थ स्थान है, जो बौद्धकालीन माना जाता है। वैशाखी व ब्रह्मसर के बीच 'गडवी' नामक एक कुआँ है। दुष्काल के समय जैसल-

मेर की पनिहारिनियाँ यहाँ से पानी ले जाया करती थीं, ऐसा कहा जाता है।

अन्य मन्दिर ※ वर्तमान में इसके अतिरिक्त लगभग १.५ कि० मी० दूर एक दादावाड़ी है, जिसका वर्णन विशिष्टता में किया है।

कला और सौन्दर्य ※ मन्दिर के सामने उपाश्रय के दरवाजे पर कुछ विशिष्ट कला के नमूने उत्कीर्ण हैं।

मार्ग दर्शन ※ यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन जैसलमेर है, जो लगभग १३ कि० मी० दूर है, वहाँ से जीप मिल सकती है। यात्रियों को जैसलमेर धर्मशाला में ठहरकर ही आना सुविधाजनक होगा। वहाँ सारी सुविधाएँ हैं। यह स्थान जैसलमेर-बागसा मार्ग में स्थित है। जैसलमेर से ७ कि० मी० पक्की सड़क व ६ कि० मी० कच्ची सड़क है। लेकिन मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं। लोद्रवा तीर्थ इस स्थान से लगभग १३ कि० मी० है।

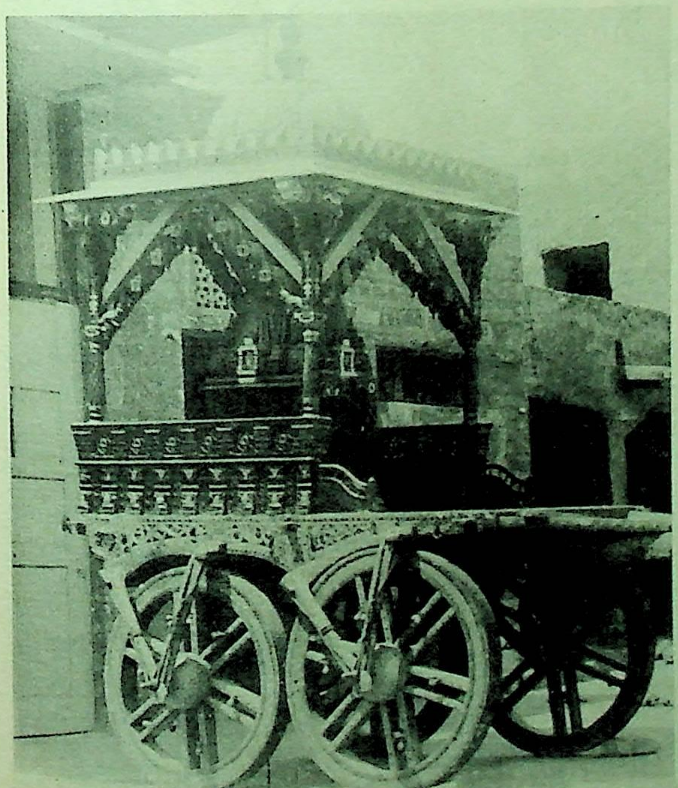
सुविधाएँ ※ ठहरने के लिए छोटी सी धर्मशाला है। पानी का साधन है, लेकिन वर्तमान में इतनी सुविधाजनक नहीं है। यात्रियों को जैसलमेर ठहरकर आना ही उत्तम है।

पेढ़ी ※ श्री जैसलमेर लोद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट : गाँव – ब्रह्मसर : डाक घर – जैसलमेर : जिला – जैसलमेर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – जैसलमेर : टेलीफोन – ३० जैसलमेर।



श्री पार्श्वप्रभु जिनालय–ब्रह्मसर

ऐतिहासिक कलात्मक रथ - लोद्रवा



सहायक : १. श्री जुगराजजी अमरचन्दजी डागा, तिरुवन्नामलै (तमिलनाडु) २. श्री भंवरलालजी गजराजजी बोकड़िया, सेलम (तमिलनाडु) ३. श्री भंवरलालजी रिखबचन्दजी संचेती, कांचीपुरम (तमिलनाडु) ४. श्री भेरुदानजी माणकलालजी वैद, वेलिंगटन

श्री पार्श्वनाथ भगवान–पोकरण



श्री पोकरण तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ७५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ पोकरण गाँव के मध्यस्थ।

प्राचीनता ✻ इस मन्दिर की प्रतिष्ठा वि० सं० १५४८ में हुई थी। जीर्णोद्धार होकर पुनः प्रतिष्ठा वि० सं० १८८३ में सम्पन्न हुई।

विशिष्टता ✻ श्री जैसलमेर पंचतीर्थी का यह एक तीर्थ-स्थान माना जाता है।

अन्य मन्दिर ✻ इसके अतिरिक्त इसके निकट ही निम्न दो और मन्दिर हैं व गाँव के बाहर जोधपुर मार्ग में एक प्राचीन दादावाड़ी है।

१. श्री आदिनाथ भगवान का, जिसकी प्रतिष्ठा वि० सं० १५३६ में हुई थी।

२. श्री पार्श्वनाथ भगवान का, जिसकी प्रतिष्ठा वि० सं० १५४८ में हुई थी व वि० सं० १८५६ में जीर्णोद्धार होकर पुनः प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। पहले यह मंदिर श्री शान्तिनाथ भगवान के नाम से प्रसिद्ध था।

कला और सौन्दर्य ✻ लाल पत्थर की बनी इमारतों में कोतरणी का काम देखने योग्य है।

मार्ग दर्शन ✻ यहाँ का रेलवे स्टेशन पोकरण मन्दिर से करीब १ कि० मी० दूर है। यहाँ पर सवारी का कोई साधन नहीं है। गली तंग रहने के कारण कार व बस मन्दिर से १०० मीटर दूर ठहरानी पड़ती हैं। बस स्टैण्ड मन्दिर से करीब २०० मीटर दूर है। यह क्षेत्र जोधपुर-जैसलमेर मार्ग पर स्थित है। पोकरण से जैसलमेर करीब ४० कि० मी० दूर है।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए मन्दिर के पास ही एक छोटी धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली की सुविधा है।

पेढ़ी ✻ श्री जैसलमेर लोद्रवपुर पार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन ट्रस्ट : जैन मन्दिर : डाक घर – पोकरण : जिला – जैसलमेर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – पोकरण : टेलीफोन – पी० सी० ओ० पोकरण।

श्री पार्श्वनाथ जिनालय–पोकरण





सहायक : १. श्री सिमरथमलजी फतेलालजी संचेती, कुनूर (तमिलनाडु) २. श्री भंवरलालजी पारसमलजी मूथा, उटाकमन्ड (तमिलनाडु) ३. श्री एस गुमानमलजी गणेशमलजी गुलेछा तिरुपातूर (तमिलनाडु)। ४. श्री सी. बालचन्दजी निहालचन्दजी बच्छावत, कुनूर (तमिलनाडु)।

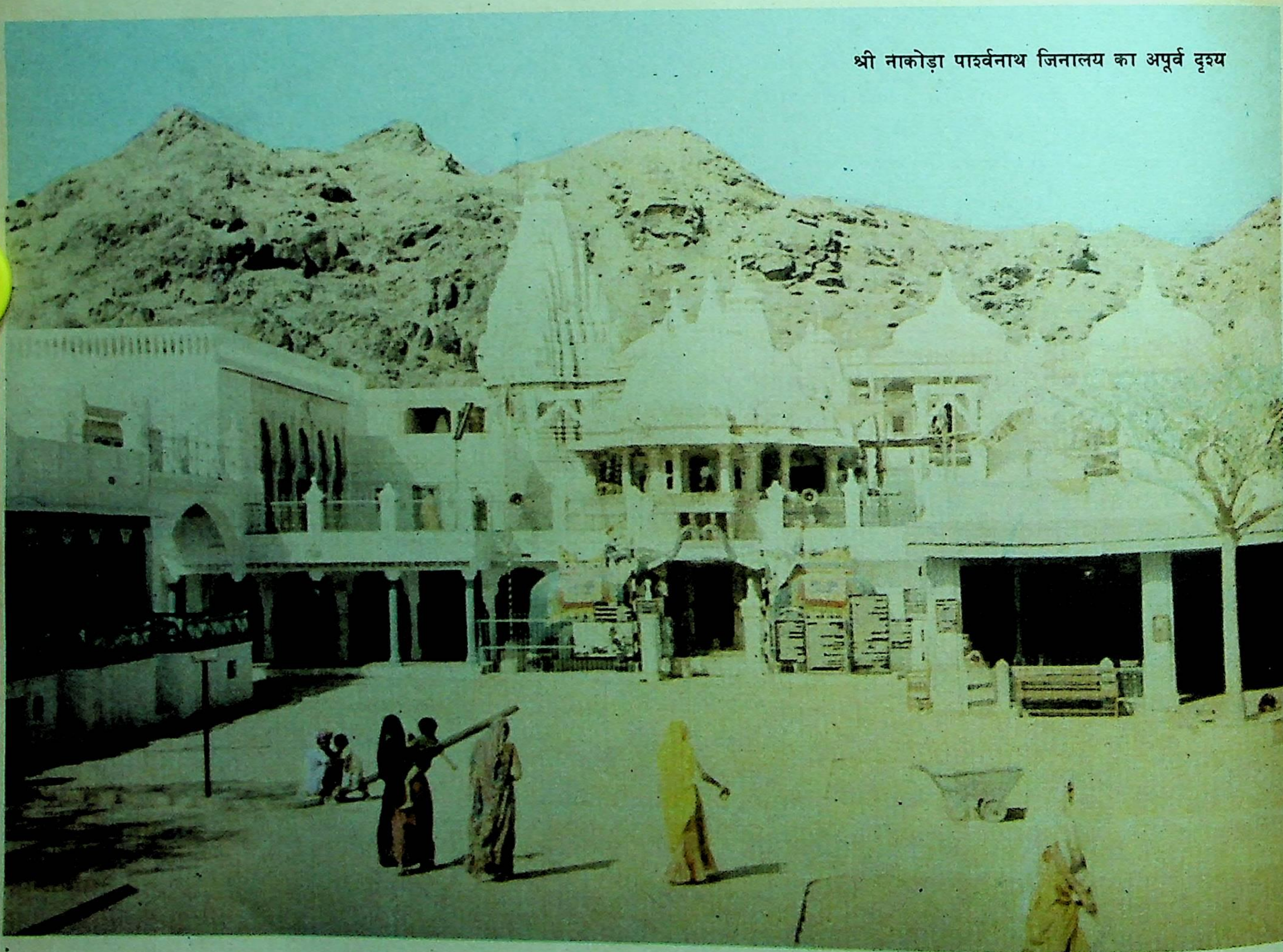
श्री नाकोड़ा तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री पार्श्वनाथ भगवान, श्यामवर्ण, पद्मासनस्थ, ५८ सें० मी०।

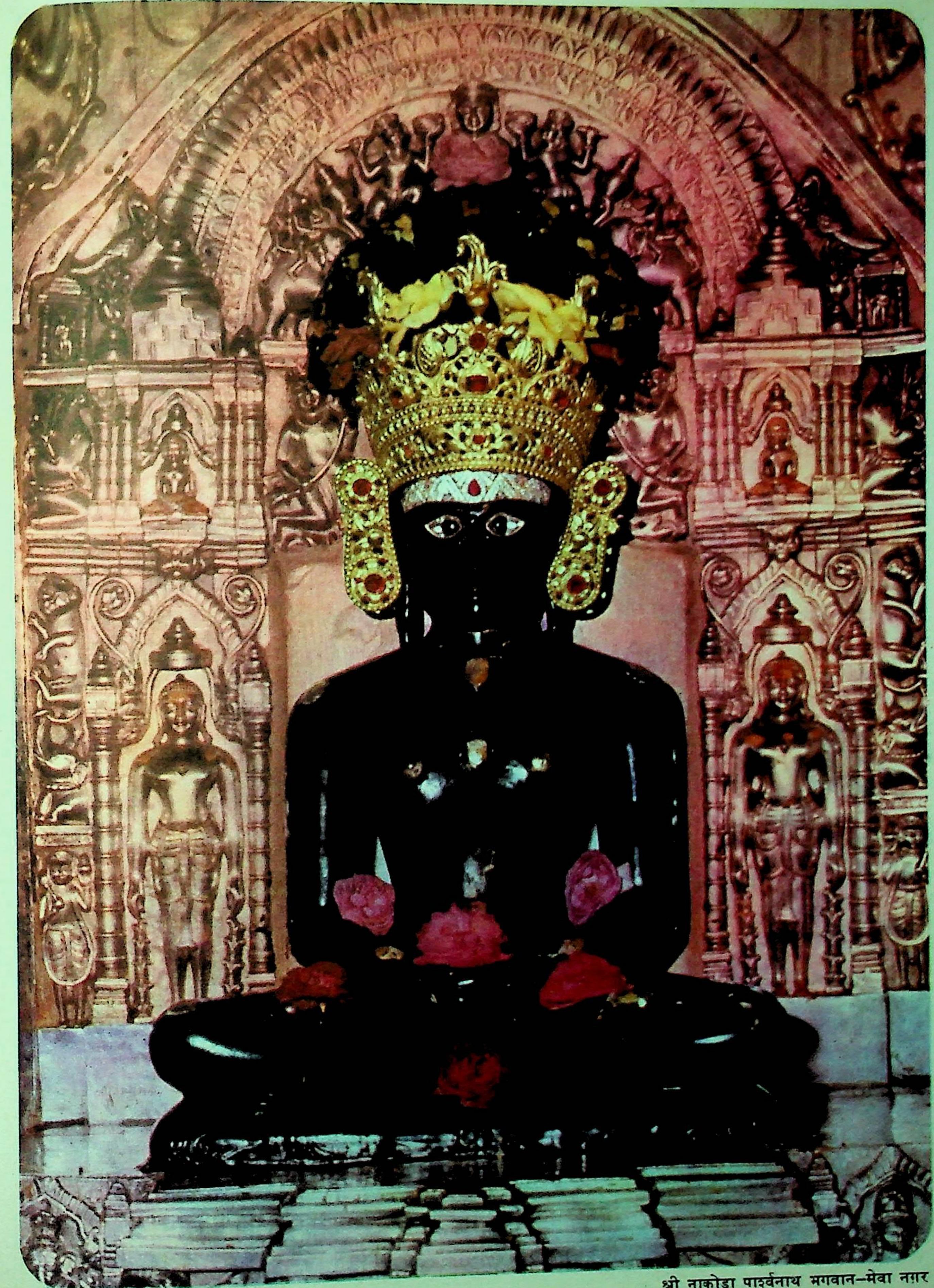
तीर्थ स्थल ✻ बालोतरा से १० कि० मी० व मेवानगर से एक कि० मी० दूर जंगल में पर्वतों के बीच।

प्राचीनता ✻ इसका प्राचीन नाम वीरमपुर होने का उल्लेख है। कहा जाता है कि वि० पूर्व तीसरी शताब्दी में श्री वीरसेन व नाकोरसेन भाग्यवान बंधुओं ने अपने नाम पर बीस मील के अन्तर में वीरमपुर व नाकोरनगर गाँव बसाये थे। श्री वीरसेन ने वीरमपुर में श्री चन्द्रप्रभ भगवान का व नाकोरसेन ने नाकोरनगर में श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर निर्मित करवाकर परमपूज्य आर्य श्री स्थूलिभद्रस्वामीजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा संपन्न करवायी थी। तत्पश्चात श्री संप्रतिराजा प्रतिबोधक आचार्य श्री सुहस्तीसूरीश्वरजी, विक्रमादित्य राजा की सभा के रत्न आचार्य श्री सिद्धसेन दिवाकर, भक्तामर स्तोत्र रचयिता आचार्य श्री मानतुंगसूरीश्वरजी, श्री कालकाचार्य, श्री हरीभद्रसूरिजी, श्री देवसूरिजी आदि प्रकाण्ड विद्वान आचार्यों ने इन तीर्थों की यात्रा कर राजा श्री संप्रति, राजा श्री विक्रमादित्य आदि राजाओं को प्रेरणा देकर समय समय पर इन मन्दिरों के जीर्णोद्धार करवाने के उल्लेख हैं। नाकोरनगर लगभग तेरहवीं शताब्दी के अन्त तक आबाद रहा। वि० सं० १२८० में जब आलमशाह ने चढ़ाई की, तब श्री संघ ने प्रतिमाओं को वहाँ से चार मील दूर कालीद्रह गाँव में सुरक्षा हेतु गर्भगृह में रख दिया था। बादशाह ने मन्दिरों को खाली पाकर तोड़ डाला। भय से जनता इधर-उधर गाँवों में जा बसी।

वि० सं० ९०९ में वीरमपुरशहर, सुसम्पन्न श्रावकों के लगभग २७०० घरों की आबादी से जगमगा रहा था। उस



श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ जिनालय का अपूर्व दृश्य



श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ भगवान–मेवा नगर

सहायक : शाह अम्बालालजी भूरमलजी, केशवणा (राज०) वाले, मद्रास–१

समय श्रेष्ठी श्री हरखचंदजी ने प्राचीन मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाकर श्री महावीर भगवान के प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवायी थी, ऐसा उल्लेख है। वि० सं० १२२३ में पुन: जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख मिलता है। वि० सं० १२८० में आलमशाह ने इस नगर पर भी चढ़ाई की। तब इस मंदिर को भारी क्षति पहुँची। वि० की लगभग १५ वीं शताब्दी के आरंभ में इस मन्दिर के नवनिर्माण का कार्य पुन: प्रारंभ किया गया। कालीद्रह में स्थित नाकोरनगर की १२० प्राचीन प्रतिमाएँ यहाँ लाकर उसमें से श्री पार्श्वनाथ भगवान की इस सुन्दर चमत्कारी प्रतिमा को मूलनायक के रूप में इस नवनिर्मित मन्दिर में वि० सं० १४२९ में पुन: प्रतिष्ठित किया गया जो अभी विद्यमान है। मूल प्रतिमा नाकोरनगर की रहने के कारण इस तीर्थ का नाम नाकोड़ा प्रचलित हुआ।

एक और मान्यतानुसार यह प्रतिमा, भाग्यवानसुश्रावक श्री जिनदत्त को श्री अधिष्ठायक देव द्वारा स्वप्न में दिये संकेत के आधार पर नाकोरनगर के निकट सिणदरी गाँव के पास एक तालाब से प्रकट हुई थी, जिसे अति ही उल्लास व विराट जुलूस के साथ यहाँ लाकर वि० सं० १४२९ में भट्टारक आचार्य श्री उदयसूरीश्वरजी के सुहस्ते प्रतिष्ठित करवाई गई। उस दिन से इस तीर्थ का नाम नाकोड़ा पड़ा।

वि० सं० १५११ के जीर्णोद्धार के समय यहाँ के प्रकट प्रभावी साक्षात्कार अधिष्ठायकदेव श्री भैरवजी की स्थापना आचार्य श्री कीर्तिरत्नसूरिजी द्वारा करवाई गई, जो इस तीर्थ की रक्षा करते हैं व भक्तों की मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

सं० १५६४ में ओशवाल वंशज छाजेड़ गोत्रिय सेठ जुठिल के प्रपौत्र सेठ सदारंग द्वारा जीर्णोद्धार होने का उल्लेख है। वि० सं० १६३८ में इस मन्दिर के पुनरुद्धार हुए का उल्लेख है। लगभग सत्रहवीं शताब्दी तक यहाँ की जाहोजलाली अच्छी रही। उसके बाद श्रेष्ठी मालाशाह संकलेचा के भ्राता श्री नानकजी ने यहाँ के राजकुमार का अप्रिय व्यवहार देखकर गाँव छोड़ने का निर्णय लिया। अत: जैसलमेर का संघ निकालकर सारे जैन कुटुम्बीजनों के साथ गाँव छोड़कर चले गये।

उसके पश्चात् इस गाँव की जनसंख्या दिन प्रति दिन घटने लगी। आज जैनियों का कोई घर नहीं हैं, लेकिन श्री संघ द्वारा हो रही तीर्थ की व्यवस्था उल्लेखनीय है। सत्रहवीं सदी के बाद सं० १८६५ में जीर्णोद्धार होने का उल्लेख है। उसके पश्चात भी समय-समय पर आवश्यक जीर्णोद्धार हुए।

विशिष्टता ✻ परमपूज्य श्री स्थूलिभद्रस्वामीजी द्वारा प्रतिष्ठित इस तीर्थ की महान विशेषता है। पार्श्वप्रभु की प्राचीन प्रतिमा सुन्दर व अति ही चमत्कारी है। यहाँ के अधिष्ठायक श्री भैरवजी महाराज साक्षात हैं व उनके चमत्कार जगविख्यात हैं। हमेशा सैकड़ों यात्री अपनी अपनी भावना लेकर आते हैं। उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। यहाँ मन्दिर के अतिरिक्त कोई घर नहीं है। परन्तु यात्रियों का निरन्तर आवागमन रहने के कारण यह स्थल नगरी सा प्रतीत होता है। प्रतिवर्ष श्री पार्श्वप्रभु के जन्म कल्याणक दिवस पौष कृष्णा दशमी को विराट मेले का आयोजन होता है।

अन्य मन्दिर ✻ इसके अतिरिक्त इसी मन्दिर के पास ही श्री आदीश्वर भगवान का व श्री शान्तिनाथ भगवान का मन्दिर हैं। ये मन्दिर भी प्राचीन लगभग सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी के माने जाते हैं।

कला और सौन्दर्य ✻ यहाँ भोंयरों में बारहवीं सदी से सत्रहवीं सदी तक की प्राचीन प्रतिमाएँ दर्शनीय हैं। मूलनायक भगवान की प्रतिमा का तो जितना वर्णन करें कम है। एक बार आने वाले यात्री की भावना पुन: आने की सहज ही में हो जाती है। यह स्थल जंगल में छटायुक्त पहाड़ियों के बीच एकान्त में रहने के कारण यहाँ का प्राकृतिक दृश्य देखते ही बनता है।

मार्ग दर्शन ✻ यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन बालोतरा ११ कि० मी० दूर है। वहाँ से टैक्सी व बसों की सुविधा है। यहाँ जालोर-बालोतरा सड़क मार्ग में जसोल होकर आना पड़ता है। यहाँ से जोधपुर, सिरोही, फालना, देसूरी, जालोर, बाड़मेर, राणकपुर के लिए सीधी बसें हैं। मन्दिर के बाहर ही बस स्टैन्ड है। आखिर तक पक्की सड़क है। कार व बस मन्दिर तक जा सकती हैं।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए मन्दिर के अहाते में ही विशाल धर्मशाला है। सर्व सुविधायुक्त अलग कमरे भी बने हुए हैं। पानी, बिजली, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की समुचित व्यवस्था है। यात्रीगणों के पहुँचने पर भाता भी दिया जाता है।

पेढ़ी ✻ श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ। डाक घर – मेवानगर : स्टेशन – बालोतरा : जिला – बाड़मेर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – बालोतरा : टेलीफोन – ३० बालोतरा।



साक्षात्कार श्री नाकोड़ा भैरवजी महाराज—मेवा नगर

श्री नागेश्वर तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री पार्श्वनाथ भगवान, कायोत्सर्ग मुद्रा, हरित वर्ण, ४२० सें० मी०।

तीर्थ स्थल * उन्हेल गाँव के पास झरने के किनारे।

प्राचीनता * प्रतिमाजी की कलाकृति से प्रतिमा लगभग ११०० वर्ष प्राचीन होने का अनुमान लगाया जाता है। यह प्राचीन मन्दिर जीर्ण अवस्था में था, जिसकी देखभाल एक सन्यासी बाबा कर रहा था, प्रतिमा हमेशा अपूजित रहती थी। यह दृश्य कुछ वर्षों पूर्व निकटवर्ती जैन संघ के ध्यान में आकृष्ट हुआ। परमपूज्य उपाध्याय तपस्वी श्री धर्मसागरजी महाराज एवं गणिवर्य श्री अभयसागरजी महाराज की प्रेरणा से जैन संघ ने सरकारी तौर पर उचित कदम उठाकर मन्दिर का कार्यभार अपने हाथ में संभालकर विधिपूर्वक सेवा-पूजा प्रारंभ की। इस तीर्थ को प्रकाश में लाने का श्रेय श्री दीपचन्दजी जैन व वषन्तीलालजी डाँगी को है। अभी भी जीर्णोद्धार का कार्य चालू है।

विशिष्टता * श्री पार्श्वनाथ भगवान की कायोत्सर्ग मुद्रा में इतनी विशाल व प्राचीन श्वेताम्बर प्रतिमा के दर्शन अन्यत्र दुर्लभ हैं। यह प्रतिमा जब सन्यासी बाबा की देखभाल में थी, तब भी चमत्कारिक घटनाओं के कारण स्थानीय लोग आकर्षित होकर दर्शनार्थ आते रहते थे। अभी भी यहाँ चमत्कारिक घटनाएँ घटती रहती हैं। यहाँ के अधिष्ठायक प्रत्यक्ष हैं।

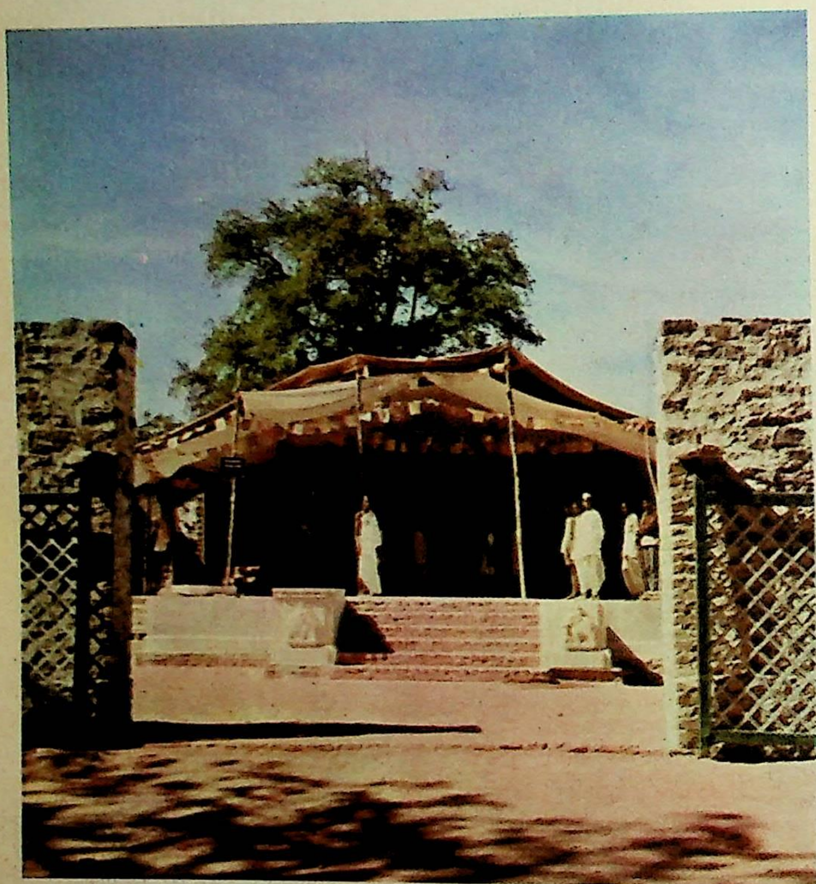
अन्य मन्दिर * वर्तमान में यहाँ इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है। नूतन दादावाड़ी का निर्माण कार्य चालू है।

कला और सौन्दर्य * प्रभु प्रतिमा की कला अति ही मनोहर है। आजू बाजू में कायोत्सर्ग मुद्रा में लगभग १३५ सें० मी० ऊँची श्री शान्तिनाथ भगवान व श्री महावीर भगवान की प्रतिमाएँ हैं।

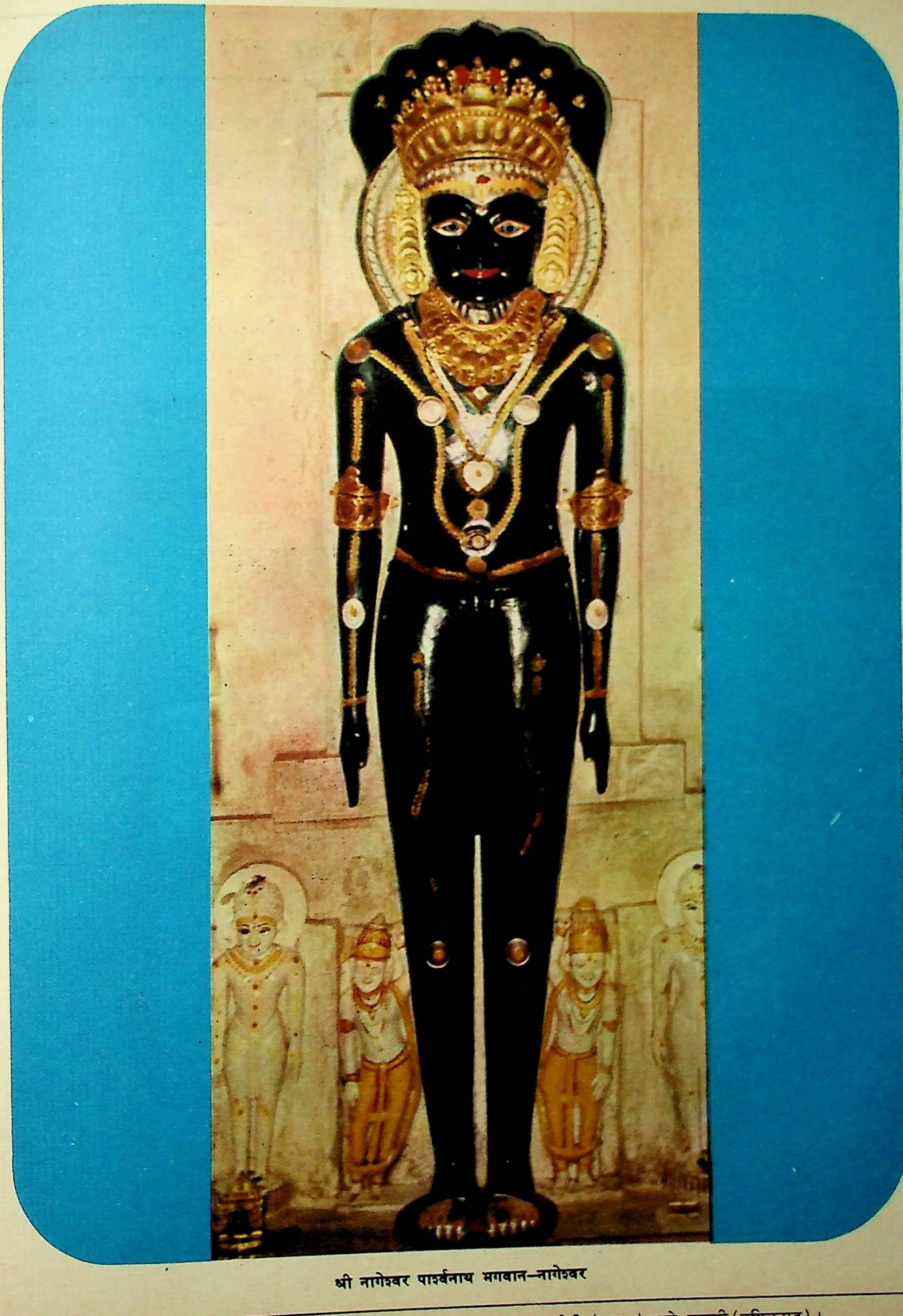
मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक के रेलवे स्टेशन आलोट ८ कि० मी० व चौमहला १५ कि० मी० नागदा-शामगढ़ के बीच रतलाम-कोटा लाईन पर स्थित हैं। चौमहला से बस व जीप मिल जाती हैं। आलोट में कोई साधन नहीं है। चौमहला से कच्ची सड़क है, बरसात के दिनों में असुविधा रहती है। बस या जीप द्वारा आना ही सुविधाजनक है।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए मन्दिर के पास ही धर्मशाला है, जहाँ पानी, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री जैन श्वेताम्बर नागेश्वर तीर्थ पेढ़ी। डाक घर – उन्हेल : स्टेशन – चौमहला : जिला – झालावाड़ : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – चौमहला :



श्री नागेश्वर पार्श्वप्रभु जिनालय



श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ भगवान—नागेश्वर

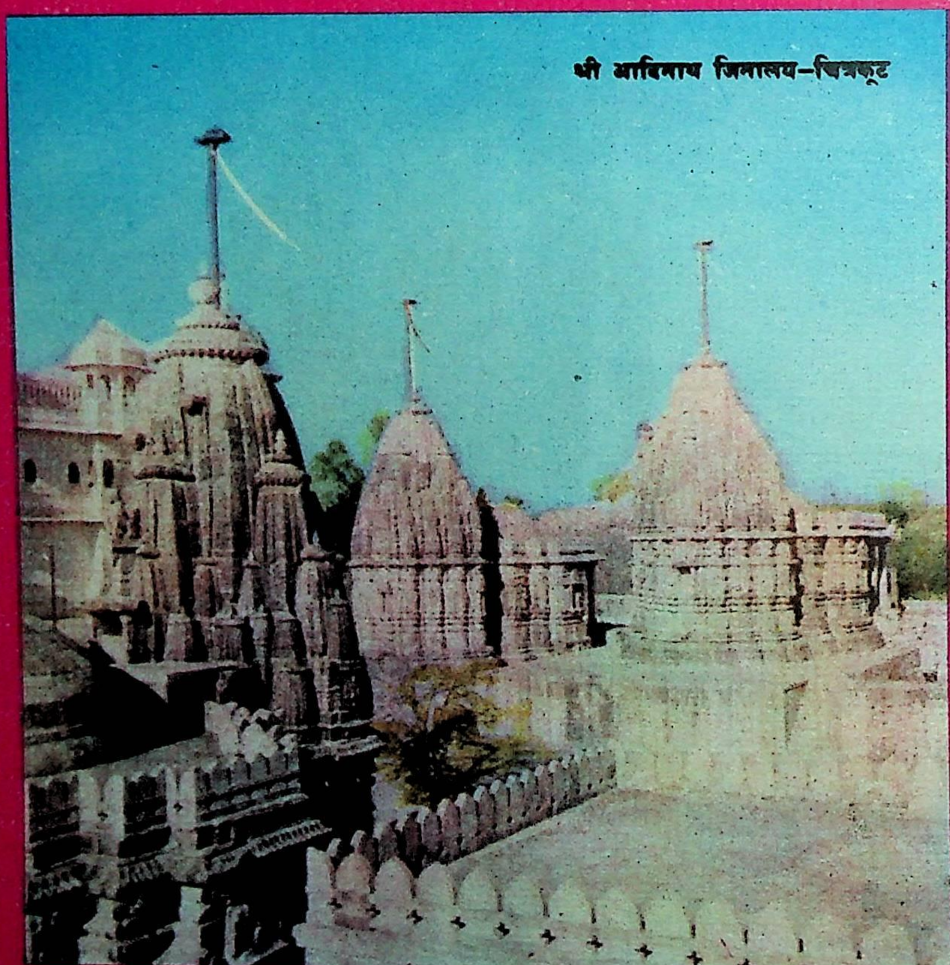
सहायक : श्री शिवराजजी गजराजजी पारसमलजी मनोहरमलजी मोहानचन्दजी लूंकड़, फलोदी (राज०) वाले, पनरुटी (तमिलनाडु)।

श्री चित्रकूट तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री आदिनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ३५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * समुद्र की सतह से लगभग ५९० मी० ऊँचे, समतलपर्वत पर बने ३.५ मील लम्बे व आधा मील चौड़े चित्तौड़ किले में।

प्राचीनता * विक्रम की प्रथम शताब्दी में श्री सिद्धसेन दिवाकर, जिन्हें सम्राट विक्रमादित्य की राज्यसभा के रत्न बनने का सम्मान प्राप्त हुआ था, यहाँ विद्यासाधन हेतु आकर रहे थे, ऐसा उल्लेख मिलता है। आचार्य श्री हरिभद्रसूरीश्वर-



श्री आदिनाथ जिनालय–चित्रकूट

जी. जो विक्रम की आठवीं-नवमी शताब्दी में हुए, उनका जन्मस्थान यहीं शहर है, जो उस समय मध्यमिका नगरी के नाम से प्रसिद्ध था।

यह किला मौर्यवंशी राजा चित्रांगद द्वारा निर्मित होने के कारण इसे चित्रकूट भी कहते हैं। विक्रम की आठवीं शताब्दी में मेवाड़ के गुहिलवंशी राजा बापा रावल ने मौर्यवंशी राजा मान को हराकर किला अपने अधीन किया। बारहवीं शताब्दी में यह सिद्धराज जयसिंह के अधिकार में आ गया। यह अधिकार कुमारपाल राजा के समय तक रहा। कुमारपाल राजा द्वारा उनके प्राण की रक्षा करनेवाले आलिक कुम्हार को सात सौ गाँवों सहित चित्रकूट पट्टा करके दिये जाने का उल्लेख मिलता है। राजा कुमारपाल सं० १२१६ में जैनधर्म के अनुयायी बने। उसके पूर्व के कुछ शिलालेख मिलते हैं। बाद में कुमारपाल के भतीजे अजयपाल को मेवाड़ के गुहिलवंशी राजा सामंतसिंह ने हराकर वि० सं० १२३१ में इस पर अपना अधिकार किया। उसके बाद मुसलमानों का राज्य होने हुए भी चित्तौड़ गुहिलवंशी सिसोदिया राजाओं के अधिकार में ही रहा।

वि० सं० ११६७ में यहाँ श्री महावीर भगवान का मन्दिर निर्मित होने का उल्लेख है।

युगप्रधान दादा श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी को वि० सं० ११६६ वैशाख शुक्ला प्रतिपदा के दिन श्री जिनवल्लभ-सूरीश्वरजी के पाट पर विराट-महोत्सव के साथ यहीं अभिषिक्त किया गया था। दादागुरु का पूर्व नाम पण्डित सोमचन्द्र गणि था। दादागुरु ने अपने योगबल से श्री वज्रस्वामी द्वारा रचित अनेक विद्याओं से युक्त, अद्वितीय, प्राचीन ग्रन्थ को यहाँ के वज्रस्तंभ में से प्राप्त करने में सफलता पाई थी, जो उल्लेखनीय है। ग्रन्थ में समाविष्ट अपूर्व मंत्रों की साधना से दादा गुरुदेव ने सप्तम प्रभाविक सिद्धि प्राप्त की थी।

दादा गुरुदेव ने जिन-शासन की प्रभावना के अनेकों कार्य किये जो चिर-स्मरणीय हैं। आज भी दादागुरु साक्षात् हैं। गुरुदेव के स्मरण मात्र से श्रद्धालु भक्तजनों की मनो कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

महाराणा तेजसिंहजी की पटरानी और समरसिंहजी की मातुश्री जयतल्लदेवी द्वारा यहाँ वि० सं० १३२२ में श्री पार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर बनवाने का उल्लेख है।

वि० सं० १३३५ फाल्गुन शुक्ला ५ के दिन युवराज अमर-सिंहजी की सान्निध्यता में श्री आदिनाथ भगवान के मन्दिर पर ध्वजारोहण होने का उल्लेख मिलता है। वि० सं० १३५३ में महाराजा समरसिंह के राज्यकाल में जलयात्रापूर्वक ग्यारह जिनमन्दिरों में जिनप्रतिमाएँ प्रतिष्ठित की गयी थीं।

श्री कुंभा राणा के खजांची श्री वेला ने, वि० सं० १५०५ में, पुराने जीर्ण मन्दिर के स्थान पर श्री शान्तिनाथ भगवान का कलापूर्ण मन्दिर बनवाकर श्री जिनसेनसूरीश्वरजी के हाथों प्रतिष्ठा करवायी थी। इसका नाम अष्टापदावतार श्री शान्तिजिनचैत्य था, जिसे आज शृंगारचौरी कहते हैं।

वि० सं० १५२४ में रचित 'सोमसौभाग्य काव्य' के अनुसार देवकुलपाटक के निवासी व श्री लाखा राणा से सम्मानित श्रेष्ठी श्री वीसल ने पंद्रहवीं शताब्दी में किले में श्री श्रेयांसनाथ भगवान का मन्दिर बनवाया था। श्रेष्ठी गुणराज के पुत्र वाल ने पन्द्रहवीं शताब्दी में, कीर्तिस्तंभ के पास, चारों ओर देवकुलिकाओं से शुशोभित विशाल जिनमन्दिर बनवाकर उसमें श्री सोमसुन्दरसूरीश्वरजी के सुहस्त से तीन जिन-प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करवायी थी।

महाराणा मौकल के समय उनके मुख्य मंत्री श्री सरण-पालजी द्वारा यहाँ अनेकों जिनमन्दिर बनवाने का उल्लेख है। मान्डवगढ़ के महामन्त्री पेथड़शाह ने भी यहाँ मन्दिर बनवाया था।

वि० सं० १५६६ में श्री जयहेमरचित तीर्थमाला में एवं वि० सं० १५७३ में श्री हर्षप्रमोद के शिष्य गयंदी द्वारा रचित तीर्थमाला में यहाँ भिन्न भिन्न गच्छों के ३२ जिनमन्दिर रहने का उल्लेख है, जिनमें जैन कीर्तिस्तंभ भी शामिल है। इस सात मंजिल के जैन कीर्तिस्तंभ का निर्माण-काल चौदहवीं सदी का माना जाता है, जो श्री आदिनाथ भगवान के स्मारक के निमित्त बनाया था। इसमें अनेकों जिनप्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं।

इस समय चित्तौड़ के किले पर निम्न प्रकार छः जिनमन्दिर विद्यमान हैं :–

सब से बड़ा व मुख्य मन्दिर है, श्री ऋषभदेव भगवान का। बावन देवकुलिकाओं से आवृत्त इस मन्दिर का स्थान 'सत्ताईस देवरी' के नाम से पहिचाना जाता है। इसका अर्थ यह किया जाता है कि किसी समय इस जगह पर छोटे-बड़े २७ मन्दिर बने होंगे। इस मन्दिर के अहाते में भगवान श्री पार्श्वनाथ के दो मन्दिर हैं।

किले के अन्दर रामपोल में एक ही अहाते में भगवान श्री महावीरस्वामी व भगवान श्री शान्तिनाथ के मन्दिर हैं। श्री शान्तिनाथ का मन्दिर छोटा होते हुए भी उच्च कोटि की कला से समृद्ध है। इसे ही 'शृंगार चौरी' कहते हैं।

गौमुखीकुंड के पास श्री पार्श्वनाथ भगवान का चौमुखजी मन्दिर है।

विशिष्टता * चित्तौड का किला पूरे भारत में विख्यात है। तभी तो कहा जाता है, 'गढ़ तो चित्तौड़ गढ, और सब गढैया है।'' यह सूरमाओं की भूमि है। यहाँ पर अनेकों शूरवीर जैन मंत्री व राजा हुए, जिन्होंने समय समय पर धर्मोत्थान के अनेकों कार्य किये।

चौदहवीं शताब्दी में निर्मित कलात्मक जैन कीर्तिस्तभ आज भी अपनी शान से खड़ा है व किले पर जैन इतिहास के गौरवगाथा की याद दिलाता है।

सं० १५८७ में शत्रुंजय का सोलहवाँ उद्धार कराने वाले मन्त्री श्री कर्मचन्द्र बच्छावत यहीं के निवासी थे। महाराणा प्रताप के खजाँची दानवीर श्री भामाशाह का महल भी यहीं था।

अन्य मन्दिर * इसके अतिरिक्त किले में पाँच जिन मन्दिर हैं, जिनका वर्णन प्राचीनता में दे चुके हैं। किले में मीराबाई का मन्दिर तथा समिधेश्वर का मन्दिर भी दर्शनीय हैं। किले के नीचे गाँव के प्रवेशद्वार के पास श्री हरीभद्रसूरीश्वरजी का स्मृतिमन्दिर है।

कला और सौन्दर्य * पहाड़ी पर स्थित इस किले से नीचे का दृश्य अति ही मनोरम प्रतीत होता है। पहाड़ के ऊपर समतल में इतना लम्बा-चौड़ा विशाल किला भारत में यह एक ही है। यहाँ प्राचीन जिनमन्दिरों के खण्डहर व कलात्मक अवशेष जगह-जगह दिखायी देते हैं। सं० १५०५ में जीर्णोद्धार हुए श्री शान्तिनाथ भगवान के मन्दिर (जिसे शृंगारचौरी कहते हैं) की कला अति दर्शनीय है। श्री शान्तिनाथ भगवान की प्रतिमा भी अति ही सुन्दर है। ऐसे तो हरेक मन्दिर की कला भी मेवाड़-देलवाड़ा, कुंभारिया आदि के शिल्प से मुकाबला करती है। यहाँ अनेकों प्राचीन तालाब, कुन्ड, भग्न महल व इमारतें दिखायी देती हैं। मीराबाई के भव्य विशाल मन्दिर में कहीं कहीं जिनप्रतिमाओं के दर्शन होते हैं। जैन कीर्तिस्तंभ की कला व जोड़नी देखने योग्य हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ का स्टेशन चित्तौड़गढ़ जंक्शन है, जो कि चित्तौड़गढ़ धर्मशाला से लगभग ३.५ कि० मी० दूर व चित्तौड़ किले के मन्दिरों से ७ कि० मी० दूर है। स्टेशन से बस, टैक्सी व ताँगों की सुविधा है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। कार व बस आखिर तक जा सकती हैं।

सुविधाएँ * किले पर मन्दिर के पास धर्मशाला है, जहाँ बिजली-पानी की सुविधा है। किले के नीचे गाँव में धर्मशाला है, जहाँ ठहरना सुविधाजनक है। पानी, बिजली, बर्तन आदि की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री आनन्दजी कल्याणजी जैन श्वेताम्बर मन्दिर पेढ़ी। डाक घर – चित्तौड़गढ़ : जिला – उदयपुर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – चित्तौड़गढ़ : टेलीफोन – पी० सी० ओ० चित्तौड़गढ़।



श्री आदिनाथ भगवान–चित्रकूट

सहायक : श्री सुगनचन्दजी मांगीलालजी जैन, मद्रास–२.

श्री केशरियाजी तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री आदिनाथ भगवान, अर्द्ध पद्मासनस्थ, श्याम वर्ण, लगभग १०५ से० मी०।

तीर्थ स्थल * ऋषभदेव गाँव में, पहाड़ों की ओट में।

प्राचीनता * भव्य, चमत्कारी, भक्तों की मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाली इस प्रतिमा की प्राचीनता व इतिहास के बारे में अनेकों मान्यताएँ हैं। उनमें यह भी एक है कि यह अलौकिक प्रतिमा बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान के समय प्रतिवासुदेव लंकापति श्री रावण के यहाँ पूजित थी। पश्चात मर्यादा-पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजी अयोध्या लेकर आये। बाद में उज्जैन में रही। पश्चात दैविक शक्ति से वटपद्रनगर (बड़ोदा) के बाहर वटवृक्ष के नीचे प्रकट हुई। (जहाँ अभी भी प्रभु के चरण स्थापित हैं) कुछ वर्षों तक वटपद्रनगर में पूजी जाने के बाद पुनः दैविकशक्ति द्वारा यहाँ से लगभग एक कि० मी० दूर एक वृक्ष के नीचे प्रकट हुई, जहाँ पर भी प्रभु के चरण स्थापित हैं व वार्षिक मेले का विराट जुलूस वहीं पर विसर्जित होता है।

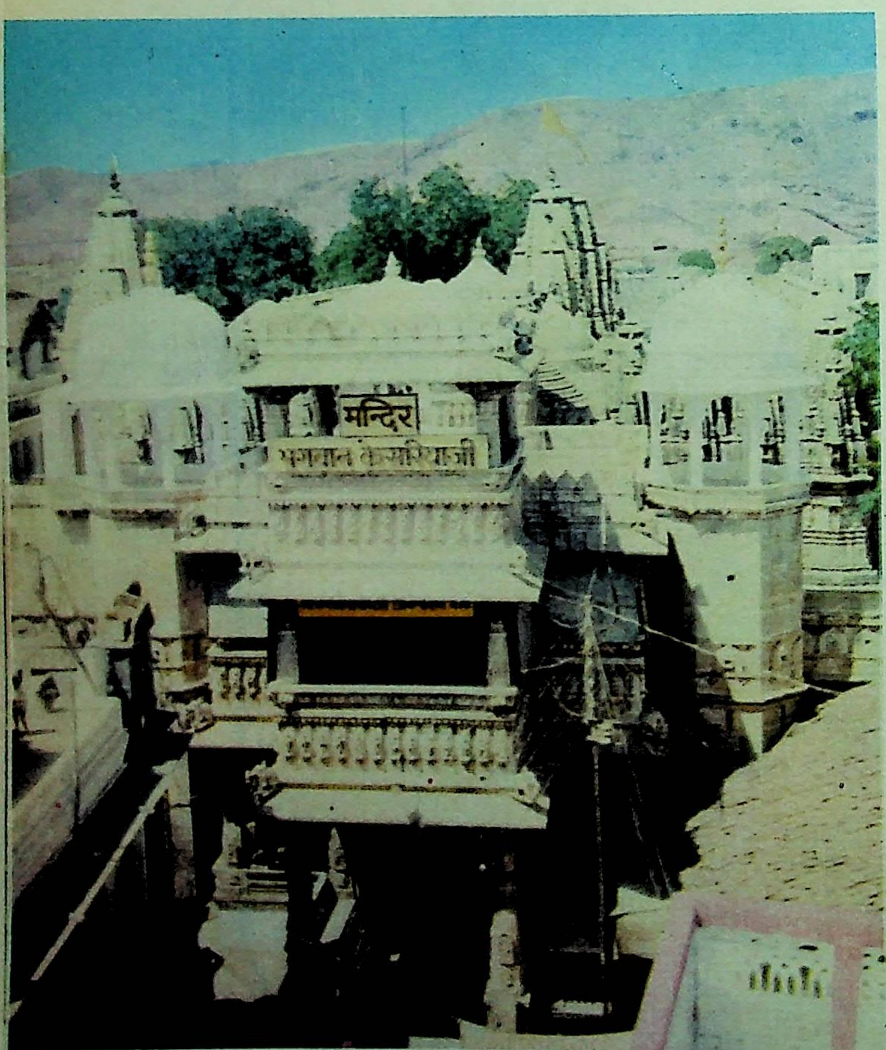
इस मन्दिर के बारे में कहा जाता है कि मन्दिर प्रथम ईंटों का बना व बाद में पत्थरों का बना था। सं० १८३१ में जीर्णोद्धार होने के प्रमाण मिलते हैं। उसके पश्चात भी जीर्णोद्धार होने के उल्लेख हैं। समय-समय पर अनेकों यात्री संघ व आचार्यगण यहाँ दर्शनार्थ आने के उल्लेख हैं।

विशिष्टता * यह मेवाड़ राज्य में जैनियों का एक मुख्य तीर्थ-स्थान है। मेवाड़ के राणा हरदम प्रभु के अनुयायी रहे व श्रद्धा-भक्ति से प्रभु के चरणों में दर्शनार्थ आते थे। राणा फतेहसिंहजी ने प्रभु के लिए स्वर्णमयी रत्नों जड़ित अमूल्य आँगी भी भेंट की थी। अभी भी यह आँगी नकरे से चढ़ायी जाती है। यहाँ पर जैनेतर भी श्रद्धा व भक्ति पूर्वक हमेशा आते रहते हैं। भील समुदाय में प्रभु काला बाबा के नाम से प्रचलित हैं।

यहाँ नयी-नयी चमत्कारिक घटनाओं का अनेकों भक्तों द्वारा वर्णन किया जाता है। भक्तगण जो भी भावनाएँ लेकर आते हैं उनकी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं। यहाँ पर केशर चढ़ाने की मानता सदियों से चली आ रही है व हमेशा अत्यधिक मात्रा में केशर चढ़ती है। कभी-कभी तो केशर का इतना विलेपन हो जाता है कि प्रभु का वर्ण केशर-सा प्रतीत होने लगता है। आज तक मनोबद्ध केशर चढ़ गयी। इसलिए प्रभु को केशरियानाथ कहते हैं। प्रभु को केशरियालाल, धुलेवाधणी आदि भी कहते हैं।

प्रतिवर्ष चैत्र कृष्णा अष्टमी को प्रभु के जन्म-कल्याणक के दिवस मेला भरता है। इस अवसर पर हजारों नर-नारी

श्री केशरियाजी मन्दिर—ऋषभदेव





श्री ऋषभदेव भगवान (श्री केशरियाजी) धुलेव, ऋषभदेव

सहायक : शिवचन्द जतनलाल श्री केशरियानाथजी ट्रस्ट. मद्रास–१

इकट्ठे होते हैं। भील लोग अत्यन्त भक्ति भाव से नाचते-झूमते हैं। यह दृश्य अति ही रोचक व भक्ति भाव को बढ़ाता है।

यहाँ की देदीप्यमान आरती अति ही दर्शनीय है। उस समय हर भक्त तल्लीन होकर अपने आप को प्रभु में खो देता है।

अन्य मन्दिर ❋ इसी मन्दिर के अहाते में वि० सं० १६८८ में स्थापित हस्तिरूढ़ श्री मरूदेवी माता की मूर्ति व श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर हैं। गाँव के बाहर वृक्ष के नीचे एक देहरी में प्रभु की प्राचीन चरणपादुकाएँ हैं। कहा जाता है प्रभु की प्रतिमा यहीं से प्रकट हुई थी। मेले के दिन प्रभु की रथयात्रा यहीं पर सम्पूर्ण होती है।

कला और सौन्दर्य ❋ श्री केशरियाजी का यह बावन-जिनालय मन्दिर दूर से ही अति ही सौम्य प्रतीत होता है। शिखरों, तोरण-द्वारों व स्थम्भों आदि की कला अतीव सुन्दर व आकर्षक है।

प्रभु-प्रतिमा की कला तो अवर्णनीय है ही, प्रभु का मुख-मण्डल इतना आकर्षक है कि दर्शन मात्र से मन प्रफुल्लित हो उठता है।

मार्ग दर्शन ❋ यहाँ का रेलवे स्टेशन रिषभदेवरोड़ लगभग ११ कि० मी० व उदयपुर सिटी ६६ कि० मी० है। रिषभदेवरोड़ से सिर्फ एक या दो बसें आती हैं। उदयपुर से बसों व टैक्सियों की सुविधा है। यह क्षेत्र-उदयपुर-अहमदाबाद मार्ग पर स्थित है। अहमदाबाद से १६० कि० मी० है। यहाँ से नजदीक का बड़ा गाँव खेरवाड़ा १६ कि० मी० दूर है। बस स्टैण्ड धर्मशाला के सामने ही है। धर्मशाला तक पक्की सड़क है। कार व बस आखिर तक जा सकती हैं। मन्दिर धर्मशाला के पास ही है।

सुविधाएँ ❋ ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्रों की सुविधा है। धर्मशाला का कार्य-भार वर्तमान में देवस्थान विभाग राजस्थान सरकार के हाथ में है। एक श्वेताम्बर जैन भोजनशाला व दो निजी भोजनशालाएँ हैं। वर्तमान में मन्दिर का कार्य-भार भी राजस्थान देवस्थान विभाग संभाल रहा है।

पेढ़ी ❋ प्रभारी अधिकारी : भन्डार धुलेव श्री रिषभदेवजी मन्दिर, देवस्थान विभाग राजस्थान डाक घर – रिषभदेव : जिला – उदयपुर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – रिषभदेव : टेलीफोन – ५ रिषभदेव।

प्रतिमा प्रकट स्थान - केशरियाजी





श्री ऋषभदेव भगवान (श्री केशरियाजी) धुलेव, ऋषभदेव

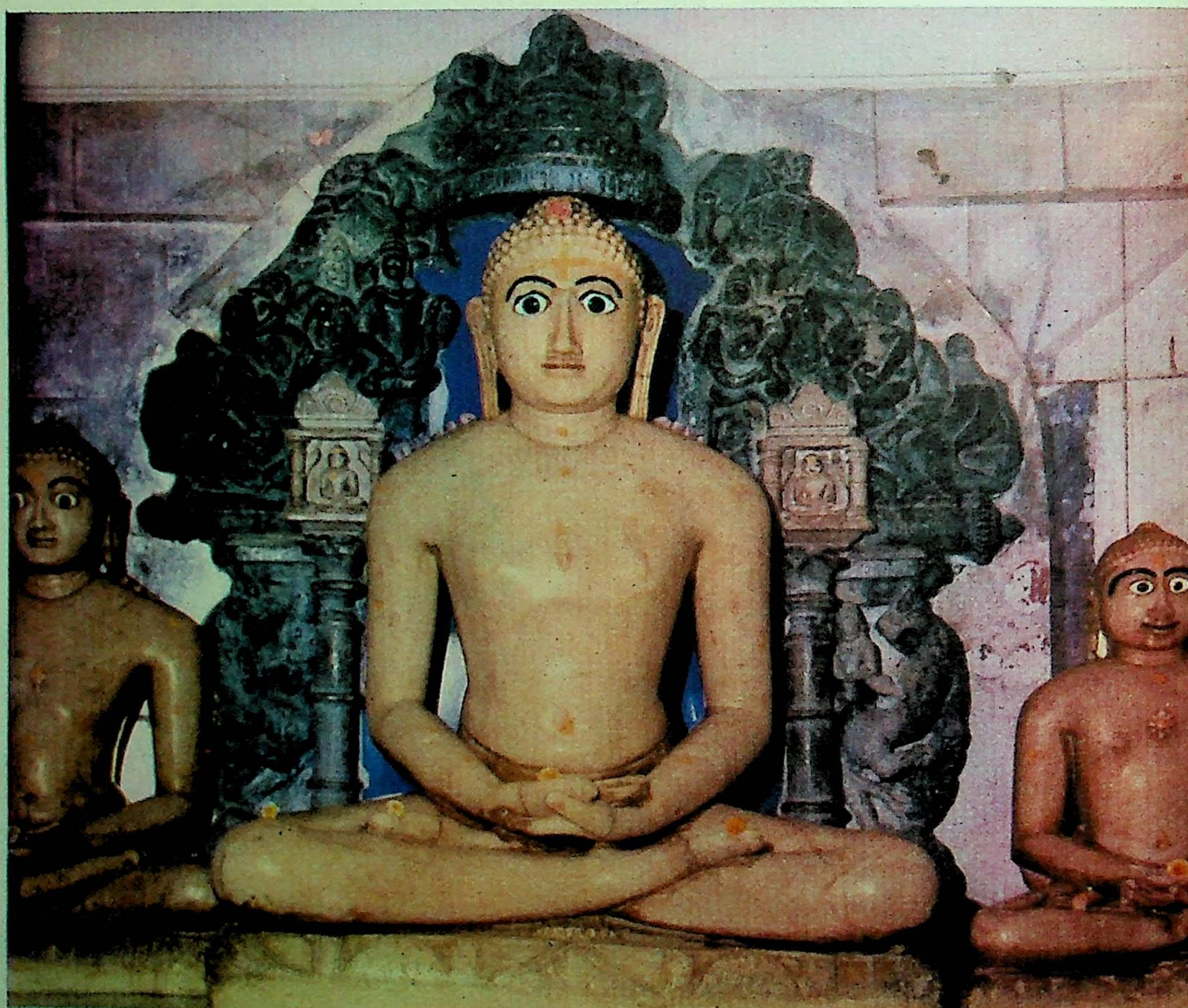
श्री आयड तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री आदीश्वर भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण।

तीर्थ स्थल * उदयपुर से लगभग एक कि० मी० दूर आयड़ गाँव में।

प्राचीनता * इसका प्राचीन नाम आघाट व आहड़ था, ऐसा उल्लेख मिलता है। भट्टारक आचार्य श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी के शिष्य श्री बलिभद्रसूरीश्वरजी द्वारा प्रतिबोधित श्री अल्लुराज (अल्लाट) दसवीं शताब्दी में यहाँ के राजा थे, ऐसा शिला-लेखों से प्रतीत होता है। आचार्य श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी द्वारा यहाँ श्री पार्श्वनाथ भगवान के मन्दिर की प्रतिष्ठापना करवाने का उल्लेख है। यह वृत्तान्त वि० सं० १०२९ पूर्व का है। ग्यारहवीं शताब्दी में हुए कवीश्वर श्री धनपाल द्वारा रचित 'सत्यपुरमण्डन महा-

श्री आदीश्वर भगवान – आयड़

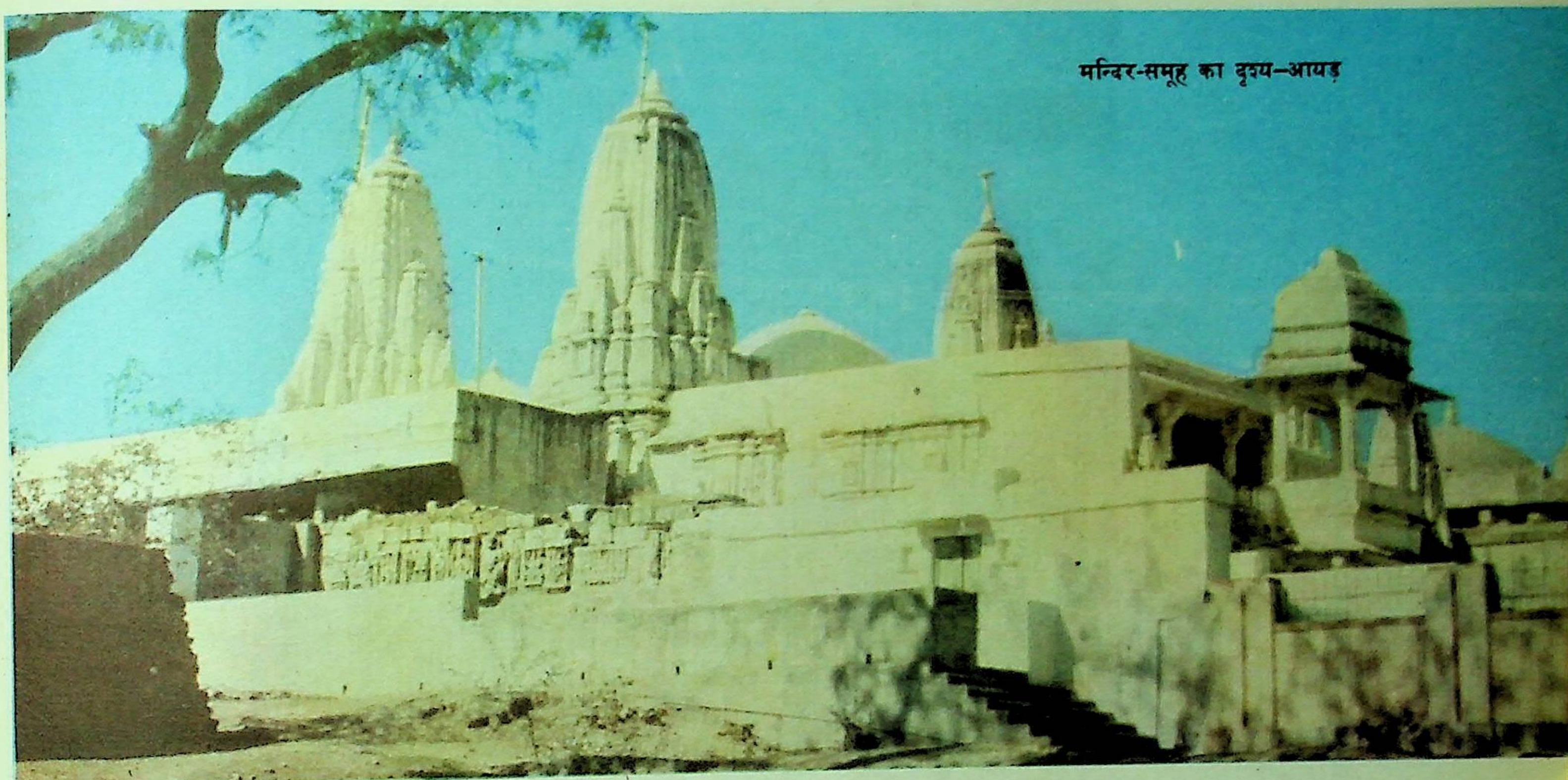


वीरोत्साह' में यहाँ के मन्दिरों का उल्लेख है।

तेरहवीं शताब्दी में राजा श्री जयसिंहजी के समय श्रावक श्री हेमचन्द्र द्वारा समग्र आगम ग्रन्थों को यहाँ ताड़पत्रों पर लिखवाने का उल्लेख मिलता है।

इसके बाद भी अनेकों प्रकाण्ड आचार्यों का यहाँ पदार्पण हुआ है। यह मन्दिर बारहवीं शताब्दी का माना जाता है।

यहाँ का अन्तिम जीर्णोद्धार वि० सं० १९९५ में होकर प्रतिष्ठा आचार्य श्री विजयनीतिसूरीश्वरजी के सुहस्ते सम्पन्न हुई।



मन्दिर-समूह का दृश्य–आयड़

विशिष्टता * रेवती दोष की भयंकर बीमारी से पीड़ित यहाँ के राजा श्री अल्लूराज की रानी हरियदेवी की देह को हथुंडी में विराजित आचार्य श्री बलिभद्रसूरीश्वरजी ने वहीं से निरोग किया था, जिससे प्रभावित होकर राजा व रानी ने उत्साहपूर्वक जैन-धर्म अंगीकार किया था। उनके मंत्री ने श्री पार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर बनवाया था, जिसकी प्रतिष्ठा श्री बलिभद्रसूरीश्वरजी के गुरु प्रकाण्ड आचार्य यशोभद्रसूरीश्वरजी के सुहस्ते हुई थी।

तेरहवीं शताब्दी में यहीं पर श्रावक हेमचन्द्र श्रेष्ठी ने सारे आगम ताड़पत्रों पर लिखवाये थे। उस समय यहीं पर आचार्य श्री जगच्चन्द्रसूरीश्वरजी द्वारा उग्र तपश्चर्या करने पर राजा ने 'तपा' विरुद से अलंकृत किया था। तभी से तपागच्छ अस्तित्व में आया। आचार्य श्री जगच्चन्द्र सूरीश्वरजी ने कई वादियों को शास्त्रार्थ में पराजित किया था। उस-पर राजा ने उन्हें 'हीराला' बिरुद से भी सुशोभित किया था।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त चार और मन्दिर हैं। इनमें तीन बारहवीं शताब्दी के माने जाते हैं। एक मन्दिर में श्री जगच्चन्द्रसूरीश्वरजी की भी प्रतिमा विराजित है।

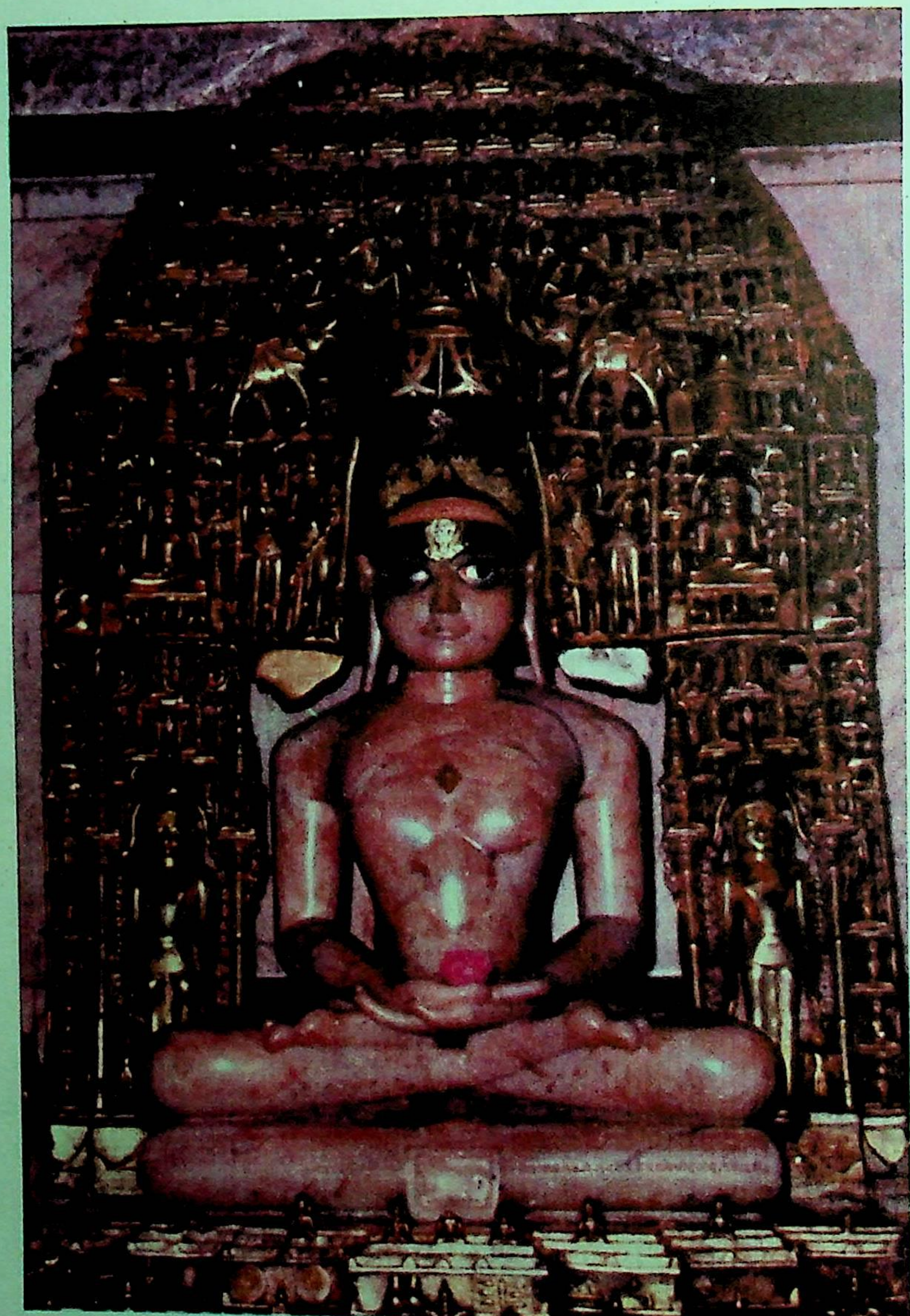
कला और सौन्दर्य * सारे मन्दिर प्राचीन रहने के कारण मन्दिरों में प्राचीन कलात्मक प्रतिमाओं आदि के दर्शन होते हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन उदयपुर सिर्फ एक कि० मी० दूर है, जहाँ से टैक्सी व ताँगों की सुविधा उपलब्ध है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। कार व बस मन्दिर तक जा सकती हैं।

सुविधाएँ * वर्तमान में यहाँ ठहरने के लिये कोई सुविधा नहीं है। उदयपुर में ठहरकर यहाँ आना ही सुविधाजनक है।

पेढ़ी * श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, जैन मन्दिर। आयड़ गाँव : डाक घर – उदयपुर : जिला – उदयपुर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – उदयपुर : टेलीफोन – पी० सी० ओ० उदयपुर।

सहायक : १. श्री चम्पालालजी सम्पतराजजी कटारिया, मद्रास–१७. २. श्री कुन्दनमलजी शान्तिलालजी संकलेचा, दिन्डीवनम (तमिलनाडु) ३. श्री चम्पालालजी कंचनमलजी बोथरा, मद्रास–१७. ४. मेसर्स चम्पालाल किशनलाल एण्ड सन्स, मद्रास–२



श्री आदिनाथ भगवान्–डुंगरपुर

श्री डुगरपुर तीर्थ

तीर्थाधिराज ※ श्री आदिनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, लगभग १०५ सें० मी०, श्वेत वर्ण, धातुमयी परिकर युक्त।

तीर्थ स्थल ※ डुंगरपुर गाँव के माणकचौक में।

प्राचीनता ※ कहा जाता है विक्रम सं० १५२६ में इस मन्दिर का निर्माण सेठ सांवलदास दावड़ा ने करवाकर आचार्य श्री रत्नसूरिजी के शिष्य श्री उदय वल्लभसूरिजी एवं श्री ज्ञानसागरसूरिजी के सुहस्ते श्री आदिनाथ प्रभु की विशालकाय धातुमयी प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई थी। मुसलमानों के राजत्वकाल में स्वर्ण प्रतिमा समझकर प्रतिमा को क्षति पहुँचाई गई, तब श्वेतवर्ण यह प्रतिमा पुनः प्रतिष्ठित की गई। परन्तु धातुमयी परिकर आज भी मौजूद है, जिसपर सं० १५२६ का लेख उत्कीर्ण है।

विशिष्टता ※ इस प्रभु-प्रतिमा के धातुमयी परिकर में भूत, वर्तमान व भविष्य के चौबीस तीर्थंकरों के यानी ७२ प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं, यह यहाँ की मुख्य विशेषता है। ऐसे परिकरयुक्त प्रतिमा के दर्शन अत्यन्त दुर्लभ है। प्रभु का पबासण भी धातु से निर्मित है, जिसमें १४ स्वप्न, ९ ग्रह, अष्ट मंगल व यक्ष-यक्षिणियों के दर्शन होते हैं।

सोलहवीं सदी में डुंगरपुर के राजा गोपीनाथ व सोमदास के मुख्य मंत्री ओशवाल वंशीय पराक्रमी शेठ शालाशाह यहीं के थे, जिन्होंने उपद्रवी भीलों को हराकर विजय पताका फहराई थी। शेठ शालाशाह पराक्रमी, शूरवीर व धर्मवीर थे। उन्होंने श्री पार्श्वनाथ भगवान का भव्य शिखरयुक्त मन्दिर भी बनवाया था, जो यहाँ के जूने घाटी मोहल्ले में स्थित है। शेठ शालाशाह के समय यह एक विराट नगरी थी व लगभग ७०० जैन श्रावकों के घर थे।

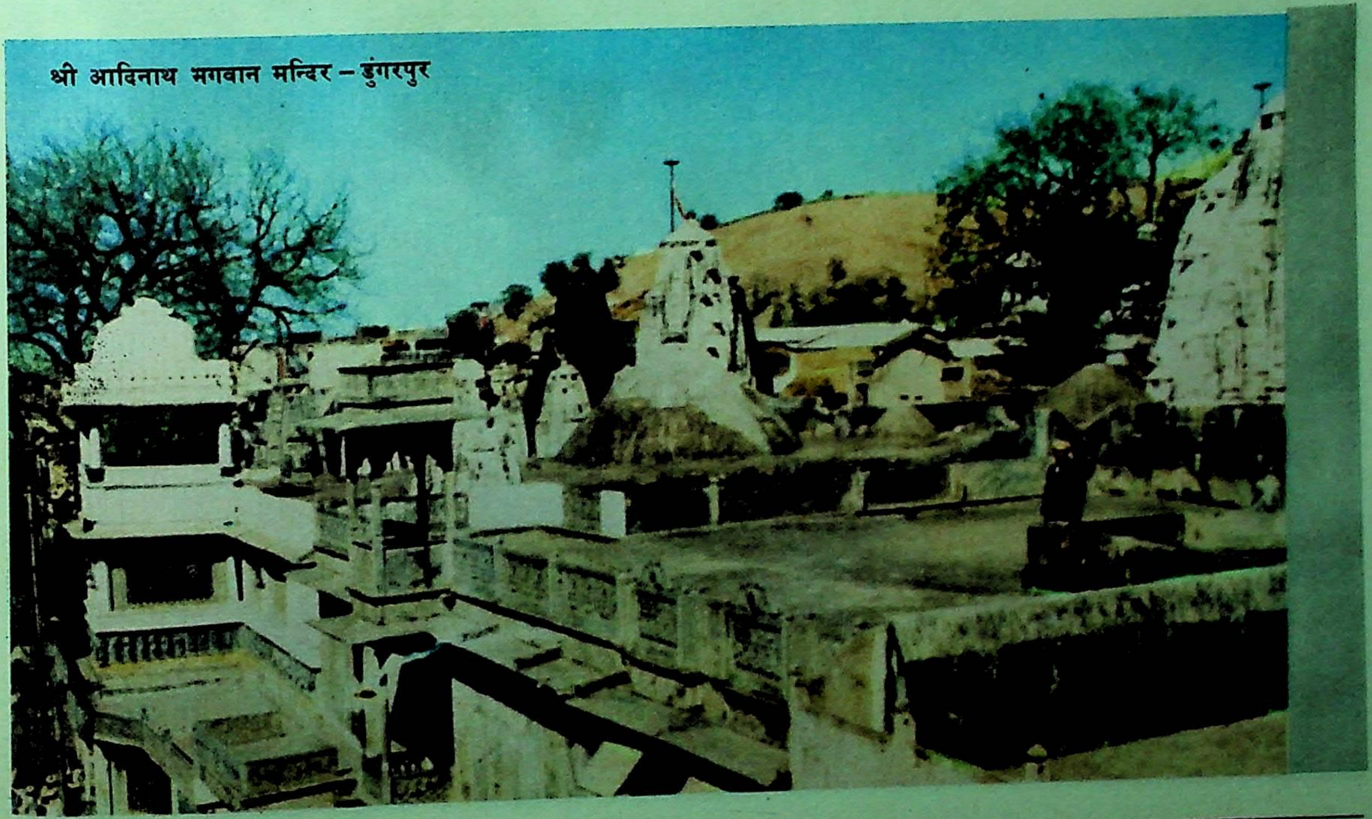
अन्य मन्दिर ※ वर्तमान में इस मन्दिर के अतिरिक्त तीन और मन्दिर हैं।

कला और सौन्दर्य ※ प्रभु प्रतिमा के धातुमय परिकर व पबासण की कला अपना विशेष स्थान रखती है। इस प्रकार के प्राचीन कलात्मक धातुमयी परिकर व पबासण के दर्शन अत्यन्त दुर्लभ हैं। इसी मन्दिर में श्री शान्तिनाथ भगवान की ३३ सें० मी० स्फटिक की प्रतिमा व राजा संप्रतिकाल के पंच धातु से निर्मित ६४ जिन बिंब दर्शनीय हैं।

मार्ग दर्शन ※ केशरियाजी तीर्थ से यह स्थल लगभग ३२ कि० मी० दूर है। अहमदाबाद-उदयपुर सड़क मार्ग में खेरवाड़ा होकर आना पड़ता है, जहाँ बस की सुविधा उपलब्ध है। नजदीक का रेलवे स्टेशन डुंगरपुर लगभग २ कि० मी० दूर है। बस स्टैण्ड एक कि० मी० दूर है।

सुविधाएँ ※ ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली का साधन है।

पेढ़ी ※ श्री आदिनाथ भगवान जैन श्वेताम्बर मन्दिर पेढ़ी, माणक चौक : डाक घर – डुंगरपुर ३१४००१ : जिला – डुंगरपुर : प्राँत – राजस्थान : तार घर – डुंगरपुर : टेलीफोन – पी० सी० ओ० डुंगरपुर।



श्री आदिनाथ भगवान मन्दिर – डुंगरपुर

सहायक : १. श्री चान्दमलजी कानमलजी कोचर, तिरुचिरापल्ली (तमिलनाडु) २. श्री चान्दमलजी केवलचन्दजी खांटेड, उटकमण्ड (तमिलनाडु) ३. श्री के चूनीलालजी जैन, सेलम (तमिलनाडु) ४. शाह चूनीलालजी सांकलचन्दजी, सिरोही (राज०)

श्री वटपद्र तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री पौरुषादानीय पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ ।

तीर्थ स्थल ✻ बड़ोदा गाँव के मध्य ।

प्राचीनता ✻ इसके प्राचीन नाम मेघपुरपाटण, वटपद्रनगर आदि रहने का शास्त्रों में उल्लेख है । इस मन्दिर का निर्माण वि० सं० १०३६ में हुआ माना जाता है । धुलेवा में विराजित श्री केशरियानाथ भगवान की प्रतिमा वि० सं० ६०६ में यहीं प्रकट हुई थी, ऐसी मान्यता है । कोई जमाने में यह एक विराट नगरी थी । गाँव के चारों तरफ बिखरे हुए ध्वंसावशेष यहाँ की प्राचीनता की याद दिलाते नजर आते हैं ।

विशिष्टता ✻ यह राजस्थान-मेवाड़ के डुंगरपुर जिले का प्राचीनतम तीर्थ रहने के कारण यहाँ की विशिष्ट महानता है ।

नगर धुलेवा में विराजित श्री केशरियानाथ भगवान की

श्री पौरुषादानीय पार्श्वप्रभु जिनालय–वटपद्र



सहायक : १. श्री छगनमलजी पारसमलजी खिवसरा, मद्रास–२ २. श्री ए. छगनमलजी कोठारी, तिरुवन्नामलै (तमिलनाडु) ३. श्री दलीचन्दजी गिरधारीलालजी छाजेड़, ढांढणिया (राज०) ४. मेसर्स. एस. देवीचन्द किशनलाल एन्ड सन्स, मद्रास–४५.

प्राचीन व चमत्कारिक प्रतिमा यहाँ से लगभग ४ फर्लांग दूर एक वट वृक्ष के नीचे भूगर्भ से प्रकट हुई थी, ऐसी मान्यता है। जहाँ प्रतिमा प्रकट हुई थी वहाँ पर प्रभु की चरण पादुकाएँ प्रतिष्ठित हैं व हजारों जैन व जैनेतर दर्शनार्थ आते हैं। भक्तों के दुखहरनार श्री केशरिया बाबा का यह प्राचीन स्थान माना जाने के कारण भक्तगण विशेष श्रद्धा से यहाँ आकर अपनी-अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त यहाँ से लगभग ४ फर्लांग दूर एक पीपल के पेड़ के नीचे देरी में श्री आदीश्वर भगवान की चरण पादुकाएँ हैं। जहाँ से श्री केशरिया नाथ भगवान की प्रतिमा प्रकट हुई थी, ऐसा माना जाता है। यहाँ जीर्णोद्धार का कार्य चालू है। आज भी यह पवित्र स्थल केशरियाजी का पुराना स्थान के नाम से प्रचलित है।

कला और सौन्दर्य * यह प्राचीन तीर्थ क्षेत्र रहने के कारण गाँव के चारों तरफ अनेकों प्राचीन कलात्मक खण्डहर नजर आते हैं। इसी मन्दिर में एक प्राचीन प्रतिमाजी पर वि० सं० १३५६ का लेख उत्कीर्ण है। कहा जाता है यह प्रतिमा भी यहाँ से लगभग ४ फर्लांग दूर एक पेड़ के नीचे से प्रकट हुई थी। प्राचीन बीशविहरमान पट्ट, चौबीस जिन कल्याणक पट्ट आदि दर्शनीय हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन डुंगरपुर लगभग ४० कि० मी० है, जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा है। डुंगरपुर से बाँसवाड़ा सड़क मार्ग पर यह क्षेत्र स्थित है। केशरियाजी से डुंगरपुर होकर आया जाता है। मन्दिर तक बस व कार जा सकती हैं।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए उपाश्रय है, जहाँ पानी, बिजली की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री जैन श्वेताम्बर श्री पौरुषादानीय पार्श्वनाथ भगवान मन्दिर पेढी : डाक घर – बड़ोदा : जिला – डुंगरपुर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – आसपुर।



श्री पौरुषादानीय पार्श्वनाथ भगवान–वटपद्र





तीर्थाधिराज श्री आदीश्वर भगवान–राजनगर

श्री राजनगर तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री आदिनाथ भगवान, पद्मासनस्थ श्वेत वर्ण, लगभग १५० सें० मी०, चतुर्मुख प्रासाद ।

तीर्थ स्थल ✻ काँकरोली से १.५ कि० मी० दूर, राजसमन्द मुख्य मार्ग में एक पहाड़ी पर, जिसे दयालशाह का किला कहते हैं ।

प्राचीनता ✻ महाराणा श्री राजसिंहजी ने यह गाँव अपने नाम पर बसाया था। महाराणा के शूरवीर मंत्री ओशवाल वंशज श्री दयालशाह संघवी ने अपनी एक करोड़ से अधिक रुपयों की विपुल धनराशि का सदुपयोग करके इस भव्य मन्दिर का निर्माण करवाकर वि० सं० १७३२ वैशाख शुक्ला ७ गुरुवार के शुभ दिन आचार्य श्री विनयसागर सूरीश्वरजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा करवाई थी, ऐसा उल्लेख है। उस समय यह मन्दिर नव मंजिल का था व इसकी ध्वजा के दर्शन बारह मील तक होते थे। कहा जाता है बादशाह औरंगजेब के समय इस मन्दिर को राज शाही किला समझकर तोप से तोड़ डाला था। आज इस मन्दिर की सिर्फ दो मंजिलें कायम रही हैं। मन्दिर के निचले भाग में भोंयरे भी बने हुए हैं।

विशिष्टता ✻ यह मेवाड़ की पंचतीर्थी का एक तीर्थ-स्थान माना जाता है। श्री दयालशाह की शूरवीरता मेवाड़ के इतिहास में प्रसिद्ध है। इन्होंने अपनी बुद्धि, दीर्घ दृष्टि और शूरवीरता से राणा को जिन्दा बचा लिया था, जिससे महाराणा के विश्वास पात्र मंत्री बन गये थे। इन्होंने वीरता पूर्वक औरंगजेब से बदला लेकर जीत में पाई हुई ऊँटों लदी स्वर्ण संपत्ति भी राणा को भेंट दे दीं। दयालशाह ने इस पहाड़ी पर मन्दिर बनवाने की भावना प्रकट की। उसपर राणा ने सहर्ष मंजूरी प्रदान की। राजमहल की टेकरी के सन्मुख स्थित इस टेकरी पर एक भव्य जिन मन्दिर का निर्माण करवाया गया। यह मन्दिर शूरवीर, दानवीर, धर्मनिष्ठ मंत्रीश्वर श्री दयालशाह की धर्मनिष्ठा की आज भी याद दिलाता है। प्रतिवर्ष भादवा शुक्ला ६ को मेला भरता है।

तेरापंथी संप्रदाय का उत्पत्ति स्थान भी यही राजनगर है। यहीं से आचार्य श्री भिक्षुस्वामीजी ने अपने मत का प्रचार प्रारम्भ करने का निर्णय लिया था।

अन्य मन्दिर ✻ इसके अतिरिक्त एक और श्री सुविधिनाथ भगवान का मन्दिर है।

कला और सौन्दर्य ✻ राजमहल की टेकरी व इस टेकरी के बीच नवचौकी नाम का स्थल है, जहाँ प्राचीन कलात्मक तोरण व अन्य अवशेष दिखायी देते हैं। टेकरी पर से आजू-बाजू के गाँवों का दृश्य अति मन लुभावना लगता है।

मार्ग दर्शन ✻ यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन काँकरोली लगभग ५ कि० मी० है, जहाँ से बस, ताँगों व टैक्सी की सुविधा उपलब्ध है। यह स्थान काँकरोली-राजसमन्द मार्ग पर स्थित है। काँकरोली व राजसमन्द से लगभग १.५ कि० मी० दूर है। उदयपुर यहाँ से ६० कि० मी० दूर है। कार व बस टेकरी पर थोड़ी दूर तक जा सकती हैं, जहाँ धर्मशाला है। वहाँ से पैदल चढ़ना पड़ता है। चढ़ने के लिए लगभग २५० पगथीये बने हुए हैं।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ बिजली, पानी, बर्तन ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजन शाला की सुविधा उपलब्ध है।

पेढ़ी ✻ श्री जैन श्वे० मूर्तिपूजक श्री आदिनाथ भगवान तीर्थ-दयालशाह का किला : डाक घर – राजसमन्द : स्टेशन –काँकरोली : जिला – उदयपुर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – काँकरोली व राजसमन्द : टेलीफोन – पी० सी० ओ० काँकरोली ।

श्री आदिनाथ जिनालय–राजनगर



सहायक : १. श्री देवराजजी इन्दरचन्दजी रांका, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु) २. शाह धनराजजी मीठाजी, मदुरै (तमिलनाडु) ३. श्री धनराजजी मानमलजी आछा, वालाजाबाद (तमिलनाडु) ४. श्री घीसूलालजी पारसमलजी सिंघवी, चिंगलपेट (तमिलनाडु)



श्री करेड़ा पार्श्वप्रभु जिनालय–भूपालसागर

श्री करेड़ा तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री करेड़ा पार्श्वनाथ भगवान, श्यामवर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ६० सें० मी०।

तीर्थ स्थल * भूपालसागर गाँव के मध्य।

प्राचीनता * इस तीर्थ की प्राचीनता का सही प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। वर्तमान जीर्णोद्धार के समय एक प्राचीन स्थंभ प्राप्त हुआ, जिसपर सं० ५५ का लेख उत्कीर्ण है, इससे यह प्रतीत होता है कि यह तीर्थ वि० के पूर्व काल का होगा। वि० सं० १०३९ में भट्टारक आचार्य श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी द्वारा श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठित हुए का उल्लेख मिलता है। सं० १३२६ चैत्र कृष्णा सोमवती अमावस्या के दिन महारावल श्री चाचिगदेव द्वारा यहाँ श्री पार्श्वनाथ भगवान के मन्दिर की सेवा-पूजा निमित कुछ धनराशि अर्पण करने का उल्लेख है। भमती में कुछ मूर्तियों पर वि० सं० १३०३, १३४१ व १४९६ के लेख उत्कीर्ण हैं। सभा मण्डप के ऊपरी भाग में एक मस्जिद की आकृति बनी हुई थी। कहा जाता है जब अकबर बादशाह यहाँ आया तब यह आकृति बनवायी थी ताकि मुसलमान आक्रमणकार ऐसे सुन्दर चमत्कारिक मन्दिर का नाश न करें।

गुर्वावली में उल्लेखानुसार मान्डवगढ़ के महामंत्री श्री पेथड़शाह ने भी श्री पार्श्वनाथ भगवान के मन्दिर का यहाँ निर्माण करवाया था।

मान्डवगढ़ से, महामंत्री श्री पेथड़शाह के पुत्र श्री झांझण शाह वि० सं० १३४० में जब श्री शत्रुंजयगिरि यात्रा संघ लेकर यहाँ आये तब श्री पाश्वप्रभु के मन्दिर का जीर्णोद्धार प्रारम्भ करके सात मंजिल का मन्दिर बनवाने का उल्लेख है। लेकिन आज उस भव्य मन्दिर का पता नहीं। वर्तमान मन्दिर सं० १०३९ का निर्मित माना जाता है। प्रभु प्रतिमा पर वि० सं० १६५६ का लेख उत्कीर्ण है। हो सकता है

जीर्णोद्धार के समय यह प्रतिमा प्रतिष्ठित करवायी गई होगी।

इस मन्दिर का हाल ही में पुनः जीर्णोद्धार होकर वि० स० २०३३ माघ शुक्ला १३ के शुभ दिन आचार्य श्री सुशील सूरीश्वरजी के सुहस्ते इस प्राचीन प्रभु-प्रतिमा की पुनः प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

यह मन्दिर विद्वान भट्टारक आचार्य श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी द्वारा प्रतिष्ठित माना जाता है। यशोभद्रसूरीश्वरजी के जीवन प्रसंग की चमत्कारिक घटनाएँ जन-प्रचलित हैं। जिस दिन इस मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई उसी समय उन्होंने अन्य चार जगह भी अलग-अलग रूप धारण कर एक ही साथ प्रतिष्ठा करवायी थी, ऐसी किंवदन्ती प्रचलित है। अकबर बादशाह के यहाँ दर्शनार्थ आने का उल्लेख है। मान्डवगढ़ के महामंत्री श्री पेथड़शाह के पुत्र मंत्री झांझण शाह, आचार्य श्री धर्मघोससूरीश्वरजी आदि अनेकों आचार्यगणों के साथ जब जैन इतिहास में उल्लेखनीय शत्रुंजय यात्रा संघ लेकर यहाँ उपसर्ग हरनार श्री पार्श्वप्रभु की प्रतिमा के दर्शनार्थ आये तब संघपति का तिलक यहीं हुआ था। वर्तमान प्रतिमा भी अति ही चमत्कारी व उपसर्ग हरनारी है। प्रतिवर्ष प्रभु के जन्म कल्याणक पौष कृष्णा १० के दिन मेला भरता है, जब हजारों नर नारी प्रभु भक्ति में भाग लेते हैं।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में इसके अतिरिक्त और कोई मन्दिर नहीं हैं।

कला और सौन्दर्य ✻ प्राचीन मन्दिरों के अनेक कलात्मक खण्डहर दिखाई देते हैं। अगर शोधकार्य किया जाय तो प्रामाणिक इतिहास मिलने की संभावना है।

मार्ग दर्शन ✻ यहाँ का रेलवे स्टेशन भूपालसागर मन्दिर से करीब ६०० मीटर दूर है, जहाँ से यात्रियों को लाने के लिए पेढ़ी से बैल गाड़ी हमेशा जाती है। यह स्थान चित्तौड़ से ५६ कि० मी० चित्तौड़-उदयपुर मार्ग पर स्थित है। मावली जंकशन से दूसरा स्टेशन है। यहाँ का बस स्टैण्ड मन्दिर से १०० मीटर दूर है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिये मन्दिर के अहाते में ही विशाल धर्मशाला है, जहाँ बिजली, पानी, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है।

पेढ़ी ✻ श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्री करेड़ा पार्श्वनाथजी तीर्थ। डाक घर – भूपालसागर : जिला – चित्तौड़गढ़ : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – भूपालसागर : टेलीफोन – पी० सी० ओ० भूपालसागर।



श्री करेड़ा पार्श्वनाथ भगवान–भूपालसागर

सहायक : शाह हस्तीमलजी धूलचन्दजी सोनीगरा गुन्दोज (राज०) वाले, मद्रास–११.

श्री नागहृद तीर्थ

तीर्थाधिराज ❋ श्री शान्तिनाथ भगवान, श्याम वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग २७० सें० मी० ।

तीर्थ स्थल ❋ एकलिंगजी (कैलाशपुरी) से एक मील दूर पहाड़ी की ओट में बाघेला तालाब किनारे।

प्राचीनता ❋ इसका प्राचीन नाम नागहृद था, ऐसा उल्लेख है। एक समय यहाँ मेवाड़ की राजधानी थी। सदियों तक यह स्थान जाहोजलालीपूर्ण रहा। यहाँ श्री पार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर श्री सम्प्रतिराजा द्वारा बनवाने का उल्लेख श्री मुनिसुन्दरसूरीश्वरजी ने 'नागहृदतीर्थ स्तोत्र' में किया है। लगभग विक्रम की पांचवीं शताब्दी में शास्त्रविशारद आचार्य श्री समुद्रसूरीश्वरजी ने शास्त्रार्थ में विजयी होकर यह तीर्थ पुनः श्वेताम्बर संघ के अधीन किया था, ऐसा उल्लेख है। राजा श्री भोजराज ने मान्डवगढ़ में 'भारती भवन' महाविद्यालय के प्रधानाचार्य कर्णाटकी श्री भट्ट-गोविन्द को उनकी कार्यकुशलता पर प्रसन्न होकर यह गाँव इनाम में दिया था, ऐसा उल्लेख मिलता है। मँत्री श्री पेथड़शाह द्वारा यहाँ श्री नेमिनाथ भगवान का मन्दिर बनवाने का उल्लेख है। कहा जाता है किसी वक्त यहाँ ३५० जिन मन्दिर थे। सायं आरती के वक्त इन मन्दिरों के घंटियों की मधुर-मधुर स्वर लहरी एक साथ ऐसी लगती थी मानों देवलोक में इन्द्रों द्वारा प्रभु की भक्ति हो रही हो। यहाँ से देवकुलपाटक तक सुरंग थी।

मन्दिरों का दूर दृश्य—नागहृद



सहायक : १. मेसर्स. वी० फकीरचन्द लूंकड़ संस, मनारगुडी (तमिलनाडु) २. श्री गणेशमलजी तिलोकंचन्दजी गोलेछा, कडलूर (तमिलनाडु) ३. शाह गणेशमल प्रागचन्द एन्ड को० कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु) ४. शाह गुलाबचन्दजी पुनमचन्दजी, सेलम

कहा जाता है सुलतानसममुदीन के समय इस स्थान को भारी क्षति पहुँची । आज यहाँ सिर्फ यह एक ही मन्दिर है । वि० सं० १४९४ माघ शुक्ला एकादशी गुरुवार के दिन आचार्य श्री जिनसागरसूरीश्वरजी के सुहस्ते देवकुलपाटक के नवलखागौत्रीय श्रेष्ठी श्री सारंग द्वारा प्रतिष्ठित करवाने का लेख उत्कीर्ण है। पास के एक जिन मन्दिर में पबासणों पर सं० ११९२ व १३५६ के लेख उत्कीर्ण हैं, इसे श्री पार्श्वनाथ भगवान का प्राचीन मन्दिर कहते हैं। इस मन्दिर में प्रतिमाजी नहीं हैं।

विशिष्टता * मेवाड़ की पंचतीर्थी का यह एक तीर्थ स्थान है। श्री शान्तिनाथ भगवान की पद्मासन में इतनी विशालकाय सुन्दर व प्राचीन प्रतिमा के दर्शन अन्यत्र अति दुर्लभ हैं।

इस मन्दिर के अलावा यहाँ अनेकों मन्दिरों के खण्डहर पहाड़ी पर दिखाई देते हैं। अगर शोध की जाय तो काफी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री प्रकाश में आ सकती है।

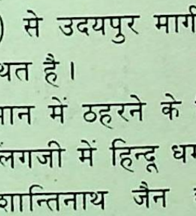
अन्य मन्दिर * इसके पास दो और मन्दिर जीर्ण अवस्था में हैं, जिनमें प्रतिमाजी नहीं हैं। कुछ ही दूरी पर एक और मन्दिर है, जिसे सास-बहू के मन्दिर के नाम से संबोधित किया जाता है। इसमें भी प्रतिमा नहीं हैं।

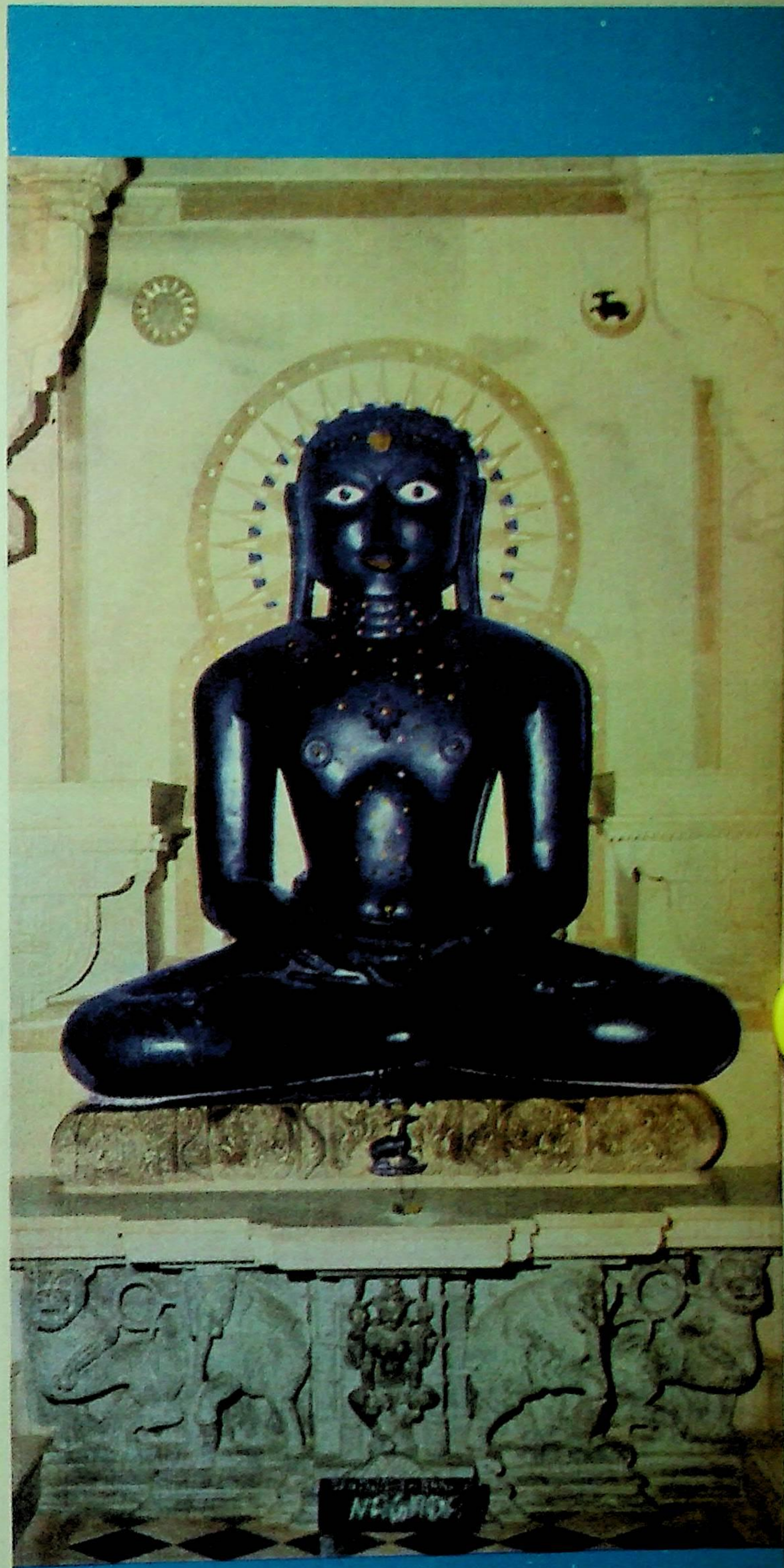
कला और सौन्दर्य * प्रभु प्रतिमा की कलाकृति का जितना वर्णन करें कम है, क्योंकि श्री शान्तिनाथ भगवान की इतनी विशालकाय सुन्दर प्रतिमा शायद ही कहीं हो। पास के जीर्ण मन्दिर में स्थंभों व छतों आदि की कला अति दर्शनीय है। पहाड़ पर जंगल में भी प्राचीन मन्दिरों के कलात्मक खण्डहर दिखायी देते हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन उदयपुर ४० कि० मी० है, जहाँ से बस व टेक्सी की सुविधा है। एकलिंगजी (कैलाशपुरी) से उदयपुर मार्ग में सिर्फ १.५ कि० मी० पर यह तीर्थ स्थित है।

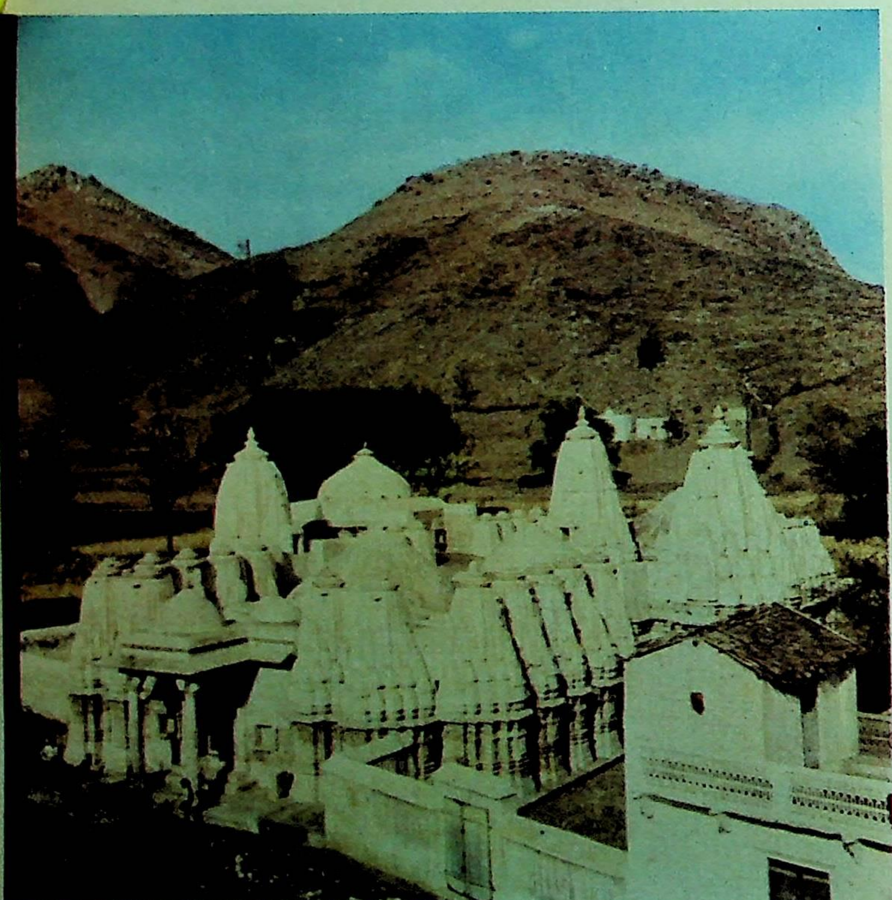
सुविधाएँ * वर्तमान में ठहरने के लिये कोई जैन धर्मशाला नहीं है। एकलिंगजी में हिन्दू धर्मशालाएँ हैं।

पेढ़ी * श्री शान्तिनाथ जैन श्वेताम्बर मन्दिर । नागदा : डाक घर – कैलाशपुरी : जिला – उदयपुर : प्रान्त :– राजस्थान : तार घर – कैलाशपुरी : टेलीफोन – पी० सी० ओ० कैलाशपुरी।





श्री शान्तिनाथ भगवान–नागहृद



श्री आदिनाथ जिनालय–देवकुलपाटक

श्री देवकुलपाटक तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री आदिनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग १०५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * देलवाड़ा गाँव के बाहर पहाड़ी की ओट में।

प्राचीनता * इस तीर्थ की सही प्राचीनता का पता नहीं लग रहा है। वि० सं० १८६९ में जीर्णोद्धार होकर पुनः प्रतिष्ठा होने का उल्लेख है।

यह क्षेत्र पहिले 'देवकुलपाटक' के नाम से विख्यात था। किसी समय यह एक विराट नगरी थी। वि० सं० १७४६ में रचित 'तीर्थ माला' में इसका वर्णन आता है।

वि० सं० १९५४ में अंतिम जीर्णोद्धार होने का उल्लेख है।

विशिष्टता * यह स्थान मेवाड़ की पंचतीर्थी का एक तीर्थ स्थल माना जाता है। कहा जाता है किसी वक्त यहाँ ३०० जिन मन्दिर थे। यहाँ दो पर्वतों पर शत्रुंजयावतार व गिरनारावतार की स्थापना की हुई थी। यहाँ से नागदा तक सुरंग थी, ऐसा उल्लेख है। 'संतिकरं' स्तोत्र की रचना यहीं पर हुई थी। श्री आदिनाथ प्रभु की इतनी सुन्दर प्रतिमा के दर्शन अन्यत्र दुर्लभ हैं। आचार्य श्री सोमसुन्दरसूरीश्वरजी महाराज अनेकों बार अपने विशाल साधु समुदाय के साथ यहाँ पधारे ऐसा 'सोम सौभाग्य काव्य' में वर्णन आता है। यहाँ की शिल्पकला देखते ही आबू व राणकपुर याद आ जाते हैं, क्योंकि यहाँ की शिल्पकला भी अपने-आप में अलग स्थान रखती है। शिखर की बाह्य कला अपना विशिष्ठ

स्थान रखती है।

अन्य मन्दिर * इस मन्दिर के अतिरिक्त तीन और प्राचीन मन्दिर पन्द्रहवीं शताब्दी के हैं।

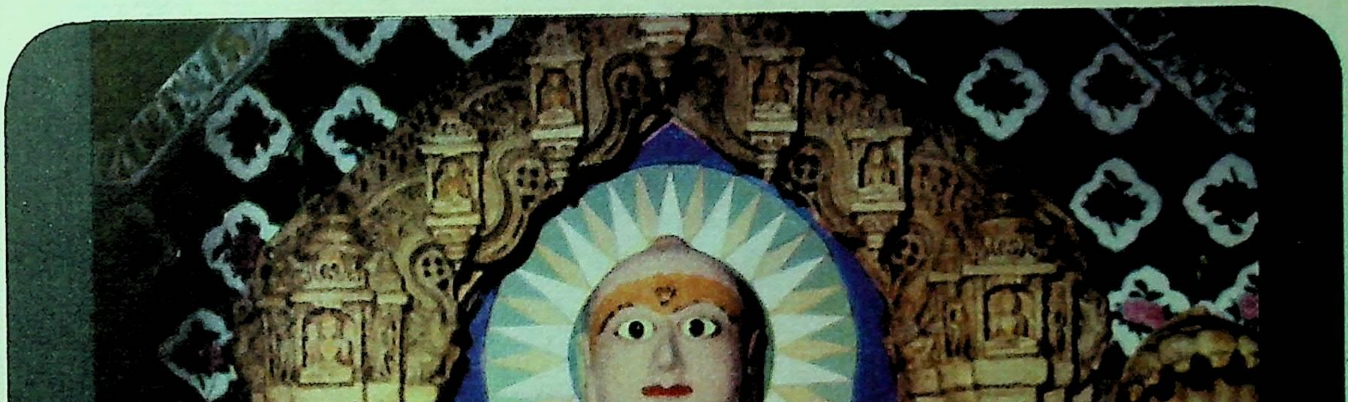
कला और सौन्दर्य * यहाँ की कला के दर्शन करते ही आबू व कुंभारियाजी याद आ जाते हैं। मन्दिर के शिखर, गुम्बज, स्थंभों आदि पर किये विभिन्न प्रकार की कला के नमूने अपने-आप में निराले प्रतीत होते हैं। यहाँ के मूलनायक श्री आदिनाथ प्रभु की मूर्ति की कला तो देखते ही बनती है। लगता है प्रभु साक्षात् विराजमान हैं। इतनी प्राचीन प्रतिमा जैसे आज बनी प्रतीत होती है। ऐसी प्रतिमा के दर्शन अन्यत्र निःसन्देह दुर्लभ हैं। मन्दिर में और भी अनेकों प्राचीन कलात्मक प्रतिमाएँ हैं। जैसे मोर व सर्प के बीच आदिनाथ प्रभु के चरण, द्रौपदी, कुन्ती, पाण्डव, आदि ऐसे कई प्रतिबिम्ब हैं। पार्श्वप्रभु के मन्दिर में भोंयरे में विशालकाय प्राचीन प्रतिमाएँ हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन खेमली १३ कि० मी० व उदयपुर २६ कि० मी० दूर है। खेमली से आने के लिए कोई साधन नहीं है। उदयपुर से बस व टैक्सी की सुविधा है। गाँव का बस स्टैण्ड मन्दिर से लगभग ४०० मीटर दूर है। उदयपुर-अजमेर मार्ग पर यह स्थल है। मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ * यहाँ पर धर्मशाला है, लेकिन वर्तमान में यहाँ कोई खास सुविधा उपलब्ध नहीं है।

पेढ़ी * श्री जैन श्वेताम्बर महा सभा : डाक घर – देलवाड़ा : जिला – उदयपुर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – देलवाड़ा : टेलीफोन – पी० सी० ओ० देलवाड़ा।

श्री आदीश्वर भगवान–देवकुलपाटक



सहायक : शाह हीराचन्दजी चूनीलालजी पुखराजजी बाफणा, सादड़ी (राज०) वाले, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु)।



मन्दिर-समूहों का दृश्य—नाडलाई

श्री नाडलाई तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री नेमिनाथ भगवान, श्याम वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ७५ सें० मी० एवं श्री आदिनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ७५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * नाडलाई गाँव के बाहर लगभग २ फर्लांग दूर अलग-अलग आमने-सामने पहाड़ियों पर।

प्राचीनता *इसके प्राचीन नाम नड्डुलडागिका, नन्दकुलवती, नडुलाई, नारदपुरी आदि शास्त्रों में उल्लेखित है। श्री नारदजी ने मेवाड़ देश के इस विशाल भूमि पट को देखकर नारदपुरी नगर बसाया था व श्री कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न कुमार ने नजदीक पर्वत पर जिन मन्दिर बनवाकर श्री नेमिनाथ भगवान की सुन्दर प्रभावशाली प्रतिमा प्रतिष्ठित करवायी थी, ऐसा 'विजयप्रशस्ति महाकाव्य' में उल्लेख आता है। इस पर्वत को यादवटेकरी कहते हैं। इस पर्वत के सम्मुख एक पर्वत है जिसे शत्रुंजयटेकरी कहते हैं। इस टेकरी पर श्री आदिनाथ प्रभु का भव्य मन्दिर है। प्रतिमाजी पर वि० सं० १६८६ में जीर्णोद्धार हुए का उल्लेख है। इसलिए ये दोनों पर्वत प्राचीन माने जाते हैं जिन्हें गिरनार व शत्रुंजयावतार कहते हैं।

सं० ११६५ में राजा रायपाल द्वारा उनको मिलने वाले कर का बीसवां हिस्सा इन मन्दिरों की सेवा पूजा के लिए भेंट करने का उल्लेख है। सत्रहवीं शताब्दी में श्री समयसुन्दरजी उपाध्याय द्वारा रचित तीर्थ-माला में इन मन्दिरों का उल्लेख किया है।

पं० श्री शीलविजयजी ने भी तीर्थ माला में यहाँ का वर्णन किया है।

गाँव का श्री आदिनाथ भगवान का मुख्य मन्दिर लगभग वि० सं० ९६४ में श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी द्वारा अपनी साधनाशक्ति से आकाश मार्ग द्वारा वल्लभीपुर से लाया बताया जाता है। एक और उल्लेखानुसार यह मन्दिर खेड़नगर से लाया बताया जाता है। किसी समय यह नगरी अत्यन्त जाहोजलाली पूर्ण थी, ऐसा उपलब्ध उल्लेखों व शिलालेखों से प्रतीत होता है। कहा जाता है यहाँ से नाडोल तक सुरंग थी।

विशिष्टता * श्री नारदजी द्वारा बसाई इस नगरी में श्री कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न कुमार द्वारा इस तीर्थ को निर्मित बताये जाने के कारण यहाँ की विशेष महत्ता है। प्रकाण्ड विद्वान आचार्य श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी एवं योगी तपेसरजी के बीच राजसभा में कई बार शास्त्रार्थ हुआ था व तपेसरजी अनेकों बार हारे थे। एक उल्लेखानुसार बाद में तपेसरजी ने श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी के पास दीक्षा ग्रहण की थी, जो बाद में केशवसूरि (वासुदेवाचार्य) के नाम से प्रख्यात हुए श्री केशवसूरिजी ने हयुंडी के राजा विदग्धराज को प्रतिबोध देकर जैन धर्म अंगीकार करवाया था।

श्री यशोभद्रसूरिजी द्वारा आकाश मार्ग से अपनी साधना द्वारा लाया हुआ श्री आदिनाथ भगवान का मन्दिर अभी भी विद्यमान है। एक शैव मन्दिर भी विद्यमान है, जो कहा जाता है, श्री केशवसूरिजी द्वारा दीक्षा ग्रहण पूर्व श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी के साथ हुए शास्त्रार्थ के समय आकाश मार्ग से लाया गया था। जन साधारण में जसीया व केशीया के नाम से ये आज भी प्रचलित हैं।

श्री यशोभद्रसूरिजी व श्री केशवसूरिजी यहीं पर स्वर्ग सिधारे, जिनके स्तूप यहाँ पर अभी भी विद्यमान हैं।

श्री लावण्यसमय रचित तीर्थ माला में इस घटना का वृत्तांत आता है।

यशोभद्रसूरि रास में अनेकों चमत्कारिक घटित घटनाओं

के वर्णन हैं। अकबर प्रतिबोधक श्री हीरविजयसूरिजी के शिष्य श्री विजयसेनसूरिजी की यह जन्मभूमि है। वि० सं० १६०७-०८ में श्री हीरविजयसूरिजी को पन्यास व उपाध्याय की पदवी से यहीं पर अलंकृत किया गया था।

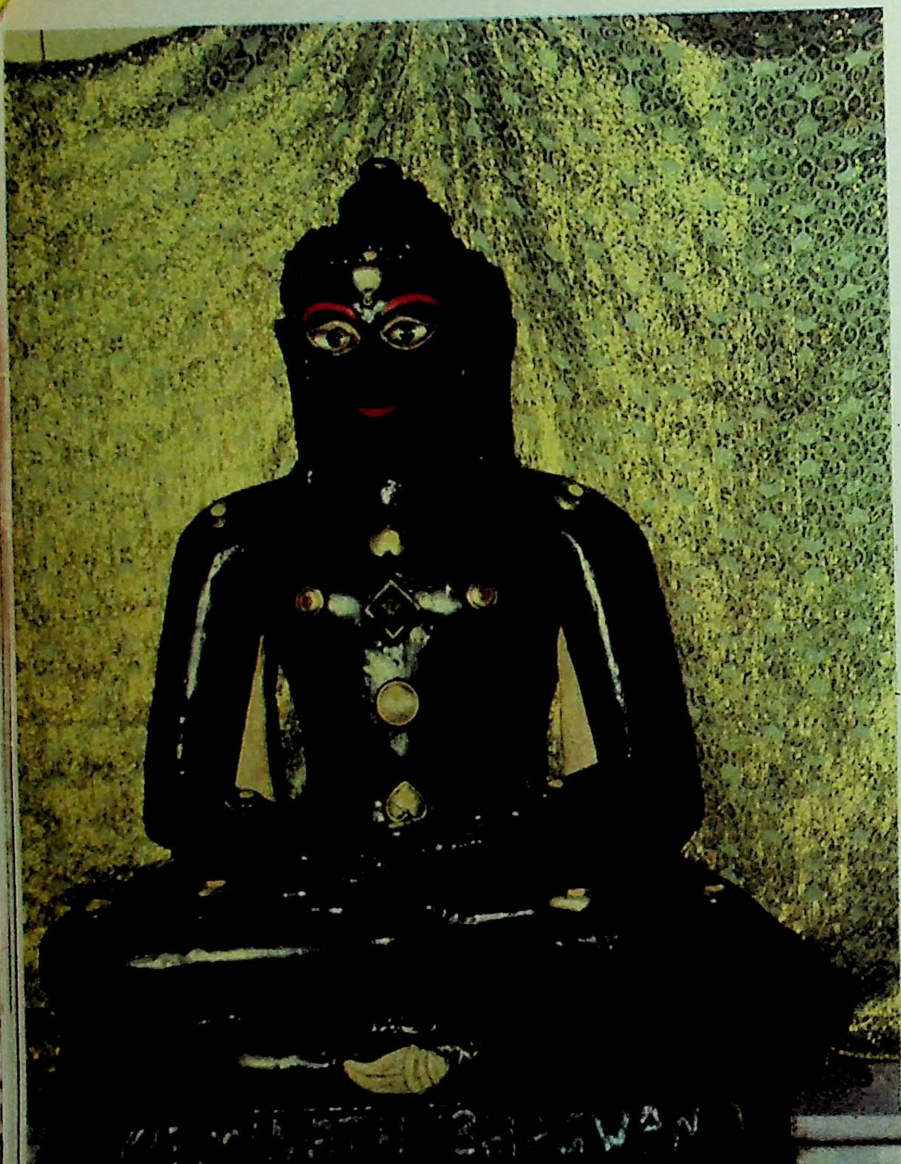
अन्य मन्दिर ✻ इनके अतिरिक्त पर्वतों की तलहटी में ७ मन्दिर और गाँव में दो मन्दिर हैं। गाँव के मुख्य मन्दिर में अधिष्ठायक देव चमत्कारिक हैं।

कला और सौन्दर्य ✻ यादव टेकरी व शत्रुंजय टेकरी के बीच की पहाड़ी का प्राकृतिक दृश्य अति ही सुन्दर है। गाँव में श्री आदिनाथ भगवान के मन्दिर में सभा मण्डप के छत पर किये हुए रंगीन चित्रों की कला प्राचीन होते हुए भी साफ व अति सुन्दर दिखायी देती हैं।

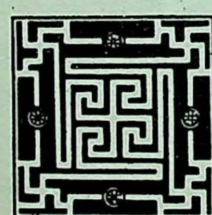
मार्ग दर्शन ✻ यहाँ से नजदीक के रेलवे स्टेशन फालना लगभग ४० कि० मी० व रानी लगभग २८ कि० मी० दूर हैं। इन जगहों से बस व टैक्सी की सुविधा है। यहाँ से देसूरी लगभग ६ कि० मी०, घाणेराव १३ कि० मी० व मुछाला महावीर १६ कि० मी० हैं। यहाँ का बस स्टैण्ड पर्वतों से लगभग २ फर्लांग दूर है। लगभग ३ कि० मी० कच्ची सड़क है। लेकिन पर्वतों की तल्लेटी तक कार व बस जा सकती है। पर्वतों पर चढ़ने के लिए पगथीये बने हुए हैं। पर्वतों की चढ़ाई खास कठिन नहीं है। दोनों पर्वतों पर जाकर आने में लगभग एक घंटा लगता है।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, ओढने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है।

पेढ़ी ✻ श्री श्वे० जैन देवस्थान पेढ़ी : डाक घर – नाडलाई : व्हाया – देसूरी : जिला – पाली : प्रान्त – राजस्थान तार घर – देसूरी : टेलीफोन – पी० सी० ओ० देसूरी।



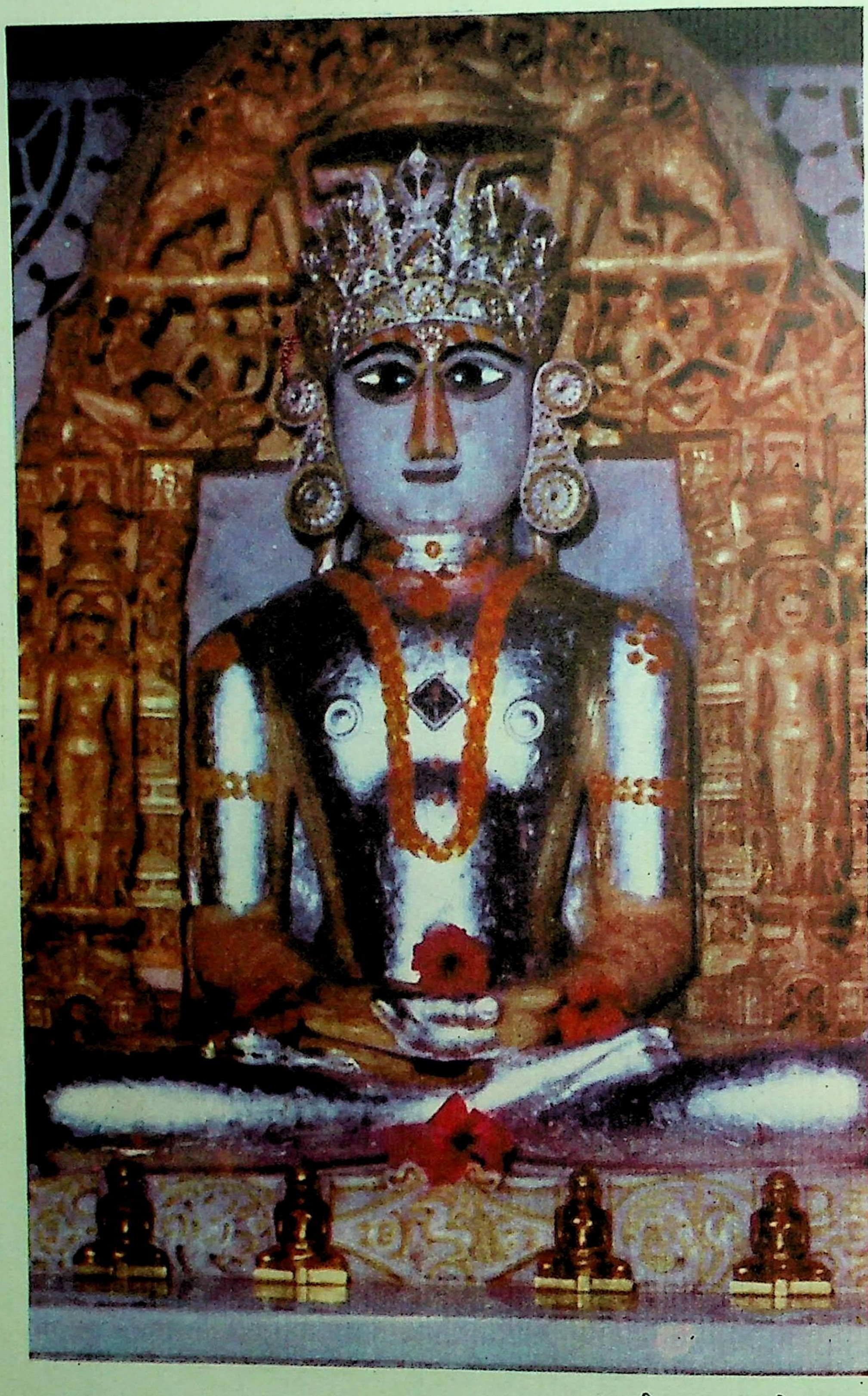
श्री नेमिनाथ भगवान–नाडलाई



श्री आदीश्वर भगवान–नाडलाई



सहायक : श्री घेवरचन्दजी सूरजमलजी बोथरा, भोपालगढ़ (राज०) वाले, मद्रास–८.



श्री मुछाला महावीर भगवान

सहायक : मेसर्स. एस. देवराज जैन, घाणेराव (राज०) वाले, मद्रास–१.

श्री मुछाला महावीरजी तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग १२० सें० मी०।

तीर्थ स्थल * घाणेराव गाँव से लगभग ५ कि० मी० दूर पहाड़ियों के मध्य एकान्त जंगल में।

प्राचीनता * यह तीर्थ अति ही प्राचीन माना जाता है, लेकिन प्राचीनता का पता लगाना कठिन सा है। प्रतिमाजी पर कोई लेख उत्कीर्ण नही है। अंतिम जीर्णोद्धार वि० सं० २०१७ में होकर सं० २०२२ में पुनः प्रतिष्ठा की गई।

विशिष्टता * यह गोड़वाल पंचतीर्थी का एक तीर्थ स्थान माना जाता है। यहाँ के चमत्कार भी लोकप्रसिद्ध हैं। एक वक्त उदयपुर के महाराणा यहाँ दर्शनार्थ पधारे। महाराणा ने तिलक करते वक्त केशर की कटोरी में बाल देखकर हँसते हुए पुजारी से कहा कि मालूम पड़ता है भगवान के मूँछे हैं। महावीर भक्त पुजारी ने, जी हाँ कहते हुए कहा कि भगवान समय समय इच्छानुसार अनेक रूप धारण करते हैं। हठीली प्रकृतिवाले महाराणा ने पुजारी से कहा कि मुझे मूंछों सहित भगवान के दर्शन करना है। मैं यहाँ तीन दिवस रहूंगा। भक्त पुजारी की अनन्य भक्ति से प्रसन्न होकर प्रभु ने मूंछों सहित महाराणा को दर्शन दिये। उसी दिन से इस तीर्थ का नाम मुछाला महावीर पड़ा, ऐसी किंवदन्ति है। कहा जाता है आज भी चमत्कारिक घटनाएँ घटती हैं। प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला १३ को मेला लगता है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में यहाँ पर अन्य कोई मन्दिर नहीं है।

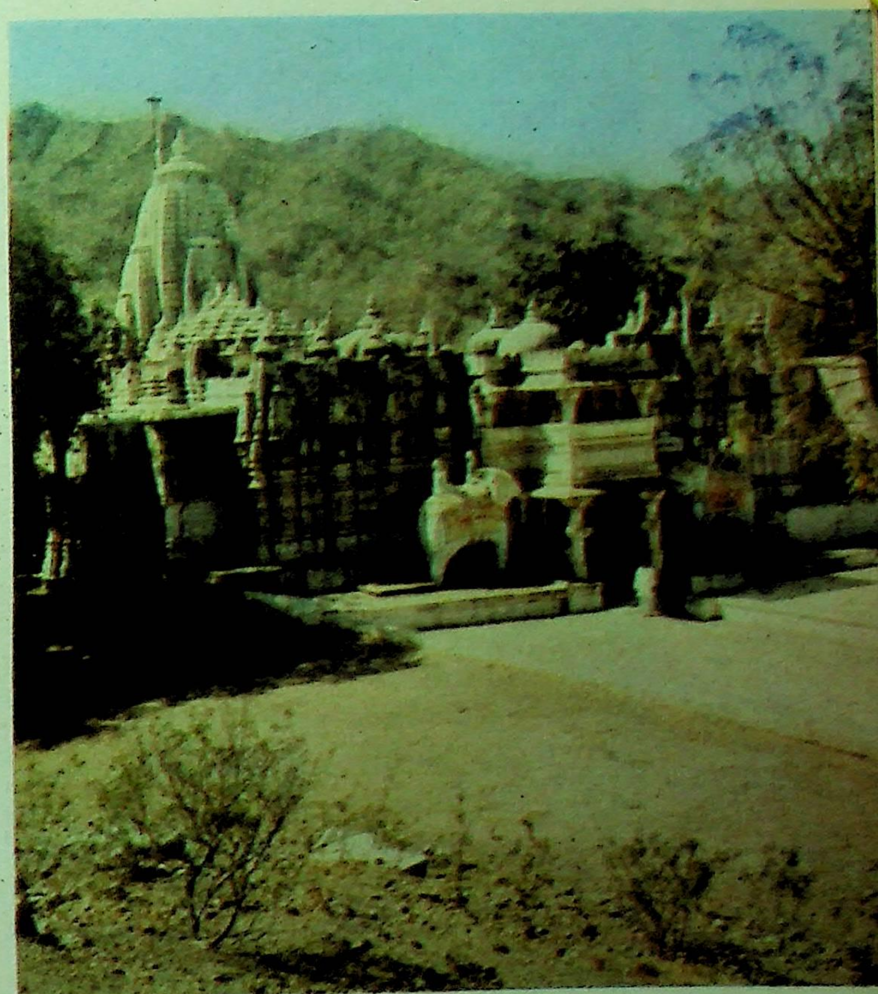
कला और सौन्दर्य * जंगल में मंगल करता हुआ दोनों तरफ पहाड़ियों के बीच यह प्राचीन मन्दिर अति ही मनोरम प्रतीत होता है। मन्दिर के मण्डप, स्थंभों व भमती में उत्कीर्ण कला के नमूने दर्शनीय हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक के रेलवे स्टेशन फालना ४० कि० मी० व रानी ५० कि० मी० दूर हैं। इन जगहों से बसों व टैक्सियों की सुविधा है। नजदीक का गाँव घाणेराव है। सरकारी बसें घाणेराव तक आती हैं। घाणेराव से बस व बैलगाड़ी का साधन मिलता है। घाणेराव से मन्दिर तक कच्ची सड़क है, लेकिन कार आखिर तक जा सकती है। यहाँ से नाडलाइ लगभग १६ कि० मी०, राणकपुर २१ कि० मी० व सादड़ी १२ कि० मी० दूर हैं। सादड़ी से टैक्सी की सुविधा मिलती है।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए मन्दिर के पास ही विशाल धर्मशाला है, जहाँ पानी, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा उपलब्ध है।

पेढ़ी * श्री आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी : मुछाला महावीरजी : डाक घर – घाणेराव : जिला – पाली : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – घाणेराव : टेलीफोन – पी० सी० ओ० घाणेराव।

श्री-मुछाला महावीर जिनालय



श्री राणकपुर तीर्थ

तीर्थाधिराज ✱ श्री आदीश्वर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग १८० सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✱ अरावली गिरिमाला की छोटी-छोटी पहाड़ियों व शान्त, एकान्त तथा निर्जन आरण्य प्रकृति के त्रिविध सौन्दर्य के बीच कलकल बहती हुई नन्ही-सी मघाई नदी के किनारे।

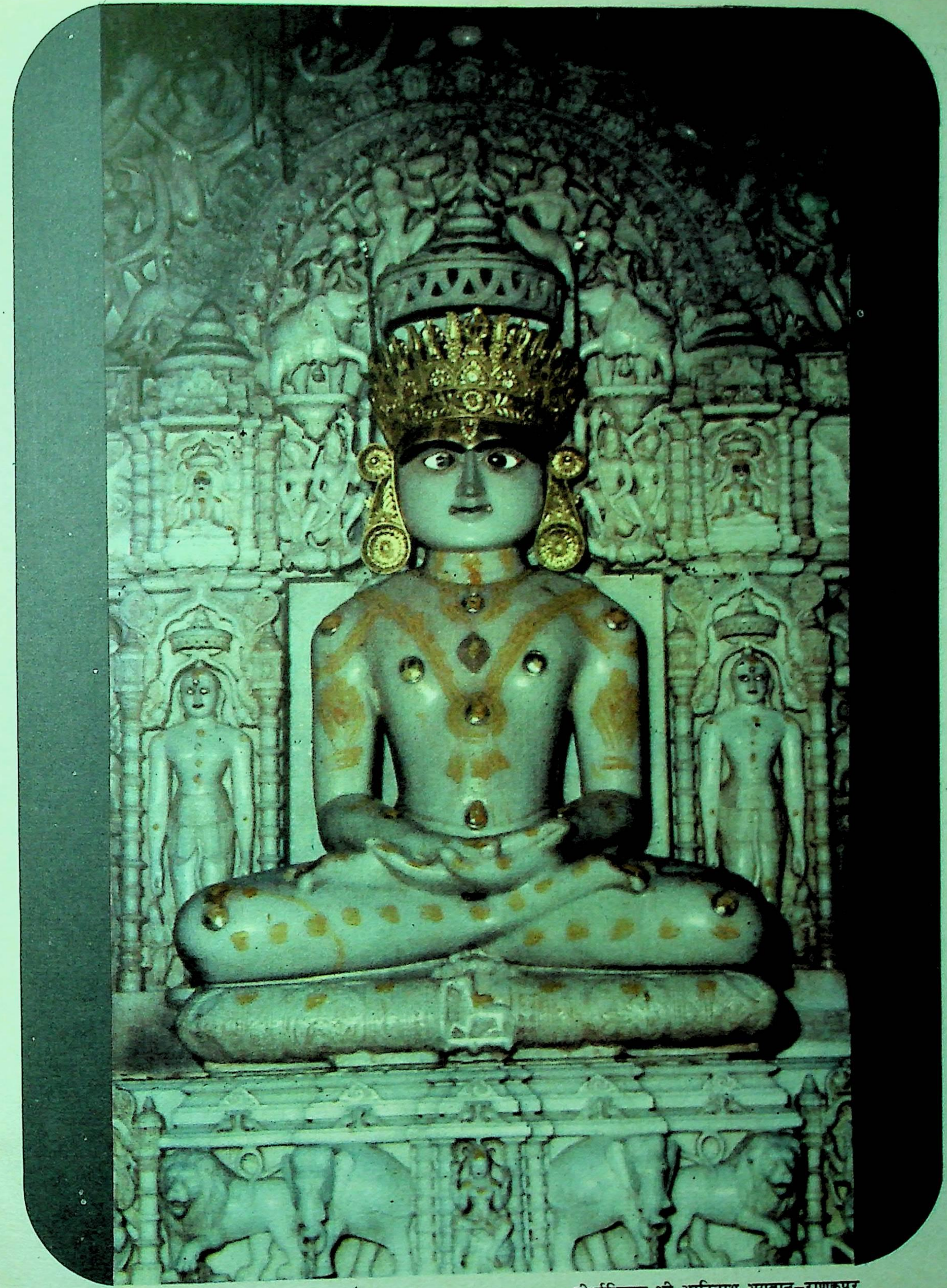
प्राचीनता ✱ इस तीर्थ का इतिहास वि० सं० १४४६ (एक उल्लेख अनुसार वि० सं० १४३४) से प्रारंभ होता है। इस मन्दिर का निर्माण-कार्य युगप्रधान आचार्य श्री सोमसुन्दर सूरीश्वरजी के सदुपदेश से, राणा कुंभा के मंत्री श्री धरणाशाह द्वारा, वि० सं० १४४६ में प्रारंभ करवाया गया। अर्द्ध शताब्दी जितने सुदीर्घ समय के निर्माण-कार्य के पश्चात जब मन्दिर तैयार हो गया, तब वि० सं० १४९६ में 'नलिनीगुल्मदेव-विमान' तुल्य गगनचुंबी इस 'धरणविहार' मन्दिर की प्रतिष्ठा, युगप्रधान आचार्य श्री सोमसुन्दरसूरिजी के सुहस्ते असंख्य जनसमुदाय के बीच विराट महोत्सव के साथ हर्षोल्लासपूर्वक सुसंपन्न हुई। साथ ही साथ इस मंदिर के निकट एक विराटनगरी का भी निर्माण हो चुका था, जिसे राणापुर कहते थे। तत्पश्चात् राणकपुर पड़ा।

सं० १४९९ में स्वयं यात्रा करते हुए आँखों देखकर पं० मेघ कवि ने अपने द्वारा रचित 'राणिगपुर चतुर्मुख प्रासाद स्तवन' में इस राणकपुर नगरी को पाटण के समान बताया है। उस समय सुसम्पन्न श्रावकों के ३००० घर विद्यमान थे। अकबर प्रतिबोधक आचार्य श्री हीरविजयसूरीश्वरजी के सदुपदेश से मेघनाद मंडप बनवाने का व जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख मिलता है। अठारहवीं सदी में श्री ज्ञानविमलसूरिजी व श्री समयसुन्दर उपाध्यायजी ने अपने स्तवनों में इस तीर्थ का अत्यन्त सुन्दर वर्णन किया है।

पं० कवि मेघ गणिवर ने यहाँ ७ जिनमन्दिर व श्री ज्ञानविमलसूरिजी ने यहाँ ५ जिन मन्दिर होने का लिखा है, किन्तु वर्तमान में यहाँ सिर्फ ३ ही जिन मन्दिर हैं और जैन व अन्य जाति का घर तो एक भी नहीं है। इस प्रकार एक समय का विराट राणकपुर, कालांतर में बिलकुल वीरान हो गया। यह नगरी कब ध्वस्त हुई, उसका इतिहास उपलब्ध नहीं। कहा जाता है, औरंगजेब के समय आक्रमणकारियों द्वारा इस नगरी को भी भारी क्षति पहुँची होगी। ऊँची टेकरियों पर अनेकों खण्डहर दिखाई देते हैं। 'धरण विहार' तो अभी भी अपनी शान से छटायुक्त पहाड़ियों के मध्य गगन से बातें करता गत सदियों की याद दिलाता है। राजस्थान के गोड़वाड़ की पंचतीर्थी का यह मुख्य तीर्थ है। समस्त जैन संघ द्वारा स्थापित सेठ श्री आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी ने ई० सन् १९३४-४५ के बीच इन मन्दिरों का आदर्श जीर्णोद्धार करवाकर पुनः प्रतिष्ठा-वि० सं० २००९ में करवाई थी।

विशिष्टता ✱ इस तीर्थ की विशेषता का इतिहास भी अति ही गौरवशाली है। इस तीर्थ के निर्माण का मुख्य श्रेय युगप्रधान आचार्य श्री सोमसुन्दरसूरीश्वरजी को है। इनकी ही प्रेरणा से नान्दियानिवासी, प्राग्वटवंशी, सेठ कुंवरपाल व शेठाणी कामलदे के भाग्यवान पुत्र व राणा कुंभा के मंत्री श्री धरणाशाह में उत्कृष्ट धार्मिक भावना जाग्रत हुई, जिससे प्रेरित होकर, ३२ वर्षों की यौवनावस्था में ही, शत्रुंजय महाशास्वत तीर्थ पर एकत्रित ३२ विभिन्न शहरों के संघों के बीच, संघतिलक करवाकर इन्द्रमाला पहिनने का, चौथे ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने का व दान-पुण्य एवं तीर्थयात्रा करने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त हुआ। उनको श्री आदिनाथ भगवान का भव्य मन्दिर बनवाने की भी भावना हुई। एक दिन स्वप्न में 'नलिनीगुल्मदेवविमान' के उन्हें दर्शन हुए, जिस पर उनकी अन्तरात्मा में 'नलिनीगुल्मविमान' जैसा एक अलौकिक, भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणाप्रद, विश्व में जैनधर्म का गौरव बढ़ावे ऐसा, शिल्पकला में उत्कृष्ट व सर्वांगसुन्दर मन्दिर बनवाने की भावना जाग्रत हुई।

धर्मनिष्ठ राणा कुंभा द्वारा मन्दिर के निर्माणकार्य में दिया गया योगदान भी उल्लेखनीय है। जब धरणाशाह ने राणा के सम्मुख उक्त मन्दिर बनवाने की भावना प्रकट की व उस के लिये जमीन देने की प्रार्थना की, तब राणा प्रफुल्लित हुए व



तीर्थाधिराज श्री आदिनाथ भगवान–राणकपुर

सहायक : मेसर्स. अमरचन्द सोभाचन्द, सादड़ी (राज०) वाले, मद्रास–३.

मन्दिर के लिये उपयुक्त जमीन देने के अतिरिक्त उन्होंने मन्दिर के निकट नगर बसाने की भी सलाह दी।

मुंडरानिवासी सिद्धहस्त, शिल्पकार श्री देपा (दीपा या देपाक) को भी हम नहीं भूल सकते। उन्होंने अपनी जिन्दगी की बाजी लगाकर भारतीय जैन शिल्पकला का एक उत्कृष्ट नमूना विश्व के सामने पेश किया, जिस के दर्शन कर, विश्व के शिल्पशास्त्रविशारद, विद्वान व आबाल-वृद्ध-वनिता आज भी प्रफुल्लित व मुग्ध होते हैं।

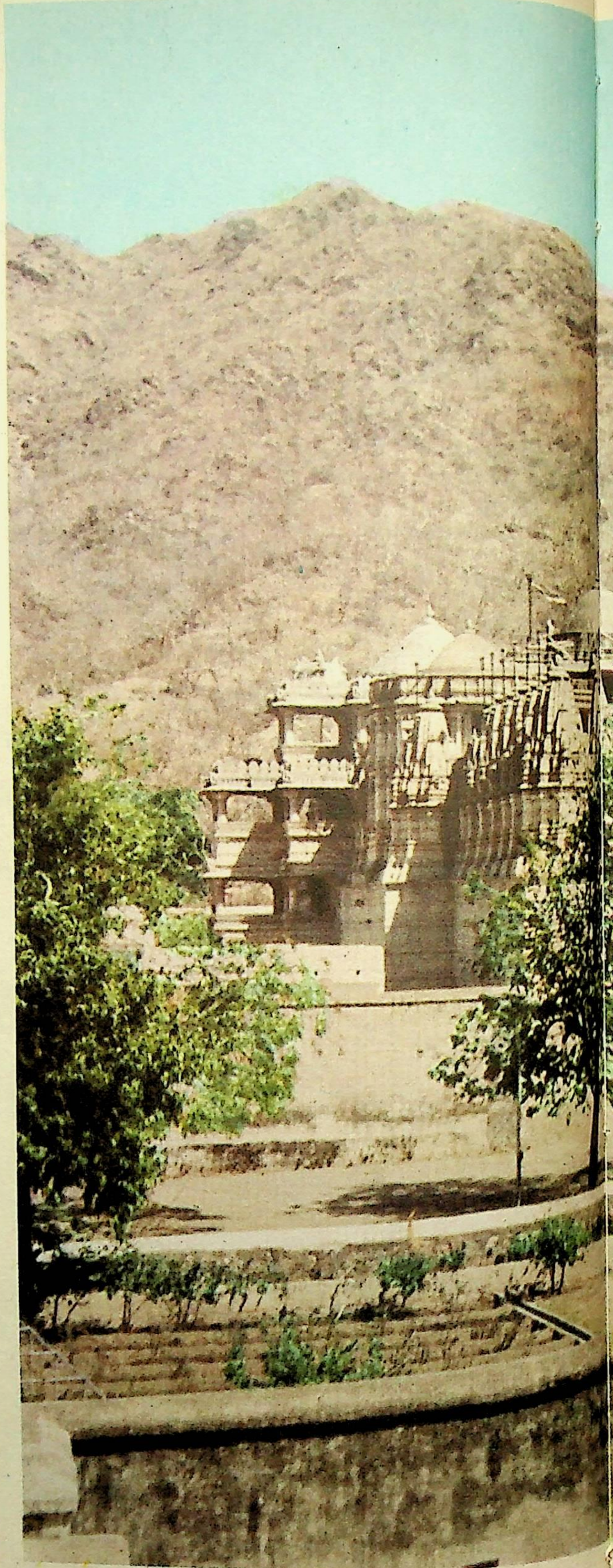
जब धरणाशाह ने विभिन्न शिल्पकारों से अपने विचारों के अनुकूल नक्शे मंगाये, तब अनेकों शिल्पकारों ने अपने-अपने नक्शे पेश किये। उस समय धरणाशाह के दिल की बात समझकर प्रभुभक्त व आत्मसंतोषी कलाकार, मुंडारानिवासी श्री दीपा ने भी अपना नक्शा पेश किया, जो धरणाशाह के दिल में बस गया। फिर तो शीघ्र ही शुभ दिन को, मन्दिर-निर्माण का कार्य प्रारंभ किया गया। कहा जाता है, धरणाशाह की भावना सात मंजिला मन्दिर बनवाने की थी। परन्तु अपनी वृद्धावस्था व आयु का निकट में ही अन्त समझकर तीन मंजिल का कार्य होते ही अपने मार्गदर्शक, युगप्रधान आचार्य श्री सोमसुन्दरसूरीश्वरजी से प्रतिष्ठा के लिए विनती की। आचार्य श्री ने, अपने ५०० साधु-समुदाय के साथ पधारकर वि० सं० १४९६ में अपने सुहस्ते प्रतिष्ठा सम्पन्न करवायी। इस मन्दिर का नाम 'धरण विहार' रखा गया, जिसे त्रैलोक्य-दीपकप्रासाद' व 'त्रिभुवनविहार' भी कहते हैं। 'नलिनी-गुल्मविमान' के नाम से भी यह मन्दिर विख्यात है। किंवदन्ति के अनुसार इस मन्दिर के निर्माण-कार्य में ९९ लाख रुपये लगे थे।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में यहाँ पर इस मुख्य मन्दिर के अतिरिक्त श्री नेमिनाथ भगवान, श्री पार्श्वनाथ भगवान, व सूर्य मन्दिर हैं। ये भी सुन्दर व दर्शनीय हैं। यहाँ से करीब एक कि० मी० की दूरी पर श्री चक्रेश्वरी माता का मन्दिर है।

कला और सौन्दर्य * राणकपुर, प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ कला व भक्ति का संगमस्थान है। इस ढंग का विशिष्ट संगम-स्थान अन्यत्र कम जगह देखने मिलेगा।

यहाँ प्रकृति का सहज सौन्दर्य एवं मानव-निर्मित कला-सौन्दर्य का सुभग समन्वय सध जाता है। अतः यह कैसे सुन्दर एवं अपूर्व योग बनकर मानव के चित्त को आह्लादित करता हुआ, प्रभुभक्ति की ओर उसे कैसे खींच लेता है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण यह तीर्थस्थल है।

मानव जब इस अपूर्व प्राकृतिक दृश्य के साथ स्वर्गलोक के देवविमानतुल्य इस कलात्मक मन्दिर के दर्शन करता है, तब वह अपने आपको भूल जाता है व ऐसा अनुभव करता है, जैसे सचमुच ही वह किसी दिव्यलोक में आ पहुँचा है।



नलिनीगुल्म देवविमान तुल्य "धरण-विहार" मन्दिर का चित्ताकर्षक अपूर्व दृश्य–राणकपुर





भारतीय शिल्पकला का एक श्रेष्ठ व बेमिसाल नमूना यहाँ नजर आता है। भारतीय वास्तु-विद्या कितनी बढ़ी-चढ़ी थी व इस देश के कलाकार कैसे सिद्धहस्त थे, इसका यह तीर्थ प्रत्यक्ष प्रमाण है। यह मन्दिर इतना विशाल और ऊँचा होने पर भी इसमें नजर आती सप्रमाणता, मोती, पन्ने, हीरे, पुखराज और माणक की तरह जगह-जगह बिखरी हुई शिल्प-समृद्धि, विविध प्रकार की कोरणी से सुशोभित अनेकानेक तोरण और उन्नत स्तंभ, आकाश में निनिराली छटा बिखेरते शिखरों की विविधता, कला की यह विपुल समृद्धि मानों मुखरित बनकर यात्रिक को मंत्र-मुग्ध बना देती है।

इस मन्दिर के चार द्वार हैं। मन्दिर के मूल गर्भगृह में भगवान आदिनाथ की बहत्तर इंच (१८० सें० मी०) जितनी विशाल चारों दिशाओं में चार प्रतिमाएँ बिराजमान हैं। दूसरे व तीसरे मंजिल में भी इसी तरह चार चार जिन प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं। इसी लिए इसे चतुर्मुख-जिनप्रासाद भी कहते हैं।

७६ शिखरबन्द छोटी देव कुलिकाएँ, रंगमंडप तथा शिखरों से मंडित चार बड़ी देवकुलिकाएँ और चारों दिशाओं में चार महाधर प्रासाद – इस प्रकार मन्दिर के चारों तरफ कुल चौरासी देवकुलिकाएँ हैं, मानों ये संसारी आत्मा को, जीवों की चौरासी लाख योनियों से व्याप्त भवसागर को पार करके मुक्त होने की प्रेरणा देती हैं।

चार दिशाओं में आगे चार विशाल व उन्नत मेघनाद मंडपों का तो जोड़ मिलना ही मुश्किल है। झीनी-झीनी सजीव कोरणी से सुशोभित लगभग ४० फुट ऊँचे स्तंभ, बीच-बीच मे मोतियों की मालाओं के समान लटकते सुन्दर तोरण, चारों ओर जड़ी हुई देवियों की सजीव पुतलियों और उभरी हुई कोरणी से समृद्ध तोलक से शोभित गुंबज दर्शक को मुग्ध कर देते हैं। शिखरों के गुंबज में और अन्य छतों में भी कला-विज्ञ और भक्तिशील शिल्पियों की मुलायम छेनियों ने कई पुरातन कथाप्रसंगों को जीवंत किया है, कई आकृतियों को मानों वाचा प्रदान की है और कई नये-नये शिल्प खड़े किये हैं। इन सब कलाकृतियों का मर्म हृदयंगम होने पर भावुक जन मानों, स्थल-काल आदि को भूल ही जाता है और इन मूक आकृतियों की भावभंगिमा को समझने में तन्मय हो जाता है।

इस मन्दिर में उत्तर की ओर रायणवृक्ष व उस के नीचे भगवान ऋषभदेव के चरणचिह्न हैं, जो श्री शत्रुंजय महातीर्थ की याद दिलाते हैं। मन्दिर में श्री सम्मेत शिखर, अष्टापद (अपूर्ण), नंदीश्वरद्वीप, शत्रुंजय, व गिरनार की रचना की गई है। इसके अलावा मन्दिर में सहस्रफणा पार्श्वनाथ तथा सहस्रकूट के जो कलापूर्ण शिलापट्ट बने हैं, वे भी निराली ही भावना पैदा करते हैं।

मन्दिर की सबसे अनोखी विशेषता उसकी विभिन्न कलायुक्त विपुल स्तंभावली है। कुल १४४४ स्तंभ बताये जाते हैं, लेकिन गिनना कठिन है। इस मन्दिर को स्तंभों की महानिधि या स्तंभों का नगर कह सकते हैं। जिस ओर दृष्टी डालें उस ओर छोटे, बड़े, मोटे, पतले, विभिन्न कोरणी से उभरे हुए स्तंभ ही स्तंभ नजर आते हैं। शिल्पियों ने स्तंभों की सजावट ऐसे व्यवस्थित ढंग से की है कि मन्दिर के किसी भी कोने में खड़ा भक्त प्रभु के दर्शन कर सकता है।

मन्दिर में कितनेक तलघर बनाये हुए हैं। इन तलघरों में बहुत सी जिनप्रतिमाएँ हैं।

आबू के मन्दिर अपनी कोरणी के लिए विश्व-विख्यात हैं, तो राणकपुर के मन्दिर की कोरणी भी कुछ कम नहीं है। फिर भी जो बात प्रेक्षक का ध्यान विशेष आकर्षित करती है वह है इस मन्दिर की विशालता। जनसमूह में "आबू की कोरणी व राणकपुर की मांडणी" यह कहावत भी प्रसिद्ध है। इस मन्दिर की निर्माण शैली बिलकुल निराली व विश्वविख्यात है। मन्दिर का बाहरी दृश्य जैसे अपनी अलग ही शान रखता है, वैसे इस के अन्दर के कलापूर्ण दृश्य भी अपना अद्भुत नमूना पेश करते हैं।

इस मन्दिर के अतिरिक्त श्री नेमिनाथ भगवान व श्री पार्श्वनाथ भगवान के मन्दिर की शिल्पकला अपना अलग ही स्थान रखती है।

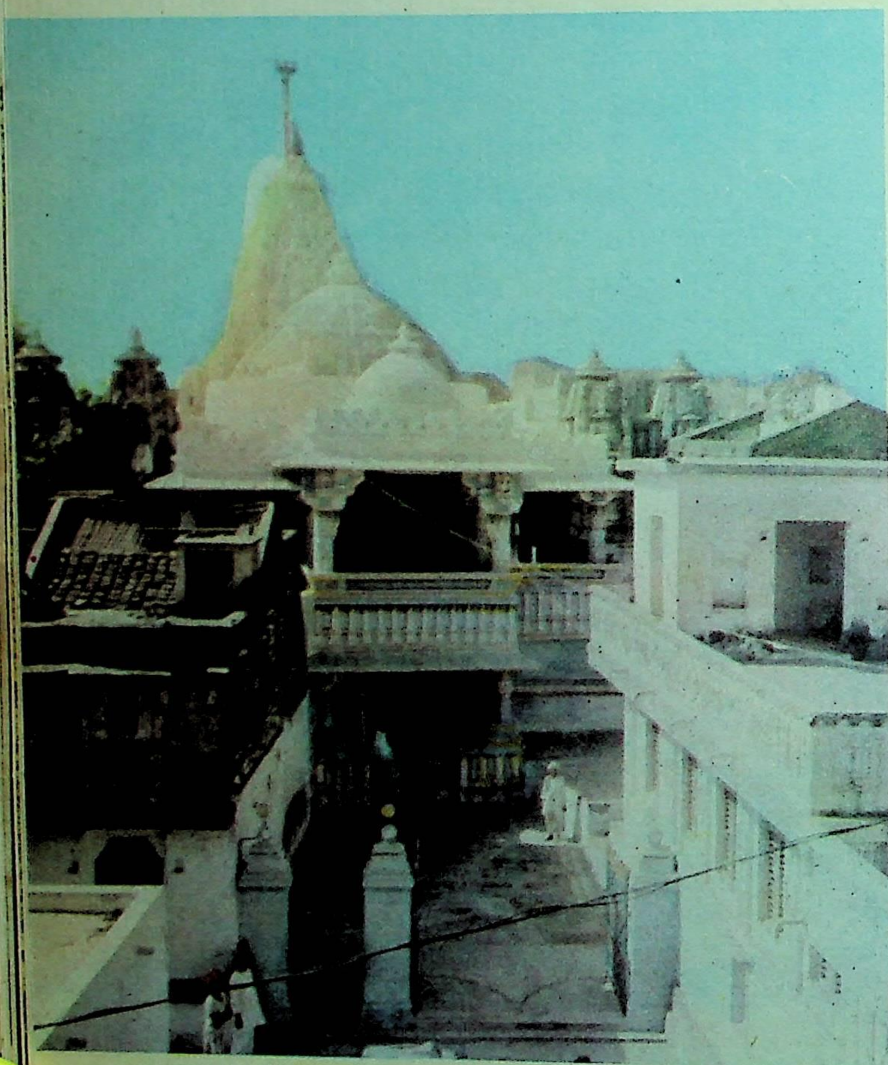
कोई मानव इस ढंग के प्राकृतिक सौन्दर्य से ओत-प्रोत स्वर्गलोक के नलिनीगुल्मविमान जैसा कलात्मक जिन मन्दिर के दर्शन करने का अवसर न चूकें।

मार्ग दर्शन ❋ यहाँ से नजदीक का स्टेशन फालना लगभग ३५ कि० मी० दूर है। बड़ा गाँव सादड़ी ८ कि० मी० है। सिरोही, बाली, पाली, व जालोर–इन सब स्थानों से भी बसें व टैक्सियाँ उपलब्ध है। उदयपुर, आबू, जालोर, व नाकोड़ा से यहाँ के लिए सीधी सरकारी बसें चलती हैं। मन्दिर से बस-स्टैण्ड सिर्फ आधा फर्लांग दूर है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। आखिर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ ❋ ठहरने के लिए मन्दिर के निकट ही एक विशाल धर्मशाला है। एक दूसरी धर्मशाला भी है, जिस में अधिकतर तीर्थ के कर्मचारी रहते हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ सर्व सुविधायुक्त दो गेस्ट हाऊस भी बने हुए हैं। यहाँ पर पानी, बिजली, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा उपलब्ध है।

पेढ़ी ❋ सेठ श्री आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी : डाक घर – राणकपुर : जिला – पाली : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – सादड़ी : टेलीफोन – २१ सादड़ी।

❖ कलात्मक स्तंभावली–राणकपुर



श्री पद्मप्रभ भगवान मन्दिर–नाडोल

श्री नाडोल तीर्थ

तीर्थाधिराज ❋ श्री पद्मप्रभ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग १३५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल ❋ नाडोल गाँव के मध्यस्थ।

प्राचीनता ❋ शास्त्रों में इसका नन्दपुर, नड्डूल, नडूल, नदूल, नर्दुलपुर आदि नामों का वर्णन है। यह तीर्थ अति ही प्राचीन, संप्रति राजा के पूर्व का माना जाता है। वि० सं० ३०० के पूर्व श्री देवसूरिजी के शिष्य आचार्य श्री मानदेवसूरिजी ने यहाँ चातुर्मास करके 'लघुशांति' स्तोत्र की रचना की थी। वि० सं० ७०० में श्री रविप्रभसूरिजी द्वारा श्री नेमिनाथ भगवान के प्रतिमा की प्रतिष्ठा हुए का उल्लेख है। सं० १२२८ के एक भेंट पत्र से प्रतीत होता है, चौहाणवंशीय राजा आलनदेव ने श्री महावीर भगवान का मन्दिर बनवाया था।

श्री शालिभद्रसूरिजी वि० सं० ११८१ में, श्रीदेवसूरिजी के शिष्य श्री पद्मचन्द्रगणिजी वि० सं० १२१५ में, श्री सुमतिसूरिजी वि० सं० १२३७ में व श्री विजयदेवसूरिजी द्वारा वि० सं० १६८६ में यहाँ मन्दिरों की प्रतिष्ठापना करवाने के उल्लेख यहाँ शिलालेखों में पाये जाते हैं। श्री ज्ञानविमल सूरिजी द्वारा वि० सं० १७५५ में रचित तीर्थ माला में भी इस तीर्थ का उल्लेख है। मूल प्रतिमा पर सं० १६८६ का लेख उत्कीर्ण है। अन्य प्रतिमाओं पर सं० १२१५ का लेख है। सदियों से यह स्थल जाहोजलालीपूर्ण रहा। किसी समय यह एक विराट नगरी रही होगी, ऐसा जगह जगह पर उपलब्ध ध्वंसावशेषों से व उल्लेखों से प्रतीत होता है।

विशिष्टता ❋ यहाँ श्री नेमिनाथ भगवान के मन्दिर में एक प्राचीन भोंयरा है। कहा जाता है यह भोंयरा नाडलाई तक जाता है। वि० सं० ३०० के पूर्व आचार्य श्री मानदेवसूरीश्वरजी ने तक्षशिला में फैले महामारी उपद्रव शान्ति के लिए इसी भोंयरे के अन्दर योग साधना कर 'लघुशान्ति' स्तोत्र की रचना की थी। लघुशान्ति स्तोत्र आज भी शान्ति के लिए हर जगह उपयोग में लाया जाता है। उक्त भोंयरे में प्रवेश द्वार पर आचार्य श्री की

मूर्ति विराजित है व अखण्ड ज्योति १७५० वर्षों से प्रज्वलित है। वादिवेताल श्री शान्तिसूरिजी ने श्री मुनिचन्द्र-सूरिजी को यहीं पर न्यायशास्त्र का अभ्यास कराया था। वि० सं० १०४९ में यहाँ के राजा श्री लाखणसी के पुत्र दादराव ने प्रकाण्ड विद्वान आचार्य श्री यशोभद्रसूरिजी से यहीं पर दीक्षा ग्रहण की थी। ग्यारहवीं शताब्दी में इस नगर के राजा ने मंत्री श्री विमलशाह को सोने का सिंहासन भेंट किया था। भन्डारी व कोठारी गोत्र का उत्पत्ति स्थान नाडोल माना जाता है।

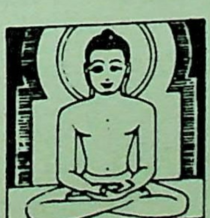
अन्य मन्दिर * इसके अतिरिक्त तीन और मन्दिर हैं, जिनमें श्री नेमिनाथ भगवान का मन्दिर अति प्राचीन माना जाता है। भोंयरा भी इसी में है, जिसमें श्री मानदेवसूरिजी ने 'लघुशान्ति' स्तोत्र की रचना की थी।

कला और सौन्दर्य * इस मन्दिर में व श्री नेमिनाथ भगवान के मन्दिर में प्राचीन कलात्मक प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं। इसी मन्दिर में एक सूर्य भगवान की प्रतिमा व एक ही कसौटी का बना अखण्ड, छोटा, चौमुखा, प्राचीन मन्दिर अति ही सुन्दर व कलात्मक है। भगवान महावीर के प्राचीन मन्दिर के खण्डहरों से तीन विशाल प्रभावशाली जिन प्रति-माएँ प्राप्त हुई थीं, जिनकी प्रतिष्ठा वि० सं० २०१४ में इसी मन्दिर में हुई, जो अति ही दर्शनीय है। गाँव के पास कई प्राचीन अवशेष व बावड़ियाँ नजर आती हैं। अगर शोध की जाय तो काफी प्राचीन इतिहास व कलात्मक अवशेष मिलने की सम्भावना है।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन रानी लगभग १० कि० मी० है, जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा उपलब्ध है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। कार व बस मन्दिर तक जा सकती हैं। गाँव का बस स्टैण्ड मन्दिर से सिर्फ २०० मीटर दूर है।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए मन्दिर के निकट ही धर्म-शाला है, जहाँ बिजली, पानी, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा उपलब्ध है।

पेढ़ी * श्री पद्मप्रभजी जैन श्वेताम्बर देवस्थान पेढ़ी : डाक घर – नाडोल ३०६६०३ : स्टेशन – रानी : जिला – पाली : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – रानी : टेलीफोन – पी० सी० ओ० रानी।





श्री पद्मप्रभ भगवान–नाडोल

सहायक : श्री चम्पालालजी गजराजजी मेहता खेजड़ला (राज०) वाले मद्रास–८.

श्री वरकाणा तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री पार्श्वनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग ३० सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ वरकाणा गाँव के मध्य।

प्राचीनता ✻ शास्त्रों में इसका प्राचीन नाम वरकानकपुर व वरकनकनगर बताया है। प्राचीन काल में यह समृद्ध व विशाल नगरी थी व अनेकों जिन मन्दिर थे, ऐसा उल्लेख मिलता है। महाराणा कुंभा के समय श्रीमालपुर के श्रेष्ठी ने इसका जीर्णोद्धार करवाया था। प्रतिमाजी पर कोई लेख नहीं है। नवचौकी के एक स्तम्भ पर सं० १२११ का लेख उत्कीर्ण है। दरवाजे के बाहर सं० १६८६ का एक शिलालेख है। विजयदेवसूरिजी द्वारा मेवाड़ के राणा श्री जगतसिंहजी से यहाँ का यात्री कर माफ करवाने का उल्लेख है। यह प्रतिमा लगभग वि० सं० ५१५ में प्रतिष्ठित हुई मानी जाती है। यह तीर्थ गोड़वाल पंचतीर्थी का एक तीर्थ माना जाता है। 'सकल तीर्थ स्तोत्र' में इस तीर्थ का उल्लेख है। आचार्य श्री विजयवल्लभसूरिजी के शिष्य आचार्य श्री विजयललितसूरिजी की प्रेरणा से बना हुआ यहाँ का छात्रालय व छात्रावास का कार्य सराहनीय है। प्रतिवर्ष पौष कृष्णा १० को मेला लगता है।



श्री पार्श्वप्रभु जिनालय प्रवेशद्वार –वरकाणा

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में इसके अतिरिक्त अन्य कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य ✻ प्रभु प्रतिमा की कला अपना विशिष्ट स्थान रखती है। शिखरों पर बनी शिल्पकला भी अपनी अनुपम कला का उदाहरण प्रस्तुत करती है।

मार्ग दर्शन ✻ यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन रानी सिर्फ ३ कि० मी० है व फालना लगभग २० कि० मी० है, जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा उपलब्ध है। यहाँ का बस स्टैण्ड सिर्फ १०० मीटर है। पक्की सड़क है। मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं।

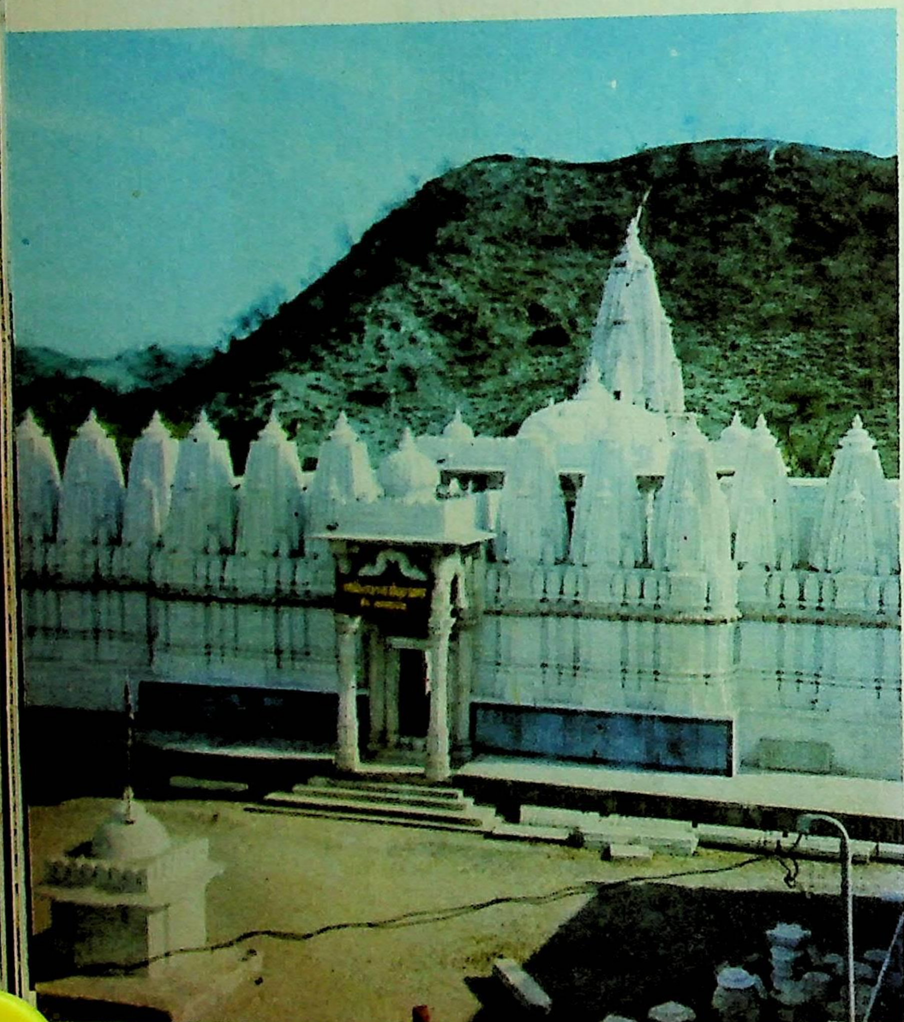
सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए मन्दिर के पास ही धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है।

पेढ़ी ✻ श्री जैन देवस्थान पेढ़ी : डाक घर – वरकाणा : स्टेशन – रानी : जिला – पाली प्रान्त – राजस्थान : तार घर – रानी : टेलीफोन – ३२ रानी।



श्री पार्श्वनाथ भगवान–वरकाणा।

सहायक : शाह रतनचन्द कपूरचन्द, बाबा गाँव (शिवगंज–राज०) वाले, मद्रास–१.



श्री राता महावीर जिनालय–हथुण्डी

श्री हथुण्डी तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, पद्मासनस्थ, रक्त प्रवाल वर्ण, १३५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * बीजापुर गाँव से लगभग ३ कि० मी० दूर, छटायुक्त सुरम्य पहाड़ियों के बीच।

प्राचीनता * शास्त्रों में इसके नाम हस्तिकुण्डी, हाथिउन्डी, हस्तकुण्डिका आदि आते हैं। मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज द्वारा रचित 'श्री पार्श्वनाथ भगवान की परम्परा इतिहास' में महावीर भगवान के इस मन्दिर का निर्माण वि० सं० ३७० में श्री वीरदेव श्रेष्ठी द्वारा होकर आचार्य श्री सिद्धसूरिजी के सुहस्ते प्रतिष्ठित हुए का उल्लेख है। राजा हरिवर्धन के पुत्र विदग्धराजने महान प्रभावक आचार्य श्री यशोभद्रसूरिजी के शिष्य आचार्य श्री बलिभद्रसूरिजी (इन्हें वासुदेवाचार्य व केशवसूरिजी भी कहते थे) से प्रतिबोध पाकर जैन धर्म अंगीकार किया था। वि० सं० ९७३ के लगभग इस मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाकर प्रतिष्ठा करवायी थी। राजा विदग्धराज के वंशज राजा मम्मटराज, धवलराज, बालप्रसाद आदि राजा भी जैन धर्म के अनुयायी थे। उन्होंने भी धर्म प्रचार व प्रसार के लिए काफी योगदान दिया था व मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाकर भेंट-पत्र प्रदान किये थे।

वि० सं० १०५३ में श्री शान्त्याचार्यजी के सुहस्ते यहाँ श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठित होने का उल्लेख आता है। वि० सं० १३३५ में पुनः रातामहावीर भगवान की प्रतिमा यहाँ रहने का उल्लेख है। सं० १३३५ में सेवाड़ी के श्रावकों द्वारा यहाँ श्री राता महावीर भगवान के मन्दिर में ध्वजा चढ़ाने का उल्लेख है। लगभग वि० सं० १३४५ में इसका नाम हथुण्डी पड़ गया था, ऐसा उल्लेख मिलता है। बीचकाल में श्री आदिनाथ प्रभु की प्रतिमा क्यों बदली गयी व वही श्री राता महावीर भगवान की प्रतिमा

क्यों व कब पुनः प्रतिष्ठित की गयी उसका उल्लेख नहीं। यहाँ का पुनः जीर्णोद्धार वि० सं० २००६ में होकर पंजाब-केशरी युगवीर आचार्य श्रीमद् विजयवल्लभसूरीश्वरजी महाराज के सुहस्ते अति उल्लास व विराट महोत्सव के साथ प्रतिष्ठा कार्य सम्पन्न हुआ। प्रतिमा वही प्राचीन चौथी शताब्दी की अभी भी विद्यमान है।

विशिष्टता * भगवान श्री महावीर की प्रतिमा के नीचे सिंह का लांछन है। उसका मुख हाथी का है। हो सकता है इसी कारण इस नगरी का नाम हस्तिकुण्डी पड़ा हो। इस प्रकार का लांछन अन्यत्र किसी भी प्रतिमा पर नहीं पाया जाता, यह इसकी मुख्य विशेषता है। आचार्य श्री कक्कसूरि सप्तम, आचार्य श्री देवगुप्तसूरि सप्तम, आचार्य श्री कक्कसूरि अष्टम, श्री वासुदेवाचार्य, श्री शान्तिभद्राचार्य, श्री शान्त्याचार्य, श्री सूर्याचार्य आदि प्रकाण्ड विद्वान आचार्यों ने यहाँ पदार्पण करके नाना प्रकार के धर्म प्रभावना के कार्य किये हैं, जो उल्लेखनीय हैं।

श्री वासुदेवाचार्य ने हस्तिकुण्डीगच्छ की स्थापना यहीं पर की थी। यहीं पर रहते हुए आचार्यश्री ने आहड़ के राजा श्री अल्लट की महारानी को रेवती दोष बीमारी से मुक्त किया था। किसी समय इस पर्वतमाला पर एक विराट नगरी थी व आठ कुँए एवं नव बावड़ियाँ थीं। लगातार सोलह सौ पणिहारियाँ यहाँ पानी भरा करती थीं, ऐसी कहावत प्रसिद्ध है। झामड़ व रातड़िया, राठौड़, हथुण्डिया गोत्रों का उत्पत्ति स्थान भी यही है, इनके पूर्वज राजा जगमालसिंहजी ने वि० सं० ९८८ में आचार्य श्री सर्वदेवसूरिजी व राजा श्री अनन्त सिंहजी ने वि० सं० १२०८ में आचार्य श्री जयसिंहदेवसूरिजी के उपकारों से प्रभावित होकर जैन धर्म अंगीकार किया था।

प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला १० को विशाल मेला भरता है, इस अवसर पर पहाड़ों में रहनेवाले आदिवासी, भील, गरासिये एवं दूर दूर से हजारों भक्तगण आकर प्रभु भक्ति में तल्लीन हो जाते हैं। यहाँ के रेवती यक्ष अति चमत्कारी हैं, जिनकी प्रतिष्ठा प्रकाण्ड विद्वान आचार्य श्री यशोभद्रसूरिजी के शिष्य श्री वासुदेवाचार्यजी ने करवाई थी।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में यहाँ अन्य कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * यह अति प्राचीन क्षेत्र रहने के कारण अभी भी अनेकों प्राचीन अवशेष इधर-उधर पाये जाते हैं। प्रभु महावीर की प्रतिमा की कला अपना विशिष्ठ स्थान रखती है। प्राचीन राजमहलों के खण्डहर व प्राचीन कुएँ व बावड़ियाँ अभी भी प्राचीन कहावतों की याद दिलाते हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन जवाई-बाँध लगभग २० कि० मी० व फालना २८ कि० मी० दूर है। नजदीक का बडा गाँव बाली लगभग १६ कि० मी० है।



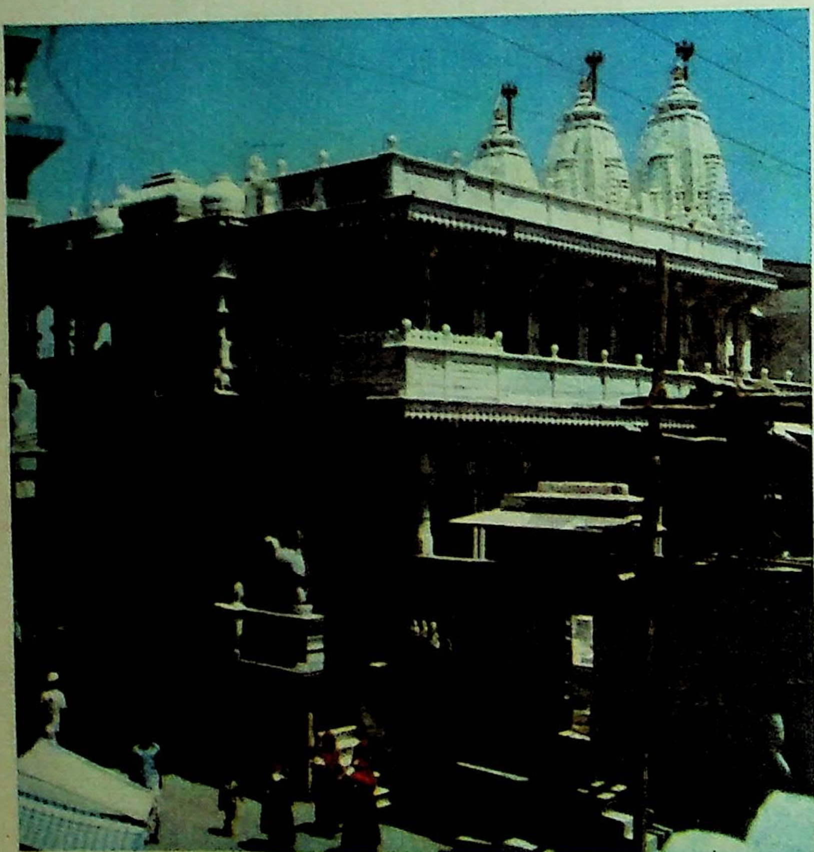
श्री रातामहावीर भगवान–हथुण्डी

लुणावा व सेवाड़ी होकर आना पडता है। इन जगहों से टैक्सी व बस की सुविधा है। यहाँ का बस स्टैण्ड बीजापुर गाँव में है, जो कि लगभग ३ कि० मी० है, जहाँ पर बैलगाड़ी मिलती है। अन्य संवारी का साधन नहीं है। आखिर मन्दिर तक सड़क है, कार व बस जा सकती हैं। राणकपुर तीर्थ यहाँ से लगभग ३२ कि० मी० है।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए मन्दिर के अहाते में ही धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री राता महावीर जैन तीर्थ पेढ़ी : डाक घर – बीजापुर : जिला – पाली : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – लूणावा व सेवाड़ी : टेलीफोन – पी० सी० ओ० लूणावा व सेवाडी।

सहायक : शाह मंगलचन्द तिलोकचन्द दरगाजी, दासपा (राज०) वाले, मदुरै (तमिलनाडु)



श्री मनमोहन पार्श्वप्रभु जिनालय–बालि

श्री बाली तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री मनमोहन पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ७८ से० मी० ।

तीर्थ स्थल * बाली गाँव के मध्य भाग में।

प्राचीनता * यह अति प्राचीन गाँव है। कहा जाता है पहिले यह गाँव चौहान राजाओं के अधिकार में रहा। पश्चात जालोर के सोनागरा सरदारों के आधिपत्य में रहा व तत्पश्चात मेवाड़ के महाराणाओं के अधिकार में आया।

मूलनायक श्री मनमोहन पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा पर सं० ११६१ ज्येष्ठ कृष्णा ६ का लेख उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा बाली से लगभग २ मील दूर बसे सेला गाँव के तालाब में से प्रकट हुई थी। इस प्रतिमा के प्रतिष्ठाता संडेरक-गच्छीय आचार्य श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी होने का अनुमान है।

लगभग ३०० वर्ष पूर्व इस मन्दिर का नव निर्माण करवाकर यह प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई गई। अभी पुन: जीर्णोद्धार का कार्य चालू है।

यहाँ एक और श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर है, जिसकी प्रतिष्ठा आचार्य श्री हीरविजयसूरीश्वरजी के हस्ते हुई थी। कहा जाता है पहिले यहाँ के मूलनायक श्री शान्तिनाथ भगवान थे। एक प्रचलित किंवदन्ति के अनुसार यह मन्दिर लगभग दो हजार वर्ष पूर्व राजा गंधर्वसेन द्वारा निर्माणित करवाया गया था।

विशिष्टता * प्रभु प्रतिमा अति ही चमत्कारिक है। कहा जाता है श्री अधिष्ठायक देव ने श्री गेमाजी श्रावक को स्वप्न में कहा कि बाली से दो मील दूर बसे सेला गाँव के तालाब में पार्श्वप्रभु की प्राचीन चमत्कारिक प्रतिमा है। जिसे यहाँ लाकर स्थापन कर। स्वप्न के आधार पर तालाब में

खोदाई का कार्य करवाया गया व संकेतित स्थान पर यह भव्य प्रतिमा प्रकट हुई। सेला गाँव के श्रावकों की इच्छा थी कि उसी गाँव में प्रतिष्ठा करवाई जाय। आखिर तय हुआ कि प्रभु प्रतिमा को लेजानेवाले बैल जिस तरफ चलें वहीं पर विराजित की जाय। बैल गाड़ी प्रभु प्रतिमा को लेकर बाली तरफ ही रवाना हुई। बाली में भव्य जिनालय का निर्माण करवाकर बड़े ही उल्लासपूर्वक प्रतिष्ठित करवाया गया।

अन्य मन्दिर ※ वर्तमान में इसके अतिरिक्त ३ और मन्दिर हैं।

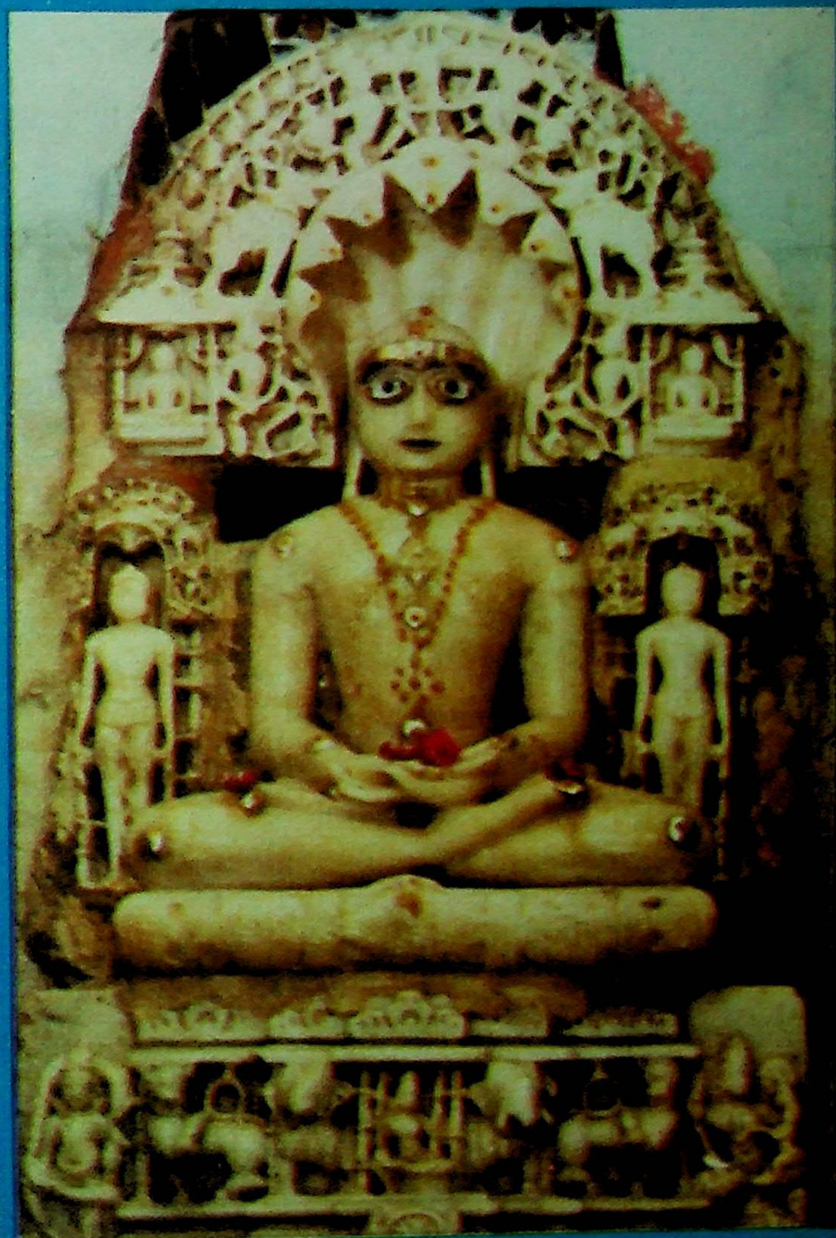
कला और सौन्दर्य ※ प्रभु प्रतिमा अति ही सौम्य व प्रभाव-शाली है। मन्दिर की निर्माण शैली भी निराले ढंग की अति ही सुन्दर है। श्री आदीश्वर भगवान के मन्दिर में राता महावीर भगवान की सुनहरी प्रतिमा अति ही सुन्दर दर्शनीय है।

मार्ग दर्शन ※ यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन फालना लगभग ७ कि० मी० है, जहाँ से बस व टैक्सी का साधन है। यहाँ का बस स्टेशन मन्दिर से करीब एक फर्लांग है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। कार व बस मन्दिर तक जा सकती है।

सुविधाएँ ※ ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ बिजली, पानी, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है।

पेढ़ी ※ श्री मनमोहन पार्श्वनाथ पेढी : डाक घर – बाली . जिला – पाली : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – बाली : टेलीफोन – पी० सी० ओ० बाली।





श्री मनमोहन पार्श्वनाथ भगवान–बालि

सहायक : शाह जेटमल सुकनराज, बाली (राज०) वाले, मद्रास–१.

श्री जाखोड़ा तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री शान्तिनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, प्रवाल वर्ण, लगभग ३५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * जाखोड़ा गाँव के पहाड़ी की ओट में।

प्राचीनता * कहा जाता है इस प्रभु-प्रतिमा की अंजनशलाका आचार्य श्री मानतुंगसूरीश्वरजी के सुहस्ते हुई थी। विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दी में श्री मेघ कवि द्वारा रचित 'तीर्थ-माला' में इस तीर्थ का वर्णन है। प्रतिमाजी के परिकर पर सं० १५०४ का लेख उत्कीर्ण है। लेकिन यह परिकर बाद का प्रतीत होता है।

विशिष्टता * यह तीर्थ प्राचीन होने के साथ-साथ चमत्कारिक क्षेत्र भी है। यहाँ पर जल की बड़ी भारी समस्या थी। इस पथरीली भूमि में पानी मिलने की संभावना ही नहीं थी। एक दिन अधिष्ठायक ने श्री चान्दाजी कोलीवाड़ावालों को मन्दिर के निकट एक जगह पानी रहने का संकेत दिया। तदनुसार खुदवाने पर विपुल मात्रा में मीठा व स्वास्थ्यवर्धक पानी प्राप्त हुआ। जैन-जैनेतर और भी अनेक तरह के चमत्कारों का वर्णन करते हैं।

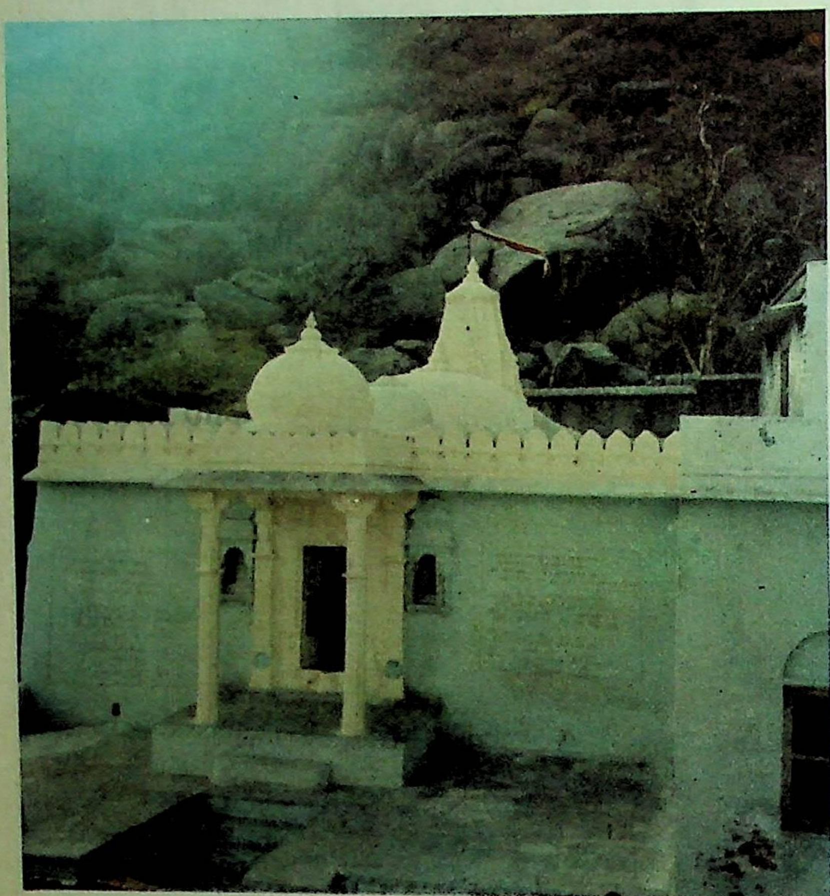
अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त और कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * प्रभु प्रतिमा की कला दर्शनीय है।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन जवाईबाँध लगभग ७.० कि० मी० है। नजदीक के बडे गाँव शिवगंज लगभग ८ कि० मी० व सुमेरपुर ६ कि० मी० हैं। इन स्थानों से बस व टैक्सी की सुविधा उपलब्ध है।

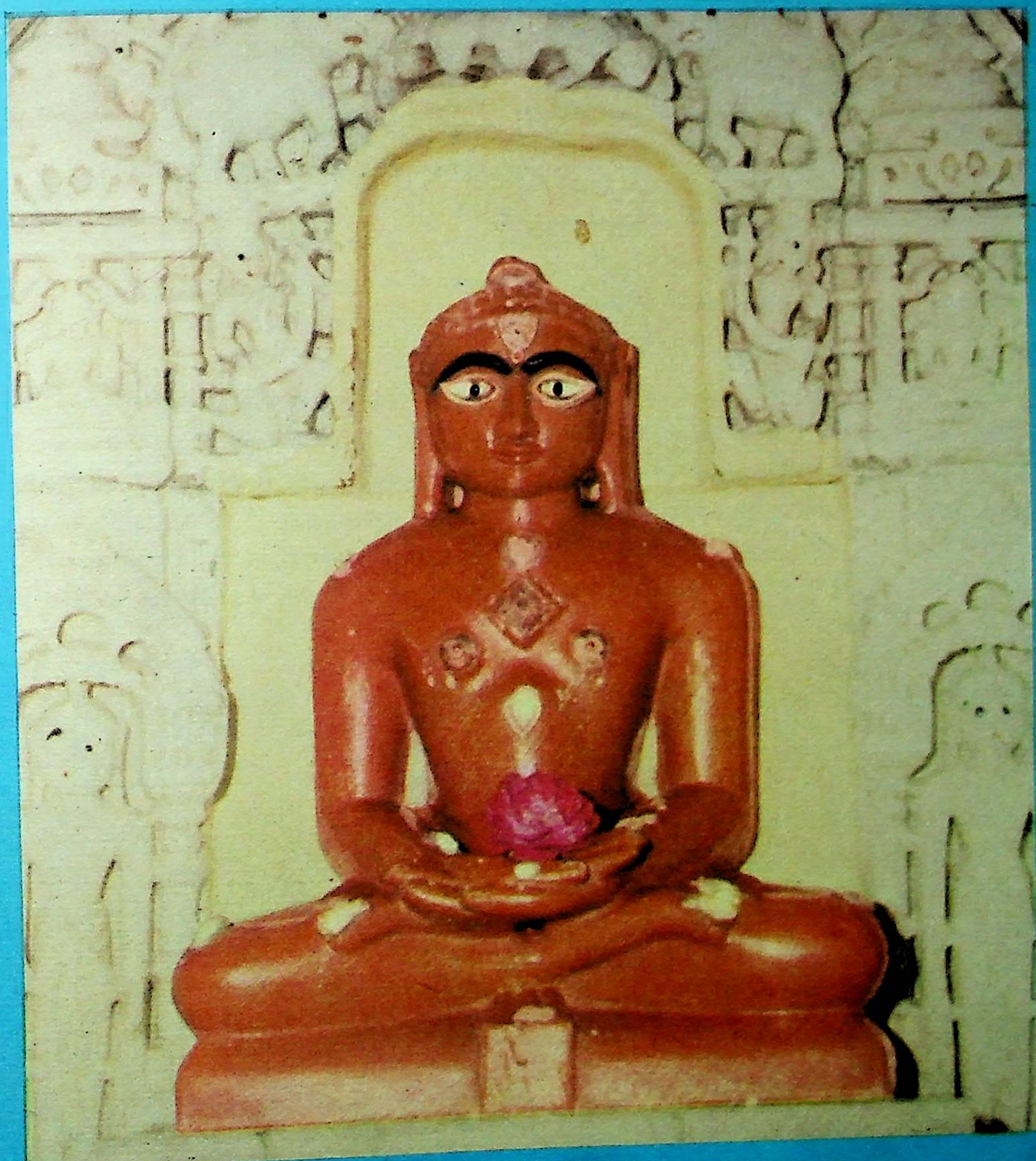
सुविधाएँ * ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पानी, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा उपलब्ध है। यहाँ का बस स्टैण्ड मन्दिर से २०० मीटर दूर है। आखिर तक कार व बस जा सकती हैं।

पेढ़ी * श्री शान्तिनाथ भगवान जैन श्वेताम्बर तीर्थ: डाक घर – सुमेरपुर : गाँव – जाखोड़ा : जिला – पाली : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – सुमेरपुर : टेलीफोन – ५८० सुमेरपुर।

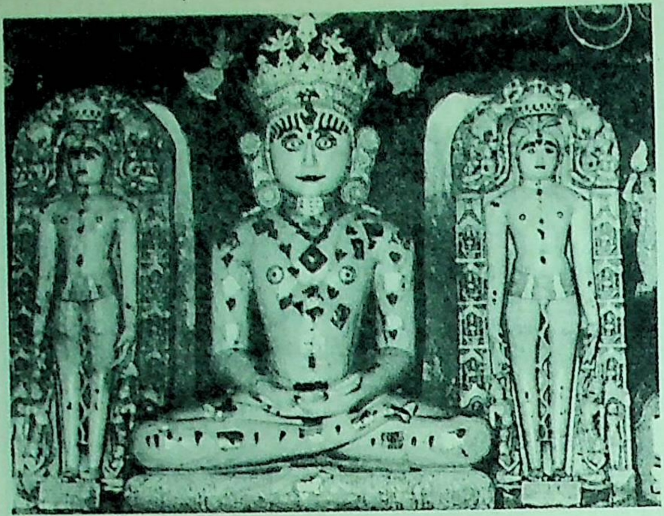


श्री शान्तिनाथ जिनालय–जाखोड़ा

श्री शान्तिनाथ भगवान–जाखोड़ा



सहायक : शाह निहालचन्दजी, सोंकलचन्दजी, खुडाला व सांडेराव (राज०) वाले, कुंभकोणम (तमिलनाडु)



श्री आदिनाथ भगवान - कोरटा

श्री कोरटा तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री महावीर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग १३५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ कोरटा गाँव के बाहर एकान्त जंगल में।

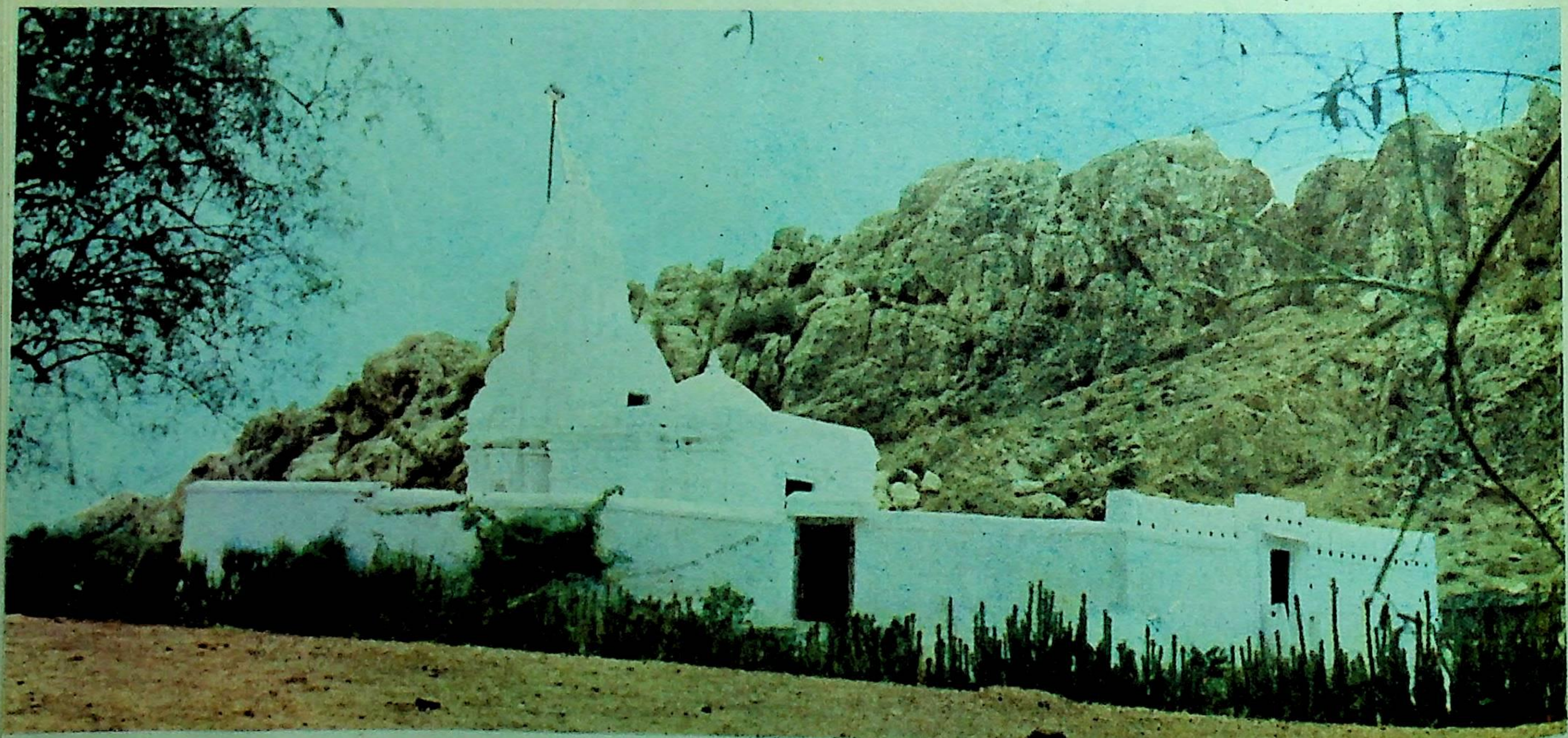
प्राचीनता ✻ इस मन्दिर की प्रतिष्ठापना चरम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान के ७० वर्ष बाद श्री पार्श्वनाथ संतानीय श्री केशी गणधर के प्रशिष्य व श्री स्वयंप्रभसूरिजी के शिष्य उपकेशगच्छीय ओसवंश के संस्थापक श्री रत्नप्रभसूरीश्वरजी के मुहस्ते माघ शुक्ला पचमी गुरुवार के दिन धनलग्न ब्रह्म मुहूर्त में होने का उल्लेख शास्त्रों में मिलता है। राजा भोज की सभा के रत्न पण्डित श्री धनपाल ने वि० सं० १०८१ में रचित 'सत्यपुरीय श्री महावीरोत्साह' में कोरटा तीर्थ का वर्णन किया है। तपागच्छीय श्री सोमसुन्दरसूरिजी के समयवर्ती कवि मेघ द्वारा सं० १४६६ में रचित तीर्थमाला में भी इस तीर्थ का वर्णन है। वि० सं० १७२८ में श्री विजयगणि के उपदेश से इस तीर्थ का उद्धार होने व प्राचीन प्रतिमा के स्थान पर श्री महावीर भगवान की दूसरी प्रतिमा प्रतिष्ठित किये जाने का उल्लेख है। यह प्रतिमा खंडित हो जाने के कारण वि० सं० १९५९ के वैशाख पूर्णिमा के दिन नवीन प्रतिमा की प्रतिष्ठापना श्री विजयराजेन्द्र सूरीश्वरजी के मुहस्ते सम्पन्न हुई थी। प्राचीन प्रतिमा मण्डप में विराजमान है।

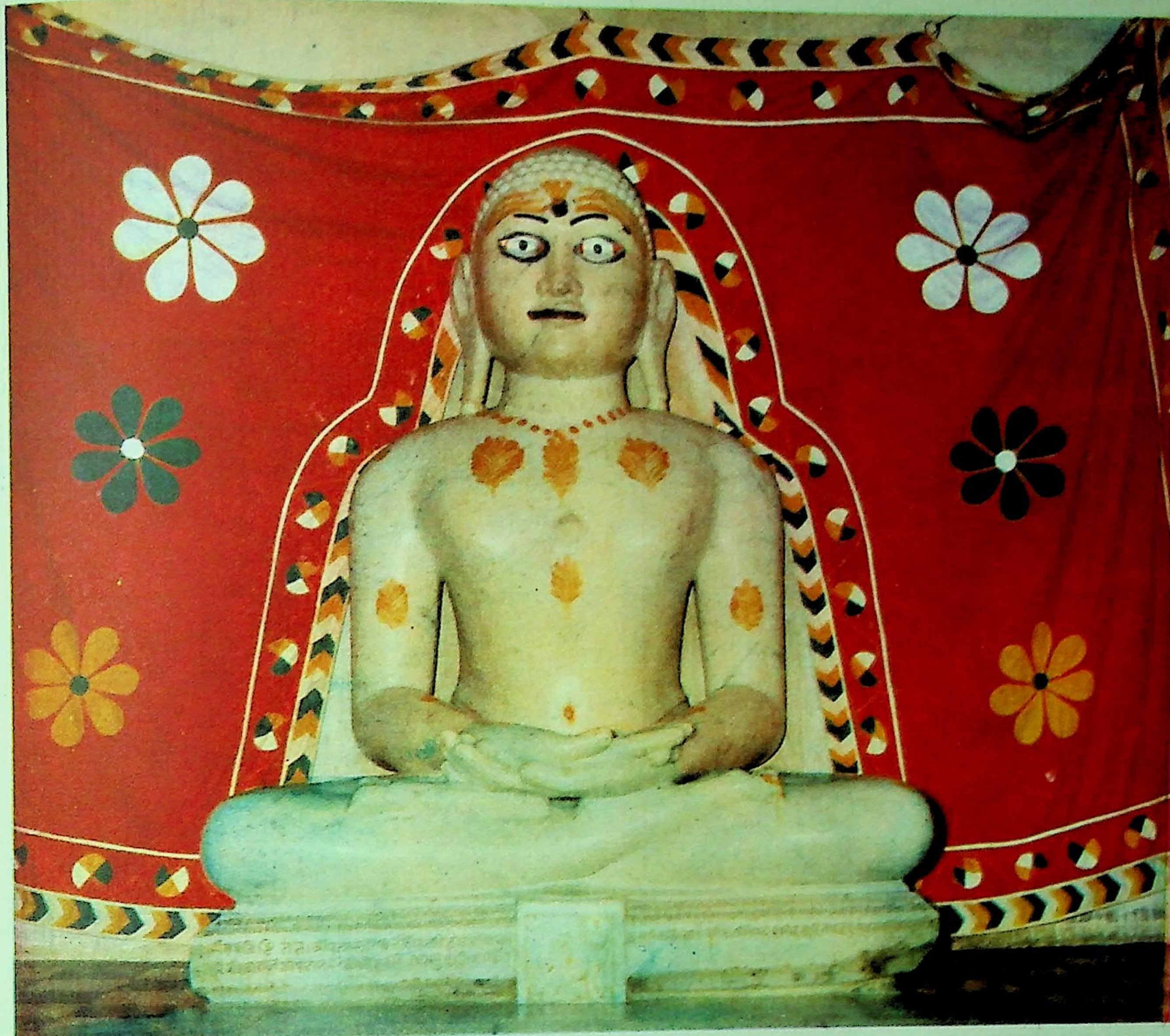
'उपदेश तरंगिणि' ग्रन्थ में वि० स० १२५२ में नाहड़ मन्त्री द्वारा 'नाहड़ वसहि' आदि अनेकों जिनमन्दिर बनवाने का व श्री वृद्धदेव सूरीश्वरजी द्वारा प्रतिष्ठा सम्पन्न होने का उल्लेख मिलता है।

किसी समय कोरटा एक प्रमुख नगर था व यहाँ पर जनसमृद्धि का कोलाहल विस्तृत आकाश को गुंजित करता था।

विशिष्टता ✻ वीर निर्वाण के ७० वर्ष पश्चात् कोरंटकगच्छ की स्थापना यहीं पर हुई थी, जिसके संस्थापक आचार्य श्री रत्नप्रभसूरीश्वरजी के गुरु भाई आचार्य श्री कनकप्रभसूरीश्वरजी माने जाते हैं। ओसवंश के संस्थापक आचार्य

श्री महावीर भगवान मन्दिर–कोरटा





श्री महावीर भगवान–कोरटा

श्री रत्नप्रभसूरीश्वरजी ने अपनी अलौकिक विद्या से दो रूप करके एक ही मुहूर्त में ओसियाँ व कोरटा के मन्दिरों की प्रतिष्ठा करवायी थी। वि० सं० १२५२ में आचार्य श्री वृद्धदेवसूरिजी ने मंत्री श्री नाहड़ व सालिग को प्रतिबोध देकर हजारों अन्य कुटुम्बीजनों के साथ जैनी बनाया था।

अन्य मन्दिर ✻ इसके अतिरिक्त गाँव में एक और श्री आदिनाथ भगवान का प्राचीन मन्दिर है।

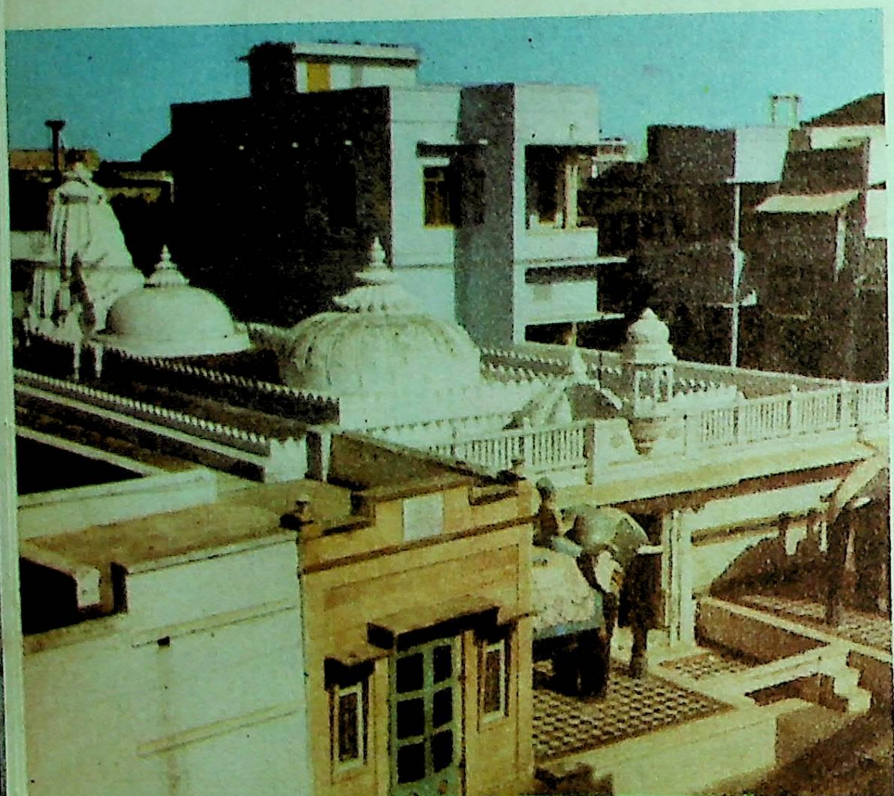
कला और सौन्दर्य ✻ प्राचीन मूलनायक भगवान की प्रतिमा अति ही सुन्दर व कलात्मक है। गाँव में स्थित श्री आदिनाथ भगवान के मन्दिर में कुछ प्राचीन प्रतिमाओं की कला दर्शनीय है। इस मन्दिर के नीचे संग्रहालय है, जिसमें तेरहवीं सदी के प्राचीन तोरण आदि कलात्मक अवशेष दर्शनीय हैं।

मार्ग दर्शन ✻ यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन जवाईबांध लगभग २४ कि० मी० दूर है। नजदीक का बडा शहर शिवगंज लगभग ८ कि० मी० है। इन जगहों से तांगे व टैक्सियों की सुविधा है। मन्दिर तक बस व कार जा सकती हैं।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए गांव में मन्दिर के सामने धर्मशाला है, जहाँ पानी, बर्तन व ओढ़ने-बिछाने के वस्त्रों की सुविधा है।

पेढ़ी ✻ श्री कोरटाजी जैन तीर्थ पेढ़ी : डाक घर – कोरटा, (व्हाया–शिवगंज) : जिला – पाली : प्रान्त – राजस्थान – तार घर – शिवगंज : टेलीफोन – पी० सी० ओ० सुमेरपुर।

सहायक : गांधी मूता वस्तीमल सोगाजी, गुणेशमल रिकबाजी, सायला (आशाना–राज०) वाले, तिरुचिरापल्ली–८. (तमिलनाडु)



श्री शान्तिनाथ जिनालय–खिमेल

श्री खीमेल तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री शान्तिनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग ७५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * खीमेल गाँव के बाहर।

प्राचीनता * यह गाँव विक्रम की बारहवीं सदी पूर्व का माना जाता है। शेठ श्री लालाशाह ओशवाल द्वारा यह मन्दिर निर्मित किये का उल्लेख है। प्रभु-प्रतिमा की अंजनशलाका वि० सं० ११३४ वैशाख शुक्ला १० के शुभ दिन आचार्य श्री हेमसूरीश्वरजी के सुहस्ते सम्पन्न हुए का लेख उत्कीर्ण है।

एक प्रतिमा आचार्य श्री विजयसेनसूरीश्वरजी द्वारा वि० सं० १६५३ वैशाख शुक्ला ११ के दिन प्रतिष्ठित हुए का लेख है।

विशिष्टता * प्रति वर्ष फाल्गुन शुक्ला ३ को ध्वजा चढ़ायी जाती है।

अन्य मन्दिर * इसके अतिरिक्त वर्तमान में ३ और मन्दिर हैं।

कला और सौन्दर्य * प्रभु-प्रतिमा प्राचीन व अति ही सुन्दर है।

मार्ग दर्शन * नजदीक के रेलवे स्टेशन खीमेल एक कि० मी०, राणी ४ कि० मी० व फालना ११ कि०.मी० दूर हैं। राणी व फालना से टैक्सी व बस की सुविधा है। यहाँ का बस स्टैण्ड लगभग २०० मी० है। गाँव में सवारी का कोई साधन नहीं है। राणी व फालना से कच्ची सड़क है, लेकिन कार व बस मन्दिर तक जा सकती हैं।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पानी, बर्तन, बिजली, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व आयम्बलशाला की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री जैन श्वेताम्बर देवस्थान पेढ़ी : डाक घर – खीमेल, व्हाया – राणी : जिला – पाली : तालुका – बाली : तार घर – राणी : टेलीफोन – ५२ खीमेल।

श्री शान्तिनाथ भगवान–खिमेल



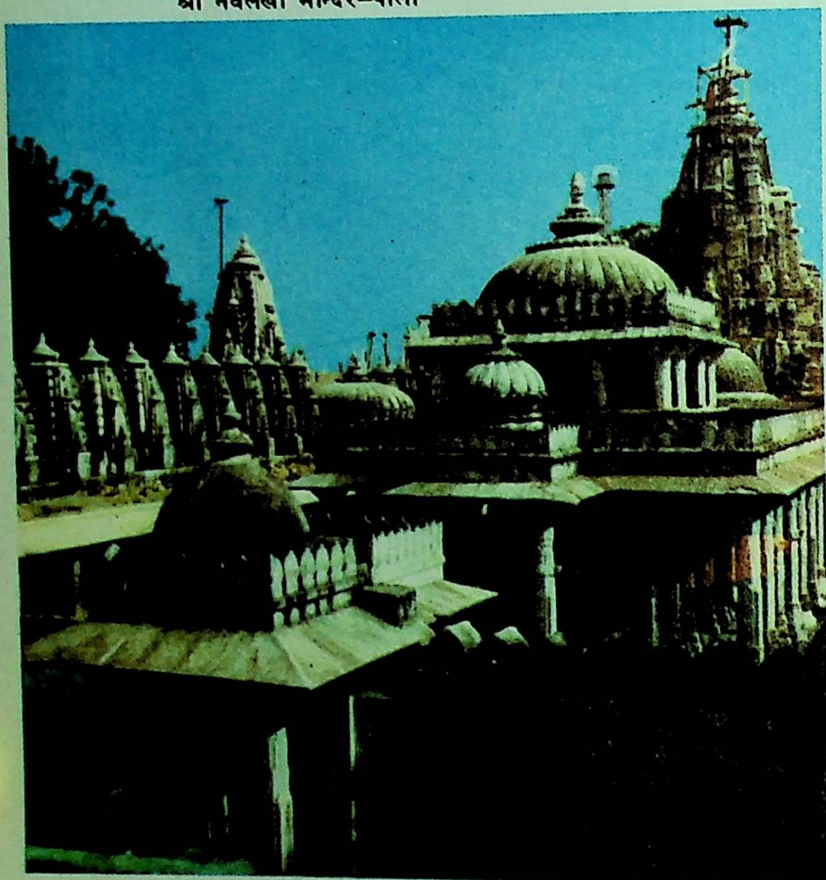
श्री पाली तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री नवलखा पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ।

तीर्थ स्थल ✻ पाली गाँव के मध्यस्थ नवलखा रोड़ में। इसे नवलखा मन्दिर कहते हैं।

प्राचीनता ✻ इसके प्राचीन नाम पल्लिका व पल्ली है। श्री मांडगव तीर्थ के इतिहास से ज्ञात होता है कि वि० सं०

श्री नवलखा मन्दिर–पाली



९६६ में साँडेराव के मन्दिर के जीर्णोद्धार प्रसंगे प्रतिष्ठा महोत्सव पर प्रकांड विद्वान आचार्य श्री यशोभद्र सूरीश्वरजी द्वारा मांत्रिक शक्ति से पाली से घी मँगवाया गया था, जिसका व्यापारी को पता नहीं लग सका। पश्चात साँडेराव के श्रावकगण घी की लागत के रुपयों का भुगतान करने आये। परन्तु भाग्यशाली व्यापारी ने रुपया लेने से इनकार किया व उक्त शुभ काम के लिए अपनी अमूल्य लक्ष्मी का सदुपयोग होने के कारण अति ही प्रसन्नता पूर्वक अपने को कृतार्थ समझने लगा। घी के मूल्य की राशि नव लाख रुपयों से यहीं मन्दिर बनवाने की योजना बनाकर इस मन्दिर का निर्माण किया गया जो नवलखा मन्दिर कहलाने लगा। तत्पश्चात इस मन्दिर का जीर्णोद्धार वि० सं० ११४४ में होने का उल्लेख है। मन्दिर में कई प्रतिमाओं पर सं० ११४४, सं० ११७८ व सं० १२०१ के लेखों में इस मन्दिर में मूलनायक श्री महावीर भगवान रहने का उल्लेख है। वि० सं० १६८६ में हुए पुनः जीर्णोद्धार के समय मूलनायक श्री महावीर स्वामी के स्थान पर श्री पार्श्वनाथ भगवान की यह प्रतिमा प्रतिष्ठित होने का उल्लेख है। प्रतिमाजी पर भी वि० सं० १६८६ का लेख उत्कीर्ण है।

विशिष्टता ✻ पल्लीवाल गच्छ का उत्पत्ति स्थान यही है। इस गाँव के नाम पर ही पल्लीवाल ओशवाल नाम पड़ा। वि० सं० ९६९ में संडेरक गच्छाचार्य श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी को आचार्य पदवी से यहीं पर विभूषित किया गया था। प्रारम्भ से ही यह स्थान जाहोजलालीपूर्ण रहा। यहाँ के श्रावकों ने धर्म प्रभावना के अनेकों कार्य किये जो आज भी उनके धर्मनिष्ठा की याद दिलाते हैं। प्रतिवर्ष वैशाख शुक्ला ३ के दिन ध्वजा चढ़ती है। भाखरी मन्दिर पर कार्तिक पूर्णिमा के दिन मेला भरता है।

अन्य मन्दिर ✻ इस मन्दिर के अतिरिक्त गाँव में १० और मन्दिर व ४ दादावाड़ियाँ हैं। गाँव के बाहर पुनागिरि टेकरी पर श्री पार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर है, जो भाखरी मन्दिर के नाम से विख्यात है।

कला और सौन्दर्य ✻ प्रभु-प्रतिमा की कला अति ही सुन्दर है। इसी मन्दिर में कई प्राचीन सुन्दर आकर्षक प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं।

मार्ग दर्शन ✻ पाली स्टेशन, मन्दिर से लगभग ३ कि० मी० है जहाँ से टैक्सी व ताँगों की सुविधा है। बस-स्टैण्ड लगभग आधा कि० मी० है। गाँव में टैक्सी व ताँगों की सुविधा है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। आखिर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व आयम्बलशाला की सुविधा है। भोजनशाला प्रारम्भ होनेवाली है।

पेढ़ी ✻ श्री नवलचन्द सुव्रतचन्द जैन पेढ़ी। गुजराती कटला : डाक घर – पाली ३०६४०१ : जिला – पाली प्रान्त – राजस्थान : तार घर – पाली : टेलीफोन – मन्दिर व धर्मशाला ६६२६ पेढ़ी ६७४७ पाली।



श्री नवलखा पार्श्वनाथ भगवान–पाली



सहायक : श्री फतेलालजी मोहनलालजी सियाल, पाली (राज०) वाले, उटाकमन्ड (तमिलनाडु)

श्री वेलार तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री आदीश्वर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ७५ सें० मी० ।

तीर्थ स्थल * चामुडेरी गाँव से २.५ कि० मी० वेलार गाँव के बाहर, पहाड़ी की ओट में।

प्राचीनता * मन्दिर में स्तम्भों पर वि० सं० १२६५ के उत्कीर्ण शिलालेखों से प्रतीत होता है कि इसका प्राचीन नाम 'वधि लाट' था। वि० सं० १२६५ में यहाँ के श्रेष्ठी श्री राम व गोस्याक द्वारा इस मन्दिर में रंग-मण्डप बनवाने का लेख उत्कीर्ण है। उस अवसर पर श्री नाणकीय गच्छ के अधीश्वर आचार्य श्री शांतिसूरीश्वरजी यहाँ विराजमान थे। उस समय यहाँ के राजा धाँधल थे।

उक्त लेख से सिद्ध होता है कि यह मन्दिर उससे भी प्राचीन है। वर्तमान मूलनायक प्रतिमा पर १५४५ का लेख उत्कीर्ण है। जीर्णोद्धार के समय यह प्रतिमा प्रतिष्ठित की गयी होगी, ऐसा प्रतीत होता है।

वि० सं० १६१८ में पुनः जीर्णोद्धार होने के प्रमाण मिलते हैं।

विशिष्टता * वि० सं० १२६५ में यहाँ नाणकीय गच्छ की गादी रहने का उल्लेख है। प्रतिवर्ष ज्येष्ठ कृष्णा ६ के दिन ध्वजा चढ़ती है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त अन्य कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * गाँव के बाहर पहाड़ी की ओट में मन्दिर का दृश्य अति ही मनोरम लगता है। प्रभु-प्रतिमा अति ही सुन्दर व प्रभावशाली है।

मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन नाणा ३ कि० मी० है, जहाँ से घोड़ा गाड़ी व जीप मिलती है। यहाँ का बस स्टैण्ड चामुडेरी २.५ कि० मी० है, जहाँ से बैल गाड़ी का साधन है। पिण्डवाड़ा से चामुडेरी तक कार जा सकती है। चामूडेरी से जीप, बस या बैलगाड़ी जाने योग्य मार्ग है।

सुविधाएँ * मन्दिर के पास धर्मशाला है, लेकिन वर्तमान में कोई सुविधा नहीं। नाणा तीर्थ ठहरकर ही आना उपयुक्त है।

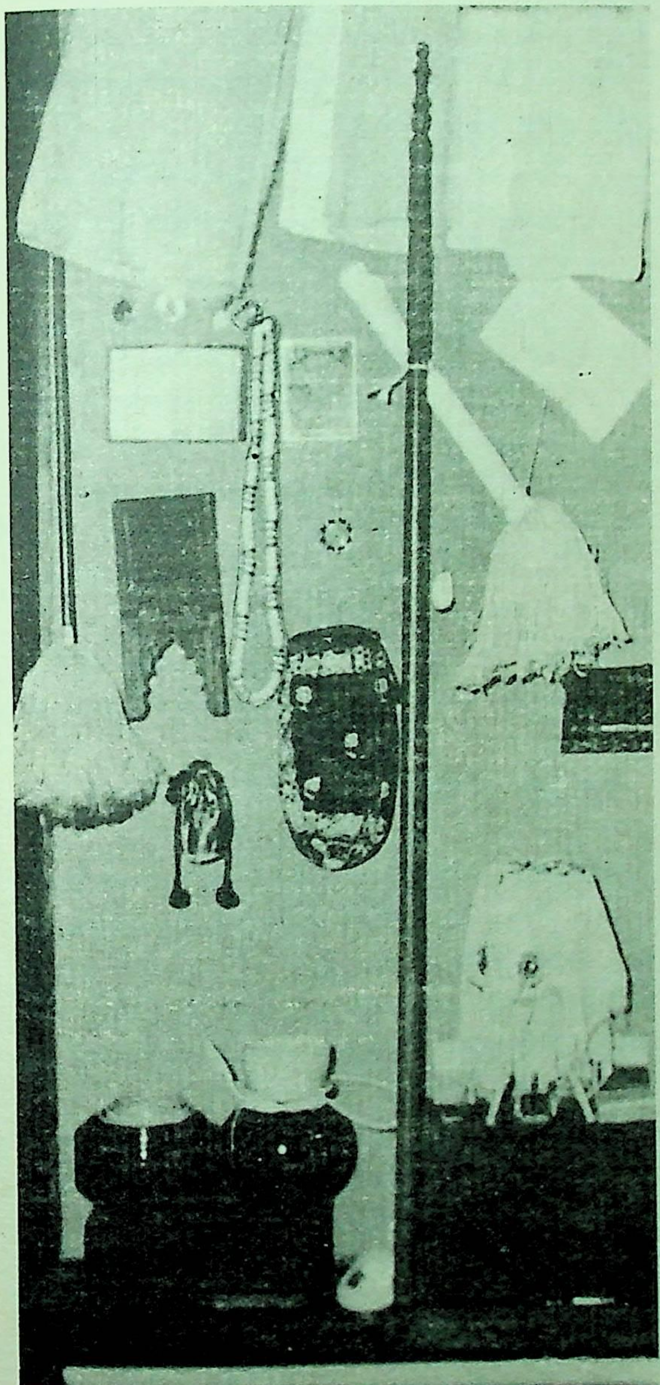
पेढ़ी * श्री आदिनाथ जैन पेढ़ी, वेलार। डाक घर – चामूडेरी : जिला – पाली : तहसिल – वेलार : स्टेशन – नाणा प्रान्त – राजस्थान : तार घर – चामूडेरी : टेलीफोन – पी० सी० ओ० नाणा।



श्री आदिनाथ जिनालय–वेलार

सहायक : १. श्री घेवरचन्दजी गेनचन्दजी बच्छावत, कुनूर (तमिलनाडु) २. श्री घेवरचन्दजी, ऋषभचन्दजी संकलेचा, दिन्डीवनम (तमिलनाडु) ३. श्री घेवरचन्दजी तनसुखदासजी भन्डारी, मद्रास–२ ४. शाह देवराजजी मोहनलालजी जैन तिरुकोयलूर

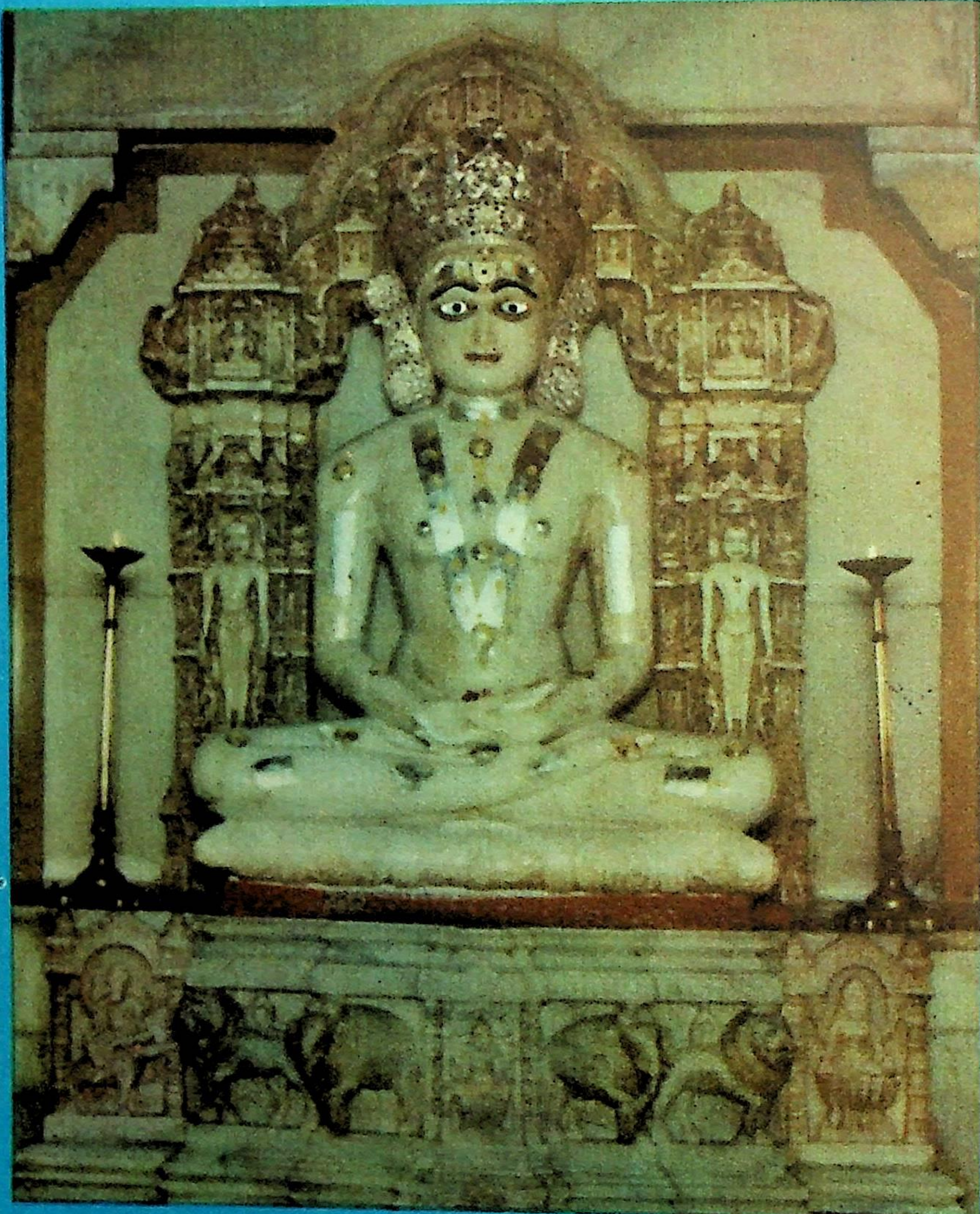
श्वेताम्बर जैन मुनियों के उपकरण

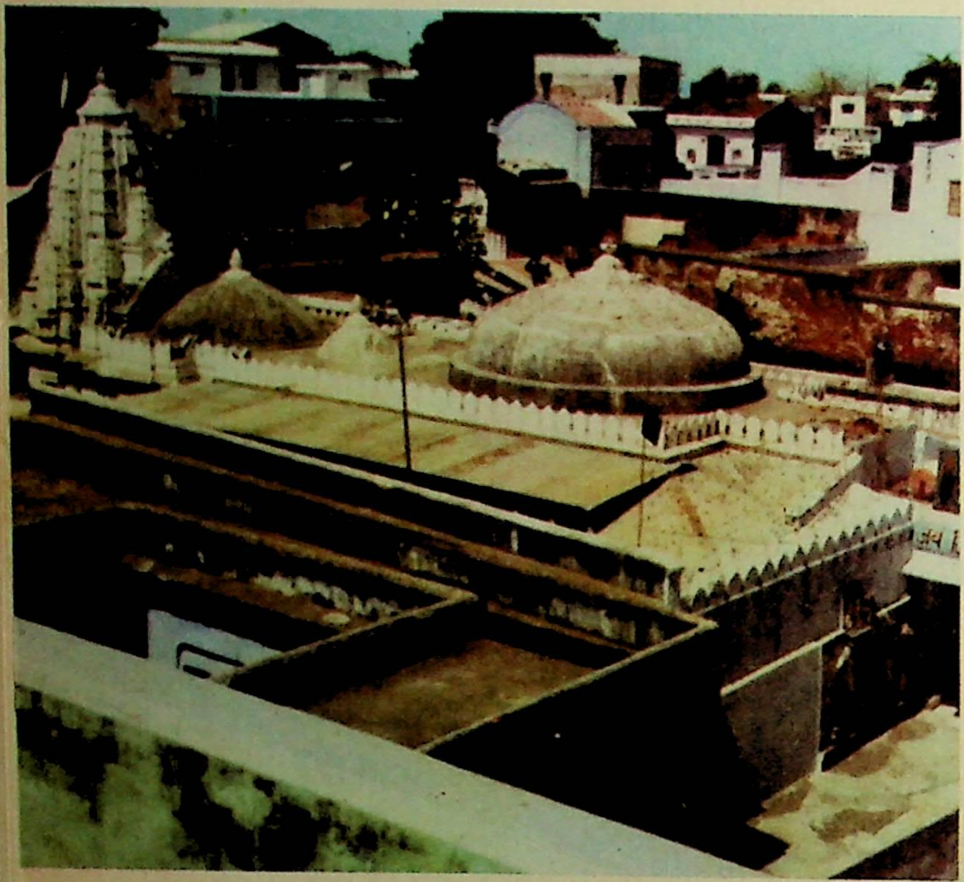


श्री आदीश्वर भगवान–बेलार



श्री शान्तिनाथ भगवान–सेवाड़ी





श्री धर्मनाथ मन्दिर–खुड़ाला

श्री खुड़ाला तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री धर्मनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ६० सें० मी० ।

तीर्थ स्थल * खुड़ाला गाँव के रावला वास में।

प्राचीनता * पोरवाल वंशज श्री रामदेव के पुत्र श्री सुराशाह ने इस भव्य मन्दिर का निर्माण करवाया व उनके भ्राता श्री नलधर द्वारा इस प्रभु-प्रतिमा को वि० सं० १२४३ में प्रतिष्ठित किये जाने का लेख प्रतिमाजी पर उत्कीर्ण है। प्रतिमाजी पर विलेपन किया हुआ है।

वि० सं० १५२३ व सं० १५४३ में अन्य प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हुए का उल्लेख है।

विशिष्टता * प्रतिवर्ष ज्येष्ठ कृष्णा ६ को ध्वजा चढ़ती है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त एक और घर देरासर है।

कला और सौन्दर्य * जीर्णोद्धार के समय मन्दिर में मीनाकारी का काम सुन्दर ढंग से किया हुआ है।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन फालना लगभग ३ कि० मी० है, जहाँ से टैक्सी व ताँगे उपलब्ध हैं। यहाँ का बस स्टैण्ड लगभग एक कि० मी० है। गाँव में सवारी का कोई साधन नहीं है। मन्दिर से लगभग २०० मीटर कच्ची सड़क है। लेकिन कार व बस मन्दिर तक जा सकती हैं।

सुविधाएं * ठहरने के लिए धर्मशाला फालना स्टेशन के पास है, जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र, आयम्बलशाला व भोजनशाला की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री धर्मनाथजी पार्श्वनाथजी देवस्थान जैन पेढ़ी : डाक घर – खुड़ाला : रेलवे स्टेशन – फालना : तालुक – बाली : जिला – पाली : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – फालना : टेलीफोन – पी०सी०ओ०फालना।

श्री धर्मनाथ भगवान–खुड़ाला



श्री सेवाड़ी तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री शान्तिनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण १२७ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * गाँव के मध्य बाजार में।

प्राचीनता * इसका प्राचीन नाम शतवाटिका, शतवापिका, समीपाटी, सीमापाटी व सिव्वाड़ी होने का शिलालेखों में उल्लेख है। वि० सं० ११६७, ११७२ के व अन्य ५ शिलालेख, जो मन्दिर में उत्कीर्ण हैं, ऐतिहासिक महत्व के हैं।

वि० सं० ११७२ के शिलालेख में यहाँ के मूलनायक श्री महावीर भगवान रहने का उल्लेख है। संवत् २०१४ में जीर्णोद्धार के समय श्री शान्तिनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा मूलनायक रूप में प्रतिष्ठित की गई।

इस मन्दिर में सभी प्रतिमाएँ तेरहवीं शताब्दि की प्रतीत होती हैं। किसी पर लेख उत्कीर्ण नहीं है। संडेरकगच्छीय आचार्य श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी की परम्परा के श्री गुणरत्नसूरिजी की प्रतिमा विशेष दर्शनीय है, जिसपर वि० सं० १२४४ माघ शुक्ला प्रतिपदा का लेख उत्कीर्ण है।

विशिष्टता * वि० सं० ११७२ के शिलालेख में चौहान राजा श्री कटुकराज के सेनानायक श्री यशोदेव द्वारा इस जिनालय के एक गोंखले में श्री शान्तिनाथ भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाये जाने का उल्लेख है।

उस समय यह एक समृद्धशाली शहर था। यहाँ एक सौ बावड़ियाँ थीं। आज भी जेतल नाम की अति विशाल व सुन्दर प्राचीन बावड़ी विद्यमान है। युवराज श्री सामन्तसिंह के वि० सं० १२३८ के ताम्रपत्र में (जो सेवाड़ी तीर्थ से सम्बन्धित है) समीपाटी के अनिल विहार में भगवान श्री पार्श्वनाथ के चैत्य का होना अंकित है। इस चैत्य की खोज के सिलसिले में गाँव से १.५ कि० मी० दूर अटेरगढ़ दुर्ग के कुछ भग्नावशेष प्राप्त हुए हैं, जिससे वहाँ जैन मन्दिर होने की सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता। राजस्थान के पुरातत्व-विभाग का ध्यान इस स्थल की खुदाई के लिए आकर्षित करके खुदाई करवाने पर ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध हो सकती है।

प्रतिवर्ष फाल्गुन शुक्ला तीज को ध्वजाएँ चढ़ाई जाती हैं।

अन्य मन्दिर * मूल गंभारे के द्वार पर १६ विद्यादेवियों की मूर्तियाँ, यक्ष कुबेर की मूर्तियाँ दर्शनीय हैं। गंभारे में गज लक्ष्मी की मूर्ति अपने आप में अनूठी है।

इस मन्दिर के विशाल एवं उत्तुंग शिखर की निर्माण कला अद्वितीय है।

इस बावन जिनालय मन्दिर में सारी प्रतिमाएँ प्राचीन व अत्यन्त कलापूर्ण हैं। किसी प्रतिमा पर लेख नहीं है। ऐसी प्रतिमाओं के दर्शन अन्यत्र दुर्लभ हैं। इसी मन्दिर में श्री सरस्वती देवी की प्रतिमा भी कलापूर्ण व अति आकर्षक है।

कला और सौन्दर्य * संवत् १९८२ में प्रतिष्ठित वासुपूज्य वाटिका नामक एक और मन्दिर है।

मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन फालना १६ कि० मी० है, जहाँ से टैक्सी व बस की सुविधा उपलब्ध है। बाली से ११ कि० मी० है, बोया–पातावा होकर आना पड़ता है। बाली से सड़क कच्ची है, लेकिन कार व बस मन्दिर तक जा सकती हैं। बस स्टैण्ड करीब २०० मीटर है।

सुविधाएं * ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व आयम्बिलशाला की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री जैन श्वेताम्बर देवस्थान पेढ़ी : डाक घर – सेवाड़ी ३०६७०७। तहसील – बाली : जिला – पाली : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – सेवाड़ी : टेलीफोन – ३ सेवाड़ी।



श्री शान्तिनाथ जिनालय–सेवाड़ी



श्री कोलरगढ़ तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री आदिनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ७५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ सिरोही से लगभग १२.० कि० मी० दूर पहाड़ियों के बीच।

प्राचीनता ✻ यहाँ की प्राचीनता का प्रमाणिक इतिहास मिलना तो कठिन है, लेकिन प्रतिमा की कलात्मकता व इस स्थल का अवलोकन करने से यह तीर्थ अति प्राचीन प्रतीत होता है। यह भव्य, अति ही सुन्दर प्रतिमा श्री संप्रतिराजा के समय भराई मानी जाती है। मन्दिर में सं० १७२१ का लेख उत्कीर्ण है। उस समय मन्दिर का जीर्णोद्धार होने का अनुमान है। सं० १८५८ में श्रेष्ठी श्री जवानमलजी द्वारा पुनः जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख है। अभी भी पुनः जीर्णोद्धार का कार्य चालू है।

विशिष्टता ✻ इस तीर्थ की प्राचीनता के साथ-साथ यहाँ का विशिष्ट, अनूठा, प्राकृतिक वातावरण व प्रभु प्रतिमा की कलात्मकता यहाँ की मुख्यतः विशेषता है। तीर्थ का अवलोकन करने से प्रतीत होता है कि किसी समय यह एक समृद्धशाली महान् तीर्थ स्थल रहा होगा। परन्तु विस्तृत इतिहास का पता नहीं लग रहा है।

इस तीर्थ में पहुँचते ही राता महावीर, मीरपुर, दियाणा, मूछाला महावीर आदि तीर्थों का स्मरण हो आता है। स्वाध्याय के लिये अति उत्तम व अनुपम स्थल है। ऐसे प्राकृतिक दृश्यों से ओतप्रोत इस प्राचीन तीर्थ की यात्रा करने का अवसर न चूकें। प्रतिवर्ष चैत्री पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा व प्रभु के जन्म कल्याणक दिवस चैत्र कृष्णा अष्टमी को मेलों का आयोजन होता है। इन शुभ प्रसंगों पर विभिन्न स्थानों से भक्तगण भाग लेकर प्रभु भक्ति में लीन हो जाते हैं।

इस भव्य मन्दिर की ध्वजा का आरोपण प्रतिवर्ष असाढ़ कृष्णा त्रयोदशी के शुभ दिन होता है।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में इसके अतिरिक्त यहाँ कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य ✻ पहाड़ियों के बीच मन्दिर का दृश्य सुहावना लगता है। प्रभु प्रतिमा सुन्दर व आकर्षक है।

मार्ग दर्शन ✻ नजदीक का रेलवे स्टेशन सिरोही रोड़ ३२ कि० मी० है, जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा है। यह स्थल सिरोही-शिवगंज मार्ग में सिरोही से लगभग १२.० कि० मी० है। सिरोही से बस व टैक्सी की सुविधा है। मन्दिर से कोलरगढ़ बस स्टैण्ड एक कि० मी० है, जहाँ से सवारी का साधन नहीं है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। आखिर तक कार व बस जा सकती हैं।

श्री आदिनाथ भगवान मन्दिर—कोलरगढ़



सुविधाएं * ठहरने के लिये मन्दिर के निकट ही धर्मशाला है। जहाँ पानी, वर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री आदिनाथ जैन श्वे० तीर्थ पेढ़ी, कोलरगढ़। डाक घर – पालडी : तहसील – शिवगंज : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – सिरोही : टेलीफोन – पी० सी० ओ० सिरोही।



श्री आदिनाथ भगवान–कोलरगढ़



श्री सेसली तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री दादा पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ७५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ पुनड़िया गाँव से लगभग ८०० मीटर, मीठड़ी नदी के किनारे बसे सेसली गाँव के मध्य।

प्राचीनता ✻ यह मन्दिर संघवी श्री माण्डण द्वारा निर्मित होकर वि० सं० ११८७ आषाढ़ शुक्ला ७ शनिवार के शुभ दिन भट्टारक आचार्य श्री आनन्दसूरीश्वरजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा सम्पन्न होने का उल्लेख है। अभी भी इन्हीं के वंशजों द्वारा ध्वजा चढ़ायी जाती है।

विशिष्टता ✻ प्राचीन काल में यहाँ भारी जाहोजलाली रही होगी, ऐसा प्रतीत होता है। प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा व भाद्रपद शुक्ला १० को मेले लगते हैं।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में यहाँ इस के अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

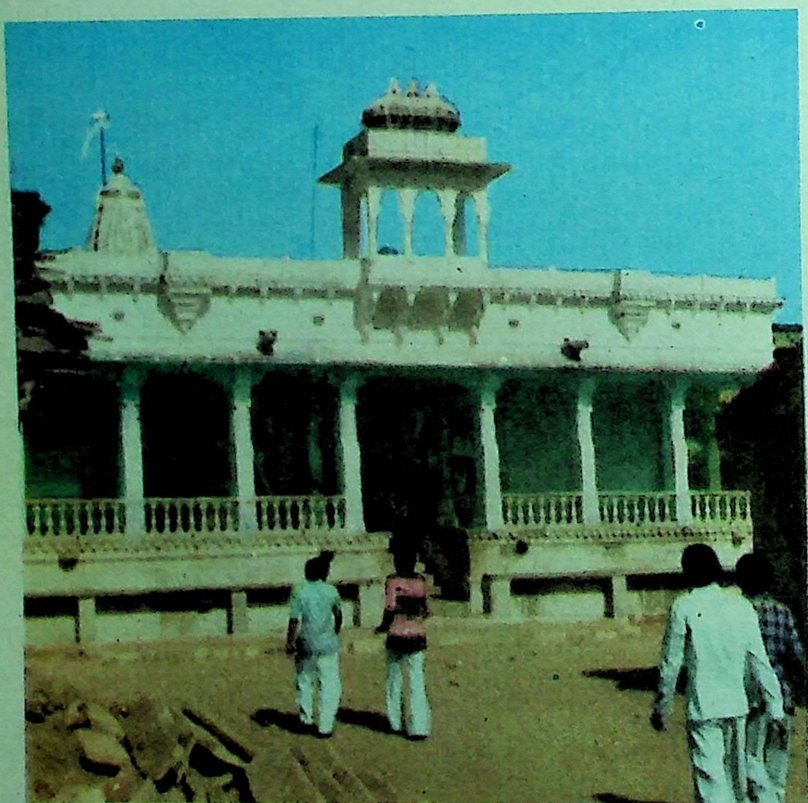
कला और सौन्दर्य ✻ प्रभु प्रतिमा की कला अति ही मनमोहक व प्रभावशाली है।

मार्ग दर्शन ✻ नजदीक का रेलवे स्टेशन फालना १० कि० मी० है, जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा है। बाली यहाँ से ३ कि० मी० है व कच्ची सड़क है। लेकिन बस व कार मन्दिर तक जा सकती है। नजदीक का बस स्टैण्ड पुनड़िया जो ४०० मीटर दूर है, जहाँ से सवारी का कोई साधन नहीं है।

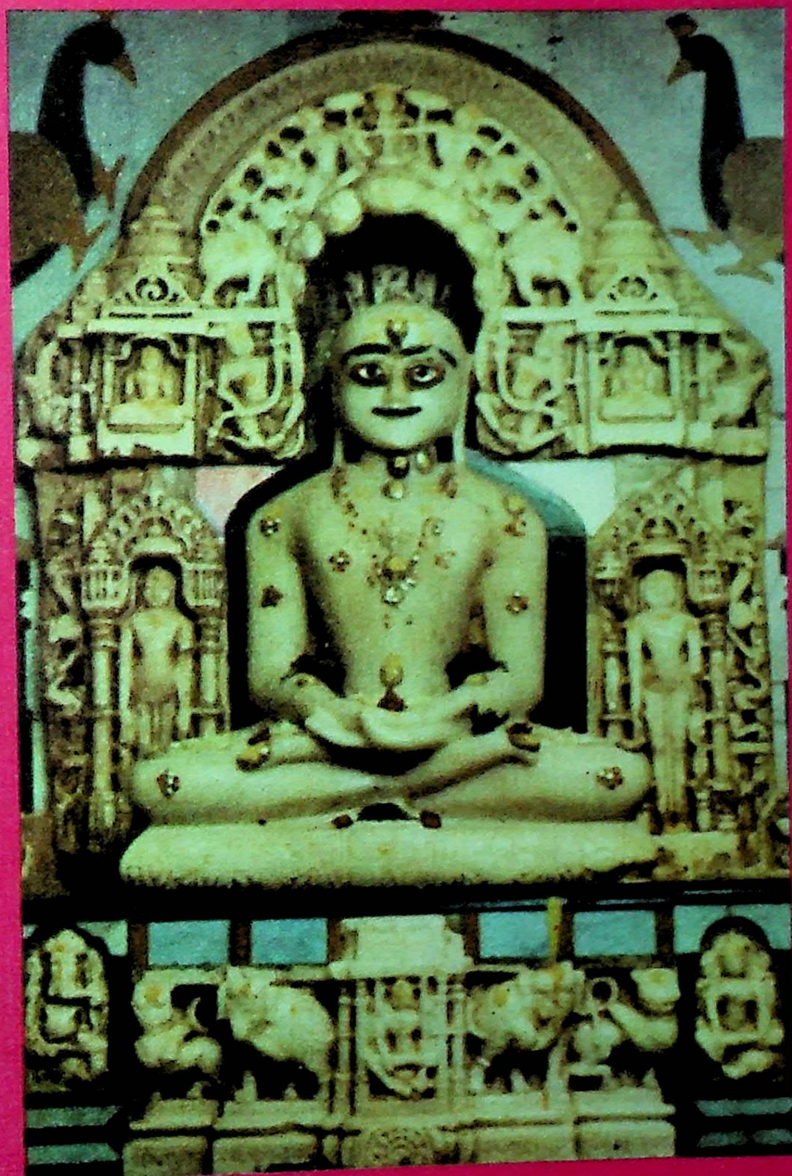
सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली की सुविधा है।

पेढ़ी ✻ श्री दादा पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी : डाक घर – सेसली : जिला – पाली : तहसील – बाली : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – बाली : टेलीफोन – पी० सी० ओ० बाली।

श्री दादा पार्श्वनाथ मन्दिर–सेसली



श्री दादा पार्श्वनाथ भगवान–सेसली




श्री महावीर भगवान जिनालय–राडबर

श्री राडबर तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ।

तीर्थ स्थल * राडबर गाँव के बाहर एकान्त, पहाड़ी की तलेटी में।

प्राचीनता * यह तीर्थ लगभग १४०० वर्ष प्राचीन माना जाता है।

विशिष्टता * प्रति वर्ष आसाढ़ शुक्ला ९ को ध्वजा चढ़ती है।

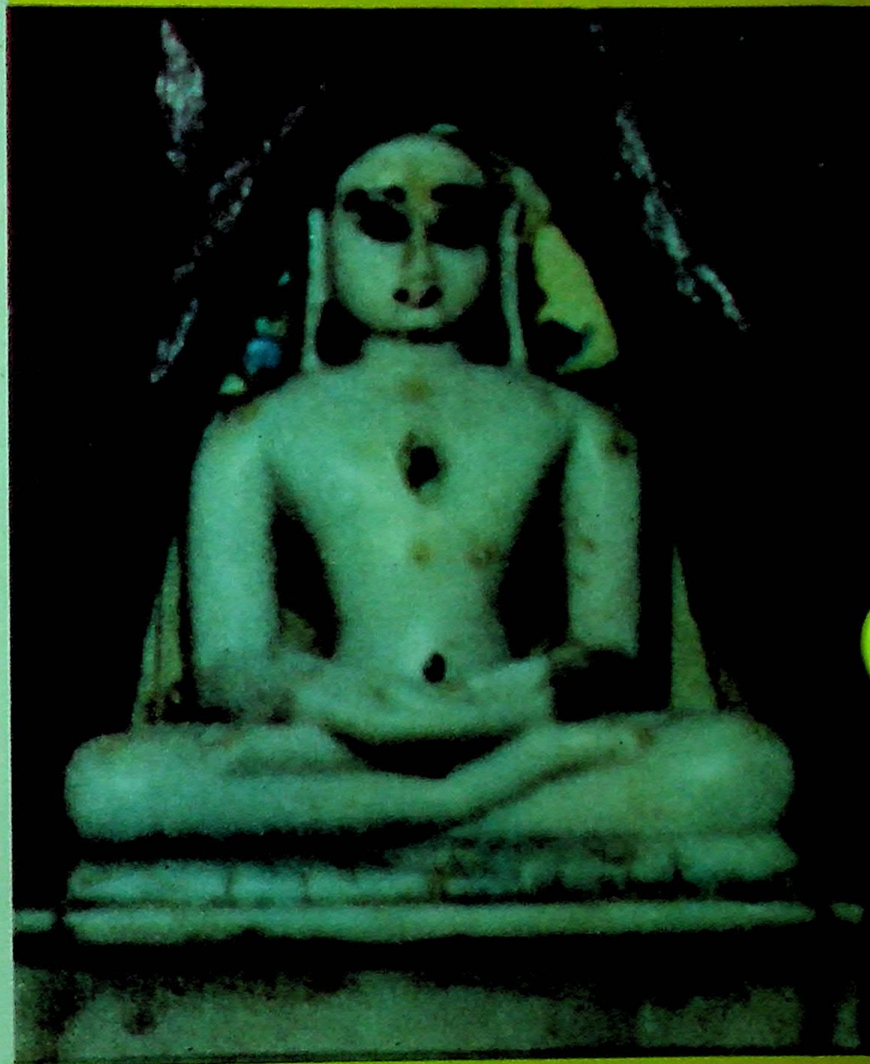
अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * पहाड़ी की ओट में मन्दिर का दृश्य अति सुन्दर लगता है।

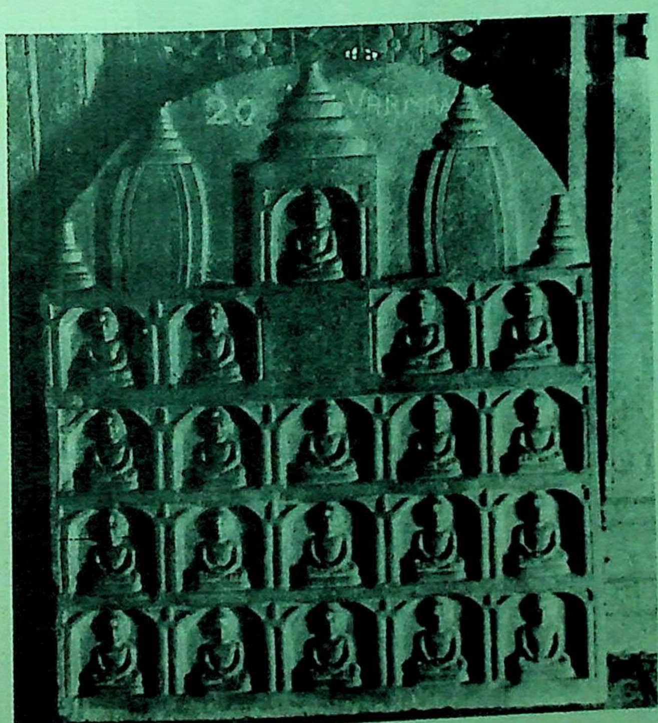
मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन जवाईबाँध ३२ कि० मी० दूर है, जहाँ पर टैक्सी का साधन है। नजदीक का बड़ा गाँव पोसालिया ६.५ कि० मी० है। बस पोसालिया तक ही जाती है। पोसालिया से सवारी का कोई साधन नहीं है। बस व कार पंचदेवल तक जा सकती हैं, जो कि लगभग १.५ कि० मी० है, जहाँ से पैदल जाना पड़ता है।

सुविधाएँ * ठहरने आदि के लिए वर्तमान में कोई सुविधा नहीं है।

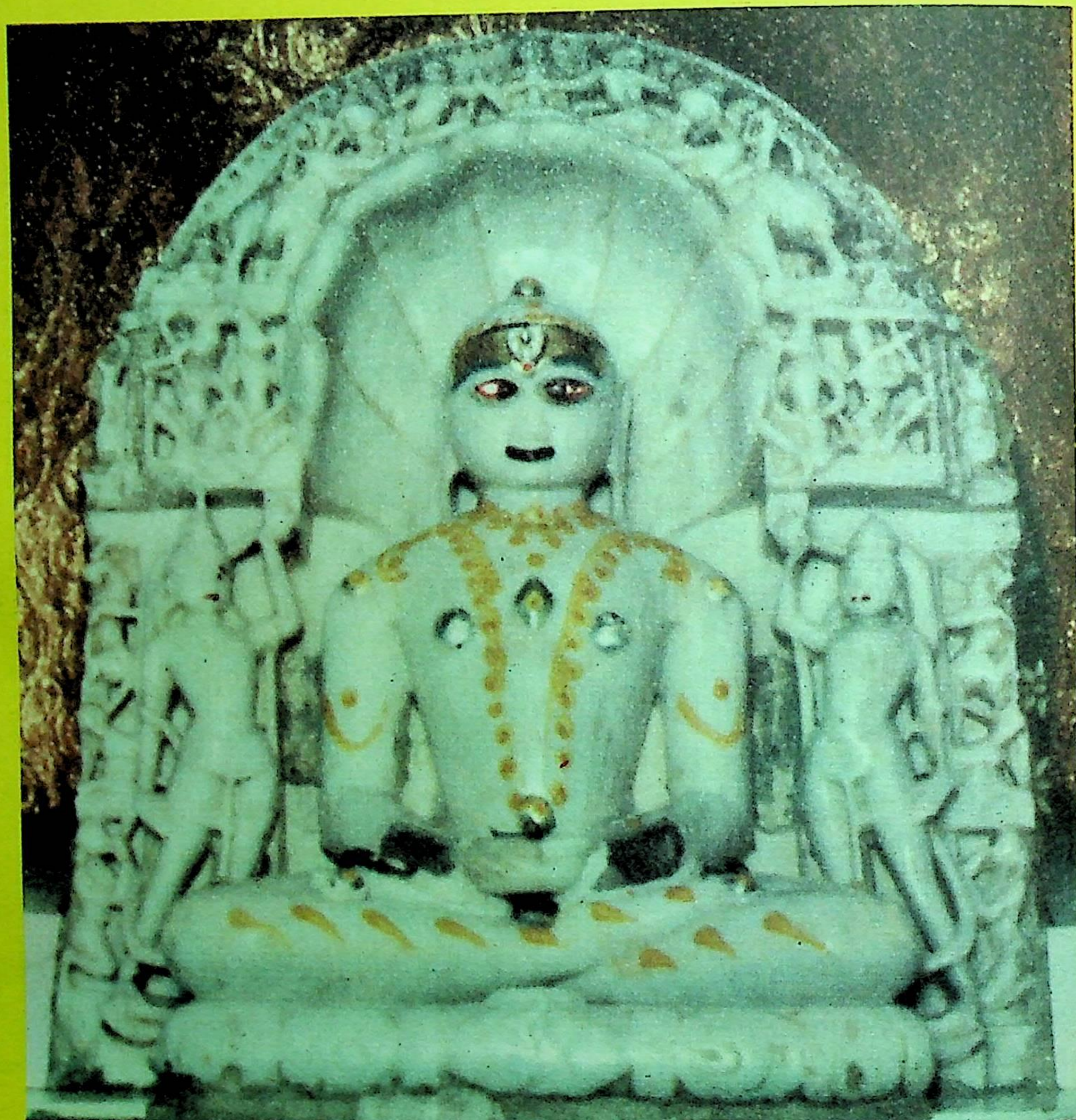
पेढ़ी * श्री राडबर जैन तीर्थ : डाक घर – राडबर : जिला – सिरोही : तहसील – शिवगंज : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – पोसालिया : टेलीफोन – पी० सी० ओ० पोसालिया।



श्री महावीर भगवान–राडबर



← बीस विहरमान



श्री पार्श्वनाथ भगवान–उथमण

श्री उथमण तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ५५ सें० मी० ।

तीर्थ स्थल ✻ उथमण गाँव के बाहर पहाड़ी की तलेटी में ।

प्राचीनता ✻ मन्दिर में उपलब्ध शिलालेखों से यह मन्दिर बारहवीं सदी पूर्वका सिद्ध होता है। मन्दिर के रंग मण्डप की दिवाल पर वि० सं० १२५१ आषाढ कृष्णा पंचमी को मण्डप बनाने का लेख उत्कीर्ण है।

वि० सं० १२४३ माघ शुक्ला १० बुधवार का लेख है, जिसमें इस मन्दिर में श्री धनेश्वर श्रावक व कुटुम्बीजनों द्वारा कुआँ बनवाने का उल्लेख है।

कुछ वर्षों पूर्व यहाँ जीर्णोद्धार होने का उल्लेख है।

विशिष्टता ✻ प्रति वर्ष भाद्रपद कृष्णा १० को ध्वजा चढ़ाई जाती है।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में इसके अतिरिक्त यहाँ कोई मन्दिर नहीं है।

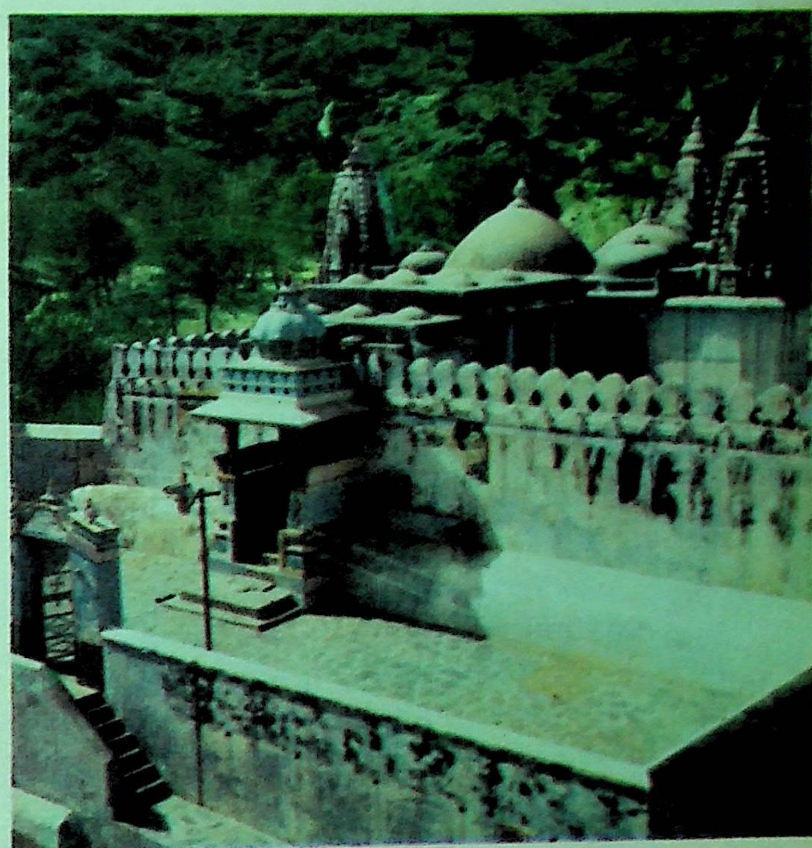
कला और सौन्दर्य ✻ प्रभु प्रतिमा की प्राचीन कला अति ही विचित्र व अपने आप में अनूठी है। मूलनायक भगवान की गादी के नीचे का विलक्षण शिल्प देखने योग्य है।

मार्ग दर्शन ✻ नजदीक का रेलवे स्टेशन जवाईबाँध २० कि० मी० है, जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा है। नजदीक के बड़े गाँव सिरोही २२ कि० मी० व शिवगंज १० कि० मी० हैं। इन स्थानों से भी बस व टैक्सी की सुविधा है। बस स्टैण्ड मन्दिर से लगभग १.५ कि० मी० मैन रोड़ पर है। वहाँ से सवारी का साधन नहीं है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। कार व बस मन्दिर तक जा सकती हैं।

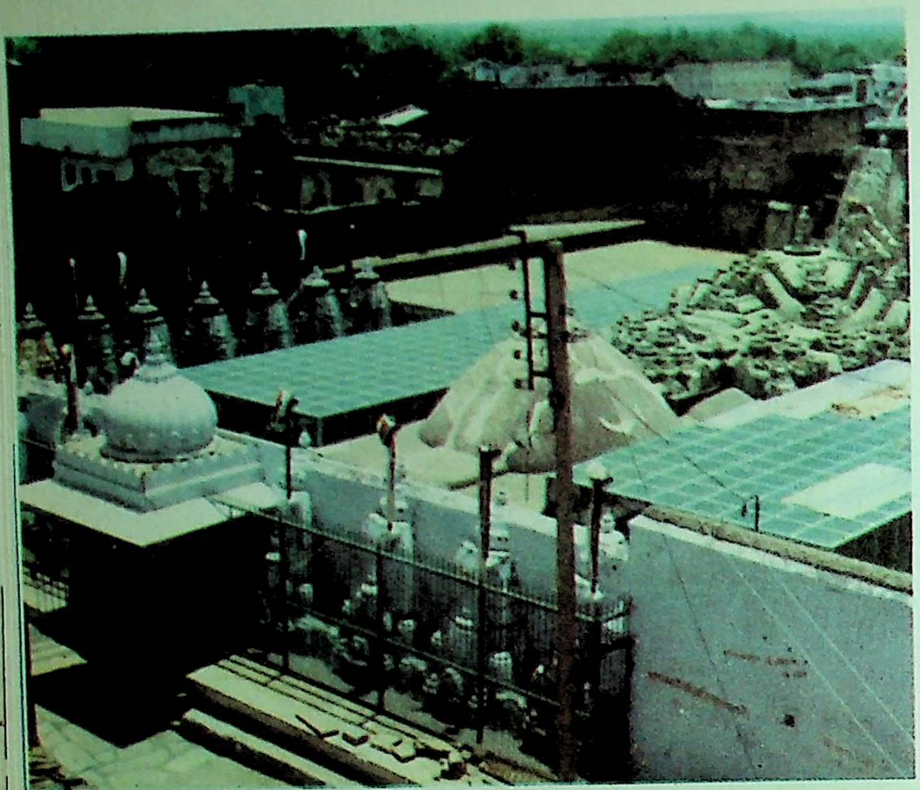
सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए धर्मशाला है जहाँ वर्तमान में कोई सुविधा नहीं है।

पेढ़ी ✻ श्री पार्श्वनाथ भगवान श्वेताम्बर जैन देरासर : डाक घर – उथमण : तहसील – शिवगंज : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – पोसालिया : टेलीफोन – पी० सी० ओ० पोसालिया।

श्री पार्श्वप्रभु जिनालय–उथमण



सहायक : १. श्री गुलराजजी भेरुदानजी कोचर, फलोदी (राज०) २. मेसर्स त्रिभुवनदास वेन्द्रावन एण्ड ब्रदर्स, कोयम्बतूर (तमिल नाडु) ३. श्री ज्ञानचन्दजी ताराचन्दजी गोलेछा, वेलूर (तमिलनाडु) ४. स्व० हरकोबाई धर्मपत्नी श्री शेशमलजी गोलेछा, बिरामिया–खुर्द (राज०)



श्री शान्तिनाथ जिनालय–सांडेराव

श्री साँडेराव तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री शान्तिनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग ७५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * साँडेराव गाँव के मध्य रावले के पास।

प्राचीनता * यह तीर्थ स्थान २५०० वर्ष प्राचीन माना जाता है। राजा गंधर्वसेन के समय इस मन्दिर में श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा मूलनायक रूप में प्रतिष्ठित होने के उल्लेख मिलते हैं। वि० सं० ९६९ में जीर्णोद्धार होकर आचार्य श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी द्वारा श्री महावीर भगवान की प्रतिमा मूलनायक रूप में प्रतिष्ठित होने का उल्लेख एक परिकर पर उत्कीर्ण है। तत्पश्चात् १६ वीं शताब्दी में पुनः जीर्णोद्धार के समय श्री शान्तिनाथ प्रभु की प्राचीन प्रतिमा अन्यत्र से मगवाकर यहाँ स्थापित करने का उल्लेख है, जो अभी मू नायक के रूप में विद्यमान है, जिस पर कोई लेख नही है। मूलनायक भगवान की दोनों प्राचीन प्रतिमाएँ भी यही विराजमान है, जिन पर लेप किया हुआ है। इस मन्दिर में एक आचार्य भगवान की मूर्ति के नीचे सं० ११९७ का लेख उत्कीर्ण है। मन्दिर में प्राचीन भोंयरे भी हैं। वल्लभी भंग होने पर वहाँ से कई वस्तुएँ यहाँ लाने का भी उल्लेख है। प्राचीन समय में यहाँ ज्ञान भंडार रहने के भी उल्लेख मिलते हैं। यहाँ का इतिहास अति प्राचीन व गौरव शाली रहने के कारण यहाँ खुदाई करवाने पर अनेकों प्रकार के प्राचीन कलात्मक अवशेष मिलने की संम्भावना है।

विशिष्टता * संडेरकगच्छ की स्थापना दसवीं शताब्दी में यहीं पर हुई थी। इस गच्छ में अनेकों प्रभावशाली आचार्य हुए, जैसे आचार्य श्री शाँतिसूरीश्वरजी के शिष्य समर्थ आचार्य श्री ईश्वरसूरीश्वरजी व मांत्रिक, प्रकांड विद्वान आचार्य श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी आदि, जिन्होंने जैन धर्म प्रभावना के जगह-जगह पर अनेकों कार्य किये, जो आज भी अपनी अमर गाथा गाते हैं।

कहा जाता है वि० सं० ९६९ में यहाँ पर हुए जीर्णोद्धार के समय प्रतिष्ठा महोत्सव पर आचार्य श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी द्वारा दैविक शक्ति से आवश्यक प्रमाण घी, पाली से मंगाया गया था, जिसका वहाँ के व्यापारी को पता नहीं लगा। बाद में रुपये भेजने पर व्यापारी द्वारा रुपये लेने से इन्कार करने के कारण वे नव लाख रुपये लगाकर पाली में ही भव्य बावन-जिनालय मन्दिर बनवाया गया, जो आज भी नवलखा मदिर के नाम से प्रसिद्ध है। प्रभु-प्रतिमा अति ही चमत्कारिक है। विभिन्न प्रसंगों पर पार्श्वप्रभु के अधिष्ठायक श्री धरणेन्द्र देव मन्दिर में नागदेव के रूप में प्रकट होते हैं। मन्दिर के सामने उपाश्रय में श्री मणिभद्रयक्ष का स्थान है जहाँ अनेकों प्रकार की चमत्कारिक घटनाएँ घटती हैं। प्रति वर्ष वैशाख शुक्ला ६ को ध्वजा चढ़ती है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त एक और श्री केशरियानाथ भगवान का मन्दिर है।

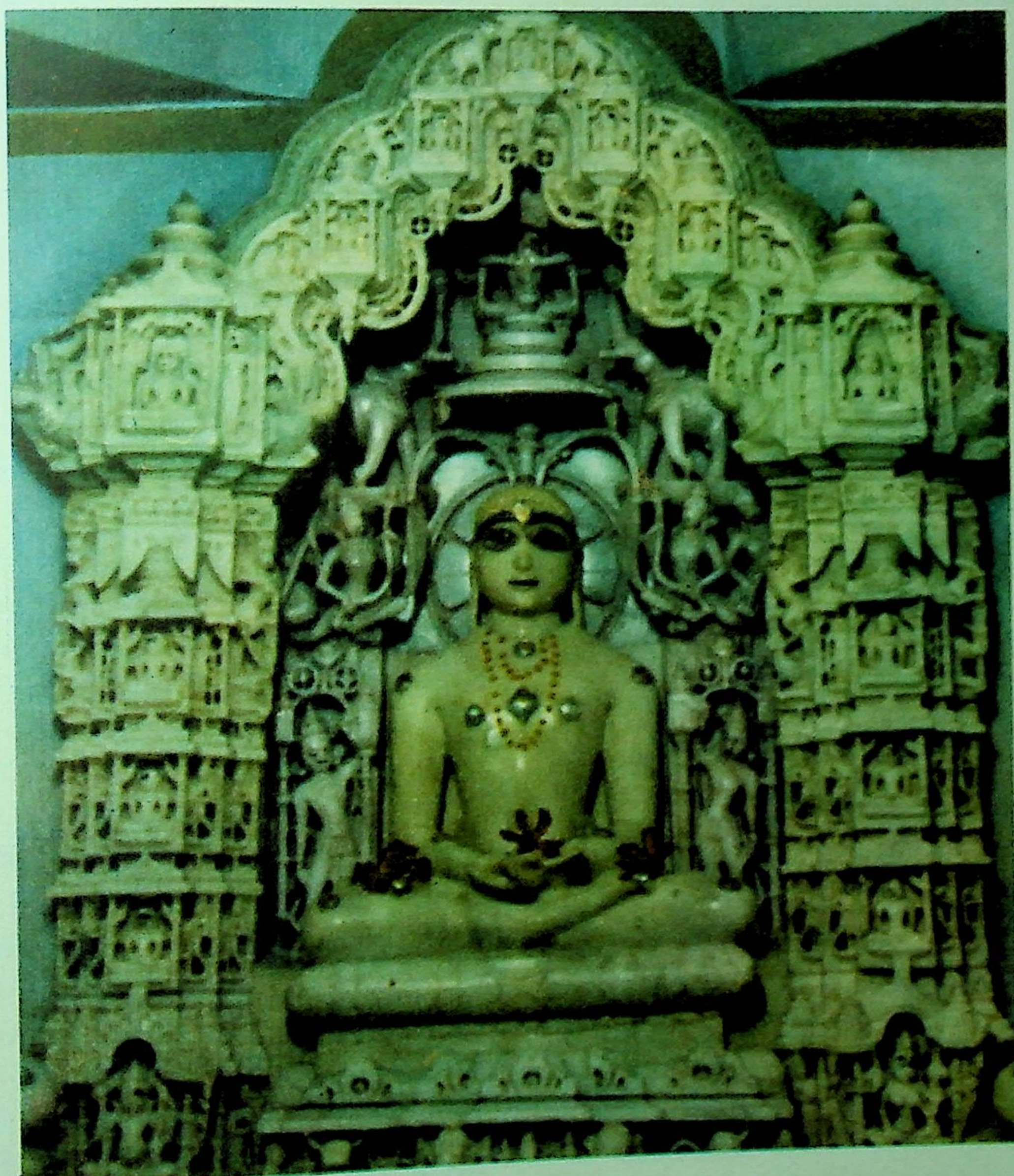
कला और सौन्दर्य * मन्दिर निर्माण की कला अजोड़ व अलौकिक है। मन्दिर का भाग समतल से ६ फुट नीचे है। वर्षा के समय मन्दिर में खूब पानी भरता है, चौक मे एक छोटा-सा छिद्र है। पानी छिद्र से होकर किस प्रकार कहाँ जाता है उसका अभी तक पता नहीं लगाया जा सका। प्रभु-प्रतिमा अति ही सुन्दर व सौम्य है।

मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन फालना ११ कि० मी० है, जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा है। बस स्टैण्ड मन्दिर से लगभग २०० मी० है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। कार व बस मन्दिर तक जा सकती हैं।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए धर्मशाला है। भोजनशाला के अतिरिक्त सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। पूर्व सूचना होने पर भोजन का भी प्रबन्ध हो सकता है।

पेढ़ी * श्री शान्तिनाथ श्वेताम्बर जैन पेढ़ी: डाक घर – सान्डेराव ३०६७०८ : व्हाया – फालना : तहसील – बाली : जिला – पाली : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – सान्डेराव : टेलीफोन – पी० सी० ओ० सान्डेराव।

श्री शान्तिनाथ भगवान–सांडेराव



सहायक : श्री मेघराजजी मिश्रीमलजी साकरिया, सांडेराव (राज०) वाले, मद्रास–३.

श्री सिरोही तीर्थ

तीर्थाधिराज ❋ श्री आदीश्वर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ।

तीर्थ स्थल ❋ सिरोही गाँव के देरासर मोहल्ले में।

प्राचीनता ❋ महाराव शिवभाण के पुत्र सेंसमलजी चौहान ने वि० सं० १४८२ में यह गाँव बसाया था। सिरोही गाँव बसने के पूर्व ही व्यापार के लिए यहाँ से होकर जानेवाले एक श्रेष्ठी ने यह स्थान शांत व पवित्र समझकर वि० सं० १३२३ आसोज शुक्ला ५ के शुभ दिन श्री आदिनाथ भगवान के इस मन्दिर का निर्माण-कार्य प्रारम्भ किया था। निर्माण का कार्य सम्पन्न होने पर वि० सं० १३३९ आषाढ शुक्ला ३ मंगलवार के दिन प्रतिष्ठापना करवायी गयी, ऐसा उल्लेख मिलता है। इसे अंचलगच्छ का मन्दिर कहते हैं। वि० सं० १४९९ में कविवर पं० श्री मेघ गणि द्वारा रचित तीर्थ माला में भी इस मन्दिर का वर्णन है।

वि० सं० १४२४ कार्तिक पूर्णिमा के दिन एक और श्री आदिनाथ भगवान के बावन जिनालय मन्दिर की प्रतिष्ठापना हुई।

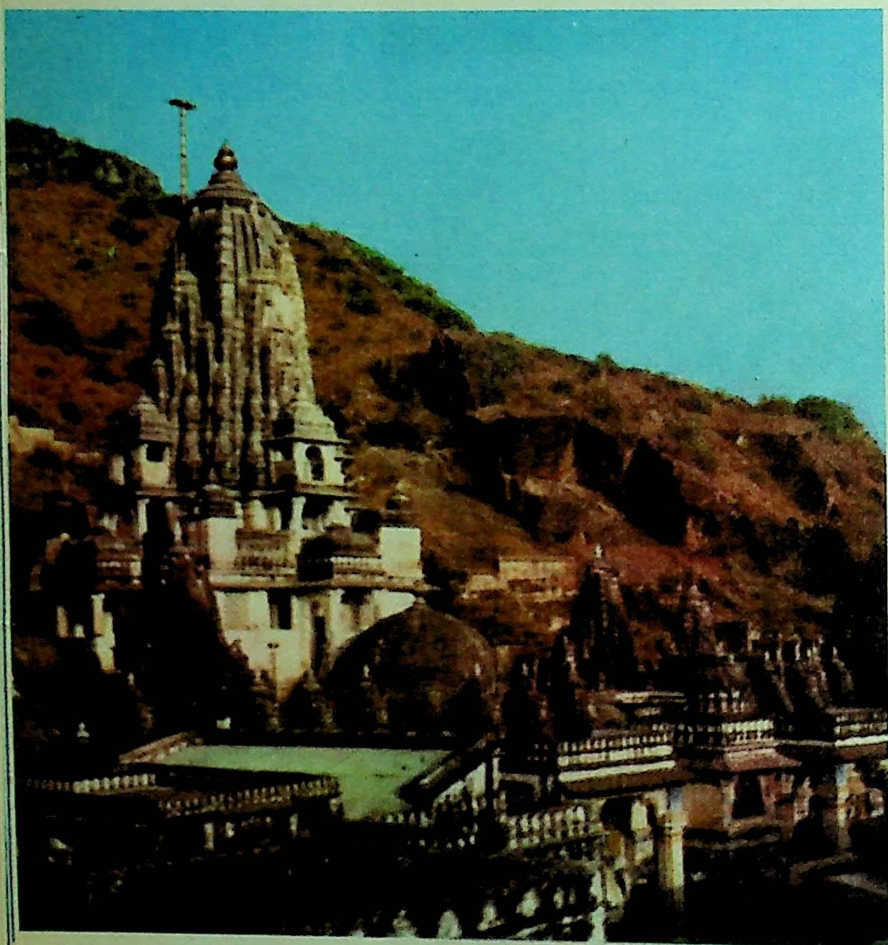
इनके अलावा भी बाद में अनेकों भव्य मन्दिर बने जो अभी भी विद्यमान हैं।

विशिष्टता ❋ जहाँ गाँव ही नहीं बसा हुआ था, उस जंगल में राह चलते भाग्यवान् व्यापारी श्रावक ने अपने अति उत्तम व निर्मल विचारों से भावपूर्वक जिन मन्दिर का निर्माण करवाया। कुछ वर्षों बाद वह स्थान नगरी के रूप में परिवर्तित होकर अभी तक अखण्ड कायम है। यह सब शुद्ध भाव का ही कारण है।

जगत्गुरु श्री हीरविजयसूरीश्वरजी को सं० १६१० मार्गशीर्ष शुक्ला १० के दिन आचार्य पदवी से यहीं पर विभूषित किया गया था। उक्त विराट महोत्सव के शुभ अवसर पर स्वर्ण मुहरों की प्रभावना दी गयी थी जो उल्लेखनीय है। वि० सं० १६३६ में श्री विजयसेनसूरीश्वरजी ने यहाँ के महाराव को प्रतिबोध देकर प्रभावित किया था।

वि० सं० १६३४ माघ शुक्ला पंचमी के दिन आचार्य श्री हीरविजयसूरीश्वरजी ने श्री आदिनाथ भगवान के चार मंजिल का चौमुखा विशाल मन्दिर की प्रतिष्ठा करवायी थी, जो आज कला आदि में सबसे विशिष्ठ माना जाता है।

भट्टारक श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी ने वि० सं० १५२० में यहाँ श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान के मन्दिर की प्रतिष्ठापना करवायी थी। इस चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान के मन्दिर में श्री हीरविजयसूरीश्वरजी की तीन फुट ऊँची प्रतिमा है, जिसपर सं० १६५६ का लेख है।



जिनालयों का दृश्य–सिरोही

वि० सं० १६५७ में श्री शान्तिनाथ भगवान के मन्दिर की प्रतिष्ठा श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी के मुहस्ते होने का उल्लेख है। इस मन्दिर में दादा श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी व श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी की प्रतिमाएँ हैं, जिन पर सं० १६६१ का लेख उत्कीर्ण है।

इस प्रकार यहाँ समय-समय पर अनेकों प्रकाण्ड विद्वान आचार्य भगवन्तों ने इस भूमि पर पदार्पण करके धर्म प्रभावना के अनेकों कार्य किये, वे उल्लेखनीय हैं। श्री आदिनाथ भगवान के बावन जिनालय मन्दिर में पिछले गंभारे के रंग मण्डप के द्वार से राजमहल तक सुरग है, जो शायद राजा-रानियों के दर्शनार्थ आने के लिए बनवायी गयी होगी। क्योंकि यहाँ के राजा लोग मन्दिर के कार्यों में भाग लेते थे व उनमें जैन धर्म के प्रति अटल श्रद्धा थी।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में यहाँ पर श्री आदिनाथ भगवान के इस प्राचीन मन्दिर के अतिरिक्त १६ और मन्दिर हैं।

कला और सौन्दर्य ✻ यहाँ पर एक ही साथ पहाड़ की ओट में मन्दिरों के शिखर समूहों का दृश्य अति ही मनोरम प्रतीत होता है। यहाँ के हर मन्दिर में प्रतिमाओं, तोरणों, गुम्बजों आदि में भूतपूर्व कला के दर्शन होते हैं, जिनमें कुछ निम्न प्रकार हैं।

अंचलगच्छ के मन्दिर के पास ही पौशधशाला में भट्टारकजी श्री पूर्णचन्द्रसूरिजी द्वारा सं० १४६२ वैशाख शुक्ला ३ के दिन प्रतिष्ठित श्री सरस्वती देवी की प्रतिमा अति सुन्दर है।

श्री संभवनाथ भगवान के मन्दिर में मूलनायक भगवान की प्रतिमा की कला अति दर्शनीय है।

श्री अजितनाथ भगवान के मन्दिर में आभूषणों से सुसज्जित काउसग्ग मुद्रा में दो प्रतिमाएँ अति ही सुन्दर व कलात्मक हैं। ऐसी प्रतिमाओं के दर्शन अन्यत्र दुर्लभ हैं।

श्री आदिनाथ भगवान के बावन जिनालय मन्दिर में मूलनायक भगवान के प्रतिमा की शिल्पकला अति मनोहर है। मूर्ति पर मोती का विलेपन किया हुआ है। इसी मन्दिर में एक हजार पंचधातु की प्राचीन प्रतिमाएँ, मरुदेवी माता व राजर्षि भरत वगैरह की सुन्दर मूर्तियाँ भी अति दर्शनीय हैं।

श्री आदिनाथ भगवान का विशाल चौमुखी मन्दिर के तोरणों, स्तंभों, रंगमण्डपों आदि की शिल्पकला दर्शनीय है।

इनके अतिरिक्त भी अनेकों कलात्मक प्रतिमाओं आदि के दर्शन हर मन्दिर में होते हैं।

मार्ग दर्शन ✻ नजदीक का रेलवे स्टेशन सिरोही रोड़ २४ कि० मी० है, जहाँ से टैक्सी व बस की सुविधा है। मन्दिर से बस स्टैण्ड करीब एक कि० मी० है। गाँव में टैक्सी व टैम्पो मिलते हैं। कार व बस मन्दिर से लगभग एक फर्लांग की दूरी तक जा सकती हैं।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए गाँव में धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है।



श्री आदीश्वर भगवान – सिरोही

पेढ़ी ✻ श्री अंचलगच्छ आदीश्वरजी जैन टेम्पल पेढ़ी। टेम्पल स्ट्रीट : डाक घर – सिरोही : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – सिरोही : टेलीफोन – पी० सी० ओ० सिरोही।

सहायक : श्री मेगराजजी मोतीलालजी मानकलालजी सुरेशकुमारजी ललवानी, टाटानगर (बिहार)

श्री गोड़ी पार्श्वनाथ मन्दिर का अपूर्व दृश्य–गोहिली



श्री गोहिली तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री गोड़ी पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ५३ सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ गोहिली गाँव के मध्य।

प्राचीनता ✻ इसका प्राचीन नाम गोहवलि था, ऐसा उल्लेख मिलता है। इस मन्दिर में उपलब्ध शिलालेखों से प्रतीत होता है कि यह तीर्थ-क्षेत्र विक्रम की तेरहवीं सदी से पूर्व का है। विक्रम सं० १२४५ वैशाख शुक्ला प्रतिपदा के दिन यहाँ के ठाकुर द्वारा कुछ भेंट प्रदान करने का इस मन्दिर के एक शिलालेख में उल्लेख मिलता है। समय-समय पर आवश्यक जीर्णोद्धार हुए होंगे, ऐसा लगता है।

विशिष्टता ✻ प्रतिवर्ष पौष कृष्णा दशमी को मेला लगता है।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

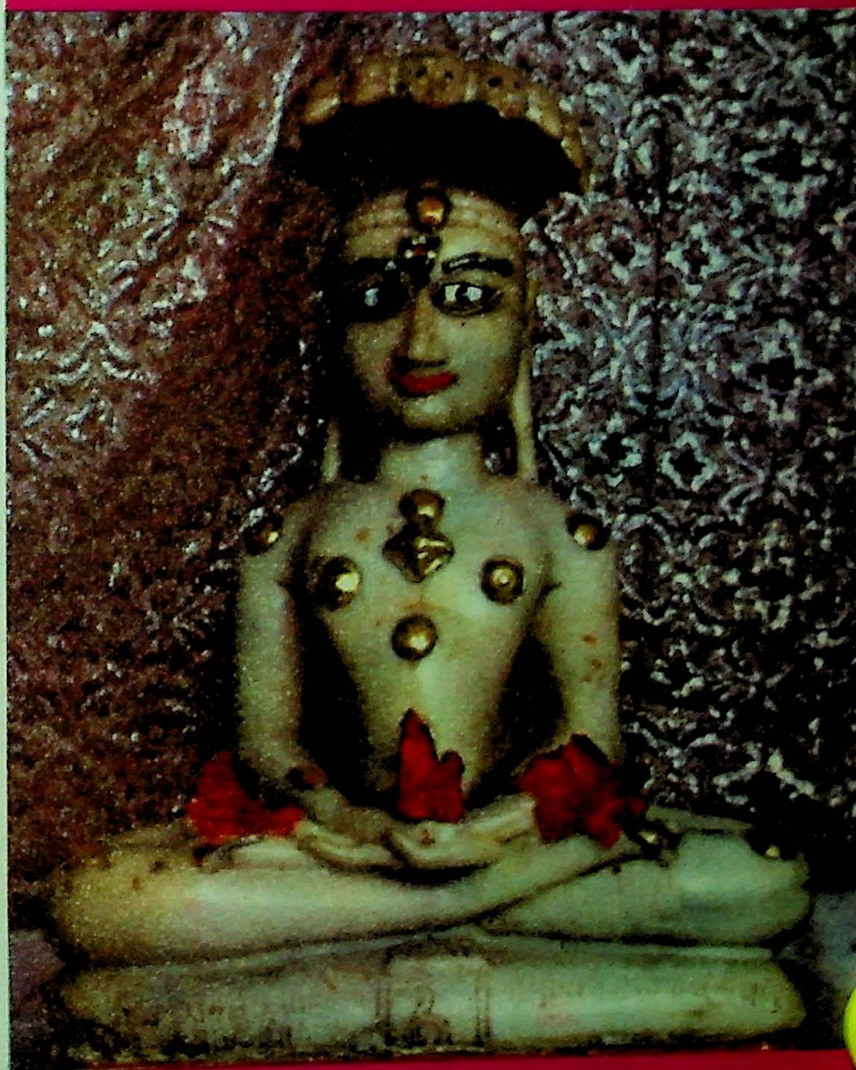
कला और सौन्दर्य ✻ मन्दिर की निर्माण शैली अति ही आकर्षक है। दूर से ही इस भव्य बावन जिनालय मन्दिर की फहराती ध्वजाएँ यात्रियों को मुग्ध करती हैं।

मार्ग दर्शन ✻ नजदीक का रेलवे स्टेशन सिरोही रोड़ लगभग २७ कि० मी० है, जहाँ से बस व टैक्सी द्वारा सिरोही शहर होकर आना पड़ता है। सिरोही शहर यहाँ से लगभग ३ कि० मी० है। सिरोही शहर में भी टैक्सी व बसों की सुविधा है। मन्दिर से लगभग २०० मी० पर यहाँ का बस स्टैण्ड है। गाँव में सवारी का साधन नहीं है। मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पानी व बिजली की सुविधा है। सिरोही शहर ठहरकर ही यहाँ आना अति सुविधाजनक है।

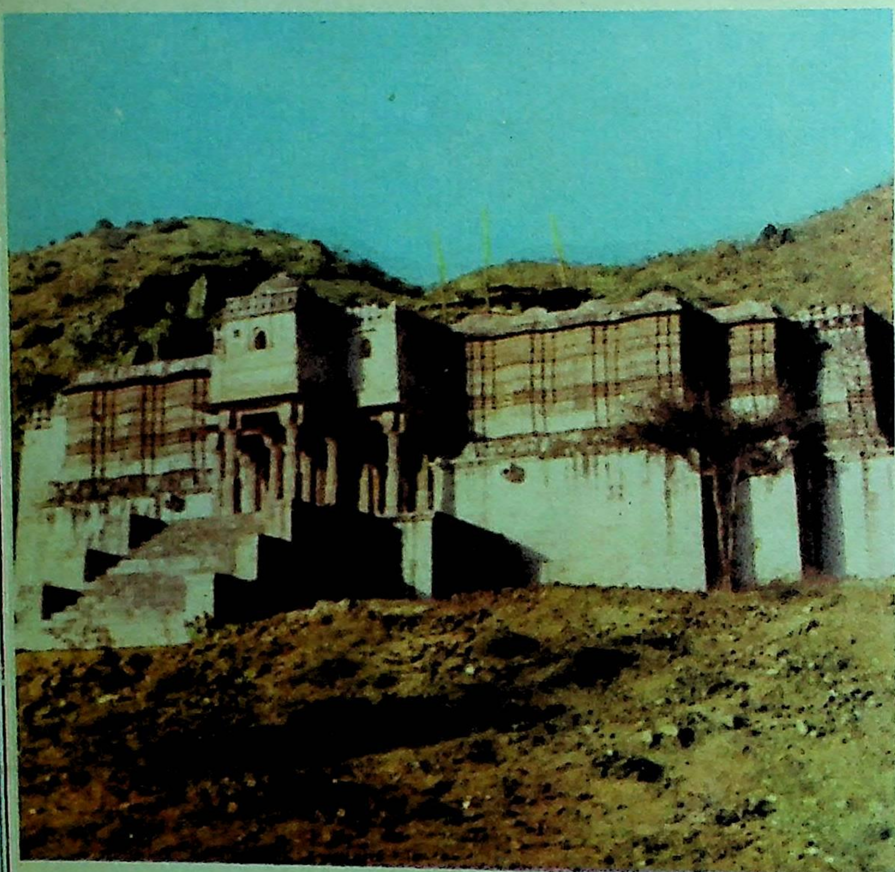
पेढ़ी ✻ श्री पार्श्वनाथ भगवान जैन देरासर पेढ़ी। डाक घर – गोहिली : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – सिरोही : टेलीफोन – पी० सी० ओ० सिरोही।





श्री गोड़ी पार्श्वनाथ भगवान–गोहिली

श्री पार्श्वनाथ जिनालय का सुन्दर दृश्य–मीरपुर



श्री मीरपुर तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री भीड़भंजन पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ९० सें० मी।

तीर्थ स्थल * मीरपुर गाँव से लगभग ८ कि० मी० बाहर जंगल में तीनों तरफ वनयुक्त पहाड़ों के बीच।

प्राचीनता * वि० सं० ८०८ में हमीर द्वारा इस गांव को बसाने का उल्लेख है। इसका हमीरपुर, हमीरगढ़ के नाम से भी उल्लेख मिलता है। लेकिन यह मन्दिर इससे भी प्राचीन है, राजा सम्प्रति द्वारा निर्मित हुआ था, ऐसा 'वीर-वंशावली' में उल्लेख है। वि० सं० ८२१ में आचार्य श्री जयानन्दसूरीश्वरजी के सदुपदेश से मंत्रीश्वर श्री सामन्त द्वारा इस मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख है। यहां पर गुम्बजों, तोरणों, व स्थंभों आदि पर की गयी शिल्पकला लगभग हजार वर्ष प्राचीन मानी जाती है। हो सकता है एक हजार वर्ष पूर्व जीर्णोद्धार होकर इन शिल्पकला के नमूने स्थंभों आदि पर प्रस्तुत किये गये हों। सं० १३२८ में हस्त-लिखित 'शतपदिका' प्रशस्ति में भी यहाँ के पल्लीवाल श्रेष्ठियों का उल्लेख आता है। किसी समय यह एक विराट नगरी रही होगी, ऐसा यहाँ इधर-उधर बिखरे अवशेषों आदि से अनुमान लगाया जाता है।

अभी भी जीर्णोद्धार का काम चालू है।

विशिष्टता * यहाँ की प्राचीन शिल्पकला देखते ही आबू-देलवाड़ा, कुम्भारिया आदि का स्मरण हो आता है, यहाँ शिखर पर उत्कीर्ण कला तो आबू से भी निराली है। यह तीर्थ अपनी प्राचीनता, कला व अद्वितीय वातावरण से एकान्त स्थान पर रहने के कारण अपना विशेष स्थान रखता है। प्रतिवर्ष पौष कृष्णा १०, चैत्री पूणिमा व कार्तिक पूर्णिमा को मेले लगते हैं।

पार्श्वचन्द्र गच्छ के संस्थापक श्री पार्श्वचन्द्र सूरिजी महाराज की जन्म भूमि यही है, जिनका जन्म सोलहवी सदी में हुआ था।

तपागच्छीय श्री इन्द्रनंदिसूरिजी के पट्टधर श्री सौभाग्य-नंदिसूरिजी ने यहीं पर वि० सं० १५७६ में श्री मौन एकादशी की कथा रची थी। "वर्ल्ड एनसाइक्लोपेडिया आॅफ आर्ट" में भी इस मन्दिर का उल्लेख है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में यहाँ पर इसके अतिरिक्त एक श्री महावीर भगवान का व दो अन्य मन्दिर हैं। इन दो मन्दिरों में प्रतिमाएँ नहीं हैं।

कला और सौन्दर्य * यहाँ की कला अद्वितीय है। मन्दिर के स्तंभों पर वि० सं० १५५० से १५५६ के जीर्णोद्धार के महत्वपूर्ण लेख अंकित हैं। मंदिर की करधनी हाथी की है

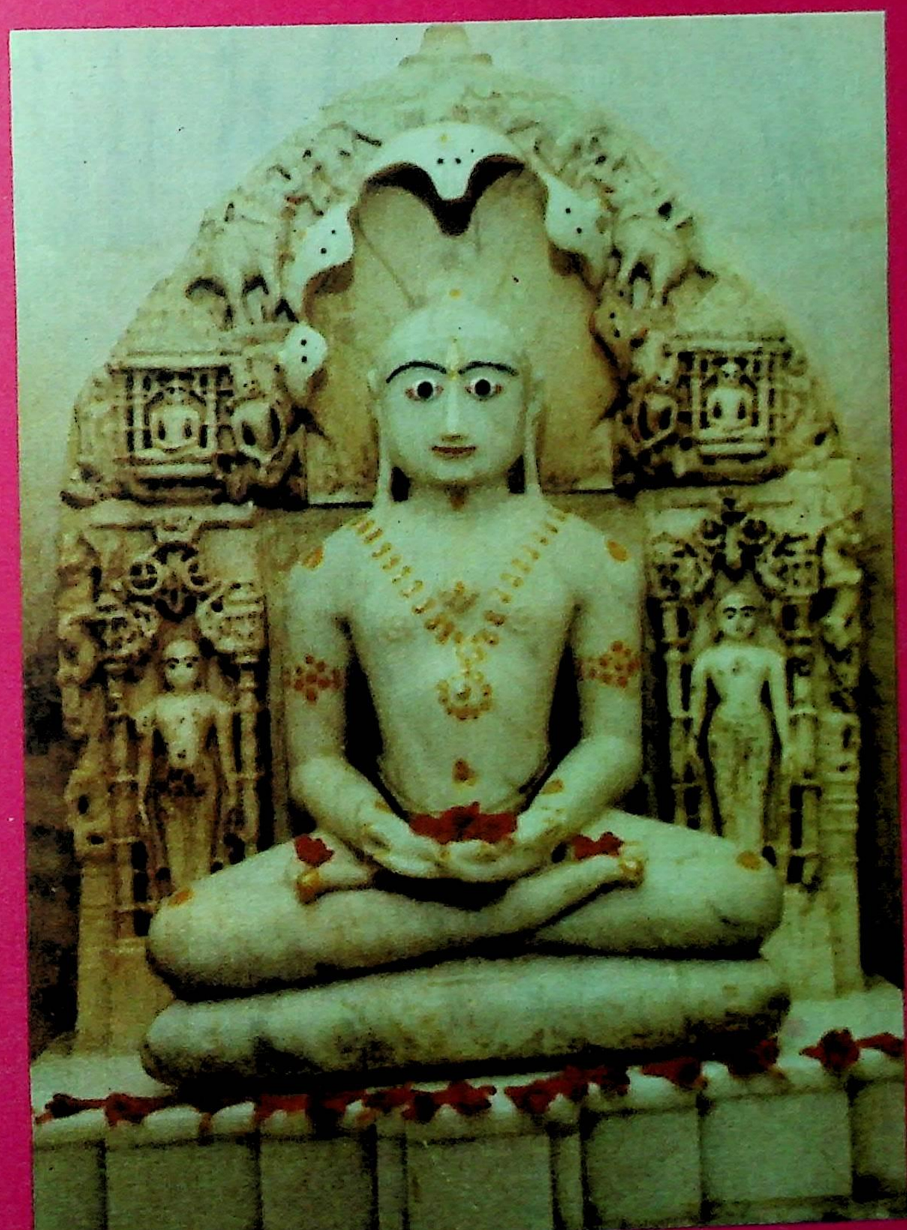
जो पल्लवकालीन कला का श्रेष्ठ नमूना है. चारों ओर यक्ष, गन्धर्व, किन्नर एवं देवी-देवताओं की महत्वपूर्ण आकृतियां उत्कीर्ण हैं। तीनों तरफ छटायुक्त पहाड़ियों के मध्य स्थित इस मन्दिर का शांत वातावरण, अति ही सुन्दर प्राकृतिक दृश्य एवं मन्दिर के सन्मुख सूर्य अस्त का दृश्य निहारने योग्य है।

मार्ग दर्शन * नजदीक के रेलवे स्टेशन सिरोही रोड ३७ कि० मी० व आबू रोड ६० कि० मी० हैं। नजदीक का बड़ा शहर सिरोही १५ कि० मी० है। इन स्थानों से बस व टैक्सी की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ का बस स्टेशन मीरपुर ३ कि० मी० है। उस जगह सवारी का कोई साधन नहीं है। मन्दिर तक बस व कार जा सकती है।

सुविधाएं * ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहां भोजनशाला, पानी, बर्तन व ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र की सुविधा है।

पेढ़ी * शेठ कल्याणजी परमानन्दजी पेढ़ी : मीरपुर गांव : डाक घर – कृष्णगंज : जिला – सिरोही : प्रांत – राजस्थान : तार घर – सिरोही : टेलीफोन – मार्फत : १२५ सिरोही।

★



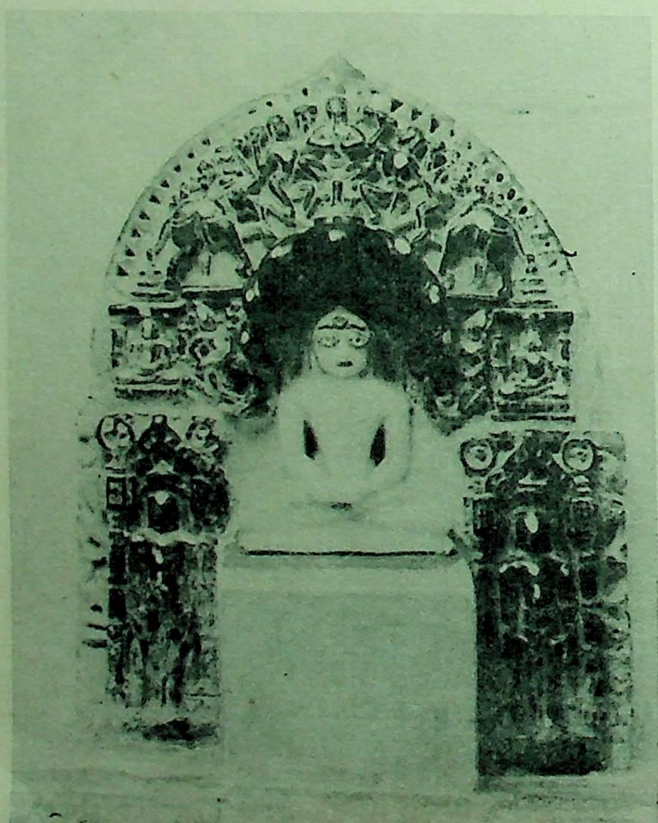
श्री भीड़भंजन पार्श्वनाथ भगवान–मीरपुर

सहायक : शाह मोहनलालजी उमेदमलजी, बेलगांम (कर्नाटक)



श्री महावीर जिनालय–वीरवाड़ा

प्राचीन कलात्मक प्रतिमा - वीरवाड़ा



श्री वीरवाडा तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री महावीर भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग ६० सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ वीरवाड़ा गाँव के बाहर जंगल में पहाड़ी की ओट में।

प्राचीनता ✻ वीरवाड़ा का इतिहास अति प्राचीन प्रतीत होता है। इसका प्राचीन नाम वीरपल्ली रहने का भी उल्लेख मिलता है। यहाँ के श्रेष्ठियों द्वारा वि० सं० १२०८ में यहाँ से नजदीक कोटरा गाँव में मन्दिर निर्माण करवाने का उल्लेख मिलता है।

वि० सं० १४१० में इस मन्दिर के जीर्णोद्धार होने का उल्लेख मन्दिर के एक स्थंभ पर उत्कीर्ण है।

सं० १४९९ में मेघ कवि द्वारा रचित 'तीर्थ माला' में, सं० १७४५ में श्री शीलविजयजी द्वारा रचित "तीर्थमाला" में सं० १७५५ में श्री ज्ञानविमलसूरिजी द्वारा रचित 'तीर्थ माला' में इस तीर्थ का उल्लेख है।

विशिष्टता ✻ यह तीर्थ प्रभु वीर के समकालीन होने का संकेत मिलता है। प्रतिमा पर कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है। प्रतिमा की शिल्पकला से ही प्राचीनता सहज ही में सिद्ध हो सकती है।

यहाँ के श्रेष्ठियों द्वारा जगह-जगह पर मन्दिर निर्माण करवाने के उल्लेख मिलते हैं। लगता है, किसी समय यह एक विशाल समृद्धशाली नगर रहा होगा। आजू बाजू के बीसलनगर, कोटरा आदि वीरवाड़ा के अंग रहे होंगे।

प्रति-वर्ष मार्गशीर्ष शुक्ला ६ को ध्वजा चढ़ती है।

अन्य मन्दिर ✻वर्तमान में इसके अतिरिक्त गाँव में श्री विमलनाथ भगवान का एक और मन्दिर है।

कला और सौन्दर्य ✻ गाँव के बाहर पहाड़ी की ओट में निर्मित इस मन्दिर का दृश्य अत्यन्त मनोरम लगता है। प्रभु वीर की प्रतिमा अति ही प्रभावशाली, सुन्दर व गंभीर है। गाँव में श्री विमलनाथ भगवान के मन्दिर में बावन देरियों में सुन्दर प्राचीन प्रतिमाएँ अति ही दर्शनीय हैं। आजू-बाजू बीसलनगर, कोटरा, वीरोली आदि गाँवों में प्राचीन खण्डहर जैन मन्दिरों के कलात्मक अवशेष दिखायी देते हैं। वीसलनगर में स्थित प्राचीन खण्डहर जैन मन्दिर को वसीया मन्दिर कहते हैं।

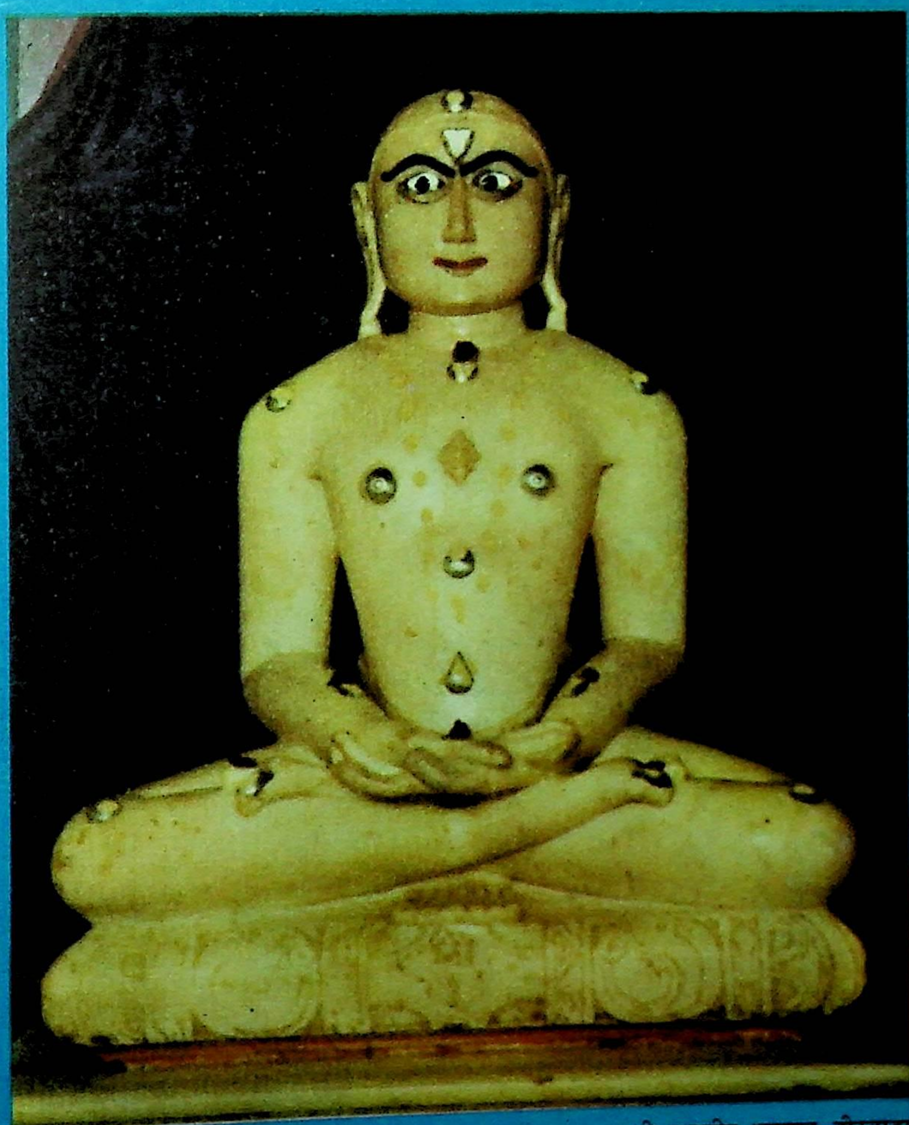
मार्ग दर्शन ✻ नजदीक का रेलवे स्टेशन सिरोही रोड़ १० कि० मी० है, जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा है। सिरोही शहर लगभग १४ कि० मी० है। बामनवाड़जी तीर्थ यहाँ से सिर्फ एक कि० मी० है। यहाँ का बस स्टेशन मन्दिर से करीब २०० मी० है। कार व बस मन्दिर से

लगभग २०० मी० दूर तक जा सकती हैं।

सुविधाएँ * गाँव में धर्मशाला है जहाँ पानी, बिजली, का साधन है। यात्रियों के लिए श्री वामनवाड़जी तीर्थ में ठहरकर यहाँ आना ही सुविधाजनक है, जहाँ सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

पेढ़ी * श्री विमलनाथ भगवान जैन पेढ़ी : डाक घर – वीरवाड़ा : तहसील – पिन्डवाड़ा : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : स्टेशन – सिरोही रोड़ : तार घर – सिरोही रोड़ : टेलीफोन – पी० सी० ओ० सिरोही रोड़।

*



श्री महावीर भगवान–वीरवाड़ा

श्री बामणवाड़ तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, पद्मासनस्थ, बदामी वर्ण, लगभग ६० सें० मी०।

तीर्थ स्थल * सिरोही रोड़ से ७ कि० मी० दूर वीरवाड़ा के पास जंगल में पहाड़ी की ओट में।

प्राचीनता * शिलालेखों में इसका प्राचीन नाम ब्राह्मण-वाटक आता है। यह तीर्थ जीवित स्वामी के नाम से प्रसिद्ध है। तपागच्छ पट्टावली के अनुसार श्री संप्रति राजा ने यहाँ मन्दिर बनवाया था। संप्रति राजा को प्रतिवर्ष पांच तीर्थों की चार बार यात्रा करने का नियम था, जिनमें ब्राह्मणवाड़ का नाम भी आता है। श्री नागार्जुनसूरिजी, श्री स्कन्दन-सूरिजी व श्री पादलिप्तसूरिजी आचार्यों को भी पांच तीर्थों की यात्रा का नियम था, उनमें भी ब्राह्मणवाड तीर्थ का उल्लेख है। श्री जयानन्दसूरिजी के उपदेश से वि० स० ८२१ के आसपास पोरवाल मंत्री श्री सामन्तशाह ने कई मन्दिरों का जीर्णोद्धार करवाया था उनमें ब्राह्मणवाड तीर्थ भी था। अंचलगच्छीय महेन्द्रसूरिजी द्वारा वि० सं० १३०० के आसपास रचित अष्टोत्तरी तीर्थ माला में यहां श्री महावीर भगवान के मन्दिर में वीर प्रभु के चरणों युक्त थूभ का उल्लेख

श्री महावीर भगवान मन्दिर–बामनवाड़ा



श्री महावीर भगवान–बामनवाड़जी



सहायक : मेसर्स. नीला इन्डस्ट्रीज, मद्रास–१.

है। वि० सं० १७५० में पं० श्री सौभाग्यविजयी द्वारा रचित 'तीर्थ माला' में भी यहाँ पर वीरप्रभु के चरणों का उल्लेख है।

कवि श्री लावण्यसमयगणी द्वारा वि० सं० १५२९, श्री विशालसुन्दरजी द्वारा वि० सं० १६८५, पं० श्री क्षेमकुशलजी द्वारा वि० सं० १६५७ व श्री वीरविजयजी द्वारा वि० सं० १७०८ में रचित तीर्थ स्तोत्रों में इस तीर्थ की महिमा गाई है। इस प्राचीन तीर्थ का अनेकों बार जीर्णोद्धार हुआ होगा। वर्तमान में श्री कल्याणजी परमानन्दजी पेढ़ी द्वारा जीर्णोद्धार का कार्य चालू है।

विशिष्टता ❋ कहा जाता है भगवान श्री महावीर के कानों में कील लगाने का उपसर्ग यहीं हुआ था, जहाँ प्रभु की चरण पादुकाएँ प्रतिष्ठित हैं।

आचार्य श्री नागार्जुनसूरिजी, श्री स्कन्दनसूरिजी, श्री पादलिप्तसूरिजी एवं राजा श्री संप्रति यहाँ नियमित रूप से दर्शनार्थ आते थे।

सिरोही के श्री शिवसिंहजी महाराज को राजगादी मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी परन्तु इस तीर्थ पर श्रद्धा व भक्ति के कारण वे सिरोही के राजा बने, अतः उन्होंने इस तीर्थ की कायम सुव्यवस्था के लिए आसपास के कुछ अरट, बावड़ियां, खेती योग्य भूमि आदि भेंट करके वि० सं० १८७६ ज्येष्ठ शुक्ला ५ के दिन ताम्रपत्र लिखकर अर्पण किया। यहाँ अभी भी अनेकों चमत्कारिक घटनाएँ घटती हैं व श्रद्धालु भक्तजनों की मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। वि० सं० १९८९ में अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर पोरवाल सम्मेलन यहाँ पर योगीराज श्री विजयशान्तिसूरीश्वरजी की निश्रा में सुसम्पन्न हुआ था, जो उल्लेखनीय है। सम्मेलन की पूर्णाहुती के समय चैत्र कृष्णा ३ के शुभ दिन श्री संघ द्वारा योगीराज को कई पदवियों से अलंकृत किया गया था। अभी भी हमेशा सैकड़ों यात्रीगणों का यहाँ आवागमन रहता है। हर मास के शुक्ल पक्ष की ग्यारस को भक्तजनों का विशेष आवागमन रहता है।



उपसर्ग स्थल पर प्रभुवीर के प्राचीन चरण चिह्न—बामनवाड़ा

अन्य मन्दिर ❋ इसी पहाड़ी पर सम्मेतशिखर की रचना बहुत सुन्दर ढंग से की गई है जो दर्शनीय है। कहा जाता है भगवान महावीर के कानों में कील मारने का उपसर्ग यहीं हुआ था। जहाँ प्रभु के प्राचीन चरण चिह्न हैं, व मन्दिर बना हुआ है। पहाड़ी पर एक कमरा है जहाँ आबू के योगीराज श्री विजयशान्तिसूरीश्वरजी महाराज प्रायः ध्यान किया करते थे, वहाँ उसी पाट पर जहाँ वे बैठते थे उनका फोटो रखा हुआ है, व कमरे में उनकी मूर्ति दर्शनार्थ रखी हुई है।

कला और सौन्दर्य ❋ मन्दिर में श्री महावीर भगवान के २७ भवों के पट्ट संगमरमर में बनाये गये हैं वे अति ही सुन्दर व दर्शनीय हैं। बालू की बनी प्रभु प्रतिमा अत्यन्त

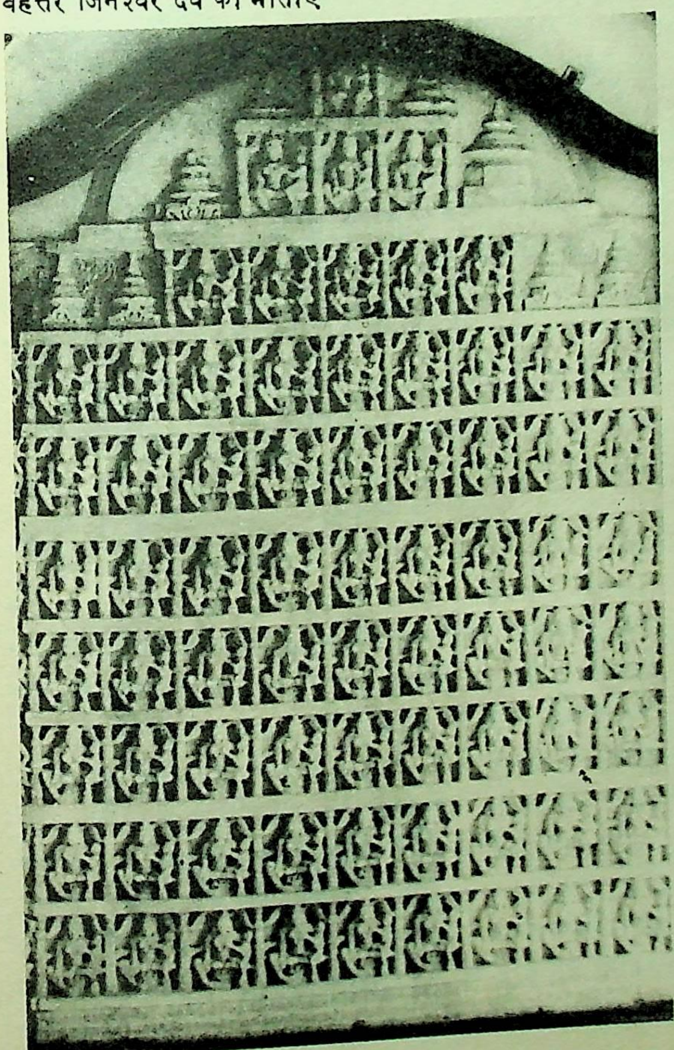
सुन्दर व प्रभावशाली है। सहज ही में हर भक्त का हृदय प्रभु तरफ लयलीन हो जाता है। जंगल में रहने के कारण यहाँ का प्राकृतिक दृश्य भी अति शान्तिप्रद है।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन सिरोही रोड ७ कि० मी० है जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा है। पिन्डवाड़ा गाँव भी ८ कि० मी० है जो कि सिरोही रोड़ स्टेशन के पास ही है। सिरोही गाँव १६ कि० मी० है। आबू से व सिरोही रोड़ से सिरोही गाँव जानेवाली सारी बसें बामनवाड़ा होकर ही जाती हैं। धर्मशाला के सामने ही बस स्टैण्ड है।

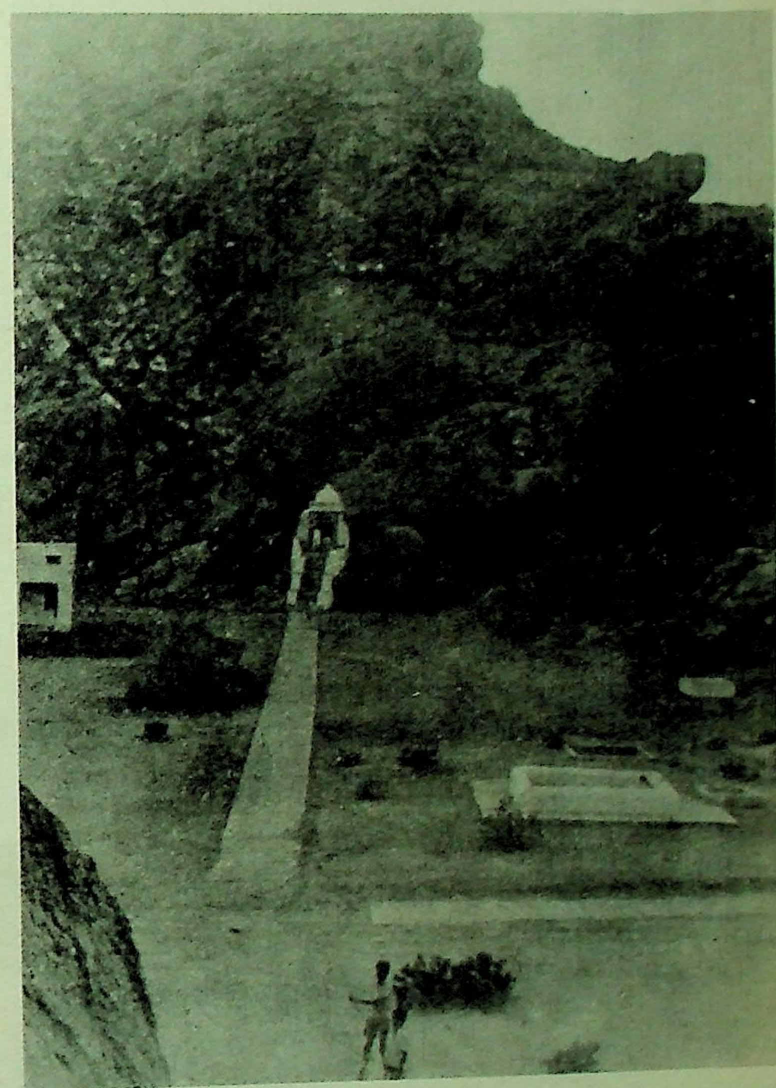
सुविधाएँ * ठहरने के लिए मन्दिर के अहाते में ही विशाल धर्मशाला है जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, ओढने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री कल्याणजी परमानन्दजी पेढ़ी : जैन तीर्थ श्री बामनवाड़जी : डाक घर – वीरवाड़ा : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर . पिन्डवाड़ा (सिरोही रोड) : टेलीफोन – पी० सी० ओ० सिरोही रोड।

बहत्तर जिनेश्वर देव की माताएँ



प्रभुवीर का चण्डकौशिक को प्रतिबोध स्थान नान्दिया

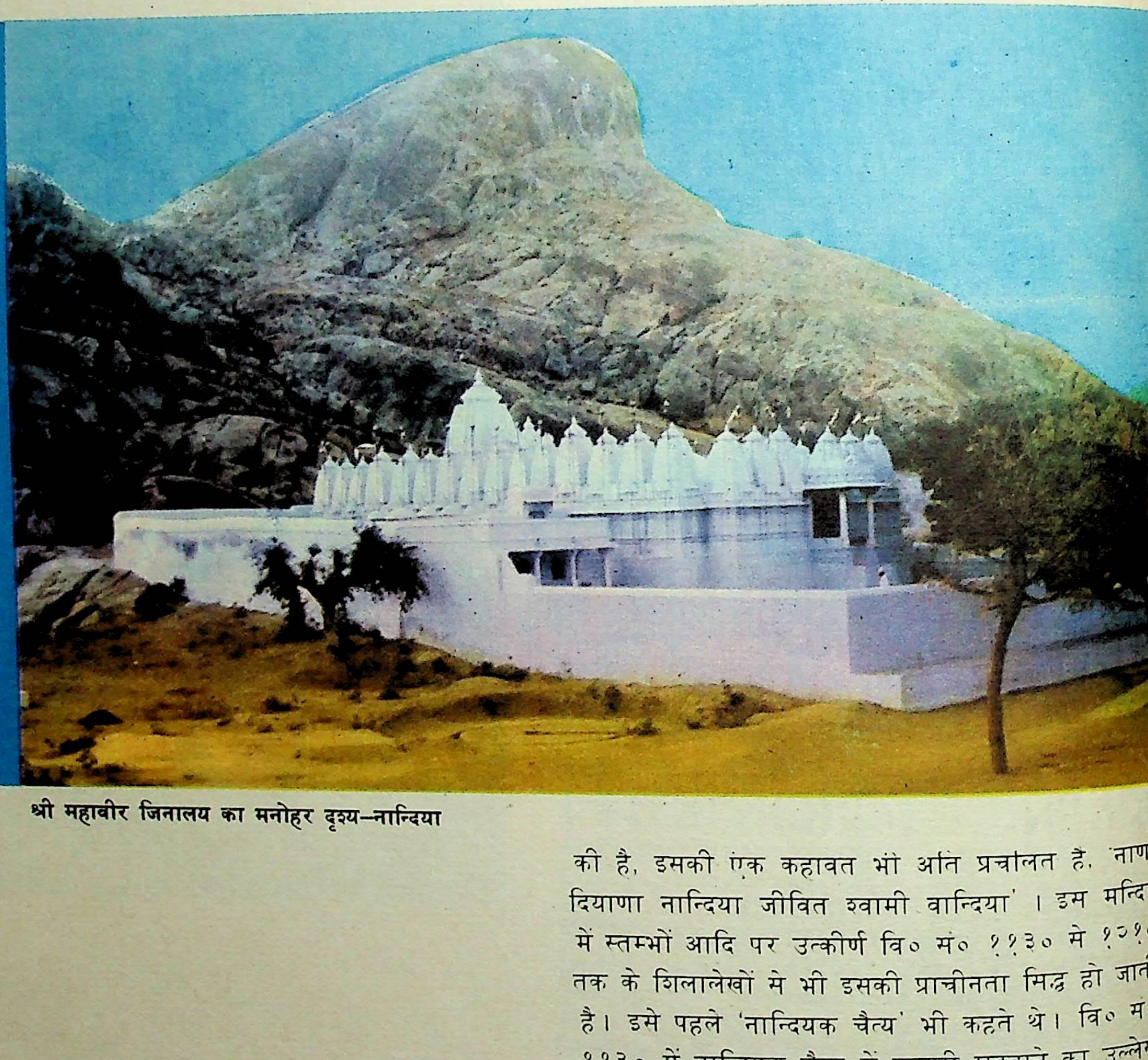


श्री नान्दिया तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, परिकरसहित लगभग २१० सें० मी०।

तीर्थ स्थल * नान्दिया गाँव के बाहर सुन्दर वनयुक्त पहाड़ियों के मध्य।

प्राचीनता * इसके प्राचीन नाम नन्दिग्राम, नन्दिवर्धनपुर, नन्दिरपुर आदि थे। भगवान् महावीर के ज्येष्ठ भ्राता श्री नन्दिवर्धन ने यह गाँव बसाया था, ऐसी किवदन्ति प्रचलित है। यह भी कहा जाता है कि यह प्रतिमा प्रभुवीर के समय



श्री महावीर जिनालय का मनोहर दृश्य—नान्दिया

की है, इसकी एक कहावत भी अति प्रचलित है, 'नाणा दियाणा नान्दिया जीवित स्वामी वान्दिया'। इस मन्दिर में स्तम्भों आदि पर उत्कीर्ण वि० सं० ११३० से १२१० तक के शिलालेखों से भी इसकी प्राचीनता सिद्ध हो जाती है। इसे पहले 'नान्दियक चैत्य' भी कहते थे। वि० सं० ११३० में नान्दियक चैत्य में बावड़ी खुदवाने का उल्लेख हैं। वि० सं० १२०१ में जीर्णोद्धार हुए का उल्लेख मिलता है। समय-समय पर हर तीर्थ का उद्धार होता ही है। उसी भान्ति इस तीर्थ का भी अनेकों बार उद्धार हुआ होगा।

विशिष्टता * प्रभु वीर के समय की उनकी प्रतिमाएँ

बहुत ही कम जगह हैं, जिन्हें जीवित स्वामी कहते हैं। उसमें भी ऐसी सुन्दर व मनमोहक प्रतिमा अन्यत्र नहीं है। श्री नन्दिवर्धन द्वारा बसाये गाँव में इस प्राचीन मन्दिर को नन्दीश्वर चैत्य भी कहते हैं। इस मन्दिर के निकट ही टेकरी पर एक देरी है, जिस में शिला पर प्रभु के चरण व सर्प की आकृति उत्कीर्ण है। भक्तों के मान्यतानुसार प्रभु वीर ने चण्डकौशिक सर्प को यहीं पर प्रतिबोध दिया था। इसी शिला पर कुछ प्राचीन लेख भी उत्कीर्ण हैं, जिनके अन्वेषण की आवश्यकता है।

विश्व विख्यात राणकपुर तीर्थ के निर्माता शेठ श्री धरणाशाह व रत्नाशाह इसी नगरी के निवासी थे। प्रतीत होता है यह नगर सदियों तक जाहोजलाली पूर्ण रहा।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य ✻ प्रभु वीर के समय की इतनी तेजस्वी कलात्मक प्रतिमा के दर्शन अन्यत्र दुर्लभ हैं। लगता है जैसे वीर प्रभू साक्षात् विराजमान हैं। इस बावनजिनालय मन्दिर की सारी प्रतिमाओं की कला का भी जितना वर्णन करे, कम है। साथ ही यहाँ का प्राकृतिक दृश्य अति मनलुभावना है। दूर से जंगल में शिखर समूहों का दृश्य दिव्य नगरी सा प्रतीत होता है।

मार्ग दर्शन ✻ यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन सिरोही रोड़ १० कि० मी० दूर है, जहाँ से आबू रोड़ मार्ग मे कोजरा होकर आना पड़ता है। नजदीक का बड़ा शहर सिरोही २४ कि० मी० दूर है। इन जगहों से बस व टैक्सियों की सुविधा है। बामनवाड़जी तीर्थ से नान्दिया ६ कि० मी० दूर है। सड़क कच्ची है लेकिन बस व कार जा सकती हैं। बस स्टैण्ड से मन्दिर ४०० मी० दूर है। गांव में सवारी का साधन नहीं है।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए गाँव में धर्मशाला है, जहाँ पर भोजनशाला के अतिरिक्त सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

पेढ़ी ✻ श्री वर्धमान आनन्दजी जैन देरासर पेढ़ी : गाँव – नान्दिया : डाक घर – नान्दिया : जिला – सिरोही प्रान्त – राजस्थान : तार घर – पिन्डवाड़ा : टेलीफोन – पी० सी० ओ० पिन्डवाड़ा।



जीवितस्वामी श्री महावीर भगवान–नान्दिया

सहायक : शाह रिखबदासजी नवाजी, रमणिया (राज०) वाले, मद्रास–१.

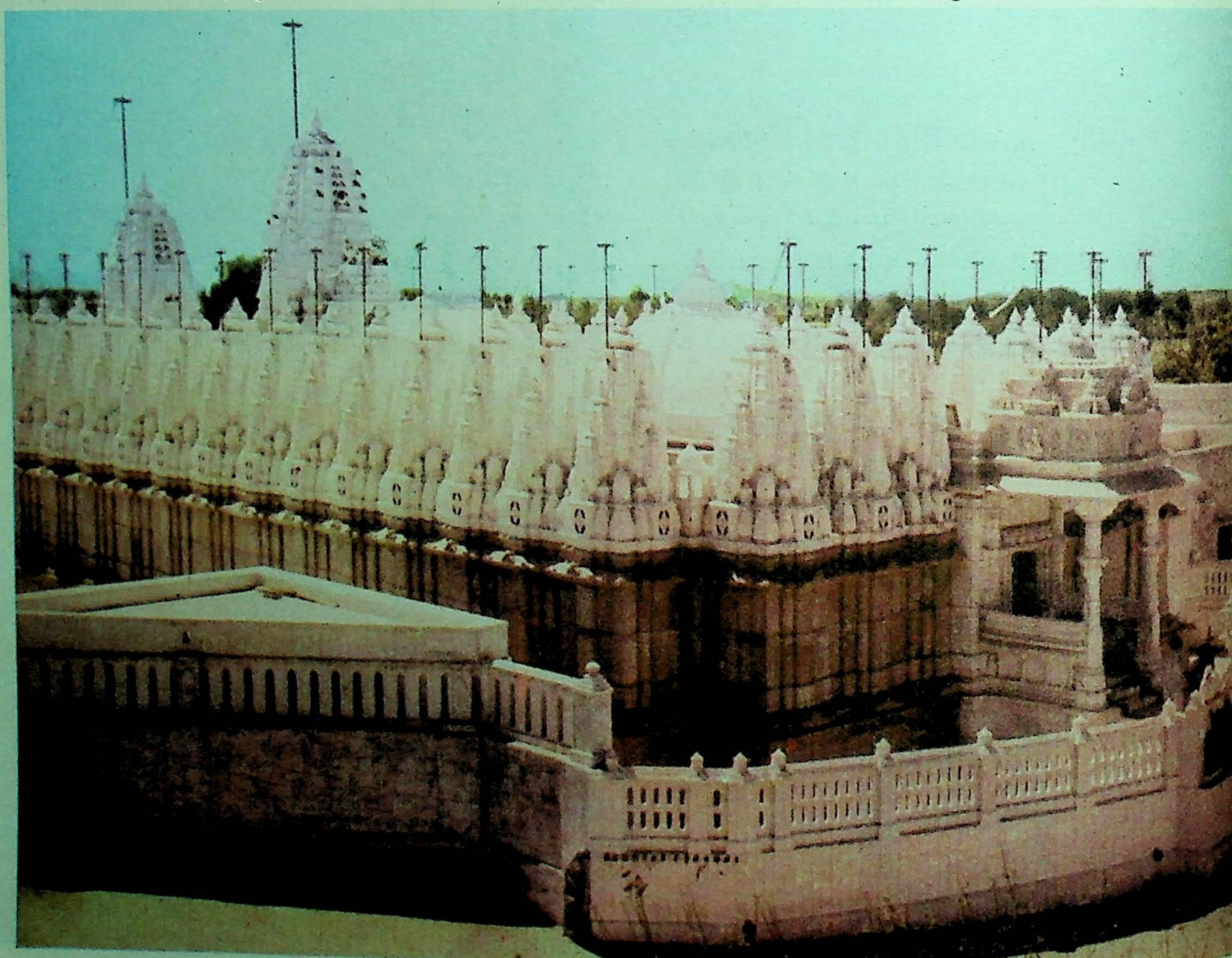
श्री अजारी तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग ७५ सें० मी० ।

तीर्थ स्थल * अजारी गाँव के मध्य ।

प्राचीनता * यह अति प्राचीन स्थान है। इस गाँव की व मन्दिर की प्राचीनता का पता लगाना कठिन-सा है। शास्त्रों में उल्लेखानुसार कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमाचन्द्राचार्य ने इस गाँव के निकट श्री मार्कन्डेश्वर में श्री सरस्वती देवी के मन्दिर में सरस्वती देवी की आराधना की थी। इस मन्दिर के निकट एक बावड़ी में विक्रम सं० १२०२ का लेख उत्कीर्ण है, जिसमें परमार राजा यशोधवल का वर्णन है। यहाँ पर कुछ धातु प्रतिमाओं पर ग्यारहवीं, बारहवीं व तेरहवीं सदी के लेख उत्कीर्ण हैं। प्रतिमाजी पर कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है। प्रतिमाजी की कलाकृति से प्रमाणित होता है कि यह प्रतिमा अति प्राचीन है। इस भव्य बावन-जिनालय मन्दिर में सारी प्रतिमाएँ राजा संप्रतिकाल की प्रतीत होती हैं। मन्दिर में कुछ आचार्य भगवन्तों की भी

बावनजिनालय का मनोहर दृश्य–अजारी



मनोज्ञ प्रतिमाएँ हैं। एक प्रतिमा अति ही सुन्दर है, जिसपर सं० १२ का लेख उत्कीर्ण है।

विशिष्टता * कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमाचन्द्राचार्य ने यहाँ के निकट श्री मार्कन्डेश्वर में श्री सरस्वती देवी की आराधना की थी, तब श्री सरस्वती देवी ने प्रसन्न होकर इस मंदिर में श्री हेमचन्द्राचार्य को प्रदक्षिणा देते वक्त साक्षात् दर्शन दिया था। कहा जाता है श्री हेमचन्द्राचार्य ने इस मन्दिर में श्री सरस्वती देवी की प्रतिमा की स्थापना करवायी थी जो कि अभी भी विद्यमान है। इस प्रतिमा पर वि० सं० १२६९ में श्री शान्तिसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित होने का लेख उत्कीर्ण है। हो सकता है श्री हेमाचन्द्राचार्य के उपदेश से यह प्रतिमा बनवायी गयी हो व प्रतिष्ठा श्री शान्तिसूरिजी के सुहस्ते हुई हो। श्री सरस्वती देवी के चमत्कार प्रख्यात हैं। अभी भी अनेकों जैन-जैनेतर विद्या प्राप्ति के लिए जो भावना भाते हैं उनकी मनोकामना सिद्ध होती है। यह तीर्थ छोटी मारवाड़ पंचतीर्थी का एक स्थान है। आबू के योगीराज विजय श्री शान्तिसूरिजी ने भी यहाँ के निकट जंगलों में कठोर तपश्चर्या की थी व मार्कन्डेश्वर में सरस्वती देवी की आराधना करने पर श्री सरस्वती देवी साक्षात् प्रकट हुई थीं। विजय श्री शान्ति सूरीश्वरजी के रहने का वह स्थान मार्कन्डेश्वर में अभी भी यथावत् है। कविवर कालीदास की भी यह जन्मभूमि है।

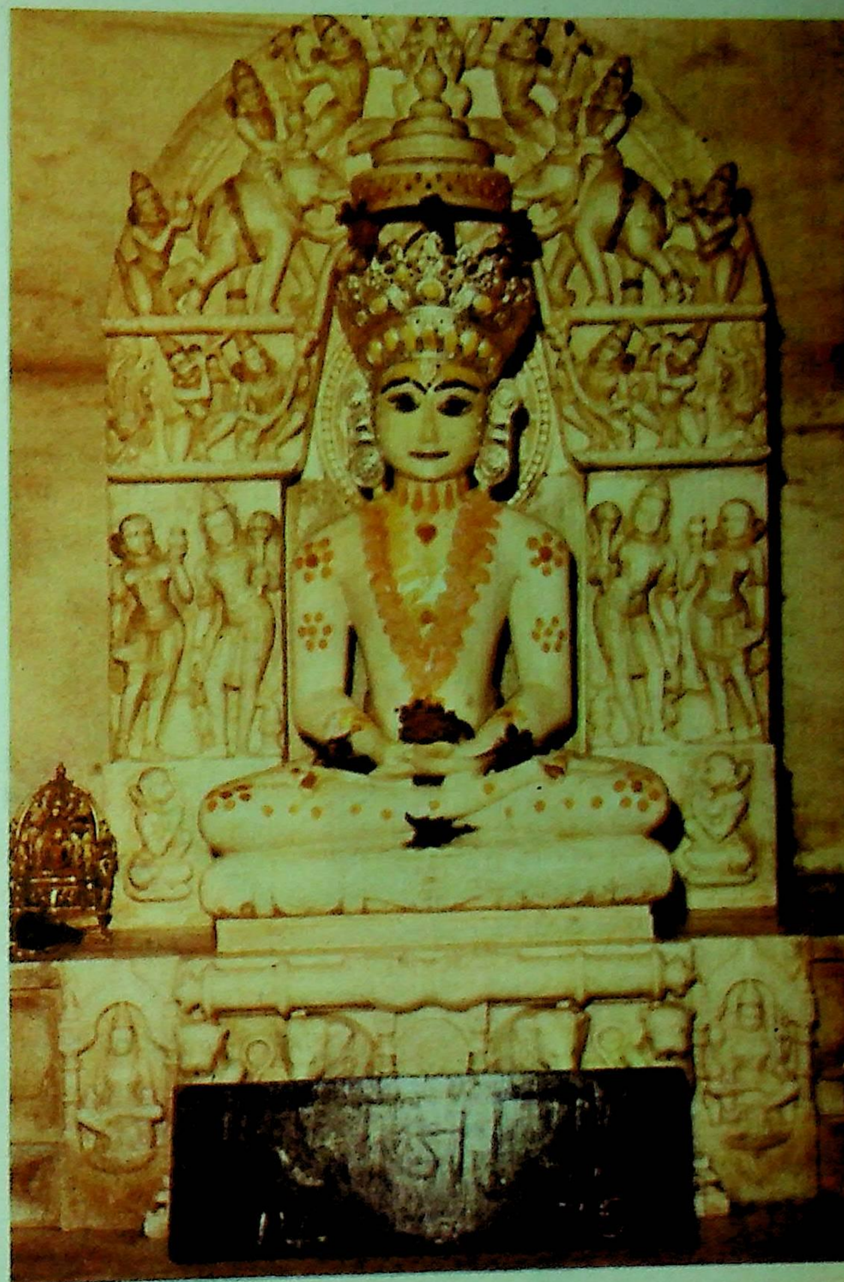
अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है। मार्कन्डेश्वर में श्री सरस्वती देवी का मन्दिर यहाँ से लगभग एक मील दूर है।

कला और सौन्दर्य * बावनजिनालय मन्दिर की कला अति दर्शनीय है। सारी प्रतिमाएँ राजा संप्रति काल की अति ही सुन्दर व मनमोहक हैं। इस मन्दिर में व मार्कन्डेश्वर में सरस्वती देवी की प्रतिमाएँ अति प्रभावशाली हैं। सरस्वती देवी की इतनी प्राचीन व प्रभावशाली प्रतिमाओं के दर्शन अन्यत्र दुर्लभ हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन सिरोही रोड़ पाँच कि० मी० है, जहाँ से ताँगों, टैक्सी व बस की सुविधा है। बामनवाड़जी तीर्थ से यह स्थल १२ कि० मी० व नान्दिया तीर्थ से १० कि० मी० दूर, सिरोही रोड़-आबू मार्ग में स्थित है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। यहाँ के बस स्टैण्ड से मन्दिर की दूरी सिर्फ आधा फर्लांग है।

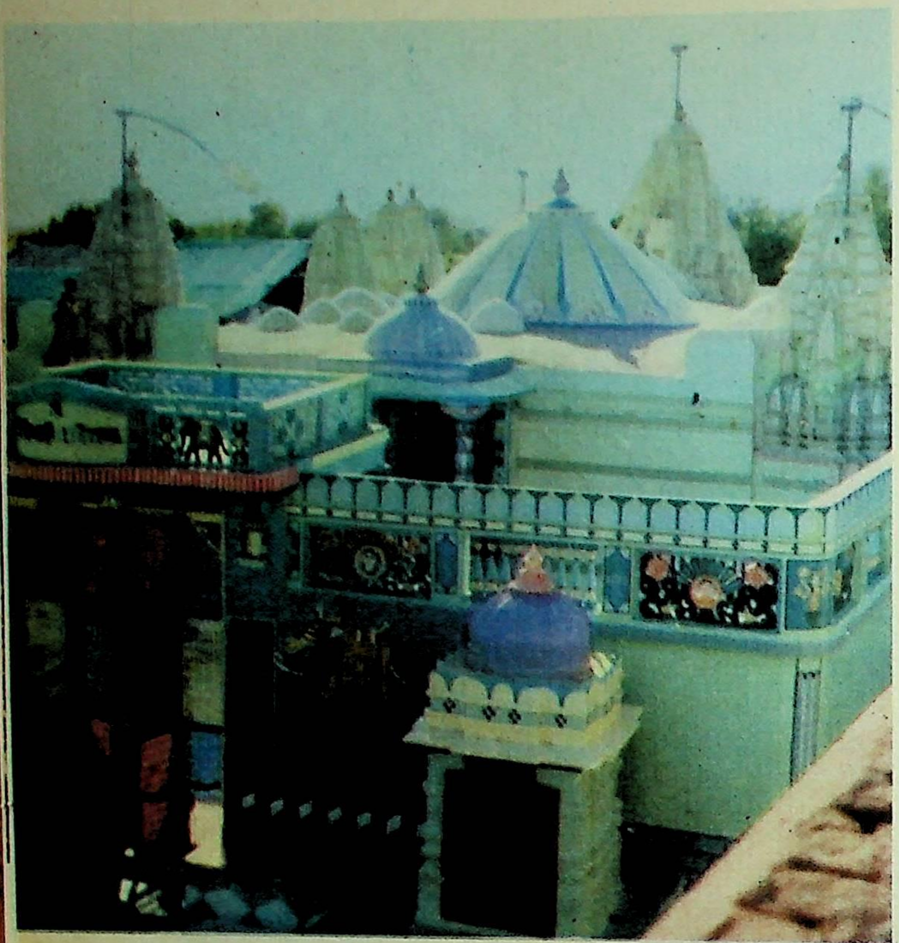
सुविधाएँ * ठहरने के लिए मन्दिर के निकट धर्मशाला है, जहाँ बर्तन, पानी व ओढ़ने-बिछाने के वस्त्रों की सुविधा है।

पेढ़ी * शेठ कल्याणजी सोभागचन्दजी जैन पेढ़ी : डाक घर – अजारी : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – सिरोही रोड़ : टेलीफोन – पी० सी० ओ० सिरोही रोड।



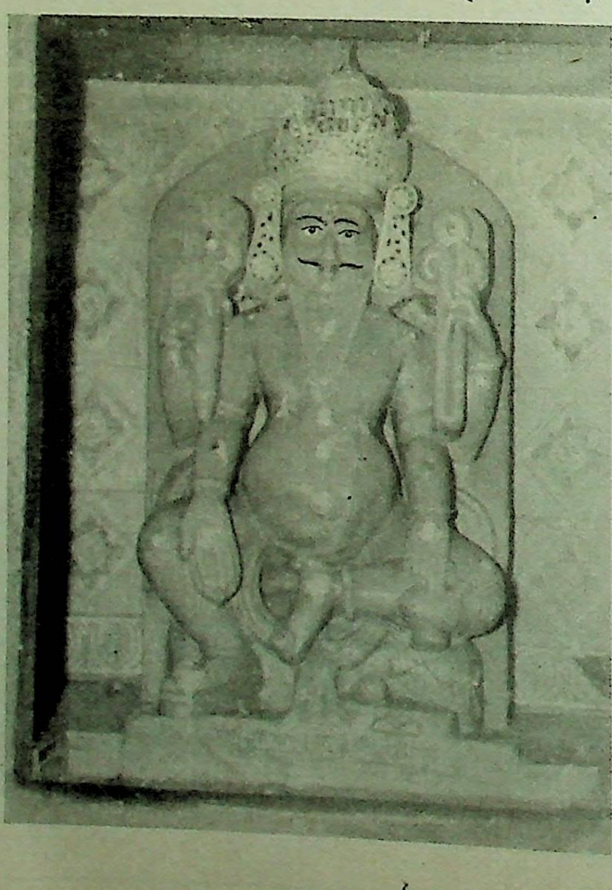
श्री महावीर भगवान–अजारी

सहायक : श्री दीपचन्दजी पारसमलजी मरलेचा, सोजतरोड़ (राज०) वाले, चिंगलपेट (तमिलनाडु)



श्री पार्श्वनाथ जिनालय–नीतोड़ा

श्री बावेश्वरजी महाराज–नीतोड़ा



श्री नीतोड़ा तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण।

तीर्थ स्थल * नीतोड़ा गाँव के मध्य।

प्राचीनता * यह स्थान बारहवीं सदी पूर्व का माना जाता है। प्रभु-प्रतिमा के परिकर की गादी पर सं० १२०० का लेख है जिसमें श्री नेमिनाथ भगवान का नाम उत्कीर्ण है। हो सकता है कभी जीर्णोद्धार के समय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान के इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवायी गयी हो। इसी मन्दिर में एक यक्ष की मूर्ति है जिसे बाबेश्वरजी कहते हैं। उसपर सं० १४६१ वैशाख शुक्ला २ का लेख उत्कीर्ण है।

विशिष्टता * यह तीर्थ छोटी मारवाड़ पंचतीर्थी का एक स्थल है। यहाँ पर विराजित श्री बाबेश्वरजी यक्ष की प्रतिमा अति चमत्कारिक है। श्री बाबेश्वरजी के हाथों में कमन्डल, त्रिशूल, यज्ञसूत्र व नागपाश है व पैरों में खड़ाऊँ हैं, सिर पर श्री तीर्थंकर भगवान की प्रतिमा है। अनेकों भक्त यहाँ दर्शनार्थ आते हैं व मानता रखकर अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * इस बावन जिनालय मन्दिर का दृश्य अति ही मनोरम व प्रभु-प्रतिमा विशेष कलात्मक है। श्री बाबेश्वरजी की मूर्ति दर्शनीय व अति प्रभावशाली है।

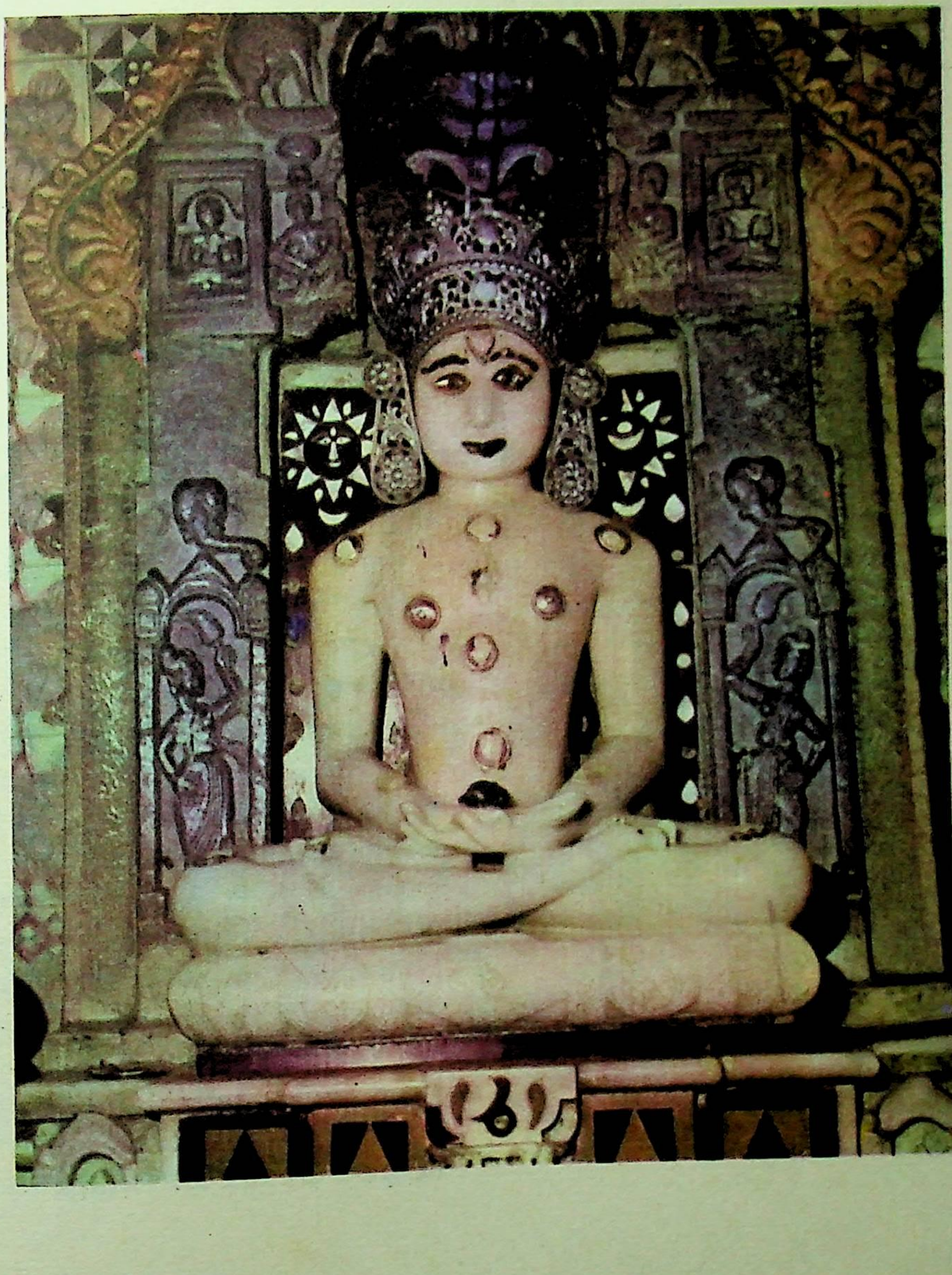
मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन सरूपगंज ५ कि० मी० है, जहाँ से बस, टैक्सी व तांगों की सुविधा है। सड़क कच्ची है लेकिन बस व कार मन्दिर तक जा सकती हैं। यहाँ से दियाणा तीर्थ ८ कि० मी० है। रोड़ कच्ची है।

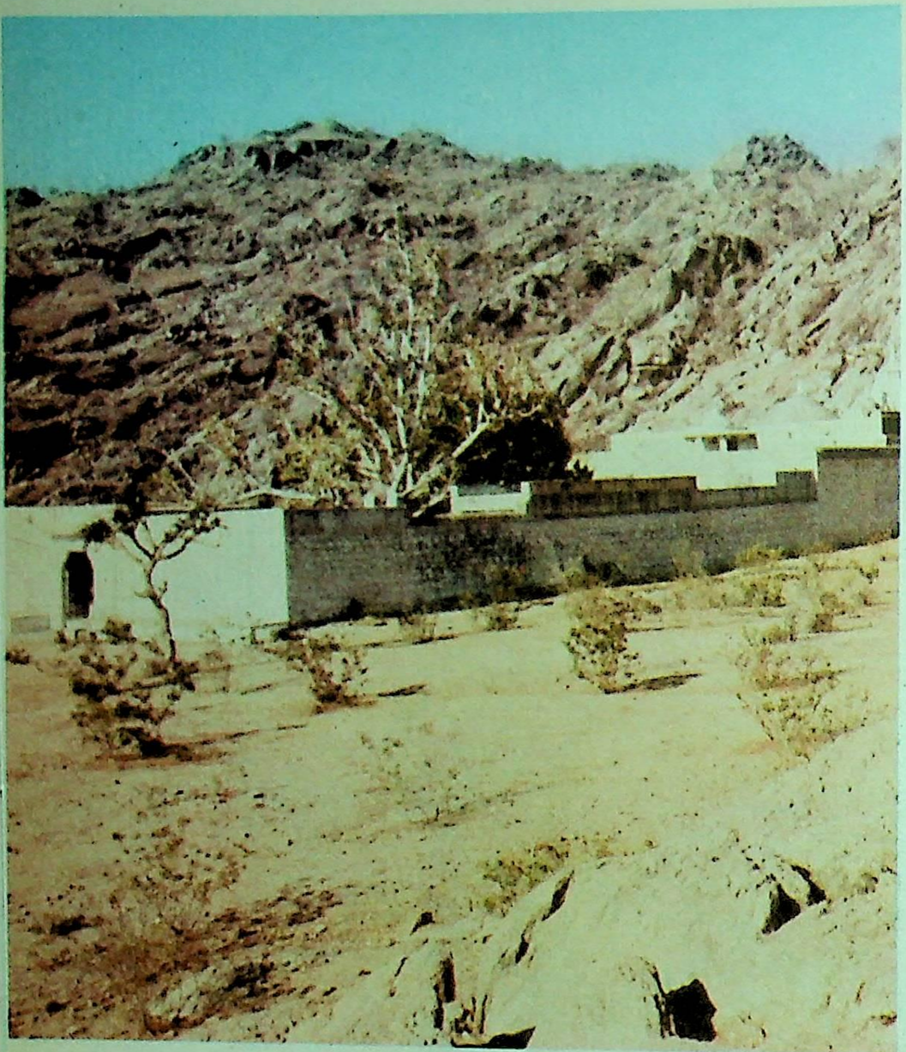
सुविधाएँ * ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पानी, बर्तन व ओढ़ने-बिछाने के वस्त्रों की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान कारखाना। डाक घर – नीतोड़ा : स्टेशन – सरूपगंज : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – सरूपगंज : टेलीफोन – पी० सी० ओ० सरूपगंज।



श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान–नीतोड़ा





श्री आदिनाथ जिनालय–लोटाणा

श्री लोटाणा तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री आदीश्वर भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण लगभग ७५ सें० मी० ।

तीर्थ स्थल * नान्दिया से ६.५ कि० मी० दूर छोटे से लोटाणा गाँव में एक टेकरी पर।

प्राचीनता * इस का प्राचीन नाम लोटीपुर पट्टन व लोटाणक था, ऐसा शिलालेखों में उल्लेख मिलता है। मन्दिर में काउसग्गीया मूर्ति पर सं० ११४४ का लेख उत्कीर्ण है। मन्दिर में दो और कायोत्सर्ग प्रतिमाओं पर वि० सं० ११३० ज्येष्ठ शुक्ला ५ का लेख उत्कीर्ण है। प्रतीत होता है उस समय यहाँ का जीर्णोद्धार हुआ होगा। यह श्री आदिनाथ प्रभु की प्रतिमा श्री शत्रुंजय महातीर्थ के तेरहवें उद्धार की है। यहाँ का अन्तिम जीर्णोद्धार वि० सं० २०१६ में हुआ था।

विशिष्टता * यह तीर्थ प्राचीनता के कारण तो अपनी विशेषता रखता ही है। इसके अतिरिक्त श्री आदीश्वर प्रभु की भव्य व अद्वितीय प्रतिमा श्री शत्रुंजय शास्वत तीर्थ के तेरहवें उद्धार की रहने के कारण यहाँ की विशेष महत्ता मानी जाती है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त यहाँ कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * मन्दिर का दृश्य गाँव की छोटी सी टेकरी पर अति ही आकर्षक लगता है। प्रभु प्रतिमा की कला अपना विशेष स्थान रखती है। इस ढंग की परिकर-युक्त प्रतिमा अन्यत्र नहीं है।

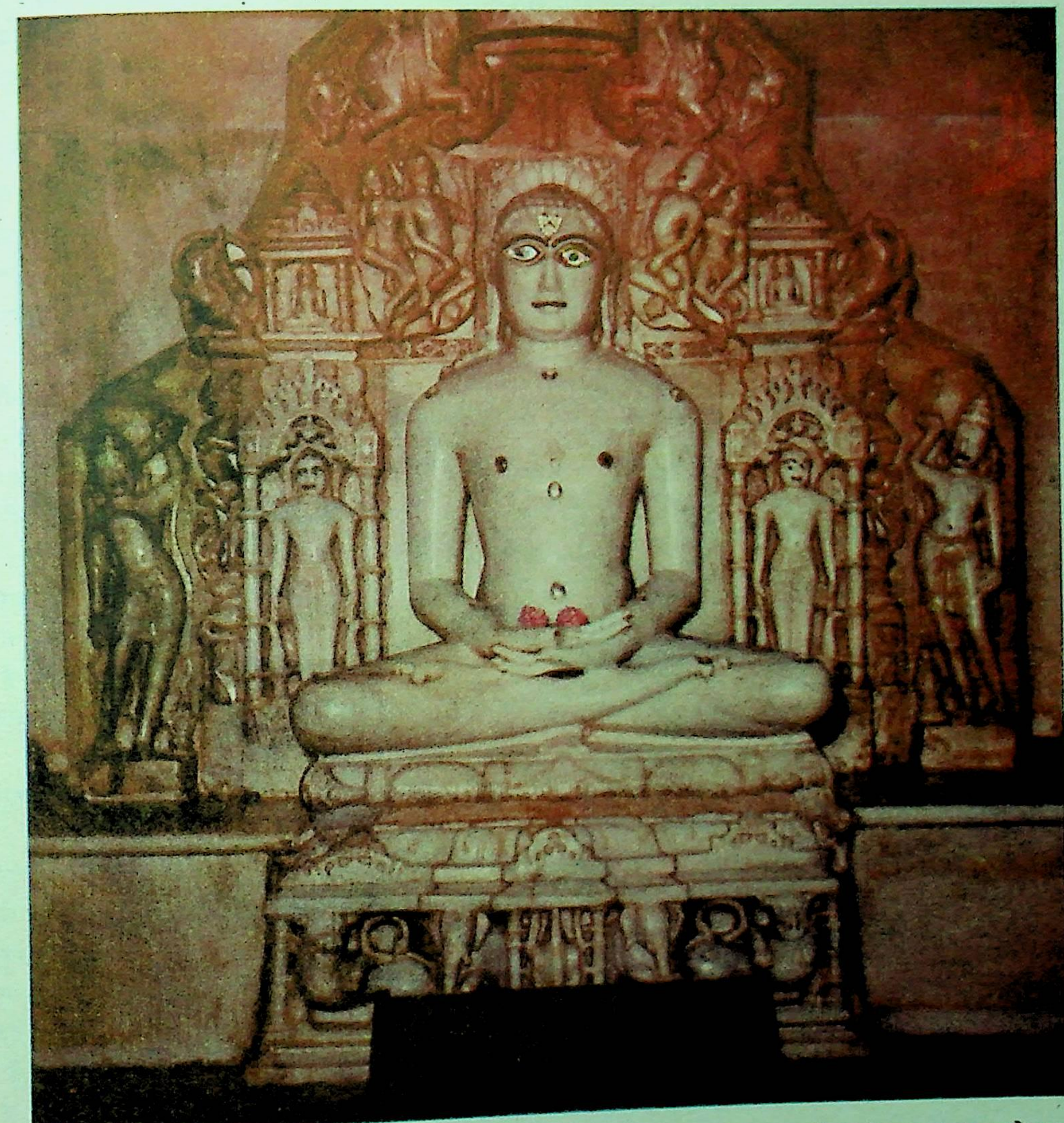
मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन सिरोही रोड़ २० कि० मी० दूर है, जहाँ से बस द्वारा नान्दिया व नान्दिया से जीप द्वारा आया जा सकता है। नान्दिया से यह स्थान ७ कि० मी० है, रोड़ कच्ची है। इसलिए जीप या बैलगाड़ी द्वारा आया जा सकता है। बामनवाड़जी तीर्थ से १६ कि० मी० दूर है, नान्दिया होकर आना पड़ता है।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए मन्दिर के अहाते में ही कुछ कमरे बने हुए हैं, जहाँ पर पानी व थोड़े व्यक्तियों के लिए बर्तन व ओढ़ने-बिछाने के वस्त्रों का साधन मिल सकता है।

पेढ़ी * श्री जैन पेढ़ी : डाक घर – नान्दिया : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – पिन्डवाड़ा : टेलीफोन – पी० सी० ओ० पिन्डवाड़ा ।

★

सहायक : १. शाह हस्तीमलजी अनाजी छाजेड़, मायुरम (तमिलनाडु) २. श्री शान्तिलालजी ऋषभचन्दजी बम्ब, विलुपुरम (तमिलनाडु) ३. हीरालालजी रिखबचन्दजी पाटनी, सेलम (तमिलनाडु) ४. हीराचन्दजी इन्दरचन्दजी, सेलम (तमिलनाडु)



श्री आदीश्वर भगवान–लोटाणा

श्री दियाणा तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग, ६० सें० मी०।

तीर्थ स्थल * सरूपगंज से १७ कि० मी० दूर घने जंगल में पहाड़ियों के बीच।

प्राचीनता * यह तीर्थ स्थल चरम तीर्थंकर भगवान महावीर के समय का माना जाता है। जैसे लोक विख्यात कहावत है 'नाणा, दियाणा, नान्दिया जीवित स्वामी वान्दिया' यह प्रतिमा प्रभु वीर के समय की मानी जाती है। कहा जाता है कि भगवान महावीर इधर विचरे तब काउसग्ग ध्यान में यहाँ रहे थे व उनके भ्राता नन्दीवर्धन ने यहाँ बावनजिनालय भव्य मन्दिर का निर्माण करवाकर यह प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई थी। प्रभु प्रतिमा की कला से ही इसकी प्राचीनता सिद्ध हो जाती है। निःसन्देह इस तीर्थ का अनेकों बार जीर्णोद्धार हुआ होगा एवं किसी समय यह एक विराट नगरी रही होगी।

आज भयानक जंगल में सुरम्य पहाड़ियों के बीच सिर्फ यह मन्दिर प्राचीनता की याद दिलाता है। यहाँ प्राचीन पटों व बावड़ियों पर तेरहवीं व चौदहवीं सदी के लेख उत्कीर्ण हैं। सं० १४३६ पौष शुक्ला ६ गुरुवार को यहाँ श्री पार्श्वनाथ चरित्र की रचना होने का उल्लेख मिलता है।

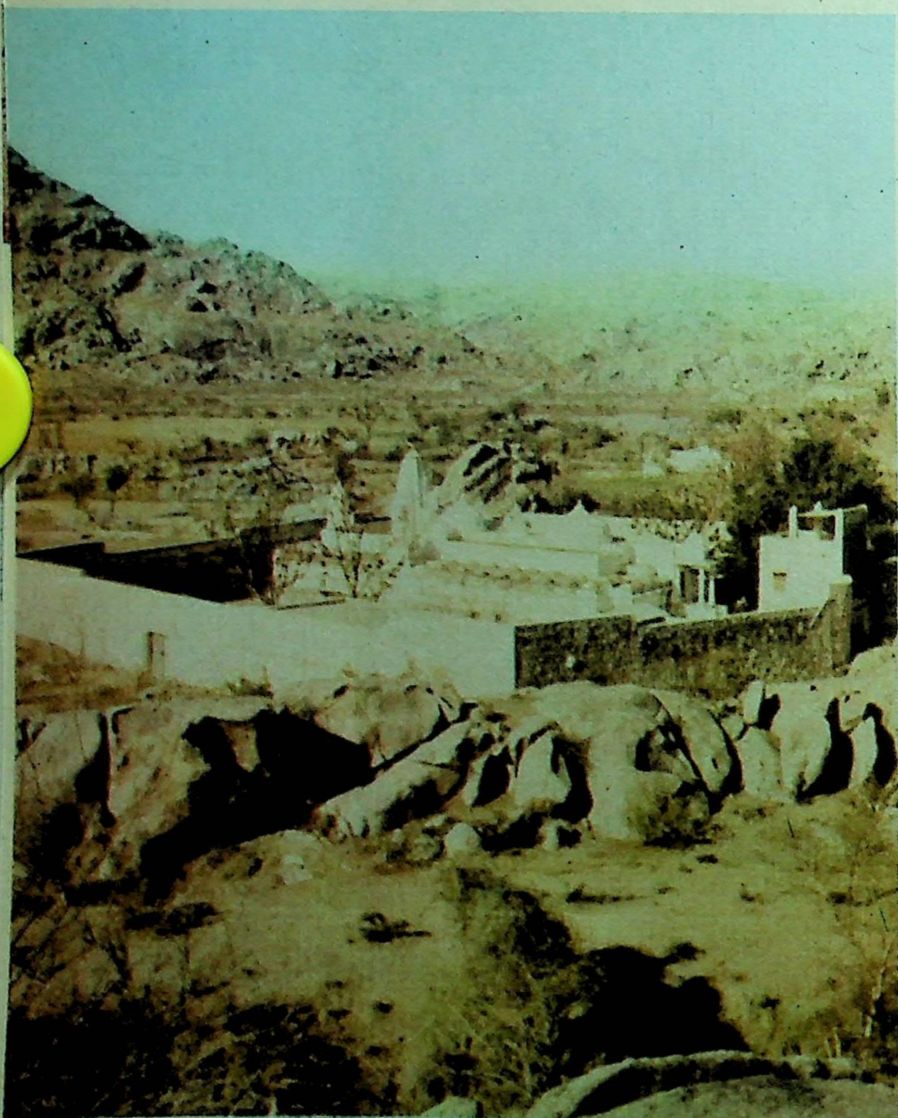
विशिष्टता * यह तीर्थ स्थल प्रभु वीर के समय का माना जाने के कारण यहाँ की महान विशेषता है। यह तीर्थ भी छोटी मारवाड़ की पंचतीर्थी का एक स्थान है। इस ढंग के इतने प्राचीन, एकान्त जंगल में, शान्त व शुद्ध वातावरण से युक्त तीर्थ स्थान अल्प ही है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त यहाँ कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य का जितना भी वर्णन करें, कम है। तीनों तरफ पहाड़ों के बीच भयानक जंगल में सायं व रात का वातावरण मन को प्रफुल्लित करता है। लगता है जैसे किसी दिव्य लोक में आ गये हैं। रात में जंगली जानवरों की बार-बार गर्जना सुनाई देती है। मानो वे भी बार-बार प्रभु का नाम स्मरण कर रहे हैं। प्रभु प्रतिमा अति ही मनमोहक है। जैसे प्रभु वीर गंभीर व शान्त मुद्रा में साक्षात् विराजमान हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन सरूपगंज १८ कि० मी० दूर है, जहाँ से नीतोड़ा व केर होते हुए आया जाता है। बस सर्विस नहीं है। रोड़ कच्ची होने के कारण जीप या बस से आना ही सुविधाजनक है। पेढ़ी की तरफ से सरूपगंज (महावीर भवन) में जीप उपलब्ध

श्री महावीर जिनालय का दूर दृश्य–दियाणा



है। यात्रीगण संपर्क साधकर जीप का इन्तजाम करवा सकते हैं।

सुविधाएं ※ ठहरने के लिए मन्दिर के अहाते में ही धर्मशाला है, जहाँ पानी, बर्तन व ओढ़ने-बिछाने के वस्त्रों की सुविधा है। भोजन बनाने की सामग्री पेढी पर मिल जाती है।

पेढ़ी ※ श्री दियाणाजी जीवित स्वामीजी कारखाना : डाक घर – दियाणा : स्टेशन – सरूपगंज : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – सरूपगंज : टेलीफोन – पी० सी० ओ० सरूपगंज।

जीवित स्वामी श्री महावीर भगवान–दियाणा



सहायक : श्रीमती भंवरीकंवरजी समदड़िया धर्मपत्नी नागौर (राज०) निवासी स्व० श्री सरदारमलजी समदड़िया मद्रास–१.

श्री शान्तिनाथ भगवान–सिवेरा



श्री सिवेरा तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री शान्तिनाथ भगवान, पद्मासनस्थ ।

तीर्थ स्थल * सिवेरा गांव के मध्य ।

प्राचीनता * इसका प्राचीन नाम सिपेरक रहने का उल्लेख शिलालेखों में मिलता है। सं० ११०६ वैशाख शुक्ला ८ के शुभ दिन आचार्य श्री शांत्याचार्यजी द्वारा यह प्रतिमा प्रतिष्ठित होने का प्रतिमाजी की गादी पर शिलालेख है। इसलिए संभवतः यह तीर्थ बारहवीं सदी पूर्व का हो सकता है। पश्चात् समय समय पर आवश्यक जीर्णोद्धार हुए होंगे।

विशिष्टता * प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में यहाँ इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * मन्दिर की निर्माण शैली निराले ढंग की है। प्रभु प्रतिमा की कला अति ही आकर्षक है। इसी मन्दिर में कुछ अन्य प्राचीन प्रतिमाओं की कला भी बहुत ही सुन्दर है।

मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन सिरोही रोड़ ८ कि० मी० है, जहाँ से ताँगों की सुविधा है। यहाँ का बस स्टैण्ड झाड़ोली गाँव है, जो कि ५ कि० मी० है। झाड़ोली से आने के लिए बैलगाड़ी के अतिरिक्त कोई सवारी का साधन नहीं है। झाड़ोली से कच्ची सड़क है, लेकिन मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए छोटी सी धर्मशाला है, जहाँ पानी व बर्तन की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री कल्याणजी परमानन्दजी पेढ़ी : सिवेरा गांव : डाक घर – झाड़ोली : रेलवे स्टेशन – सिरोही रोड़ : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान ।



श्री शान्तिप्रभु जिनालय–सिवेरा

श्री धनारी तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री शान्तिनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ६० सें० मी० (प्राचीन मूलनायक)।

तीर्थ स्थल ✻ बनास नदी किनारे बसे धनारी गाँव में पुरोहितों के मोहल्ले में।

प्राचीनता ✻ इस मन्दिर में उपलब्ध शिलालेखों से यह तीर्थ सं० १३४८ से पूर्व का सिद्ध होता है। सं० १३४८ के शिलालेखों से ज्ञात होता है कि उस समय यहाँ के मूलनायक श्री आदीश्वर भगवान थे। हो सकता है कभी जीर्णोद्धार के समय श्री शान्तिनाथ भगवान की यह प्रतिमा प्रतिष्ठित की गयी हो, प्रतिमाजी पर कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है। वि० सं० २००६ में अन्तिम जीर्णोद्धार हुआ। तब आचार्य श्री विजयजिनेन्द्रसूरीश्वरजी के सुहस्ते श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठित करवायी गयी, जो अभी मूलनायक रूप में विद्यमान है।

विशिष्टता ✻ तपागच्छीय कमलकलश शाखा के श्री पूज्यों की गादी यहीं है, जो पाटण गादी की शाखा मानी जाती है। प्रतिवर्ष वैशाख शुक्ला १० को ध्वजा चढ़ती है।

अन्य मन्दिर ✻ नजदीक एक बगीचे में देरियां हैं जिनमें श्रीपूज्य महेन्द्रसूरिजी के पूर्वज यतियों की चरण पादुकाएँ विराजित हैं।

मार्ग दर्शन ✻ गाँव में धर्मशाला है, लेकिन वर्तमान में ठहरने के लिए कोई खास सुविधा नहीं है।

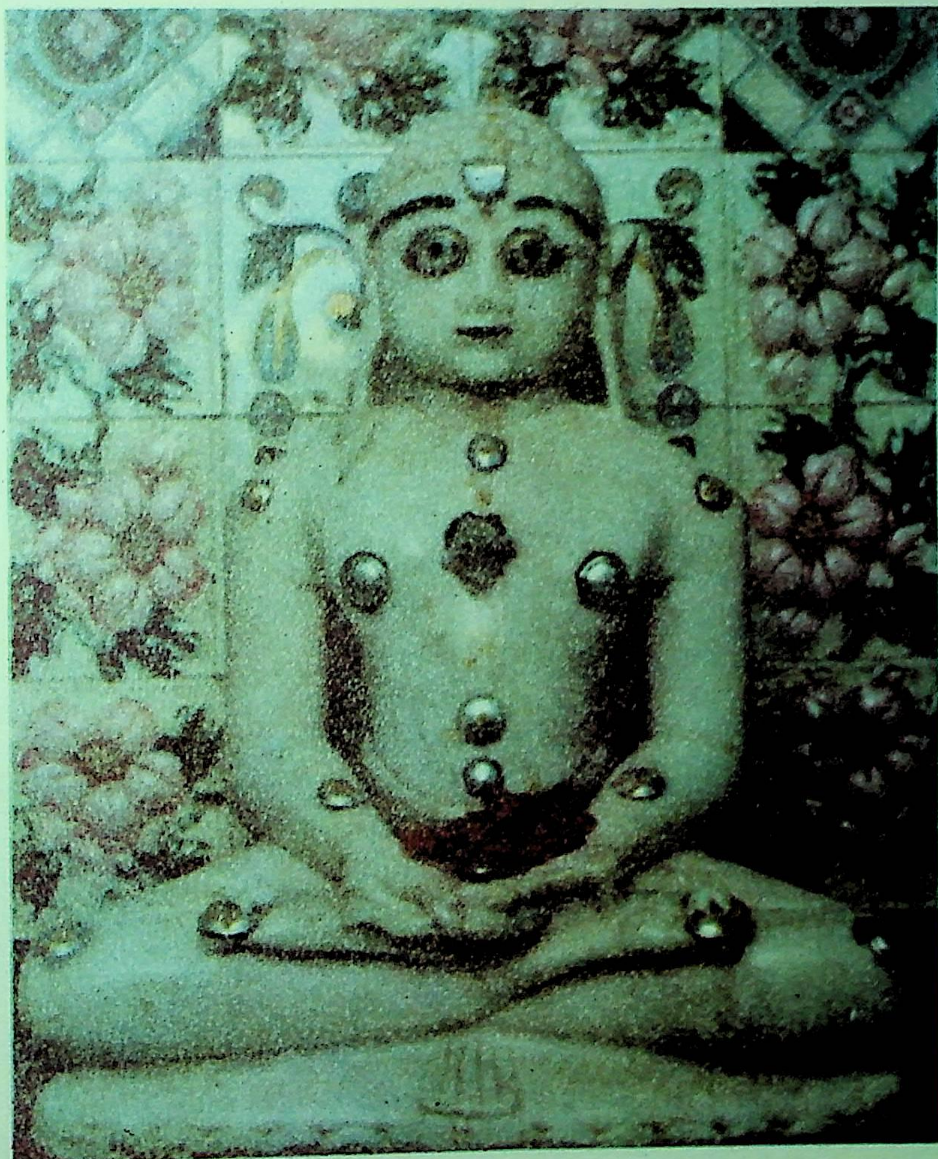
सुविधाएँ ✻ नज़दीक का रेलवे स्टेशन सरूपगंज २ कि० मी० है, जहां से आने के लिए घोड़ा-गाड़ी का साधन है। बस, आबू–सिरोही मार्ग में मुख्य सड़क पर ठहरती है, जो कि यहाँ से लगभग एक कि० मी० है, व वहाँ से सवारी का कोई साधन नहीं है। मन्दिर तक पक्की सड़क है, कार मन्दिर तक जा सकती है। रास्ता तंग रहने के कारण बस २०० मीटर दूर ठहरानी पड़ती है।

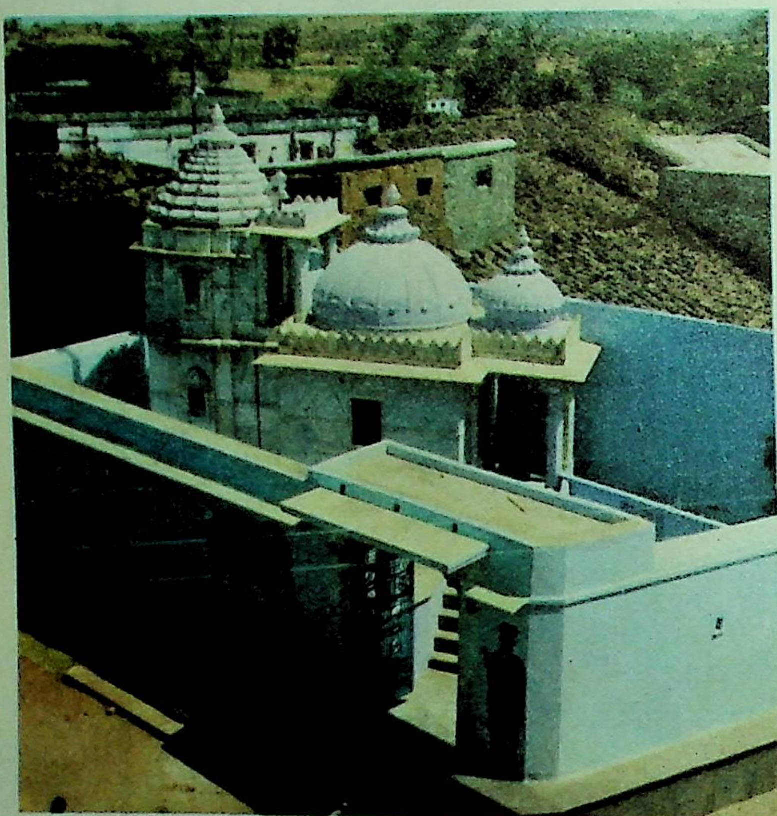
पेढ़ी ✻ श्री परसोत्तमदास परमानन्दजी जैन पेढ़ी : डाक घर – धनारी : व्हाया – सरूपगंज : तहसील – पिन्डवाड़ा : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – सरूपगंज : टेलीफोन – पी० सी० ओ० सरूपगंज।

श्री शान्तिनाथ जिनालय–धनारी



श्री शान्तिनाथ भगवान–धनारी





श्री शान्तिनाथ जिनालय–वाटेरा

श्री वाटेरा तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री शान्तिनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ४५ सें० मी० (प्राचीन मूलनायक)

तीर्थ स्थल * वाटेरा गाँव के चौराहे पर।

प्राचीनता * प्राचीन मूलनायक भगवान के परिकर की गादी पर वि० सं० ११७१ ज्येष्ठ शुक्ला ४ का लेख उत्कीर्ण है व उस समय श्री महावीर भगवान के मूलनायक रहने का उल्लेख है। इसलिए संभवतः किसी वक्त जीर्णोद्धार के समय उसी परिकर में श्री शान्तिनाथ भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठित की गयी होगी। लेकिन उल्लेखानुसार यह तीर्थ विक्रम की बारहवीं सदी से पूर्व का माना जाता है। अन्तिम जीर्णोद्धार वि० सं० २०२२ में होकर ज्येष्ठ शुक्ला ३ के शुभ दिन आचार्य श्री विजयजिनेन्द्र सूरीश्वरजी के मुहूर्त्ते श्री संभवनाथ भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठित की गयी, जो अभी मूलनायक रूप में विद्यमान है।

विशिष्टता * प्रतिवर्ष ज्येष्ठ शुक्ला ३ को ध्वजा चढ़ती है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त अन्य कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * प्राचीन प्रभु प्रतिमा अति ही सुन्दर कलात्मक व प्रभावशाली है। इसी मन्दिर में और भी प्राचीन प्रतिमाएँ दर्शनीय हैं।

मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन सरूपगंज ८ कि० मी० है, जहां पर महावीर भवन में संघ की तरफ से मोटर का साधन है व आवश्यक नकरा लेकर दी जाती है। सरूपगंज से टैक्सी का भी साधन है, लेकिन रोहीड़ा तक ही जाती है। रोहीड़ा यहाँ से ३ कि० मी० है, जहाँ पर ताँगों की सुविधा है। बस भी रोहीडा तक ही आती है। रोहीड़ा

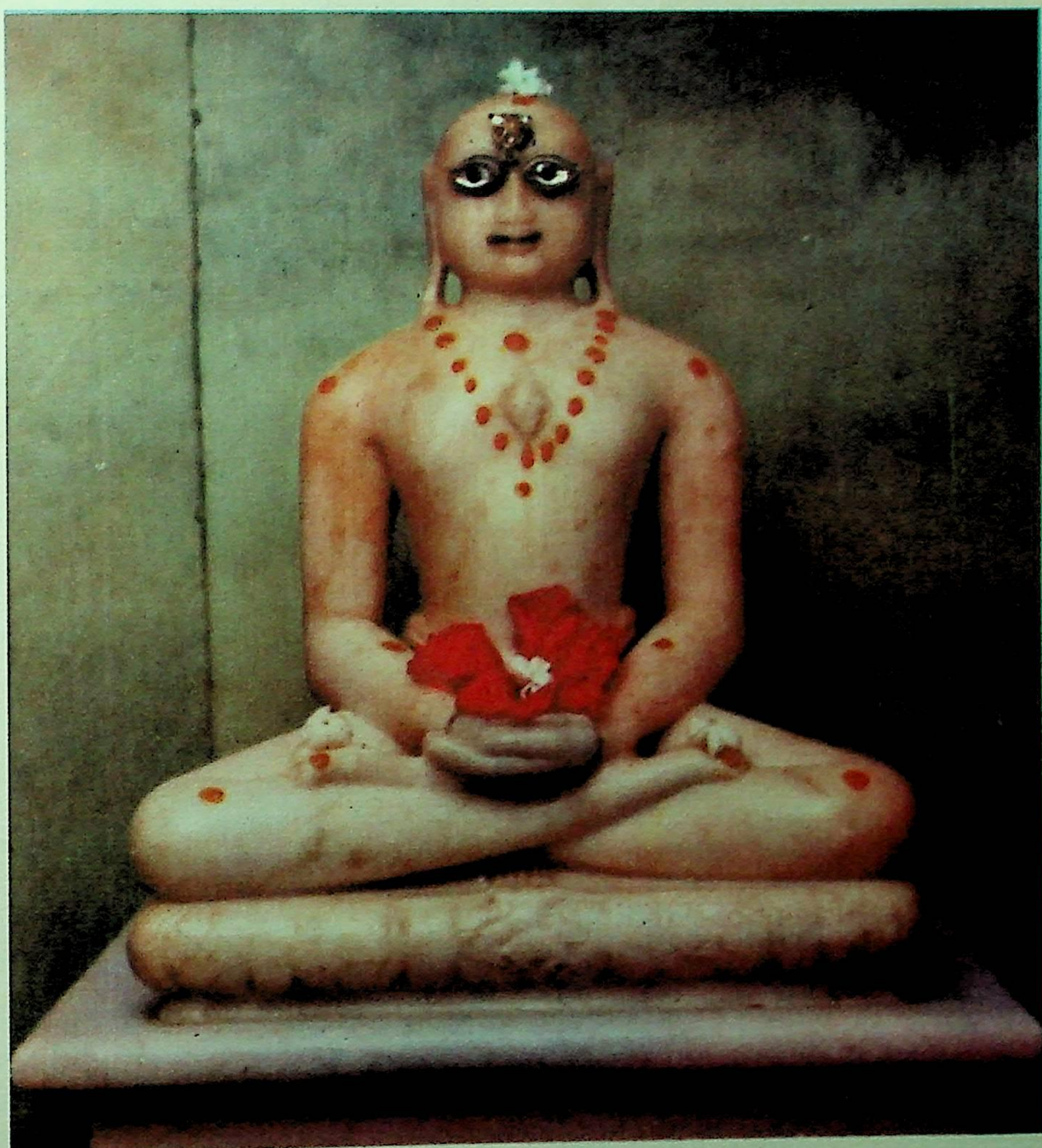
सहायक : १. शाह हीराचन्दजी बालचन्दजी, सेलम (तमिलनाडु) २. श्री हेमराजजी शान्तीलालजी सिंघवी, मद्रास–१४. ३. श्री हीराचन्दजी शिखरचन्दजी कोचर, इरोड (तमिलनाडु) ४. श्री जुगराजजी पारसमलजी लोढा, मद्रास–१५

से कच्ची सड़क है। बरसात के मौसम में बस व कार का मन्दिर तक जाना सम्भव नहीं, अन्यथा जा सकती हैं।

सुविधाएँ ❊ पुराना उपाश्रय है, लेकिन ठहरने के लिए कोई सुविधा नहीं है।

पेढ़ी ❊ श्री समस्त जैन संघनी पेढ़ी : डाक घर – वाटेरा : रेलवे स्टेशन – सरूपगंज – तहसील – पिन्डवाड़ा जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – रोहीड़ा : टेलीफोन – पी० सी० ओ० रोहीड़ा।

श्री शान्तिनाथ भगवान–वाटेरा



श्री आदिनाथ भगवान–झाड़ोली



श्री झाड़ोली तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री आदीश्वर भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग ६० सें० मी०।

तीर्थ स्थल * झाड़ोली गाँव के मध्यस्थ।

प्राचीनता * शिलालेखों से ज्ञात होता है कि इसके प्राचीन नाम झाड़वली, झाववली व झाझउली आदि थे। मन्दिर में सं० १२३४ व सं० १२३६ के शिलालेख विद्यमान हैं। विक्रम संवत १२५२ में श्री चन्द्रावती नगरी के राजा धारावर्ष के राज्यकाल में (उस समय उनके कला कुशल मंत्रीश्वर श्री नागड़ थे) इस मन्दिर में मण्डप का उद्धार व छः चौकी बनवाने का उल्लेख है।

स० १२५५ में धारावर्ष राजा की पटराणी (नाडोल के चौहान राजा कल्हणदेव की सुपुत्री) श्री शृंगारदेवी द्वारा धर्मशील दानी श्री नीरड़ की उपस्थिति में इस मन्दिर के लिए एक वाव (अरट) भेंट करने का उल्लेख भी मंदिर के एक शिलालेख में उत्कीर्ण है। इस शिलालेख के रचयिता आचार्य श्री तिलकप्रभसूरिजी हैं यह वाव आज भी जैन संघ के आधीन है जिसे लोग "देव की वाव" कहते हैं। इस वाव में भी शिलालेख विद्यमान है।

उक्त वृतांत से यह सिद्ध होता है कि यह मंदिर वि० सं० १२५२ से पूर्व का है। उस समय मूलनायक श्री महावीर भगवान थे। तत्पश्चात् कभी जीर्णोद्धार के समय श्री आदीश्वर भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठित की गयी होगी। इसी प्रतिमा को श्री शान्तिनाथ भगवान भी कहते हैं। सं० १४६६ में श्री मेघ कवि ने अपनी तीर्थमाला में यहाँ श्री शान्तिनाथ भगवान के मन्दिर का उल्लेख किया है। प्रतिमाजी पर सं० १६३२ का लेख उत्कीर्ण है।

विशिष्टता * किसी समय यह एक समृद्धशाली शहर था, ऐसा यहाँ उपलब्ध शिलालेखों से प्रतीत होता है। समय समय पर राजाओं की इस तीर्थ के प्रति अटूट श्रद्धा व भक्ति उल्लेखनीय है।

प्रतिवर्ष मिगसर शुक्ला ६ को ध्वजा चढ़ती है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त और कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * मन्दिर में तोरणों व स्थंभों पर की हुई प्राचीन शिल्पकला दर्शनीय है, जो कि आबू देलवाड़ा की याद दिलाती है।

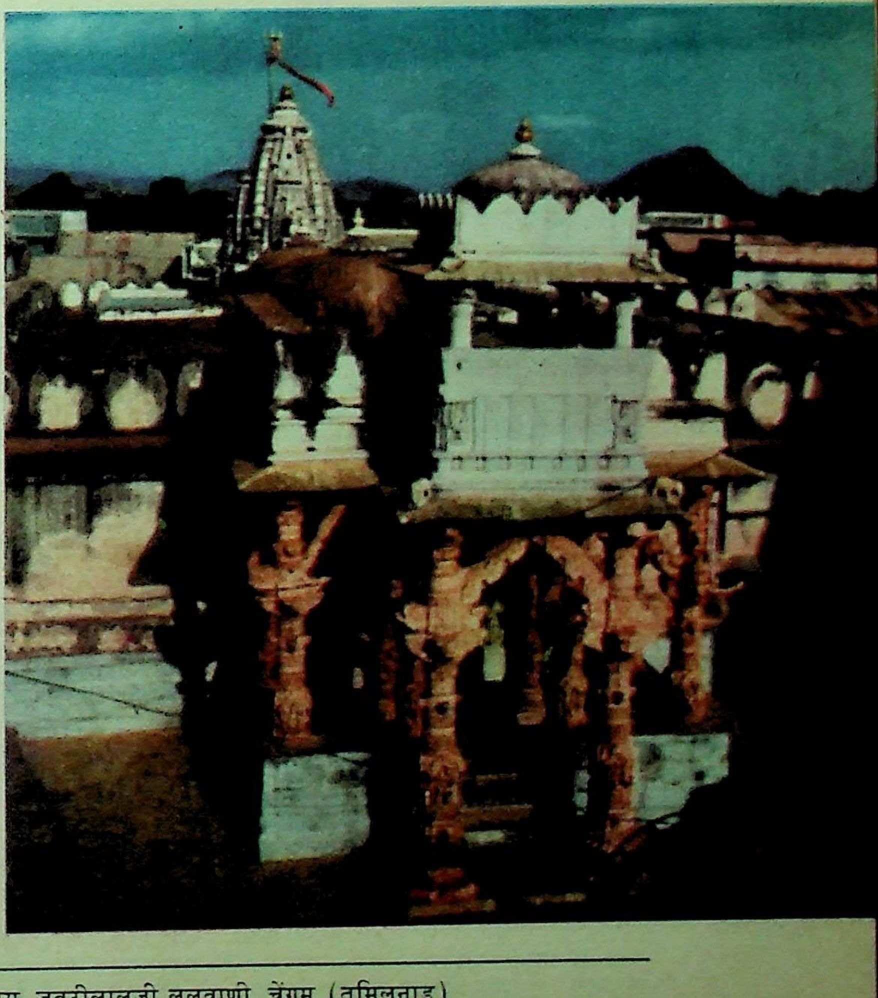
मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन सिरोही रोड़ ३ कि० मी० है, जहाँ से ताँगों की सुविधा उपलब्ध है। मन्दिर से बस स्टेशन एक फर्लांग दूर है। मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं। बामनवाड़ जी तीर्थ से यह स्थान ४ कि० मी० दूर है।

सुविधाएं * ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ बिजली, पानी, बर्तन, ओढ़ने बिछाने के वस्त्र की सुविधा है।

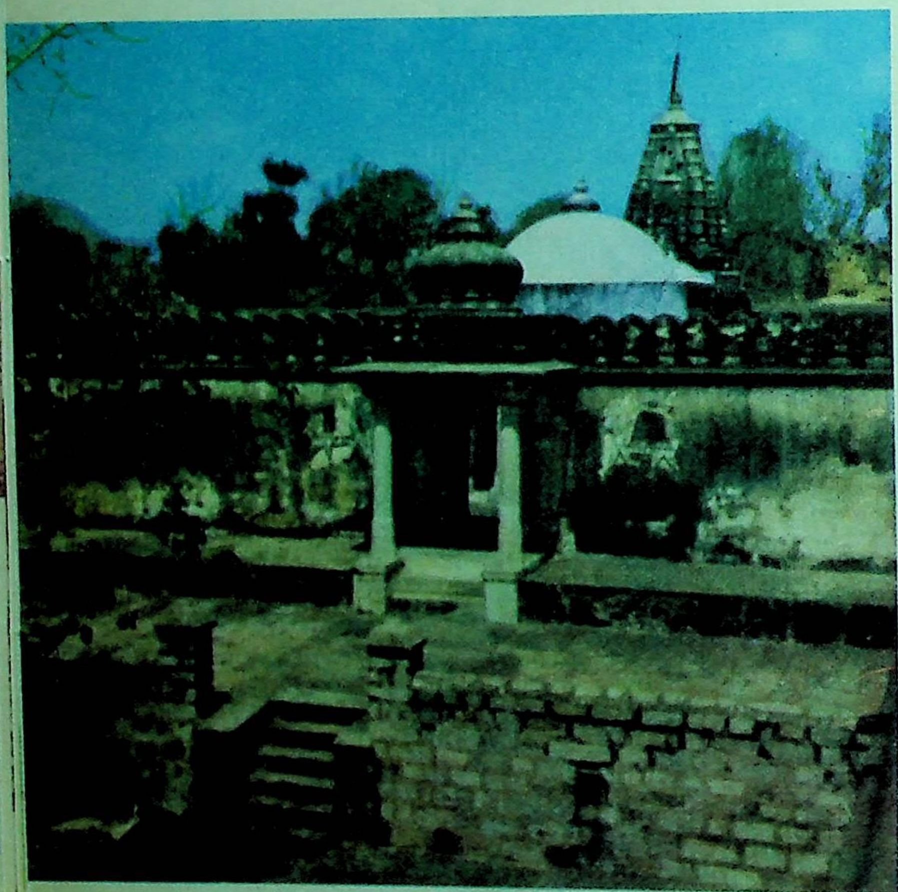
पेढ़ी * श्री आदीश्वर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी : डाक घर – झाड़ोली : तालुका – पिन्डवाड़ा : जिला – सिरोही : प्रांत – राजस्थान : तार घर – सिरोही रोड़ : टेलीफोन – पी० सी० ओ०, सिरोही रोड़।

ॐ

श्री आदिनाथ प्रभु जिनालय–झाड़ोली



सहायक : १. श्री जसवन्तराजजी ताराचन्दजी कोठारी, मद्रास–१३. २. श्री एस. जवरीलालजी ललवाणी, चेंगम (तमिलनाडु)
३. श्री जवाहरलालजी सम्पतराजजी कांकरिया, मद्रास–२ ४. श्री जुगराजजी नन्दलालजी पावेचा, चेंगलपेट (तमिलनाडु)



श्री आदीश्वर भगवान मन्दिर–लाज

श्री लाज तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री आदीश्वर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ५५ सें० मी० (प्राचीन मूलनायक)

तीर्थ स्थल * लाज गांव के मध्य विशाल परकोटे में।

प्राचीनता * इस मन्दिर के एक स्थंभ पर सं० १२४४ माघ शुक्ला ६ का लेख उत्कीर्ण है। इससे यह सिद्ध होता है कि यह मन्दिर सं० १२४४ के पूर्व का है।

अन्तिम जीर्णोद्धार वि० सं० १९७७ में होकर धनारी के श्रीपूज्यजी श्री महेन्द्रसूरीश्वरजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा संपन्न हुई। वर्तमान मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान हैं।

विशिष्टता * प्रतिवर्ष पोष कृष्णा १० को मेला लगता है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * प्रभु प्रतिमा की कला अति सौम्य व निराले ढंग की है।

मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन सिरोही रोड़ ११ कि० मी० है, जहाँ से तांगों व टैक्सी की सुविधा है। यहाँ का बस स्टेशन कोजरा ३ कि० मी० है, जहाँ से सवारी का कोई साधन नहीं है। कार व बस मन्दिर तक जा सकती हैं। लेकिन वर्षाकाल में जाना कठिन है।

सुविधाएँ * मन्दिर के निकट ही धर्मशाला है। लेकिन वर्तमान में कोई खास सुविधा नहीं है।

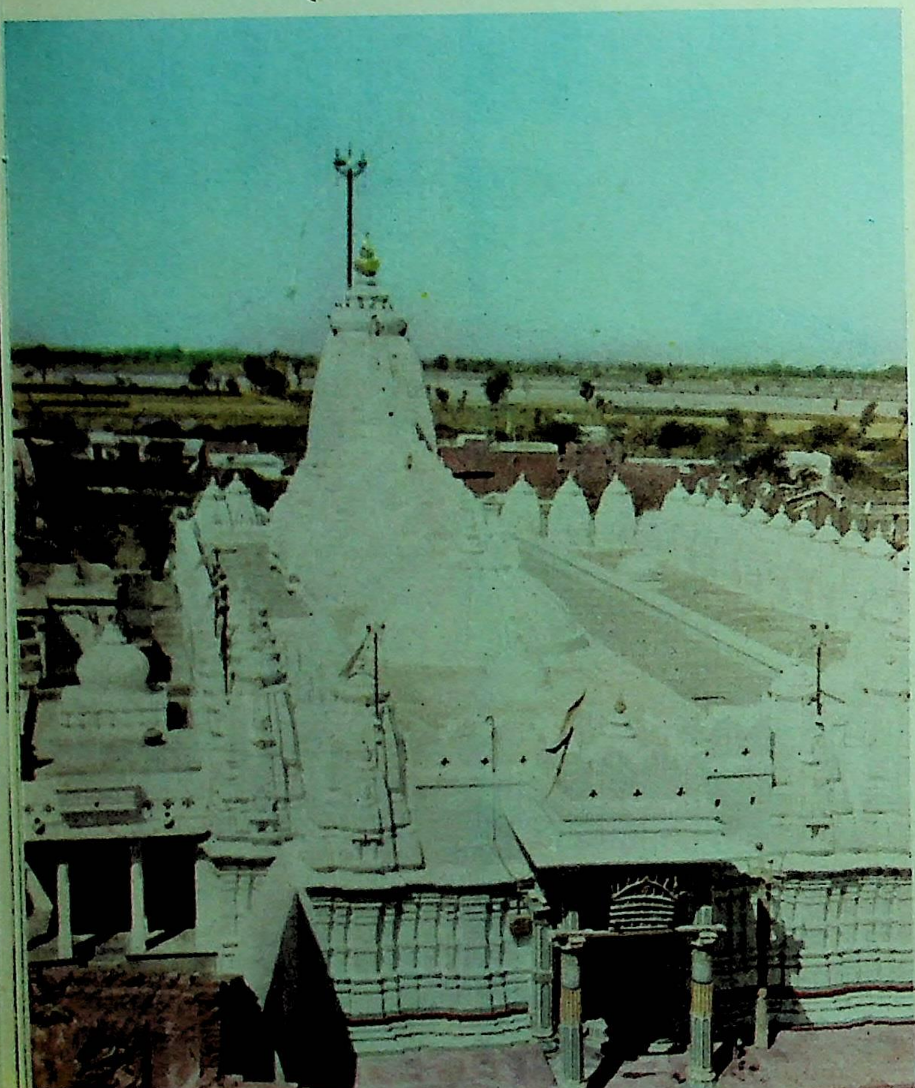
पेढ़ी * श्री जैन देरासर पेढ़ी : लाज गाँव – डाक घर : –कोजरा : तहसील – पिन्डवाड़ा : जिला – सिरोही : तार घर – सिरोही रोड़ : टैलीफोन – पी० सी० ओ० सिरोही रोड़।

सहायक : १. शाह जेठमल सेनमल, मद्रास–१ २. श्री जोगराजजी घेवरचन्दजी लूंकड़, फलोदी (राज०) ३. श्री जोगराजजी मांगीलालजी लूंकड़ पनरुटी (तमिलनाडु) ४. श्री जवाहरलालजी अनराजजी मुथा गढ सीवाना (राज०)



श्री आदीश्वर भगवान–नाज

श्री महावीर भगवान मन्दिर–नाणा



श्री नाणा तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग १.२२ मीटर, परिकरयुक्त लगभग १.९८ मी०।

तीर्थ स्थल * नाणा गाँव के मध्यस्थ।

प्राचीनता * यह तीर्थ महावीर भगवान के समय का बताया जाता है। जैसे कहा है 'नाणा, दीयाणा, नान्दिया जीवित स्वामी वान्दिया'। मन्दिर में प्राप्त वि० सं० १०१७ से सं० १६५९ तक के शिलालेखों से प्रमाणित होता है कि यह तीर्थ सदियों तक जाहोजलालीपूर्ण रहा। लेकिन नाणा कब बसा, इसका इतिहास मिलना कठिन है।

श्री महावीर भगवान के जीवन काल की प्रतिमा शायद जीर्णोद्धार के समय बदली गयी होगी, ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि वर्तमान प्रतिमा पर वि० सं० १५०५ माघ कृष्णा ९ शनिवार को श्री शान्तिसूरीश्वरजी द्वारा प्रतिष्ठित किये जाने का लेख उत्कीर्ण है। लेकिन यह प्रतिमा भी बहुत ही प्रभावशाली है।

विशिष्टता * यह तीर्थ प्रभु वीर के समय का माना जाने के कारण इसकी महान विशेषता है। नाणक्यगच्छ का उत्पत्ति स्थान यही है। इस गच्छ की उत्पत्ति वि० की बारहवीं सदी से पूर्व हुई होगी, ऐसा उल्लेखों से ज्ञात होता है। यह बामणवाड़ा पंचतीर्थी का एक तीर्थ स्थान माना जाता है। अमरसिंह मायावीर राजा ने त्रिभुवन मंत्री के वंशज श्री नारायण मूता को नाणा गांव भेंट दिया था। नारायण ने एक साहराव नाम का अरट भगवान की पूजा सेवा के लिए मन्दिर को भेंट दिया था। उस समय उपकेशगच्छीय आचार्य श्री सिंहसूरि विद्यमान थे। शिलालेख पर वि॰ सं० १६५९

भादवा शुक्ला ७ का लेख उत्कीर्ण है। उक्त अरट अभी भी जैन संघ के आधीन है।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य ✻ प्रभु प्रतिमा की कला अति ही आकर्षक व हँसमुख है और सहज ही में मन को मोह लेती है। प्रतिमा के आसपास तोरण की कला दर्शनीय है। यहाँ पर प्राचीन नन्दीश्वरद्वीप का पाषाण पट्ट कलात्मक है। पट्टपर वि० सं० १२७४ का लेख उत्कीर्ण है।

मार्ग दर्शन ✻ यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन नाणा २.५ कि० मी० है, जहाँ से आने के लिए ताँगों की सुविधा है। मन्दिर से बस स्टैण्ड की दूरी सिर्फ १०० मी० है। बामनवाड़ा से नाणा २५ कि० मी० दूर है। सिरोही रोड, पिण्डवाड़ा होकर जाना पड़ता है।

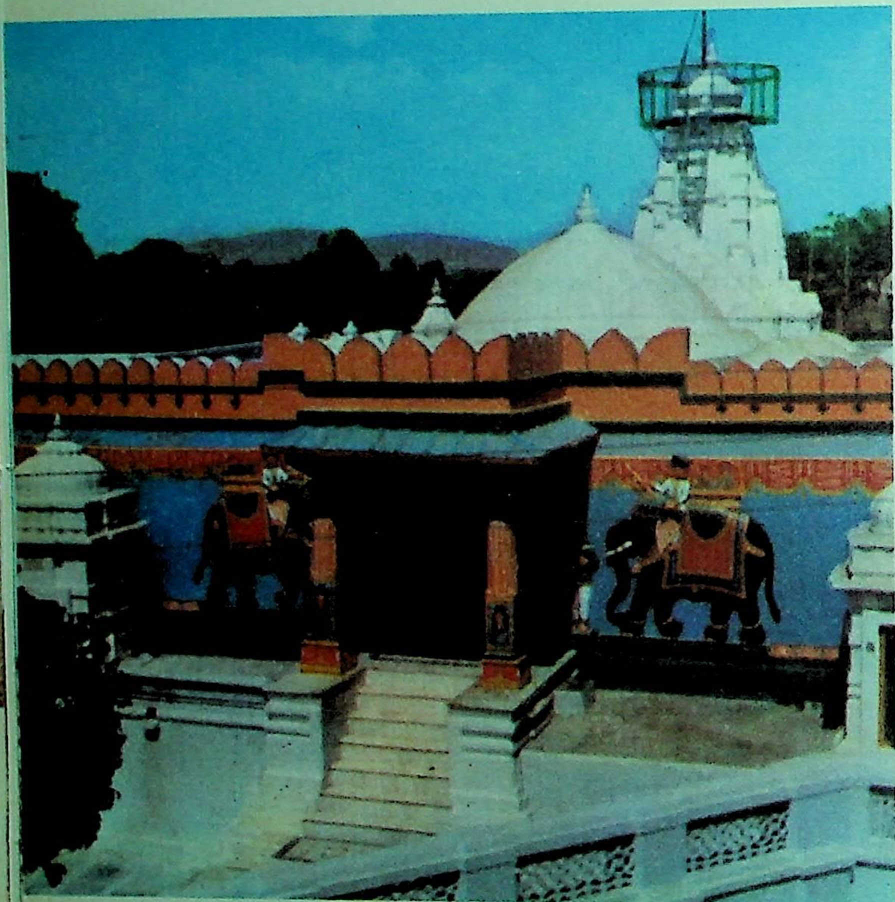
सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पानी, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र और बिजली की सुविधा है।

पेढ़ी ✻ श्री वर्धमान आनन्दजी जैन पेढ़ी : डाक घर – नाणा : तहसील – बाली : जिला – पाली : प्रान्त – राजस्थान तार घर – नाणा : टेलीफोन – पी० सी० ओ० नाणा।

श्री जीवितस्वामी भगवान महावीर–नाणा



सहायक : शाह दीपचन्दजी वीसाजी, शिवगंज (राज०) वाले, सेलम (तमिलनाडु)।



श्री कछुलिका पार्श्वनाथ जिनालय – काछोली

श्री काछोली तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री कछुलिका पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ६० सें० मी० ।

तीर्थ स्थल ✻ काछोली गाँव के मध्यस्थ।

प्राचीनता ✻ मन्दिर में उपलब्ध शिलालेखों से प्रतीत होता है कि इसका प्राचीन नाम कछुलिका था। मूलनायक भगवान के परिकर की गादी पर सं० १३४३ का लेख उत्कीर्ण है। यह तीर्थ उससे भी पूर्व का माना जाता है।

विशिष्टता ✻ काछोलीवाल गच्छ का उत्पत्ति स्थान यही है। प्रतीत होता है किसी समय यह नगर जाहोजलालीपूर्ण था व सुसम्पन्न श्रावकों के सहस्त्रों कुटुम्बों से आबाद था।

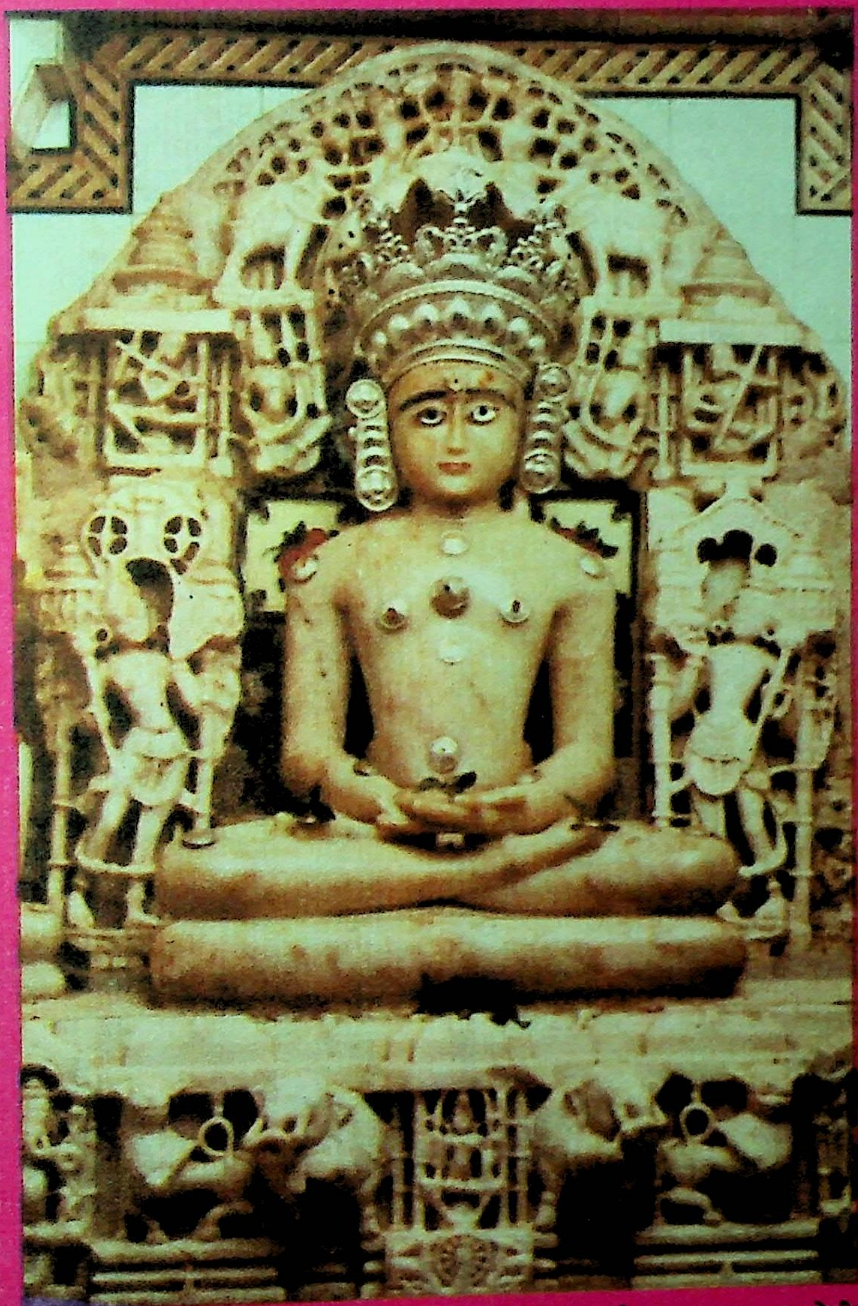
प्रतिवर्ष मागशीर्ष शुक्ला १० को ध्वजा चढ़ती है।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में यहाँ इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

मार्ग दर्शन ✻ नजदीक का रेलवे स्टेशन सरूपगंज ५ कि० मी० है, जहाँ से टैक्सी व तांगों की सुविधा है। सरूपगंज में महावीर भवन में भी गाड़ी का साधन है। यहाँ का बस स्टेशन उडवारिया १.५ कि० मी० है, जहाँ पर सवारी का कोई साधन नहीं है। मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पर पानी, बिजली व बर्तन की सुविधा है।

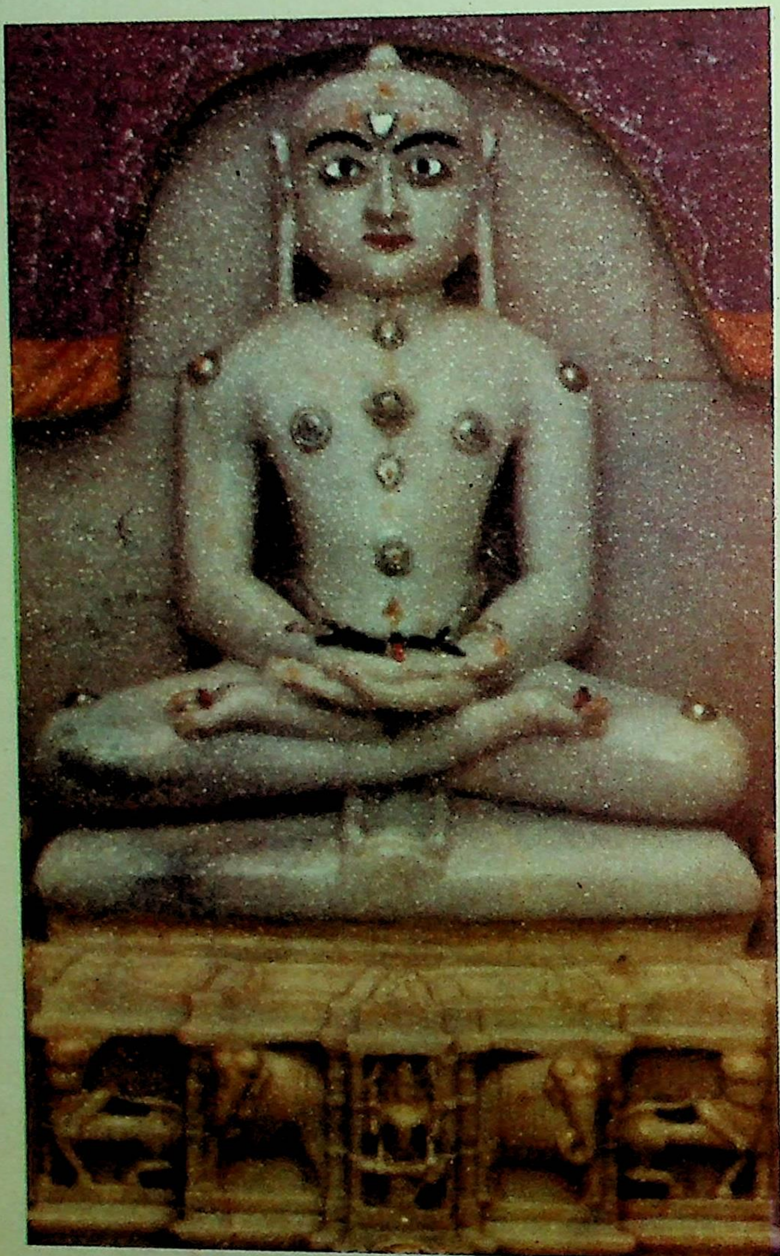
पेढ़ी ✻ श्री काछोली जैन संघ : डाक घर – काछोली : तहसील – पिन्डवाड़ा : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – सरूपगंज : टेलीफोन – पी० सी० ओ० सरूपगंज।



श्री कछुलिका पार्श्वनाथ भगवान – काछोली

श्री कोजरा तीर्थ

श्री संभवनाथ भगवान–कोजरा



तीर्थाधिराज ✻ श्री संभवनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ७५ सें० मी० ।

तीर्थ स्थल ✻ कोजरा गाँव के मध्यस्थ।

प्राचीनता ✻ मन्दिर में गूढ़मण्डप के एक स्थंभ पर सं० १२२४ में राणा रावसी द्वारा श्री पार्श्वनाथ भगवान के मन्दिर में स्थंभ निर्मित करवाने का शिलालेख था। वर्तमान में जीर्णोद्धार के समय शायद शिलालेख कहीं रह गया होगा। अतः यह तीर्थ बारहवीं शताब्दी पूर्व का माना जाता है। वर्तमान मूलनायक भगवान की प्रतिमा पर कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है। अनुमानित पहिले यहाँ के मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान होंगे। जीर्णोद्धार के समय किसी वक्त यह प्रतिमा प्रतिष्ठित की गयी होगी।

अभी भी जीर्णोद्धार का कार्य चालू है।

विशिष्टता ✻ उल्लेखित शिलालेखों से प्रतीत होता है कि यहाँ के राव राणा को जैन धर्म के प्रति अटल श्रद्धा थी। तभी तो स० १२२४ मे हुए जीर्णोद्धार मे उन्होंने भी भाग लिया था।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में यहाँ पर इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य ✻ मन्दिर निर्माण का कार्य अति ही सुन्दर ढंग से हुआ है। प्रभु प्रतिमा अति ही प्रभावशाली व सुन्दर है।

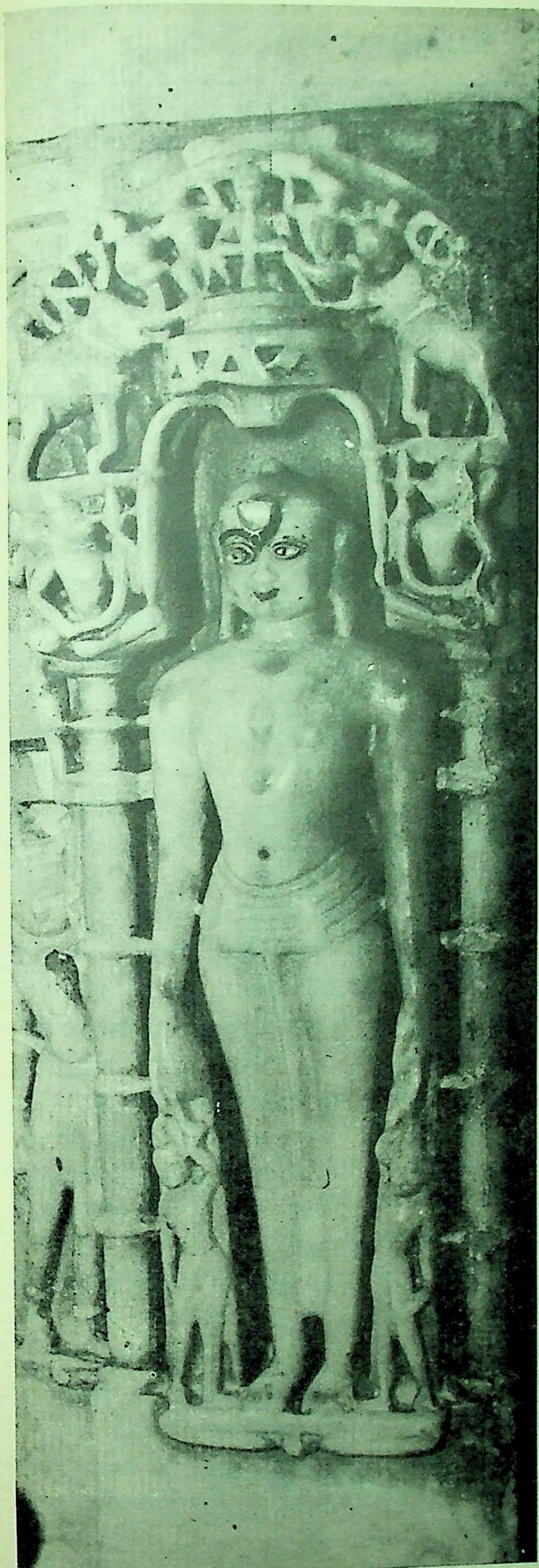
मार्ग दर्शन ✻ नज़दीक का रेलवे स्टेशन सिरोही रोड़ ८ कि० मी० है, जहाँ पर तांगों व टैक्सी का साधन है। यहाँ का बस स्टेशन मन्दिर से २०० मीटर दूर है।

सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ बिजली व पानी का साधन है।

पेढ़ी ✻ श्री संभवनाथ जैन पेढ़ी : डाक घर – कोजरा : तहसील – पिन्डवाड़ा : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – पिन्डवाड़ा : टेलीफोन – पी० सी० ओ० सिरोही रोड़।



श्री संभवनाथ भगवान मन्दिर–कोजरा



← प्राचीन कलात्मक प्रतिमा - कोजरा

सहायक : १. श्री जोगराजजी लक्ष्मीचन्दजी पारख, कुनूर (तमिलनाडु) २. मेसर्स. कल्पना टेक्सटायल्स, मदुरै (तमिलनाडु)
३. श्री कन्यालालजी पुखराजजी वरड़िया, मायुरम (तमिलनाडु) ४. श्री कन्यालालजी कान्तीलालजी श्री श्रीमाल, मद्रास–१६.

श्री पिन्डवाड़ा तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ।

तीर्थ स्थल * पिन्डवाड़ा गाँव के मन्दिर मोहल्ले में।

प्राचीनता * इसका प्राचीन नाम पिंडरवाटक रहने का उल्लेख मिलता है। विश्वविख्यात राणकपुर मन्दिर के निर्माता श्री धरणाशाह के पिता धनाढ्य श्रेष्ठी श्री कुंवरपाल व मंत्रीश्वर लींबा द्वारा सं० १४६५ फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा को इस मन्दिर का उद्धार करवाने का उल्लेख इस मन्दिर में नवचौकी के दीवार पर अंकित है। सं० १४६६ माघ शुक्ला ६ के शुभ दिन श्रेष्ठी श्री कुंवरपाल के पुत्र श्री रत्नाशाह व धरणाशाह द्वारा इस मन्दिर में एक प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाने व अधूरा कार्य पूर्ण करवाने का उल्लेख है। इसी मन्दिर में एक प्रतिमा पर सं० १२२६ का लेख उत्कीर्ण है। प्रतीत होता है कि यह तीर्थ विक्रम की बारहवीं सदी से पूर्व का है।

विशिष्टता * वसन्तगढ़ ध्वंस होने पर वहाँ से लायी गयी प्राचीन गुप्तकालीन अद्वितीय कलात्मक धातु प्रतिमाओं के दर्शन का लाभ यहीं पर मिल सकता है। ये प्रतिमाएँ सातवीं, आठवीं सदी की हैं। गूढ़ मण्डप में कायोत्सर्ग मुद्रा में दो भव्य धातु प्रतिमाएँ हैं, जिनमें एक पर सं० ७४४ का लेख उत्कीर्ण है।

यहाँ प्रतिवर्ष वैशाख शुक्ला ६ को ध्वजा चढ़ती है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त यहाँ चार और मन्दिर हैं।

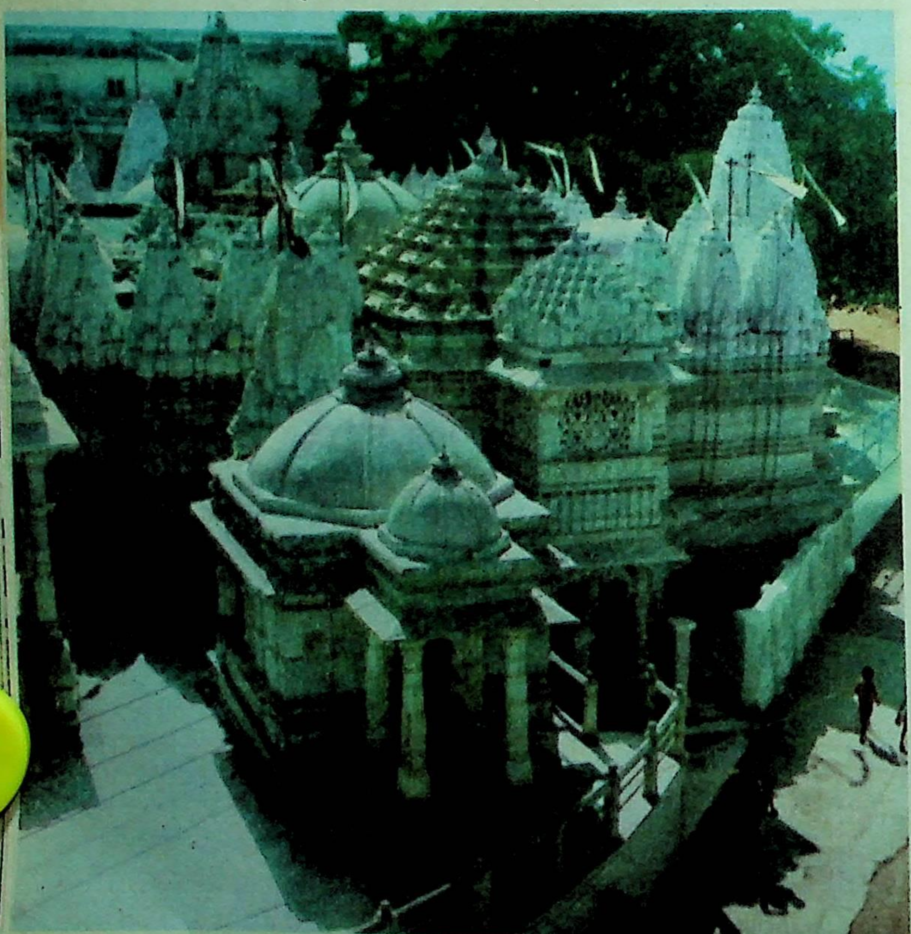
कला और सौन्दर्य * मन्दिर निर्माण का कार्य तो अति ही सुन्दर ढंग से किया हुआ है ही, साथ ही इस मन्दिर में गुप्तकालीन प्राचीन प्रभु प्रतिमाओं की कला का बेजोड़ नमूना है। भाँति-भाँति की कलापूर्ण प्राचीन धातु प्रतिमाएँ अति ही दर्शनीय हैं। ऐसी प्रतिमाओं के दर्शन अन्यत्र दुर्लभ हैं। इन प्रतिमाओं का जितना वर्णन करें कम है। भक्तजन यहाँ के दर्शन का मौका न चूकें।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन सिरोही रोड़ सिर्फ एक कि० मी० है, जहाँ पर घोड़ा गाड़ी व आटो रिक्शों का साधन है। यहाँ का बस स्टेशन मन्दिर से २०० मी० है। मन्दिर तक कार जा सकती है। रास्ता तंग रहने के कारण बस २०० मी० दूर ठहरानी पड़ती है।

सुविधाएं * ठहरने के लिए स्टेशन के सामने एक व गाँव में दूसरी धर्मशाला है, जहाँ पर पानी, बिजली व बर्तन की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री कल्याणजी शोभागचन्दजी जैन श्वेताम्बर

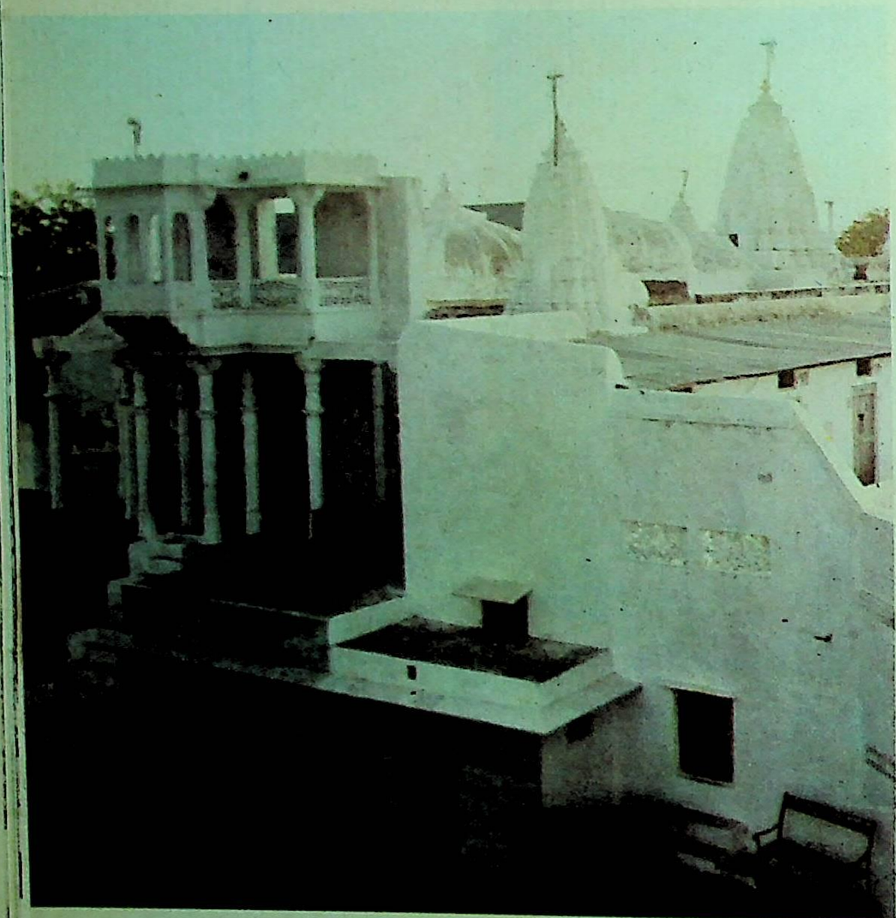
श्री महावीर जिनालय–पिण्डवाड़ा





श्री महावीर भगवान–पिण्डवाड़ा

पेढ़ी : डाक घर – पिन्डवाड़ा : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – पिन्डवाड़ा : टेलीफोन – पी० सी० ओ० पिन्डवाड़ा।



श्री महावीर जिनालय–भाण्डवाजी

श्री भान्डवाजी तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ६० सें॰ मी॰।

तीर्थ स्थल * छोटे से भान्डवपुर गाँव के बाहर।

प्राचीनता * प्रतीत होता है किसी वक्त यह एक विराट नगरी थी। वि॰ सं॰ ८१३ मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी को वेसालगाँव में प्रतिष्ठित हुई इस भव्य प्रतिमा को यहाँ वि॰ सं॰ १२३३ माघ शुक्ला ५ के दिन पुनः प्रतिष्ठित किया गया। वि॰ सं॰ १३४० पौष शुक्ला ६ के दिन पुनः प्रतिष्ठित किये जाने का उल्लेख भी मिलता है।

विशिष्टता * यह प्राचीन तीर्थ स्थल तो है ही, उसके साथ चमत्कारिक स्थल भी है। प्रभु प्रतिमा का चमत्कार विख्यात है। कहा जाता है वेसाला नगर में जब सत्तारूढ़ आक्रमणकारियों का आक्रमण शुरु हुआ, तब वहाँ मन्दिर को भी भारी क्षति पहुंची थी। इस प्रभु प्रतिमा को कोमता ग्रामवासी संघवी पालजी अपने गाड़े में विराजमान करके गाँव कोमता की ओर चले, लेकिन गाड़ा कोमता न जाकर मेगलवा होता हुआ भान्डवा आकर रुक गया। संघवी पालजी को स्वप्न में यहीं मन्दिर बनवाकर प्रतिमा को प्रतिष्ठित करवाने का संकेत मिला। तदनुसार संघवी पालजी व उनके कुटुम्बीजनों ने मन्दिर का निर्माण करवाकर वि॰ सं॰ १२३३ माघ शुक्ला ५ के शुभ दिन प्रतिष्ठापना करवाई। आज भी उनके वंशजों की ओर से प्रतिवर्ष ध्वजा चढ़ती है। अभी भी यह चमत्कारिक स्थल माना जाता है व हजारों जैन व जैनेतर यहाँ की मानता रखते हैं। उनके कथनानुसार उनका मनोरथ पूर्ण होता है। प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला १३ से पूर्णिमा तक व कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है। तब हजारों भक्तगण आकर प्रभु भक्ति में तल्लीन होते हैं।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में यहाँ इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

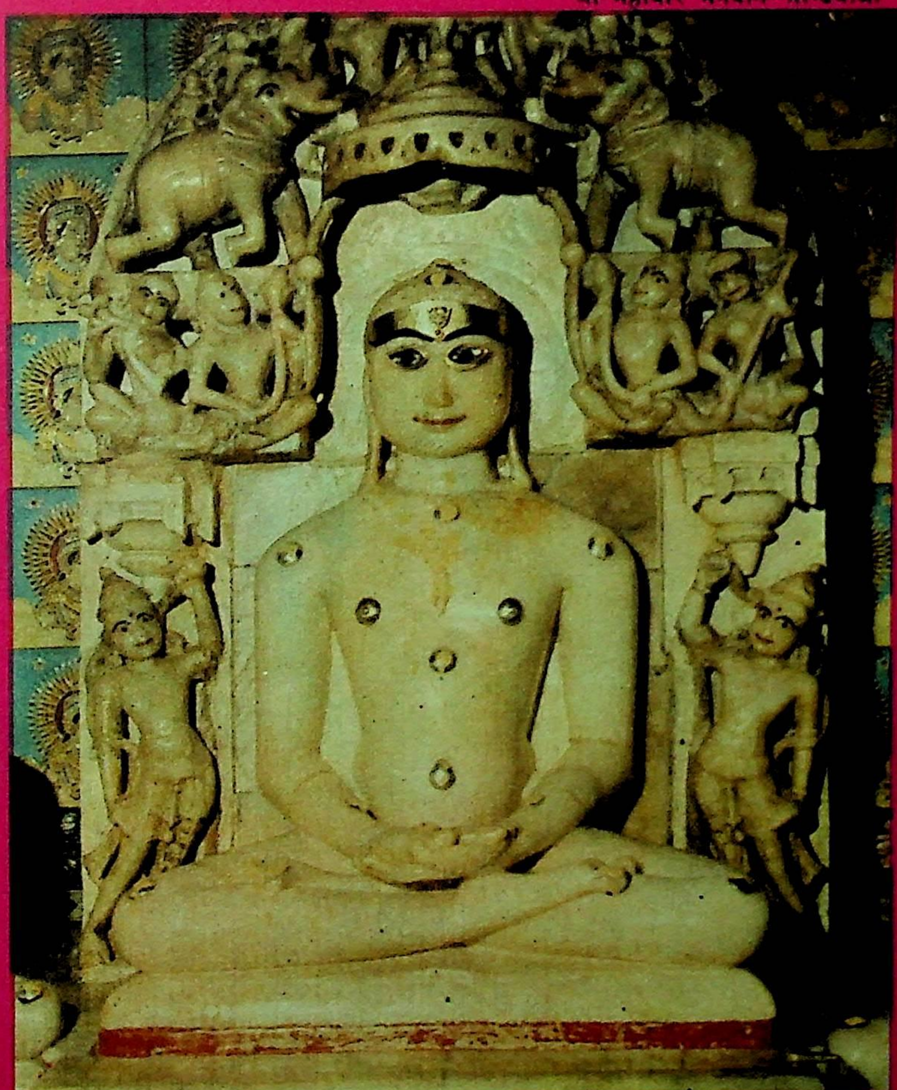
कला और सौन्दर्य ✻ एकान्त जंगल में विशाल परकोटे के मध्य स्थित इस प्राचीन भव्य बावनजिनालय के मन्दिर में प्रभु प्रतिमा की कला अति ही आकर्षक है।

मार्ग दर्शन ✻ यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन जालोर ५६ कि० मी०, विशनगढ़ ४० कि० मी० व मोदरा ३० कि० मी० दूर है। इन जगहों से बस व टैक्सी की सुविधा है। जालोर से मान्डवला व सायला होकर आना पड़ता है। सायला से कच्ची सड़क है, लेकिन बस व कार आखिर मन्दिर तक जा सकती हैं।

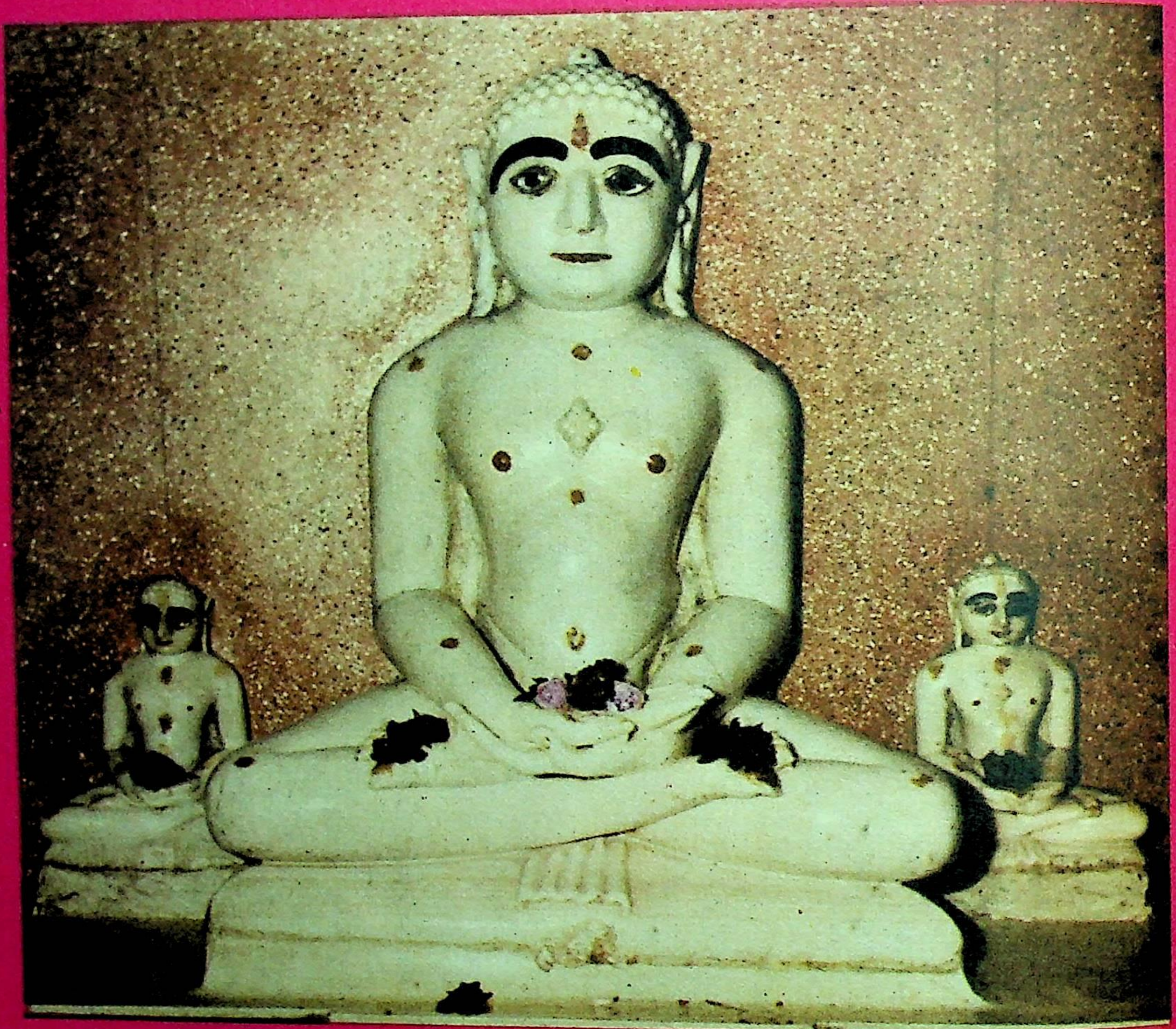
सुविधाएं ✻ ठहरने के लिए मन्दिर के अहाते में ही विशाल धर्मशाला है, जहाँ पानी, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा उपलब्ध है।

पेढ़ी ✻ श्री श्वेताम्बर महावीर पेढ़ी : गाँव – भांडवपुर डाक घर – मेगलवा : जिला – जालोर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – सायला : टेलीफोन – पी० सी० ओ० सायला।

श्री महावीर भगवान–भाण्डवाजी



सहायक : मेसर्स. रांका एन्ड को० मद्रास–१.



श्री महावीर भगवान–स्वर्णगिरि (जालोर)

सहायक : शाह मिश्रीमलजी छोगमलजी कवाड़, गढ़ सीवाना (राज०) वाले, बम्बई।

श्री स्वर्णगिरि तीर्थ (जालोर)

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग १०० सें० मी० ।

तीर्थ स्थल * जालोर शहर के समीप स्वर्णगिरि पर्वत पर जालोर दुर्ग में।

प्राचीनता * यह स्वर्णगिरि प्राचीन काल में कनकाचल नाम से विख्यात था। किसी समय यहाँ अनेकों करोड़पति श्रावक रहते थे। तत्कालीन जैन राजाओं ने 'यक्षवसति' व अष्टापद आदि जैन मन्दिरों का निर्माण करवाया था, ऐसा उल्लेख मिलता है। उल्लेखानुसार विक्रम सं० १२६ से १३५ के दरमियान राजा विक्रमादित्य के वंशज श्री नाहड़ राजा द्वारा इसका निर्माण हुआ होगा, ऐसा प्रतीत होता है।

श्री मेरुतुंग सूरिजी द्वारा रचित 'विचार श्रेणी' में व लगभग तेरहवीं सदी में श्री महेन्द्र सूरीश्वरजी द्वारा रचित 'अष्टोत्तरी तीर्थमाला' में भी इसका उल्लेख मिलता है। 'सकलार्हत्-स्तोत्र' में भी इसका कनकाचल के नामसे उल्लेख है। श्री कुमारपाल राजा द्वारा वि० सं० १२२१ में 'यक्षवसति' मन्दिर के उद्धार करवाने का उल्लेख है।

स्वर्णगिरि में कुमारपाल राजा द्वारा निर्मित श्री पार्श्वनाथ भगवान के मन्दिर 'कुमारविहार' की प्रतिष्ठा सं० १२२१ में श्री वादीदेवसूरिजी के सुहस्ते सम्पन्न होने का उल्लेख है। वि० सं० १२५६ में श्री पूर्णचन्द्रसूरिजी द्वारा मन्दिर में तोरण की प्रतिष्ठा, सं० १२६५ में मूलशिखर पर स्वर्णदण्ड व सं० १२६८ में संस्कृत भाषा में ७ द्वात्रिंशिका के रचयिता श्री रामचन्द्रसूरिजी द्वारा प्रेक्षामध्यमण्डप पर स्वर्णमय कलश की प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख है। वि० सं० १६८१ में स्वर्णगिरि पर सम्राट अकबर के पुत्र जहाँगीर के समय में यहाँ के राजा श्री गजसिंहजी के मंत्री मुहणोत श्री जयमलजी द्वारा एक जिन मन्दिर बनवाने व अन्य सारे मन्दिरों के जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख है। मंत्री श्री जयमलजी की धर्मपत्नियां श्रीमती सरूपद व सोहागद द्वारा भी अनेकों प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित करवाने का उल्लेख है, जिनमें से कई प्रतिमाएँ विद्यमान हैं। श्री महावीर भगवान के इस मन्दिर का जीर्णोद्धार मंत्री श्री जयमलजी द्वारा करवाकर श्री जयसागर गणिजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख है। कहा जाता है यही 'यक्षवसति' मन्दिर है जिसका श्री कुमारपाल राजा ने भी पहिले उद्धार करवाया था। अन्तिम उद्धार श्री विजयराजेन्द्रसूरिजी के उपदेश से सम्पन्न हुआ था।

स्वर्णगिरि की तलहटी में जाबालिपुर (जालोर) भी विक्रम की लगभग दूसरी सदी में बसे का उल्लेख मिलता है। विक्रम सं० ८३५ में जाबालिपुर में श्री आदिनाथ भगवान के मन्दिर में आचार्य श्री उद्योतनसूरिजी द्वारा 'कुवलयमाला' ग्रंथ की रचना पूर्ण करने का उल्लेख है। उस समय यहाँ अनेकों मन्दिर थे। उनमें अष्टापद नाम का एक विशाल मन्दिर था। इसका वर्णन आबू के लावण्यवसहि मन्दिर में वि० सं० १२९६ के शिलालेख में भी है।

वि० सं० १२९३ में राजा श्री उदयसिंहजी के मंत्री दानवीर, विद्वान व शिल्प विद्या में निष्णांत, श्री यशोवीर द्वारा श्री आदिनाथ भगवान के मन्दिर में अद्भुत कलायुक्त मंडप निर्मित करवाने का उल्लेख है।

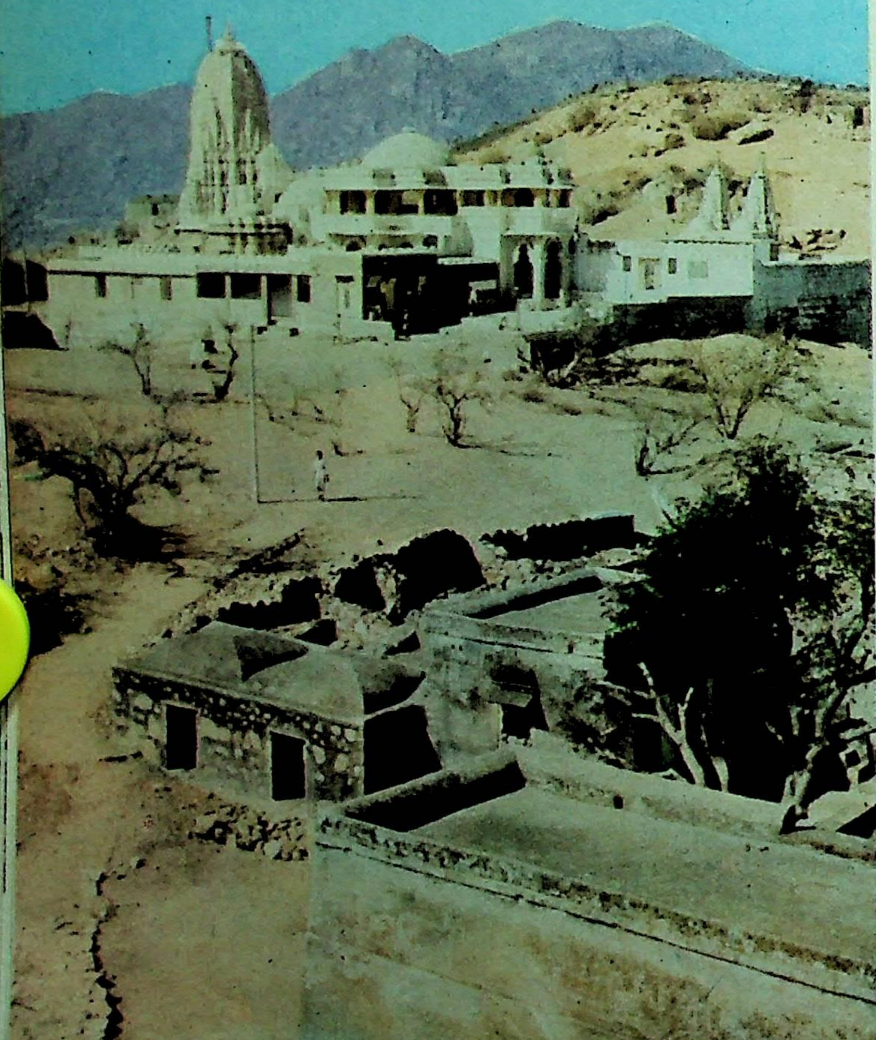
खरतरगच्छ गुर्वावली के अनुसार राजा श्री उदयसिंह के समय वि० सं० १३१० के वैशाख शुक्ला १३ शनिवार स्वातिनक्षत्र में श्री महावीर भगवान के मन्दिर में चौबीस जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा महोत्सव अनेकों राजाओं व प्रधान पुरुषों के उपस्थिति में महामंत्री श्री जयसिंहजी के तत्वाधान मे अति ही उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुई थी। उस अवसर पर पालनपुर, वागड़देश आदि जगहों के श्रावकगण इकट्ठे हुए थे।

वि० सं० १३४२ में श्रीसामन्तसिंह के सान्निध्य में अनेकों जिन प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित किये जाने का उल्लेख है। वि० सं० १३७१ जेष्ठ कृष्णा १० के दिन आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी के विद्यमानता में दीक्षा व मालारोपण उत्सव हुए का उल्लेख है। इसके बाद अलाउद्दीन खिलजी द्वारा यहाँ के मन्दिरों को भारी क्षति पहुंची व कलापूर्ण अवशेष आदि मस्जिदों आदि में परिवर्तित किये गये जिनके आज भी कुछ नमूने नजर आते हैं। कुछ पर प्राचीन जैन शिलालेख भी उत्कीर्ण हैं। वि० सं० १६५१ में यहाँ मन्दिरों के होने का उल्लेख मिलता है। आज यहाँ कुल १२ मन्दिर हैं।

विशिष्टता * वि० की दूसरी शताब्दी से लगभग आठारहवीं शताब्दी तक यहाँ के जैन राजाओं, मंत्रियों व श्रेष्ठियों द्वारा किये धार्मिक व सामाजिक कार्य उल्लेखनीय है जिनका वर्णन करना शब्दों में संभव नहीं।

यहाँ के उदयसिंह राजा के मंत्री यशोवीर ने सं० १२८७ में मंत्रीश्वर श्री वस्तुपाल तेजपाल द्वारा शोभनसूत्रधारो

मन्दिर-समूह का दृश्य–स्वर्णगिरि (जालोर)



से निर्माणित आबू के लावण्यवसहि मन्दिर के प्रतिष्ठा महोत्सव में भाग लिया था। उस समय अन्य ८४ राजा, अनेकों मंत्री व प्रमुख व्यक्ति हाजिर थे। यशोवीर शिल्पकला में निष्णात विद्वान होने के कारण इस अद्भुत मन्दिर में भी १४ भूलें बताई थी, जिसपर उनकी विद्वता व अन्य गुणों की भारी प्रशंसा हुई थी। वि० सं० १७४१ में यहाँ के मंत्री मुणहोत जयमलजी के पुत्र श्री नेणसी जोधपुर के महाराजा श्री जसवंतसिंहजी के दीवान थे, जिन्होंने अपनी दिवानगिरि में भारी कुशलता दिखायी थी, जिसपर 'नेणसीजी री ख्यात' की रचना हुई जो कि आज भी जनसाधारण में प्रचलित है।

अन्य मन्दिर ✻ इसके अतिरिक्त स्वर्णगिरि पर्वत पर किले में ४ मन्दिर व इसकी तलहटी जालोर में १२ मन्दिर अभी विद्यमान हैं। किले पर चौमुखजी मन्दिर व पार्श्वनाथ मन्दिर प्राचीन हैं, जिन्हें अष्टापदावतार मन्दिर व कुमार-विहार मन्दिर भी कहते हैं। जालोर में श्री नेमिनाथ भगवान के मन्दिर में सं० १६५६ में प्रतिष्ठित अकबर प्रतिबोधक श्री विजयहीरसूरीश्वरजी की गुरुमूर्ति है। नवनिर्मित श्री नन्दीश्वर द्वीप मन्दिर अति ही सुन्दर बना हुआ है।

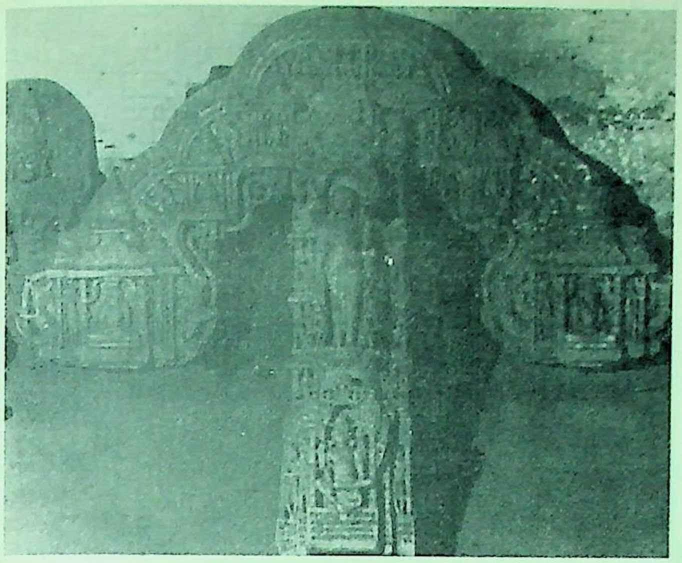
कला और सौन्दर्य ✻ समुद्र की सतह से लगभग १२०० फुट ऊंचे पर्वत पर २.५ कि० मी० लम्बे व १.२५ कि० मी० चौड़े प्राचीन किले के परकोटे में मन्दिरों का दृश्य अति ही सुहावना लगता है, जो कि पूर्व सदियों की याद दिलाता है। यहाँ मन्दिरों व मस्जिदों में अनेकों प्राचीन प्रतिमाएँ व कलात्मक अवशेष आज भी दिखायी देते हैं।

मार्ग दर्शन ✻ किले पर स्थित इस मन्दिर से तलहटी २.५ कि० मी० व तलहटी से जालोर रेलवे स्टेशन ३.२५ कि० मी० है, जहाँ से तलहटी तक आने के लिए ताँगे व टैक्सियाँ उपलब्ध हैं। पहाड़ पर जाने के लिए वयोवृद्ध यात्रियों के लिए डोली का साधन भी है।

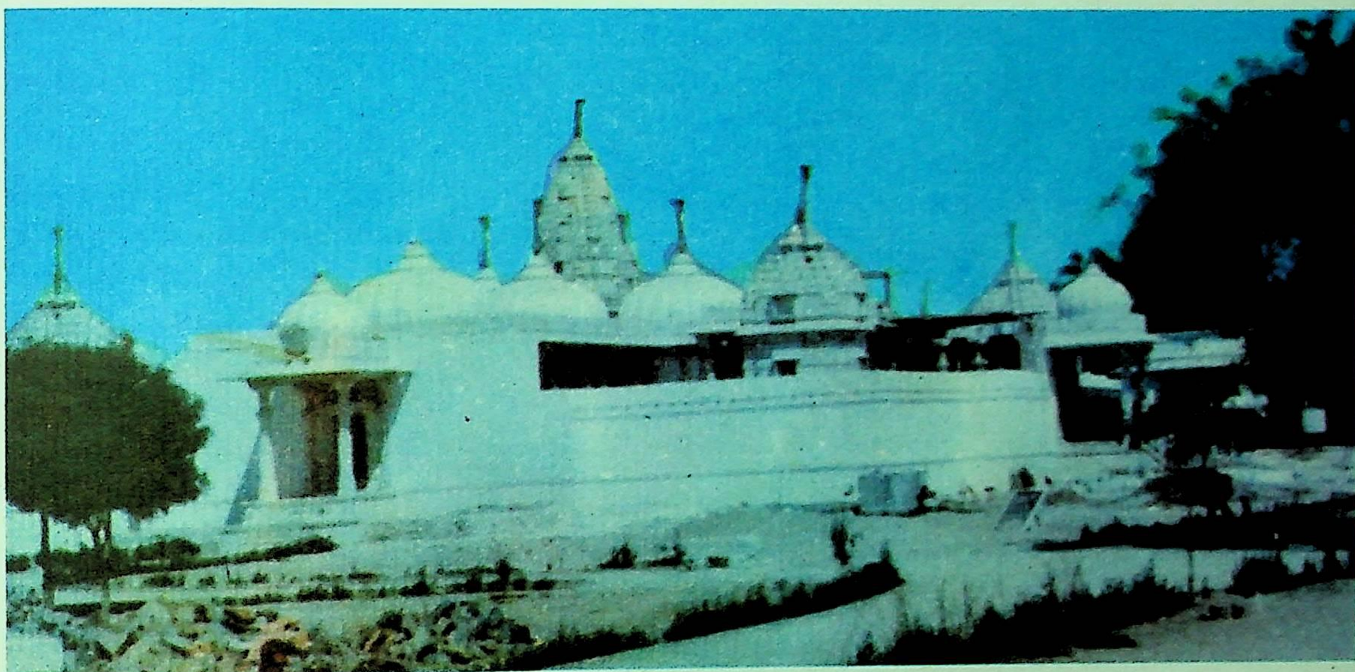
सुविधाएँ ✻ ठहरने के लिए पहाड़ पर व जालोर शहर में धर्मशालाएँ हैं। इन जगहों पर पानी, बिजली, बर्तन, भोजनशाला व ओढ़ने-बिछाने के वस्त्रों की सुविधा है। पहाड़ पर भी टेलीफोन है।

पेढ़ी ✻ श्री स्वर्णगिरि जैन श्वेताम्बर तीर्थ पेढ़ी : बस स्टेण्ड धर्मशाला : डाक घर – जालोर : जिला – जालोर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – जालोर : टेलीफोन – ११६ जालोर।

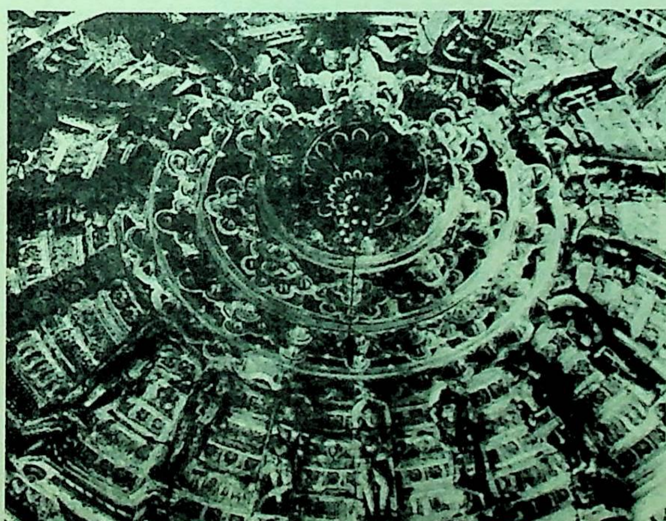




← प्राचीन कलात्मक अवशेष स्वर्णगिरि



श्री नन्दीश्वर द्वीप मन्दिर–जालोर



← कलात्मक गुम्बज - कोठारा

श्री भिनमाल तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री पार्श्वनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, स्वर्ण वर्ण, पंच धातु से निर्मित।

तीर्थ स्थल ✻ भिनमाल शहर के मध्य, शेठवास में।

प्राचीनता ✻ गुजरात की प्राचीन राजधानी का मुख्य नगर यह भिनमाल एक समय खूब प्रसिद्ध था। यह नगर किसने बसाया था, उसका निश्चित इतिहास उपलब्ध नहीं। पौराणिक कथाओं के अनुसार इसका नाम सतयुग में श्रीमाल, त्रेता युग में रत्नमाल, द्वापर युग में पुष्पमाल व कलियुग में भिनमाल रहा। श्रीमाल व भिनमाल नाम लोक प्रसिद्ध रहे। इस नगरी का अनेकों बार उत्थान-पतन हुआ।

एक जैन मन्दिर के खण्डहर में वि० सं० १३३३ का शिलालेख मिला है, जिसमें बताया है श्री महावीर भगवान यहाँ बिचरे थे। यह बहुत बड़ा संशोधन का कार्य है, क्योंकि जगह-जगह वीरप्रभु इस भूमि में विचरे थे ऐसे उल्लेख मिले हैं। संशोधकगण इस तरफ ध्यान दें तो ऐतिहासिक प्रमाण मिलने की गुंजाइश है।

विक्रम की पहली शताब्दी में आचार्य श्री वज्रस्वामी भी श्रीमाल (भिनमाल) तरफ बिहार करने के उल्लेख मिलते हैं।

एक जैन पट्टावली के अनुसार वीर निर्वाण सं० ७० के आसपास श्री रत्नप्रभसूरिजी के समय श्रीमाल नगर का राजकुमार श्री सुन्दर व मंत्री श्री उहड़ ने यहाँ से जाकर ओसियाँ बसाया था, जिसमें श्रीमाल से अनेकों कुटुम्ब जाकर बसे थे। एक और मतानुसार श्रीमाल के राजा देशल ने जब धनाढ्यों को किले में बसने की अनुमति दी तब अन्य लोग असंतुष्ट होकर देशल के पुत्र जयचन्द्र के साथ विक्रम सं० २२३ में ओसियाँ जाकर बसे थे।

किसी जमाने में इस नगरी का घेराव ६४ कि० मी० था। किले के ८४ दरवाजे थे, उनमें ८४ करोड़पति श्रावकों के, ६४ श्रीमाल ब्राह्मणों के व ८ प्राग्वट ब्राह्मणों के घर थे। सैकड़ों शिखरबंध मन्दिरों से यह नगरी रमणीय बनी हुई थी।

श्री जिनदासगणी द्वारा वि० सं० ७३३ में रचित 'निशीथ-चूर्णि' में सातवीं, आठवीं शताब्दी पूर्व से यह नगर खूब समृद्धिशाली रहने का उल्लेख है।

श्री उद्योतनसूरिजी द्वारा वि० सं० ८३५ में रचित 'कुवलयमाला' ग्रंथ में, ऐसा उल्लेख है। श्री शिवचन्दगणी विहार करते हुए जिनवन्दनार्थ यहाँ पधारे व अत्यन्त प्रभावित होकर प्रभु चरणों में यहीं रह गये।

सातवीं शताब्दी से दसवीं शताब्दी तक प्रायः सारे प्रभावशाली आचार्य भगवन्तों ने यहाँ पदार्पण करके इस शहर को पवित्र व रमणीय बनाया है, व अनेकों अनमोल जैन साहित्यों की रचना करके अमूल्य खजाना छोड़ गये हैं, जो आज इतिहासकारों व शोधकों के लिए एक अमूल्य सामग्री बनकर विश्व को नयी प्रेरणा दे रहा है।

लगभग दसवीं, ग्यारहवीं शताब्दी में इस नगर से १८००० श्रीमाल श्रावक गुजरात की नयी राजधानी पाटण व उसके आसपास जाकर बस गये, जिनमें मंत्री विमलशाह के पूर्वज श्रेष्ठी श्री नाना भी थे।

निकोलस उफ्लेट नाम का अंग्रेज व्यापारी ई० सं० १६११ में यहाँ आया जब इस शहर का सुन्दर व कलात्मक किला ५८ कि० मी० विस्तार वाला था, ऐसा उल्लेख है। आज भी ५ - ६ मील दूर उत्तर तरफ जालोरी दरवाजा, पश्चिम तरफ सांचोरी दरवाजा, पूर्व तरफ सूर्य दरवाजा व दक्षिण तरफ लक्ष्मी दरवाजा है। विस्तार में ऊंचे टेकरियों पर प्राचीन ईंटों, कोरणीदार स्तम्भों व मन्दिर के कोरणीदार पत्थरों के खंडहर असंख्य मात्रा में दिखायी देते हैं।

आज यहाँ कुल ११ मन्दिर हैं, जिनमें यह मन्दिर प्राचीन व मुख्य माना जाता है। प्रतिमाजी के परिकर पर सं० १०११ का लेख उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा भूगर्भ से प्राप्त हुई थी। भूगर्भ से प्राप्त यह व अन्य प्रतिमाएँ, जालोर के गजनीखान के आधीन थीं। वह इन प्रभु प्रतिमाओं को रखने से मानसिक क्लेश का अनुभव कर रहा था। आखिर उसने प्रतिमाएँ श्रीसंघ के सुपुर्द कीं, जिन्हें संघवी श्री वरजंग शेठ ने भव्य मन्दिर का निर्माण करवाकर विक्रम सं० १६६२ में स्थापित करवाईं। उस अवसर पर गजनीखान ने भी १६ स्वर्ण कलश चढ़ाये थे, ऐसा श्रीपुण्यकमल मुनि रचित "भिनमाल-स्तवन" में उल्लेख है।

विशिष्टता ✻ पौराणिक कथाओं में भी इस नगरी का भारी महत्व दिया है। भगवान श्री महावीर यहाँ बिचरे थे, ऐसा उल्लेख मिलता है। पहली शताब्दी में आचार्य श्री वज्रस्वामी यहाँ दर्शनार्थ पधारे थे। श्री उहड मंत्री व राजकुमार सुन्दर ने यहीं से जाकर ओसियाँ नगरी बसायी थी।

'शिशुपालवध महाकाव्य' के रचयिता कवि श्री मेघ की जन्मभूमि यही है। ब्रह्मगुप्त ज्योतिषी ने 'स्फुट आर्य सिद्धान्त'



श्री पार्श्वनाथ भगवान–भिनमाल

सहायक : श्री लाभचन्दजी चम्पालालजी ताराचन्दजी भीखमचन्दजी वैद (हुड़िया) फलोदी (राज०) वाले. मद्रास–१.

ग्रन्थ की रचना यहीं पर सातवीं शताब्दी मे की थी। वि० की आठवीं शताब्दी में यहाँ कुलगुरुओं की स्थापना हुई। तब ८४ गच्छों के समर्थ आचार्य भगवन्त यहाँ विराज़मान थे।

शंखेश्वर गच्छ के आचार्य श्री उदयप्रभसूरिजी ने विक्रम सं० ७९१ में प्राग्वट ब्राह्मणों को व श्रीमाल ब्राह्मणों को यहीं जैनी बनाया था।

आचार्य श्री सिद्धर्षिजी ने प्रख्यात 'उपमितिभवप्रपंचा कथा' की रचना विक्रम सं० ९६२ में यहीं की थी।

श्री वीरगणी की जन्मभूमि यही है, जो कि प्रख्यात पण्डित थे। उन्होंने गुर्जर नरेश चामुंडराज को अपनी अलौकिक शक्ति से प्रभावित किया था।

श्री सिद्धसेनसूरिजी ने 'सकल तीर्थ स्तोत्र' में इस तीर्थ की व्याख्या की है। इस तीर्थ की कीर्ति बढ़ानेवाले ऐसे अनेकों उदाहरण हैं, जिनका यहाँ शब्दों में वर्णन करना असंभव है।

अन्य मन्दिर * इसके अतिरिक्त गाँव में ८ मन्दिर, और गांव के बाहर २ मन्दिर हैं। सारे मन्दिर प्रायः चौदहवीं से अठारहवीं शताब्दी तक के हैं। इनमें गाँधीमूता वास में स्थित श्री शान्तिनाथ भगवान के मन्दिर की पुनः प्रतिष्ठा श्री हीरविजयसूरिजी के सुहस्ते वि० सं० १६३४ में हुई थी।

कला और सौन्दर्य * इतनी प्राचीन नगरी में कलापूर्ण अवशेषों आदि की क्या कमी है। शहर कलापूर्ण अवशेषों के खण्डहरों से भरा है। हर मन्दिर में कई प्राचीन कलापूर्ण प्रतिमाएँ हैं।

मार्ग दर्शन * यहाँ का भिनमाल रेलवे स्टेशन ०.८ कि० मी० है, जहाँ से सवारी का कोई साधन नहीं है। गाँव के बस स्टैण्ड से भी मन्दिर ०.८ कि० मी० है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। जालोर, सिरोही व जोधपुर आदि स्थानों से सीधी भिनमाल के लिए बस सर्विस है।

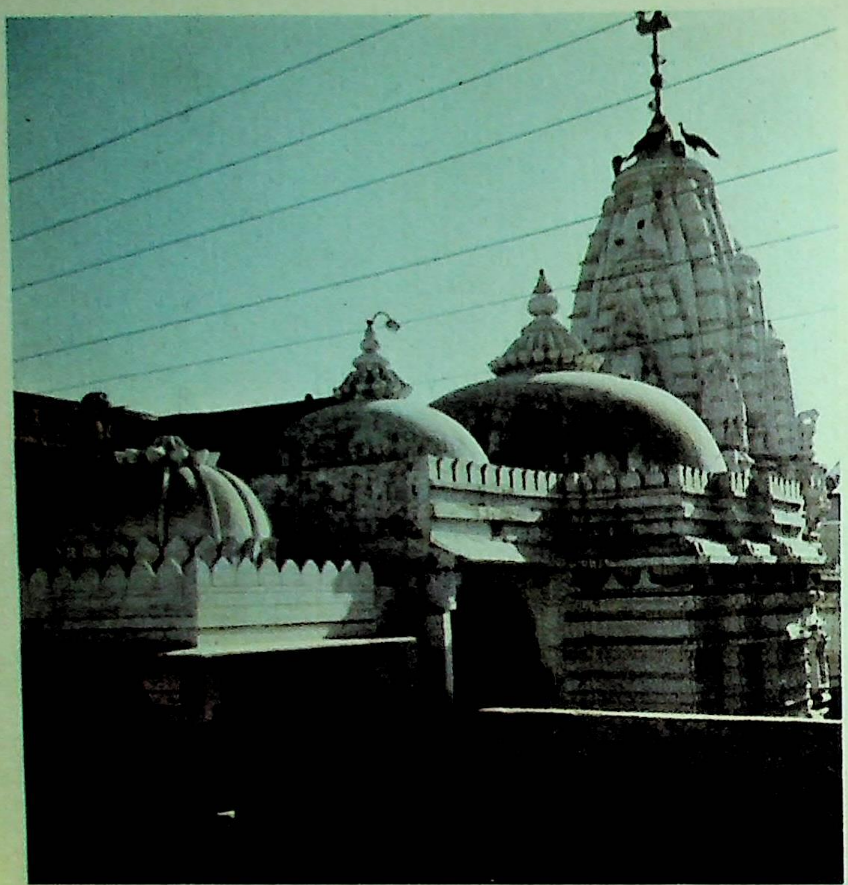
सुविधाएँ * ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है।

पेढ़ी * श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर तपागच्छीय ट्रस्ट : डाक घर – भिनमाल : जिला – जालोर : प्रांत – राजस्थान : तार घर – भिनमाल : टैलीफोन – पी० सी० ओ० भिनमाल।



श्री पार्श्वनाथ भगवान मन्दिर–भिनमाल





श्री महावीर भगवान मन्दिर–सत्यपुर

श्री सत्यपुर तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण।

तीर्थ स्थल * साँचोर गाँव के मध्य।

प्राचीनता * यह तीर्थ प्रभु वीर के समय का बताया जाता है। 'जग चिन्तामणि' स्तोत्र में इस तीर्थ का वर्णन है। कहा जाता है इस स्तोत्र की रचना भगवान महावीर के प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामीजी ने की थी। साँचोर का प्राचीन नाम सत्यपुर व सत्यपुरी था।

पराक्रमी श्री नाहड़ राजा ने आचार्यश्री से उपदेश पाकर विक्रम सं० १३० के लगभग एक विशाल गगनचुम्बी मन्दिर का निर्माण करवाकर वीर प्रभु की स्वर्णमयी प्रतिमा आचार्य श्री जज्जिगसूरिजी के सुहस्ते प्रतिष्ठित करवाई थी, ऐसा चौदहवीं शताब्दी में श्री जिनप्रभसूरिजी द्वारा रचित 'विविध तीर्थ कल्प' में उल्लेख है।

विक्रम की ग्यारहवीं सदी में कवीश्वर श्री धनपाल द्वारा रचित 'सत्यपुरीयमंडन महावीरोत्साह' स्तोत्र में यहाँ वीर प्रभु के प्रतिमा की अति महिमा बताते हुए कहा है कि दर्शन करते-करते मन भरता ही नहीं।

'विविध तीर्थ कल्प' में यह भी कहा है कि इस तीर्थ की इतनी महिमा बढ़ गयी थी कि विधर्मियों को ईर्ष्या होने लगी। इसको क्षति पहुँचाने के लिए विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी में मालव देश के राजा, वि० सं० १३४८ में मुगल सेना, वि० सं० १३५६ में अलाउद्दीन खिलजी के भाई उल्लुधखान आये। लेकिन सबको हार मानकर वापस जाना पड़ा। प्रतिमा को कोई क्षति न पहुँचा सका। आखिर वि० सं० १३६१ में अलाउद्दीन खिलजी खुद आया व उपाय करके मूर्ति को दिल्ली ले गया, ऐसा उल्लेख है। वि० की तेरहवीं शताब्दी में कन्नौज के राजा द्वारा भगवान महावीर का मन्दिर काष्ट में बनवाने का उल्लेख है। गुर्जर नरेश अजयपाल के दण्डनायक श्री आल्हाद द्वारा वि० की तेरहवीं सदी में श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा स्थापित करने का उल्लेख है। यहाँ पर एक प्राचीन मस्जिद है, जो प्राचीन काल में जैन मन्दिर रहा होगा ऐसा कहा जाता है। मस्जिद में पुराने पत्थरों पर कुछ शिलालेख है, जिसमें वि० सं० १३२२ वैशाख कृष्णा १३ को भंडारी श्री छाड़ा सेठ द्वारा महावीर भगवान के मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाने का लेख उत्कीर्ण है।

वर्तमान मन्दिर के निर्मित होने के समय का पता नहीं लगता। जीर्णोद्धार वि० सं० १९६३ में हुआ था। जो स्वर्णमयी प्रतिमा अल्लाउद्दीन खिलजी दिल्ली ले गया था, उसका पता नहीं। वर्तमान प्रतिमा भी प्राचीन व प्रभावशाली है।

विशिष्टता * भगवान श्री महावीर के समय का यह तीर्थ होने व प्रभु के प्रथम गणधर श्री गौतमस्वामीजी द्वारा 'जग चिन्तामणि' स्तोत्र' में इस तीर्थ का वर्णन करने के कारण यहाँ की महान विशेषता है।

कविवर उपाध्याय श्री समयसुन्दरजी की यह जन्मभूमि है, जिनका जन्म विक्रम की सत्रहवीं सदी में हुआ था। वर्तमान में भी इस मन्दिर को जीवित स्वामी मन्दिर कहते हैं।

अन्य मन्दिर * इसके अतिरिक्त यहाँ पर ४ और मन्दिर हैं।

कला और सौन्दर्य * पुराने मन्दिरों के ध्वंस हो जाने के कारण प्राचीन कलाकृतियाँ कम नजर आती हैं। मस्जिद जो प्राचीन जैन मन्दिर बताया जाता है, वहाँ प्राचीन अवशेष दिखायी देते हैं।

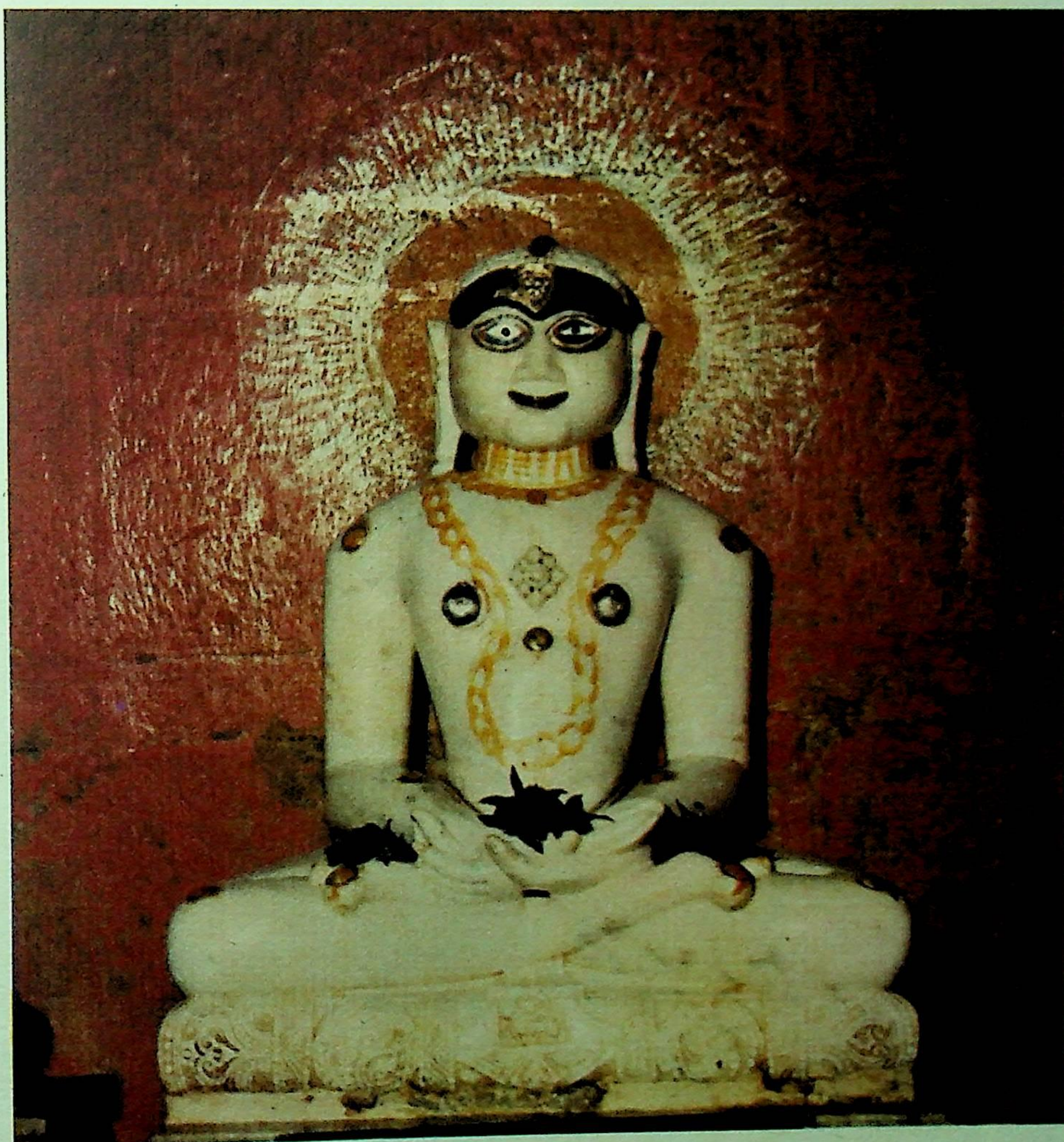
तीर्थाधिराज भगवान श्री महावीर की प्रतिमा अति मनोहर है।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन राणीवाड़ा ४८ कि० मी० है, जहाँ से बस की सुविधा है। साँचोर के लिये जालोर, भीनमाल, बाड़मेर, आबू, जोधपुर व सिरोही से बसों की सुविधा उपलब्ध है। मन्दिर से बस स्टैण्ड २०० मी० है, मन्दिर तक पक्की सड़क है।

सुविधाएँ ※ बस स्टैण्ड के नजदीक ही धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है।

पेढ़ी ※ श्री जैन मूर्तिपूजक संघ की पेढ़ी : डाक घर – साँचोर : जिला – जालोर : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – साँचोर : टेलीफोन – पी० सी० ओ० साँचोर।

श्री महावीर भगवान–सत्यपुर



सहायक : श्री प्रतापमलजी किशनलालजी भन्डारी, साचोर (राज०) वाले, मद्रास–१७



श्री पार्श्वनाथ मन्दिर–किंवरली

श्री किंवरली तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ।

तीर्थ स्थल * किंवरली गाँव के ब्रह्मपुरी मोहल्ले में।

प्राचीनता * मूलनायक भगवान की गादी पर सं० ११३२ का लेख उत्कीर्ण है। एक स्थंभ पर भी सं० ११३२ फाल्गुन-शुक्ला १० का लेख उत्कीर्ण है। इससे संभवतः यह तीर्थ क्षेत्र उससे पूर्व का हो सकता है। सं० १७६४ व सं० १९०३ में जीर्णोद्धार होने का संकेत शिलालेखों में मिलता है।

विशिष्टता * प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष शुक्ला ११ को ध्वजा चढ़ायी जाती है।

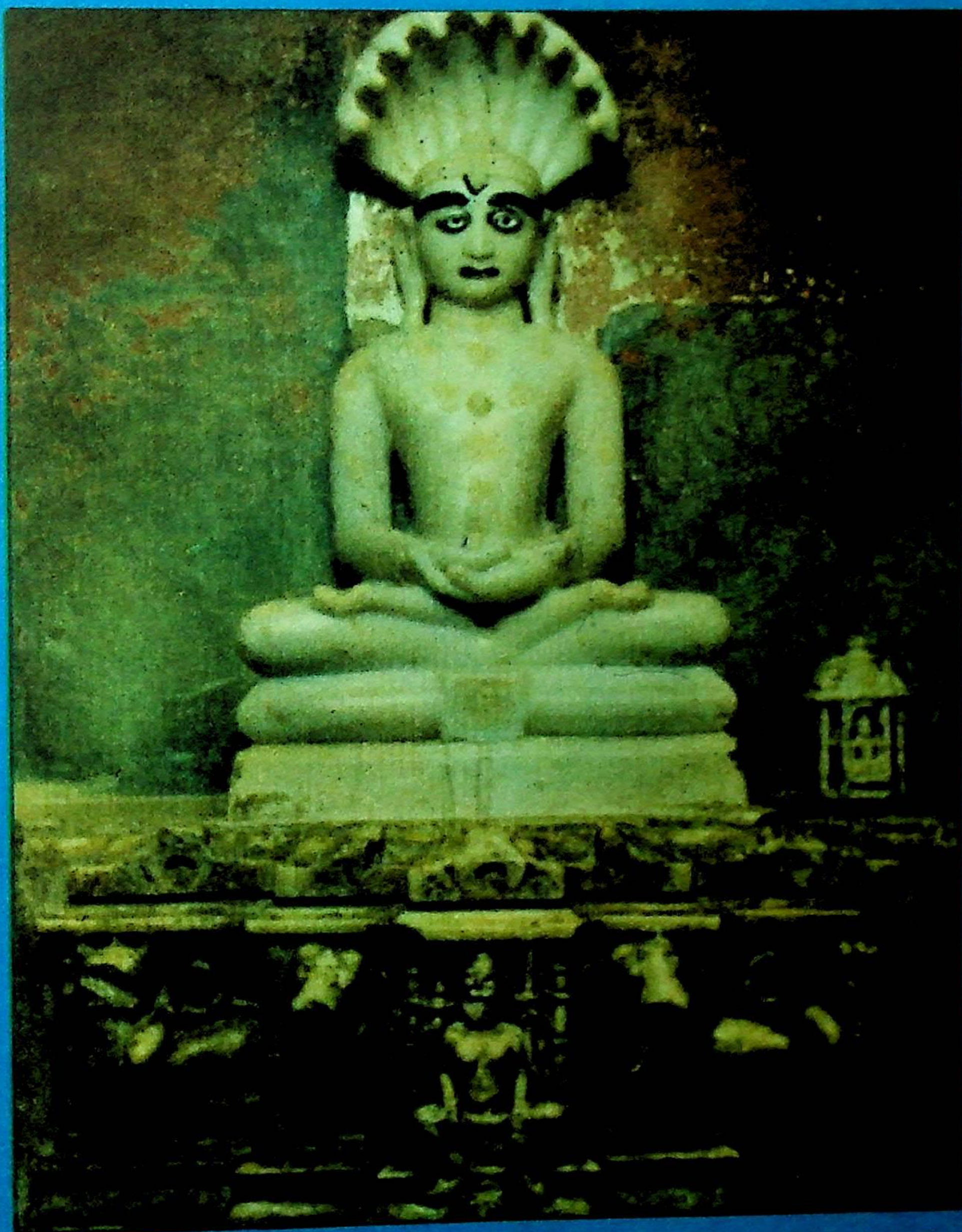
अन्य मन्दिर * वर्तमान में यहाँ इसके अतिरिक्त अन्य कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * प्रभु प्रतिमा की प्राचीन कला अति सुन्दर है।

मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन आबू रोड़ १० कि० मी० है, जहाँ से टैक्सी का साधन है। यहाँ का बस स्टेशन आमथला १.५ कि० मी० है, जहाँ से सवारी का कोई साधन नहीं है। कार मन्दिर तक जा सकती है। रास्ता तंग रहने के कारण बस मन्दिर से ४०० मी० दूर ठहरानी पड़ती है।

सुविधाएँ * एक उपाश्रय है, जहाँ फिलहाल ठहरने की सुविधा नहीं है। आबू रोड़ ठहरकर ही यहाँ आना सुविधाजनक है।

पेढ़ी * श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी : डाक घर – किंवरली : व्हाया – आबू रोड : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – किंवरली : टेलीफोन –पी० सी० ओ० आबू रोड़।



श्री पार्श्वनाथ भगवान–किचरानी

श्री कासीन्द्रा तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री शान्तिनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ७५ सें० मी० ।

तीर्थ स्थल * कासीन्द्रा गाँव में ।

प्राचीनता * इसका प्राचीन नाम काशाह्रद रहने का शास्त्रों में उल्लेख मिलता है। सं० १०९१ में पोरवाल श्री वामन श्रेष्ठी द्वारा इस मन्दिर में एक देहरी निर्मित करवाने का लेख देहरी के दरवाजे पर उत्कीर्ण है। इसलिए यह सिद्ध होता है कि यह मन्दिर उसके पूर्व का है। मूलनायक भगवान की गादी पर सं० १२३४ का लेख उत्कीर्ण है। संभवतः सं० १२३४ में जीर्णोद्धार के समय यह प्रतिमा प्रतिष्ठित की गयी होगी।

विशिष्टता * काशह्रदगच्छ का उत्पत्ति स्थान यही है। यहाँ के धर्मवीर व शूरवीर श्रावकों द्वारा, वि० सं० १२५३ में शहाबुद्दीन गोरी व धारावर्षदेव राजा के बीच हुए युद्ध के समय तीर्थस्थल की रक्षा के लिए दिया गया योगदान उल्लेखनीय है, जिससे शहाबुद्दीन को यहाँ से घायल होकर वापिस लौटना पड़ा था। यहाँ के श्रावकों ने काशह्रदगच्छ के आचार्य भगवन्तों से प्रेरणा पाकर अनेकों धार्मिक कार्य करके धर्म की प्रभावना बढ़ायी है।

प्रतिवर्ष वैशाख शुक्ला १० को ध्वजा चढ़ती है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में यहाँ इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * इस प्राचीन बावन जिनालय मन्दिर का दृश्य अति सुरम्य है। श्री शान्तिनाथ भगवान की प्राचीन, कलात्मक, परिकरयुक्त प्रतिमा अति ही मनोहर व भावात्मक है। लेकिन अन्य देरियों में प्रतिमाजी नहीं है।

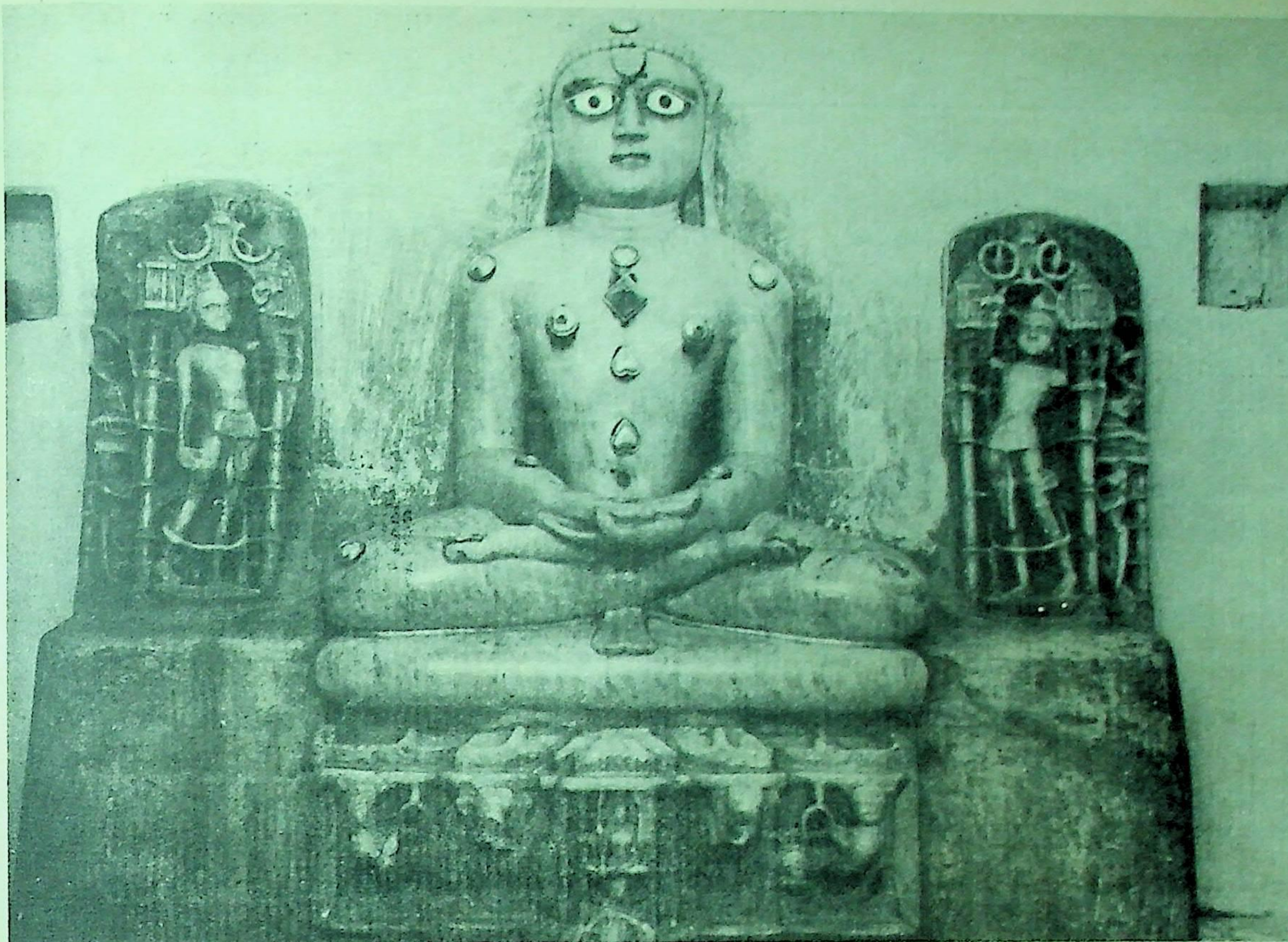
मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन आबू रोड १६ कि० मी० है, जहाँ से टैक्सी की सुविधा है। यहाँ का बस स्टेशन भारजा २.५ कि० मी० है, जो कि सिरोही रोड-आबू मार्ग पर स्थित है। भारजा से कच्ची सड़क है, बीच में बनास नदी आती है। कार व बस का जाना कठिन है। जीप द्वारा आवागमन हो सकता है।

सुविधाएँ * वर्तमान में ठहरने के लिए कोई सुविधा नहीं है।

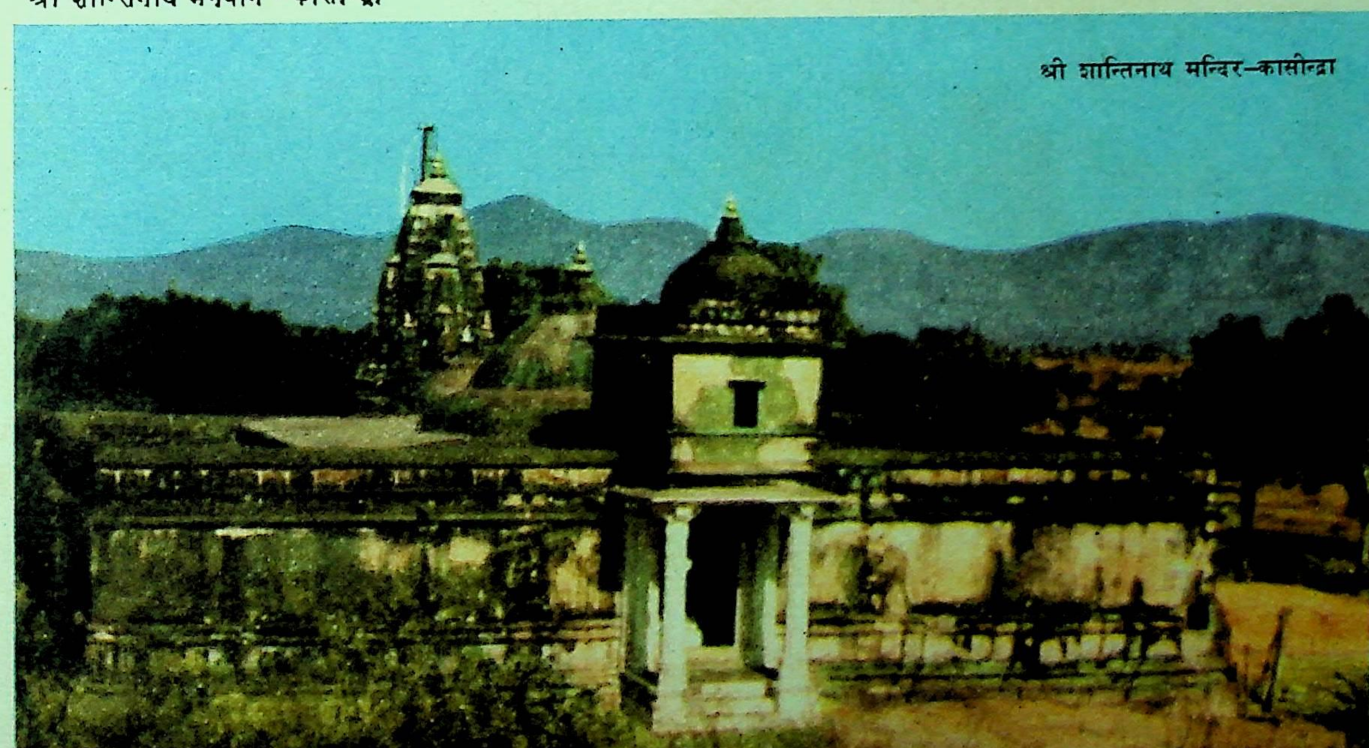
पेढ़ी * श्री शान्तिनाथ भगवान जैन देरासर पेढ़ी : कासीन्द्रा गांव : डाक घर – भारजा : व्हाया – सरूपगंज : तहसील – पिन्डवाड़ा : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान तार घर – भारजा : टेलीफोन – पी० सी० ओ० भारजा।

श्री शान्तिनाथ भगवान–कासीन्द्रा





श्री शान्तिनाथ भगवान - कासोन्द्रा



श्री शान्तिनाथ मन्दिर–कासीन्द्रा

श्री देलदर तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ६५ सें० मी०।

तीर्थ स्थल * देलदर गाँव के मध्यस्थ।

प्राचीनता * मन्दिर के एक स्थंभ पर सं० ११०१ का लेख उत्कीर्ण है, जो यहाँ की प्राचीनता को सिद्ध करता है। मूलनायक भगवान के परिकर की गादी पर सं० १३५९ का लेख है। मंदिर में एक गादी पर सं० १३३१ का शिलालेख उत्कीर्ण है। यहाँ से कुछ प्राचीन प्रतिमाएँ साबरमती ले जायी गई हैं।

विशिष्टता * प्रतिवर्ष वैशाख शुक्ला ६ को ध्वजा चढ़ायी जाती है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त यहाँ कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * प्रभु प्रतिमा की कला अति ही सुन्दर व आकर्षक है।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन आबू रोड़ ११ कि० मी० है, जहाँ से जीप व टैक्सी की सुविधा है। मन्दिर तक बस व कार जा सकती है।

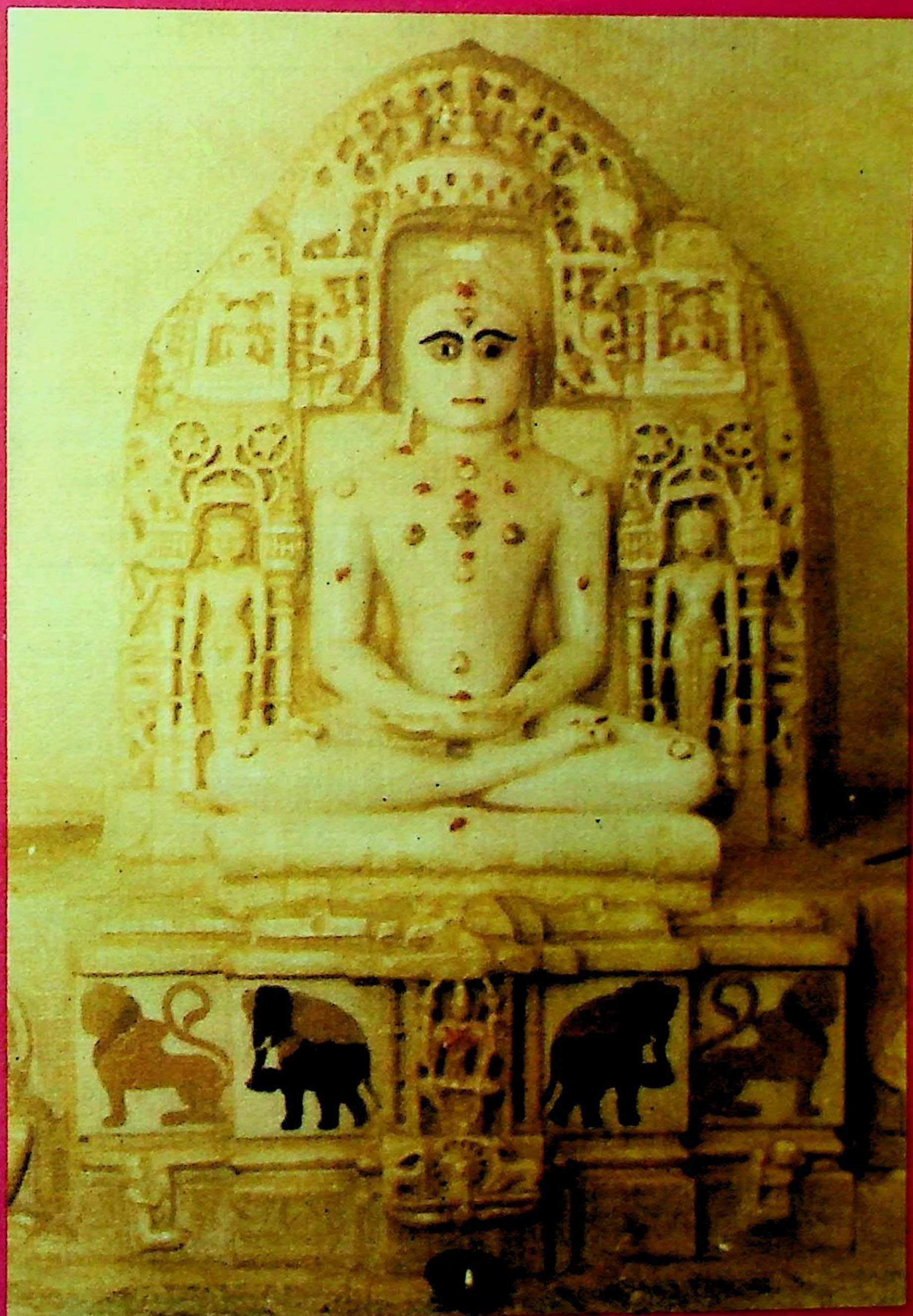
सुविधाएं * फिलहाल यहाँ ठहरने के लिए कोई सुविधा नहीं है। आबू रोड़ ठहरकर ही यहाँ आना सुविधाजनक है।

पेढ़ी * श्री देलदर जैन संघ, देलदर गाँव; डाक घर – आबू रोड; जिला – सिरोही; प्रान्त – राजस्थान; तार घर – आबू रोड़; टेलीफोन – पी० सी० ओ० आबू रोड़।

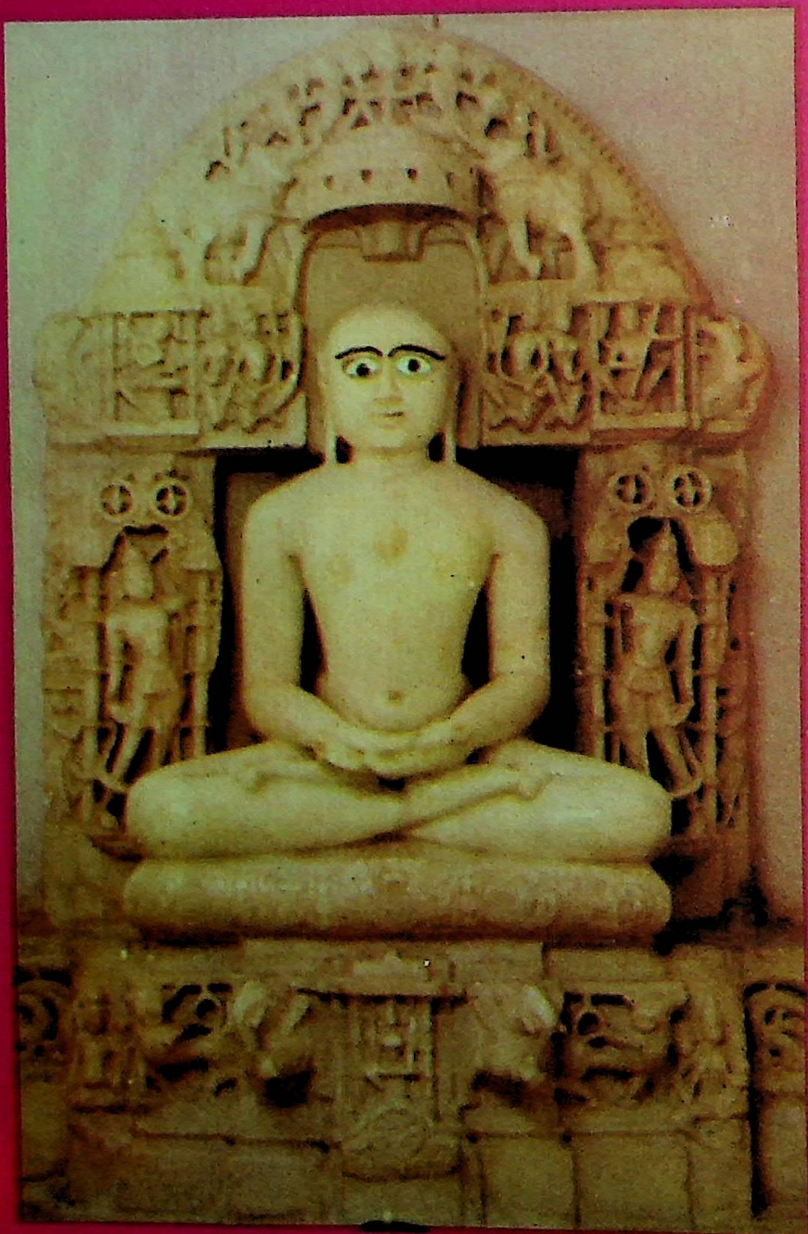
श्री महावीर भगवान मन्दिर– देलदर



सहायक : १. शाह कपूरचन्द परतापजी, सांथू (राज०) २. के. किशनलालजी शान्तीलालजी, तिरुवन्नामलै (तमिलनाडु) ३. श्री किशनलालजी गोतमचन्दजी बम्ब, विलुपुरम (तमिलनाडु) ४. श्री केशरीचन्दजी निहालचन्दजी कोचर, तंजावर (तमिलनाडु)



श्री महावीर भगवान— [illegible]



श्री संभवनाथ भगवान – डेरणा

श्री डेरणा तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री संभवनाथ भगवान, पद्मासनस्थ।

तीर्थ स्थल * डेरणा गाँव के बाहर एक परकोटे में।

प्राचीनता * इसका प्राचीन नाम देहलाणा होने का शिलालेखों में उल्लेख है। मन्दिर के एक गोखले में परिकर की गादी पर सं० ११७२ फाल्गुन शुक्ला ३ का लेख उत्कीर्ण है। इससे यह प्रमाणित होता है कि यह तीर्थ क्षेत्र लगभग बारहवीं सदी से पूर्व का है।

विशिष्टता * प्रतिवर्ष फाल्गुन कृष्णा ६ को ध्वजा चढ़ाई जाती है। इस अवसर पर स्वामीवत्सल का आयोजन होता है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त यहाँ कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * दूर से ही प्राचीन मन्दिर का दृश्य अति ही मनोहर लगता है। यह प्रतिमा अति ही भावात्मक रहने के कारण सहज ही में भक्तजनों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन आबू रोड़ ८ कि० मी० है, जहाँ से जीप व टैक्सी का साधन है। आबू रोड़ से लगभग कच्ची सड़क है। लेकिन कार व बस मन्दिर तक जा सकती हैं।

सुविधाएँ * वर्तमान में यहाँ ठहरने का कोई साधन नहीं है। आबू रोड़ ठहरकर आना ही सुविधाजनक है।

पेढ़ी * श्री डेरणा जैन श्वेताम्बर तीर्थ : गाँव – डेरणा : डाक घर – आबू रोड़ : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – आबू रोड़ : टेलीफोन – पी० सी० ओ० आबू रोड़।





प्राचीन कलात्मक प्रतिमा - डेरणा



श्री संभवनाथ भगवान मन्दिर–डेरणा

सहायक : १. श्री केवलचन्दजी गुदड़मलजी छाजेड़, वेलूर (तमिलनाडु) २. श्री केशरीमलजी मिश्रीमलजी आछा, वालाजाबाद तमिलनाडु) ३. श्री केवलचन्दजी घेवरचन्दजी भटेवड़ा, वेलूर (तमिलनाडु) ४. श्री कोयम्बतूर कटपीस डिपोट, कोयम्बतूर (तमिलनाडु)

श्री मुण्डस्थल तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री महावीर भगवान, कायोत्सर्ग मुद्रा, श्वेत वर्ण, लगभग १.०७ मीटर।

तीर्थ स्थल ✻ मुंगथला गाँव के बाहरी भाग में।

प्राचीनता ✻ यह तीर्थ भगवान महावीर के समय का माना जाता है। कहा जाता है कि भगवान महावीर ने जब अपनी छद्मावस्था में इस अर्बुदगिरि की भूमि में विचरण किया तब मुण्डस्थल में नंदीवृक्ष के नीचे काउसग्ग ध्यान में रहे थे। विक्रम की तेरहवीं शताब्दी में आचार्य श्री महेन्द्रसूरिजी द्वारा रचित "अष्टोत्तरी तीर्थ-माला" में भी इसका वर्णन है। इस तीर्थ-माला में यह भी कहा गया है कि श्री पूर्णराज नामक राजा ने जिनेश्वर की भक्ति के कारण महावीर भगवान के जन्म के बाद ३७वें वर्ष में एक प्रतिमा बनाई थी। एक शिलालेख पर भगवान महावीर का छद्मावस्था काल में यहाँ काउसग्ग ध्यान में रहने का व पूर्णराज राजा द्वारा भगवान की प्रतिमा निर्मित करवाकर श्रीकेशीस्वामी के सुहस्ते प्रतिष्ठित करवाने का उल्लेख है। उपरोक्त तथ्यों के सर्वेक्षण की आवश्यकता है ताकि काफी जानकारी प्राप्त हो सके। विक्रम सं० १२१६ वैशाख कृष्णा ५ को यहाँ स्तम्भों के निर्माण करवाने का उल्लेख है। विक्रम सं० १३८९ में श्री धांधल द्वारा मुण्डस्थल में महावीर भगवान के मन्दिर में जिनेश्वर भगवान की युगल प्रतिमाएँ बनवाकर आचार्य श्री कक्कसूरिजी के सुहस्ते प्रतिष्ठित करवाने का उल्लेख है।

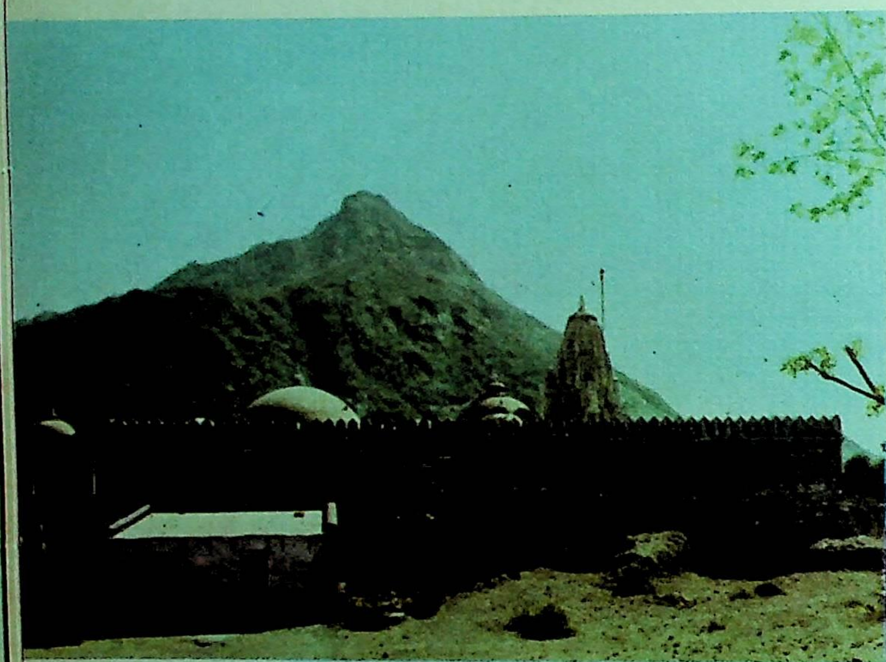
विक्रम की चौदहवीं शताब्दी में श्री जिनप्रभसूरिजी द्वारा रचित "विविध तीर्थ कल्प" में इस तीर्थ का उल्लेख है।

विक्रम सं० १४४२ में राजा श्री कान्हड़देव के पुत्र श्री बीसलदेव द्वारा वाड़ी के साथ कुआँ भेंट करने का उल्लेख मिलता है। विक्रम सं० १५०१ में तपागच्छीय श्री लक्ष्मीसागरजी महाराज को मुण्डस्थल में उपाध्याय की पदवी दी गयी।

विक्रम सं० १७२२ में रचित तीर्थ माला में मुण्डस्थल में १४५ प्रतिमाओं के होने का उल्लेख है।

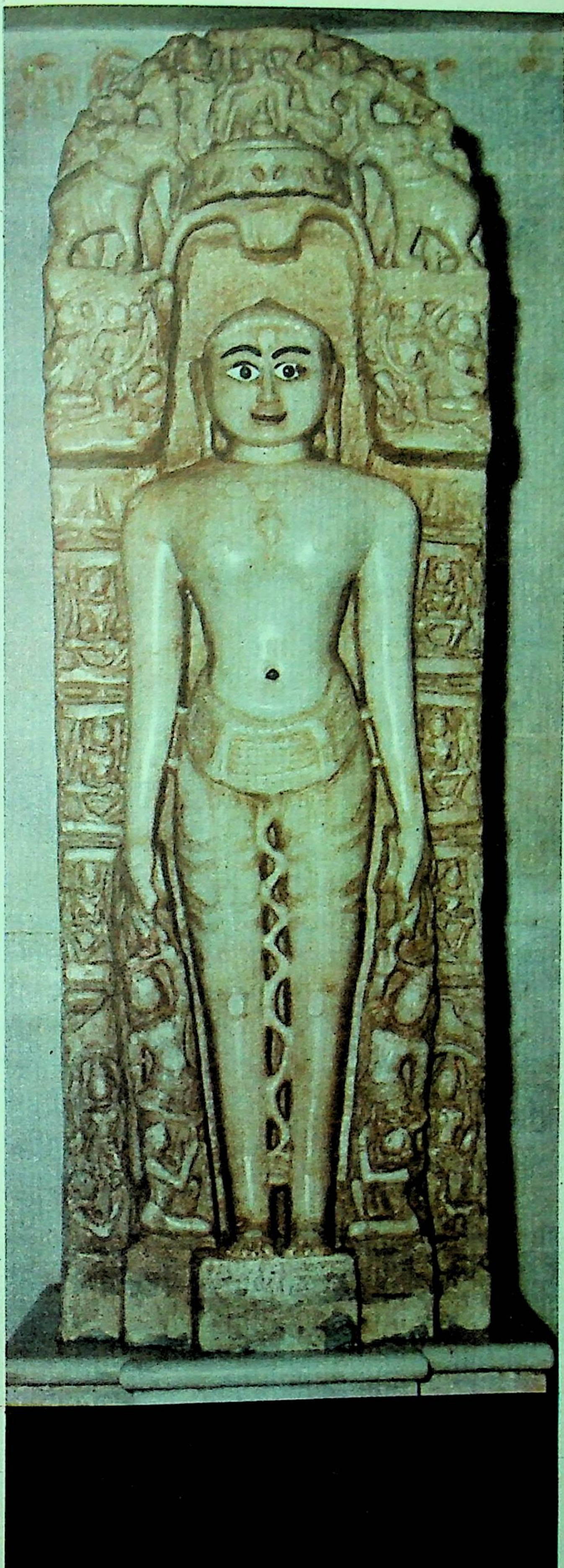
उसके बाद मन्दिर बहुत जीर्ण अवस्था में रहा, जिसका पुनः उद्धार होकर विक्रम सं० २०१५ वैशाख शुक्ला १० के दिन आचार्य श्री विजयहर्षसूरिजी के सुहस्ते पुनः प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

विशिष्टता ✻ भगवान महावीर का अपने छद्मावस्था काल में यहाँ पदार्पण कर काउसग्ग ध्यान में रहने का उल्लेख यहाँ की मुख्य विशेषता का सूचक है। मंत्री श्री



श्री महावीर मन्दिर—मुण्डस्थल

सहायक : १. शाह कस्तूरचन्द तेजराज, मद्रास–१. २. श्री एम. कन्यालालजी रांका, मद्रास–१३. ३. श्री डी. मोहनलालजी पारख, तिरुचिरापल्ली (तमिलनाडु) ४. श्री लक्ष्मीचन्दजी हुलासकँवर कांकरिया, ब्यावर (राज०)



विमलशाह व वस्तुपाल तेजपाल ने विमलवसही व लावण्यवसही की व्यवस्था हेतु मण्डलों की स्थापना की, तब मुण्डस्थल के श्रावकों को भी व्यवस्था के कार्य में शामिल किया था।

अन्य मन्दिर ※ वर्तमान में इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य ※ आज यहाँ पर कोई खास प्राचीन अवशेष प्राप्त नहीं हो रहे हैं। उल्लेखों के अनुसार यहाँ से कुछ प्राचीन प्रतिमाएँ बाहर मन्दिरों में भेज दी गई।

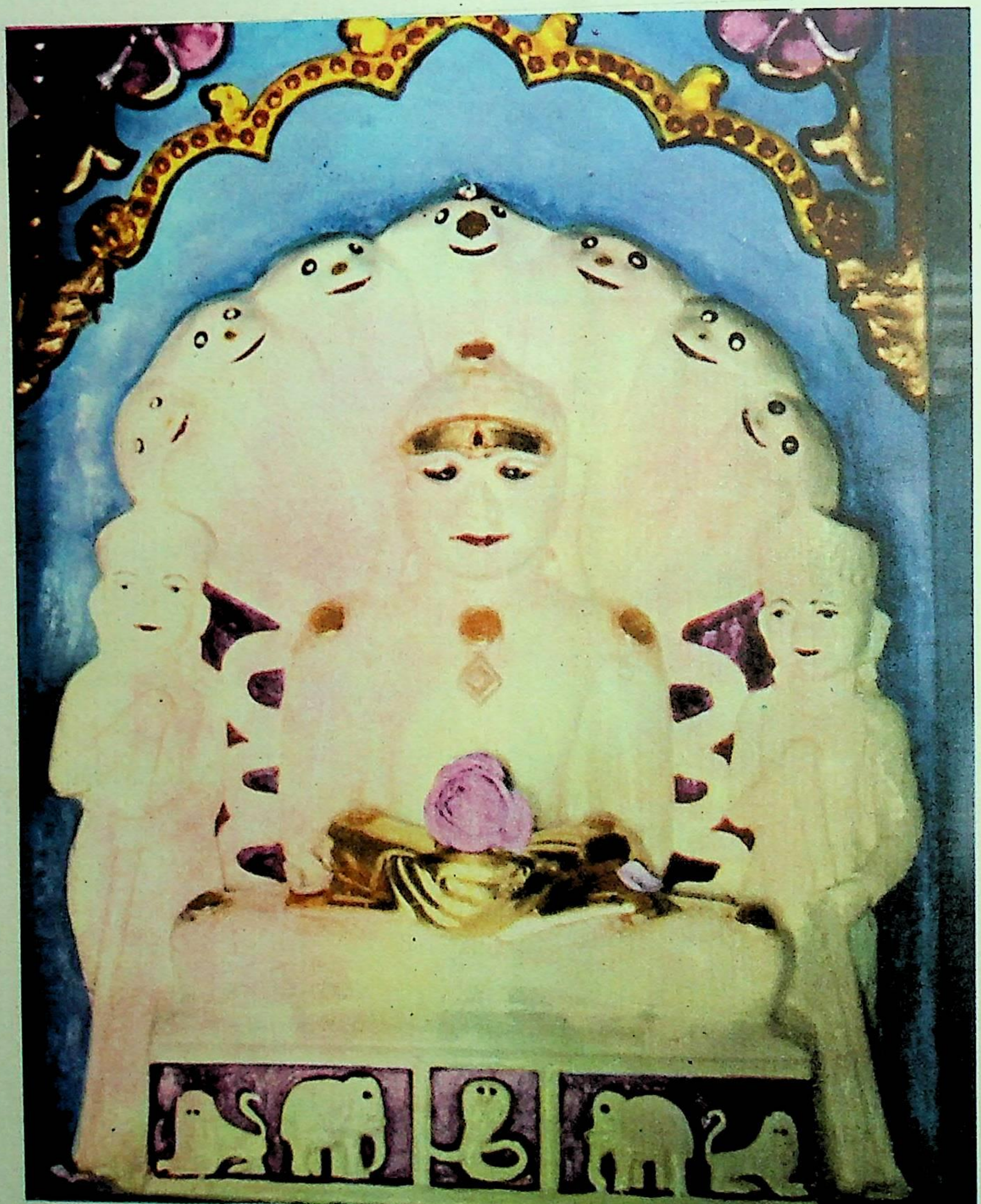
मार्ग दर्शन ※ यहाँ के नजदीक का रेलवे स्टेशन आबू रोड १० कि० मी० है जहाँ से बस व टैक्सी की सुविधा है। मन्दिर से सिर्फ १०० मी० कच्ची सड़क है। लेकिन बस व कार आखिर तक आ सकती है।

सुविधाएँ ※ ठहरने के लिए धर्मशाला है। लेकिन फिलहाल यहाँ कोई खास सुविधा नहीं है।

पेढ़ी ※ श्री कल्याणजी परमानन्दजी पेढी : श्री मुण्डस्थल महातीर्थ : डाक घर – मुंगथला : तालुका – आबू रोड़ : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान: तार घर – आबू रोड़ : टेलीफोन – पी० सी० ओ० आबू रोड़।



← श्री महावीर भगवान – मुंडस्थल



श्री जीरावला पार्श्वनाथ भगवान – जीरावला

सहायक : श्रीमती कमलबेन धर्मपत्नी स्व० वीरजी लोडाया के पौत्र शरदकुमार नीतिनकुमार सुपुत्र श्रीमती कांताबेन कांजी शाह, नानी खावडी (जामनगर) वाले कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु)।

श्री जीरावला तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री जीरावला पार्श्वनाथ भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग १८ सें० मी० । (प्राचीन मूलनायक) ।

तीर्थ स्थल * जीरावला गाँव में जयराज पर्वत की ओट में।

प्राचीनता * जैन शास्त्रों में इसके नाम, जीरावल्ली, जीरापल्ली, जीरिकापल्ली एवं जयराजपल्ली आदि आते है। उपलब्ध प्राचीन अवशेषों से प्रतीत होता है कि किसी समय यह एक समृद्धशाली नगर था।

उल्लेखानुसार यहाँ जीरावला पार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर विक्रम संवत् ३२६ में कोड़ी नगर के सेठ श्री अमरासा ने बनाया था। कोड़ीनगर शायद भीनमाल के पासवाला होना चाहिए। कहा जाता है कि अमरासा श्रावक को स्वप्न में श्री पार्श्वनाथ भगवान के अधिष्ठायक देव के दर्शन हुए। अधिष्ठायक देव ने जीरापल्ली शहर के बाहर भूगर्भ में गुफा के नीचे स्थित पार्श्वप्रभु की प्रतिमा को उसी पहाड़ी की तलहटी में स्थापित करने को कहा। अमरासा ने स्वप्न का हाल वहाँ विराजित जैनाचार्य श्री देवसूरिजी को बताया। उसी दिन आचार्य श्री देवसूरिजी को भी इसी तरह का स्वप्न आया था। आचार्य श्री व अमरासा सांकेतिक स्थान पर शोध करने गये। पुण्ययोग से वहीं पर पार्श्वप्रभु की प्रतिमा प्राप्त हुई।

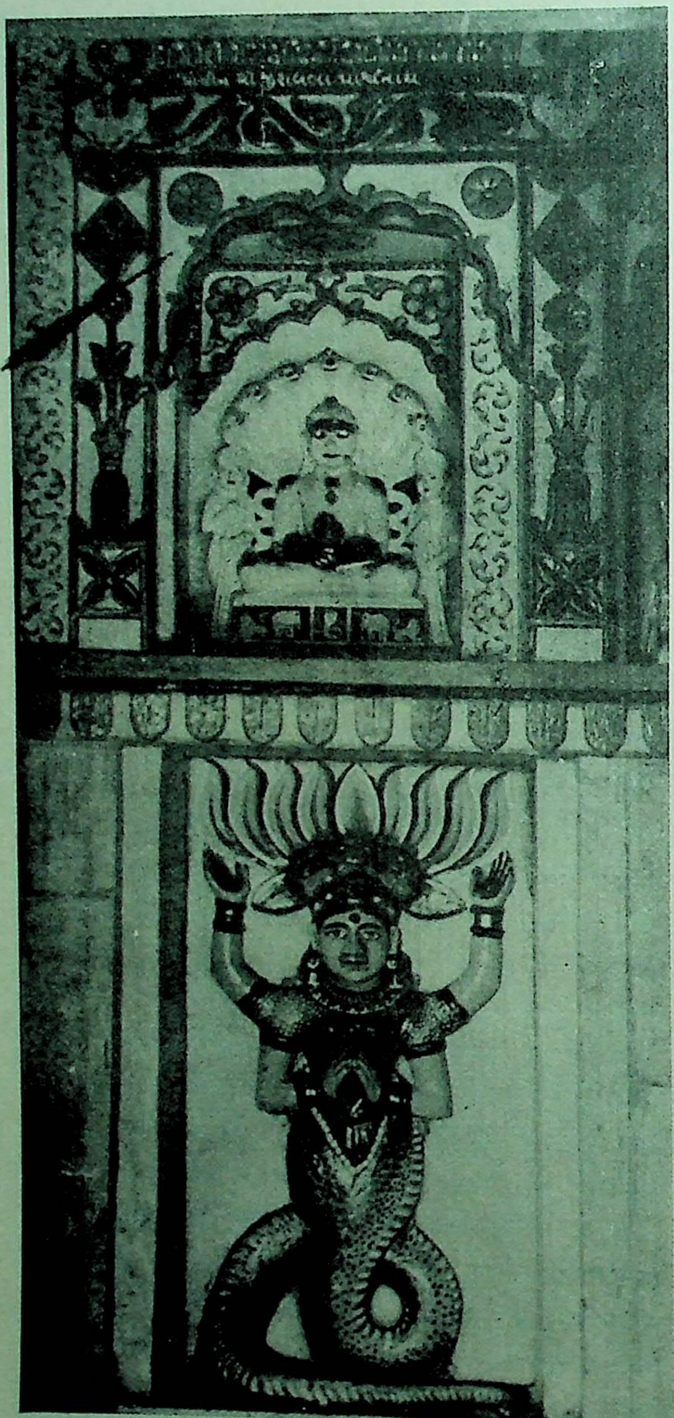
श्री अधिष्ठायक देव के आदेशानुसार वहीं पर मन्दिर का निर्माण करवाकर विक्रम सं० ३३१ में आचार्य श्री देवसूरिजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा संपन्न हुई। विक्रम सं० ६६३ में इसका प्रथम जीर्णोद्धार संघपति श्रेष्ठी श्री जैतासा खेमासा द्वारा जैनाचार्य श्री मेरुसूरिजी के उपदेश से हुआ था, जो कि १० हजार यात्रियों के साथ संघ लेकर आये थे। उसके बाद दूसरा जीर्णोद्धार विक्रम सं० १०३३ में जैनाचार्य श्री सहजानन्दजी के उपदेश से तेतली नगर के श्रेष्ठी श्री हरदासजी ने करवाया था।

इसके पश्चात् भी कई बार जीर्णोद्धार हुए होंगे लेकिन उनके कहीं उल्लेख नहीं मिल रहे हैं। अंतिम प्रतिष्ठा विक्रम संवत् २०२० वैशाख शुक्ल पक्ष में श्री तिलोकविजयजी के सुहस्ते सुसम्पन्न हुई। यहाँ पर उपलब्ध शिलालेखों, विभिन्न आचार्य भगवन्तों द्वारारचित स्तोत्रों व चैत्य परिपाटियों में जीरावला पार्श्वनाथ भगवान का नाम विक्रम सं० १८५१ तक आता है। उसके बाद पता नहीं किस कारण श्री नेमिनाथ भगवान की प्रतिमा मूलनायक भगवान के रूप में परिवर्तित की गयी। मान्यता है कि आक्रमणकारियों के भय से पार्श्वप्रभु की इस प्राचीन प्रतिमा को सुरक्षित किया होगा, जो कि अभी एक देहरी में विद्यमान है।

विशिष्टता * श्री जीरावला पार्श्वनाथ भगवान की महिमा का जैन शास्त्रों में जगह-जगह पर अत्यन्त वर्णन किया है। अभी भी जहाँ कहीं भी प्रतिष्ठा आदि शुभ काम होते हैं तो प्रारंभ में "ॐ श्री जीरावला पार्श्वनाथाय नमः" पवित्र मंत्राक्षर रूप इस तीर्थाधिराज का स्मरण किया जाता है। उन अवसरों पर प्रायः चमत्कारिक घटनाएँ घटती हैं व श्रद्धालु भक्तजनों की मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। इस मन्दिर में श्री पार्श्वनाथ भगवान के १०८ नाम की प्रतिमाएँ विभिन्न देरियों में स्थापित हैं।

प्रायः हर आचार्य भगवन्त, साधु मुनिराजों ने यहाँ यात्रार्थ पदार्पण किया है। आज तक अनेकों संघ यहाँ आ चुके हैं, जिनके अनेकों वृत्तांत हैं। अनेकों आचार्य भगवन्तों व मुनिमहाराजों ने अपने स्तोत्रों आदि में इस तीर्थ के महिमा की व्याख्या की है, उन सबका वर्णन यहां करना संभव नहीं। इस तीर्थ के नाम पर जीरापल्लीगच्छ बना है, जिसका नाम चौरासीगच्छों में आता है। यहाँ के चमत्कार भी प्रख्यात हैं, जैसे एक बार ५० लुटेरे इकट्ठे होकर मन्दिर में घुसे। मन्दिर में उपलब्ध सामान

श्री जीरावला पार्श्वनाथ भगवान



व रुपयो को जिनके जो हाथ लगा, गठडियाँ बाँधकर बाहर आने लगे। दैविक शक्ति से उन्हें कुछ भी दिखायी न दिया जिससे जिधर भी जाते दीवारों से टकराकर खून से लथपथ हो गये व अन्दर ही पड़े रहे। सुबह मय सामान पकड़े गये।

एक बार आचार्य श्री मेरुतुंगसूरिजी ने जीरावला तीर्थ की ओर जाते एक संघ के साथ ३ श्लोक लिखकर भेजे। संघपति ने उन श्लोकों को भगवान के सामने रखा। अदृश्य रूप से अधिष्ठायक देव ने सात गुटिकाएँ प्रदान कीं व निर्देश दिया कि आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग करना। ऐसी अनेकों घटनाएँ घटी हैं व अभी भी घटती रहती हैं।

यहाँ पर जैनेतर भी खूब आते हैं व प्रभु को दादाजी कहकर पुकारते हैं। प्रतिवर्ष गेहूँ की फसल पाते ही सहकुटुम्ब यहाँ आते हैं व यहीं भोजन तैयार करके हर्षोल्लास के साथ प्रभु के चरणों में चढ़ाकर पश्चात् खुद ग्रहण करके अपने को कृतार्थ समझते हैं। इनके कथनानुसार यहाँ आने पर उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव पोष कृष्णा १० को होता है। चैत्री पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा व भादरवा शुक्ला ६ को मेले लगते हैं।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में यहाँ पर इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य *श्री पार्श्व प्रभु की प्रतिमा अति ही प्राचीन रहने के कारण कलात्मक व भावात्मक है सहज ही भक्तजनों के हृदय को अपनी तरफ खींच लेती है। जंगल में शान्त वातावरण के साथ जयराज पर्वत की ओट में यह बावन जिनालय मन्दिर का दृश्य अति ही आकर्षक लगता है।

मार्ग दर्शन * यहाँ से नजदीक का रेलवे स्टेशन आबू रोड़ ४८ कि० मी० है, जहाँ से बसें व टैक्सी की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। नजदीक का बड़ा गाँव रेवदर ८ कि० मी० है, जो कि आबू-मन्डार मार्ग पर स्थित है। यहाँ से श्री वर्धमान जैन तीर्थ (वरमाण) ५ कि० मी० है। जीरावला गाँव का बस स्टैण्ड मन्दिर से सिर्फ २०० मी० है। मन्दिर तक पक्की सड़क है।

सुविधाएँ * ठहरने के लिए मन्दिर के अहाते में ही विशाल धर्मशाला है जहाँ पानी, बर्तन, ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है। भाता भी दिया जाता है।

पेढ़ी * श्री जीरावला पार्श्वनाथ जैन तीर्थ : डाक घर – जीरावला : तालुका – रेवदर : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – रेवदर : टेलीफोन – पी० सी० ओ० रेवदर।



श्री पार्श्वनाथ भगवान • जीरावला

श्री जीरावला पार्श्वनाथ मन्दिर – जीरावला

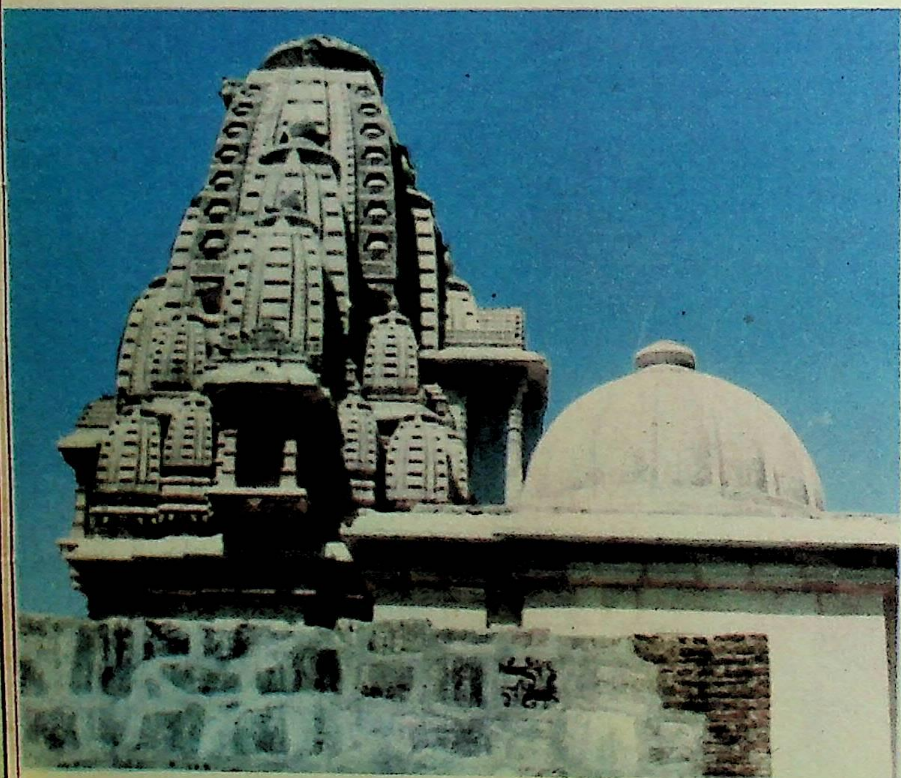


श्री वरमाण तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री महावीर भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, लगभग १.४ मीटर।

तीर्थ स्थल * वरमाण गाँव के बाहर एक छोर में छोटी टेकरी पर।

प्राचीनता * वि० सं० १२४२ में श्रेष्ठी श्री पुनिग आदि श्रावकों द्वारा श्री महावीर स्वामी के मन्दिर (ब्रह्माणगच्छका) की भमती में श्री अजितनाथ भगवान की देरी के गुंबज की पद्मशिला करवाने का उल्लेख है। विक्रम सं० १२८७ में आबू देलवाड़ा के लावण्यवसही मन्दिर की व्यवस्था के लिए मंत्री श्री वस्तुपाल तेजपाल द्वारा स्थापित व्यवस्था समिति ने यहाँ के श्रीसंघ को प्रतिवर्ष होनेवाले अठाई महोत्सव में फाल्गुन कृष्णा ५ (तृतीय दिवस) की पूजा रचवाने का कार्य सौंपा था। विक्रम सं० १४४६ में इस मन्दिर में एक रंगमण्डप निर्माण करवाने का भी उल्लेख है। विक्रम सं० १७५५ में श्री ज्ञानविमलसूरिजी द्वारा रचित "तीर्थमाला" में यहाँ का उल्लेख है। इन सबसे यह सिद्ध होता हे कि यह मन्दिर विक्रम सं० १२४२ से पहले का है। ब्रह्माणगच्छ की उत्पत्ति भी इसके पूर्व हो चुकी थी। यहाँ उपलब्ध मकानों के असंख्य खण्डहरों, प्राचीन बावड़ियों व कुओं से प्रतीत होता है कि किसी समय यह विशाल नगरी रही होगी। इस मन्दिर के जीर्णोद्धार का काम चालू है।



श्री महावीर भगवान मन्दिर–वरमाण

विशिष्टता * ब्रह्माणगच्छ का उत्पत्ति स्थान यही है। प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला १३ को यहाँ पर मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से श्रद्धालु भक्तगण काफी संख्या में आकर, भक्ति का लाभ लेते हैं। यहाँ का सूर्य मन्दिर भारत के प्रसिद्ध सूर्य मन्दिरों में एक है, जिसका निर्माण विक्रम की सातवीं सदी से पूर्व का बताया जाता है।

अन्य मन्दिर * वर्तमान में इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

कला और सौन्दर्य * यहाँ के तीर्थाधिराज भगवान श्री महावीर की प्रतिमा की कला बेजोड़ है। मन्दिर के घूमट पर किये हुए प्राचीन (श्री नेमिनाथ भगवान की बरात, भगवान का जन्मोत्सव आदि) कला के नमूने दर्शनीय हैं। भगवान के आजू-बाजू श्री पार्श्वनाथ भगवान की काउसग्ग मुद्रा में दो प्रतिमाओं की, लक्ष्मी देवी, अम्बिका देवी व अन्य प्राचीन प्रतिमाओं की कला अति दर्शनीय है।

मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन आबू रोड़ ४४ कि० मी० है, जहाँ से टैक्सी व बस का साधन है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। नजदीक के बड़े गाँव रेवदर ३ कि० मी०

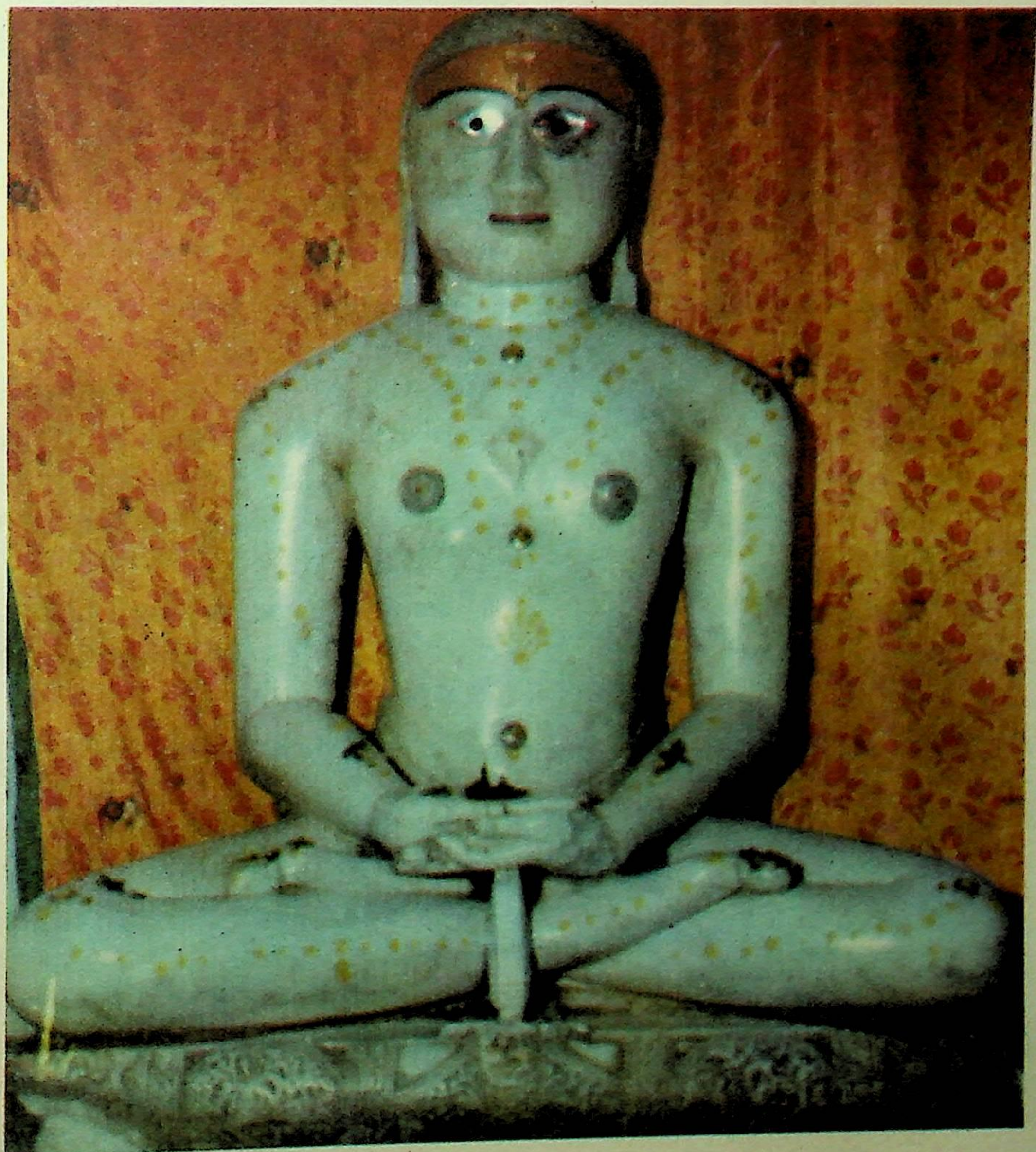
मन्डार १० कि० मी० जीरावला तीर्थ ५ कि० मी० है। इन जगहों से बस का साधन है।

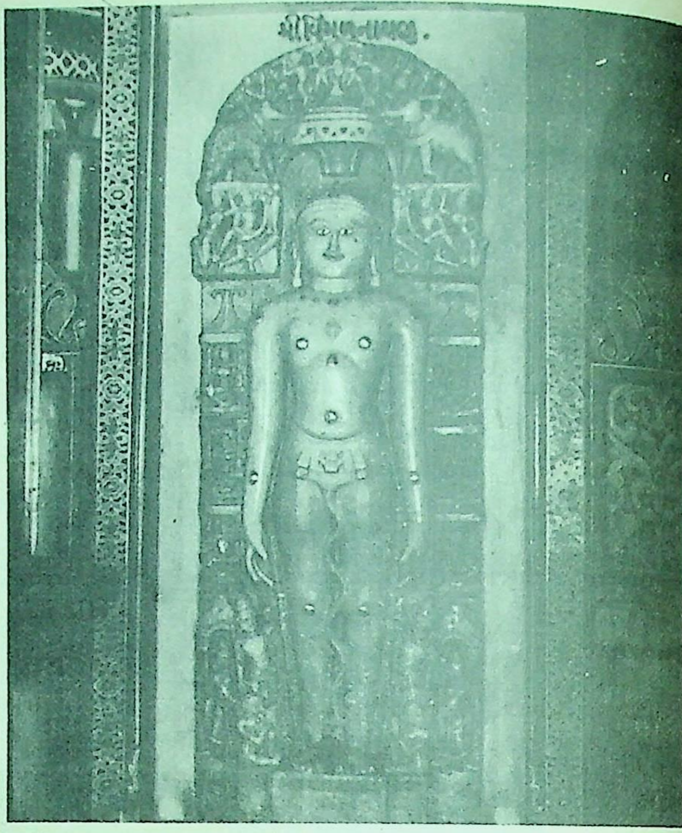
सुविधाएँ ❋ ठहरने के लिए मन्दिर के पास ही दो पुरानी धर्मशालाएँ है, जहाँ पानी व बर्तन की सुविधा है। नूतन विशाल धर्मशाला बन रही है। भोजनशाला जल्दी ही प्रारंभ होनेवाली है। बिजली भी जल्दी ही आनेवाली है।

पेढ़ी ❋ श्री वर्धमान जैन तीर्थ : डाक घर – वरमाण तालुका – रेवदर : जिला – सिरोही : व्हाया – आबू रोड : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – रेवदर : टेलीफोन – पी० सी० ओ० रेवदर।



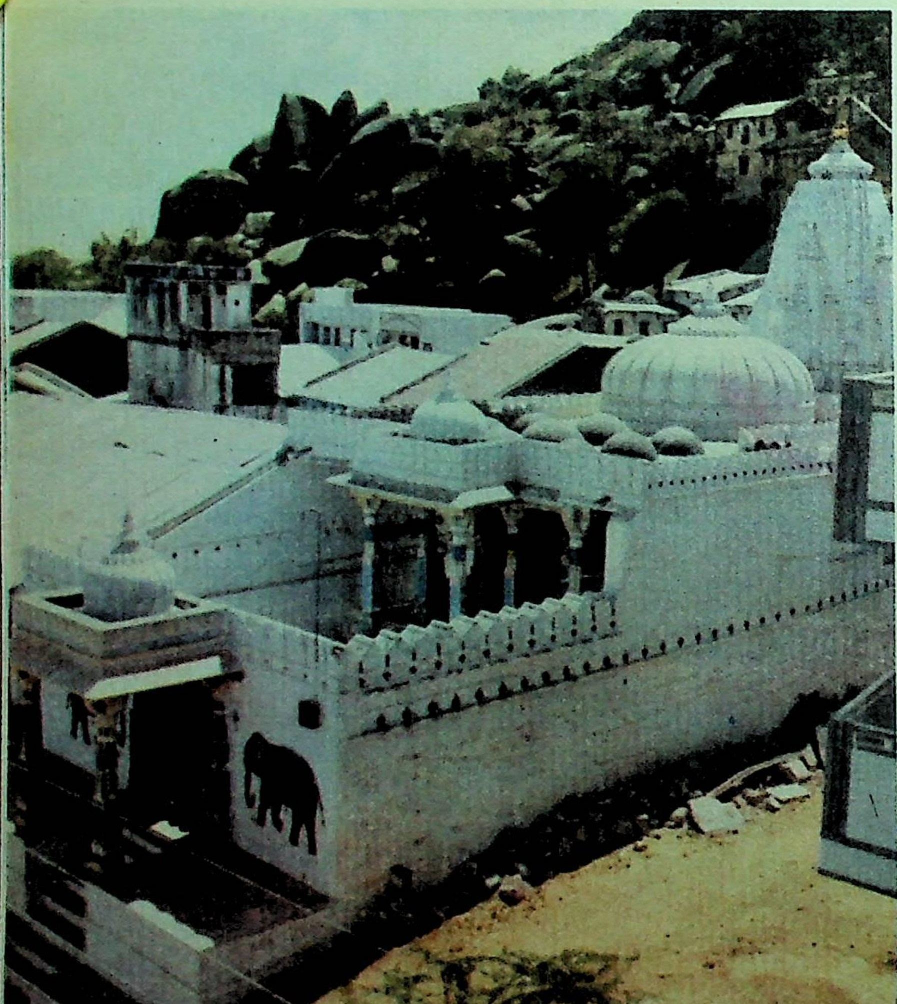
श्री महावीर भगवान–वरमाण





श्री विमल नाथ भगवान - मण्डार

श्री महावीर भगवान मन्दिर–मंडार



श्री मंडार तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री महावीर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग १२० सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ मन्डार गाँव के मन्दिर की सेरी में।

प्राचीनता ✻ प्राचीन शिलालेखों में इस गाँव को महाहृद व महाहड नामों से उल्लेखित किया है।

प्रकाण्ड विद्वान आचार्य श्री वादीदेवसूरीश्वरजी का जन्म इसी गाँव में सं० ११४३ में हुआ था। सं० १२८७ में आबू देलवाड़ा के लावण्यवसहि मन्दिर के वार्षिक महोत्सव हेतु कमेटी बनायी थी जिसमें इस गाँव का नाम भी शामिल था।

सं० १४९९ में श्री मेघ कवि द्वारा रचित 'तीर्थ-माला' में यहाँ के श्री महावीर भगवान के मन्दिर का उल्लेख है। उक्त महावीर भगवान का मन्दिर किसी समय भूकंप आदि के झपेटों में आकर भूगर्भ में समा गया होगा, ऐसा प्रतीत होता है। वर्तमान मूलनायक श्री महावीर भगवान की विशाल काय प्रतिमा व अन्य दो कायोत्सर्ग मुद्रा में श्री पार्श्वनाथ भगवान व श्री विमलनाथ भगवान की प्रतिमाएं (श्री विमलनाथ भगवान की प्रतिमा पर सं० १२५९ का लेख है) गांव के बाहर एक टेकरी के निकट जमीन में से प्राप्त हुई थी। संभवतः यह वही प्रतिमा है

जिसका श्री मघ कवि ने अपने तीर्थ माला में उल्लेख किया है। यहाँ पर पुनः मन्दिर निर्माण का कार्य करवाकर वि० स० १९२० में चरम तीर्थंकर वीर प्रभु की उस प्राचीन अलौकिक प्रतिमा को पुनः प्रतिष्ठित करवाया गया।

विशिष्टता * सुप्रख्यात प्रकाण्ड विद्वान आचार्य श्री वादीदेवसूरीश्वरजी की यह जन्म भूमि है। श्री 'महाहृतगच्छ' का उत्पत्ति स्थान भी यही है।

गाँव के बाहर जगह-जगह अनेकों खण्डहर अवशेष बिखरे हुए दिखायी देते हैं। इससे प्रतीत होता है किसी समय यह एक विराट नगरी रही होगी व यहाँ अनेकों जिन मन्दिर रहे होंगे। यहाँ के श्रेष्ठियों द्वारा भी जगह-जगह धार्मिक कार्यों में भाग लेने का उल्लेख मिलता है। प्रतिवर्ष माघ शुक्ला १३ को ध्वजा चढायी जाती है।

अन्य मन्दिर * इसके अतिरिक्त यहाँ एक और श्री धर्मनाथ भगवान का मन्दिर है। यह मन्दिर भी प्राचीन है।

कला और सौन्दर्य * भगवान महावीर की प्रतिमा अति ही सुन्दर व प्रभावशाली है। भूगर्भ से प्राप्त कायोत्सर्ग मुद्रा में श्री पार्श्व प्रभु की व श्री विमलनाथ भगवान की प्रतिमाएँ भी अति दर्शनीय हैं।

मार्ग दर्शन * नजदीक का रेलवे स्टेशन आबू रोड़ लगभग ५० कि० मी० है, जहाँ से बस व टैक्सियों की सुविधा है। यहाँ सिरोही, आबू रोड़ व डीसा से सीधी बसें आती हैं। यहाँ बस स्टेशन लगभग २०० मी० दूर है। कार मन्दिर तक जा सकती है। रास्ता तंग व ज्यादा मोड़ रहने के कारण बस २०० मी० दूर ठहरानी पड़ती है।

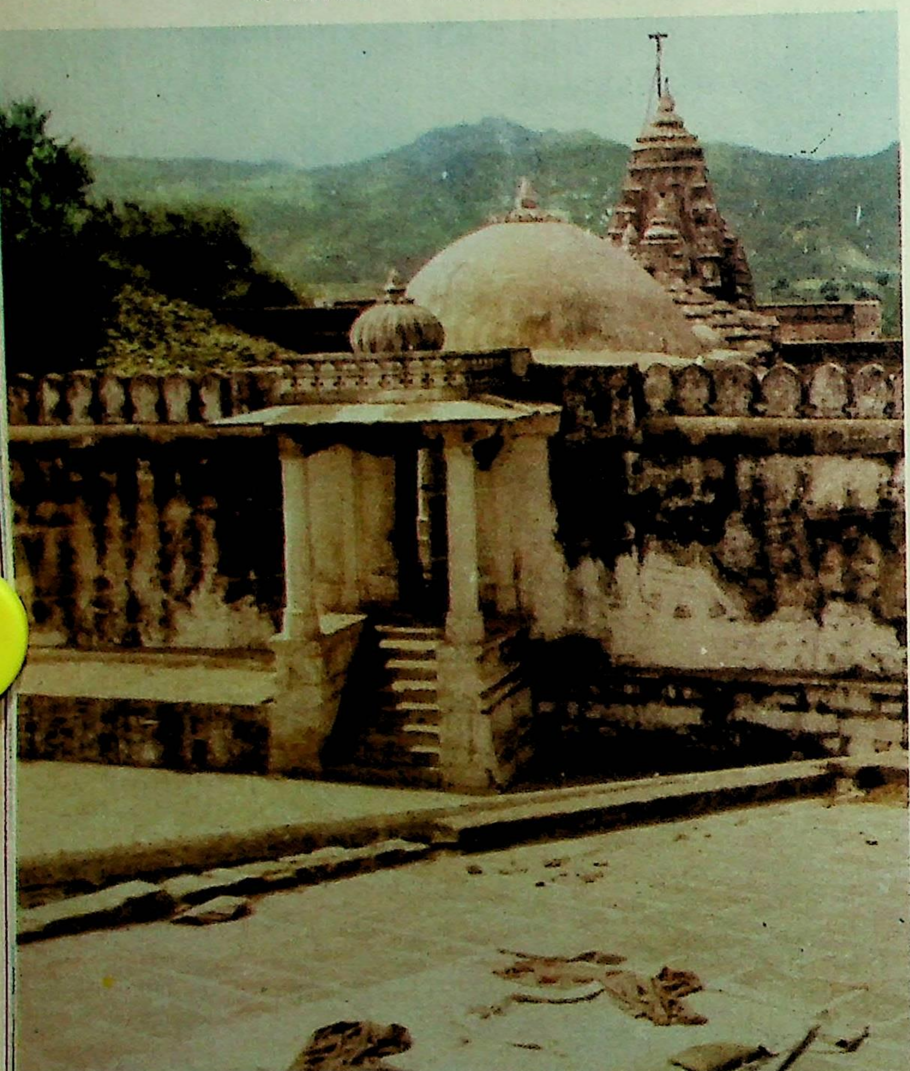
सुविधाएँ * ठहरने के लिए उपाश्रय है, जहाँ पानी, बिजली, का साधन है। आयम्बिलशाला भी है।

पेढ़ी * श्री पंच महाजन जैन धर्मादा व धार्मिक ट्रस्ट मण्डल : डाक घर – मन्डार : व्हाया – आबू रोड : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – मन्डार : टेलीफोन – पी० सी० ओ० मन्डार।



श्री महावीर भगवान–मंडार

श्री आदिनाथ जैन मन्दिर–ओर



श्री ओर तीर्थ

तीर्थाधिराज ✻ श्री आदीश्वर भगवान, श्वेत वर्ण, पद्मासनस्थ, लगभग ८० सें० मी०।

तीर्थ स्थल ✻ बतरिया नदी के किनारे बसे ओर गाँव के बीच।

प्राचीनता ✻ इसका प्राचीन नाम ओड़ रहने का शिलालेखों में उल्लेख मिलता है। मन्दिर में श्री अंबिका देवी की प्रतिमा के परिकर पर सं० ११४१ आषाढ़ शुक्ला ९ का लेख उत्कीर्ण है, जिसमें श्री महावीर भगवान का उल्लेख है। गूढ़ मण्डप में अन्य कायोत्सर्ग प्रतिमाओं पर सं० १२४२ का लेख उत्कीर्ण है जिनमें भी मूलनायक श्री महावीर भगवान रहनेका उल्लेख है। पन्द्रहवीं शताब्दी में श्री साधुचन्द मुनिवर द्वारा रचित "चैत्य परिपाटी" में भी श्री महावीर भगवान का उल्लेख है। हो सकता है तत्पश्चात् जीर्णोद्धार के समय श्री आदीश्वर भगवान की यह प्रतिमा प्रतिष्ठित की गयी होगी। इस प्रतिमा पर कोई लेख नहीं है। प्रतिमा अति ही प्राचीन है।

विशिष्टता ✻ प्रतिवर्ष फाल्गुन कृष्णा प्रतिपदा को ध्वजा चढ़ायी जाती है।

अन्य मन्दिर ✻ वर्तमान में यहाँ इसके अतिरिक्त कोई मन्दिर नहीं है।

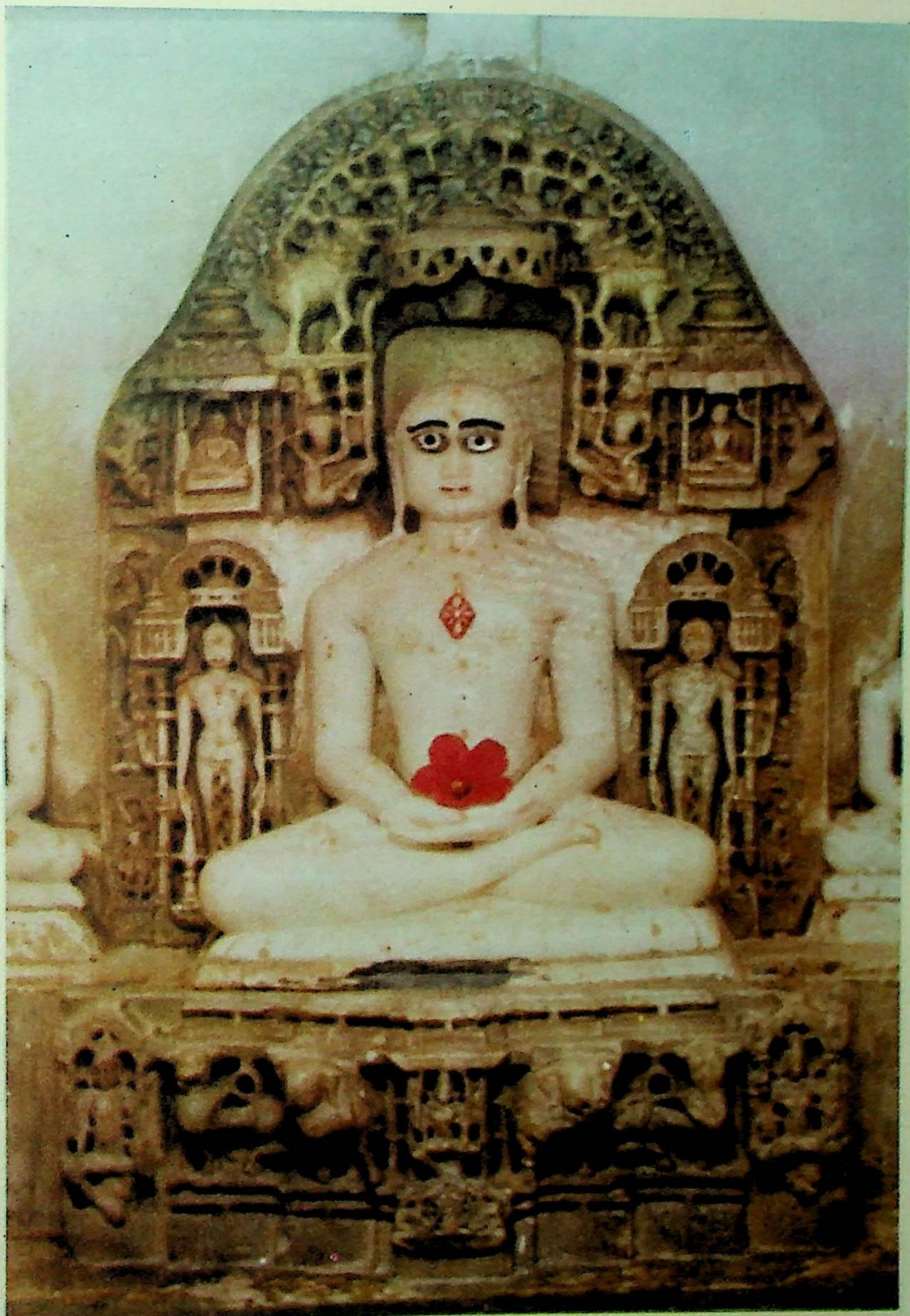
कला और सौन्दर्य ✻ यहाँ के मन्दिर में मूलनायक भगवान व अन्य प्रतिमाओं की कला दर्शनीय है।

मार्ग दर्शन ✻ नजदीक का रेलवे व बस स्टेशन आबू रोड ६ कि० मी० है, जहाँ से टैक्सी का साधन है। आबू रोड़ से कच्ची सड़क है। लेकिन मन्दिर तक कार व बस जा सकती हैं।

सुविधाएँ ✻ धर्मशाला है, परन्तु फिलहाल ठहरने के लिए सुविधा नहीं है। आबू रोड़ धर्मशाला में ठहरकर आना ही सुविधाजनक है, जहाँ सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

पेढ़ी ✻ श्री जैन देरासर पेढ़ी : डाक घर – ओर : व्हाया – आबू रोड़ : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – आबू रोड़ : टेलीफोन – पी० सी० ओ० आबू रोड़।

सहायक : १. श्री लक्ष्मीचन्दजी देवराजजी, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु) २. श्री एस. लालचन्दजी खूबचन्दजी जैन, कड़लूर (तमिलनाडु) ३. श्री लालचन्दजी सींघी, जवरीलालजी गादीया, वेलूर (तमिलनाडु) ४. मेसर्स. लूणकरण पुखराज एन्ड को० कोयम्बतूर (तमिलनाडु)



श्री आदीश्वर भगवान–ओर

श्री अचलगढ़ तीर्थ

तीर्थाधिराज * श्री आदीश्वर भगवान, स्वर्ण वर्ण, धातु प्रतिमा, पद्मासनस्थ, लगभग १.५० मी०।

तीर्थ स्थल * अरावली के अर्बुदाचल पर्वत की उच्चतम चोटी पर राणा कुंभा द्वारा निर्मित किले में, जहाँ की ऊंचाई समुद्र की सतह से १४०२ मीटर (४६०० फुट) है।

प्राचीनता * अचलगढ़ भी अर्बुदगिरि का अंग रहने के कारण इसकी प्राचीनता भी आबू तीर्थ के समान है। वर्तमान मन्दिरों में अचलगढ़ की तलेटी के पास छोटी टेकरी पर श्री शान्तिनाथ भगवान का मन्दिर सबसे प्राचीन है, जो कि श्री कुमारपाल राजा द्वारा निर्मित बताया जाता है। इसका उल्लेख 'विविध तीर्थ कल्प' व 'अर्बुदगिरि कल्प' में आता है, लेकिन कुमारपाल द्वारा श्री महावीर भगवान का मन्दिर निर्मित करवाने का उल्लेख है। हो सकता है जीर्णोद्धार के समय प्रतिमा परिवर्तित की गयी हो। पहाड़ के ऊंचे शिखर पर श्री आदिनाथ भगवान के जग विख्यात चौमुखी मन्दिर का निर्माण राणकपुर तीर्थ के निर्माता शेठ श्री धरणाशाह के बड़े भाई रत्नाशाह के पौत्र शूरवीर, दानवीर, एवं बादशाह गयासुद्दीन के प्रधान मंत्री श्री सहसाशाह ने आचार्य श्री सुमतिसूरिजी से प्रेरणा पाकर उस वक्त यहाँ के महाराजा श्री जगमाल से अनुमति लेकर करवाया था। विक्रम सं० १५६६ फाल्गुन शुक्ला १० के दिन श्री आदिनाथ भगवान के विशालकाय (१२० मण) धातु प्रतिमा की प्रतिष्ठा आचार्य श्री जयकल्याणसूरिजी के सुहस्ते सुसंपन्न हुई थी। यह वर्णन 'गुरु गुण रत्नाकर' काव्य, शीलविजयजी कृत 'तीर्थ माला' आदि में उल्लिखित हैं। इसी मन्दिर में पूर्व दिशा में विराजित श्री आदीश्वर भगवान व दक्षिण दिशा में विराजित श्री शान्तिनाथ भगवान की प्रतिमाओं पर मेवाड़ के डुंगरपुर नरेश श्री सोमदास के प्रधान, ओशवाल श्रेष्ठी श्री साल्हाशाह द्वारा आयोजित समारोह में वि० सं० १५१८ वैशाख कृष्णा ४ के दिन श्री लक्ष्मीसागरसूरिजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा हुए का लेख उत्कीर्ण है। पश्चिम दिशा में विराजित श्री आदिनाथ प्रभु की प्रतिमा पर डुंगरपुर निवासी श्रेष्ठी श्री साल्हा शाह वगैरह श्रावकों द्वारा विक्रम सं० १५२९ में श्री लक्ष्मीसागरसूरिजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा होने का उल्लेख है। मूलनायक भगवान के दोनों बाजू खड्गासन की प्रतिमाओं पर वि० सं० ११३४ के लेख उत्कीर्ण है, इन लेखों के अनुसार सांचोर में श्री महावीर भगवान के मन्दिर के लिए ये प्रतिमाएं बनी थीं। इस मन्दिर के दूसरी मंजिल में सर्व धातु की चौमुख प्रतिमाजी विराजित हैं, जिनमें पूर्व दिशा में विराजित प्रतिमा अलौकिक मुद्रा में अत्यन्त सुन्दर व प्रभावशाली है। इस पर कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है। यह प्रतिमा लगभग २१०० वर्ष प्राचीन मानी जाती है। संभवतः यह प्रतिमा पहिले मूलनायक रही होगी। अतः यहाँ भी देलवाड़ा की भांति प्राचीन मंदिर रहे होंगे।

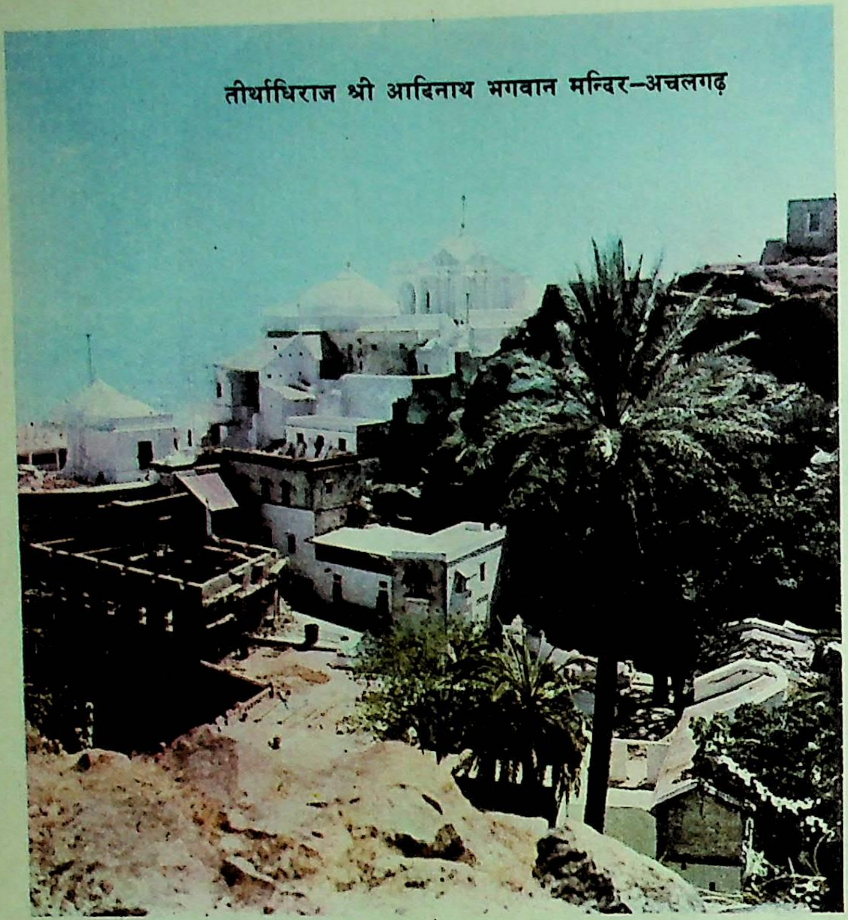
विशिष्टता * यहाँ पर धातु की कुल १८ प्रतिमाएँ हैं व उनका वजन १४४४ मन कहा जाता है। इन प्रतिमाओं की चमक व वर्ण से प्रतीत होता है कि इनमें सोने का अंश ज्यादा है। इतनी विशालकाय धातु की प्रतिमाएं अन्यत्र नहीं हैं। इन प्रतिमाओं का डुंगरपुर के कारीगरों द्वारा बनाया माना जाता है। राजा कुंभा द्वारा विक्रम सं० १५०९ में निर्मित इस दुर्ग में विध्वंस महल भी है। आबू के योगीराज विजयशान्तिसूरीश्वरजी की अंतिम तपोभूमि व स्वर्ग भूमि भी यही है। यहाँ जंगलों में उन्होंने घोर तपस्या की थी। मुख्य मन्दिर के पास एक कमरा है, जहाँ प्रायः वे रहा करते थे। उनके अनेकों राजा अनुयायी थे।

श्री पुडल तीर्थोद्धारक आत्मानुरागी स्वामी श्री रिखबदासजी द्वारा रचित 'आबू के योगीराज' पुस्तक में अनेकों चमत्कारिक व अलौकिक घटनाओं का आँखों देखा वर्णन है। उनमें एक वर्णन यह भी है कि एक वक्त योगी राज अचलगढ़ विराजते थे, जब स्वामीजी भी पास थे। २२ रजवाडों के नरेश व राजकुमार आदि सिरोही के राज-



श्री आदिनाथ भगवान – अचलगढ़

तीर्थाधिराज श्री आदिनाथ भगवान मन्दिर-अचलगढ़



कुमार की शादी करके दर्शनार्थ आये। दरवाजा बन्द था। सारे राजा व राजकुमार दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे थे। ज्यों ही दरवाजा खुला, सारे के सारे गुरुदेव के चरणों में साष्टांग नमस्कार करने लगे। सब सजेधजे होकर भी उन्हें अपने वस्त्रों का भान न रहा, इतनी भक्ति थी उनमें। स्वामीजी लिखते हैं कि उस वक्त का दृश्य फोटो लेने योग्य था, परन्तु केमरा नहीं था। गुरुदेव ने अनेकों राजाओं से शिकार व माँस मदिरा का त्याग करवाया था। विक्रम सं० १९९९ के आसोज कृष्ण पक्ष १० को गुरुदेव अचलगढ़ में कुंथुनाथजी के मन्दिर के पास एक कमरे में स्वर्ग सिधारे। वहाँ आज भी वह पाट विद्यमान है, जिसपर उनका स्वर्गवास हुआ था।

उनकी देह श्री मान्डोली नगर ले जायी गयी व अग्नि संस्कार वहाँ हुआ जहाँ भव्य मन्दिर बना हुआ है।

अन्य मन्दिर ✻इसके अतिरिक्त वर्तमान में ३ मन्दिर (श्री आदिनाथ भगवान, श्री शान्तिनाथ भगवान, श्री कुंथुनाथ भगवान के) और हैं। ये भी प्राचीन हैं। इनके अलावा श्री कुंथुनाथ भगवान के मंदिर के पास आबू के योगीराज विजय-शान्तिसूरीश्वरजी के स्वर्गस्थल में पाट पर विशाल फोटो दर्शनार्थ रखा हुआ है। यहाँ से लगभग ३ कि० मी० दूर गुरु शिखर है, जो कि अरावली पर्वत की उच्चतम चोटी मानी जाती है। वहाँ पर एक देरी में श्री आदीश्वर भगवान के चरण स्थापित हैं।

कला और सौन्दर्य ✻ यहाँ का प्राकृतिक दृश्य अति मन-लुभावना है। मन्दिर से चारों तरफ का दृश्य ऐसा लगता है जैसे स्वर्ग लोक में खड़े हैं, बहुत ही शान्ति का वातावरण है। मुख्य मन्दिर में धातु की बनी चारों प्रतिमाएं अलग अलग समय की होने पर भी ऐसा प्रतीत होता है जैसे एक ही साथ निर्मित हुई हो। इस प्रकार की कलात्मक धातु प्रतिमाएं अन्यत्र नहीं है। इस मन्दिर के दूसरी मंजिल में पूर्व दिशा में विराजित अलौकिक धातु प्रतिमाकी सुन्दरता का तो जितना वर्णन करें कम हैं। शायद विश्व में भी इतनी सुन्दर भावात्मक प्राचीन प्रतिमाएं कम जगह होगीं। श्री कुंथुनाथ भगवान की प्रतिमा कांसे से निर्मित है, जो कि प्रायः कम पायी जाती है। इनके अलावा मन्दाकिनी कुण्ड, भर्तृहरी व गोपीचन्द गुफां, भृगु आश्रम, तीर्थ विजय आश्रम आदि दर्शनीय स्थल हैं।

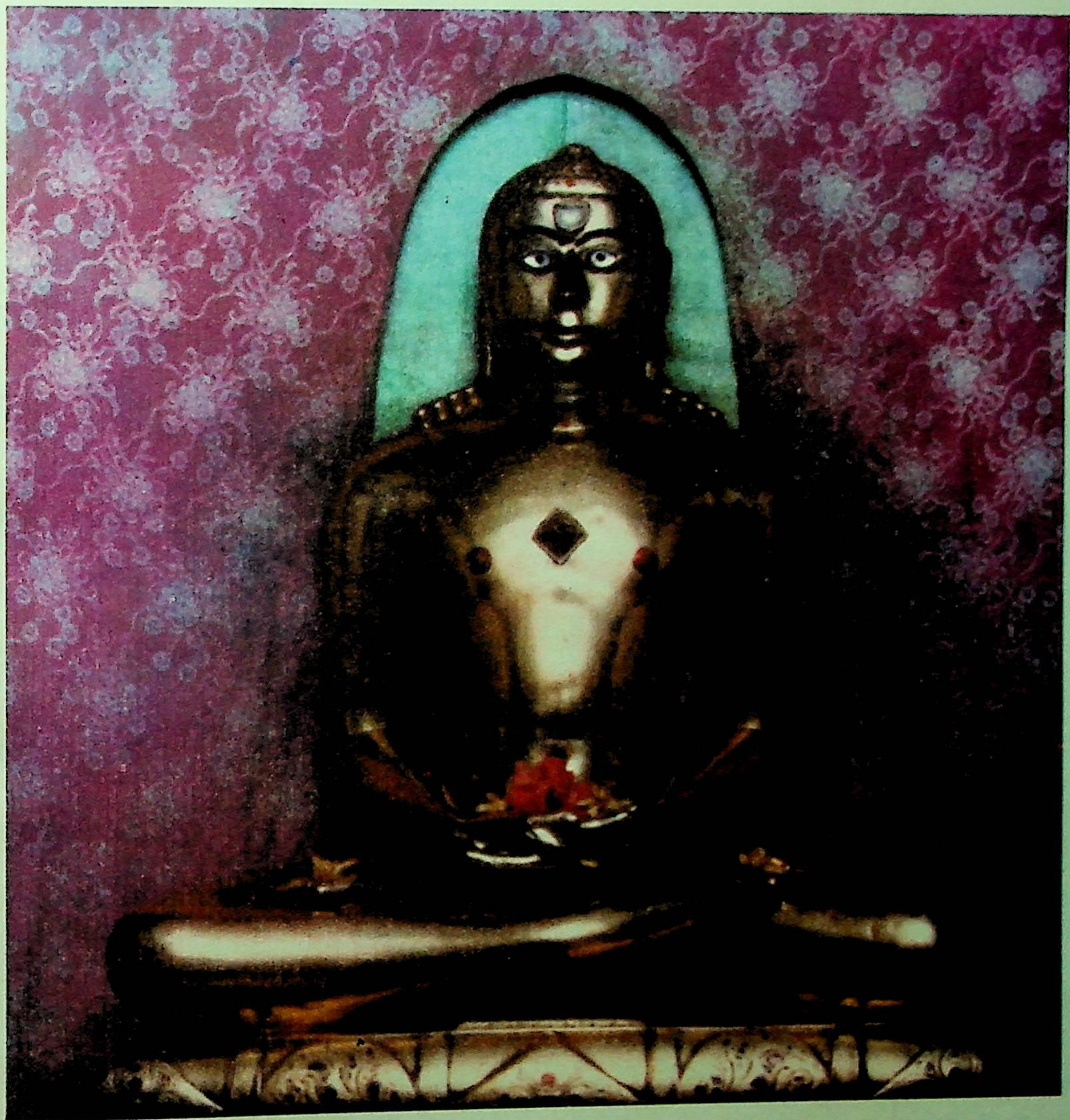
मार्ग दर्शन ✻ नजदीक का रेलवे स्टेशन आबू रोड़ ३७ कि० मी० दूर है, जहाँ से माउन्ट आबू व देलवाड़ा होकर आना पड़ता है। आबू रोड़ से माउन्ट आबू तक अनेकों बसें मिलती रहती हैं। माउन्ट आबू से भी कुछ बसें अचलगढ़ आती हैं। टैक्सी का भी साधन हैं। अचलगढ़ की तलेटी से मन्दिर की चढाई ४०० मीटर है जहाँ वयोवृद्ध महानुभावों के लिए डोली का साधन है। तलहटी तक पक्की सड़क है। बस व कार जा सकती हैं। माउन्ट आबू से अचलगढ़ की तलहटी ६ कि० मी० व देलवाड़ा से ४ कि० मी० दूर है।

सुविधाएँ ✻ ऊपर मुख्य मन्दिर के पास ही ठहरने के लिए धर्मशाला है, जहाँ पानी, बर्तन ओढ़ने बिछाने के वस्त्र व भोजनशाला की सुविधा है। आबू रोड में भी जैन धर्मशाला है, जहाँ सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। आबू रोड़ व माउन्ट आबू के बीच आरणा में भी धर्मशाला है व माउन्ट आबू की तलेटी में शांति आश्रम है। इन जगहों में ठहरने की व पूज्य साधु संतों के लिए वैय्यावच्च की व्यवस्था है।

पेढ़ी ✻ शेठ श्री अचलसीजी अमरसीजी जैन श्वेतांबर पेढ़ी, अचलगढ़ : डाक घर – ओरिया (माउन्ट आबू) : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – माउन्ट आबू : टेलीफोन – पी० सी० ओ० माउन्ट आबू।



श्री आदिनाथ प्रभु की धातु से निर्मित अलौकिक प्राचीन प्रतिमा—अचलगढ़



श्री देलवाड़ा (आबू) तीर्थ

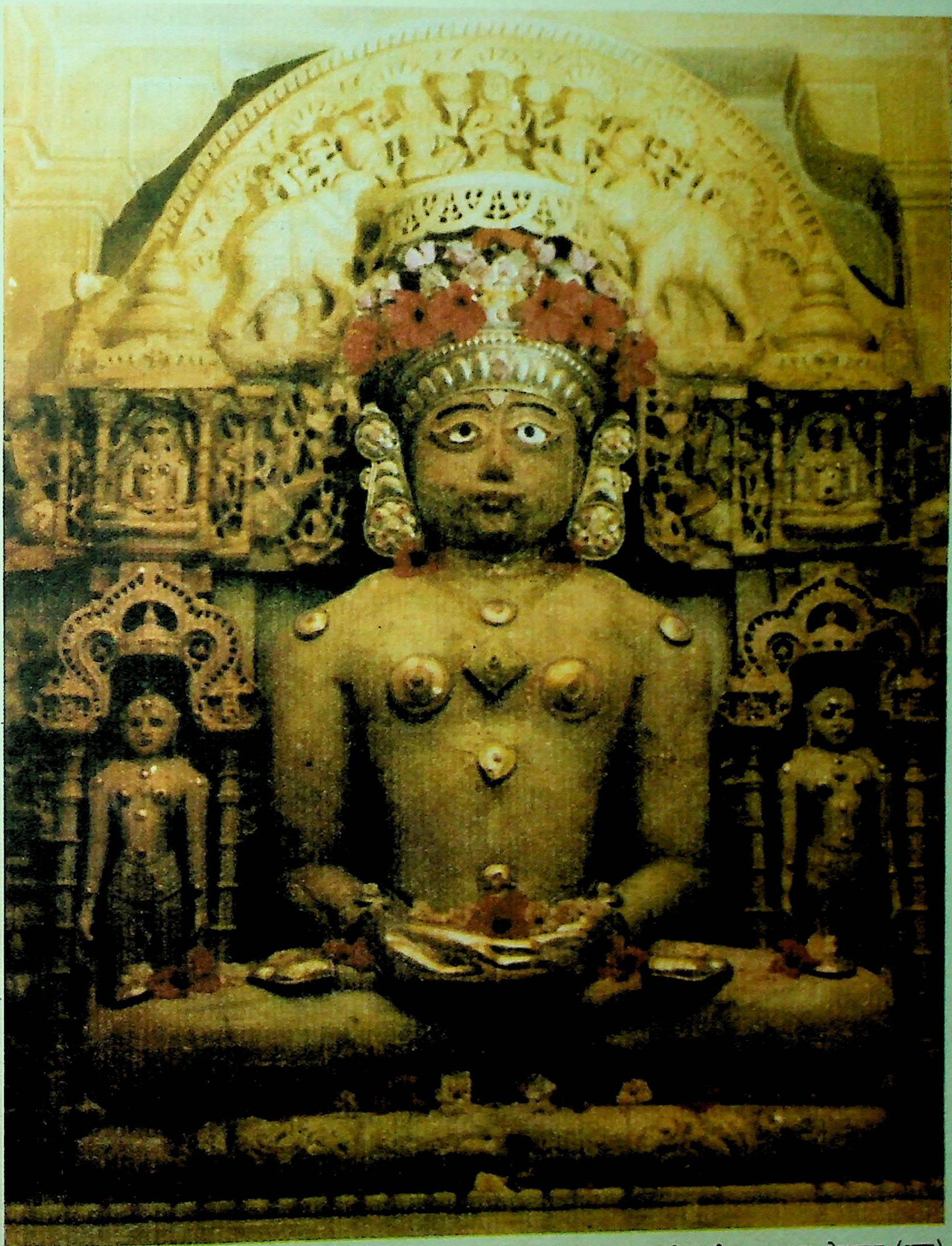
तीर्थाधिराज * श्री आदीश्वर भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण, १.५ मी०।

तीर्थ स्थल * समुद्र की सतह से लगभग १२२० मी० ऊंचे अर्बुदगिरि पर्वत की गोद में।

प्राचीनता * कहा जाता है श्री भरत चक्रवर्ती जी ने यहाँ श्री आदिनाथ भगवान का मन्दिर बनवाकर चतुर्मुख प्रतिमा को प्रतिष्ठित करवाया था। जैन शास्त्रों में इसे अर्बुदाचल व अर्बुदगिरि कहते हैं। यहाँ जमाने से मुनिगण जैन मन्दिरों के दर्शनार्थ आते थे, ऐसा उल्लेख है। तदनन्तर यह भी कहा जाता है कि अन्तिम तीर्थंकर भगवान श्री महावीर ने भी अर्बुदभूमि पर पदार्पण किया था। भगवान श्री महावीर के बाद कई जैन आचार्य इस पवित्र धाम आबू पर यात्रार्थ पधारे हैं व तपस्या की है। जैसे ई० पूर्व ४७५ में श्री स्वयंप्रभसूरिजी, ई० पू० २३६ में श्री सुहस्तिसूरिजी ई० प्रथम शताब्दी में श्री पादलिप्तसूरिजी, ई० सं० २०३-२२५ में श्री देवगुप्तसूरिजी, ई० सं० ९३७ में श्री उद्योतन-सूरिजी ई० सं० १६०६-७४ में श्री आनन्दघनजी, वि० सं० १९८१ में योगीराज विजयशान्तिसूरीश्वरजी आदि।

श्रुतकेवली श्री भद्रबाहुस्वामीजी द्वारा रचित "बृहत् कल्प सूत्र" में भी इस तीर्थ का उल्लेख आता है। वर्तमान में स्थित यहाँ का सब से प्राचीन मन्दिर मंत्री श्री विमलशाह द्वारा विक्रम की ११वीं सदी में निर्मित हुआ था। इससे पूर्व के जैन मन्दिरों का पता नहीं लग रहा है। शायद कभी भूकंप में धरातल होकर या किसी कारण विच्छिन्न हुए हों। श्री अम्बिकादेवी की श्री विमलशाह द्वारा आराधना करने पर चम्पकवृक्ष के पास यहाँ भूगर्भ से श्री आदिनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा प्राप्त हुई थी जो लगभग २५०० वर्ष प्राचीन बताई जाती है, इससे यह तो सिद्ध होता ही है कि यहाँ प्राचीन काल में जैन मन्दिर थे।

वि० सं० १०८८ में श्री विमलशाह ने १८ करोड़ ५३ लाख रु० खर्च कर के मन्दिर निर्मित करवाया व आचार्य श्री धर्म-घोषसूरिजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा करवायी थी, इस मन्दिर को विमलवसही कहते हैं। इसका पुनरुद्धार इनके ही वंशज मंत्री श्री पृथ्वीपाल द्वारा वि० सं० १२०४-१२०६ में करवाने का उल्लेख है। विक्रम सं० १३६८ में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा मन्दिर को क्षति पहुँची, तब मंडोर निवासी शेठ गोसन व भीमाना बंधुओं के पुत्र धनसिंह व महणसिंह एवं उनके पुत्रों ने पुनः जीर्णोद्धार करवाकर विक्रम सं० १३७८ ज्येष्ठ कृष्णा ९ के दिन श्री ज्ञानचन्द्रसूरिजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा करवाई। विक्रम सं० १२८७ चैत्र कृष्णा ३ के दिन वस्तुपाल तेजपाल ने १३ करोड़ ५३ लाख रुपये खर्च करके विमलवसही के सामने हीं मन्दिर बनवाकर नागेन्द्रगच्छाचार्य श्री विजय-सेनसूरिजी के सुहस्ते प्रतिष्ठा करवाई थी। इस मन्दिर को लावण्यवसही कहते हैं। इस मन्दिर को भी विक्रम सं० १३६८ में अल्लाउद्दीन खिलजी द्वारा क्षति पहुंची थी, जिसे तुरन्त ही १० वर्ष बाद चन्द्रसिंह के पुत्र श्रेष्ठी श्री पेथड़शाह ने जीर्णो-



श्री आदीश्वर भगवान–देलवाड़ा (आबू)

सहायक : मेसर्स. हीराचन्द रतनचन्द नाहर ट्रस्ट, मद्रास–१.

द्धार करवाया। इनके अलावा विक्रम सं० १५२५ में अहमदाबाद के सुलतान मेहमूद बेघड़ा के मंत्री सुन्दर और गदा ने पीतलहर मन्दिर का निर्माण करवाया था। एक और खरतर वसही मन्दिर है, जो कारीगरों के मन्दिर के नाम से जाना जाता है।

विशिष्टता * यह एक प्राचीन व महत्वपूर्ण तीर्थ माना गया है। इसका विशिष्ट उल्लेख ऊपर प्राचीनता में दिया गया है। जैसे भरत चक्रवर्ती द्वारा श्री आदिनाथ भगवान का यहाँ मन्दिर बनवाना, भगवान श्री महावीर का इस भूमि में पदार्पण होना अनेकों मुनियों की तपोभूमि रहना आदि। वर्तमान में कुछ वर्षों पूर्व ही योगीराज श्री विजयशान्तिसूरीश्वरजी ने यहाँ भयंकर जंगलों में तपश्चर्या की थी, व आबूगिरिराज के आजू-बाजू गांवों में प्राय: विचरते रहते थे। अनेकों राजा उनके भक्त थे, जिन्हें उपदेश देकर शिकार, मदिरा व मांस, भक्षण आदि का त्याग करवाया था। श्री विजयशान्तिसूरीश्वरजी आबू के योगीराज के नाम से आज भी विख्यात हैं, जो विक्रम सं० १९९९ आश्विन कृष्णा १० के दिन श्री अचलगढ़ में स्वर्ग सिधारे।

हिन्दू लोग भी इसे अपना मुख्य तीर्थ स्थान मानते हैं। यहाँ के जंगलों में वनस्पतियों का भण्डार है। जंगलों में अनेकों जैनेतर मुनिगण भी तपस्या करते हैं। भारत के मुख्य पहाड़ी स्थलों में यह भी एक है। यहाँ पर प्राकृतिक दृश्यों से ओतप्रोत अति ही रोचक अद्वितीय अनेकों स्थान हैं जिन्हें देखते ही मन प्रफुल्लित हो उठता है। यहाँ की आबहवा स्वास्थ्य के लिए अति उत्तम है। गर्मी के दिनों में हमेशा हजारों पर्यटक देश-विदेश से आते हैं, इस ढंग का पहाड़ी स्थल कम जगह पाया जाता है। यह स्थान धार्मिक दृष्टि से अपनी प्राचीनता आदि के लिए तो प्रसिद्ध है ही लेकिन शिल्प कला में भी विश्व में अपना विशेष स्थान रखता है। यहाँ के विमलवसही व लावण्यवसही मन्दिरों में संगमरमर के पाषाण पर की शिल्पाकृतियाँ अजोड़, अनुपम, और महीन एक से एक बढ़कर, अति आकर्षक है। इस विश्व विख्यात विमलवसही व लावण्यवसही के निर्माता मंत्री श्री विमलशाह व वस्तुपाल तेजपाल हैं।

मंत्री श्री विमलशाह, वीर महान योद्धा, प्रख्यात धनुर्धारी व प्रबल प्रशासक गुर्जर नरेश भीमदेव के मंत्री व सेनापति थे। उन्होंने पाटण के धनाढ्य सेठ की कन्या श्रीदत्ता से विवाह किया था। प्रौढ़ावस्था में विमलशाह चन्द्रावती नगरी में गवर्नर की हैसियत से रहते थे। उनकी पत्नी बुद्धिमती व धर्मपरायणा श्राविका थी। जब प्रखर विद्वान महान आचार्य श्री धर्मघोषसूरिजी चन्द्रावती पधारे तब आचार्य श्री ने समरांगणों में किये दोषों के प्रायश्चित स्वरूप प्राचीन अर्बुदाचल तीर्थ के उद्धार करवाने की प्रेरणा दी। उन्होंने श्री भीमदेव आदि से विचारविमर्श करके मन्दिर बनवाने हेतु यह जगह पसन्द की। परन्तु यहाँ के ब्राह्मणों द्वारा यहाँ जैन तीर्थ बनवाने का विरोध किया गया। उनका कहना था कि पहिले यहाँ जैन मन्दिर था, यह साबित किया जाय। श्री विमलशाह चाहते तो अपनी सत्ता के बल से चाहे जो कर सकते थे, परन्तु उनका हमेशा कहना था कि प्रजा को संतोष हो वैसा कार्य किया जाय। इसलिए श्री विमलशाह ने तीन उपवास करके श्री अम्बिकादेवी की आराधना की जिससे उनको यहाँ पर चंपक वृक्ष के पास श्री आदीश्वर प्रभु की श्याम वर्ण प्राचीन प्रतिमा रहने का संकेत मिला व शोध करने पर विशालकाय भव्य प्रतिमा प्राप्त हुई, जो कि सहस्रों वर्ष प्राचीन मानी जाती है। वह अभी विमलवसही मन्दिर में विद्यमान है। (इस प्रतिमा को श्री मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिमा भी कहते हैं)। विमलशाह ने तुरन्त निर्माण कार्य प्रारंभ किया व १८ करोड़ ५३ लाख रुपये खर्च करके इस मन्दिर का निर्माण करवाया। इस कार्य में १४ वर्ष लगे, व १५०० कारीगर एवं १२०० मजदूर काम करते थे। पत्थर, अम्बाजी गांव के पास आरासण पहाड़ी से हाथियों पर लाया जाता था। निर्माण कार्य सुसम्पन्न होने पर प्रतिष्ठा महान आचार्य श्री धर्मघोषसूरिजी के सुहस्ते विक्रम सं० १०८८ में सुसम्पन्न हुई। इस मन्दिर का नाम विमलवसही रखा गया।

लावण्यवसही के निर्माता राजा श्री वीरधवल के मंत्री श्री वस्तुपाल तेजपाल बंधुओं ने गुजरात की डगमगाती सत्ता को अपनी अपूर्व प्रतिभा व कार्यकौशल से अचल बनायी थी। इनकी ख्याति हर जगह राजाओं में खूब बढ़ गई थी। ये दोनों भ्राता वीर व उदार थे। वस्तुपाल स्वयं बड़े कवि भी थे। उनको २४ बिरुद प्राप्त हुए थे। उनमें से "सरस्वती धर्मपुत्र" भी एक था। इन्होंने शत्रुंजय व गिरनार के उद्धार में भी करोड़ों रुपये खर्च किये थे। इनके अलावा अन्य धार्मिक कार्यों में, संघ निकलवाने आदि में कुल करोड़ों रुपये खर्च किये थे। इन्होंने गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव के महामंडलेश्वर आबू के परमार राजा श्री सोमसिंह से अनुमति लेकर १३ करोड़ ५३ लाख रुपये खर्च करके श्री तेजपाल के सुपुत्र लावण्यसिंह के कल्याणार्थ विमलवसही के सामने एक भव्य मन्दिर का निर्माण करवाया व मन्दिर का नाम लावण्यवसही रखा, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगच्छाचार्य श्री विजयसेनसूरिजी के सुहस्ते विक्रम सं० १२८७ चैत्र कृष्णा ३ के शुभ दिन सुसंपन्न हुई। इस मन्दिर की कला भी विश्व में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यहाँ हमेशा हजारों यात्रीगणों की भरमार रहती है।

अन्य मन्दिर * यहाँ विमलवसही व लावण्यवसही के अतिरिक्त पितलहरमन्दिर, श्री महावीर भगवान मन्दिर व



मन्दिर-समूह का दृश्य जिनमें अलौकिक कला का अमूल्य खजाना भरा है– देलवाड़ा (आबू)



श्री आदिनाथ प्रभु की प्राचीन प्रतिमा–देलवाड़ा (आबू)

खरतर वसही मन्दिर हैं। सारे मन्दिर आसपास ही हैं। कुछ दूर एक दिगम्बर मन्दिर भी है। माउन्ट आबू में सनसेट पाइन्ट के रास्ते में योगीराज श्री विजयशान्तिसूरीश्वरजी का गुरु मन्दिर अभी बना है।

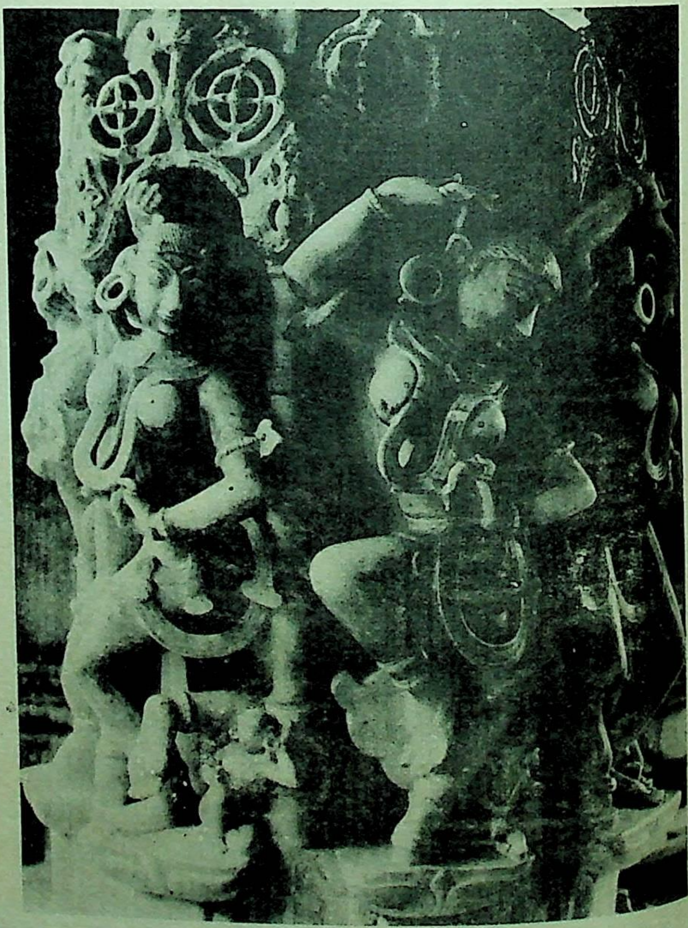
कला और सौन्दर्य ✳ यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य तो अपना विशेष स्थान रखता ही है, साथ ही यहाँ के इन मन्दिरों की शिल्प व स्थापत्य कला का जितना भी वर्णन करें कम है। विमलवसही मन्दिर की छतों, गुम्बजों, दरवाजों, स्तम्भों, तोरणों और दीवारों में सुन्दर और ऐश्वर्य युक्त नक्काशी की झलक नजर आती है। इनकी महानता और गौरव का वर्णन करने के लिए कोई उपयुक्त शब्द नहीं है। सब नमूने सुन्दरता व बारीकी से विभिन्न प्रकार के बने हुए हैं। उनका विवरण देना यहाँ संभव नहीं। प्रदक्षिणा में कुल ५९ देरियाँ हैं। लावण्यवसही की रचना विमलवसही के समान है। यहाँ की बारीक खुदाई की खूबसूरती भिन्न, निराली व मन-मोहक है। भगवान श्री कृष्ण की जीवनी, नर्तिकाओं और गायिकाओं के समूहों और देरानी जेठानी के गोखलों की आकृतियाँ यहाँ की विशेषता है। इस मन्दिर में प्रदक्षिणा में कुल ५२ देरियाँ हैं।

मार्ग दर्शन ✳ नजदीक का रेलवे स्टेशन आबू रोड़ ३४ कि० मी० है, जहाँ से टैक्सी व बसों की सुविधा उपलब्ध है। आबू रोड से पहाडी रास्ता शुरू हो जाता है। आबू रोड से माउन्ट आबू ३२ कि० मी० है व वहाँ से देलवाड़ा २ कि० मी० है। आबू माउन्ट से भी टैक्सी व बसों की सुविधा है। देलवाड़ा का बस स्टैण्ड मन्दिर से २०० मीटर दूर है। आखिर तक पक्की सड़क है। बस व कार जा सकती हैं।

सुविधाएँ ✳ ठहरने के लिए मन्दिर के सामने निकट ही धर्मशाला है, जहाँ पानी, बिजली, बर्तन, व ओढने-बिछाने के वस्त्रों की सुविधा है। पेढी द्वारा संचालित भोजनशाला नहीं है, लेकिन दूसरी व्यक्तिगत भोजनशालाएं पास ही हैं। नोट: पर्यटकों के लिए दर्शन का समय मध्यान्ह १२ से सायं ६ बजे तक है। यहाँ पर अन्य दर्शनीय स्थल नखी झील, सनसेट पोइन्ट, गोमुख व वसिष्ठाश्रम आदि हैं।

पेढ़ी ✳ श्री कल्याणजी परमानन्दजी पेढ़ी : देलवाड़ा जैन मन्दिर : डाक घर – माउन्ट आबू, ३०७५०१ : जिला – सिरोही : प्रान्त – राजस्थान : तार घर – माउन्ट आबू। टेलीफोन – २४ माउन्ट आबू।

नृत्यकला की एक झाँकी - देलवाड़ा (आबु)



तीर्थ दर्शन

❋

प्रथम खंड संपूर्ण

अनुक्रमणिका

(नाम-विशिष्टता-पृष्ठ संख्या)

वेलार	△					२३२
खुड़ाला	△	□				२३४
सेवाड़ी	△				★	२३६
कोलरगढ़	△	□				२३८
सेसली	△					२४०
राडबर	△					२४२
उथमण	△					२४४
सांड़ेराव	△		卐		★	२४६
सिरोही	△	□		○	★	२४८
गोहिली	△					२५०
मीरपुर	△	□		○	★	२५२
वीरवाड़ा	△			○		२५४
बामणवाड़ा	△	□	卐	○	★	२५६
नान्दिया	△		卐	○		२६०
अजारी	△		卐	○		२६२
नीतोड़ा	△		卐			२६४
लोटाणा	△					२६६
दियाणा	△			○		२६८
सीवेरा	△					२७०
धनारी	△					२७२
वाटेरा	△					२७४
झाड़ोली	△				★	२७६
लाज	△					२७८
नाणा	△			○		२८०
काछोली	△					२८२
कोजरा	△					२८४
पिण्डवाड़ा	△				★	२८६
माण्डवाजी	△	□	卐			२८८
स्वर्णगिरि (जालोर)	△	□			★	२९०
मिनमाल	△	□				२९४
सत्यपुर	△	□				२९८
किवरली	△					३००
कासीन्द्रा	△					३०२
देलदर	△					३०४
डेरणा	△					३०६
मुण्डस्थल	△		卐			३०८
जीरावला	△	□	卐			३१०
वरमाण	△	□				३१४
मण्डार	△					३१६
ओर	△					३१८
अचलगढ़	△	□	卐		★	३२०
आबू देलवाड़ा	△	□	卐		★	३२४

गुजरात .—

कुम्भारियाजी	△	□				★	३३२
प्रह्लादनपुर	△	□	卐				३३६
जूनाडीसा	△						३३८
थराद	△						३४०
खीमा	△						३४२
वाव	△					★	३४४
भोरोल	△	□					३४६
जमणपुर	△						३४८
पाटण	△	□	卐		○	★	३५०
मेत्राणा	△	□	卐				३५३
तारंगा	△	□	卐			★	३५५
खेड़ब्रह्मा	△						३६०
वड़ाली	△		卐				३६२
ईडर	△	□					३६४
मोटा पोसीना	△	□					३६६
वालम	△	□					३६८
मेहसाणा	△	□				★	३७०
गांभु	△						३७२
मोढ़ेरा	△		卐			★	३७४
कम्बोई	△	□					३७६
चाणश्मा	△		卐				३७८
शीयाणी	△	□					३८०
चारुप	△	□					३८२
भीलड़ियाजी	△	□	卐				३८४
तेरा	△	□			○		३८६
जखौ		□			○		३८८
नलिया		□			○		३९०
कोठारा					○	★	३९२
सुथरी		□	卐		○	★	३९४
भद्रेश्वर	△	□			○	★	३९६
गिरनार	△	□	卐	ॐ		★	४००
प्रभाष पाटण	△	□	卐				४०७
दीव	△				○		४१०
अजाहरा	△	□	卐		○		४१२
देलवाड़ा					○		४१४
ऊना	△		卐		○		४१६
महुवा	△	□			○		४१८
तालध्वजगिरि	△	□	卐		○	★	४२०
घोघा	△	□	卐		○		४२२
कदम्बगिरि	△	□	卐		○	★	४२४
हस्तगिरि	△	□	卐		○		४२६

△ : पुरातन क्षेत्र
□ : भोजनशाला की सुविधायुक्त
卐 : चमत्कारीक क्षेत्र या मुनियों की तपोभूमि
ॐ : कल्याणक भूमि
○ : पंचतीर्थी
★ : कलात्मक

"तीर्थ-वर्णानुक्रमिक"

(नाम-पृष्ठ संख्या)

